प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद

राजसंस्करण
मूल्य २ रुपये

मुद्रक :
श्री [illegible]नाथ घोष,
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

माननीय

श्री आचार्य युगल किशोर जी

शिक्षा मंत्री

उत्तर प्रदेश

को

सादर और सस्नेह

समर्पित

—माताप्रसाद गुप्त

प्रस्तावना

कई वर्षों से इच्छा थी कि मंझन की 'मधुमालती' का एक संपादित संस्करण तैयार करूँ। किन्तु मैं चन्द कृत 'पृथ्वीराज रासउ' के संपादन तथा कुछ अन्य कार्यों में लग गया था, इसलिए इस कार्य को मैं न कर सका था। इसी बीच डॉ. शिवगोपाल मिश्र ने रचना की एकडला (जिला फतेहपुर) में प्राप्त एक प्रति के पाठ को परिश्रमपूर्वक संपादित कर प्रकाशित किया। एक ही प्रति का होने तथा अन्य कुछ कारणों से भी रचना का यह पाठ संतोषजनक नहीं ज्ञात हुआ, इसलिए मैंने फिर भी इस सुन्दर कृति के एक संपादित संस्करण की आवश्यकता समझी और समस्त प्राप्त प्रतियों की सहायता से यह कार्य इधर अवकाश मिलने पर किया। कार्य को अधिक से अधिक पूर्ण बनाने के लिए कृति की आवश्यक ऐतिहासिक और पाठ-विषयक भूमिका देने के अतिरिक्त मैंने अर्थ, मुख्य शब्दों की भाषा-परक टिप्पणियाँ और अन्त में उनकी अनुक्रमणी भी दी है। आशा है कि यह प्रयास हिन्दी के मध्ययुग की एक सुन्दर कृति के अनुशीलन में अपना यत्किंचित योग प्रदान कर सकेगा।

आभार-निवेदन शेष है। रामपुर की प्रति के पाठ का उपयोग करने के लिए वहाँ के नवाब साहब के पुस्तकालय के अधिकारियों का और शेष प्रतियों के उपयोग के लिए भारत कला भवन, वाराणसी के संस्थापक पद्मश्री राय कृष्णदास जी का हृदय से कृतज्ञ हूँ। एकडला की प्रति का पाठ डॉ. शिवगोपाल मिश्र के संपादन द्वारा सुलभ होने के कारण उसी का उपयोग मैंने इस कार्य में किया है, अतः मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ। थोड़े ही समय में इस सुन्दर रूप में रचना को प्रकाशित करने के लिए मित्र प्रकाशन प्राइवेट लि., इलाहाबाद और विशेष रूप से उसकी गौरव ग्रन्थमाला के संयोजक तथा उसके पुस्तक विभाग के अध्यक्ष श्री श्रीकृष्णदास जी का आभारी हूँ। मंझन की जीवनी प्रस्तुत करने तथा प्रेस के लिए इस रचना की पाण्डुलिपि तैयार करने में मेरे शिष्य और 'मध्ययुगीन प्रेमाख्यान' के लेखक डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय ने मेरी सहायता की है, इसके लिए मैं उन्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

प्रयाग
१.७.६१

—माताप्रसाद गुप्त

प्रकाशकीय

मित्र प्रकाशन की 'गौरव ग्रंथमाला' प्रकाशित करने की नवीन योजना के अन्तर्गत प्रथम पुष्प के रूप में मंझन कृत 'मधुमालती' पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। डाक्टर माताप्रसाद जी गुप्त ने 'मधुमालती' के इस संस्करण में संपादित पाठ के साथ पाठान्तर, अर्थ, शब्दानुक्रमणी आदि का समावेश करके ग्रंथ को अत्यन्त उपयोगी बना दिया है और उसे प्रामाणिकता प्रदान कर दी है। विस्तृत वैचारिक एवं पाठ-विषयक भूमिका के कारण ग्रंथ का समझना तथा उसका मूल्यांकन करने के सम्यक साधन भी प्राप्त हो गये हैं।

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पदमावत' की ही भाँति मंझन कृत 'मधुमालती' का भी सर्वत्र आदर होगा और सूफी साहित्य के अध्ययन-अनुशीलन में इस महान् ग्रंथ से पूरी सहायता मिलेगी—इसमें कोई सन्देह नहीं।

'मधुमालती' का यह राज संस्करण प्रकाशित कर हम अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। आशा है कि विज्ञ हिन्दी समाज द्वारा 'मधुमालती' का स्वागत होगा।

श्रीकृष्ण दास
अध्यक्ष
पुस्तक विभाग

विषय-सूची

भूमिका

मंझन का जीवन-वृत्त

मंझन ने जो कुछ आत्मोल्लेख 'मधुमालती' में किए हैं, उन्हीं से हम उनके विषय में जानते हैं; हमें कोई अन्य सूत्र उनके जीवन-वृत्त-संबंधी तथ्यों के लिए प्राप्त नहीं है। ये आत्मोल्लेख रचना के प्रारंभ में आते हैं। इनमें (१) छंद ६—१३ में उन्होंने शाह-ए-वक़्त सलीम शाह सूर की प्रशंसा की है, (२) छंद १४—२१ में गुरु शेख मुहम्मद गौस का गुणानुवाद किया है, (३) छंद २२—३३ में ख़िज्र ख़ाँ का गुणगान किया है, (४) छंद ३४—३८ में अपने निवास-स्थान चुनार का वर्णन किया है और (५) छंद ३९—४३ में 'मधुमालती' की रचना के विषय का उल्लेख किया है। नीचे इन पाँचों विषयों पर कवि के द्वारा किए हुए कथनों पर विचार किया जा रहा है।

(१) सलीम शाह सूर

कवि ने रचना का आरंभ सलीम शाह के राज्य काल में किया। यह सलीम शेरशाह सूर का पुत्र था और ९५२ हिजरी (१५४५ ई०) में शेरशाह के देहान्त के उपरान्त शासक हुआ था।[1] उसी वर्ष, जैसा मंझन ने स्वयं छंद ३९ में कहा है, 'मधुमालती' का प्रणयन उन्होंने प्रारंभ किया। इसलिए उन्होंने शाह-ए-वक़्त सलीम शाह सूर की प्रशंसा की है। मंझन ने लिखा है कि सलीम शाह का व्यक्तित्व ऐसा था कि काबुल तथा हिन्द का द्वार एक हो गया था, उत्तर में हेमगिरि (सुमेरु के पास के एक पर्वत) से लेकर दक्षिण में सेतुबंध तक उसकी आन थी, पश्चिम में रूम तथा शाम देश उसकी आज्ञा मानते थे और पूर्व में समुद्र-तट तक उसकी दुहाई हो गई थी:

पच्छा तर गङ्गा अवतारा। काबिल हिंद भएउ एक बारा।
उत्तर हेम गिरि लहि परगासो। दक्खिन सेतबंध लहि आना।
पच्छिउँ रूम साम लहि आई। पूरब जलनिधि तीर दोहाई। (११ १—३)

किन्तु यह विवरण अत्यंत अत्युक्तिपूर्ण ज्ञात होता है। सलीम शाह के संबंध का शेष उल्लेख उसके पराक्रम, न्याय-परायणता तथा उसकी दानशीलता का है, जो इसी प्रकार अत्युक्तिपूर्ण है। इस प्रकार बढ़ा-चढ़ा कर शाह-ए-वक़्त की प्रशंसा करना उस युग में, ऐसा ज्ञात होता है, एक प्रकार की काव्य रूढ़ि-सी हो गई थी। उसमें तथ्यात्मकता का लेश मात्र ही रहा करता था।

(२) शेख मुहम्मद गौस

शेख मुहम्मद गौस शत्तारी संप्रदाय के सूफ़ी संत थे। मंझन ने इन्हें [illegible]

मन बड़ जस बिधि पियारा। (१४ १)

और लिखा है कि जिस पर वह हृदय से स्नेहपूर्ण हुआ करते थे, उसको वे सहज ही बलात् राजा बना देते थे:

जा कहँ भया आउ मैउ करहीं। सहज बलात् राज सिर धरहीं। (१४ ३)

मुहम्मद गौस एक संत मात्र न थे, वे अपने युग के एक प्रभावशाली राजनैतिक व्यक्ति भी थे। बाबर की उन पर बड़ी श्रद्धा थी, और कहा गया है कि उनकी आज्ञा से ही बाबर ने हुमायूँ का छत्र लिया था

---

१ ब्रिग्स: राइज़ आव् दि मुहम्मडन पावर, भाग २।

सापुनु साह बुलाए सेख। महा पीर पीरनि मत लेख।
हिरदै साहि पीर करि गमै। पुत्र दिखाए चारि आपनै।
बाबर साहि बूझियौ सोइ। इनम पातस्याह को होइ।

बटनि के नाम

हिमाऊँ मिरजा। कामयार मिरजा। आसुरी मिरजा। हिन्दाल मिरजा।
सेख इसारति कीनी ईस। मिरजा छत्र हिमाऊँ सीस।
सुनि कै बात भरी चित माहि। अति सुख पायौ बाबा साहि।
कुछ दिन बीते आगरे गए। राज बहुत छह बरसन भये।
दीनी छत्र हिमाऊँ सीस। छह बरसन की लई असीस।

(छछ्रराय कृत गोपाचल आख्यान)[1]

मझन ने उपर्युक्त उद्धरण में सम्भवतः इसी घटना की ओर संकेत किया है। हुमायूँ पर उनका प्रभाव होना भत स्वाभाविक था। इसी कारण वे शेरशाह सूर के कोप भाजन भी थे।

वे काफी दिनों तक दुर्गम स्थानों म भ्रमण करते रहे थे। मझन ने कहा है कि बारह वर्षों तक वे म धवरी नाम के ऐसे स्थान पर छिपे रहे जहाँ सूर्य और चन्द्रमा भी नहीं दिखाई पड़ते थे

बारह बरिस तहां गै दुरे। जहाँ सूर ससि दिस्टि न परे।
बिकट बिखम और भयावन ठाऊँ। कलिजुग बू धवरी ओहि नाऊँ।
चहु दिसि परबत बिखम अगमा। तहा न केहू मानुस गमा।
तहा जाइ के जपउ बिधाता। कै अहार बन जामुनि पाता।
मन मतम मारि बस किया। ग्यान महारस अंब्रित पिया।
साहस उदित अपान साधि कै कीन्हि सिद्धि अवराधि।
बारह बरिस रहे बन परबत आए जो बहा समाधि।। (२१)

यह अज्ञातवास सम्भवतः उन्हें शेरशाह का कोपभाजन बनने के कारण करना पड़ा था और शेरशाह की मृत्यु के बाद ही ९५२ हिजरी में उन्होंने कदाचित् इस अज्ञातवास का त्याग किया था इसकी ओर मंझन ने आगे संकेत किया है

सन नौ सौ बावन जब भए। सती पुरुष कलि परिहरि गए।
तब हम जिय उपजी अभिलाखा। कथा एक बाधउ रस भाखा। (१९ १२)

इस उद्धरण म आई हुई पक्तियों सती पुरुष कलि परिहरि गए' स्पष्ट नहीं है। सापुरुस' (<सत्पुरिस <सत्पुरुष) शब्द का प्रयोग कवि ने एक तो सलीम शाह के लिए किया है

त्रिभिमी पति पुनगाहक दस औ चारि निधान।
परमुम गंजन सापुरुस करन करिस्न सुजान।। (१ ६—७)

और दूसरे गरु मुहम्मद गौस के लिए किया है

दाता भी पुनगाहक गौस मुहम्मद पीर।
गुरु कुल निरमल सापुरुस सकल गरिस्ट गंभीर।। (१५ १—७)

विवेच्य स्थल पर सती पुरुष शब्द मुहम्मद गौस के लिए ही प्रयुक्त ज्ञात होता है। कलि' सम्भवतः उनके उस अज्ञात-वास की यातनाओं की ओर सकेत करता है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका

[1] देखिए डॉ श्याम मनोहर पाण्डेय 'मंझन के गुरु शाह मुहम्मद गौस' हिन्दुस्तानी जुलाई-सितंबर १९५९, पृ ९।

है। संभवतः ९५२ हिजरी में शेरशाह के देहान्त के अनंतर ही शेख मुहम्मद ग़ौस को उक्त अज्ञात-वास से मुक्ति मिल सकी थी।

तत्कालीन इतिहास में शेख मुहम्मद ग़ौस को हुमायूँ और उसके बाद अकबर का असाधारण हितैषी बताया गया है और कहा गया है कि अकबर के सेना-नायक को चुनारगढ़ पर अधिकार दिलाने में इन्होंने बड़ी भारी सहायता की थी किन्तु अकबर के शासन-काल में पीछे इनकी उतनी आवभगत न हुई जितनी पहले होती थी इसलिए ये अकबर के दरबार में कुछ दिनों तक रहकर भी ग्वालियर चले गए थे। ९७० हिजरी में आगरे में इनका देहावसान हुआ था।[1]

मंझन ने लिखा है कि उन्होंने शेख मुहम्मद का दर्शन करके अनायास ही सिद्धि प्राप्त की थी

जस पारस के परसत सीस हेम होइ जाइ।
तिमि मैं सेख मुहम्मद देख बिनु साहस सिधि पाइ॥ (११ ६—७)

मंझन ने अपने इन गुरु ग़ौस मुहम्मद की सिद्धियों की प्रशंसा बहुत विस्तार से और बड़ी निष्ठा के साथ की है, जो कि उनके लिए स्वाभाविक था।

(३) ख़िज़्र ख़ाँ

ख़िज़्र ख़ाँ भी उस युग का एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व है। मंझन ने लिखा है कि वह शाह (सलीमशाह अथवा सलीमसाह सूर) की दाहिनी भुजा के सदृश था और अन्य समस्त शूर बाईं भुजा के सदृश थे

दाहिनि भुजा साहि कै भारी। जेहि निसि लहा साह बिधि सारी। (२२ १)
अउ सबै सब सूर सराहीं। बाएँ भुजा रूप सब आही। (२१ ४)

इस ख़िज़्र ख़ाँ को सोना भी कहते थे

महाबीर जग ऊपर सौंना। बारह बानि सुबासिक सोना। (२१ ५)

ऐसा ज्ञात होता है कि मंझन इन ख़िज़्र ख़ाँ के कृपापात्र थे। असम्भव नहीं कि अपनी रचना को मंझन ने उसे समर्पित भी किया हो

दान करत कलि नाहिं मिल गुन गाहक संसार।
सुनत सबु खिज़्र खाँ जग कर गहे करतार॥ (२१ ६—७)

(४) चुनारगढ़

रचना की भूमिका में मंझन ने एक 'अनूप गढ़' में बसने वाली चनार्गी नगरी का वर्णन किया है जो कि अपनी सुरक्षित स्थिति में लंका के समान थी जो पूर्व में जरगी नदी तथा उत्तर और पश्चिम में गंगा से खाई के समान घिरी हुई है इतना ही नहीं कवि ने बताया है कि गंगा गढ़ के भीतर तक चली गई है

गढ़ अनूप बसि नगरि चनारी। कलिजुग महँ लंका सौं धारी।
पुरुब दिसा जरगी फिरि आई। उत्तर पछिम गंग गढ़ खाई।
देस बनी जाइ नहिं कही। गढ़ भीतर गंगा चलि बही।
साहि सहस जौ लावहिं धाई। जाहि हारि सिर ऊँचा नाई।
ऊपर छाजा अगवन भोती। देख बही सुरसरि सरसाती।
नगरि अनूप सोहावनि औ गढ़ बिसम अगम।
बरबस हाथ न आवै बिनु जस पुन्य करम॥ (१४)

---

१ वही पृ ९२—९३।

इस 'चनार्द्रि' के संबंध में अनेक कल्पनाएँ की गई हैं। इसे ग्वालियर तक सिद्ध करने का यत्न किया गया है। किन्तु यह 'चरणाद्रि' का अपभ्रंश है और इस समय चुनार के नाम से प्रसिद्ध है, इस तथ्य को डॉ॰ श्याम मनोहर पांडेय ने युक्तिपूर्वक सिद्ध किया है।[२]

(५) ग्रंथ और उसका रचना-काल

मंझन ने लिखा है कि ९५२ हि॰ में जब सती पुरुष (मुहम्मद गौस ?) कलि (अज्ञात-वास ?) का परित्याग कर [चुनार के निकटवर्ती गहन-पर्वत-वन प्रदेश से] चले गए तब (मंझन) के मन में कथा कहने की अभिलाषा उत्पन्न हुई

सन नौ सै बावन जब भए। सती पुरुष कलि परिहरि गए।
तब हम जिय उपजी अभिलाषा। कथा एक बाँधउँ रस भाखा।(१९ १—२)

इस रचना में कवि ने प्रसाद-गुण को प्रमुखता दी है और उसने कहा है कि इस गुण के सम्पादन के निमित्त उसने अन्य गुणों का परित्याग कर दिया है

मैं छाँड़ेउ गुन कर परसादू। तुम्ह चाखहु जो बाद सवादू। (१९ ५)

इसी प्रकार उन्होंने कहा है कि जो समस्त रसों में 'राजरस' (शृंगार ?) है उसका वर्णन इस काव्य में किया है

रस अनेक अवधार कर सुनहु रसिक है नाम।
जो सब रस महँ राजरस ता कर करौं बखान।। (४१ ६—७)

और उन्होंने इसे प्रेमाभिलाषी श्रोताओं-पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है

जो सब कहीं सुरस रस भाखी। सुनहु कान दै पेम अभिलाषी। (१९ ४)

मंझन की कला

मंझन ने रचना के प्रारंभ में खुदा (ईश्वर), उसके नबी, चार खलीफाओं, शाह-ए-वक्त, पीर और आश्रयदाता का गुणगान किया है। उन्होंने वचन का भी गुणगान किया है। वे वचन को अमर मानते हुए कहते हैं कि उसकी उत्पत्ति मरणशील मानव से नहीं हुई है। उसकी उत्पत्ति उस परमेश्वर से हुई है जो समस्त प्राणियों में व्याप्त है। यदि मानव से उसकी उत्पत्ति होती तो वह अमर नहीं हो सकता था

अचरिजु एक मोरे चित अहई। कोउ न अरथ ताहि कर कहई।
बचन केर उतपाति मुँह सेंऊ। मानुस देखि अम्मर* कहुँ केऊ*।
रहै न बचन केर पुनि जहाँ। कैसे बचन अम्मर* होइ तहाँ।
देखहु मनहि बिचारि कै बचन बचन किय माह।
बचन तम है ताकर जो बरतन सब माह।। (२४ १—७)

मंझन का कहना है कि आदि सृष्टि के भी पूर्व वचन ने हरि के मुख से ओंकार के रूप में अवतार लिया और फिर वही वचन संसार में आये और पूरे संसार में व्याप्त हुआ। वचन के द्वारा ही यह त्रिभुवन-भाव रूप भी अस्तित्व में प्रकट हुआ

प्रथमहि आदि सिरिस्टि न पारा। हरि मुख बचन प्रगट ओंकारा।
एहि बचन आदि उजियारा। भए सब हाट बाजा सबसारा।
बचन कै बात जान सब कोई। बचन हुते भा परगट सोई।

२ डॉ॰ श्याम मनोहर पांडेय 'मंझन का जीवन वृत्त' त्रिपथगा जनवरी १९५९ पृ ११७-११९।

काहु सरूप न देखा औ काहु न जानेउ ठाईं।
बचन हुतें भा परगट त्रिभुवन भाव गोसाइ।। (२५ २—७)

बचन को मंझन जगत् का अमूल्य पदार्थ मानते हैं और कहते हैं कि उसका वर्णन नहीं हो सकता है क्योंकि न उसका कोई रूप है और न उसकी कोई रेखा है

बचन अमोल पदारथ बरनि न सकउं उरेखि।
बचन रूप बिधना कर जाकर रूप न रेख।। (२६ ६—७)

इस प्रकार वचन को मंझन दिव्य अवतार का मानते हैं। वे उसको एक पवित्र दाय के रूप में स्वीकार करते हैं और अपनी रचना में भी उस पवित्र दाय को अछूता रखने का यत्न करते हैं।

मंझन इसलिए एक सतर्क कवि हैं। वे अनावश्यक कथना और विस्तार से बचना चाहते हैं और यदि जरा भी विषयान्तर में किसी प्रकार फंस जाते हैं तो उस पर पछताते हुए अविलम्ब वर्ण्य विषय पर आ जाते हैं। उदाहरणार्थ नायक और नायिका रात्रि के प्रथम साक्षात्कार के अनन्तर निद्रा मग्न हो जाते हैं। यहाँ पर कवि निद्रा के गुण-अवगुण का निरूपण करने लगता है (छंद ६६) और निद्रा की अनुभूतियों को मिथ्या बताते हुए जाग्रत अवस्था की अनुभूतियों से उसकी तुलना करता है (छं० ६७)। किन्तु ज्यों ही उसे स्मरण आता है कि यह विषयान्तर हो रहा है वह पछताते हुए वर्ण्य विषय पर तत्काल आ जाता है

हरि हरि कहा गएउ वह खेऊ। का कित्तु कहँ लिएउ का भेऊ।
कुंवर जाग कहिहु मैं सोई। बीच नींदि मोहि हरि लै गई।
अब ही पलटि कहौं सुनु बाता। जस कुंअर सुख निद्रा माता। (६८ १—३)

पुनरावृत्तियों से वह बचना चाहता है इसलिए किसी विषय का वर्णन यदि दो स्थलों पर आने वाला है तो वह यत्न करता है कि एक ही बार आए। उदाहरणार्थ जब कथा की नायिकाएँ अपने अपने माता-पिता से विदा लेकर अपने-अपने पतियों के साथ रहने के लिए उनके घरबारों में जाती हैं उस समय माता-पिता से अलग होने के उनके दुःख का वर्णन न कर कवि आगे ससुराल के लिए प्रस्थान करने के प्रसंग में उसका वर्णन करने का वचन देता है

बरना मैं न अलाया ससदन राजकुमारि।
दुओ कुंवरि जब चलिहहिं तब किछु कहब बिचारि।। (४६१ ६—७)

वह शालीनता की मर्यादाओं का भी ध्यान रखता है। नायिका का नख-शिख-वर्णन करते हुए वह उसके गुह्य अंग का कथन इसलिए नहीं करना चाहता है कि उसे गुरुजनों की लाज है

गुरुजन लाज मरहिं मन मानउं। तौ नहिं मदन भंडार बखानउं। (९७ २)

और उसके कुछ अंगों के कथन में स्वयं भी उनके सौन्दर्य से अभिभूत होने की बात वह स्वीकार करता है

देखि निकट किरटि बिन साया। परत दिस्टि मनमथ मन आसा।
जुगुल सम कनि मन पहराई। भरमेउ जीउ किछु कहा न जाई।(७ ३—४)

किन्तु यह होते हुए भी वह कथन अपने पात्रों की मर्यादाओं और रुचियों का ध्यान रखता है। उदाहरणार्थ उसने प्रमुख नायिका का जो नख-शिख-वर्णन किया उसमें उसके लिए यह अनिवार्य हो गया कि वह उसका भावपूर्ण चेष्टाओं, हाव भावादि का वर्णन न कर सके। इस कमी का वह अनुभव करता है और पाठक को विश्वास दिलाता है कि इस कमी की पूर्ति वह आगे नायिका से सम्पूर्ण वार्तालाप कराकर करेगा

भाव बरनि सिखहि पछितानेउँ। जस न आगे सिंगार बखानेउँ।
अब सिंगार रस आगे कहाई। कह रस बचन सुनत रस पाई।(९९ १—२)

यह ध्यान देने योग्य है कि अपनी इन विशेषताओं में वह अपने समकालीन और सहधर्मी जायसी से बहुत भिन्न हैं जायसी के लिए विषयान्तर भी प्रायः उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना प्रस्तुत विषय। उनकी रचना 'पदमावत' ऐसे विषयान्तरों से भरी हुई है। ऐसे प्रसंगों में कभी-कभी तो वे श्लेष का सूत्र पकड़ कर एक सर्वथा भिन्न और असंबद्ध विषय भी पर चले जाते हैं उदाहरणार्थ 'दिया = दिया हुआ प्रदत्त का गुणगान करते हुए वे उसी साँस में दिया = दीपक की भी बात कह जाते हैं, और तदनंतर दोनों को किसी प्रकार जोड़ देते हैं

> मनि जीवन औ ताकर जिया। ऊँच जगत महँ आकर दिया।
> दिया सो सब जप तप उपराही। दिया बराबर जग किछु नाही।
> एक दिया तेइँ दस गुन लाहा। दिया देखि सब भर मुख चाहा।
> दिया सो काज दुहुँ जग आवा। इहाँ जो दिया उहाँ सो पावा।
> दिया करै आगें उजियारा। जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा।
> दिया मँदिर निसि करै अँजोरा। दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा।
> हातिम करन दिया जो सिखा। दिया रहा धरमन्हि महँ लिखा।
> निरमल पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिया कछु हाथ।
> किछु न कोइ लै जाइहि दिया जाइ पै साथ॥ (१५५)

जायसी पुनरावृत्तियों से भी घबराते नहीं हैं। नायिका नखशिख दो बार वर्णित करते हैं एक बार रत्नसेन के समक्ष दूसरी बार अलाउद्दीन के समक्ष उनकी रचना में फूलों फलों पक्षियों हाथियों घोड़ों पकवान आदि के वर्णन बार-बार आते हैं। नायिका के अंगों का वर्णन करने में मंझन ने गुरुजन की लाज का जैसा संकोच किया है जायसी ने वैसा संकोच नहीं किया है। जायसी और मंझन अतः स्वभावतः एक दूसरे से बहुत भिन्न लगते हैं।

मंझन सच पूछिए तो उत्कृष्ट कथा-कार भर हैं महाकाव्य-कार बनने का उन्हें तनिक भी मोह नहीं है। उनकी रचना केवल प्रेम-रसिक के लिए है। जो प्रेम के तत्त्वों के सरस निरूपण मात्र में रुचि रखता है उसके लिए मंझन की रचना एक परम उत्कृष्ट कृति है किन्तु जो निरे काव्य रसिक हैं उन्हें यह नहीं संतुष्ट कर सकती है। मंझन की कला विषय के उत्तरदायित्व पूर्ण निर्वाह सतर्कता सफलता और सुरुचि का परिचय देती है। उनका लक्ष्य है प्रेम रस काव्य रस नहीं और उसी की दृष्टि से हम मंझन की इस कृति को देखना चाहिए, और यह कहना असमीचीन होगा कि इस दृष्टि से देखने पर उनकी सफलता स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

मंझन का जीवन-दर्शन

कुछ दिनों पूर्व जब कि मंझन का अध्ययन अपनी प्रारंभिक अवस्था में था और उनकी 'मधुमालती' की खंडित प्रतियाँ ही आलोचकों को देखने को मिली थीं यह विवाद काफी समय तक चलता रहा कि मंझन हिन्दू थे या मुसलमान। रचना के प्रारंभ के अंश को यदि छोड़ दिया जाए तो सचमुच यह निश्चय करना कठिन हो जाएगा कि मंझन का धर्म क्या था। रचना के कथा-भाग में केवल एक पंक्ति ऐसी आती है—जिस पर किसी आलोचक का ध्यान भी जाने की संभावना कम ही हो सकती थी यद्यपि वह पत्र-व्यवहार के एक सामान्य प्रसंग में आती है—जिसमें रचयिता के मुसलमान होने का स्पष्ट संकेत मिलता है क्योंकि इसमें एक हिन्दू पात्र से पत्र-लेखन में ईश्वर के नबी का स्मरण कराया गया है

प्रथमहिं सबरी नाउं गोसाईं। जो भरिपूरि रहा सब ठाईं।
दूजें लेउ नाउं तेहि केरा। उतरब पार लागि जेहि बेरा। (४२९ १—२)

स्पष्ट ही उद्धृत दूसरी पंक्ति की विचार-धारा इस्लाम की है। किन्तु अन्यथा रचना के पूरे कथा भाग में ऐसे कोई संकेत नहीं मिलते हैं जिनसे लेखक मुसलमान ज्ञात होता हो। पूरी कथा में हिंदू वातावरण का निर्वाह किया गया है, यथा : सर्वत्र हिन्दू त्रिदेवों की दिखाई गई है

तुम तुम्ह* साथ बजा बहु कीन्हें। रुद्र ब्रह्मा हरि अंतर दीन्हें। (१२८ ५)
बजा कीन्ह विधि अंतर राखी। रुद्र ब्रह्मा हरि कहुं दै साखी। (११ ५)
आदिहि सपत जो हम तुम्ह किएउ। रुद्र ब्रह्मा हरि अंतर दिएउ। (१११ २)

सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा की उत्पत्ति कमल से कही गई है

कुल मानुस कर आदि गरासा। ब्रह्म कंवल महं कुल कर वासा। (११५ १)

और प्रबंधकार के लिए यही उचित भी था क्योंकि उसकी कथा के समस्त पात्र हिन्दू थे। यही नहीं कवि स्वयं परमात्मा को 'ब्रह्म' कहता है :

पंडित मुनिजन ब्रह्म बिचारी। (१ ४)

वचन की उत्पत्ति वह हरि मुख से बताता है :

प्रथमहि आदि सिस्टि के पारा। हरि मुख बचन लीन्ह ओतारा। (२५ २)

उस आदि शब्द को वह ओंकार कहता है :

एकै बचन आदि उकारा। भल भव होइ व्यापा सर्व सारा। (२५ १)

वह विधाता के द्वारा चार वेदों का निर्माण कहता है :

चारि बेद बिधनै निरमएउ। (२९ २)

ईश्वर-वन्दना में उसे वह 'एकोंकार' कहता है

प्रेम प्रीति सुख निधि के दाता। दुइ जग* एकोंकार* बिधाता। (१ १)
जासु ठाउं बेरसै* सभ ठाईं। निरगुन एक ओंकार गोसाईं। (२ ४)

और कथा भाग में वह हरि-स्मरण करता है :

हरि हरि कहां गएउं कहं रहेउं। का किछु कहौं सिहेउ* का कहेउ।
कुंवर बात गहिम पैं सईं। बीच नीर मोहि हरि लै गईं। (६८ १—२)

इसलिए मंझन अवश्य ही एक उदार मुसलमान कवि था।

ऊपर प्रथम उद्धृत अपवाद अतः किस प्रकार मुख्य कथा में आ गया यह विचारणीय है। आगे हम देखेंगे कि मंझन एक सतर्क और समर्थ लेखक थे। मुख्य कथा भाग में वे जानबूझ कर इस प्रकार का स्पष्ट इस्लामी कथन नहीं ला सकते थे। अपने धार्मिक संस्कारों के कारण अनचीते ही वह इस प्रकार का कथन कर गए, ऐसा प्रतीत होता है।

किसी भी अन्य मुसलमान लेखक में इतनी उदारता कदाचित् नहीं मिलती है। किन्तु वे थे मुसलमान इसमें कोई सन्देह नहीं है उन्होंने रचना के आदि में ही ईश्वर-वन्दना के बाद मुहम्मद साहब की वन्दना की है (छंद ७—८) और चार खलीफाओं को स्मरण किया है (छंद ९) और तदनंतर शाह वक्त का गुणगान (छंद १ —११) करके अपने गुरु शेख मुहम्मद ग़ौस का अत्यंत श्रद्धापूर्ण उल्लेख किया है (छंद १४—२१)। हिन्दू प्रतीकों का प्रयोग उनकी उदार धार्मिक वृत्ति का ही परिचायक है।

किन्तु मंझन का जीवन-दर्शन प्रेम-मूलक है। उनके विचारों का प्रासाद प्रेम की नींव पर खड़ा है। इसीलिए रचना के आदि में ही जहाँ उन्होंने ईश्वर, चार खलीफाओं, शाहे-वक्त पीर, आश्रयदाता और शब्द-ब्रह्म का गुणगान किया है, उन्होंने प्रेम और तदनन्तर योग का स्पष्ट प्रतिपादन किया है। उनका कहना है कि प्रेम संसार में अमूल्य वस्तु है। विधाता ने प्रेम [को व्यक्त करने] के लिए ही संसार को उत्पन्न किया और उसी प्रेम को ग्रहण कर वह स्वयं भी व्यक्त हुआ। प्रेम की ज्योति से ही सृष्टि में प्रकाश हुआ, इसलिए प्रेम का समतुल्य संसार में नहीं है। विरला ही कोई भाग्यवान इस प्रेम के सुहाग को प्राप्त करता है। जो इस प्रेम के यज्ञ में जीवन की आहुति देता है वही [वास्तविक] राजा है। इस प्रेम की हाट में क्रय-विक्रय करना ही जीवन की सबसे बड़ी उपयोगिता है।

पेम अमोलिक नग सयसारा। जेहि जिउ पेम सो धनि औतारा।
पेम लागि संसार उपावा। पेम गहा बिधि परगट आवा।
पेम जोति सम सिस्टि अजोरा। दोसर न पाव पेम कर जोरा।
बिरला कोइ जाके सिर भागू। सो पावै यह पेम सोहागू।
सबद ऊँच चारिहु जुग बाजा। पेम पंथ सिर देइ सो राजा।
पेम हाट चहु दिसि है पसरी गै बनिजौ जे कोइ।
लाहा औ फल गाहक बनि डहकावै कोइ॥ (२८)

उनका कहना है कि संसार में जो कुछ भी इन्द्रिय-गम्य है वह प्रेम से परे कुछ भी नहीं है। प्रेम ही जीवन की ज्योति है, वह मृत्यु के परे अमरत्व देने वाला है।

पेम पदारथ अगम अमोला। निडरे जिउ जानहु यह बोला।
देखा सुना जहाँ लगि होई। पेम बिबर्जित किछु नहिं गोई।
पेम दिया जाके घट बारा। तेहि सब आदि अंत उजियारा।
बिरह जीउ जेहि के घट होई। सदा अमर रहै मरै न सोई। (२९ २–५)

मंझन इसी प्रेम से उस दिव्य ज्ञान की उत्पत्ति मानते हैं जिससे आत्मानुभूति प्राप्त होती है और जो जीव को सृष्टि के समस्त द्वन्द्व से ऊपर ले जाकर 'आदि आनन्द' की उपलब्धि कराता है।

जेहि जिउ परै पेम कै रेखा। जहँ देखै तहँ देख अलेखा।
उपजि जाइ हिय औ पुनि ग्याना। जहँ देखै तहँ आपु अपाना।
पुनि जौ ग्यान बिरिख पर चढ़ई। मरतबा है दोसर नहिं लेई।
सकल सिस्टि महँ रहै न दूजू। जहँ देखहि तहँ आदि अनन्दू। (१ १–४)

मंझन का कहना है कि यह प्रेम योग में ही नहीं प्राप्त होता है, यह तभी प्राप्त होता है जब कि दयालु ईश्वर दया-वश इसे किसी को प्रदान करता है।

कौनी पाठ पढ़े मोहि पावइ बिरह बढ़ि भौ सिद्धि।
जा कह देइ दयाल दया करि सो पावै यह निद्धि॥ (२० १–७)

यहाँ तक तो वे एक सामान्य मुसलमान सूफी ही कहे जा सकते हैं। प्रारम्भ में सूफी धर्म का विकास चाहे जिस प्रकार हुआ हो, बाद में चलकर उसने इस्लाम से समझौता कर लिया था, और वह भारतीय अद्वैतवाद जिसके लिए मंसूर जैसे सूफी सन्त को जीवन की बलि देनी पड़ी थी, सूफी धर्म में बहुत-कुछ तिरोहित हो गया था। किन्तु मंझन इससे आगे दिखाई पड़ते हैं। वे जीव को ही इस सृष्टि का केन्द्र-बिन्दु मानते हैं और कहते हैं सृष्टि के गूढ़ से गूढ़ रहस्य भी [illegible] हैं। संसार के समस्त गुण-दुर्गुण इसी जीव को अनुभूत होते हैं जो कि देह में स्थित है। वे कहते हैं

गुरु दीपक तेहि सिस्टि के पहा। कबहुँ जीउ जसि जानसि देहा।

तुम सुख सम सर्बसार कर जग भार्जै तेन छाउ।
सो सभ परसै जाइ ताहि दोसर औरु न काउ।। (३ ५–७)

वे कहते हैं कि 'तेरा ही सुख त्रिभुवन का सौन्दर्य है समस्त सृष्टि तेरे ही सुख के लिए दर्पण है, तेरी ही ज्योति से त्रिभुवन में प्रकाश विकीर्ण हुआ है समस्त सृष्टि में व्यक्त तू ही है सब कुछ तू ही है दूसरा कोई नहीं है तू सबमें व्याप्त है तू ही सब-कुछ है तू पूर्ण है, और सर्वत्र तेरा ही कर्तृत्व-भासमान है'

तैं जल निधि सब निधि कर भरा। काहे सरसि सरब जस परा।
तोर बरन तिरभुवन उजारा। सकल सिस्टि मुख दरपन तारा।
तोरिय जोति सकल परगासा। सिरगु लोक पाताल अकासा।
सकल सिस्टि महँ परगट तूही। सरबस तुइ दोसर कोइ नहीं।
जा कोइ नाव साइ पै आवा। सो का नाउ जहि नहि किछु सोभा।

कौन सो ठाउ जहाँ तैं नाहीं तीनि भुवन उजियार।
सिरगु बसु तैं सरबस पूरे सब ठाँ तोर बेवहार।। (११)

एक मुसलमान होने के नाते यह कहने के लिए मंझन में एक असाधारण साहस और निर्भीकता की कल्पना करनी पड़ती है। यह विचार-धारा उस युग के सामान्य सूफियों की पंक्ति से निकाल कर मंझन को उन सूफी संतों की कोटि में ला बिठाती है जो इस्लाम से लगाव रखते हुए भी भारतीय अद्वैतवाद के झुके हुए समर्थक थे। यह मंझन की एक बड़ी विशेषता है।

मंझन भारतीय योग-साधना में भी विश्वास रखते थे। उन्होंने जीव का यह स्वरूप प्रतिपादित करने के अनन्तर ही रचना के आदि में योग की क्रियाओं का उपदेश किया है यद्यपि उसे एक गौण स्थान ही प्रदान किया है जो नीचे उद्धृत उनके विचार की प्रारम्भिक पंक्तियों में प्रकट है। वे कहते हैं कि धर्म-योग में भी उस अलौकिक सुख का अनुभव किया जा सकता है यदि प्राणायाम के द्वारा शरीर की शुद्धि की जाए और तदनंतर अनाहत नाद की अनुभूति की जाए। इसी अनाहत नाद में स्थित होने पर कैलास (शिवलोक) का सुख प्राप्त होता है। किन्तु मंझन का कहना है कि करोड़ में कोई विरला ही व्यक्ति [इस प्रक्रिया से] वह कैलास सुख भोग पाता है

सब सुनु करम भाव किछु भाई। सिरगुन रूप बैसु सो भाई।
तन सो उग्र नहिं गहि स्वासा। अगिनि हीय कै ठाम बसासा।
सरबै पवन अगिनि उदगारई। तौ सरीर माया कर जरई।
तौ एहि सरब गात सुधि होई। जौ सहि कस्ट गहै गुरु भाई।
सो तही सुनि सों सबद बासा। ताही जोति सीगर कबिलासा।

कोटि माहि बिरला जन कोई भोगइ यह कबिलास।
सुख सरिस महँ बास जस जहाँ निरंजन बास।। (१२)

परिहरि सुधि बुधि सो ध्याना। तजा बदरजिन लावहिं ध्याना।
तौ समाधि लौ लागै जहा। आपु अपान पावै तू तहा।
निरमल जहाँ निरंजन सूना। तहाँ आपु सौं आपु बिहूना।
ग्यान धार अस्ना मसाना। सहा आपु सउँ आपु भुलाना।
सहज समाधि लाउ तै तहा। आपु मेटि आपु पाउ सुनि जहा।

सहज अमोलै माइ*लै* निमम मोक रहु मूति।
जहां न है औ काऊ औ एकौ करतूति।। ,(११)

इस प्रकार हम मंझन में प्रेम ज्ञान और योग के तत्त्व स्पष्ट रूप से मिलते हैं। किन्तु ऊपर के उनके कथनों को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो ज्ञात होगा कि मंझन के अनुसार चरम स्थिति अद्वैतता की है जो ज्ञान का एक स्वाभाविक परिणाम है, और उस ज्ञान की प्राप्ति प्रेम की साधना से होती है जो जीवन की एकमात्र स्पृहणीय वस्तु है कर्मयोग से भी उस अलौकिक सुख की अनुभूति संभव है जो ज्ञान से संभव है किन्तु कर्मयोग की यह साधना सब के लिए नहीं है करोड़ों में किसी-किसी को ही प्राप्य है। कहा जा सकता है कि वह जीवन-साधना जिसकी प्राप्ति सब के लिए समान रूप से संभव है मंझन के अनुसार प्रेम की है।

मंझन का प्रेम-दर्शन

मंझन ने अपने प्रेम-दर्शन को बहुत स्पष्ट रूप से विवृत करने का यत्न किया है। मुझे स्मरण नहीं पड़ता है कि किसी भी अन्य हिन्दी सूफी कवि ने इतनी पूर्णता के साथ उसे प्रस्तुत करने का यत्न किया है। यह विवृति कथा भाग में लेखक ने उस समय उपस्थित की है जब कथा-नायक मनोहर कथा की नायिका मधुमालती से पहली बार अप्सराओं की सहायता से साक्षात्कार-लाभ करता है। मधुमालती के प्रश्न करने पर वह विस्तार के साथ यह इस प्रेम का इतिहास उसके सामने रखता है। वह कहता है कि उन दोनों का यह प्रेम चिरंतन और शाश्वत है—उसमें उसकी प्रीति और उसके [विरह जनित] दुःख का संबंध उसी क्षण से है जिस क्षण से विधाता ने उनके प्राणों की सृष्टि की वस्तुतः उसकी प्रीति के नीर से उसकी मृत्तिका (शरीर निर्माण के तत्त्व) को सान कर ही उसके शरीर की रचना हुई है

कहै कुंवर सुनु प्रेम पियारी। तोहि माहि प्रीति पुरुब विधि सारी।
एहि जग जीव न माहि तोहि लावा। मैं जिउ दै तोर दुक्ख बसाहा।
मैं न आजु तोरे दुक्ख दुखारी। तोरे दुख मंह माहि आदि विग्हारी।
जहि दिन सिरेउ आम बिधि मोग। तेहि दिन मोहि बरनेउ दुख तोरा।
बर कामिनि ताहि प्रीति के नीर। मोहि माटी भा सानि सरीर।

पुरुब दिनम सेउ आमहुं तुम्हरी प्रीति के नीर।
मोहि माटी बिधि सानि कै तो यह सिरेउ सरीर।। (१११)

मंझन के अनुसार आदि मरु (शरीर) में जब प्राण भी नहीं आया था तभी प्रेमिका के विरह दुःख का दर्शन विधाता ने प्रेमी को करा दिया था इसी कारण यह विरह दुःख प्रेमी के लिए उसके प्राणों से भी अधिक प्रिय है और इस दुख पर वह अपने सहस्रों सुखों का त्याग करने के लिए प्रस्तुत रहता है उसके लिए इस दुःख में एक क्षण में जो आनंद है वह चतुर्युग के सुखों में भी उसे प्राप्य नहीं है

मैं मन तजि मंत्र्येउं दुख तोरा। मोर जिउ तोर तोर जिउ मोरा।
प्रान आदि पर हुत न आवा। बिधि तोर दुख मोहि तब दरसावा।
जो र विरस्थि रहौ मैं तोहीं। तोर दुख अधिक देव बिधि माहीं।
मैं एहि दुख पर बलिहारी। सहस सुक्ख एहि दुख पर वारी।
प्रीति जीभि पानी दुख बाधा। दुख मैं स्न नग निधि न राजा।

एक निमिख दुख कहुं नाहिं पूजै आदिहु जुग क मयाद।
कौन कौन सुख बरमब तेहि दुख के परसाद।। (११४)

उसके अनुसार इस विरह-दुख ने मनुष्य का सृष्टि के आदि ही में अपना धाम बनाया था जीव ने उसी समय से अपने को जीव करके जाना जिस दिन वह दुख सृष्टि में समाया इसलिए प्रेम दुख पर प्रेमी दोनो जगत्—इहलोक और परलोक—के समस्त सुखों को न्यौछावर करने को तैयार रहता है, क्योंकि यही दुख वह अमृत है जिसने उसे अमरत्व प्रदान किया है प्रेमिका के इसी विरह-दुख के कारण प्रेमी का संसार में जन्म ग्रहण करना सफल होता है

दुख मानुस कर आदि गरासा। बहु कवन मह दुख कर बासा।
जहि दिन तेहि दुख सिस्टि समाना। तेहि दिन तें जिउ कै जिउ जाना।
माहि न आवु उपजउ दुख तोरा। तोर दुख आदि सभागी मोरा।
अब सौ बड़ौं दुक्ख क कांवरि। दुइ जग देउ सुक्ख मउछावरि।
मैं अपान कै तोर दुख लिया। मरि कै अब सो अमृत पिया।

तोर दुक्ख मधुमाकति सुखदाएक संसार।
जहि जिय माहि तोर दुख उपजा बनि सो जग औतार।। (११५)

मंझन के अनुसार प्रेम इसी दुख पर मस्त होकर उसका साथी बना वह मनुष्य के घर में इसीलिए आया कि उसमें दुख का निवास था

सुनिउ जाहि दिन सिस्टि उपाई। प्रीति परेवा बिहेउं उड़ाई।
तीनिउ लोक ढूंढि कै आवा। आपु जाम कहु ठाउं न पावा।
तब फिरि मोहि घट पैसेउ आई। रहेउ लोभाइ न भएउ उड़ाई।
तीनि भुवन सब पूछी बाता। कहु तुई कस मानुष घट राता।
कहेसि दुक्ख मानुस कर बासा। जहां दुक्ख तहं मोर नेवासा।

जेहि ठां दुख होइ बस भीतर प्रीति होइ बस ताहि।
प्रीति बात का जानै बपुरा जहि सरीर दुख नाहि।। (११६)

मंझन कहते हैं कि इस प्रेम का रहस्य यह है कि प्रेमी और प्रेमिका आदि में एक साथ ही होते हैं इतना ही नहीं वे वस्तुतः एक होते हैं और तदनंतर द्विधा हो जाते हैं जैसे एक ही जल में दो मिट्टियाँ सानी गई हों अथवा एक ही जल दो प्यालियों में बहने लगा हो अथवा एक ही दीपक दो घरों में प्रकाश देने लगा हो अथवा एक ही जीव दो शरीरों में संचरित हुआ हो अथवा एक हो अग्नि दो स्थानों पर जला दी गई हो अथवा एक ही भवन के दो द्वार निर्मित किए गए हों

तैं मैं दुवौ सदा सब थामी। औ मंझन एक वह सवामी।
औ मैं तुइं दुइ एक सरीरा। दुइ माटी सानी एक नीरा।
एक बारी दुइ बहे पनारी। एक दिया दुइ घर उजियारी।
एक जीउ दुइ घट संचारा। एक अगिनि दुइ ठाएं बारा।
एकै हम दुइ कै औतारे। एक मदिल दुइ किए दुवारे।

एकै जोति रूप पुनि एकै एक पराम एक देह।
आपुहि आपु जा देइ बाइ चाहै तहि कर कौन संदेह।। (११७)

मझन प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे से सर्वदा अविच्छेद्य बताते हैं

तै जो समुद लहरि मैं तोरी। तै रवि मैं जस किरनि अंजोरी।
माहि आपुहि जनि जानु निरारा। मैं सरीर तुइ प्रान पियारा।
मोहि तोहि को पारै बेगराई। एक जाति दुइ भाउ देखाई।
जस गियान जानु देखेउ हेरी। हम तुम्ह दुहु परिचै कब केरी।
मजहू मोहि म बीसेभि बारी। मबरि धनु बिरह आदि बिरहारी।

मधुमा कोउ यम कर मझ्ा को दुहु जिय केर।
होत आपु मह परिचै भई नर घर जिउ फेरि।। (११८)

क्रमशः मझन का कहना है जब प्रेमी को प्रेमिका का साक्षात्कार हो जाता है समस्त सृष्टि उसे उसी से व्याप्त दिखती है। तब प्रेमिका का रूप उसके लिए रूप मात्र नहीं उस परम रूप का केन्द्र बिन्दु हो जाता है जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है उस प्रेमिका के रूप के माध्यम से वह उस दिव्य रूप का साक्षात्कार करता है जो शक्ति और शिव है जो त्रिभुवन का महा जीव है जो नानात्व में अपना विकास करके त्रिभुवन में व्याप्त हुआ है और उसका भोग कर रहा है

अब लहि बिनु जिय जीवन मारा। आजु देखि तोहि जीउ सभारा।
देखत जिय पहिचाना तोही। इहै रूप जई छबरा मोही।
इहै रूप तब अहेउ छपाना। इहै रूप अब सिरिट समाना।
इहै रूप सकती औ सीऊ। इहै रूप त्रिभुवन कर जीऊ।
इहै रूप परगट बहु भेसा। इहै रूप जग राक नरेसा।

इहै रूप त्रिभुवन जग बेरमी महि पवान आकास।
साइ रूप परगट मैं देखा तुव माथ परगास।। (११९)

मझन के अनुसार प्रेमी को फिर यह प्रेमिका का रूप ही अपने भीतर रूप मात्र की व्यापकता का दर्शन कराता है

इहै रूप परगट बहु रूपा। इहै रूप बहु भाउ अनूपा।
इहै रूप सब नैनन्ह जोती। इहै रूप सब सायर मोती।
इहै रूप मन फूलन्ह बासा। इहै रूप रस भवर बरासा।
इहै रूप ससिहर औ सूरा। इहै रूप जग पूरि अपूरा।
इहै रूप सत आदि निदाना। इहै रूप घरि घर मो छिपाना।

इहै रूप जल थर औ महिअर भाउ अनेक देखाउ।
आपु गवाये पा रे कार देखै सो सिसु देखै पाउ।। (१२)

कहना नहीं होगा कि प्रेम-योग का इतना निरूपण हिन्दी सूफी साहित्य में अन्यत्र नहीं मिलता है।

सुनने-समझने में मझन का यह प्रेम-योग सुगम ही प्रतीत होता किन्तु वस्तुतः यह अत्यन्त दुर्गम है क्योंकि इसकी प्राप्ति दुःख का भार सहने पर ही सम्भव होती है। ऊपर के उद्धरणों में यह स्पष्ट है कि प्रारम्भ में ही क्या नायक नायिका से कहता है

मैं जिउ दै तोर दुःख बेसाहा। (११३ २)

जीवन के सिरा में प्रथम दुःखदाई दुःख साथ मिला हमेशी-नाम नहीं है। उसका और प्रमिका का प्रथम परिचय भी दुःख में प्रारम्भ होता है

मैं न जानु तोर दुक्ख दुलारी। तोरे दुख सेउ मोहि आदि पिन्हारी। (१११ १)

मोहि न जानु उपजउ दुख तोरा। तोर दुख आदि सयानी मोरा। (११५ ३)

वस्तुतः उसके प्राणों का जिस दिन विधाता ने निर्माण किया था उसी दिन उस उस प्रमिका के विछोह का दुख भी दिखाई पड़ा था

जेहि दिन सिरेउ प्रान विधि मोरा। तेहि दिन मोहि दरसेउ दुख तोरा। (१११ ४)

प्रान आदि घट होत न आवा। विधि तोर दुख मोहि तब दरसावा। (११४ २)

सब कुछ त्याग कर उसने प्रमिका के इस विरह-दुख का संकलन किया अपने जीव को उसे दे डाला तथा उसी के जीव को अपना समझने लगा

मैं मन तजि संकरेउ दुख तोरा। मोर जिउ तोर तोर जिउ मोरा। (११४ १)

उसने इसी दुःख को जीवन का परम पुरुषार्थ मान लिया और इस पर उसने अपने समस्त सुखों को वार दिया

मैं एहि दुख केर बलिहारी। सहस सुक्ख एहि दुख पर वारी। (११४ ४)

इस दुख में ही वह समस्त संभव सुखों का आस्वादन करने लगा

एक निमिख दुख वह नहिं पूजै चारिहु जुग के सवाद। (११४ ६)

वह अब दुःख की सही कांवरी वहन करने लगा और दोनों जगत् के सुखों को उस पर न्यौछावर कर दिया

अब मैं वही दुक्ख के कावरि। दुइ जग देउ सुक्ख नेउछावरि। (११५ ४)

और यह सब कह चुकने के बाद भी नायक कहता है कि उसने अपने-आप को देकर प्रमिका का दुःख उसके विनिमय में लिया है पहले वह मरा है तब उसे अमृत-पान करने को मिला है

मैं अपान दै तोर दुख लिया। मरि कै बहुरि सो अमृत पिया। (११५ ५)

यह प्रमामृत सचमुच मंझन के अनुसार मरने के बिना नहीं प्राप्त होता है यही इस प्रम-साधना की सबसे बड़ी दुरूहता है।

कथा को समाप्त करते हुए भी लेखक ने एक मात्र यही सन्देश दुहराया है। वह कहता है कि इस जगत में अमरत्व लाभ करने का एकमात्र उपाय है प्रम में मरना। मरे हुए को मृत्यु नहीं मारती है इसलिए प्रम में जो मरण का अनुभव कर लेता है उसे काल भी नहीं मार सकता है एक बार प्रेम का यह साधक मर कर जीवन प्राप्त करता है तो काल उसके निकट भी नहीं आता है इसलिए यदि कोई लोग जगत् में काल के भय से उबरना चाहता है तो उसे प्रम की शरण में आना चाहिए

अमर न होत कोइ जग हारें। मरि जो मरै तेहि मारु न मारै।
प्रम कै आगि सही जेइं आंचा। सो जग जनमि काल सउं बांचा।
प्रम मरनि जइ आपु उबारा। सो न मरै काहू कर मारा।
एक बार जो मरि जिउ पावै। काल बहुरि [तेहि] नियर न आवै।
मिरितु क [फंद] जबहि होइ जया। मिहुवै अमर ताहि कै कया।
जौ जिउ जानहि काल सौं प्रम मरग करि नेम।
कोई दुइ जग काल सौं मरन लाभ जग प्रम॥ (५१८)

मधुमालती की सारी कहानी इसी प्रकार मर कर अमर होने की कहानी है। अप्सराओं की कृपा से प्रथम साक्षात्कार होने के बाद ही सुप्तावस्था में नायक नायिका से अलग कर दिया जाता है और वह मरण के कष्ट का अनुभव करता है। प्रमा के प्रयत्नों से उस नायिका से पुनर्मिलन का सौभाग्य प्राप्त

होता है किन्तु नायिका की माता दोनों को सुप्तावस्था में पुनः अलग कर देती है और वह पुनः मरण के कष्टों का अनुभव करता है। उसका तीसरी बार का ही नायिका से मिलन उसकी जन्म-जन्मान्तर की आकांक्षा को पूर्ण करता है और उनका स्थायी मिलन प्रमाणित होता है। ठीक यही दशा नायिका की भी हुई है। दूसरे साक्षात्कार अथवा पुनर्मिलन के अनन्तर तो न केवल उसे मरण की वह यातना भोगनी पड़ी है जो नायक को भी भोगनी पड़ी है उसको पक्षि-योनि में भी अवतरित होना पड़ा है जिससे मुक्ति लाभ करने के अनंतर ही वह इस योग्य हो सकी है कि अपने प्रेमी से मिलन का लाभ उठा सके। निस्सन्देह नायिका की स्थिति कवि ने अधिक दयनीय चित्रित की है और उसने अपने काव्य में बारहमासे की भी जो कल्पना की है, वह उसके इसी पक्षि-रूप में अवतरित होने पर की है।

यह है प्रेम की साधना का मरण-मार्ग। जायसी भी इसी मरण-मार्ग का उपदेश अपने प्रेम-काव्य 'पदमावत' में करते हैं। ये दोनों कवि दो भिन्न सूफी सम्प्रदायों के थे। और मंझन कहने को जायसी के परवर्ती थे किन्तु उस युग में दो कृतियों के बीच पाँच वर्षों का अन्तर एक प्रकार से कुछ नहीं था जब कि यातायात तथा कृतियों के प्रकाशन के साधन नितान्त अविकसित थे। इसलिए दोनों की प्रेम-साधनाओं में मरण-मार्ग की यह समान अनिवार्यता एक प्रकार से तत्कालीन समस्त सूफी प्रेम-साधना में उसकी अनिवार्य स्थिति की ओर संकेत करती है। अभी तक यह जायसी की ही प्रेम-साधना की विशिष्टता ज्ञात होती थी किन्तु मंझन की रचना ने तत्कालीन सूफी धर्म में उसकी व्यापक प्रतिष्ठा को प्रमाणित कर दिया।

इस प्रेम-साधना में एक ही बात ऐसी है जो प्रायः पाठकों को चक्कर में डाल देती है। वह है इस प्रेम की शारीरिकता। यह प्रेम जहाँ एक ओर आध्यात्मिक है, वहाँ दूसरी ओर मांसल भी है। जायसी ने इस शारीरिकता को केवल नायक और नायिका के विवाह के अनन्तर सुखशाला में दिखाया है मंझन उसे इसके पूर्व भी दोनों के दोनों बार के मिलन में चित्रित करते हैं। 'मधुमालती' के सपन बस में अप्सराएँ जब मनोहर को पहुँचाती हैं तो वे दोनों आलिंगन चुम्बनादि का सुख-लाभ करते हैं और जब पेमा उन्हें अपनी चित्रसारी में मिलाती है तो भी आलिंगन चुम्बनादि की समस्त कलाएँ प्रयोग में आती हैं। विवाह के अनन्तर जब वे मिलते हैं तब तो इन सब की अनिवार्यता स्वयं सिद्ध-सी है। अन्तर यही है कि विवाह के पूर्व के दोनों बार के मिलन में सुरत रस का आस्वादन वे शपथपूर्वक नहीं करते हैं और उसे वे विवाह के अनन्तर ही भोगते हैं। जायसी में विवाह के पूर्व नायक-नायिका का मिलन केवल शिव-मंदिर में होता है और वह भी क्षणिक ही है। उसमें इस शारीरिक अभिसार के लिए अवसर नहीं है। विवाह के अनन्तर सुरत रस का पूर्ण परिपाक उनमें भी हुआ है। प्रश्न यह है कि इस शारीरिकता का उपर्युक्त अध्यात्मवाद से क्या संबंध है। मेरी समझ में इसका उत्तर यही है कि सन्तों ने जीवन को एक समग्र रूप में देखा है। उनका जीवन-दर्शन शारीरिक आवश्यकताओं की उपेक्षा नहीं करता है। यह अवश्य है कि वह शारीरिक आवश्यकताओं को मर्यादित रखने का उपदेश करता है। इस शारीरिकता के अभाव में पुरुष और नारी की प्रेम-कल्पना मिथ्या होगी। इसलिए सूफी साधकों की यह मर्यादित शारीरिकता उनकी आध्यात्मिक प्रेम-साधना का एक ऐसा अंग है जो उनकी दृष्टि में उनके लक्ष्य में बाधक नहीं होता है। भारतीय साधनाओं में प्रायः शारीरिकता का सम्पूर्ण निषेध मिलता है इसीलिए भारतीय पाठक प्रायः इन प्रेम-काव्यों में इस प्रकार की शारीरिकता को देखकर इन्हें लौकिक प्रेम काव्य मात्र समझ बैठता है अथवा वह इस उलझन में पड़ जाता है कि वह इन्हें अलौकिक प्रेम का काव्य माने या लौकिक प्रेम का। किन्तु इस प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त होकर देखने पर ही हम वस्तुतः इन सूफी सन्तों की प्रेम-साधना का मर्म ठीक-ठीक ग्रहण कर पाएँगे।

प्रतियाँ

मंझन की 'मधुमालती' की अब तक चार प्रतियाँ प्राप्त हैं और प्रस्तुत कार्य में उन चारों का उपयोग किया गया है। ये प्रतियाँ इस प्रकार हैं

(१) रा यह प्रति रामपुर में वहाँ के नवाब साहब के पुस्तकालय में है। इसमें अबतक आरम्भ का एक पत्र नहीं है जिसके कारण रचना का प्रथम छंद नहीं रह गया है। प्रति सुरक्षित है। जिन दिनों 'मधुमालती' की एकचक्रा की प्रति समाचार-पत्रों में विज्ञप्त हुई थी मेरे एक एम ए के छात्र श्री विद्याराम 'कमल' ने मुझसे कहा कि रामपुर में उसकी जो प्रति नवाब साहब के पुस्तकालय में है उसकी प्रतिलिपि यदि मैं उपयोगिता समझूँ वह कर ले सकते हैं। मैंने कहा यह अच्छा ही होगा और तदनुसार कुछ छुट्टियों में उन्होंने वहाँ जा-जाकर प्रतिलिपि कर डाली और वह मुझे लाकर दे दी। यह प्रतिलिपि उन्होंने फ़ारसी लिपि में ही की थी क्योंकि मूल प्रति भी फ़ारसी लिपि में है। दो वर्ष हुए जब मैंने रचना का सम्पादन प्रारम्भ किया उक्त पुस्तकालय के लाइब्रेरियन को प्रति को कुछ दिनों के लिए भेजने के लिए लिखा और उसके पाठ का प्रस्तुत संस्करण के लिए उपयोग करने की अनुमति चाही तो प्रति को भेजने में उन्होंने असमर्थता प्रकट की किंतु वहाँ आकर उसे मिलान और उसके पाठ का प्रस्तुत संस्करण के लिए उपयोग करने की अनुमति प्रदान की। इसके लिए मैं उक्त पुस्तकालय के अधिकारियों का आभारी हूँ। समयाभाव में मैं रामपुर जाकर प्रति का उपयोग नहीं कर सका और श्री विद्याराम 'कमल' की प्रतिलिपि का ही उपयोग इस संस्करण के लिए कर सका। अतः मैं इस प्रतिलिपि के लिए श्री विद्याराम 'कमल' एम ए० का आभारी हूँ।

इसकी पुष्पिका इस प्रकार है

तम्त मधुमालत तस्नीफ़ शेख मंझन कमारीख पंजम शहर बकरीद माह राज सेह शंबा दर मुक़ाम निजामत अकबराबाद दर हवेली वाकी पेश मरहूम इस्माईल नवाब हुसैन अली खाँ दर अहद बादशाह मुहम्मद शाह गाजी बखत फ़क़ीर आसी शाकिरुलमुल्क फ़क़ीर उल् अल्लाह बलमुहम्मद नकिरम मियाँ अब्दुल रहमान मस्लिमहू मुतवत्तिन कस्बा बड़ो सराय तमाम शुद ११६२ हिजरी।

इसकी एक अन्य प्रतिलिपि भारत कला भवन हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी में और एक माइक्रो-फ़िल्म कौंसिल ऑफ़ नेशनल आर्काइव्स नई दिल्ली में है।

भा यह प्रति भारत कलाभवन वाराणसी में है। यह प्रति भी फ़ारसी लिपि में लिखित है। यह आकार में ९ × ७" के लगभग होगी। यह प्रति आदि मध्य और अंत में त्रुटित है, जिसके कारण प्रस्तुत संस्करण के छंद १—३९ ४१—७८, १७—११ ५१८ तथा ५१ इसमें नहीं हैं। यह बहुत ही सावधानी से लिखी हुई है और फ़ारसी के लिपि-चिह्नों का प्रयोग इसमें बड़ी पूर्णता के साथ किया गया है।

भा यह प्रति भी उपर्युक्त भारत कला भवन में है। यह अत्यधिक त्रुटित है। यह नागरीदास की लिखी हुई है और अन्य प्रतियों में कदाचित् सबसे प्राचीन है। यह आदि में प्रस्तुत संस्करण के छंद ८९ तक और फिर उसके बाद प्रस्तुत संस्करण के छंद १४१ से ६७७ तक त्रुटित है। जिस समय मैं इस प्रति के पाठ का मिलान करने गया यह प्रति नहीं मिल सकी। इसका सं० १९९९ में सावधानी से

(४७ २ १७८ २, १८३ ३ १८९ १ १९८ ४ २५४ ५, २५५ ३ २५७ ६ २६४ ३ २६५ १ २९१ ४ २९२ ७ २९७ ६ ३ ६ ७ ३ ८ १ ३२१ ५ ३४२ १ ३५४ २, ३५४ ३ ३५४ ४ ३५८ ५ ३५४ ६ ३५४ ७ ३६५ ४ ३७१ १ ३७७ ६, ५११ ४ ५११ ५ ५११ ६ ५१३ ३ ५१३ ४ ५२ ५) मेंड़ > मेड (१२ १) डुढार > डुढार (१२ १) मड़ावै > मडावै (१३४ १) मड़ाई > मडाई (१०९ ५) अड़ावा > अडावा (१८ ३) पोड़इ > मोढ़इ (१९६ १) मड़ > मड (२१६ ५) माड़ > माड (२२८ २) उड़ावसि > उडावसि (२५८ १) ओड़न > ओडन (२७३ ५) मोड़ि > माडि (२७४ १) मड़ाइय > मडाइय (३९९ ४)।

(६) 'ढ' के भी बिना बिंदु के लिखे होने से उसे 'ड' समझने के कारण चढ़ावा > चढावा (४८ ५) बूढ़ि > बूढि (५५ १) चढावै > चढावै (१३३ १) चढ़ावहि > चढावहि (१३३ ४) गाढ़ा > गाढा (२१ ५) काढ़ा > गाढा (२१ ५) ढाढ़स > ढाढस (२४८ १) काढ > काढ (४२२ ३) काढ़ि > काढ (५१५ ४) ठाढ़ > ठाढ (५१५ ५)।

(७) 'न' को 'र' पढ़ने के कारण हुनेउ > हुरेउ (२८९ ४) अंतन > अंतर (४८४ १)।

(८) 'ब' और 'व' के एक समान लिखे होने से 'व' को 'ब' पढ़ लेने के कारण अवधन > अबधन (२ ७ ३४ ५) वारा > बारा (११ १) सवाई > सबाई (५४ ४ ७१ ४ २११ १ २१२ १ २१६ ४ २८७ ४ २८९ ५ ४२५ ५, ४११ ७) वार > बार (१४६ १) विवि > बिबि (२२१ ६) वर > बर (४७९ १)।

(९) 'म' को 'स' पढ़ने के कारण मग > सम > सग > संग (२२९ ३) मुग = सुग (४२८ ३)।

(१०) 'ब' और 'व' के एक समान लिखे होने से 'ब' को 'व' पढ़ने के कारण कंबलावत > कवलावत (१५३ ७) अबधि > अवधि (१७८ १) नव < नब (४१ १) निबारै > निवारै (४११ ४)।

(११) व्यंजन द्वित्व सूचक बिन्दु को 'म्' पढ़ने के कारण मकरम्धुज > मकरधुज > मकरम्धुज (३३४ १)।

(१२) पुनरावृत्ति-सूचक २ को न समझ कर छोड़ देने के कारण चढि२ > चढि (२ ५ ३)।

ए०

[illegible] प्रति नागरी में लिपिबद्ध है किंतु इसमें फारसी लिपि से गड़बड़ियाँ [illegible] की भरमार है यथा

(१) अकार' का चिह्न न होने से अनुमान से उसे 'इकार' या 'उकार' समझने के कारण आसन > आसनि (२१५ ७) बोम > बोम (२६ १) कुमार > कुमारि (३१५ ६) बार > बारि (३१५ ७) मनरह > मुनि निरह (३३९ ६) कुमर > कुमरि (४५ ? ५३४ ७) महमहा > [illegible] (४ ९ ७)।

(२) स्वर का चिह्न न लगा होने से या उस पर ध्यान न जाने कारण नाभि > नाम (८ १) अंगि > अंग (९ ४) भमि > भम (९१ ६) गिरा > गरा (३३३ ७)

राखि > रास (१११ ७) छाडि > छाड (१५१ १) पंखि > पंख (१५१ ६) सिधि निधि > सिध निध (१७४ १) बिरहु > बरहु (११९ १) बसि > बस (१२९ ४) हुति > होत (१५६ २) काहि > काह (१६६ ५) चीन्हति > चीन्हत (१८४ १) राउरि > राउर (५१४ २)।

(३) 'पेम' का चिह्न न लगे होने से या उस पर ध्यान न जाने के कारण एकोंकारि > एककारी (१ १) हरिगुन > हरिगन (४३६ ५)।

(४) 'बे' को 'प' पढ़ने के कारण भएउ > पठौ (११ १) बस > पसु (२८८ २)

(५) 'टे' और 'वे' के एक से लिखे जाने से 'टे' को 'व' पढ़ने के कारण करवट > करवत (१८७ ४) ठहराना > पहराना (२६२ २)।

(६) 'इ' और 'रे' के एक समान लिखे होने से अथवा इ के ऊपर लगे हुए चिह्न पर ध्यान न जाने के कारण, बड़ > बर (२६ १)।

(७) 'काफ' को 'गाफ' समझने के कारण जाके > जाग (२८ ४) कुटिला > गुटिला (९२ २) कोल > गोले (१ १ १)।

(८) गाफ' को 'काफ' समझने के कारण अगनित > एकत (८१ ३) गाढ़ > काढ़ (४ २ २) ग > क (५ १ १)।

( ) 'उ' सूचक 'वाव' को 'ओ' सूचक समझने के कारण मह > मोहि (२४ ४) हुते > होते (८१ १) हुति > होत (१५६ २) हुत > होत (५३२ २ ५१२ १ ५१६ १)।

(१) ओ' सूचक 'वाव' को 'उ' सूचक समझने के कारण दौराए > दुराये (४ १)।

(११) 'नू' को 'यें' पढ़ने के कारण जनि > जे (२७ ६) जनि > ज (१५८ ५)।

(१२) बीच के 'हैं' को न पढ़ने के कारण गहबर हिय > गहबरी (२१८ २)।

(१३) 'हे' को पूर्ववर्ती वर्ण से मिलाकर पढ़ने के कारण पहिराएसि > फिराएसि (४५२ ३)।

(१४) अंत के 'हैं' को न पढ़ने के कारण महि > म (२९ ६ १४९ ३ २३७ ५ २४५ २)।

(१५) 'ये' को अलग पढ़ने के स्थान पर पूर्ववर्ती वर्ण से मिलाकर पढ़ने के कारण भोगइ > भोगी (१२ ६) मय > मई (८८ ४) जिय > जै (११८ २) करियै > करी (४१६ ४) हिय > है (४१४ १) मेरई > मरै (४९९ ६)।

(१६) 'ये' को 'ई' के स्थान पर 'ए' अथवा 'ऐ' के रूप में पढ़ने के कारण बिरही > बिरहे (७९ ४) गढ़ी > गढ़े (९१ १) बरिआरी > बरिआरे (१ २) कही > कहै (१५२ ६) मरी > मरे (२२१ २) परिहरी > परिहरे (२२१ २) पीइ > पइ (२७२ ५) अरथानी > अरथाने (१६२ ७) हुती > हुते (४७२ १) कही > कहै (५७ ४)।

(१७) 'ये' को 'ए' के स्थान पर 'ए' समझने के कारण म > मै (८४ २)।

(१८) 'ये' या 'ए' या 'ऐ' के स्थान पर 'ई' पढ़ने के कारण बगाने > बगानी (८७ १) लागे > लागी (८७ १) चौपै > चौपी (८८ १) मेक > मीक (८८ २) परै > परी (१४५ १) चमकै > चमकी (२२९ ५) परिहरे > परिहरी (२३ ६) माए > माई (२७७ ५) मुहाए > मुहाई (२७७ ५) भाए > भाई (२८५ १)

भाए > भाई (२८५ १) साजे > साजी (२८९ २) बाजे > बाजी (२८९ २) तोरे > तारी (२९२ ४) मोरे > मारी (२९२ ४) रहे > रही (१५७ ५) भाए > भाइ (१५९ ३) मधुरै > मधुरी (४८९ ७)।

उपर्युक्त के अतिरिक्त कुछ उदाहरण यद्यपि कम ही ऐसे भी मिलते हैं जिनमें दोनों लिपियों से संबंधित विकृतियाँ एक साथ मिलती हैं और फ़ारसी के पूर्व भी नागरी लिपि से संबंधित विकृतियाँ हुई ज्ञात होती हैं यथा

अगवन > वनवन (ना) > अगवन (फा) > अनौन (१ ६) आलसि > आलसी (ना) > आलमी (फा) > आलसैं (१४९ ७) मरि > मरी (ना) > मरी (फा) > मरै (११ ६)।

इनमें से अंतिम स्थल की विकृति मा में भी है। आगे हम देखेंगे कि मा तथा ए में पाठ-विकृति संबंध भी है इसलिए इस प्रकार का विकृति-साम्य स्वाभाविक है।

एक बात और। प्रति की लिपि से भिन्न लिपि से संबंधित विकृतियाँ इस प्रकार ऊपर के विवेचन से प्रकट होगा सब से कम मा में हैं। मा में उसकी अपनी लिपि फ़ारसी से संबंधित विकृतियाँ भी समस्त प्रतियों की तुलना में कम हैं। इसलिए मा अत्यंत सतर्क पाठ-परंपरा की प्रति प्रमाणित होती है। मा के बाद मा का स्थान इस विषय में आता है। किंतु हम देख चुके हैं कि मा का केवल एक-तिहाई प्राप्त हुआ है जिससे उपर्युक्त प्रकार की विकृतियों की संख्या इतनी कम न समझनी चाहिए जितनी ऊपर है। फिर भी शेष दो प्रतियों की अपेक्षा कम ही होनी चाहिए। अतः मा प्रति की भी पाठ-परंपरा काफ़ी सतर्क ज्ञात होती है। यह प्रति भी बहुत प्राचीन है इसलिए असंभव नहीं कि मूल के निकट होने के कारण ही इस प्रकार की विकृतियाँ उसमें अधिक न हों। उपर्युक्त के बाद रा आती है। रा का कोई पूर्वज नागरी में था और काफ़ी असावधानी से लिखा हुआ था उपर्युक्त से यह प्रमाणित है। ए का स्थान उसके भी बाद आता है। उसका कोई पूर्वज फ़ारसी लिपि में था जो बहुत असावधानी से लिखा हुआ था। यह उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट ज्ञात होता है।

प्रतियों का पाठ-संबंध

नीचे प्रतियों की उन निश्चित पाठ विकृतियों पर संक्षेप में विचार किया जा रहा है जो एक से अधिक प्रतियों में समान रूप से पाई जाती हैं और क्रमशः इस विकृति-साम्य के आधार पर उन प्रतियों के परस्पर विकृति-संबंध और मूल से उनके समस्त पाठ-संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

(१) मा० मा० ए०

(१) १ ३ ५ स्वीकृत पाठ है

मरम बात 'जैस कुई' पनारा।
चाँद कुई जैस पेम ब्यवहारा।

'जैस कुई पनारा' के स्थान पर मा में 'कमी मीन पनारा' मा में 'कम मीन पनारा' और ए में 'कम मनि पनारा' है। प्रेम व्यवहार पद और कुमुदिनी का ही लोक-प्रसिद्ध है चंद और मीन का नहीं।

(२) १ ५ ५ स्वीकृत पाठ है

आनहिं'* थात छदरि पँ जावै।
संभी सेउं चोरी महि फावै।

'आनहि' के स्थान पर मा ए म 'वानिहि' और मा म 'थान' है। किन्तु 'वानिहि' और 'थान' सर्वथा असगत हैं। प्रसग से 'आनहि' (अन्य ही से) ही सिद्ध होता है, यद्यपि यह पाठ शेष प्रति रा में भी नही आता है और इसके स्थान पर उसमें पाठ 'मू ठी' आता है जो स्पष्ट ही प्रक्षिप्त है।

(३) १२४ ४ स्वीकृत पाठ है

मोर दुख मोहि पूछसि कहा।
आपुहि पूछु फिरे बस कहा'।

'फिरे बस कहा' के स्थान पर मा मा मे फिये दहु काहा' और ए मे फिये जो काहा' है। पूर्ववर्ती चरण मे 'कहा' के स्थान पर इनमे भी 'काहा' है जिससे मा मा ए के पाठ में तुक की पुनरुक्ति है।

(४) ४५७ ४ स्वीकृत पाठ है

'सीस' भरौं मोहि पार्थ समाई।

'सीस' के स्थान पर प्रा में 'मैन' (मैन) तथा मा ए मे 'मैन' है। इन पाठों की निरर्थकता स्वतः प्रकट है।

(५) ४६ ५ स्वीकृत पाठ है

इहा दुखी तुम्ह नैनन्ह मोती।
'जहां मैन सीपनि महं मोती'।

द्वितीय चरण का पाठ इनमें है मा मा जहां मैन सीपन्ह गज मोती।
ए जहां मैन सीप गज मोती।

सीपों में 'गज मोती' नही होते वे गज-मस्तक में होते हैं। इसलिए मा मा ए का पाठ स्पष्ट ही विकृत है।

(६) ४८७ ६—७ स्वीकृत पाठ है

राजकुमारि तुम्हारी बचा बहिनि है मोरि।
कहिय तौ 'ताराचंद कहं देहुं गांठि जुई जोरि॥

मा मा में 'ताराचंद कहं के स्थान पर 'ताराचंद सेउं' तथा ए में 'ताराचद मों है। ताराचंद से गाँठ पमा की जोड़ी जाने को थी इसलिए 'जुई गांठि जोरि' और पमा ताराचद को दी जाने को थी इसलिए 'ताराचंद कह राजकुमारि तुम्हारी—[जो] बचा बहिनि है मोरि—देहु' की सार्थकता प्रमाणित है। 'ताराचद देहुं गाठि जुई जोरि' का आशय होगा 'ताराचंद से दोना की गांठ जोड़ दूं' जो कि प्रसंग मे अपेक्षित नही है।

(७) ४८९ ६—७ स्वीकृत पाठ है

'नगर जो' लोग राय औ रानै पंच मंदिर जेवनार।
एक एक जन आमैं सहस सहस परकार॥

(८)

मा मा ए में 'नगर जो' के स्थान पर 'बाँमन' (बामन—मा) है। राजा ने नगर भर को आमंत्रित किया था

घर घर नगर बधावा बाजा।
पुर पहुम नेवते सब राजा।

इसलिए नगर-निवासियों को भोजन कराने की भी बात कही जानी चाहिए, और वह यही जाती है। 'बाँमन' पाठ अतः प्रक्षिप्त लगता है जो ब्राह्मणों का उल्लेख भोज के प्रसंग म न देखकर किया गया लगता है।

(२) मा० ए०

(१) ११ १ स्वीकृत पाठ है

भी अनूप द्वार बनी बनाई।
नाम दूरी फेरि बनाई।

नाम दूरहि के स्थान पर मा म है काम बमीन (< कमान) है और ए मे है काम कमान है। मा ए की पाठ-विकृति स्पष्ट है कमान का काम बन्दुक का निर्माण करना नहीं है।

(२) १२७ ४ तथा ५ का स्वीकृत पाठ है

४ निमिष लागि जो आपुहि नासा।
तासहु 'नरक' माँहि भा बासा।
५ पाप पथ चढ़ जाइ सत राजा।
नरक अमी फल सेद पै बाजा।

मा तथा ए म उपर्युक्त १२७ ४ छंद १२९ की ४ है। इस अर्द्धाली के स्थान पर मा ए म है

निमिष लागि पापी ना होई।
कै कै पाप निरन्तर मोई।

स्वीकृत पाठ में मा ए पाठ की यह अर्द्धाली १२९ की ४ है।

१२७ ४ तथा ५ के स्वीकृत पाठ में नरक तथा नरक का जो तारतम्य है वह उसके वास्तविक होने का समर्थन करता है। मा ए के आधार पर यदि स्वीकृत १२७ ४ स्वीकृत छं १२९ में चली जाती है तो १२७ के कथन यहाँ का तारतम्य समाप्त हो जाता है और १२९ मे वह उतनी संगत भी नहीं होती है।

(३) १७७ ४ स्वीकृत पाठ है

मन अनन्य मोहि पद्म बिचारी।
कौहिन परेउ मंदर मह भारी।

मा ए मे अर्द्धाली के दूसरे चरण का पाठ है

मा कौहिन परेउ मद्दर के भारी।
ए बाहिन परा मारि उर भारी।

किन्तु 'मद्दर' का वर्णन दूसरी अर्द्धाली में आ चुका है

समुद्र लहरि हम्माँहि बपियारी।
निसा भुअंग कौहिन बहरारी।

और इस अर्द्धाली का पाठ मा ए म भी प्रायः उपर्युक्त ही है।

(४) १८१ ६—७ स्वीकृत पाठ है

मुखवंती और नागरि मनमोहनि सर्मसार।
धनि सिरिस्टि जेइ सिरजी धनि धनि मूरतनि हारि॥

मा ए में 'मूरतनिहारि' के स्थान पर पाठ 'सिरजनहार' है। चरण ७ के पूर्वार्द्ध में 'धनि सिरिस्टि जेई सिरजी' आ ही चुका है, इसलिए 'सिरजनहार' पाठ में स्पष्ट पुनरुक्ति दोष है।

(५) १९९ ५ स्वीकृत पाठ है

'जोबन सों' किछु आनि न जाई।

मा में 'जोबन सो किछु' के स्थान पर 'जोबन सेउँ' और ए में 'अब सौतुख' है दोनों में 'किछु' या उसके स्थान पर अन्य कोई दो मात्राओं का शब्द नहीं आता है, जिससे छन्द-दोष है।

(६) २२७ ६—७ स्वीकृत पाठ है

सम पाछिन्ह सुख पेमहि कुंवर सुनावा रोइ।
किछु न 'जाई' जाना आगें बिधि का लिखा का होइ॥

मा ए में 'जाई' शब्द नहीं है। प्रथम म ज्ञात होता है कि सातवें चरण तक कुमार का कथन चलता है जिसमें वह भविष्य के बारे म कहता है कि 'आगे विधि का लेख क्या होगा यह कुछ भी नहीं जाना जाता है'। किन्तु चरण की मात्राएँ २५ से घटाकर २४ करने के विचार से 'जाई' निकाल दिया गया लगता है जिससे वाक्य का अर्थ पूरा नहीं निकलता है।

(७) २४८ १ स्वीकृत पाठ है

राकस कै माती ओहराचा।
उन पुनि निहुरि सीस भुइ लावा'।

'भुइ लावा' के स्थान पर मा ए में कर लावा' है। कर लावा' निरर्थक है, यह प्रकट है।

(८) २६१ ४ स्वीकृत पाठ है

'लाडे भले (?) औ कुंत कटारी।
कुंवर लीन्ह सब अब सभारी।

मा. ए में अर्धाली के प्रथम चरण के स्थान पर है

मा एहि अंतर लागै भै भारी।
ए एहि अंत जो भी मुइ भारी।

यहाँ भय लगने का कोई प्रसंग नहीं है कुमार राक्षस स युद्ध के लिए सन्नद्ध हो रहा है, और आगे ही कहा जाता है

५ निसंग्म जीउ बिरह कर भूसा।
तेहि पर गोरख भेम अवधूता।

'निसंग्म' का अर्थ रचना भर में प्राय 'निर्भय' है जो यहाँ पर भी है, यथा

१८४ ६ गौगम माजें आला निसंग्म सेज सुख सोव।
१ ३ ६ निसरम चित्त चकेसी बन मह रहसि निसंक।

इसलिए मा ए का पाठ संगत नहीं है। लगता है कि फ़ारसी में लिखे हुए उक्त चरण के पाठ को ठीक ठीक न पढ़ सकने और इसलिए निरर्थक समझने के कारण मा ए के किसी पूर्वज में यह पाठ-परिवर्तन किया गया।

(९) १५१ ४ स्वीकृत पाठ है

मइ कारिख कैसें बहु 'खोई'।

कारिख जान होइ तो धोई।

मा० ए० में 'खोई' के स्थान पर भी 'धोई' है जिससे पुनरुक्ति-पूर्ण तुक-दोष आ जाता है।

(१०) १५७ २ स्वीकृत पाठ है

हूरे पख 'पथ' अरुन सुठोरा।

मा० ए० में 'पथ' शब्द नहीं है जिससे छद-लोप प्रकट है।

(११) १८१ १ स्वीकृत पाठ है

'मौन बचन सुनि कामिनि' कुमरहि कहेउ हंकारि।

मा० ए० में चरण का पूर्वार्द्ध है

ए० बीना बचन सबद सुनि

मा० बीना बचन सबद कामिनि सुनि

'बचन' और 'सबद' दोनों समानार्थी हैं इसलिए मा० ए० पाठ पुनरुक्ति से दूषित है।

(१२) १८० १ भामिनि अति कुल निरमला।

सोमबस जस 'पूनिउ कला'।

मा० में 'पूनिउ' के स्थान पर 'सूरज' तथा ए० में 'सूरज की' है। कुमार के व्यक्तित्व का वर्णन हो रहा है जो सोमवंशी था। अतः 'सोमबंस' में 'पूनिउँ (पूर्णिमा) कला' ही पाठ संगत होगा 'सूरज कला' अथवा 'सूरज की कला' नहीं।

(१३) ४ ८ ९ स्वीकृत पाठ है

'भौ कुँवार रितु परब उछाहा।

सब्नी अमन माँह रितु ब्याहा।

मा० ए० में पहले चरण के स्थान पर है

मा० और अवर एक परब उछाहा।

ए० औ अपरब पाप परब उछाहा।

मा० ए० पाठ की निरर्थकता और शेष पाठ की जो स्वीकृत है सार्थकता और संगति प्रकट है।

(२) मा० मा०

(१) ३ ८ १ स्वीकृत पाठ है

पूछेसि कुँवर कहाँ गा बारी।

मानें बिरह जा ना मोहि मारी।

दूसरे चरण के स्थान पर मा० मा० में है

मा० मानें बसेउ माइ गौगुन भारी।

मा० मान जो भी मोहि औगुन भारी।

रचना में 'मान' और 'औगुन' एक-दूसरे के विरोधी के रूप में आते हैं

औगुन मान न जानौं कहु को का मानि मानि। १४ ७

कुँवर चढ़ मानें मैं लेना।

मान रूप औगुन कर लेना। १४१ १

कै औगुन कै मानौं न जानौं कैइ औड हरि लीप। १४७ ७

कै गौतुक कै सपना अहा।
कहुँ सेउँ पै जाइ न कहा। (१४८ १)
यह कैसें कै सपन कहाई।
गौतुक भाउ सभै बहि पाई। (१४८ २)
सपन कहौ तौ सपन न होई।
गौतुक कहा जाइ नहिं सोई। (२२५ ५)
गौतुक सपन न जानौं यहुं का देखेउं सोइ।
सपन नहीं तौ गौतुक गौतुक कहौं न होइ॥ (२२५ ६-७)
गौतुक सपन न जा किछु कहा।
देखत चकित चकित होइ रहा। (१४६ २)

अत मा भा का पाठ विकृति-जनित है यह प्रकट है।

(२) ४११ १ स्वीकृत पाठ है

अपने निकट 'बर बिक्रम' राजहि दीन्ह नेवास।

'बर बिक्रम' के स्थान पर मा मा म 'पाट पर' है। 'निवास' 'पाट' (=सिंहासन) पर नहीं किया जा सकता है अत पाठ-विकृति प्रकट है।

(३) ५ १ ७ स्वीकृत पाठ है

मधुमालति सेउ* रानी कहँ बात समुझाइ।
कुंवरि चकितु तेहि देस कह कहा सेउ कोउ नहिं आइ॥

'कहँ बात समुझाइ' के स्थान पर मा मा मे है

मा चाँपि हिये महं लाइ,
मा : कहँ चाँपि हिय लाइ।

'हिये महं लाइ' और 'हिय लाइ' के साथ 'चाँपि' निरर्थक है।

(४) ५ १ ४ स्वीकृत पाठ है

जौ पिय कर मन रखि ना पाई।
चित अपनें सुख तुम्हं सेउं जाई।

मा मा का पाठ है

मा ओह राजा बहु लोभी अहही।
चित अपनें सुख तेहि सौं रहही।
मा वै राजा बहु बालम अहही।
चित अपनें सुख तुम्हं सेउं रहही।

पूर्व की अर्धाली है

सोइ सुहागिनि दुहुं जग माहां।
जेइ सेवा कै राखेउ नाहां।

बाद की अर्धाली है

नाहं सेव अगम सुख मारै।
नाह सेव परततर तारै।

अत यहाँ पर 'राजा' के 'लोभी या बालम' होने का कोई प्रसंग नहीं है, ... है
द्वारा पति की इच्छाओं की पूर्ति का।

(५) ५१० ५ स्वीकृत पाठ है

तुम्ह चरनन तर मोंम हमारा।
करेहु जैस मत मान तुम्हारा।

मा मा म द्वितीय चरण है मा परा अहै अब आनु तुम्हारा।
मा परा अहा अब आनु तुम्हारा।

मा मा का पाठ अबहीन है यह प्रकट है।

(४) मा० ए०

(१) २९१ १ स्वीकृत पाठ है

सुमत कुवर मधुमालति माता।
हुरसित भएउ 'पीत राउ*' राता।

'पीत राउ' के स्थान पर मा मे 'पिता मुनि' और ए मे पिता गौ' हैं। प्रकट है कि मा ए के पाठ सर्वथा असंगत हैं क्योकि 'पिता' का कोई प्रसग नही है।

(२) ३१ २ स्वीकृत पाठ है

कत धमनी माहि दूध पियावा।
दूध ठाउ कस विस न 'सियावा*'।

मा ए मे 'सियावा' के स्थान पर क्रमशः पिआउ' (=पिआवा) तथा 'पिआए है 'पियावा प्रथम चरण में आ चुका है और 'विष' के लिए सियाना' अधिक आता भी है। इसलिए मा ए का पाठ दूषित है।

(३) १२२ २ स्वीकृत पाठ है

काज न पारौं कहि सखि आवें।
जिम न काज रहै यम के 'आवें'।

जावें' के स्थान पर भी मा ए मे क्रमश 'आवै तथा 'आवे हैं। मा ए पाठ म तुकविषयक पुनरुक्ति दोष प्रकट है। वह उतना संगत भी नही है जितना अन्य पाठ है।

(४) ४५४ ४ स्वीकृत पाठ है

नहीं भेद आपन तुम्ह काही।
पै ही नहीं भइ है काही।

दूसरे चरण के 'पै ही नही के स्थान पर मा मे 'पुनि हीं महल' तथा ए म 'कहि ही महल' है। किंतु 'महल' का कोई प्रसग नहीं है।

(५) ८५ ६ स्वीकृत पाठ है

ताराचद बात यह 'भाई' सप मिले दुवौ कुमार।

भाई के स्थान पर मा म मुनि भइ तथा ए म मुनि भई है। मुनि भई की निरर्थकता प्रसग म प्रकट है।

(६) ४६१ ४ स्वीकृत पाठ है

कबहू अहेरें मन बहरावहि।
कबहूं हार हिमुरे सावहि।

प्रथम चरण का पाठ मा मे है कबहू अहेरे हार जे लावहि और ए म है कबहूं पाट के हार लमावहि।

द्वितीय चरण का पाठ मा० में है 'कबहुँ आप आपुन जिमावहीं' और ए० में है 'कबहीं कोइ जिउ बहुलावहिं'।

'हेंगुर' का अर्थ 'चौगान' होता है। अर्थ ज्ञान न होने के ही कारण दोनों मा० तथा ए० के पाठों में परिवर्तन किया गया है। (किंतु दोनों के पाठों की यह विकृति कुछ अलग-अलग ढंग से भी हुई है इसलिए पृथक् इसे दोनों का विकृति-साम्य नहीं कहा जा सकता है।)

(७) ४७ ६ स्वीकृत पाठ है

'मूरुहि पैयहि डोर गहें कर' कौरी चमकहि चाल।

मा० ए० में चरण का पूर्वार्द्ध है 'मूरुहि पम डोरी कर गहीं'। यहाँ तो पम। और उसकी सन्धिया का साधारण भूल के मूलने का प्रसंग है 'प्रम डोरी' के पकड़ने का कोई प्रसंग नहीं है।

(८) ५ ६ ५ स्वीकृत पाठ है

समुझि समुझि सब साथ जो 'लसा'।
अब बिछुरत दुख कठिन 'दुहेला'।

'लसा' तथा 'दुहेला' के स्थान पर क्रमशः मा० ए० में 'लसी' और 'दुहेली' हैं। मा० ए० के पाठ का लिपि-दोष प्रकट है [इसमें] 'लसा' और 'दुख दुहेला' ही होना चाहिए।

(५) रा० प०

(१) २ २ ३ स्वीकृत पाठ है

सम मुकुताहि सना जिमि डारहिं।
बचन सुरस साकिम 'जिमि' आरहिं।

रा० ए० में दूसरे चरण का 'जिमि' नहीं है। भूल प्रकट है।

(२) २८६ ७ स्वीकृत पाठ है

तन बलि मन बलि जीउ बलि धन बलि जग 'बलि' मरउ।

रा० ए० में चरण का अन्तिम 'बलि' नहीं है। भूल प्रकट है।

(३) ३२२ ३ स्वीकृत पाठ है

यह मुनि संजम कर्मी बिसमानी।
भूले अमर दुइ 'अगिनि लानी'।

'अगिनि लानी' के स्थान पर रा० ए० में है 'अमी बिहगानी'। रा० ए० का पाठ निरर्थक है और पाठ-विकृति स्वतः प्रकट है।

(४) ३२८ ६ ७ स्वीकृत पाठ है

कौन दाम देहि औगुन बरन कराबास माहिं।
'औगुन इहै जो मरम निठि पर मैं अस्थारेउँ नाहिं।।

दोहे के दूसरे चरण का पाठ रा० ए० में है

रा० औगुन इहै जो मिस्टि मई मई अवस्था ताहि।
ए० औगुन इहै मरम निस्टि परी अवस्था तोहि।

'अवस्था' शब्द का प्रयोग 'मरन' या 'विपत्ति' के अर्थ में हुआ है यथा।

नहि अवस्था तें कर नासी। (२ ७ १)
परी अवस्था सब अनुमानी। (२ ६ ४)

छीता मीता क्यों हरी रावन हूँ पतिसाहि।
परी अवस्था राम की राम कहै दुख काहि॥
(जान कृत कथा छीताई की' छंद ३)

अत 'परी अवस्था सोहि' सर्वथा असमत है।

(५) ४९२ १ तथा २ स्वीकृत पाठ है

१ उठा कोह फुनि मनमथ दापा।
मान कीन्ह भा काम बियापा।

२ बय समान अही जो बाला'।
भै रवि जबो 'सोम भीर पाला'।

२ के अही जो बाला' के स्थान पर ए में आइ जो बयापा' और रा म आइ जो बयापा' है, इसी प्रकार 'सोम भी पाला' के स्थान पर ए में 'सोर (<सूर) भै पापा' तथा रा में 'सूर होइ पापा' है। इन पंक्तियों में नायिका म काम के व्याप्त होने पर मान किस प्रकार गल जाता है इसके लिए उक्ति की गई है। प्रकट है कि रा ए का पाठ सर्वथा असमत है। 'बियापा' शब्द १ में आ चुका है इसलिए रा ए का पाठ पुनरुक्ति से दूषित भी है।

(६) ४९८ ६ – ७ स्वीकृत पाठ है

चित्रसेनि मन मारें बिसमो सहित पर आइ।
कहिन्हि आइ कुँवरन्ह सउँ* कहा जो बिक्रम राइ॥

रा ए म दोहे के द्वितीय चरण के स्थान पर है

रा कहेनि कुवर सौं राजा बिनती बहुत कराइ।
ए कहा आइ कुवरन्ह सो राजा बिनती कराइ।

इन पंक्तियों के पूर्व चित्रसेन बिक्रम राज के पास कुमारो का यह संदेश लेकर जाते हैं कि वे अब अपने अपने घर जाना चाहते हैं और बिक्रम राज मान लेते हैं कि कुमारो के गौने का प्रबंध होना चाहिए। स्वीकृत पाठ के अनुसार चित्रसेन कुमारों से बिक्रमराज की स्वीकृति की बात कहते हैं। 'बिनती बहुत कराइ' या 'राजा बिनती कराइ' पाठ मे 'कहा' क्रिया का कोई कर्म नहीं रह जाता है और आशय अधूरा रह जाता है।

(७) ५१ १ स्वीकृत पाठ है

ममए' दिन हम मिलनी दाऊ।

रा ए में ममतें के स्थान पर 'दमए' है। वे प्रत्येक मास की द्वितीया को मिलनी रही हैं (२५० १ ७)। इसलिए 'दमए' पाठ मूल में संभव नहीं है।

उपर्युक्त विकृति-साम्यो के संबंध में निम्नलिखित बातें और ध्यान देने की हैं

(१) मा मा ए के विकृति-साम्य के उपर्युक्त स्थल रचना के लगभग चौथाई मात्र के हैं यद्यपि जैसा ऊपर बताया जा चुका है मा का अधिकांश खंडित है और मा भी आद्यन्त खंडित है। अन्यथा विकृति-साम्य के स्थलों की संख्या लगभग चौगुनी होती।

(२) मा ए के विकृति-साम्य के उपर्युक्त समस्त स्थल पर मा खंडित है। इसलिए इन मा ए के विकृति-साम्य में भी मा मा ए का विकृति-साम्य होने की पूरी संभावना है। और साम्य के स्थलों की संख्या भारी बड़ी है। भा आदि खंडित है। अन्यथा इनकी संख्या कदाचित् कुछ और बड़ी होती।

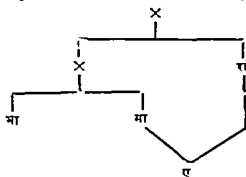
१

(३) मा मा के विकृति-साम्य के उपर्युक्त समस्त स्थल मा मा ए के उपर्युक्त विकृति साम्य के स्थलों की भांति रचना के लगभग चौथाई मात्र में हैं क्योंकि मा तथा मा दोनों उपर्युक्त प्रकार से खंडित हैं। अन्यथा विकृति-साम्य के स्थलों की संख्या लगभग चौगुनी होती।

(४) मा ए के विकृति-साम्य के उपर्युक्त स्थल रचना के लगभग तिहाई मात्र में हैं क्योंकि जैसा ऊपर कहा गया है मा का लगभग दो-तिहाई खंडित है। अन्यथा विकृति-साम्य के स्थलों की संख्या लगभग तिगुनी होती।

(५) रा ए दोनों ही लगभग पूर्ण प्रतियाँ हैं। इसलिए इनके ऊपर दिए गए निश्चित विकृति साम्य के स्थलों में उस प्रकार की वृद्धि की संभावना नहीं है जैसी ऊपर हमने अन्यों के संबंध में देखी है।

फलतः यह प्रकट है कि विभिन्न प्रतियों के उपर्युक्त प्रकार के संबंध निश्चित पाठ-विकृतियों की एक पर्याप्त रूप से बड़ी संख्या पर आधारित हैं और इसलिए सुनिश्चित हैं। इन संबंधों को यदि हम रेखा चित्र द्वारा व्यक्त करना चाहें तो इस प्रकार करेंगे—



इससे ज्ञात होगा कि मा और मा एक कुल की हैं, रा भिन्न कुल की है। तथा ए दोनों कुलों के मिश्रण का परिणाम है।

संपादन-सिद्धान्त

प्रतियों के उपर्युक्त पाठ-संबंधों के आधार पर निम्नलिखित प्रकार से रचना का संपादन किया गया है।

१ जो पाठ समस्त प्रतियों में समान है उसे स्वीकार किया गया है।

२ जो मा और मा में से किसी में और रा में है उसे स्वीकार किया गया है।

३ जहाँ पर मा मा में एक पाठ और रा में भिन्न पाठ है, वहाँ पर दोनों में से जो पाठ-विषयक समस्त अंतरंग और बहिरंग संभावनाओं की दृष्टियों से संगत ज्ञात हुआ है वह स्वीकार किया गया है।

४ ए प्रति का पाठ दोनों शाखाओं के मिश्रण का परिणाम होने के कारण रचना के पाठ-निर्धारण के लिए उन्हीं स्थलों पर देखा गया है जहाँ पर मा और मा दोनों के समान रूप से खंडित होने के कारण दो में से किसी का भी पाठ प्राप्त नहीं है, और ए का पाठ रा के पाठ से भिन्न है।

५ रचना के प्रथम छंद में केवल ए का पाठ प्राप्त होने के कारण आवश्यक सुधारों के साथ उसी को ग्रहण करना पड़ा है।

इन सिद्धान्तों का प्रयोग न केवल विभिन्न स्थलों पर पाठ-निर्धारण के लिए किया गया है वरन् रचना के छंद-निर्धारण के लिए भी—अर्थात् कौन से छंद मूल रचना के होने चाहिए और कौन से प्रक्षिप्त इस प्रश्न के हल करने में भी इन्हीं सिद्धान्तों का आश्रय लिया गया है।

रचना की दो स्वतंत्र धाराओं के पाठ प्राप्त हो जाने से पाठ-निर्धारण अपेक्षित प्रकार का ही सका है। पाठ-संशोधन की आवश्यकता बहुत ही कम पड़ी है। छोटे-से-छोटे संशोधन भी तारक-चिह्नों द्वारा निर्दिष्ट कर दिए गए हैं जिससे उनके संबंध में कोई भ्रम न हो सके।

रचना का कथा-सार

(मीम कोष्ठकों में दी हुई संख्याएं इस संस्करण के छंदों की हैं।)

(४४) कनैगिरि गढ़ नाम का एक नगर था जहाँ का राजा सूरजभान था। उसकी कोई संतान न थी। (४६) इस बीच एक तपस्वी वहाँ आया। (४७) बारह वर्षों तक राजा ने उसकी सेवा की (४८) तो उसने स्वीकार करके एक फल दिया जिसे राजा ने अपनी पटरानी को खिलाया। (४९) परिणाम-स्वरूप दसवें मास में उस रानी के गर्भ से एक राजकुमार का जन्म हुआ। (५०) पंडितों ने उसके ग्रह-नक्षत्रादि का विचार कर उसका नाम मनोहर रक्खा। (५१) किन्तु उन्होंने बताया कि चौदहवें वर्ष और ग्यारह मास की अवस्था होने पर इसे इसका प्रेमपात्र मिलेगा जिसके विरह में यह वियोगी बनकर एक वर्ष तक फिरता रहेगा। (५६) पाँचवें वर्ष में कुमार ने विद्यारंभ किया (५८) और बारहवें वर्ष तक में वह समस्त विद्याओं में पटु हो गया। (५९-६१) राजा वृद्ध हो चला था अतः कुमार ने जब बारहवें वर्ष में पदार्पण किया राजा ने उसका राजतिलक कर दिया।

(६६) जब वह चौदह वर्ष और ग्यारह मास का हुआ उसकी वह वह-दशा आ गई जो ज्योतिषियों ने बता रक्खी थी। (६४) एक दिन कुछ परदेशी नर्तक आए जिनका नृत्य अर्ध रात्रि तक होता रहा। (६८) तदनंतर जब कि राजकुमार अपनी चित्रसारी में सो रहा था कुछ अप्सराओं ने उसे देखा और उन्होंने उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर उसके अनुरूप किसी कन्या की खोज करने का निश्चय किया। (६९) उनका ध्यान महारस नगर के राजा विक्रमराय की कन्या मधुमालती की ओर गया (७०) और दोनों के रूप की तुलना करने के लिए वे उसे उसकी शय्या के साथ वहाँ उठा ले गईं जहाँ मधुमालती शयन कर रही थी और उसकी शय्या मधुमालती की शय्या के पास रखकर (७१) वे तमाशा देखने चली गईं। इतने में मनोहर जाग कर देखता है कि उसकी शय्या के पास एक सुन्दरी की शय्या है जो सो रही है। (७५) इस सुन्दरी को देखकर पूर्व (जन्म) की प्रीति उसके हृदय में अंकुरित हो गई (७६-९७) और वह उसके अंग-प्रत्यंग की शोभा का निरीक्षण करने लगा। (९८) उसने अपने मन में कहा कि उस व्यक्ति का जन्म कैसा इस संसार में धन्य होगा जिससे यह सुन्दरी प्रेम करेगी।

(९९-१) इतने ही में वह सुन्दरी जाग पड़ी और निकट ही दूसरी शय्या बिछी हुई और उस पर एक राजकुमार को देखकर डर गई किन्तु फिर धैर्य धारण कर (१ १-१ ३) वह राजकुमार से उसका परिचय आदि पूछने लगी। (१ ५) कुमार ने अपना परिचय दिया। (१ ७) तदनन्तर उसने उस सुन्दरी से उसका परिचय पूछा। (११) कुमारी ने अपना परिचय दिया। (१११) कुमार उसके प्रेम में अभिभूत होकर अचेत उसके चरणों में गिर पड़ा तो कुमारी ने उस उपचार किया और (११२) उसने इस प्रकार अचेत हो जाने का कारण पूछा। (११३) इस प्रश्न

के उत्तर में कुमार ने कहा कि जिस दिन विधाता ने उसकी सृष्टि की उसी दिन से यह उसका प्रेमी था (११४ ११५) और उसके विरह में दुःख का भार वहन करता रहा है, (११६) क्योंकि प्रीति उसी घट में निवास करती है जिस घट में दुःख रहता है। (११७) वे दोनों एक-दूसरे से सर्वथा अभिन्न थे (११८) वह (कुमार) शरीर था और वह (कुमारी) उसका प्राण थी (११९) अब तक वह बिना अपने जीव के जीवन व्यतीत करता रहा था आज ही उसे देख कर उसके शरीर में वह जीव वापस आया था। (१२१) कुमारी ने उसके प्रेम की यह वार्ता सुनी तो पूर्व [जन्म] की प्रीति का उसे भी स्मरण हो आया और दोनों प्रेम के माध्यम से अभिन्न हो गए। (१२२) कुमारी ने यह तथ्य स्वीकार करते हुए कहा कि उन दोनों को (अब) कोई भी अलग नहीं कर सकता था। (१२४) कुमारी की इस प्रेम वार्ता को सुनकर कुमार के शरीर में काम जाग्रत हो उठा। (१२५) कामिनी के उरोजों के स्पर्श के लिए उसने हाथ बढ़ाया तो कुमारी ने उसे रोका (१२८) और कहा कि यह अधर्म न कर पहले उन्हें ब्रह्मा और हरि को साक्षी देकर यह शपथ करनी चाहिए कि जन्म-जन्मान्तर में वे प्रेम का निर्वाह करें। (१२९) कुमार ने कहा कि जब वे शरीर और प्राण की भाँति परस्पर अभिन्न थे तो उनमें शपथ की बात कैसी ? (१३१) किन्तु फिर दोनों ने परस्पर शपथ ली और दोनों ने अपनी-अपनी मुद्रिकाएँ परस्पर बदलीं। (१३२ १३४) दोनों प्रेम की समस्त तन्मयता के साथ एक दूसरे से मिलते रहे (१३५) और शय्या बदल कर सो गए। (१३८) तदनंतर अप्सराओं ने लौटकर कुमार को उस शय्या के साथ जिस पर वह सोया हुआ था उसके घर वापस पहुँचा दिया।

(१३९ १४१) सखियों ने राजकुमारी को जगाया और उसकी अस्त-व्यस्त अवस्था का कारण उससे पूछा तो उसने बताया कि स्वप्न में—जो सप्रत्यक्ष जैसा ही था—उसने एक राजकुमार को देखा था जिसने उसकी ऐसी अवस्था की (१४२) वह प्रीति लगाकर और उसे छोड़ कर चला गया उसके विरह की पीड़ा इतनी उग्र थी कि मरना उससे अच्छा था। (१४३ १४४) सखियों ने उसे धैर्य बँधाया।

(१४५) यहाँ कुमार जब जागा मधुमालती के विरह में विकल हो उठा। (१४६ १४८) उसकी यह दशा देखकर उसकी सहजा नामक धाय ने इसका कारण पूछा तो उसने सारी कथा सुनाई, (१४९ १५२) और उसे अपना यह निश्चय भी बताया कि अब वह मधुमालती को प्राप्त करने के लिए एक बार प्राणों की बाजी लगाए। (१५४ १५५) राजा और रानी (कुमार के माता पिता) ने कुमार की यह दशा सुनी तो उन्होंने वैद्यों को बुलाया किंतु वैद्यों को कोई व्याधि कुमार के शरीर में ज्ञात न हुई। (१५६) राजा के एक महता (महामात्य) ने जब कुमार की यह दशा देखी तो उसने भाँप लिया कि कुमार किसी के विरह में व्यथित था। (१६०-१६३) उसके पूछने पर कुमार ने जब रात्रि की सारी कथा सुनाई तो महता ने उसे किसी नारी के फेर में पड़ कर जीवन को बरबाद न करने के लिए अनेक प्रकार से उपदेश दिया (१६४ १६५) किंतु कुमार पर उन उपदेशों का कोई प्रभाव न हुआ। (१६७-१६९) जब महता ने अपनी असफलता की बात राजा रानी को बताई वे दौड़े हुए आए और कुमार के चरणों में गिर पड़े कुमार को उन पर दया आई और उसने उनसे महारस नगर जाकर मधुमालती को प्राप्त करने की अनुमति माँगी। (१७० १७१) कुमार के माता-पिता ने अपनी वृद्धावस्था की ओर संकेत करते हुए उससे बहुतेरा कहा कि वह उन्हें छोड़ कर न जाए, (१७२ १७४) किंतु कुमार ने उनकी एक न सुनी और उसने मधुमालती की खोज में निकलने के लिए योगी का वेष बनाया। (१७५) राजा रानी ने पुनः एक बार समझाया किंतु उसका भी कोई प्रभाव कुमार पर न हुआ।

(१७५) सवेरा होने पर कुमार दल तथा परिग्रह के साथ चल पड़ा। चलते चलते वे सब समुद्र तट पर पहुँच गए। कुमार सब को लेकर जलयान पर चढ़ा। (१७७) चार मास तक समुद्र में चलते रहने पर जलयान भँवर में आ पड़ा और जलयान के टूटने से वह समस्त दल-परिग्रह समुद्र के पेट में चला गया। (१७८ १७९) कुमार मात्र किसी प्रकार बच रहा और समुद्र की एक लहर ने ले जाकर उसे तट पर अचेत डाल दिया। (१८०) वहाँ पर एक घना वन था कुमार उसी वन में चल पड़ा।

(१८२) चलते चलते दूसरे दिन वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ पर एक चौखंडी थी। (१८३) उस चौखंडी के भीतर जाने पर उसने सय्या पर एक कुमारी को सोती हुई पाया। (१८६) उसको इस निर्जन स्थान में देख कर कुमार को आश्चर्य हुआ। (१८८) राजकुमारी जब जागी उसने कुमार को देख कर उसका परिचय पूछा (१८९ १९१) और पूछा कि वह कैसे वहाँ आया था। (१९२ १९४) कुमार ने भी उससे इसी प्रकार का प्रश्न किया। (१९५) कुमारी ने बताया कि वह चितबिसराउ नगर के राजा चित्रसेन की कन्या थी और पेमा उसका नाम था। (२ ५) एक दिन वह अँबराई में खेल रही थी जब कि मधुकरा के उत्पात से उसकी सहेलियाँ भागने लगीं। (२ ९) इसी समय एक राक्षस वहाँ आ निकला और वह उसे इस वन खंड में उठा लाया। (२११) राक्षस का नाम सुनकर कुमार वहाँ से चलने को हुआ तब तक पेमा उसके पैरों में गिर पड़ी। (२१७) कुमार ने उसे उठाया और वह उसके दुःख से द्रवित हो उठा। (२२२) कुमारी ने बताया कि राक्षस के आने में अभी बहुत विलंब था और जब तक वह उसे अपनी वार्ता न सुनाए वह उसे जाने नहीं दे सकती थी। (२२३) कुमार ने यह सुनकर बताया कि वह अपनी प्रेमिका मधुमालती की खोज में निकला था। (२२४) तदनंतर उसने अपने देशादि का विवरण दिया और उस रात्रि की घटना सुनाई जिसके कारण वह मधुमालती पर अनुरक्त हुआ था। (२३२-२३९) पेमा ने प्रेम और विरह की सराहना की और उसे धैर्य बँधाया। (२४) तदनंतर उसने मधुमालती के संबंध में उसे बताना प्रारंभ किया।

(२४१) उसने बताया कि मधु तो उसकी बाल-सहेली थी केवल एक वर्ष से जब से वह राक्षस के द्वारा हर कर यहाँ लाई गई थी वह उसके बारे में नहीं जानती थी। (२४५) कुमार यह सुन कर उसके पैरों पर गिर पड़ा और मधु के बारे में बताने का अनुरोध उससे करने लगा (२४७-२५) तो उसने बताया कि किस प्रकार मधु जब अपनी माँ की गोद में थी तभी उसकी माता उसको लेकर एक अवसर पर उसके घर आई थी और दोनों की माताओं में परस्पर स्नेह-संबंध स्थिर हुआ था जिसके परिणाम-स्वरूप मधु की माता वचन-बद्ध होकर प्रत्येक मास की द्वितीया को उसे लेकर उसके घर आती रही थी। (२५१) अतः उसने कहा कि यदि कुमार उसके घर जाकर उसका हाल और अपना उद्देश्य उसके कुटुंबियों को बताता उसके घर के लोग उसे मधु से मिला देते (२५२) और तदनंतर उसका उद्देश्य सिद्ध हो जाता। (२५३) यह विवरण सुनते ही कुमार प्रफुल्लित हो उठा। (२५४) उसने पेमा से कहा कि जब उसने उसे बहिन मान लिया था और अब वह उसे छोड़ कर नहीं जा सकता था। (२५५ २५६) पेमा ने उसे बहुतेरा समझाया कि उसके लिए वह अपने प्राणों को संकट में न डाले (२५७-२५) किंतु कुमार ने कहा कि वह अब राक्षस को मार कर ही घर में जा सकता था। (२६०) इतने में पेमा ने कहा कि राक्षस के लौटने की बेला हो गई थी कुमार सोचने लगा कि अस्त्र उसके पास नहीं थे अब वह राक्षस को किस प्रकार से मार सकता था। पेमा ने कहा कि अस्त्र वह उसे दे सकती थी। (२६१) तदनंतर राक्षस के द्वारा मारे गए प्राणियों के जो अस्त्र वहाँ पर थे उन सब को लाकर पेमा ने कुमार के सामने रख दिया और कुमार ने उनमें से अपने काम के अस्त्र ले लिए।

(२६२) राक्षस आ पहुँचा। (२६३) उसने कुमार से प्रश्न किया कि वह कौन था और क्या अपने प्राण देने के लिए वहाँ आया था। (२६५) कुमार ने कहा कि वह उसे मार कर पेमा को ले

जाता। (२६६) यह सुनते ही राक्षस उस पर झपट पड़ा कुमार ने भी तलवार चलाई जिसके परिणाम-स्वरूप राक्षस का एक मस्तक और दो भुजाएँ टूट गए। पर राक्षस उन्हें उठा कर चला गया और एक क्षण में फिर उस मस्तक और उन भुजाओं को लगाकर युद्ध करने के लिए लौट आया ?। (२६८) इस युद्ध में न किसी की जीत हुई और न किसी की हार। इतने में रात आ गई और राक्षस अपने चारे की खोज में चला गया। (२६९) पेमा ने अवसर पाकर राक्षस के पुनरुज्जीवन का रहस्य बताया कि राक्षस का जीव वहाँ से दक्षिण दिशा की वाटिका के एक अमृत-वृक्ष में बसता था उस अमृत वृक्ष के उखाड़ने से ही वह मर सकता था अन्यथा नहीं। (२७ २७२) यह सुनकर कुमार पेमा के साथ उस वृक्ष के पास गया और दोनों ने मिलकर उसे जड़ से काट फेंका। (२७३) राक्षस रात्रि का अन्त होने पर लौटा और उसने पुन कुमार को युद्ध के लिए ललकारा। (२७४) दोनों में घमासान युद्ध हुआ जिसमें आहत होकर राक्षस उस अमृत फल के वृक्ष की ओर दौड़ा किंतु (२७५) जब वह अमृत-वृक्ष उसे काट कर गिराया हुआ मिला उसने निराश होकर अपने प्राण त्याग दिए।

(२७८) तदनंतर वे वहाँ से चलकर चितबिसराउ नगर आ गए। (२८६) चित्रसेन को जब यह समाचार मिला बड़े बधावे के साथ वह पेमा को घर लिवा लाए। (२९१) चित्रसेन से जब पेमा ने अपने उद्धार की कथा कही (२९२) उन्होंने कुमार को बुलाकर उसका बड़ा सम्मान किया। (२ ४) चार दिनों के पश्चात् कुमार ने पेमा से विदा लेकर मधुमालती की खोज में जाना चाहा तो पेमा ने कहा कि दूसरे ही दिन द्वितीया थी जिस दिन मधु अवश्य आती और तब वे एक-दूसरे से मिल जाते। उसने कहा कि वह सवेरा होते ही चित्रसारी में जा बैठना तो वहीं पर वह उसे लेकर आ जाती।

(२९६) दूसरे दिन मधुमालती आई। (२९ ३ १) पेमा ने मधु के पूछने पर अपने उद्धार की सारी कथा उसे बताई और उस प्रसंग में उसने उसके प्रेमी राजकुमार का भी साभार उल्लेख किया। (३ २३ ४) पहले तो मधु ने यह स्वीकार करने में आना-कानी की कि किसी राजकुमार से उसका कोई प्रेम प्रसंग रहा था (३ ६) किंतु जब कुमार से मँगवा कर पेमा ने उसकी वह मुद्रिका उसे दिखाई जिसे उसने कुमार को दिया था (३ ७) मधु को यह स्वीकार करना पड़ा। (३१५ ३१६) तदनंतर पेमा ने उसे ले जाकर चित्रसारी में मनोहर से मिलाया।

(३१७-३२) मिलने पर मनोहर ने मधु से अपनी विरह-कथा कही (३२२ ३२३) तो मधु ने भी उसे अपनी विरह-गाथा सुनाई। (३२८ ३३४) मनोहर ने तदनंतर उससे अधरामृत का पान कराने और अपने सुख का दर्शन कराने का अनुरोध किया तो मधु ने उससे यह वचन चाहा कि जब तक दोनों का धर्म-विवाह न हो जाए दोनों में सुरत-सुख न हो और मनोहर से इस वचन को पाकर मधु उससे लिपट कर सो रही।

(३३५) मधु के लौटने में अत्यधिक विलंब होता देख कर उसकी माता रूपमंजरी को चिंता हुई। (३३६) पेमा की माता मधुरा ने उसका बहुतेरा समाधान कर उसे रोकना चाहा (३३७) किंतु रूपमंजरी ने उसकी एक न सुनी और वह स्वयं चित्रसारी में जा पहुँची। (३३९) जब उसने वहाँ मधु और मनोहर को परस्पर लिपटकर सोते हुए देखा वह अत्यधिक क्रुद्ध हुई और पेमा को बुरा-भला कहने लगी जो मधु को वहाँ ले आई थी। (३४) पेमा ने दोनों के मिलन और प्रेम का पूर्ववर्ती प्रसंग बताया और कहा कि दोनों में प्रेम चिरंतन था। (३४१) यह सुन कर रूपमंजरी ने पेमा से कुमार का परिचय प्राप्त किया (३४४) और स्वीकार किया कि उसका चयन ठीक लग रहा था क्योंकि मधु के भवन में किसी ने किसी अन्य को हेम-मणि-जटित पर्यंक पर रक्खी थी। (३४५) तदनंतर उसने

दोनों को एक-दूसरे से अलग कराकर मनुष्य मनोहर को कनैगिरि तथा मनुष्या मधु को अपने घर भिजवाया और मथुरा से विदा होकर वह स्वयं भी अपने घर आ गई।

(१४६) जब कुमार जागा वह सिर पीट-पीट कर रोने लगा और (१४७) मधुमालती की खोज में वह पुनः निकल पड़ा। (१४८) उधर मधु जब जागी वह भी विरह से व्यथित होकर रुदन करने लगी। (१४) रूपमंजरी ने घर आकर मधु को जब इस प्रकार रुदन करते और बिलखते देखा (१५ १५१) उसने उसे बहुत कुछ समझाया। (१५२) किंतु जब उसने देखा कि मधु किसी प्रकार भी उसकी शिक्षा पर ध्यान नहीं दे रही है और मधु और मनोहर के संयोग की बात से उसके कुल की निंदा होगी उसने मंत्र पढ़ कर मधु के ऊपर जल फेंका और मधु पक्षी हो गई। (१५३) पक्षी होकर जब वह उड़ गई, रानी बहुत पछताई और राजा भी अत्यधिक दुखी हुए। दोनों बहुत रोए।

(१५५) मधुमालती पक्षी होकर मनोहर की खोज में निकल पड़ी। (१५६) इसी बीच उसने मनोहर की आकृति का एक अन्य राजकुमार देखा वह पौनेरि गढ़ का ताराचंद था। (१५७) वह उसके धौराहर (प्रासाद) पर आ बैठी कुमार ताराचंद की दृष्टि भी उस पर आ पड़ी। (१६) कुमार ने जाल बिछवा दिया (१६१ १६२) जिसमें मधु पक्षी स्वतः आकर इस विचार से फँस गई कि संभव था कि ताराचंद की सहायता से उसे मनोहर का पता लग जाता।

(१६३) ताराचंद ने उसे सोने के पिंजड़े में डाल दिया और उसके सामने पक्षियों के समस्त प्रकार के खाद्य रखे (१६४) किंतु तीन दिनों के बीत जाने पर भी मधु पक्षी ने कुछ नहीं खाया और न इसी कारण कुमार ताराचंद ने कुछ खाया। (१६५ १७१) कारण पूछने पर मधु ने अपनी सारी कथा उसे सुनाई। (१७२) मधु की इस वार्ता को सुन कर ताराचंद ने सब कुछ छोड़ कर उसका उद्धार करने का उसे वचन दिया। (१७३) उसने कहा कि पहले वह महारस नगर जाकर उसे पक्षी से पुनः मनुष्य करावेगा और तदनंतर उसे मनोहर से मिलाने का यत्न करेगा। (१७९) अतः वह सुहृदों और कुमारों को साथ लेकर मधु का पिंजड़ा लिए हुए महारस नगर को जाने के लिए निकल पड़ा।

(१८) वे महारस नगर पहुँच गए। (१८७) जब राजा और रानी को मधु के आने का समाचार मिला वे दौड़ते हुए आए और (१९१) मधु तथा कुमार को घर लिवा लाए। (१९३) रानी ने मंत्र पढ़कर मधु पर जल छिड़का और वह पुनः अपने पूर्ववर्ती नारी रूप में आ गई। (१९४ १९५) रानी-राजा ने तदनंतर मधु को ताराचंद को देना चाहा किंतु (१९६ १९७) कुमार ने बताया कि दोनों में भाई-बहिन के संबंध की वचन-बद्धता हुई थी इसलिए यह संबंध संभव नहीं था कुमार ने कहा कि इसे तो मनोहर मिल जाता तभी उसे सुख होता।

(४) रानी-राजा ने यह सुनकर पेमा के यहाँ पत्रिका भेजी जिसमें उन्होंने समस्त घटनाएँ लिखीं और (४ १) मधु ने संदेश-वाहकों से कहलाया कि यदि मनोहर उसकी आमराई में कहीं हो तो वह उसे मिलाए। (४ २ ४११) इसके साथ ही उसने विषम बारह मास का अपना विरह दुःख भी उनके द्वारा कहलाया। (४१४ ४१७) साथ ही उसने मनोहर से कहने के लिए उसने अपना विरह-दुःख भी कहा। (४१८ ४२) जिस समय संदेश-वाहक पेमा को पत्रिका देकर मधु का संदेश सुना रहे थे और पेमा उनके संदेश का उत्तर दे रही थी उसी समय उसकी एक सखी ने आकर सूचना दी कि उसका धर्म-बंधु वह राजकुमार योगी के वेष में आया हुआ था। (४२१ ४२२) यह सुनते ही पेमा दौड़ कर उसे लिवा लाई और मधु के जो समाचार थे उसे सब सुनाए। (४२३ ४२५) पेमा ने तदनंतर राजा रानी को उनकी पत्रिका का उत्तर देते हुए लिखा कि यदि उन्हें मधु का विवाह मनोहर

के साथ करता था तो वे निकट आ जाते उसने मधु को भी उसके संदेश के उत्तर में एक पत्रिका लिख भेजी कुमार मनोहर ने भी मधु को एक गुप्त पत्रिका उस संदेश-वाहक के द्वारा भेजी (४२६ ४२९) जिसमे उसने अपना अनन्य प्रेम और विरह-निवेदन किया। (४३) संदेश-वाहकों ने ले जाकर उन पत्रिकाओं को राजा-रानी तथा मधु को दिया।

(४३१) मनोहर का कुशल-समाचार पाकर सब को बड़ी प्रसन्नता हुई और एक शुभ दिन निश्चित कर विक्रमराज ने प्रयाण कर दिया। (४३२) उनके साथ रानियाँ और मधुमालती भी थीं। (४३३) दस दिन चल कर वे डोरिया पर पानी आ पहुँचे। (४३३) वहीं पर उन्होंने चित्रसेन और पर्मा को बुलवा भेजा। (४३५) चित्रसेन और पर्मा वहाँ आ गए। (४३८) विवाह की तिथि निश्चित हुई। (४४६) उस तिथि पर मनोहर तथा मधुमालती का विवाह हुआ। (४४७) विवाह के अनंतर दोनों सुरत-शय्या पर सुख-शाला में मिले। (४४८) दोनों ने सुखपूर्वक परस्पर आलिंगन किया (४४९ ५१) तदनंतर दोनों ने सुख-सुरत का लाभ किया। (४५५ ५८) विक्रमराज ने विवाह के प्रसंग में बहुत सा दायज दिया।

(४५८) मनोहर ने दूसरे दिन ताराचंद के पास जाकर कृतज्ञता-ज्ञापन किया (४५९) और यह इच्छा प्रकट की कि कुछ दिनों तक वे दोनों साथ-साथ रहें। (४६) विक्रमराज से उन्होंने जब यह इच्छा प्रकट की तो उन्होंने भी इसका समर्थन किया। (४६३) दोनों मित्र साथ-साथ रहने लगे। (४६४ ६६) एक दिन उन्होंने आखेट की योजना की और उसके अनंतर सरिता में स्नान करके वे जल क्रीड़ा करने लग। (४६७) इसी समय पर्मा मधु को चित्रसारी में झूलने के लिए लिवा गई। (४६९) चौथे पहर जब वे वहाँ झूल रही थीं दोनों कुमार वापस लौटे और घर पर दोनों कुमारियों में से किसी को न पाकर वे भी चित्रसारी चले आए। (४७१) ताराचंद पीछे आ रहा था कि उसकी दृष्टि अचानक पर्मा पर पड़ी जो झूले पर पेंग भर रही थी। उसका अंचल उड़ रहा था फलतः उसके उरोज ताराचंद की दृष्टि में आ गए और वह वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। (४७२) मधुमालती को यह सूचना दी गई कि ताराचंद मूर्च्छित पड़ा था। (४७३ ४७४) यह सुनकर वह और मनोहर वहाँ आ गए, और कुछ चेत होने पर ताराचंद को वे राजमंदिर में लिवा गए। (४७६) गुनियों ने उसे देखा तो बताया कि इसके शरीर में कोई वेदना नहीं था उन्होंने कहा कि इसका जी कहीं (किसी से) लगा हुआ था और जब उसको वह देखता तभी इसे चेत होगा। (४७७) मधुमालती ने उसके निकट जाकर एकांत में पूछा तो उसने बताया कि जिसने उसका जीव हर लिया था उसका नाम वह नहीं जानता था (४७८) वह खड़ी झूल रही थी। (४७९ ४८४) तदनंतर उसने उसके नख सिख का वर्णन किया। (४८५) मधु ने कहा हो न हो यह पर्मा ही हो सकती थी और जो कोई भी होती उसका पता लगा कर वह उसे बता सकती थी कि क्या संभव था।

(४८६) मधु ने आकर यह बात मनोहर से कही तो मनोहर ने कहा कि इस संबंध में कोई कठिनाई नहीं थी क्योंकि जब वह पेमा को राक्षस से उबार कर लाया था पर्मा को उसके माता-पिता ने उसे अर्पित किया था किंतु उसे तब पर्मा का स्वीकार करने की न कोई गरज नहीं थी इसलिए उसने वह स्वीकार नहीं किया था अब वह पुनः उसे लेकर ताराचंद को ब्याह सकता था। (४८७) यह कह कर मनोहर चित्रसेन के पास पहुँचा और उनसे अपना विचार व्यक्त किया ? । (४८८) राजा ने यह सुनते ही कहा कि वह तो पर्मा को उसे पहले ही दे चुका था और वह चाहे जिसके साथ पर्मा को ब्याह सकता था। यह सुनते ही दोनों कुलों में बधाइयाँ होने लगीं और (४९) शुभ लग्न में ताराचंद और पर्मा का भी विवाह हो गया। (४९१ ९२) रात्रि में दोनों सुख-शय्या में मिले और उन्होंने प्रथम समागम का सुख अनुभव किया।

(४९४) वर्षा भर दोनों राजकुमार वहाँ रहे। (४९५-४९७) तदनतर दोनों ने चित्रसेन से अपने-अपने देश को जाने का प्रस्ताव किया जिसे उन्होने स्वीकार किया। (४९८) चित्रसेन विक्रमराज के पास आए और उन्होने उन्हे कुमारो का प्रस्ताव सुनाया। विक्रमराज ने भी कन्या का गौना देना स्वीकार कर लिया। (५ १-५ ४) दोनों राजकुमारियों की माताओ ने उन्हें उपदेश दिए, (५१०-५१८) और दोनों राजकुमारियों ने माता-पिता तथा सखी-सहेलियो से विदा ली। (५१९-५२२) तदनतर दोनो राजकुमार उन्हें लेकर चल पड़े। चार पड़ावों तक वे साथ रहे फिर वे भी एक-दूसरे से विदा हुए। (५२३-५२५) मधुमालती ताराचंद से कृतज्ञतापूर्वक विदा हुई (५२६-५२८) और इसी प्रकार पेमा ने मनोहर से कृतज्ञतापूर्वक विदा ली। (५२९-५३) तदनतर राजकुमारियों ने एक-दूसरे से विदा ली।

(५३१) ताराचद ने मालगढ़ के लिए प्रस्थान किया और मनोहर ने कनैगिरि की ओर अपना टांडा हांका। दो बरसों में मनोहर कनैगिरि पहुँचा। (५३४-५३५) जब लोगो को कुमार के लौटने का सदेस मिला नगर भर मे बधावा बजने लगा। (५३७) दूसरे दिन प्रात काल कुमार मधु के साथ घर आ गया और वह माता-पिता के चरणो मे पड़ कर उनसे मिला।

(५३८) (मनोहर और मधुमालती की भाँति) प्रेम की शरण मे आकर ही कोई काल के चपट से बच सकता है। (५३९) प्रेम की शरण-शाला एसा स्थान है जहाँ अमृत शोभित होता है और जब तक काव्य-शरीर बना रहता है प्रमी का नाम भी इस ससार म बना रहता है।

मधुमालती

प्रेम प्रीति सुखनिधि क दाता । दुइ जग*[1] एकोंकारि*[2] बिधाता ।
बुधि प्रगास नाही सुअ ताइ*[1] । तुम अस्तुति जे करों*[2] गोसाइ*[3] ।
तीनि भुअन महु*[1] जुग त*[2] राजा*[3] (?)। आदि अंत जग ताहि प छाजा ।
पंडित मुनिजन ब्रह्म बिचारी । तुम अस्तुति जग काहु*[1] न सारी ।
एक जीमि*[1] म*[2] कैस सारों*[3] । सहस जीमि*[4] महु*[5] जुग नहि*[6] पारों*[7] ।

तीनि भुअन घट घट महु*[1] अनवन*[2] रूप बेलास ।
एक जीमि*[1] कहु ताहि क*[2] कस अस्तुति कर हुलास ॥

पाठान्तर—यह छंद केवल ए म सुरक्षित है शेष समस्त प्रतियाँ यहाँ खंडित हैं। अतः ऊपर इसका पाठ शैली की ह्रस्व-दीर्घ विषयक सामान्य त्रुटियों का परिहार करके ए के अनुसार दिया जा रहा है और नीचे ए में प्राप्त पाठ के साथ प्रस्तावित संशोधनों का कारण-निर्देश किया जा रहा है।

(१) १ ए जुग 'जुग' असंगत है क्योंकि 'जुग' चार हैं दे इसी छंद की अर्धालियाँ ३ ५। २ ए एकंकारी 'एककारी' निरर्थक है आगे २४ में 'एककार' आया है जो 'एकोंकार' की फारसी लिपि जनित विकृति है। वही शब्द यहाँ भी प्रसंगतः सिद्ध है केवल रूप उसका इकारांत हो गया है।

(२) १ ए ताइ। २ ए करों। ३ ए गोसाइ। इन १ २ ३ में अनुनासिक का बिंदु छूट गया है, जो शैली के सर्वों में प्राय होता है।

(३) १ ए महु। २ ए तैं। इन १ २ में अनुनासिक का बिंदु छूट गया है। ३ ए दाता 'दाता' का तुक परवर्ती चरण के 'छाजा' से नहीं मिलता है अतः उसके स्थान पर 'राजा' का सुझाव दिया जा रहा है।

(४) १ ए काहु अनुनासिक का बिंदु छूट गया है। रा में यह शब्द यहाँ भी कर्ता के रूप में आया है अनुनासिक युक्त है।

(५) १ ए जीम। २ ए मैं। ३ ए सारो। ४ ए जीम। ५ ए महु। ६ ए न। ७ ए पारो। १ ४ म फारसी लिपि के कारण अवधी 'जीभि' का 'जीम' हो गया है। २ ३ ५ में अनुस्वार का बिंदु छूट गया है। ६ 'न' पाठ से छंद में मात्रा की कमी हो जाती है फारसी लिपि में 'नहि' और 'न' प्राय एक ही प्रकार से लिखे जाते हैं इसलिए यह भूल हुई है। ७ ए पारो अनुस्वार का बिंदु छूट गया है।

(६) १ ए म 'म' प्रयोग सिद्ध नहीं है यह फारसी लिपि मे लिखे हुए 'महु' का पाठ-प्रमाद से हुआ प्रतीत होता है। २ ए अनीन 'अनीन' अर्थहीन है यह संभवतः नागरी के अनबन<अनवन (क्योंकि 'ब' भी 'व' के समान लिखा जाता था) के फारसी लिपि में लिखे जाने पर पाठ प्रमाद के कारण हुआ है। जायसी के 'पद्मावत' म भी यह भूल हुई है और अनेक स्थानों पर हुई है (दे प्रस्तुत लेखक द्वारा संपादित जायसी-ग्रंथावली' की भूमिका पृ २४–२९)

(७) १ ए जीम फारसी लिपि के कारण अवधी 'जीभि' का 'जीम' हो गया है। २ ए के

'के' 'कै' का विकृत पाठ लगता है 'ताहि' ईश्वर के लिए आया हुआ है, अप्रधान कर्ता 'मनुष्य' के लिए नहीं अतः 'अस्तुति' स्त्री॰ कर्म के अनुसार 'के' के स्थान पर 'कै' स्त्री॰ प्रयम होना चाहिए, जो इसी प्रकार ग्रंथ में प्रायः सर्वत्र आता है।

अर्थ—(१) हे प्रेम-प्रीति और सुखनिधि के दाता जो दोनों जगत् [इहलोक और परलोक] में एकोंकार [कहे जाने वाले] विलसता हो, (२) मुझे तुम्हारे [सुखमाल के] अनुरूप बुद्धि का प्रकाश [प्राप्त] नहीं है कि मैं हे स्वामी तुम्हारी स्तुति करूँ। (३) तुम्हीं तीनों भुवनों (आकाश पाताल और मृत्युलोक) में और चारों युगों (सत त्रेता, द्वापर, और कलि) में राजा (?) रहे हो और आदि तथा अंत में अवश्य ही जगत् तुम्हीं को (तुम्हारा अंग बन कर) शोभा देता है। (४) पंडितों, मुनियों और ब्रह्म-विचारकों [में से] किसी ने तुम्हारी स्तुति जगत् में नहीं की है (कोई नहीं कर सका है)। (५) एक जिह्वा से [वह स्तुति] मैं कैसे करूँ? सहस्र जिह्वाओं से चारों युगों से भी नहीं कर सकता हूँ।

(६) जो तीनों भुवनों में घट-घट में अनवन (भिन्न-भिन्न प्रकार के) रूपों में विलसता हो (७) एक जिह्वा तुम्हीं बताओ हुलास (चेतना) [के साथ] उसकी स्तुति किस प्रकार करे?

टिप्पणी—(१) एकोंकार=एक+ओंकार। (२) प्रगास < प्रकाश। (३) छाज < छज्ज [दे]=शोभना चमकना। (६) अनवन < अन्य वर्ण=भिन्न-भिन्न प्रकार के।

[२]

एक[१] अनग[२] भाउ परमेसा[३] । एक रूप काछे[४] बहु भेसा ।
तीनि लोक जहवाँ लहि[१] ठाइ[२] । भोग क[३] अनवन[४] रूप गोसाइ ।
करता करै जगत जत[१] चाहै । जमु घा जमु[२] रहै जमु[३] आह ।
आगु ठाउ[१] परसै*[२] सम[३] ठाइ । निरगुन एक ओंकार गोसाइ ।
गुपुत रूप परगट[१] सम[२] ठाइ । बासु[३] रूप बहुरूप[४] गोसाइ ।
त्रिभुवन पूरि अपूरि कै एक जोति सम[१] ठाउ[२] ।
जोतिहि अनवन मूरति मूरति अनवन भाउ ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त ५ की अर्द्धाली छंद के प्रारम्भ में आती है और उपयुक्त अर्द्धाली ४ तथा ५ के दूसरे चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ग रूप। २ रा अनेक। ३ ए परवेसा। ४ ए काछे।
(२) १ ग भगि। २ ग ठाईं। ३ ए भोगी क। ४ रा अनूप।
(३) १ ग सो। २ ए जमु। ३ ए जा।
(४) १ ग भाउ। २ रा बसियहि (?) ए बेसमै। ३ ए सब। ४ ग एकतार।
(५) १ रा में यह शब्द नहीं है। २ ए सब। ३ रा ग भाउ। किंतु अन्यत्र प्राय वासु है। ४ रा में यह शब्द नहीं है।
(६) १ ए सब। २ ए ठाउ।
(७) १ ग भाउ।

अर्थ—(१) वह परमेश्वर एक होते हुए अनेक रूप धर कर [प्रकट हुआ] है और बहुत से वेश काछे (धारण किए) हुए भी वह एकरूप है। (२) तीनों लोकों (आकाश पाताल, मृत्युलोक) में

जहाँ तक भी स्थान है [वहाँ तक] वह गोसाईं (स्वामी) अनबन (भिन्न-भिन्न प्रकार के) रूप धारण करके भोग करता है। (३) वह कर्ता जगत् में जितना (जो कुछ) चाहता है करता है वह अम (काल) होकर [पहले] था [आगे] रहेगा और [अब भी] है। (४) वह बिना किसी [एक] स्थान पर रहे समस्त स्थानों पर विलसता है तथा वह स्वामी निगुण और एकोंकार है। (५) वह गुप्त रूप होते हुए भी समस्त स्थानों पर प्रकट है, और किसी रूप का न होते हुए भी अनेक रूपों वाला है।

(६) एक ही ज्योति तीनों भुवनों में समस्त स्थानों पर आपूर्ण रूप से पूरित हो रही है, (७) उस ज्योति की मूर्तियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं और उन मूर्तियों के नाम भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं।

टिप्पणी—(४) बाज < बज्ज < बर्ज्य = बिना। (६) अपूरि < आपूरित।

[३]

सुर नर नाग जहां लगि अहहीं[1]। कोटि बरिस जौ अस्तुति कहहीं[2]।
पाछें सभ पछिताइ कहाहीं। जस त तस हम जानहिं[3] नाहीं।
कोटि बरिस जौ मन फिरि आव। बुधि बपुरी कहु कहवाँ पाव।
जगत क अन[1] अहार कर दाता। करता हरता एक बिधाता।
त्रिभुवन चहु जुग एक अकेला। आपु अपान[1] रूप बहु[2] खेला।
अलख निरंजन करता एक रूप बहु भेस।
कतहू मान भिखारी कतहू आदि नरेस॥

पाठान्तर—(१) १ ए आहीं। २ ए साराहीं।
(२) १ ए पाछ सब पछताया कहहीं। २ ए जान।
(३) १ रा जन। २ रा नहि (?)।
(४) १ ए जग जीवन।
(५) १ रा अनूप। २ ए भी।
(७) १ ए बाज।

अर्थ—(१) देवता मनुष्य तथा नाग जहाँ तक (जितने) भी हैं वे [सब मिलकर] यदि करोड़ वर्षों तक उसकी स्तुति कहें (करें) (२) तो पीछे वे भी पछता कर (हार कर) कहेंगे "जैसा तू है वैसा हम किसी को नहीं जानते हैं।" (३) करोड़ वर्षों तक यदि मन भ्रमण कर आवे तो भी बेचारी बुद्धि [उसे] कहाँ पा सकेगी? (४) वही जगत् [भर] को अन्न तथा आहार देनेवाला, उसका कर्ता हर्ता और विधाता है। (५) तीनों भुवनों और चारों युगों में एक और अकेला होकर भी अपने-आप उस [परम] आत्मा ने अनेक रूपों में खेल रच रखा है।

(६) वह कर्ता अलख (अदृश्य) और निरंजन (निर्लिप्त) है और एक रूप का होते हुए भी अनेक वेषों का है; (७) कहीं पर उसका भिखारी का बाना है तो कहीं पर आदि (सर्वोच्च) नरेश का।

टिप्पणी—(३) बपुरी < बप्पुडी [दे]=बेचारी। (४) अन < अन्न। (५) अपान < अप्पाण आत्मन्। (७) बान < बन्न।

[४]

जो बहु भेसन लोक समाना[1]। सो कैसें क जाइ बखाना।
त्रिभुवन भाउ जान सभ[1] कोई। जो किछु भाउ होइ सो होई[2]।
चारिहु[1] जुग परगट न छपाना। बिरला कोनहु जानि पिछाना[2]।
परगट दसहु[1] दिसा उजिआरा। सरब लीन[2] पै आपु निरारा[3]।
जइ अपुनां निसु[1] ओहि चित[2] लावा। बिधि ओहि पुनि बहु गुपुत[3] दखावा।
गुपुत रहै[1] परगट जग[2] बरस[3] सरब बियापक[4] सोइ।
दूजा कोइ न आहि और भवा[1] नहिं होइ[2]॥

पाठान्तर—(१) १ ए आ येहि तीनि लोक न समाना।
(२) १ ए सब। २ रा भावै होइहि साई।
(३) १ ए चारौ। २ ए बिरला जन काहू पहिचाना।
(४) १ ए दसौ। २ रा लीन्ह। ३ ए निनारा।
(५) १ ए जे आपुही। २ ए मन। ३ ए बिधि मोही पै आपु।
(६) १ रा में यह शब्द नहीं है। २ ए बेलसै। ४ ए सरबब्यापी।
(७) १ ए और भया। २ ए कोइ।

अर्थ—(१) जो अनेक वेषों में लोक में समाया हुआ (व्याप्त) है वह किस प्रकार बखाना जा सकता है (उसका वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है)? (२) तीनो भुवनों में हुए भाव को सभी जानता है जो कुछ भाव होता है [उसमें] वही होता है। (३) वह चारो युगों में प्रकट रहा है छिपा नहीं रहा है, फिर भी बिरला ही कोई उसको जानकर पहिचान सका है। (४) वह दसो दिशाओं में उज्ज्वल (स्पष्ट) रूप से प्रकट है, और सबलीन (समस्त पदार्थों में व्याप्त) होते हुए भी उनसे निराला (अलग) है। (५) जिसने भी अपना चित्त निसु (ठीक-ठीक) उसी से लगाया फिर उसी को विधाता ने [अपना] वह गुप्त रूप दिखाया।

(६) वह गुप्त रहता है किन्तु प्रकट होकर जगत में विलसता है और वह सर्व-व्यापक है (७) न दूसरा कोई है न हुआ है और न होगा।

टिप्पणी—(१) बखान < बक्खाण < व्याख्यानम् = वर्णन करना। (४) उजियार < उज्ज्वल।

[५]

जइ[1] जग जनमि न ताहि पहिचानां। आहर[2] जनम मुएं पछितानां।
जगत जनमि तइ लहा न लाहा[1]। जइ[2] तोहि बिनु ताहि गों किछ चाहा।
करता किछ मन इछा[1] मोही[2]। ताहि सनें प चाहौं छोही[3]।
जसें[4] जिउ निसु[5] तोहि[1] जाना। तसें[2] जीभि न जाइ[3] बखाना।
अस्तुति कौनि करौं न तोरी। जो मन गुनि आनौं मा[1] थोरी।
ग्यान पगि कर[1] गम जहवां[2] लगि[3] औ मति कर पठार।
तहवां लगि त गमनब आगें का प मसार[1]॥

पाठान्तर—ए में अर्द्धाली ५ व ६ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए आ। २ रा महार। ३ ए मुए।

(२) १ ए कीन्हा ते लाहा। २ ए आ। ३ ए तासे।

(३) १ ए इच्छा। २ ए मोहीं। ३ ए तेहि मेनी परि आवौं ताहो।

(४) १ रा का पाठ स्पष्ट नही है ए जैसे जिव निरखै ताहि। २ रा तैसा ए तैस। ३ ए जाने।

(५) १ ए जौ मन गुनिये तौ मब।

(६) १ ए कै। २ ए मसु जहाँ। ३ ए म यह स्पष्ट नही है। ४ ए कै।

(७) १ ए तहवाँ लै पै पक तनु तें तर भेटै पार।

अर्थ—(१) [हे स्वामी] जितने भी जगत् में जन्म लेकर तुझे नहीं पहिचाना, उसका जन्म अकल हुआ और मरने पर वह पछताया। (२) उसने जगत् में जन्म लेकर [जीवन का] लाभ नहीं प्राप्त किया जिसने तेरे अतिरिक्त तुझसे और कुछ चाहा। (३) हे कर्त्ता मेरे मन में [भी] कुछ इच्छा है, [और वह यह है कि] तुझसे मैं तुझी को चाहता हूँ। (४) मेरे जीव ने जिस प्रकार निश्चयपूर्वक तुझे जान लिया है उस प्रकार जिह्वा से उसका बखान (वर्णन) नहीं किया जा सकता है। (५) मैं तेरी कौन-सी स्तुति करूँ? जो भी [स्तुति] मैं मन में विचार कर लाता हूँ [तेरी महत्ता के आगे] वह थोड़ी लगती है।

(६) जहाँ तक भी ज्ञान-पक्षी की गति है और [जहाँ तक भी] मति का प्रवेश है (७) वहाँ तक वे चले जाएँगे किंतु उसके आगे उन्हें कौन सँभालेगा?

टिप्पणी—(१) आहर < अहल < अफल = निष्फल। (२) लाह < लाभ। (४) बखान < वखाण < व्याख्यानम् = वर्णन करना कहना।

[६]

मारिहि आदि अंत हौं अंता । एकहि अरथ रूप जो अनंता[1] ।
एक अहै[1] दोसर कोइ[2] नाही । तहि सभ सिस्टि रूप मुख जाही[3] ।
ओहि सों जियहि जामि परवाना[1] । त्रिभुवन निकट एक प[2] आना[3] ।
दोसर ना कतहू[1] तुम ओरा । दरपन सिस्टि[2] रूप मुख तोरा ।
तोर खोज खोजत सो पाव । जो आपुन[1] सभ[2] खोज हेरावै ।
सभ भेदनि कर भेदिया[1] औ सभ[2] रसिक सुजान ।
एहि सभ सिस्टि पिछौडो[1] आपु एक गिरवान ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्द्धाली ३ ४ ५ का क्रम रा में है ५, ३ ४।

(१) १ ए एकइ अरथ जो रूप अनंता रा एक हि रूप अरथ अनवंता।

(२) १ ए अउ। २ ए कोउ। ३ ए आदि न भी अन्त न आही।

(३) १ ए निरचय जीउ जाना प्रवाना। २ ए कै रा ते। ३ ए जाता।

(४) १ ए दोसर नही कतहूँ जो। २ ए सिस्टि।

(५) १ ए आपन। २ ए सब।

(६) १ ए सब भेदी कर भेदि। २ ए सब।

(७) १ ए सो सब सिस्टि पेछौरी। २ ए प्रवान।

अर्थ—(१) वह आदि का भी आदि और अंत का भी अंत है, वह एक ही अर्थ (पदार्थ) है [यद्यपि] उसके जो रूप हैं वे अनंत हैं। (२) वही एक मात्र है दूसरा कोई नहीं है, और उसी के मुख में सृष्टि के समस्त रूप [अंत में] चले जाते हैं। (३) जी में उससे [उसकी कृपा से] प्रमाण [वस्तुस्थिति] को जानकर मैंने तीनों भुवनों के निकट [होते हुए] एकमात्र उसी को जाना है। (४) "[हे स्वामी] तेरा जोड़ा समतुल्य] कहीं भी दूसरा नहीं है; समस्त सृष्टि दर्पण [के समान] है, जिसमें तेरा ही मुख नाना रूपों में दिखाई पड़ता है। (५) तेरा पता खोजते-खोजते वही प्राप्त करता है जो अपना सब खोज (चिह्न) गँवा देता है।

(६) तू समस्त भेदों का भेदिया (जानकार) समस्त रसों का लेनेवाला और सुजान (ज्ञानी) है (७) तथा समस्त सृष्टि के पीछे तू आप ही एकमात्र गीर्वाण (देवता) है।"

टिप्पणी—(७) गिरवान < गीर्वाण = देवता।

[७]

सुनहु अब तही क[1] बाता । परगट भा जहि[2] बिरह बिधाता ।
सहहि[1] सरीर सिस्टि जो*[2] आवा । औरि सिस्टि सब[3] ओहि कर[4] भावा ।
उहई जोति प्रगट सब[1] ठाऊ । दीपक सिस्टि मुहम्मद[2] नाऊं ।
ओहि लगि दइय सिस्टि उपराजी । त्रिभुवन प्रेम[1] दुंदुभी बाजी ।
नाउ[1] मुहम्मद[2] त्रिभुवन राऊ । ओहि लागि भएउ[3] सिस्टि कर[4] चाऊ ।
जाकी अंगुरी कारिक*[1] अग्यां*[2] चांद भएउ[3] दुइ खंड ।
पाकी धूरि[1] जो पायम लागी[2] अचल भएउ[3] ब्रह्मंड ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुनहि अब ताकी। २ ए प्रगट भी जा।
(२) १ ए सीसु। २ ए जो। ३ ए जो रा सब। ४ ए के।
(३) १ ए ताकी। २ ए सब। ३ ए जी महमद।
(४) १ रा सबहि।
(५) १ ए नाम। २ ए महंमद। ३ ए भौ। ४ ए क।
(६) १ ए करके रा में यह शब्द नहीं है। २ रा ए अग्या। ३ ए भयो।
(७) १ रा में यह शब्द नहीं है। २ ए पाँव की। ३ ए भयो।

अर्थ—(१) अब उसकी वार्ता सुनो जिसके विरह में विधाता [स्वयं] प्रकट हुआ। (२) जब विधाता [उसके विरह में] स्वयं ही शरीर धारण कर सृष्टि में आया, तब और समस्त सृष्टि उसी का भाव [हुई]। (३) तब वही ज्योति [जगत् में] सब स्थानों पर प्रकट हुई जो कि सृष्टि का दीपक है और जिसका नाम मुहम्मद है। (४) दैव ने उसी के लिए सृष्टि उत्पन्न की और [उसी के कारण] तीनों भुवनों में प्रेम की दुंदुभी बजी। (५) त्रिभुवन के उस राजा का नाम मुहम्मद है और उसी के लिए [विधाता को] सृष्टि की रचना का चाव [उत्साह] हुआ।

(६) उसकी उँगली की आज्ञा से चंद्रमा दो खंड हो गया (७) और उसके पैरों की धूल लगते ही ब्रह्मांड अचल हो गया।

टिप्पणी—(२) सह < स्वयम्।

[८]

मूल मुहम्मद[1] सब[2] जग साखा । बिधि नौ लाख[3] मदुक सिर राखा ।
ओहि पटतर दोसर कोइ[1] नाहीं । वह सरीर[2] यह सब[3] परिछाहीं ।
करता गुपुत सबै पहिचाना[1] । प्रगट मुहम्मद[2] काहु[3] न जाना ।
अलख लखिय[1] जहि[2] पार न कोई । रूप मुहम्मद[3] काछें[4] सोई ।
रूप क नाउ[1] मुहम्मद[2] धरा । अरथ[3] न दोसर[4] एक[5] करा ।
ऊँच कहौं पुकारि कै जगत सुन[1] सब[2] कोइ ।
परगट नाउ[1] मुहम्मद[2] गुपुत जो जानिय[3] सोइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए महंमद। २ ए सब। ३ रा लाक।
(२) १ ए कोउ। २ ए ओह। ३ ए सब।
(३) १ ए सबै पछिआना। २ ए महंमद। ३ ए काहु।
(४) १ ए लखी। २ ए जे। ३ ए महंमद। ४ ए काछे।
(५) १ ए नाम। २ ए महंमद। ३ रा अरथ। ४ ए दूसर। ५ ए आकर।
(६) १ ए सुनी। २ ए सब।
(७) १ ए नाउ। २ ए महंमद। ३ ए गुपुत ते जानेहु।

अर्थ—(१) मुहम्मद मूल हुए और समस्त जग उनकी शाखा हुआ विधाता ने नौ लाख [मूल्य] का मुकुट उनके सिर पर रक्खा (उन्हें समस्त जगत् का राजा बनाया)। (२) जिसके सादृश्य का दूसरा कोई नहीं है, वह [मुहम्मद] शरीर है और यह सब [जगत्] उसी की प्रतिच्छाया है। (३) गुप्त (प्रच्छन्न) कर्ता (विधाता) को तो सबने पहिचान लिया, किन्तु प्रकट मुहम्मद को किसी ने नहीं जाना। (४) जो अलक्ष्य है, और जिसके परे कोई नहीं दिखाई पड़ता है, मुहम्मद का रूप धारण किए हुए वही विधाता है। (५) उस रूप का नाम [उसने] मुहम्मद रक्खा वह कोई दूसरा अर्थ (पदार्थ) नहीं है, वह [विधाता के साथ] एक ही (अभिन्न) कला है।

(६) मैं ऊँचे [स्वर से] पुकार कर कहता हूँ और जगत् के सब [प्राणी] इसे सुन लें; (७) [विधाता के उस] प्रकट [रूप] का नाम मुहम्मद है जिसका गुप्त (प्रच्छन्न) रूप वह स्वयं ज्ञात है।

टिप्पणी—(१) मदुक < मुकुट। (४) अलख < अलक्ष्य। (५) करा < कला।

[९]

अब[1] सुनु चहू मीत कै[2] बाता । सत नियाउ[3] सास्तर कै[4] दाता ।
प्रथमहि अबाबकर[1] परधाना । सत गुर[2] बचन मत सिय[3] जाना ।
दूजें उमर नियाउ क[1] राजा । जेइ सुत पितें[2] हना बिधि काजा ।
तीजें ठाउ राउ उसमाना[1] । जेइ र भेद बेद का[2] जाना ।
चौथें[1] अली सिंघ बहु[2] गुनी । दान खरग जेइ[3] साधी दुनी ।
सत आदि[1] सास्तर कर[2] अउर रहे सधारि[3] ।
परगट धरम पै साधे[1] गुपुत हियें[2] करतार ॥

पाठान्तर—रा मे उपर्युक्त अर्द्धाली २ के चरण परस्पर स्थानांतरित

(१) १ रा अब जो। २ ए. भी। ३ ए सत्य न्याय

(२) १ ए अबाबक्र। २ रा सत कर ए सत्यपुर

(३) १ ए दूजे उमर न्याय कर। २ ए जे सुत पित

(४) १ ए तिजे उसमान तिसर्य अस्माना। २ ए जे

(५) १ ए चौथे। २ ए बड़। ३ ए जे।

(६) १ ए सत्य न्याय। २ रा में यह शब्द नहीं है।

(७) १ ए म साधा। २ ए हिये।

अर्थ—(१) अब चारों मित्रों (मुहम्मद के उत्तराधिकारी चार

को सत्य न्याय और धर्म के दाता थे। (२) प्रथम प्रधान रूप से

(मुहम्मद) के वचनों को जी में मंत्र जाना। (३) दूसरे उमर थे जो

थे जिन्होंने विधाता के कार्य के लिए पुत्र और पिता का हनन किया। (

(खलीफ़ा) उसमान माने हैं, जिन्होंने वेद (दिव्य ज्ञान) का भेद

अली सिंह थे [तुल० चौथे अली सिंह बरियार—जायसी] जिन्होंने

साधा (वश में किया)

(६) और जिन्होंने धर्म के आदि सत्य को इकट्ठा किया

में धर्म की साधना की किंतु गुप्त (प्रच्छन्न) रूप से हृदय में कर्तार की

टिप्पणी—(१) मीत < मित्र। (२) मत < मत्र। (६) सचार

करना समेटना।

[१०]

साहि सलेम जगत मा[1] मारी । जइ पूंजी* घर[2]

जो रे कोपि[1] परी[2] पां चापें[3] । इधर कर

नो गइ मान दीप सम[1] ठाऊ । भएउ[2] मरम अति

मतरिग*[1] कर[2] अस राज समारा[3] । जग मह कोइ म

दसहुं दिसा[1] मानी जग सभा । गगन झार मह

त्रिथिमी पति गुम[1] गाहक दस भो पारि

पर मुझ[1] गजन मापुरस गरुव[2] गरिस्ट

पाठान्तर—(१) १ ए मुम। २ रा जिन्ह बहु बैरनी ए मोह

तारी।

(२) १ ए कोपि। २ ए बैरी पर। ३ ए चापें। ४

रा इधर भा इशाम। ५ रा भावें।

(३) १ ए सब। २ ए पै। ३ ए जिनि थ।

(४) १ ए मग्रिग रा मारग। २ ए कै। ३ ए समारा

(५) १ ए दसौ दिसा। २ ए माने। ३ ए भा गग

(७) १ रा मुमि (?)। २ ए बल।

मर्म—(१) सलीम [शाह] जगत् में भारी बादशाह हुआ है जिसने [अपने] बल से समस्त मेदिनी (पृथ्वी) का भोग किया। (२) जब वह कुपित होकर पैरी (घोड़े के पायदान) में पैर चाँपता (दबाता) है तब इंद्र का इंद्रासन [भी] काँपने लगता है। (३) नौ खंड और सात द्वीपों में सर्वत्र उसका भ्रम (भय) हो गया है और उसका नाम उससे भी आगे चला गया है। (४) उसने (जब) अंतरिक्ष [के राज्य] के समान [पृथ्वी का] राज्य सँभाला जगत् में कोई [उससे] युद्ध करने वाला शेष न रहा। (५) बसी दिशाओं ने जगत् में उससे शंका मानी और उसके खड्ग की ज्वाला से लंका [तक] में खलबली मच गई।

(६) वह पृथ्वीपति गुणग्राहक और चतुर्दश [विद्याओं] का घर है (७) तथा दूसरों (शत्रुओं) की भुजाओं को नष्ट करने वाला सत्पुरुष गुरु, गरिष्ठ और ज्ञानी है।

टिप्पणी—(१) भू ज < भुज् = भोग करना। (५) झार < ज्वाला।। (७) भुम < भुज। सापुरस < सप्पुरिस < सत्पुरुष। सुजान < सुज्ञान।

[११]

गरुआ तप गरुआ अवतारा[1]। काबिल हिंद भएउ[2] एक बारा।
उत्तर हेम गिरि लहि परवानों[1]। दक्खिन सेत बंध लहि आनों।
पच्छिउ[1] भएउ[1] रूम साम खाई[2]। पूरुब जलनिधि[3] तीर दोहाई।
नौ खंड प्रिथमीं भएउ[1] अनदू[2]। धरम दुदिस्टिल सत हरिचंदू।
दान करग सरगहि[1] ल[2] लावौं[?]। त्रिभुवन सिस्टि न पटतर पावौं[3]।
नौखंड दइ[1] असीसि[2] पिरथिमीं राज करहु[3] जग माँह।
जौ लहि ससिहर[1] सूर धव कायेम जग पर छाँह[2]।।

पाठान्तर—(१) १ ए गरुम तप गरुये औतारा। २ ए काबिल हिन्द भा।
(२) १ ए जा प्रवाना।
(३) १ ए पछिव पगी रा पछू भएउ। २ ए सबलाई। ३ रा पुरब जलानिधि।
(४) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए आनदू।
(५) १ ए सरग करग। २ ए लावा। ३ ए पावा।
(६) १ ए देहि। २ रा सीस। ३ ए करु।
(७) १ रा ससि औ। २ ए छाहु।

मर्म—(१) उसके गुरु तप और गुरु अवतार से काबुल तथा हिंद का हार एक हो गया। (२) उत्तर में हेम गिरि (सुमेर के पास का एक पर्वत) तक उसके राज्य का प्रमाण हो गया और दक्षिण में सेतुबंध (रामेश्वर) तक उसकी आन हो गई। (३) पश्चिम में रूम तथा शाम देश उसकी खाईं बन गए और पूर्व में जलनिधि के तट तक उसकी दुहाई हो गई। (४) नौ खंड पृथ्वी में आनंद हो गया [क्योंकि] धर्म में वह युधिष्ठिर तथा सत्य में वह हरिश्चंद्र हुआ। (५) खड्ग-दान में स्वर्ग तक का ध्यान करता हूँ तो भी तीनों भुवनों की सृष्टि में उसका समतुल्य नहीं पाता हूँ।

(६) नौ खंड पृथ्वी उसे आशीर्वाद देती है "तुम [तब तक] जगत् में राज्य करो (७) जब तक शशि सूर्य और ध्रुव की छाया जगत् पर बनी रहे।"

टिप्पणी—(१) गरुआ < गुरु। (४) प्रिथमी < पृथ्वी। (५) लै < लय = ध्यान। (७) ससिहर < शशधर = चंद्रमा। सूर < सूर्य। धुव < ध्रुव < ध्रुव।

[१२]

न्याइ किरति*[1] जग ऊच उतंगा । भेंड हुंडार चरहिं एक संगा ।
न्याइ बखान न मोहि भा[1] कही । गाइ क पोंछि[2] सिंघ कर गही ।
गरुआ राज महा तप भारी । फूली निहकंटक*[1] फुलवारी ।
राजनीति असि क[1] संसारा । बरी अबर सों बोलि[2] न पारा ।
नीर खीर कर होइ बिचारा । जब चाहिअ[1] तब पाइअ बारा ।
हरख अनंद उछाह सुख सम[1] कोई रस[2] मान ।
दारिद दुख संताप भ[1] पुहुमीं छाडि[2] परान[3] ।

पाठान्तर—(१) १ रा न्याइ करब ए न्याय करग।
(२) १ ए भा मुह। २ ए गाइ क पूछि।
(३) १ रा बहु कलंक ए निकट नीर।
(४) १ ए राजनीति भा कीन्ह। २ ए बीर अबली त बोल।
(५) १ ए चाही।
(६) १ रा ए सब। २ रा म यह शब्द नहीं है।
(७) १ रा सभ। २ ए छाडि। ३ रा बरान।

अर्थ—(१) उसके न्याय की कीर्ति जगत् में [यहाँ तक] ऊँची और उत्तुंग (अत्यंत ऊँची) है कि भेड़ तथा हुंडार (भेड़िए) [उसके राज्य में] एक साथ चरते हैं। (२) उसके न्याय का बखान (वर्णन) मुझसे नहीं कहा (किया) जाता है गाय की पूँछ [उसके राज्य में] सिंह अपने हाथ से पकड़े रहता है [फिर भी उसका अनिष्ट नहीं कर पाता है]। (३) [उसके] महान् और भारी तप से [उसका राज्य भी गुरु (भारी) है, और उसमें बिना काँटों (दुःखों) की फुलवाड़ी (सुख समृद्धि) फूल रही है। (४) वह संसार में ऐसी राजनीति [का निर्वाह] कर रहा है कि बली निर्बल से बोल नहीं सकता (उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाता) है। (५) [उसके राज्य में] नीर क्षीर (सत्यासत्य) का विचार होता है और [इसके लिए] जब चाहिए उसका द्वार मिल जाता है।

(६) [उसके राज्य में] हर्ष आनंद उत्साह और सुख है और सभी प्रेम मानते हैं; (७) दारिद्र्य दुःख संताप और भय [उसके राज्य में] पृथ्वी को छोड़कर भाग गए हैं।

टिप्पणी—(१) किरति < कीर्ति। उतंग < उत्तुङ्ग = अत्यंत ऊँचा। (२) बखान < बक्खाण < व्याख्यान = वर्णन। (५) बार < द्वार। (७) परान < पलाय < परा + अय् = भागना।

[१३]

बरनि सुनहु तहाँ दान क[1] बाता । राजन्ह पाट न भ[1] अस दाता ।
जब बोह दान कर[1] बार उघारै । बरन आइ सहु[1] हाथ पसारै ।
दान निनाम भरग गे लाज[1] । हातिम[1] करन भोज बलि राज[1] ।
रतन हरिचंद[1] दाम[1] बलि करा । धरम जुधिस्टिर बलि[1] ओनरा ।
गुन[1] बिधा भरि भाज न पावा । रामा बिक्रम[1] आइ न स्यावा ।

सात दीप नौ खंड पिरिथिमीं चहुं दिसि हरख अनंद ।
एक विरह[1] दुख परिहरि दोसर औरु[2] न दंद ॥

पाठान्तर—(१) १ ए की। २ रा मुकुट।
(२) १ ए बबरे दान को। २ ए करन आये को तब।
(३) १ ए गै बाजै। २ रा हातिम। ३ ए लाजै।
(४) १ ए हरिचंद्र। २ ए दानी। ३ ए औ।
(५) १ ए ग्यान। २ ए नाम।
(६) १ रा हर।
(७) १ ए बीर। २ ए दूसर बीर।

अर्थ—(१) उसके दान की बात किस मुख से कहूं [जब कि] वह राजाओं को पाट (सिंहासन) और मुकुट देता है? (२) जब वह दान का द्वार खोलता है तब कर्ण भी वहां आकर [दान प्राप्त करने के लिए] हाथ फैलाता है। (३) [जब] उसके दान की दुंदुभी स्वर्ग तक बाजकर बजी हातिम कर्ण भोज और बलि लज्जित हो गए। (४) सत्य में हरिश्चंद्र दान में बलि की कला, और धर्म में युधिष्ठिर होकर वह कलि में अवतीर्ण हुआ है। (५) गुण और विद्या में उसकी समकक्षता भोज भी नहीं कर पाता है और साका (पौरुष) में विक्रम भी [उसके समकक्ष] नहीं लाया जा सकता है।

(६) सातों द्वीपों तथा नवो खंडों में पृथ्वी में चारों ओर आनंद हो रहा है (७) और एकमात्र विरह के दुख को छोड़कर [पृथ्वी में] दूसरा द्वन्द्व नहीं है।

टिप्पणी—(१) मदुक < मुकुट। (२) बार < द्वार। उघार < उघाड़ < उद्घाटम् = खोलना। (४) करा < कला। (७) दंद < द्वन्द्व।

[१४]

मन[1] चढ़े जग बिधि पियारा[2] । ग्यान गरुअ[3] औ[4] रूप अपारा[5] ।
सबरि नाउ[1] परस जौ आव । ग्यान लाभ होइ[2] पाप गवावै ।
पावहि मया जीउ सेंउ[1] करहीं । सहज बोलाइ[2] ताज सिर धरहीं ।
जा कहं[1] दिस्टि[2] करहिं[3] प्रतिपारहिं । कया कलंक धोइ जग[4] डारहिं ।
बूझि गुरु सिस दिस्टि प्रतिपाला[1] । सो आपन[2] जम पोइ निकाला[3] ।
गुरु दरसन दुख मोचन धनि धनि दिस्टि जो भाउ[1] ।
जो[1] गुरु सिकम[2] दिस्टि प्रतिपाल*[3] सो चारिहु[4] जुग राउ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा सेख। २ ए पीर अपारा [दुख अगले छंद का प्रथम चरण]। ३ रा समुद। ४ ए जे। ५ रा सवारा।
(२) १ ए सौरि पांव। २ ए हो।
(३) १ ए ते। २ ए बलाइ।
(४) १ ए जाके। २ रा दृष्टि। ३ ए करहि। ४ ए जे।
(५) १ ए जे मिन गुर मिस्टि न पावा। २ रा अपना। ३ ए पार्व पावा।
(६) १ ए धम जे मिस्टि सुभाउ।

(७) १ ए सो। २ ए सिख गुरु। ३ ए पालै रा प्रतिपालहिं। ४ ए चारी।

अर्थ—(१) जगत् में बड़े राजा (सेख ग़ौस मुहम्मद) विधाता के प्यारे थे; वे ज्ञान में गुरु और जप में अपार थे। (२) यदि कोई उनके नाम का स्मरण करके उनका स्पर्श करने आता, तो उसे ज्ञान-लाभ होता और वह अपने पाप नष्ट कर डालता। (३) जिसको वे जी से ममता (यथापूर्व प्रेम) करते उसको वे सहज ही बुलाकर उसके सिर पर ताज रख देते (राजा बना देते)। (४) जिसको वे अपनी दृष्टि में कर लेते उसका वे प्रतिपालन करते और इस जगत् में [ही] उसकी काया के कलंक को धो डालते। (५) जिसने उनके साथ गुरु-शिष्य वृत्ति का प्रतिपालन समझ-बूझ कर किया, उसने अपना यम (काल) खोकर निकाल डाला।

(६) गुरु का दर्शन दुःखों को धो डालने वाला होता है, और वह दृष्टि धन्य है धन्य है जो गुरु-दर्शन पर भाव (अनुराग) रखती है। (७) जो [साधक] गुरु-शिष्य वृत्ति का प्रतिपालन करता है वह चारो युगों में राजा होता है।

टिप्पणी—(१) पियार < प्रियालु। गरुअ < गुरु।

[१५]

सख[1] मुहम्मद[2] पीर[3] अपारा । सात समुद नाउ कड़हारा ।
सवरि पाउ जो आव[1] कोई । परथम[2] मुख देखत सुख[3] होई ।
फुनि*[1] दुहु[2] जग पूज मन आसा । परसत चरन पाप गा[3] नासा ।
ग्यान छाड़ि[1] मुख[2] और न बाता । दस औ चारि मत सिधि दाता ।
बिसमौ हरख न घट महिं लाहे[1] । सतत रहहिं लीन*[2] लौ माह ।
दाता औ[1] गुन गाहक गौस मुहम्मद[2] पीर ।
दुहु[1] कुल निरमल सापुरुस गरुअ गरिस्ट गभीर ॥

पाठान्तर—(१) १ रा षेख। २ ए महंमद। ३ ए पीर।
(२) १ रा देइ जो। २ रा प्रथमहिं ए प्रथम। ३ रा सिधि।
(३) १ रा ए पुनि। २ ए दुहु। ३ ए गो।
(४) १ ए छोडि। २ ए जे। ३ रा छठं अस्त नाहिं भा उजियारा [तुक आगे छठ का दूसरा चरण]।
(५) १ रा बिसमौ हरख न घट लाहैं ए बिस्मै हरख न जीव न लाहे। २ ए रहत। ३ ए लील रा लीन्ह। ४ ए माहे।
(६) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ रा गौस मुहम्मद ए गौस महंमद।
(७) १ ए दुइ।

अर्थ—(१) शेख़ मुहम्मद [गौस] अपार [शक्ति-संपन्न] पीर थे; वे सातों समुद्रों में नौका के कर्णधार [की भाँति सहायक होते] थे। (२) उनके चरणों का स्मरण कर जो कोई [उनकी सेवा में] आता था, प्रथम तो उनका मुख देखते ही उसको सुख [प्राप्त] होता था। (३) तदनंतर दोनो जगत्—इहलोक और परलोक—में उसके मन की आशाएँ पूरी होती थीं और उनके चरणों का स्पर्श करने से उसका पाप नष्ट हो जाता था। (४) ज्ञान के अतिरिक्त उनके मुख में कोई और बात न होती थी और वे चतुर्दश [विद्याओं] तथा मंत्र-सिद्धि के दाता थे। (५) वे अपने घट

(अंतःकरण) में विस्मय (विषाद) और हर्ष नहीं लाते थे और निरंतर लय (ध्यान) में लीन रहते थे।

(६) पीर मुहम्मद दीन दाता और गुण-ग्राहक थे। (७) वे दोनों कुलों—इहलोक परलोक—में निर्मल सत्पुरुष गुरु गरिष्ठ और गंभीर थे।

टिप्पणी—(१) कंडहार < कर्णधार। (४) मंत < मंत्र। (५) लौ < लय = तल्लीनता। (७) सापुरस < सप्पुरिस ~ सत्पुरुष।

[१६०]

सूर उद उदइल[1] ससारा । उद अस्त लहि[2] भा उजिआरा ।
जाके नैन सूर उजिआरे । परम गिआन[1] चेताए[2] तार ।
जाकर[1] जग गादुर औतारा । ता कहँ[2] सूर उदै[3] अंधियारा[4] ।
जौ र[1] साहस[2] करि ओटवै[3] कोई । साहस सँउ*[4] निस्चै[5] सिधि होई ।
सेख[1] मुहम्मद[2] सिद्ध[3] अपारा । साहस बाजु*[4] सिद्धि दनिहारा ।
जस पारस[1] क परसत भीन हेम होइ जाइ[3] ।
तिमि मै सेख[1] मुहम्मद[2] दरस[3] बिनु साहस सिधि पाइ[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए उदित। २ ए लगि।
(२) १ ए प्रमपद ग्यान। २ रा म यहाँ 'थे' और है।
(३) १ ए जाके। २ रा तिन्हकहं ए ताके। ३ ए उगत। ४ ए अंध्यारा।
(४) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ रा सहस। ३ ए उटवै। ४ रा सो ए ते। ५ ए निश्चै।
(५) १ रा सेख। २ ए महंमद। ३ ए पीर। ४ रा ए बाजु [अन्यत्र प्राय 'बाजु' आया है]।
(६) १ ए जैस पाहन। २ ए ताम। ३ ए जाहि।
(७) १ ग गत। २ ए जो। ३ ए परसत। ४ ए पाहि।

अर्थ—(१) [जिस प्रकार] सूर्योदय से संसार उदयवान् होता है उसी प्रकार उनका प्रकाश उदयाचल से अस्ताचल तक हुआ। (२) जिसके नैन सूर्य [के प्रकाश] से प्रकाशित हैं उसके तारे (नेत्र-तारक) परम ज्ञान से चेतित हो जाते हैं (३) किंतु जिसका अवतार (जन्म) ही जगत् में गादुर (चमगादुर) का हुआ हो, उसके लिए सूर्योदय से भी अंधकार ही रहता है। (४) यदि कोई कलि में साहस करे, तो साहस से निश्चय ही उसको सिद्धि [प्राप्त] होती है। (५) [किंतु] शेख मुहम्मद [दीन] ऐसे अपार सिद्ध थे कि [किसी के] बिना साहस किए भी [उसको] सिद्धि देने वाले थे।

(६) जैसे स्पर्शमणि के स्पर्श करते ही हीन [धातु] भी हेम (स्वर्ण) हो जाती है (७) उसी प्रकार मैंने शेख मुहम्मद (दीन) को देख कर बिना साहस के ही सिद्धि प्राप्त की।

टिप्पणी—(१) उदइल < उदइल्ल < उदयिन् = उदयवान् उन्नतिशील। (४) ओटव < ओउट्ट < आ + वृत् = करना। (५) बाजु < वज्ज < वर्ज्य = रहित बिना। (६) भीन < भिन्न = हीन न्यून कम विसदृश।

[१७]

परम तंत सौं लीन[1] जो[2] जान । सो मन के आखर[3] पहिचान[4] ।
मन के आखर[1] बिखम अपारा । गुरू होइ सो[2] लाव पारा ।
चहै[1] मन के आखर[2] लखि आवै । सहज सो[3] आपु अपान गवावै ।
गुरू पीर चाहहु*[1] परसादा । चीन्हहु मन हुतें छाँडि बिवादा[2] ।
प्रगट कला सब*[1] काहू[2] देखा । पै बिरला जन गुपुत सरेखा[3] ।
ए दोऊ बिधि निरमय[1] सिस्टि राउ[2] जग पीर ।
इन्ह दूनौ सिध ऊपर[1] गौस मुहम्मद[2] पीर ॥

पाठान्तर—(१) १ रा लीन्ह। २ ए जे। ३ ए पर। ४ ए पहिचानै।
(२) १ ए पर। २ ए गरुआ हो सो।
(३) १ ए जेही। २ ए पर। ३ ए तै।
(४) १ ए चाहि रा चाहु। २ ए ते चीन्हा मन बाद बेवादा।
(५) १ रा ए सब। २ ए काहु। ३ ए सुरेखा।
(६) १ ए यह दूनौ बिधि निर्मया। २ ए राय।
(७) १ ए सिर ठाकुर। २ ए गौस महंमद रा गौस मुहम्मद।

अर्थ—(१) जो परम तत्त्व में लय-लीन [होना] जानता है वही मन के अक्षर (बोल) पहचानता है। (२) मन के अक्षर (बोल) अपार (अत्यधिक) विषम होते हैं; यदि गुरु होता है तो वह [साधक शिष्य को उन मन के अक्षरों के] पार लगा देता है। (३) जो मन के अक्षरों (बोलों) को देख आना चाहे, वह सहज भाव से स्वयं अपनेपन (आत्माभिमान) को गँवा दे। (४) यदि तुम गुरु अथवा पीर का प्रसाद (उनकी कृपा) चाहते हो तो उन्हें मन से समस्त विवाद छोड़कर पहचानो। (५) [ईश्वर की] प्रकट कला तो सभी कोई देखते हैं, किंतु उसकी गुप्त कला के संबंध में सरेख (ज्ञानी) बिरले जन होते हैं।

(६) ऐसे दोनों [प्रकार के ज्ञानी] विधाता के द्वारा सृष्टि के राजा और जगत् में पीर निर्मित होते हैं; (७) [किन्तु] पीर गौस मुहम्मद ऐसे दोनों [प्रकार के] सिद्धों के ऊपर [हुए] हैं।

टिप्पणी—(१) तंत < तत्त < तत्त्व । आखर < अक्षर। लौ < लय = तल्लीनता । (५) सरेख < संलिखित = जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो।

[१८]

ग्यान समुद अथाह गभीरा । जइ[1] सबा मो लागेउ[2] तीरा ।
काहू लिए[1] सिर सौं मुड़रावा[2] । कोइ[1] अग पोइ न आया ।
काहू[1] जाइ हाथ[2] मुह[3] धोवा । काहू पानि पिया कै गोवा ।
कोइ जाइ दगि फिरि आवा । जिमन[1] मुकुल[2] सम*[3] काहू पावा[4] ।
नागर[1] समुंद में[2] नीर बिहूना । प बिरला[4] सिर पुम्म न[3] पूना ।
जाकहँ जमिम[1] सिमुमै[2] तासहु[3] तेमिम[4] सिद्धि ।
उन्मि अपार पीर कलिजुग महि[1] ग्यान परम[1] न निद्धि ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्धाली ४ के दोनों चरण परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए अइ। २ ए लागा।
(२) १ ए काहू ते। २ रा लागावा। ३ ए कोउ।
(३) १ ए काहू। २ रा हात। ३ ए मुख। ४ ए काहू पानी पीअती।
(४) १ ए पुन्य। २ रा ए सब। ३ ए काहू। ४ ए मावा।
(५) १ ए मातरि। २ ए में यह प्रत्यय नहीं है। ३ रा विरले। ४ रा का
(६) १ ए जैसी। २ ए निश्चै तन। ३ ए ताके। ४ ए तैसी।
(७) १ ए में। २ ए धर्म।

अर्थ—(१) [पीर ग़ौस मुहम्मद] ज्ञान के अथाह गंभीर समुद्र थे; जिसने भी उनकी सेवा की वह [भवसागर के] तीर (किनारे) लग गया। (२) किसी ने [ज्ञान के उस समुद्र में] सिर से डुबकी लगाई, तो कोई उसमें अंग धोकर ही [निकल] आया। (३) किसी ने जाकर उसमें हाथ-मुँह धोया तो किसी ने गोपन करके उसमें पानी पिया। (४) कोई जाकर उसे देखकर ही लौट आया। किन्तु जीवन का पुण्फल [ऐसे] सभी किसी ने प्राप्त किया। (५) नहीं तो उस [ज्ञान-] समुद्र के तीर के बिना ही रह गए क्योंकि अवश्य ही वे विरले थे जिनके कपाल (भाग्य) में पूर्व का यह पुण्य [संचित] था [कि उस ज्ञान-समुद्र के सपर्क में आते]।

(६) जिसको जैसा निश्चय था, उसको उस प्रकार की सिद्धि मिली। (७) पीर (ग़ौस मुहम्मद) कलियुग में ज्ञान और धर्म की निधि [के रूप में] अपार उदधि हुए।

टिप्पणी—(३) गोवा < गोपन। (५) पुब्ब < पुम्ब < पूर्व। पुन < पुण्य।

[१९]

जो कोइ मन इच्छा कै आव । देखत मुख परतिग्या[१] पावै ।
ता[१] कह ब्रह्मग्यान चित[२] आवै[१] । औ लौ लीन[२] तत दसराव[३] ।
सोवत जो दिन[१] आपु गवावै । जसें[२] हाट मोंट धरि आव ।
करम बात पै[१] जानि न आई । जहँ जसि[२] लौ तहँ तसि अधिकाई[३] ।
जेहि सिर पुत्र[१] करम क रेखा । तेइ[२] जग सख[३] मुहम्मद[४] देखा ।
जो दिठिआर बिधि सिर[१] तिन्ह घट[२] आगा तूर ।
ज गादुर क निरमए[१] तिन्ह अधिआरा[२] पूर[३] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए परतग्या।
(२) १ ए ता कहं बहमा ग्यान चितावै रा ताकहं ब्रहम ग्यान जब आवै। २ रा लोन्ह। ३ ए मिलावै।
(३) १ ए सेती जो दीन। २ ए सो दिन।
(४) १ रा जो। २ ए जस रा जैसन। ३ रा मिधि पाई।
(५) १ ए पूर्व। २ ए ते। ३ रा दोख। ४ ए महमद।
(६) १ ए जो रे दीठा बिधि सिरा। २ ए तेहि घर।
(७) १ ए सिरा। २ ए अंध्यारे। ३ ए भूर।

अर्थ—(१) यदि कोई मन में इच्छा करके आता था, तो उसका मुख देखते ही वह प्रतिज्ञा

(साध्य तत्व का निर्देश) प्राप्त कर लेता था। (२) उसको चित्त में ब्रह्म का ज्ञान आ जाता था और लयलीन होने पर उसको [परम] तत्व दिखाई पड़ने लगता था। (३) [किन्तु] जो खोकर अपने दिन गँवाता था वह तो जैसे हाट में अपनी मोट (गठरी) रख (छोड़) जाता रहा हो। (४) किन्तु लय (साध्य) की बात जानी नहीं जाती है; जिसकी जैसी लय (तल्लीनता) होती थी उसे उसी प्रकार अधिकता [से सिद्धि] प्राप्त होती थी। (५) जिसके कपाल (भाग्य) में पूर्वार्जित कर्मों की रेखा होती थी वही इस जगत् में शेख मुहम्मद [ग़ौस] को देखता (उनका दर्शन करता) था।

(६) जिनको विधाता ने दृष्टि वाले निर्मित किया था, [शेख मुहम्मद ग़ौस के संपर्क में आने से] उनके घटों (अंतःकरणों) में [ज्ञान का] तूर्य बजा; (७) किन्तु जिनको उसने चाखुर (चमगादुर) करके निर्मित किया था उनके घटों में पूरा अंधकार रहा।

टिप्पणी—(१) परतिग्या < प्रतिज्ञा = साध्य वचन या तत्व का निर्देश। (२) (४) लौ < लय = तल्लीनता। तत < तत्त < तत्व। (३) हाट < हट्ट = आपण बाजार। (५) पुब्ब < पुव्व < पूर्व = पूर्वार्जित। (६) तूर < तूर्य = तुरही। दिठि < दृष्टि।

[२०]

एहि[1] कलि जते[2] पंडित भए। मूँड़ मुड़ाइ[3] सिद्धि लै गए।
अरु अनेग मूरख जग[1] आए। ते[2] सभ[3] ब्रह्म पद[4] ग्यान चेताए।
ग्यान ध्यान छुटि और न काजा। भेस बिभेस दुहु जग[1] राजा।
जो कोइ चारि दवस सभ*[1] रहा। त छाड़ा दुहु जग*[2] सथ*[3] गहा[4]।
जा तन[1] मया दिस्टि कै[2] हेरा। त आपुहि दुहुँ[3] जग सौं[4] फेरा।
हिया अँजोर नहिं[1] पटतर[2] पावै कोटि सूर परगास।
तीनिउ लोक तजे जो बैठा[1] गहवा गरब[2] गगास॥

पाठान्तर—(१) १ ए येहि। २ ए जेतिक। ३ ए मुड़ाये।
(२) १ ए जा। २ ए सो। ३ रा सब। ४ ए ब्रह्मपद।
(३) १ ए दुनी जुग।
(४) १ रा ए सग। २ रा निह छाड़ेउ बहु घटि ए ते छाड़ा दुहु जुग। ३ रा ए सम। ४ ए रहा।
(५) १ रा आरह ए जान। २ ए मरि। ३ ए दुहु। ४ ए जुग ते।
(६) १ ए हिया अँजोरिन। २ रा मे पाठ स्पष्ट नहीं है।
(७) १ ए तीनि लोक तिज पी बसा। २ रा गरब।

अर्थ—(१) इस कलि में जितने भी पंडित (ज्ञानी) हुए, मूँड़ मुँड़ाकर (उनकी शिष्यता ग्रहण कर) सिद्धि लेकर चले गए। (२) संसार में अनेक मूर्ख भी आए, और वे सब भी [शेख मुहम्मद ग़ौस की कृपा से] ब्रह्म-पद के [देने वाले] ज्ञान में चेतित हुए। (३) उन्हें भी ज्ञान-ध्यान छोड़ कर और कार्य न रहा—इस प्रकार वेषधारी और वेषविहीन दोनों ही [उनके संपर्क में आकर] संसार के राजा हुए। (४) जो कोई चार दिन भी उनके साथ रहा, उसने दोनों जगत्—इहलोक और परलोक—को छोड़कर उनका संग पकड़ा। (५) जिनकी ओर उन्होंने मया (कृपापूर्ण स्नेह) की दृष्टि करके देखा उनने अपने को दोनों जगत्—इहलोक और परलोक—से मोड़ लिया।

(६) हृदय के प्रकाश की तुलना कोटि सूर्य का प्रकाश भी नहीं कर सकता है, (७) यही कारण है कि [ऐसा ज्ञानी] पुष गर्व के पास से तीनो लोकों को छोड़ बैठता है।

टिप्पणी—(२) अनेम<अनेक। (६) सूर<सूर्य।

[२१]

बारह बरिस[1] तहाँ गै*[2] दुर । जहाँ सूर ससि दिस्टि न पर ।
बिकट बिखम औ[1] भयावन ठाऊ । कलिजुग धु ष दरी ओहि नाऊ[2] ।
चहु दिसि परबत बिखम अगमा । तहाँ न केहू[1] मानुस गमा[2] ।
तहाँ जाइ क जपेउ[1] बिधाता । क अहार बन जामुनि पाता ।
मन मतंग मारि बस किया । ग्यान[1] महारस अंम्रित पिया ।
साहस उदित अपान साधि कै[1] लीन्हि सिद्धि अवराधि[2] ।
बारह बरिस[1] रहे बन परबत लाए जो[2] ब्रह्म समाधि ।।

पाठान्तर—(१) १ ए बरिस। २ ए धु ष। किंतु कवि स्थान का नाम धमली अर्धाली में देता है। ३ रा में यह शब्द नहीं है, ए के। प्रस्तुत लेखक का सुझाव है कि यहाँ 'गै' का भिन्न फ़ारसी-लिपि के लेखन प्रमाद के कारण 'के' पढ़ा गया। 'गै' तथा 'के' दोनो फ़ारसी लिपि में एक ही प्रकार से लिखे जाते थे।
(२) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए धवलर धो माऊ।
(३) १ ए कतहुँ। २ ए मगमा।
(४) १ ए जपा।
(५) १ रा ग्या।
(६) १ ए साहस उठै अपान जो। २ ए साधि।
(७) १ ए बरस। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए ब्रह्म।

अर्थ—(१) वे बारह वर्षों तक वहाँ जाकर छिपे रहे जहाँ सूर्य और शशि भी दिखाई नहीं पड़ते थे। (२) वह विकट विषम और भयावना स्थान है, कलियुग में उसका नाम धु ष दरी है। (३) [वहाँ] चारो दिशाओं में विषम और अगम्य पर्वत हैं, और वहाँ किसी प्रकार भी मनुष्य का गमन [संभव] नहीं है। (४) वहाँ जाकर उन्होंने वन की जामुन के पत्तों का आहार कर विधाता को जपा। (५) [वहाँ] उन्होंने मन के मतंग (मदमत्त) को मारकर वश में किया और ज्ञान महारस के अमृत का पान किया।

(६) उदित साहस के साथ आत्मा को साध कर उन्होंने सिद्धि को अवराध (आराध) किया (७) जब वे बारह वर्षों तक वनों-पर्वतों में ब्रह्म-समाधि लगाए बने रहे।

टिप्पणी—(५) मतंग<मत्ताङ्ग=उन्मत्त [हाथी]। (६) अपान< अप्पाण<आत्मन्।

[२२]

अब सुनु सिजिर खान सिरदानी । रन अमिट बुधिवंत गियानी ।
गुन बिद्या साहस सिधि पूरा । पंडित पढ़ा चढ़ें रन सूरा ।
दाहिनि भुजा साहि कै भारी । जहि दिसि खड़ा सोइ दिसि गाढ़ी ।
जा कहँ मया बचन मुख बोलै । जिमि ध्रुव अचल न कबहू डोलै ।
महा दानि जस समुंद हिलोरा । असत न मुख सों निकस थोरा ।
रन सरूप औ सूरा खट रस बिद्या जान ।
दानि खरग सत साहस दस औ चारि निधान ॥

पाठान्तर—यह छंद केवल रा में है, ए में नहीं है शेष प्रतियाँ यहाँ खंडित हैं।

अर्थ—(१) अब सिर देने वाले (वीर) खिज्र खाँ को (के विषय में) सुनो जो रण में अमिट (दुर्जेय) बुद्धिमान और ज्ञानी है (२) जो गुण विद्या और साहस की सिद्धि में पूर्ण है, और जो [शास्त्रों का] पढ़ा हुआ पंडित और चढ़ाई करने पर रण में शूर है (३) जो शाह की भारी दाहिनी भुजा [के समान] है, और जो ऐसा है कि जिस दिशा (पक्ष) में खड़ा होता है, वही दिशा प्रगाढ़ (दुर्जेय) हो जाती है (४) जो ऐसा है कि जिसको मुख से मया (कृपापूर्ण स्नेह) में वह कोई वचन दे देता है वह वचन [उसके लिए] ध्रुव और अविचल हो जाता है और कभी टलता नहीं है (५) जो ऐसा महादानी है जैसी समुद्र की हिलोर होती है और जिसके मुख से थोड़ा भी असत्य नहीं निकलता है

(६) जो रण-स्वरूप है शूर है और [भोजन के] षट रस तथा विद्याओं को जानता है (७) जो खड्गदानी है तथा सत, साहस तथा चतुर्दश विद्याओं का निधान है।

टिप्पणी—(५) हिलोर < हिल्लोल = समुद्र की लहर।

[२३]

कटक माह एकै खड़राहा । बादसाहि सइ आपु सराहा ।
खरग दरब अरु रुहिर पियासा । हिलत सौंग जस मूस उदासा ।
सुनतहि सिजिर नाम प्रन दानों । अरि उरि जनु बिजुली बज ठानों ।
चढ़ अनी सब सूर सराहीं । बाइ भुजा रूप सब जाहीं ।
महावीर जग ऊपर मौनों । बारह बानि गुनाहिर सोनों ।
दान खरग बलि महि मिल गुन गाहक समार ।
सुमन राघु जिम हरप जग फर गहैं करतार ॥

पाठान्तर—यह छंद भी केवल रा में है ए में नहीं है, शेष प्रतियाँ यहाँ खंडित हैं।

अर्थ—(१) "वह (खिज्र खाँ) कटक में एक ही खड्गाराधक है" ऐसी बादशाह ने स्वयं अपने-आप सराहना की। (२) उसका खड्ग द्रव्य और रुधिर का प्यासा [रहता] है और उसकी सौंग इस प्रकार हिलती रहती है जैसे उदास मूस (चूहा) [हिलता रहता है]। (३) समस्त [शत्रु] खिज्र खाँ का [शत्रु-नाश-विषयक] प्रण सुनकर शत्रु के हृदय में मानो विद्युत और वज्र

झुक जाते हैं। (४) उसकी अनीक (सेना) के चढ़ाई करने पर सभी शूर उसको सराहना करते हैं, जिसकी बाईं भुजा-स्वरूप वे होते हैं। (५) यह मीना (प्रिय खाँ) संसार के ऊपर (संसार में सर्वश्रेष्ठ) महावीर है। यह बारह वर्णों का (खरा) और सुवासित (सुवाससंयुक्त) सोना है।

(६) कलयुग में संसार भर में इस कलि में ऐसा गुण-ग्राहक नहीं मिल सकता है। (७) जब वह (प्रिय खाँ) हाथ में तलवार पकड़ता है यह सुनते ही शत्रु जी में डरने लगता है।

टिप्पणी—(१) संडराहा < खड्गाराधक। सई < स्वर्य। (३) बज्र < वज्ज < वज्र। (५) बारह बानि < द्वादश वर्णिन् = बारह वर्णों का अर्थात् खरा। (७) करवार < करवाल = खड्ग तलवार।

[२४]

अरे अर बचन कहाँ तोर बासा । कौ[1] कह हुतें[2] तोर परगासा ।
कौ कह हुत[1] उतपति भइ[2] तोरी । जहाँ माहिं[3] सचरति[4] बुधि मोरी ।
अचरिजु एक मोर[1] चित अहई[2] । कोउ न अरथ ताहि कर कहई[3] ।
बचन कर[1] उतपति मुह सेऊ[2] । मानुस बोल अम्मर कहु कऊ[3] ।
रहै न बचन केर[1] पति जहाँ[2] । कसें[3] बचन अम्मर होइ[4] तहाँ[5] ।
देखहु मनहि बिचारि क बचन[2] बचन हिय[3] माँह[4] ।
बचन ऐस है ताकर[1] जो बरतत सभ माँह[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कउ। २ ए कहाँ हुते।
(२) १ ए कउ कहाँ ते। २ ए भौ। ३ ए न। ४ ए संचरै।
(३) १ रा मोर। २ रा आहै। ३ रा पावै।
(४) १ ए कै। २ ए मोहि सेऊ। ३ ए अम्मर (< अम्मर) हो कोऊ, रा अमर कहुं केऊ।
(५) १ ए कै। २ ए जाहा। ३ ए कैसे। ४ ए हो। ५ ए ताहा।
(६) १ ए देखा। २ ए बचनै। ३ रा हियें (?)। ४ ए माह।
(७) १ ए तिचता कै। २ ए सब माह।

अर्थ—(१) अरे बचन (बोल) कहाँ तेरा निवास था और कहाँ से तेरा प्रकाश (प्रादुर्भाव) हुआ? (२) और कहाँ से तेरी उत्पत्ति हुई जहाँ मेरी बुद्धि भी नहीं संचरण कर पाती है? (३) [यह] एक आश्चर्य मेरे चित्त में है और कोई भी उसका अर्थ नहीं कहता है। (४) यदि बचन की उत्पत्ति मुख से हुई, तो मनुष्य का बोल अमर किस प्रकार हुआ? (५) जब कि बचन का स्वामी (मनुष्य) नहीं रहता (नष्ट हो जाता है) तब बचन किस प्रकार अमर होता है?

(६) मन में विचार करके देखो कि बचन का बचन भी [तुम्हारे] हृदय में है (७) और इस प्रकार का बचन उसका है जो सब में बर्तता (रहता) है।

टिप्पणी—(१) परगास < प्रकाश।

[२५]

बचन जौं नहिं*[1] निरमवत बिधाता। कत सुनत[2] कोई रस[3] बाता।
प्रथमहिं[1] आदि सिस्टिहु के पारा[2]। हरिमुख बचन लीन्ह औतारा।
एक बचन[1] आदि उंकारा[2]। भल मंद* होइ ब्यापा[3] सयसारा[4]।
बिधन जगत बचन बड़ कीन्हा। बचन हुतें[1] पसु मानुस[2] चीन्हा।
बचन क बात जान सब कोई। बचन हुतें परगट भा सोई[1]।
काहु[1] रूप न देखा औ काहु[2] न जानउ[3] ठाइं।
बचन हुतें भा[1] परगट त्रिभुवन नाथ गोसाइं॥

पाठान्तर—ए में उपयुक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए म रा नहि (<नहिं)। २ ए कहत। ३ रा कोउ रस कै।
(२) १ ए प्रथमै। २ ए सिस्टि के सारा।
(३) १ ए मे यहाँ 'के' और है। २ ए हुँकारा। ३ रा भल मद होइ व्यापा ए भल मन्दा व्यापी। ४ ए संसारा।
(४) १ ए बचनहु तें। २ रा तैसें।
(५) १ म ए अर्द्धाली का पाठ है —
उतपति बचन सिस्टि के सारा। बचन बमहूँ सब ससारा।
(६) १ ए काहु। २ ए काहु। ३ ए जाना।
(७) १ ए बचन सुने हुति।

अर्थ—(१) यदि विधाता बचन का निर्माण न करता तो कोई रस-वार्ता कहाँ तक सुनता? (२) प्रथम ही और आदि सृष्टि के परे भी हरिमुख में बचन ने अवतार लिया। (३) वह एक (प्रथम) बचन आदि ओंकार था जो कि भला और बुरा होकर संसार में व्याप्त हो गया। (४) विधाता ने बचन को जगत् में बड़ा बनाया क्योंकि बचन से ही पशु और मनुष्य पहिचाना जाता है। (५) बचन की बात सभी कोई जानता है [क्योंकि] वह (ब्रह्म) भी बचन से प्रकट (व्यक्त) हुआ।

(६) किसी ने रूप (ब्रह्म) का रूप नहीं देखा और न किसी ने उसका स्थान जाना; (७) वह त्रिभुवननाथ स्वामी बचन से ही प्रकट (व्यक्त) हुआ।

टिप्पणी—(१) बैत्र < विपत् = विरचना। (३) सयसार < ससार। (६) ठांइ < स्थान।

[२६]

बचन अमोल जगत मंह[1] आवा। बचन हुतें गुर ग्यान लखावा।
धारि ब[2] बिधन निरमाऊ। बचन जगत मह् परगट भएऊ[3]।
बचन मरग मनँ भुद[1] आवा। औ बिधन जग बचन पठावा[2]।
जो पिउ बचन क[1] सम्मरि*[2] पावत। बचन ठाउ मोहि भुद[3] आवत[4]।
परपम* मानुग हा[2] औमरिया[1]। महूरि अम्बर जुग धारि[2] न मरिया[3]।

बचन अमोल पदारथ बरन न सकेउ उरेहि ।
बचन एस बिधना कर[1] जाक[2] रूप न रेख ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बचन अमोलिक गय जे। २ ए बचनहु ते।
(२) १ रा चारि मो बेद निरमए। २ ए मो। ३ रा भए।
(३) १ ए बचन सरग भुईं तै। २ रा पठावा।
(४) १ ए क। २ रा ए सरबरि। ३ ए बचन का ठाव सोइ भू। ४ रा आवा।
(५) १ रा प्रथमहि मानुस होइ औतरिया ए प्रथम मानुस मैं औतरियैं। २ रा ए अमर। ३ रा जाइ। ४ ए मरियै।
(६) १ ए न सके उरेख।
(७) १ ए कै। २ ए जाकर।

अर्थ—(१) बचन जगत् में अमूल्य धन [कि सदृश] आया [क्योंकि] गुरु ने भी वचन से ही ज्ञान-दर्शन कराया। (२) जब विधाता ने चारों वेदों का निर्माण किया तब बचन जगत् में प्रकट हुआ। (३) बचन स्वर्ग से भूमि पर आया और विधाता ने ही जगत् में बचन को भेजा। (४) यदि कुछ (कोई पदार्थ) बचन की समानता पाता तो बचन के स्थान पर वह भी भूमि पर आता (अवतीर्ण होता)। (५) [विधाता] प्रथम तो मनुष्य हो कर अवतीर्ण हुआ तदनंतर अमर [बचन] हो कर अवतीर्ण हुआ जो चारों युगों—सत त्रेता द्वापर और कलि—में नहीं मरा।

(६) बचन ऐसा अमूल्य पदार्थ है कि मैं उसके वर्ण को उरेह (रेखाओं के द्वारा चित्रित) नहीं सका। (७) विधाता का बचन ऐसा है जिसका न रूप है और न जिसकी रेखा है [और इसलिए जो अवर्णनीय है]।

टिप्पणी—(१) उरेह < उल्लिख् = रेखाओं के द्वारा कोई आकृति बनाना।

[२७]

प्रथमहि आदि पेम परविस्टी[*1] । तौ पाछें भइ[2] सकल सिरिस्टी[*3] ।
उतपति सिस्टि प्रेम सौं[1] आई[*2] । सिस्टि रूप भर पेम सबाई ।
जगत जनमि जीवन फल ताही । पेम पीर उपजी[1] जिअ जाही ।
जेहि जिअ[1] पेम न[2] आइ समाना । सहज मद[3] तेइ[4] किछू न जाना ।
जेहि जग दहअ बिरह दुख दिआ[1] । त्रिभुवन कर राउ सो किआ[2] ।
जनि कोइ बिरह दुक्ख जिअ माने[1] ओहि जग आवा[2] सुक्ख ।
धनि[1] जीवन जग ताकर[2] जाहि बिरह दुख दुक्ख ॥

पाठान्तर—(१) १ ए प्रविसिटि रा परविस्टा। २ ए भइ पाछे जो। ३ ए सिरिस्टि, रा सिरिस्टा।
(२) ए पेम ते। २ रा आही। ३ ए मह। ३ ए सबाई।
(३) १ ए उपजा।
(४) १ ए जिय। २ ए मैं यह धर्म नहीं है। ३ रा बिहिन। ४ ए ते।

(५) १ ए जेहि भगत बिरह दुख दैऊ। २ ए मैऊ।
(६) १ ए जे मानै। २ ए दुहु जुग भीर न।
(७) १ ए मन। २ रा ताहि कर।

अर्थ—(१) प्रथम ही [सब के] आदि में [ईश्वर के मन में मुहम्मद के लिए] प्रेम की अभिव्यक्ति हुई, और उसके पीछे [उसी प्रेम से] समस्त सृष्टि हुई। (२) उत्पत्ति (आदि) में सृष्टि प्रेम से ही [अस्तित्व में] आई और सृष्टि के रूप में वह सब (समग्र) प्रेम भर गया। (३) जगत् में जन्म ग्रहण कर जीवन का फल उसी को प्राप्त हुआ जिसके जी में प्रेम-पीड़ा उत्पन्न हुई। (४) जिसके जी में प्रेम आकर (उत्पन्न होकर) समाया नहीं उसने सहज का भेद कुछ भी नहीं जाना। (५) जिस को संसार में दैव ने विरह का दुख दिया, उसको उसने तीनों भुवनों—आकाश पाताल और मर्त्यलोक—का राजा कर (बना) दिया।

(६) कोई विरह को जी में दुःख न माने [क्योंकि] उसी के द्वारा जगत् में सुख आया। (७) संसार में उसी का जीवन धन्य है जिसे विरह-दुख का दुख है।

टिप्पणी—(२) सिस्टि < सृष्टि।

[२८]

पेम[1] अमोलिक नग संसारा[2]। जेहि[3] जिअ पेम सो[4] धनि[5] औतारा।
पेम लागि संसार उपावा। पेम गहा बिधि परगट आवा।
पेम जोति सभ[1] सिस्टि अंजोरा। दोसर[2] न पाव पेम कर[3] जोरा[4]।
बिरला कोइ[1] जाके[2] सिर भागू। सो पाव यह पेम[3] सोहागू।
सबद ऊंच चारिहु जुग[1] बाजा। पेम पंथ सिर[2] देइ सो राजा।
पेम हाट चहु दिसि[1] है पसरी गै बनिजो जे कोइ[2]।
लाहा औ फल गाहक[1] जनि डहकावै कोइ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्द्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए बचन (तुल २९१)। २ ए संसारा। ३ ए जेहि। ४ ए में यह शब्द नहीं है। ५ ए धन्य।
(३) १ ए पेम अंजोरी। २ ए दोसर। ३ ए जोर।
(४) १ रा में नहीं है और है। २ ए जाम (< जाके का लि)। ३ रा बिरह। ४ ए पेम क। ५ रा भोरा।
(५) १ ए चारौं खंड। २ ए जीउ।
(६) १ ए दिस। २ रा सर्वहि बनिज जो कोइ (का परवर्ती चरण के तुक में भी है।)
(७) १ ए गाहि ते।

अर्थ—(१) प्रेम संसार में अमूल्य नग है; जिसके जी में प्रेम है उसका अवतार (जन्म) धन्य है। (२) [विधाता ने] प्रेम के लिए संसार को उत्पन्न किया और प्रेम को ग्रहण कर (उसी को साधन करने के लिए) वह प्रकट (अवतार) हुआ। (३) प्रेम की ज्योति से ही सृष्टि में प्रकाश हुआ; [इसी लिए] प्रेम का दूसरा जोड़ा (समतुल्य) नहीं मिलता है। (४) विरला ही कोई जिसके सिर पे भाग्य होता है इस प्रेम के सौभाग्य को प्राप्त करता है। (५) यह शब्द

(कथन) चारो युगों—सत त्रेता द्वापर और कलि—में ऊँचे स्वर से बजा (प्रचारित हुआ) है कि जो प्रेम के पथ में सिर (जीवन) देता है, वह राजा होता है।

(६) प्रेम की हाट चारो दिशाओं में फैली हुई है हे लोगो, यदि चाहते हो तो उसमें जा कर वणिज करो (क्रय-विक्रय करो); (७) लाभ और फल के प्रभुओ कोई भी [अवसर छोड़ कर] मत हानि उठाओ।

टिप्पणी—(२) उपाव < उप्पाय < उत् + पादय् = उत्पन्न करना बनाना। (४) सोहाग < सौभाग्य। (६) हाट < हट्ट = आपण बाजार।

[२९]

मिस्टि[1] मूल बिरहा जग आवा। प बिनु पुब्ब् पुन्नि[2] का[2] पावा।
पम पम्दारथ जगत अमोला। निहुच जिअ[1] जानहु[1] यह बोला।
देखा सुना जहाँ लगि होई[1]। पम बिबजित[2] किछ नहि सोइ।
पम दिया[1] जाकें घट बारा। तहि सम[2] आदि अंत उजिआरा।
बिरह जीउ जहि क[1] घट होई। सदा अमर रहै मर न सोई।
कौनौं पाठ[1] पढ़[2] नहि[3] पाइअ बिरह बुद्धि औ सिद्धि।
जा कहुँ[1] दइ दयाल दया करि[2] सो पाव यह निद्धि॥

पाठान्तर—रा में दोहे की पंक्तियाँ यहाँ नहीं हैं, मूल से वे अगले छंद के बाद आई हुई हैं।
(१) १ ए सिस्ट। २ ए पैं बिना पूर्व पुन्य क रा पैं बिनु पुब्ब पुन्न को।
(२) १ ए निश्चै जीव जान।
(३) १ ए यहाँ लगु आई। २ रा बिबरजुन। ३ ए बिर न रहाई।
(४) १ ए. दीप। २ रा जाकें घट बारा ए जाके हिय बरा। ३ ए सब।
(५) १ ए जाके। २ ए पुनि मरै न काई।
(६) १ ए. पाट। २ ए पढ़ैं। ३ ए 'न' (< 'नहि' का लि)।
(७) १ ए जाके। २ ए कै।

अर्थ—(१) सृष्टि के मूल (आदि) में ही जगत् में विरह आया, किंतु बिना पूर्व के पुण्य के उसको किसने पाया? (२) प्रेम पदार्थ जगत् में अमूल्य है अपने जी में यह बोल (वचन) निश्चय जान लो। (३) जहाँ तक देखा-सुना गया (इंद्रियगोचर हुआ) होगा प्रेम से विरहित कुछ (कोई पदार्थ) नहीं है। (४) जिसके घट (अंतःकरण) में प्रेम का दीपक जला उसके लिए आदि और अंत उज्ज्वल (प्रकाश-पूर्ण) हैं। (५) जिसके घट (शरीर) में विरह का (विरह-पूर्ण) जीव होता है वह सर्वंदा अमर रहता है, और मरता नहीं है।

(६) [किंतु] विरह की बुद्धि (भावना) और सिद्धि किसी भी [शास्त्रादि के] पाठ के पढ़ने से नहीं प्राप्त होती है (७) जिसको दयालु और दयानिधि [ईश्वर] दया कर इसे देता है वही यह निधि प्राप्त करता है।

टिप्पणी—(१) पुब्ब < पूर्व = पूर्वार्जित। पुन्नि < पुण्य। (४) दिया < दीअअ < दीपक। बर < ज्वल् = जलना।

[३०]

जहि जिअ पर पम कै[1] रेखा । जह देख तह रूप अलखा[2] ।
उपजि आव हिअ जौ पुनि ग्याना[1] । जहं दखै*[2] तहं आपु[3] अपाना ।
पुनि जौ ग्यान विरिख फर दई । सरबस दै दोसर[2] नहि लेई ।
कतहु सिस्टि महं रहै न दहू । जहं देखहि[1] तह आदि[3] अनदू ।
तुइ[1] दीपक तहि[2] सिस्टि क[3] ग्रहा । कबहु*[4] जीउ जनि[5] जानसि देहा[6] ।
दुख सुख सम समसार[1] कर जेत भाव सत[3] होउ[4] ।
सो सम[1] परस आइ तोहि दोसर[2] और न कोउ[3] ॥

पाठान्तर—रा में पिछले छंद का दोहा यहाँ आता है।
(१) १ ए की। २ ए जहँ देखौ तहँ देखौ देखा।
(२) १ ए उपजि परै जेहि हिय ग्याना। २ ए देखौ रा देखत। ३ रा बरिसहि।
(३) १ रा फल। २ रा लेहु। ३ ए कोई।
(४) १ ए कतहु सिस्टि जो। २ ए जहू देखी। ३ रा पाठ स्पष्ट नहीं है।
(५) १ ए तौ। २ ए पै। ३ ए क रा म यह शब्द नहीं है। ४ ए तुइ रा तबहु। ५ ए जा। ६ ए गेहा। (है पूर्ववर्ती चरण का तुक)।
(६) १ ए सब। २ ए बत। ३ ए तत। ४ रा होइ।
(७) १ ए सब। २ ए बिनु। ३ रा कोइ।

अर्थ—(१) जिसके जी में प्रेम की रेखा (प्रकाश-रेखा) पड़ जाती है, वह जहाँ भी देखता है अदृश्य [परमात्मा] को देखता है। (२) और फिर यदि (जब) उसके हृदय में ज्ञान उत्पन्न हो जाता है [तब] वह जहाँ भी देखता है वह स्वयं अपने आत्मा को देखता है। (३) फिर यदि (जब) वह ज्ञान-वृक्ष फल देता है, [तब] वह सर्वस्व देकर भी [उस फल के अतिरिक्त] दूसरे [पदार्थ] को नहीं लेता है। (४) [तब उसके लिए] सृष्टि में कहीं भी द्वन्द्व नहीं रह जाता है और वह जहाँ भी देखता है [उसके लिए] आदि (मूल) आनन्द ही होता है। (५) तुम्हीं उस सृष्टि के गृह में दीपक हो; तुम देह को कभी जीव न जानो।

(६) संसार के दुःख-सुख जितने होना चाहें, हों (७) वे सब आकर तुम्हें ही स्पर्श करते हैं, दूसरा और कोई नहीं है [जिसे वे स्पर्श करते हों]।

टिप्पणी—(१) अलेख < अदृश्य। (२) आप < अप्प < आत्म। अपान < अप्पाण < आत्मन्। (५) गेह < गृह।

[३१]

स जम्निधि[1] गव[2] निधि मा[3] भग । फार धरमि गरब धम पग[4] ।
तोर धन्न तिरभुवन अजोरा[1] । मारग सिस्टि सुर[2] दरसन तोरा ।
तानिय[1] जाति मरम परगासा । मितु माफ पताल मगासा ।
सरस सिस्टि महं[1] परगट तुहीं[2] । सरबस तुई[3] दोसर कोइ नहीं ।

जो कोइ खोज सोइ [प]*[1] जोवा[2] । सो का जोइ[3] जहि नहि किछु[4] खोवा ।

कौन सो ठाउ जहाँ त नाहीं तीनि भुवन उजियार ।

निरखि देखु तैं सरबस पूर सब ठाँ तोर बेवहार ॥

पाठान्तर—रा में पिछले छंद का दोहा यहाँ आता है ।

(१) १ ए जलधर। २ ए जो। ३ रा कै। ४ ए कुम घट भरा। (तुल० पूर्ववर्ती चरण का तुक)

(२) १ ए इंजोरा। २ ए जो।

(३) १ ए तोरि। २ ए रा अकासा।

(४) १ ए माँ। २ रा भई। ३ ए है। ४ ए जो। ५ ए नाही रा नाईं।

(५) रा ए में यह अंश नही है। २ ए खोवा। ३ ए जोय। ४ ए जो न कछु।

अर्थ—(१) तू जलनिधि है और तू सब निधियों से भरा हुआ है तब तू गघ के वश में पड़ कर क्यों मर रहा है? (२) तेरे वदन (मुख) से ही त्रिभुवन—आकाश पाताल और मर्त्यलोक—उज्ज्वल (प्रकाशित) है; सकल सृष्टि के लिए तेरा मुख दर्पण है। (३) तेरी ही ज्योति से समस्त [सृष्टि] प्रकाशित है—मृत्युलोक पाताल और आकाश [में जो कुछ भी है]। (४) समस्त सृष्टि में तू ही प्रकट (व्यक्त) है; सरबस (सब कुछ) तू ही है और तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई [इस सृष्टि में] नहीं है। (५) जो कुछ खोता (गँवाता) है वही [वास्तविकता को] देख पाता है जो कुछ नहीं खोता है, वह क्या देख सकता है?

(६) वह कौन सा स्थान है जहाँ तू नहीं है? तीनों भुवनों—आकाश पाताल और मृत्यु लोक—में तू ही प्रकाश होकर व्याप्त है। (७) अवलोकन करके देख तू सर्वस्व को पूरित कर रहा है और सभी स्थानों पर तेरा व्यवहार है।

टिप्पणी—(५) जोव < जोअ [दे]=देखना। (७) निरख < णिरिक्ख < निरीक्ष् = देखना अवलोकन करना। बेवहार < व्यवहार।

[३२]

अब सुनु करम बात किछु[1] भाई । निरगुन रूप जमु[2] लौ लाई ।

तन[1] सौं[2] उरध लहि[3] गहि स्वासा[4] । अगिनि हीय कर[5] जोस बतासा ।

अरक पवन अगिनि[1] उन्गरई[2] । तौ कलंक कामा कर[3] जरई ।

तौ रहि[1] सरब गात पुनि होई । जो महि[2] कस्त गहै[3] रहु सोई ।

औ तही पुनि मों कर बासा । ताही जोति भीतर कबिलासा ।

कोटि माँह बिरला जन कोई[1] भोगइ[2] यह कबिलास ।

सुभ मंदिल मह[1] बास जम[2] जहाँ निकटब अल्लास ॥

पाठान्तर—ए, म उपयुक्त चौथी अर्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

रा म उपयुक्त पाँचवीं अर्धाली नहीं है।

(१) १ ए जो। २ रा बैठु।

(२) १ रा तेहि। २ ए सो। ३ ए के। ४ ए साँसा। ५ म अगिनि हाम जो।

(३) १ ए अग्नि। २ रा उघी करई। ३ ए तौ रे कलंक कया कर।
(४) १ ए तौ लगि। २ ए मी लगि रा तौ लहि। ३ ए गहे।
(६) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए भोगी (<भोगइ का सि)
(७) १ ए मो। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए म कपू प्रभास।

अर्थ—(१) अब तू जाकर कुछ कर्म (योग) की बात सुन; [परमात्मा के] निर्गुण रूप से लय लगाकर बैठ (२) शरीर से तू ऊर्ध्व श्वास ग्रहण कर, जिससे हृदय की अग्नि में कसात (बल) डोल पड़े। (३) पवन के झरकने (डोलने) से अग्नि जब] उद्गार करेगी तब काया का कलंक जलेगा (भस्म होगा)। (४) तब तक समस्त गात्र में एक [अनाहत ध्वनि होगी, जब तक तू कष्ट पूर्वक [उस श्वास को] पकड़े रहेगा। (५) और उसी [अनाहत] ध्वनि में तू निवास कर, [क्योंकि] उसी [अग्नि की] ज्योति के भीतर कैलास (स्वर्ग) [रहता] है।

(६) कोटि में विरला ही कोई व्यक्ति उस कैलास (स्वर्ग) का भोग करता है (७) शून्य मंदिर (भवन) में जिस प्रकार का निवास होता है, और उसमें जिस प्रकार का निष्कण्टक विलास होता है [जिस का अनुभव उस प्रकार का होता है]।

टिप्पणी—(१) लौ < लय = तल्लीनता। (५) कविलास < कैलास = स्वर्ग।

[३२]

परिहरि सुधि बुधि औ[१] ग्याना। कया बवरजित लावहि[२] ध्याना।
तौ[१] समाधि लौ लाग जहाँ[२]। आपु अपान पाव तू[३] तहाँ[४]।
निरगुन[१] जहाँ निरंजन सूना[२]। तहाँ आपु सौं[२] आपु बिहूना[३]।
ग्यान पार जहवाँ[१] अग्याना। तहाँ आपु सउ[२] आपु अयाना[३]।
सहज समाधि लाउ त तहाँ[१]। आपु सउ आपु पाउ सुधि जहाँ।
सहज अलोलै लाइ[१] ल[२] निगम गोफ[३] रहु सूति।
जहाँ न ते औ कोऊ[१] औ[२] एको करतूति।।

पाठान्तर—ए म उपर्युक्त अर्द्धालियों ३ ४ ५ का क्रम है ५, ३ ४।
(१) १ ए जो। २ ए लाये।
(२) १ ए पो। २ ए ताहा रा जहाँ। ३ ए म पावै। ४ ए जाहा रा तहाँ।
(३) १ रा करगुन। २ ए सुना। ३ रा आपुहि जानो (तुल परवर्ती अर्द्धाली)
(४) १ ए ग्यान अपार जहाँ। २ रा आपुसौं ए आपु ते। ३ रा बिहूना (तुल पूर्ववर्ती अर्द्धाली)।
(५) १ ए राज समाधि लाउ सै ताहा रा सहज समाधि लावै तहाँ। २ ए आपु आपनहि पाउब जाहा (तुल द्वितीय अर्द्धाली)।
(६) १ रा सहजा लै पौ लाइयै ए सहज अलोलै लान्है। २ रा जहाँ तहाँ।
(७) १ ए कोइ नहि। २ ए अउ।

अर्थ—(१) सुधि (मानसिक चेतनता) बुद्धि और ज्ञान को छोड़कर और काया से विवर्जित (विरहित) होकर [यदि] तू ध्यान लगावे (२) तो जहाँ (जब) समाधि की लौ (लय) लगेगी, वहाँ (तब) तू अपने आप (आत्मा—आत्मस्वरूप) को पावेगा। (३) जहाँ पर निर्गुण

निरंजन तथा शून्य है, वहाँ तेरा आप (आत्मा) अपने [पृथक अस्तित्व] से विरहित होगा। (४) ज्ञान से परे वहाँ अज्ञान है (ज्ञान की भी गति नहीं है) वहाँ तू आप अपने [पृथक अस्तित्व] से अयान (अज्ञान) होगा। (२) तू सहज समाधि वहाँ (उस स्थिति में) लगा, जहाँ (जिस स्थिति में) तू आप (आत्मा) से आप (आत्मा) की सुधि पा सके।

(६) सहज और अचपल रूप लगाकर तू उस निगम गुहा में सोया रह (७) जहाँ (जिसमें) न तू [तेरा पृथक व्यक्तित्व] रहे, न [अन्य] कोई हो और किसी प्रकार का कर्तृत्व हो।

टिप्पणी—(१) सुधि < शुद्धि = मानसिक चेतना (२) (३) आप < अप्प < आत्म। (४) अयान < अज्ञान = अनजान। (७) करतूति < कर्तृत्व।

[३४]

गढ़ अनूप बसि नगरि चनारी[1]। कलिजुग महँ[2] लंका सों[3] गाढ़ी[4]।
पुरुब दिसा गंगा[1] फिरि आई। उत्तर पछिम गग गढ़ खाई।
देख[1] बन जाइ नहिं कही[2]। गढ़ भीतर गंगा चलि[3] बही[4]।
साहि सहस जौ लागहिं[1] आई। जाहिं हारि[2] सिर ठेंगा[3] खाई।
ऊपर[1] छाजा अनवन[2] भाँती[3]। हेठ बही[4] सुरसरि सरसाती[5]।
नगरि अनूप सोहावनि[1] औ गढ़ बिखम[2] अगम।
परबत हाथ न आवै बिनु जस पुन्य[1] करम॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्द्धालियाँ ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए बस नग्र चनारी रा बसि नगरि चनारी। २ ए मों। ३ ए सो। ४ ए गाढ़ी।
(२) १ ए गंगा।
(३) १ ए देखत। २ ए कहई। ३ रा ए जल। ४ ए रहई।
(४) १ ए लाग। २ ए मारि। ३ ए ठेंगा।
(५) १ रा अवरख। २ रा ए अनौन (< अनवन)। ३ रा भाँती। ४ ए बहै। ५ रा नाई सुरसती।
(६) १ ए नगर अनूप सोहावन। २ रा नम।
(७) १ ए पै बिना पुरब।

अर्थ—(१) एक अनुपम गढ़ में चनारी (< चरणाद्रि = चुनार) नगरी बसी है; वह चनारी (चरणाद्रि = चुनार) [नगरी] कलियुग में लंका से भी गाढ़ी (दुर्गम) है। (२) [गढ़ के] पूर्व की दिशा में गंगा [नदी] घूमकर आई हुई है और गढ़ के उत्तर और पश्चिम खाई (परिखा) [के रूप में] गंगा है। (३) गढ़ के भीतर जाकर जो गंगा बही हुई है वह देखने ही बनता है कहा नहीं जाता है। (४) यदि एक सहस्र बादशाह [उस गढ़ को] आ लग (घेरें) तो वे भी हारकर और सिर पर ठेंगा (लकुट) खाकर चले जाएँगे। (५) ऊपर [गढ़ का] छज्जा अनवन (अद्भुत) भाँति (ढंग) का है और नीचे सुरसरि (गंगा) सरसाती हुई (जल से परिपूरित) बही हुई है।

(६) यह नगरी अनुपम रूप से सुहावनी है, और गढ़ विषम तथा अगंम (अजेय) है, (७) जैसे बिना पूर्व कर्मों के यह बरबस हाथ आ ही नहीं सकती है।

टिप्पणी—(१) पर्नाडी < परनाडि = पुनार। (२) खाईं < खाइ < खाति = परिखा। (४) पौ < पउ < मदि। (५) अनबन < अन्यवर्ण = भिन्न प्रकार की। हेठ < हेट्ठ [दे] = नीचे। (७) पुब्ब < पुव्व < पूर्व = पूर्वार्जित।

[३५]

गढ़ सुहाव गढ़पति सुर ग्यानी[1] । नगर लोक[2] सभ[3] सुखी नियानी[4] ।
सभ सुर हरी भगत औ ग्यानी[1] । आनदी पर दुखी[2] बिनानी ।
दाता औ[1] दयाल धरमिस्टा । सभै[2] पेम रस लीन[3] गरिस्टा ।
भागिवत भोगी सभ[1] लोगा[2] । औ सभ[3] कहूं[4] कुलवंत सजोगा[5] ।
मोहि अस्तुति मुंह[1] कही[2] न जाई । जानु सरग[3] भुइं छाया आई ।
खोरि खोरि[1] सभ[2] घर घर नगर अनंद[3] हुलास ।
कलिजुग महं[1] जस[2] प्रिथिमीं[3] उतरि बसी[4] कबिलास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए गढ़ सोहावन सुरपति सुर ग्यामा। २ ए लोग। ३ ए सब। ४ ए सुजाना।
(२) १ ए बसहिं भगती गीतानी (तुक परवर्ती चरण का तुक)। २ ए आनन्दित पर दुखी रा आनदी बिरह दुखी।
(३) १ ए जो। २ ए सबै लीन रस प्रेम रा सबै पम रस लीन्ह।
(४) १ ए सब। २ ए लोगू। ३ रा ए सब। ४ ए कर। ५ ए सजोग।
(५) १ ए मुंह अस्तुति जो। २ ए कहा। ३ ए जानहु सुर।
(६) १ रा खोरि खोरि। २ ए जो। ३ रा अनूप।
(७) १ ए मो। २ ए जो। ३ ए प्रिथिमी। ४ रा में यह शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) यह गढ़ सुहावना है और इस गढ़ का अधिपति स्वर ज्ञानी है तथा नगर की समस्त प्रजा सुखी और नियानी (किसी हेतु या उद्देश्य से काम करने वाली) है। (२) सभी लोग देवता और हरिभक्त तथा ज्ञानी हैं; वे आनंदी (आनंदकारी) पर दुख से दुखी होने वाले तथा बिज्ञानी हैं। (३) वे दाता, दयालु तथा धर्मिष्ठ हैं, और सभी प्रेम रस में लीन रहने वाले और गरिष्ठ हैं। (४) सभी लोग भाग्यवान और भोगी (भोगकारी) हैं, और सभी को कुलवान् होने का संयोग प्राप्त है। (५) मुख से [उस गढ़ की] स्तुति (प्रशंसा) कही (की) नहीं जाती है; [वह तो ऐसा है] मानो स्वर्ग ही भूमि पर आकर छा रहा हो।

(६) गली-गली तथा समस्त घर-घर में नगर में आनंद और हुलास (उल्लास) है (७) [और ऐसा लगता है] जैसे कलियुग में कैलाश (स्वर्ग) पुरी ही पृथ्वी पर उतर कर बसी हुई हो।

टिप्पणी—(१) नियान < निदान < निदान = कारण हेतु, उद्देश्य। (२) बिनानी < विज्ञानिन्। (६) हुलास < उल्लास। (७) प्रिथमी < पृथ्वी। कबिलास < कैलाश = स्वर्ग।

[३६]

यह छोंटी[1] कलि[2] नागिन कारी । त्रिभुवन मोहिनि बिरिध कुंवारी[3] ।
प्रथम[1] जनमि जहाँ लहि[2] आए । ते सब[4] मोहि नोर एई[5] खाए ।
एहि करि बारी बहुत[1] चाही । बरि बरि गही[2] न काहू[3] ब्याही ।
एइ पापिनि सबमार[2] भोरावा । लोभ बिगूचे[3] लाभ[4] न पावा ।
अमि चंचलि जनि मोहु[1] कोई । लाभ मूर सउ जाइ न खोई[2] ।
सुअना सँवर बगि तजु[1] बहुत बिगूचे पंखि ।
एहि पापिनि कहु मो रव[1] जाके हिए[2] न अंखि ॥

पाठान्तर—इस छन्द के पूर्व के मा प्रति के पत्र नहीं हैं ।

(१) १ मा ए साँपी। २ ए जा। ३ ए. मोहनि बिरध कुमारी।
(२) १ ए जगत। २ ए लगु। ३ ए तिन। ४ ए सब। ५ ए येह।
(३) १ मा बहुतन्ह, ए बहुतै। २ मा गई, ए गये। ३ ए काहु।
(४) १ मा इन ए येइ। २ ए ममार। ३ मा ए बिगूच। ४ ए मूल।
(५) १ मा चाहै। २ मा लाभ मूल सउं जाउ न खोई, ए लाभ मूल सौं जाइ न खोई।
(६) १ मा तजु तैं।
(७) १ ए यहि पापिनि को भोरवै। २ मा जाकहं हिया ए जाके हिया।

अर्थ—(१) यह छोटी कलि काली नागिन है यह त्रिभुवन-मोहिनी है और बूढ़ी किन्तु कुमारी है। (२) पहले जहाँ तक (जितने भी) लोग जन्म ग्रहण कर इस संसार में आ चुके हैं उन सब को मोहित कर और भुलावे में डालकर यह खा चुकी है। (३) इस कलि बालिका को बहुतों ने चाहा, बरण करके इसको बहुतों ने ग्रहण किया किन्तु इसने किसी के साथ विवाह नहीं किया। (४) इस पापिनी ने संसार को भुलावे में डाला जिसने लोभ में कष्ट पाकर लाभ नहीं पाया। (५) ऐसी चंचला [नारी] से कोई मोहित न हो क्योंकि कहीं वह मूल के साथ लाभ को [हाथ से] न खो बैठे।

(६) ऐ सुए (लोभी मनुष्य) तू सेमल (कलि) को शीघ्र त्याग क्योंकि इसने बहुतेरे पक्षियों (औरों) को कष्ट दिया है (७) इस पापिनी को (से) वही रमण करता है जिसके हृदय में [ज्ञान या विवेक की] आँखें नहीं होती हैं।

टिप्पणी—(३) बारी<बालिका। (६) पंखि<पक्षिन्=चिड़िया।

[३७]

एहि नागिनि जनि[1] माहे काई । लाभ न लहू मूल गँवाई[2] ।
लभी जान जिमि नाग क[1] छाहीं । यह र बिनागिनि[2] काहु क[3] नाहीं ।
दिन[1] पल पल मन मगन[2] रानी । काहु न पुनि[3] भइ[4] जम अहिवानी ।
जहि[1] पालसि निमुष[2] तहि मारसि । कौन सो जाहि उठाइ न डारसि ।

ऊँच नीच सभ के[1] घर जाई । पै अस्थिर कतहूँ[2] न रहाई ।

मोहन रूप छिनारि करमुखी[1] खोटी[2] बिरिध कुमारि ।

सभ[1] सयसार[2] मोरइ इन्ह[3] खावा चंचल चपल बिटारि*[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा एहिक मोह धौ ए माहि मोह धनि। २ रा लोभ बिगूचें लाभ न (सुम पूर्ववर्ती छंद की चौथी अर्द्धाली) ए लाभ मूल सौं आपति।

(२) १ मा कि ए की। २ मा यह बटपारि, ए ई बिटारी। ३ ए धौ।

(३) १ ए दिना। २ ए सुते। ३ मा काहु न लई, ए काहू न। ४ ए भी।

(४) १ मा ए जेहि। २ मा निस्चै ए निस्चै।

(५) १ मा सबकें ए सबके। २ ए पै अस्थिर कहुं थिर।

(६) १ रा रूप मही ए कै। २ रा खारी।

(७) १ मा ए सब। २ ए ससार। ३ रा मोरइ इन ए मार्ग्य मे- ।४ रा. मचारि।

अर्थ—(१) इस मोहिनी से कोई मोहित न हो क्योंकि उसे इससे लाभ न होगा, [उलटे] मूल की क्षति होगी। (२) जिस प्रकार ताड़ के पेड़ की छाया [बिना किसी को शीतलता दिए] चली जाती है, उसी प्रकार यह पामरनी भी किसी की नहीं होती है। (३) यह पाँच-पाँच (कुछ ही) दिनों तक सब से अनुरक्ता रही है किन्तु फिर यह जन्म (जीवन) भर अहिवाती (सौभाग्यवती) रहने वाली किसी की नहीं हुई। (४) जिसने इसको पाला (आश्रय दिया) उसको इसने अवश्य ही मार डाला। ऐसा कौन हुआ है जिसे इसने उठा कर (ऊँचे स्थान पर ले जाकर —उन्नति देकर) नीचे न गिराया हो? (५) यह ऊँचे और नीचे, सभी [प्रकार के व्यक्तियों] के घर जाती रहती है किन्तु यह स्थिरता के साथ कहीं नहीं रहती है।

(६) इस छिनाल और काले मुख वाली नारी का रूप मोहक है और यह बुड्ढी कुमारी खोटे स्वभाव की है। (७) इस चंचल और चपल पामरनी ने समस्त संसार को भुलावे में डाल कर खाया है।

टिप्पणी—(१) खति < क्षति। (२) तार < ताल=ताड़ का वृक्ष। पाँवरि < पामर, नीच। (३) रत < रक्त=अनुरक्त। जंम < जन्म।

[३८]

सो बसंत सर्वसार[1] न आवा[2] । जेइ[3] फागुन पतझार न गावा ।

ससि पूनिवं[1] महि उवसि[2] अगासा । जो रे अमावस कहु न बिनासा[3] ।

जनि भूलहु नर बुद्धि[1] गियानी । एहि कलि पौन कलस जस पानी[2] ।

जानि बूझि जनि होहु अयान । अंत बहुरि का फिरि पछितान ।

कलि औसरि भा अमर न कोई । अन हाथ पछिताबा सोई[1] ।

जहि कलि रहै न पाइय[1] तहि मर्ड[2] प्रीति न लाउ ।

एहि जग दरगुन[1] छनें जनि[2] मानुहि रहराउ ॥

पाठान्तर—यह छंद ए में नहीं है।

पाठान्तर—रा. में उपयुक्त अर्द्धालियाँ ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ रा ममार। २ रा नासा। ३ मा जिनि।

(२) १ रा मा पूनरी (<पूनिवँ—प्रा. शि.)। २ मा उपज। ३ मा कीन्ह न पासा (<कहे न बिलासा—प्रा. शि.)।

(३) १ मा मवर। २ मा पानी।

(५) १ रा खाई।

(६) १ मा न पाइय। २ रा ठामों।

(७) १ मा दई मन। २ रा मनि (?)।

अर्थ—(१) ऐसा कोई वसंत संसार में नहीं आया है जिसने फाल्गुन को पतझड़ न खाई हो (२) पूर्णिमा का ऐसा कोई शशि आकाश में नहीं उदित होता है जो अमावस्या को विनष्ट न होता हो। (३) ऐ ज्ञानी लोगो अपनी बुद्धि को न भूलो यह कलि वैसा ही [धोखा] है जैसा पानी के लिए पवन का करना हो। (४) जान-बूझ कर अज्ञान न हो क्योंकि फिर अंत में पुनः पछताने से क्या [लाभ] होगा? (५) कलि में अवतरित होकर (जन्म ग्रहण कर) अमर कोई नहीं हुआ लोभी अंत में हाथ में पछताना ही रहता है।

(६) जिस कलि में [अमर होकर] रह नहीं सकते हो उस [कलि से प्रीति न लगाओ (७) [अपने से] हस-गुना [चतुर] इस जगत् से अपने को बहलाओ मत (प्रवंचित न होने दो)।

टिप्पणी—(२) पूनिवँ<पूर्णिमा। (४) अयान<अज्ञान=अनजान मूर्ख। (५) लो<लोक=काम। (७) रहु<रम।

[३९]

मन जौ न पावन जब भए¹। सखी पुरुस कवि परिहरि गए²।
तब हम जिय उपजी¹ अभिलाखा। कथा एक बोलउ रस² भाखा।
सुरस वचन जहवाँ लहि¹ सुन। और जो किछु हिरद महँ गुन²।
सो सब कहौं¹ सुरस रस भाखी। सुनहु कान दै पम अभिलाखी²।
म छाडउँ¹ गुन कर² परमादू। तुम्ह छाँड़हु³ जो⁴ बाद सवादू⁵।
अंब्रित कथा सुरस रस सुनहु कहौं सभ¹ गाइ।
हरष (?)¹ परत आखर औ² दमहु³ कबि मुँह⁴ लहु⁵ छपाइ॥

पाठान्तर—मा. में यह छंद नहीं है।

(१) १ ए भैऊ। २ ए गैऊ।

( ) १ ए उपजा। २ रा कम।

(३) १ ए जहाँ लगि। २ ए कवि जो ममान ते मन गुन।

(४) १ ए कहौं। २ रा अभारी।

(५) १ ए छाँड़ा। २ रा कै। ३ ए तुम छाड़हु। ४ रा मोहि। ५. ए वेवादू।

(६) १ ए आ।

(७) १ ए बाउ। २ ए जो अक्षर। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए महँ। ५. ए लव।

अर्थ—(१) सन् ९५२ जब हुए, और सत्यनिष्ठ पुरुष (मुहम्मद मौस ?) कलि को छोड़कर चले गए, (२) तब हमारे जी में यह अभिलाषा उत्पन्न हुई कि एक कथा भाषा के रूप में बाँधूँ। (३) [अतः] मैंने जहाँ तक सुरस वचन सुने हैं और जो कुछ सुरस वचन] हृदय में गुन रक्खे हैं (४) उन सब को सुरस रस (प्रेमरस) में भावित करते हुए कहता हूँ। जो प्रेम के अभिलाषी हों, सुनो। (५) मैंने प्रसाद [गुण] करके (के निमित्त) [अन्य] गुणों को छोड़ दिया। [प्रेम रस के निमित्त ऐ पाठको] तुम भी [अन्य रसों के] स्वाद के स्वादों को छोड़ दो।

(६) अब तुम यह अमृत (अमर करने वाली) कथा सुनो जो सुरस रस (प्रेम रस) की है; उसे मैं सब-की-सब गाकर कह रहा हूँ। (७) यदि उसमें कोई हल्के पड़ते (ओछे) आखर (वचन) देखो तो कवि का मुँह छिमा लो।

टिप्पणी—(३) गुन < गुणम् = गिनना मन में बार बार लाना। (७) हरुव < हलुक < लघुक = हल्का ओछा। आखर < अक्षर = वचन।

[४०]

कथा एक चित दइयँ[1] उपानी । सुनहु कान दै कहौं बखानी ।
अमी[1] रसिक रसाल[2] जो होई । गुन औ दोस[3] बिचारहि सोई ।
जस औ आखरहिं जोरि बनाइहि[1] । गुन के[2] पीछें[3] दोस लुकाइहि ।
उतपति दोस दइय[1] हम लावा । औ निरदोस[2] लाइ जनमावा ।
आदि दोस[1] लागा होइ जाही । अंत दोस लागै निजु[2] ताही ।
निहकलंक निरदोसी[1] एक अकेला सोइ ।
दोसिहि दोस जो लागै तेहि का अचरिजु होइ[1] ॥

पाठान्तर—ए में यह छंद नहीं है।

(१) १ रा दई।
(२) १ भा अमी। २ भा रसिक रस कह जो कोई। ३ भा दोस।
(३) १ भा ओछ आखर पढि बूझि न जान्हि। २ भा बिन गुन। ३ रा पीछैं।
(४) १ रा दई। २ भा निरदोस।
(५) १ भा दोस। २ भा दोस पै लागै।
(६) १ भा निरकलंक निरदोसी।
(७) १ भा निजु दोस नहि हार।

अर्थ—(१) एक कथा [मेरे] चित्त में दैव ने उत्पन्न की; उसे कान दे कर सुनो मैं बखान कर (व्याख्या कर) उसे कह रहा हूँ। (२) जो रसाल (रसीले) अमृत (प्रेम) रस का रसिक हो, वह [इस कथा के] गुणों और दोषों का विचार करे (३) क्योंकि जब [काव्य के] आखर (बोल) जोड़ कर बनाए जाते हैं गुणों के पीछे दोष छिपा लिए जाते हैं। (४) [किन्तु] दैव ने हममें आदि ही में दोष (शरीर के रूप में) लगा दिया और निर्दोष (जीव) को [उसके साथ] लगाकर जन्म दिया। (५) [अतः] जिसे आदि (मूल) से ही दोष लगा हुआ हो उसे अवश्य ही अंत में दोष लगेगा।

(६) कलंक-रहित और दोष रहित एक मात्र वही (परमात्मा) है; (७) दोषयुक्त (मानव) को यदि दोष लगे तो उसमें आश्चर्य ही क्या है?

टिप्पणी—(१) उपान < उप्पाय < उद्+पादम् = उत्पन्न करना बनाना। बखान < बक्खाण < व्याख्यानम् = वर्णन करना। (३) जको < यत = क्योंकि कारण कि।

[४१]

पंडित सुनु[1] बिनती यह[2] मोरी । बिनवौं[3] पाय[4] लागि[5] कर जोरी ।
जौं भल बचन सराहि न जाई । ओछ न दूलसु[1] दोस लगाई ।
जौं पढ़ि बचन भला किछु[1] मेन्हु । दोस लाइ जन[2] ओछ[3] उछेदहु ।
जहां न अच्छर जुर[1] सवारहु । भलया[2] भए भल[3] मन बिचारहु[4] ।
का तहि लिखे ओछ[1] जो होई । कहहु काह[2] लै कीजै सोई ।
मूरुख जौ रे उछेदहि[1] तहि क नाहिं मोहि सोच[2] ।
धनि जग ताकर[1] औतरन अरथ लाइ गह[2] पोच ॥

पाठान्तर—इस छंद से मा पुनः कथित है।

(१) १ ए सुना। २ ए येह। ३ ए बिनऔं। ४ ए पाँव। ५ ए दुओ।
(२) १ ए ओठ न दुलवै।
(३) १ ए भले जौ। २ ए दोस लगाइ। ३ ए ओछ।
(४) १ ए जहां न आखर पुरै। २ ए मल भा। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए प्रतिपारहु।
(५) १ ए ओछ। २ ए कहाँ।
(६) १ ए काह न उछेदइ। २ ए ताकर नाहीं सोच।
(७) १ ए धनि अगत कर। २ ए समाबै।

अर्थ—(१) हे पंडित (सज्जन) मेरी यह विनती सुनो मैं तुम्हारे पैरों में लग कर और हाथ जोड़ कर विनय कर रहा हूँ। (२) यदि [मेरी रचना पढ़कर तुमसे मेरे] भले वचन (बोल) सराहे न जा सकें तो [मेरी रचना के] ओछे वचनों (बोलों) को भी दोष लगा कर दुलसो मत (बुरी भावना से न देखो)। (३) यदि [इस रचना को] पढ़ कर कुछ भले वचन पसन्द कर सको तो इस जन को दोष लगा कर [उसके ओछे वचनों का] उच्छेद (नाश उन्मूलन) भी करो। (४) जहाँ पर [उपयुक्त] अक्षर न जुड़े हों, [मेरे वचनों को] सँवार (सुधार) दो और भद्र होकर (भद्रतापूर्वक) भले-बुरे का विचार करो। (५) उसके लिखने से ही क्या [लाभ] जो ओछा हो कहो, उसको लेकर क्या किया जावे?

(६) यदि कोई मूर्ख [मेरी रचना का] उच्छेद करे, तो उसकी मुझे चिन्ता नहीं है; (७) जगत् में उस [पंडित] का अवतार (जन्म) लेना धन्य है जो अर्थ के लिए (अर्थ को महत्त्व देते हुए) पोच (दोषयुक्त वचनों) को [भी] ग्रहण करता है।

टिप्पणी—(२) दूलस < दुल्लक्ख < दुर्लक्ष्यम् = बुरी भावना से देखना। (४) भलया < भद्र।

[४२]

पंडित मोहि न दोस लगाइहि[1] । मूरुख छँठ पै किछु न पाइहि[2] ।
जौ पंडित जन होइ न बाएं[1] । का मूरुख के दोस लगाए[2] ।
सब हम भएउ दोस कर[1] बासा । जब र पित छाडउ[2] कबिलासा ।
बूझि पढहिं[1] आखर मोर लोई[2] । बिन बूझे जनि[3] दुखवै कोई ।
दस महं एक ओछ[1] जौ होई । रहिं के[2] सीस चढ़ जनि[3] कोई ।
बचन अनूप भल सुनि मूरुख रहु सिर नाइ ।
ओछ बचन जौ[1] पावै आखर[2] पकरै धाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए समाइहि। २ ए मरख से जो आपु बनाइहि।
(२) १ ए होय बनाये। २ रा मूरख मो पे किछू न पाइहि।
(३) १ ए सब हम भी दोसर घर। २ ए छोड़ा।
(४) १ ए पढे। २ रा कोई। ३ ए मति।
(५) १ ए ओछ। २ ए ताके। ३ ए मति।
(७) १ ए ओछ बचन रा ओछ आखर। २ ए अखर।

अर्थ—(१) [मुझे विश्वास है कि] पंडित (ज्ञानी) मुझे (मेरी रचना को) दोष न लगाएगा और मूर्ख से मुझे अवश्य ही कुछ न प्राप्त होगा। (२) यदि पंडित जन वाम (विरुद्ध) न हों तो मूर्ख के दोष लगाने से क्या [हानि हो सकती है] ? (३) हम सभी दोष के निवास हो गए, जब पिता (आदम ?) ने स्वर्ग को छोड़ा। (४) लोग मेरे अक्षरों (वचनों) को समझ कर पढ़ें और कोई भी उन्हें समझे बिना दुखवे नहीं (बुरी दृष्टि से न देखे)। (५) दस (वचनों) में से यदि एक ओछा भी हो तो कोई उसके सिर न चढ़े।

(६) मूर्ख अनुपम और भले वचनों को सुनकर तो सिर नवा कर (चुप) रह जाता है [और उसकी प्रशंसा नहीं करता है], (७) [किन्तु] यदि कोई ओछा वचन पाता है तो उस अक्षर (वचन) को दौड़ कर पकड़ता है।

टिप्पणी—(४) लोइ < लोक = लोग। (४) बूझ < बुध्य < बुध् = जानना, ज्ञान करना, समझना। दुखव < दुख्खव < दुष्पश्य् = बुरी दृष्टि से देखना। (५) ओछ < तुच्छ। (७) आखर < अक्षर।

[४३]

प्रेम कथा कहौं अब[1] गाई । रसिक लोग द सुनहु[2] सोहाई ।
रस क[1] बात रसिक प जानै । बिनु रस रसिक निरस[2] क मानै ।
बिन[1] रस पुरुष प्रेम परिहरै[2] । बिन[1] रस ऊख ऊसिर[2] ना करै[3] ।
जो कहूं जेहि [रस][*] महं[1] रस होई । तेहि रस महं[2] रस पाव सोई ।
जो जेहि रस क जाम न जाना । सो तेहि[1] रस अनरस उनमाना[*1] ।
रस अनग सब सार[1] पर सुनहु रसिक द बात ।
जो सभ[1] रस मरं गउ रस सो कर बरौं बखान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जो। २ रा रस कानन अति सुनत।
(२) १ ए की। २ ए बिना रसिक नीरस।
(३) १ ए बिना। २ ए प्रहरई। ३ ए बिना। ४ ए ऊट ऊख। ५ ए करई।
(४) १ ए जाके रस जेहि सो रा जा कहँ जहि महँ। २ ए सो।
(५) १ ए तहि ते। २ रा जन्माधा।
(६) १ ए ससार।
(७) १ ए सब।

अर्थ—(१) अब मैं वह अमृत (प्रेम की) कथा गाकर कह रहा हूँ हे [प्रेम रस के] रसिको उस सुहावनी [कथा] को कान देकर सुनो। (२) रस की बात रसिक ही जानता है और बिना रस के [किसी भी रचना को] वह निरस करके ही मानता है। (३) बिना रस की अमृत [की लकड़ी] को [भी] घुन छोड़ देता है और ऊँट बिना रस की ईख को क्या कर सकता है (वह उसके किस काम की होगी) ? [वस्तुतः] जिसको जिस रस में रस (सुख) होता है वह उसी रस में रस (सुख) पाता है। (५) जो जिस रस की वार्ता नहीं जानता है वह उस रस में उत्पत्ति (जन्म) से ही रसहीन होता है।

(६) हे रसिको कान देकर सुनो संसार के (में) अनेक रस हैं। (७) किन्तु जो समस्त रसों में राजरस [प्रेम रस] है उसका बखान (वर्णन) मैं [इस रचना में] कर रहा हूँ।

टिप्पणी—(३) ऊखि < इक्षु = ईख। (५) बात < बत्ता < वार्ता। (५) उतपात < उत्पत्ति (?)। (७) बखान < वक्खाण < व्याख्यान।

[४४]

आदि कथा द्वापर भलि[1] आई[2]। कलियुग[3] महँ[4] भाखा क[5] गाई।
गढ़[1] कनगिरि नगर सोहावा। जनु कविलास उतरि भुइँ छावा[2]।
सुरजभानु तहँ राउ बखानी[1]। जो लह सात दीप जग जानी[2]।
गने न जाहिं[1] तुर गज जूहा। राज साज अन धन[2] समूहा[3]।
आइ सूर पियरी[1] भूप आई। संतति सूर नहिं उद कराई[2]।
विधि परसाद पूर सबही निधि अन धन हय गमत[1]।
सुत[1] बिना प रनि दिन राजा के चित नित[2]॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त चौथी अर्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए द्वापर म। २ ए भई। ३ रा अल। ४ ए सो। ५ ए का।
(२) १ रा उपर भुई, ए उतरि कै। २ ए आवा।
(३) १ ए राजा बखानी। २ ए जानी।
(४) १ ए गनै न जाइ। २ ए अन। ३ ए बहा।
(५) १ ए माऊ सूर पियर। २ ए सूर उदित मन भाई।
(६) १ ए बिधि प्रसाद भरि पूरा है गै अ/ मैमंत।
(७) १ रा सूत। २ रा जाके चित न मित।

अर्थ—(१) मूलतः यह कथा द्वापर [से] चली आई है और [अब] कलियुग में भाखा में को

जाकर गाई [जा रही] है। (२) कनकगिरि नह [नाम का] एक सुहावना नगर था जो [ऐसा था] मानो कैलाश (स्वर्ग) उतर कर भूमि पर आ गया हो। (३) सूर्यभानु वहाँ का राजा कहा जाता था, जिसको संसार में नौ खंड और सात द्वीप भर जानता था। (४) उसके तुरग और गज-यूथ गिने नहीं जा सकते थे [और न] उसके राज-साज अन्न-धन-समूह [गिने जा सकते थे]। (५) उस [सूर्य जैसे] राजा की आयु पीली (अस्त काल की) धूप [जैसी] हो गई किन्तु संतति सूर्य उदय नहीं कर रहा था।

(६) विधाता के प्रसाद (अनुग्रह) से अन्न धन हय तथा मदमत्त गज [आदि] सभी निधियाँ पूरी हुई (७) किन्तु राजा के मन में रात-दिन नित्य ही पुत्र [के अभाव] की चिंता [रहती] थी।

टिप्पणी—(२) कबिलास < कइलास < कैलास < स्वर्ग। बखान < बक्खाण < व्याख्यानम् < कहना। (४) तुरै < तुरग < घोड़ा। जूह < यूथ। (४) समूह < समूह। (५) आउ < आयु। (६) मयमत < मदमत्त।

[४५]

कलि संतति सउ दोसरि आऊ। बिनु सुत जीवन जनम मसाऊ।
सुत सउं मात पिता जग रहहीं। सुत सउं नाउ जब (जियत?) जुग रहहीं।
सुत बिनु मुयें नाउं को लेई। सुत बिनु को कत पिंडहि दई।
सुत बिनु अंबिरथा जीवन संसारा। सुत दीपक बिनु जग अंधियारा।
प सभ कहउं सपूत के बाता। जनि कपूत बस दइ बिधाता।
जस छठि अंगुरी करि क उपजै पाहु सरीर।
जौ राख तौ अपजस जौ काट तौ पीर॥

पा.अन्तर—यह छंद प्र म नहीं है।

अर्थ—(१) कलिकाल में संतति (संतान) से ही [मनुष्य की] दूसरी आयु होती है और बिना पुत्र के जीवन और जन्म नष्ट हो जाता है। (२) पुत्र से ही माता-पिता संसार में [यश] लाभ करते हैं और पुत्र से ही [उनके] नाम यग-युग तक जीवित (?) रहते हैं। (३) पुत्र के बिना कौन [उनके] मरने पर [उनका] नाम ले और पुत्र के बिना कौन और क्यों [उन्हें] पिंड-दान करे? (४) पुत्र के बिना [माता-पिता का] जीवन ही संसार में व्यर्थ हो जाता है और पुत्र-दीपक के बिना [उनके लिए] संसार ही अंधकार-पूर्ण हो जाता है। (५) किन्तु मैंने यह सब सुपुत्र की बात कही; विधाता कभी कुपुत्र न दे!

(६) जैसे किसी के शरीर [हाथ] में छठी उँगली के रूप [में कोई उँगली] निकले, (७) तो उसको [बनाए] रखने पर अपयश होता है और यदि उसको काटे (काट फेंके) तो पीड़ा होती है।

टिप्पणी—(१) आऊ < आयु।

[४६]

तपा एक आवा तेहि[1] ठाऊँ । लोगन्ह जाइ क पकरे[2] पाऊँ ।
तेहि पाछें[1] राजा चलि आवा । पाउ धोइ क सिरहिं[2] चढ़ावा ।
यह बड़ि मया बिधातैं कीन्हीं[1] । तुम्ह सेंतें[*1] भेंट जो हम कहँ दीन्हीं[3] ।
जस माँगा तस दैअ तस[1] दीन्हा । मोर बिनति बिधन सुनि लीन्हा ।
साध एक मोरे जिय[1] अहई । तुम्ह सौं भलहिं साइ[2] निरबहई ।
तप समाधि लगाई[1] लोग बहुरि घर आउ[2] ।
एकसर राजा बन महँ सेउ तपा कर पाउ[1] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तहि। २ ए जाइ औ परसा।
(२) १ ए तेहि पाछ। २ ए धोइ धूरि सैं सीस।
(३) १ ए मोहि बड़ि माया बिधनै कीन्हा। २ रा ए सो। ३ ए भेंट हमहि कहँ दीन्हा।
(४) १ रा तस दरस भा।
(५) १ ए जिउ। २ ए तासौं भले भा।
(६) १ ए तरें समाधि लगाइ। २ ए आव।
(७) १ ए सब तपाकर पाँव।

अर्थ—(१) [इसी समय] उस स्थान पर एक तपस्वी आया। लोगों ने जाकर उसके पैर पकड़े। (२) उसके बाद [वहीं] राजा भी चला आया और [उस तपस्वी के] पैर धोकर [चरणोदक को] उसने सिर पर चढ़ाया। (३) [तदनंतर, उसने कहा] "विधाता ने [मुझ पर] यह बड़ी मया (स्नेहपूर्ण कृपा) की कि तुम से उसने मुझे भेंट की (कराई)। (४) [अभी तक जब जब] जैसा कुछ मैंने माँगा, दैव ने वैसा ही दिया और विधाता ने मेरी विनती सुन ली। (५) [अब] मेरे जी में एक ही साध (स्पृहा) है और वह तुम से (तुम्हारे द्वारा) भले ही निबह जावे (पूरी हो जावे)।"

(६) तब उस तपस्वी ने समाधि लगाई लोग लौटकर चले आए, (७) किंतु राजा अकेला हो वन में उस तपस्वी के पैरों की सेवा करता रहा।

टिप्पणी—(५) साध < श्रद्धा < स्पृहा अभिलाषा वांछा। निरबह < निर् + वह = निभना पार पड़ना पूरा पड़ना।

[४७]

राति दिवस भवइ धहँ[1] लागा । दिवस न सून रनि भय[2] जागा ।
भूँख[1] पियास नींद सुख छाड़ा[2] । तपा आगें[*1] निसिदिन रह ठाढ़ा ।
बारह बरिस सेव जो कीन्हीं[1] । तपा समाधि छूटि तब चीन्हीं[2] ।
कौन आहि तूँ[1] मानुस करा[2] । कौनें काज तू[*1] एहि ठा सरा ।
मैं राजा एहि[1] नगर मझारी । बारह बरिस भए[2] सेव तुम्हारी[3] ।

अन धन हय गय* अगनित रानी कोस सहन भंडार[1] ।
एक न पूत[1] बिधि दीन्हा जासों उतरौं पार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सेवा जे। २ ए दिवस न सुतै रैनि निसि।
(२) १ ए भूख। २ ए नींद न जाता। ३ रा ए आगे।
(३) १ ए सेवा तो कीन्हा। २ ए छूटे सुधि लीन्हा।
(४) १ ए तैं। २ ए बारा। ३ ए कौनें काज तुह रा कौन आहि तुवां (तुल पूर्ववर्ती चरण)। ४ ए एक पाँव।
(५) १ ए महि। २ ए भा। ३ ए सेवा तो हारी।
(६) १ ए अगनित अंन धन रानी है गै सहन भंडार रा अनधन है अगनित रानी कोस सहन भंडार ।
(७) १ रा बिपूत।

अर्थ—(१) रात-दिन वह [उसकी] सेवा करने लगा दिन में वह सोता नहीं था और सारी रात भी [उसकी सेवा में] वह जागता था। (२) उसने भूख प्यास और नींद का सुख छोड़ दिया था और वह [उस] तपस्वी के आगे रात-दिन खड़ा रहता था। (३) बारह वर्षों तक [इस प्रकार] जो उसने सेवा की तो जब तपस्वी की समाधि छूटी उसने [राजा को] पहचाना। (४) [उसने पूछा] 'तू मनुष्य की कला कौन है और किस कार्य से तू इस स्थान पर खड़ा है? (५) [राजा ने कहा] "मैं इस नगर में (का) राजा हूँ और [मुझे] तुम्हारी सेवा में बारह वर्ष हो चुके हैं ।

(६) अन्न धन हय, गज, रानियाँ कोष सहन (संरक्षणीय सामग्री) और भांडार अगणित हैं (७) [किन्तु] विधाता ने एक पुत्र नहीं दिया है जिससे मैं [भवसागर के] पार उतर सकूँ।"

टिप्पणी—(१) रैनि < रयनी < रजनी। (४) करा < कला। (६) अन < अन्न। गय < गज। (७) पूत < पुत्र।

[४८]

असि[1] बिनती जो राजा[2] कीन्हा । तपा परसन होइ[3] आसिष दीन्हा ।
तप[1] कहा सुनु राज भुआरा । तो कहँ[2] दीन्ह पिपन एक बारा ।
कै अवनार पिंड एक कीन्हा[1] । हरख सहित राजा कहँ दीन्हा ।
जो रानी अहै[1] प्रान पियारी । तहि कहुँ जो मम भाव तुम्हारी[2] ।
राजा रु क[1] सीस[2] चढ़ावा । परसि पाउ तब नगर सिधावा[3] ।
पटबंधी[1] जो रानी ताहि कहा मैं गाहु[2] ।
कै असनान सुख होइ तब न्हवाँ तें जाहु[1] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अस। २ ए राजै। ३ ए भै।
(२) १ ए तपी। २ ए भुआरा। ३ ए ताहे।
(३) १ ए कीन्हा। २ ए राजा कै दीन्हा।
(४) १ रा है ए है। २ ए ताहि कहु मनभाव तुम्हारी।
(५) १ ए आ। २ रा सिर। ३ ए परसि पाँव तो मन्दिर आवा।

(६) १ ए पाट बसी। २ ए कोहु गुह लाहु।
(७) १ ए तो दहवों सों जाहु।

अर्थ—(१) राजा ने जब ऐसी विनती की तो तपस्वी ने प्रसन्न होकर उसको आशीर्वाद दिया। (२) तपस्वी ने कहा "हे राज-भूपाल तुम [अब] विधाता ने तुम को एक बालक दिया।" (३) [तपस्वी ने] जेवनार (रसोई) कर एक पिंड [तैयार] किया और हर्ष-समेत [उस पिंड को] राजा को दिया और कहा "(४) जो रानी [तुम्हारी] प्राण-प्रिया है और जो तुम्हारी चहेती है, उसे यह दो।" (५) राजा ने [उस पिंड को] लेकर सिर चढ़ाया और [तपस्वी के] पैर छू कर तब नगर को गया।

(६) जो पटवंती रानी (पट्टरानी) थी उससे उसने कहा "तुम इसे लेकर जाओ और (७) स्नान कर तथा शुद्ध होकर तब यहाँ से जाओ।"

टिप्पणी—(२) भुवार < भूपाल। बार < बाल = बालक। (३) जेवनार < जीवनवारि। (४) पिआर < प्रियालु।

[४९]

बिरिध[1] बैस जेत[2] आस निरासा। राज मंदिल बिधि निमई*[3] आसा।
संतति आस राज जो[1] पाई। कर लागु सुत आस[2] बधाई[3]।
मख लगन असुनी[1] पसारा। दसए मास[2] ऊच औतारा।
पचए ससि औ[1] सूरुज सतए[2]। दसए सुक्र बिरस्पति नवए[3]।
दिस्टि सनीचर नखत लिलारा[1]। दसईं राति भएउ औतारा।
मदन मूरति औ भागिवंत रानी राउ[1] मधार।
सुभुम महूरत औतरा[1] राजा कुल उजियार॥

पाठान्तर—(१) १ ए बिध। २ ए जे। ३ रा राजमंदिल बिधि पुरई, ए राजा ग्रिह पे निर्मये (< निर्मई प्रा कि)।
(२) १ ए जब। २ रा अनंत। ३ ए बँधाई।
(३) १ ए अस्विनि। २ ए अंस।
(४) १ रा और। २ ए सूरज छटवाँई। ३ ए बिहस्पति नवए।
(५) १ ए लिलारा। २ ए दसयें।
(६) १ ए राय।
(७) १ ए महूरत औतरे।

अर्थ—(१) वृद्ध वयस् में [राजा] जितना ही आशा से निराश था राज-भवन में विधाता ने [उतनी ही] आशा निर्मित कर दी। (२) राजा ने जो संतति की आशा पाई वह पुत्र की आशा से बधाई (आनंदोत्सव सूचक वाद्य) करने लगा। (३) मेष लग्न में अश्विनी के प्रवेश पर दसवें मास में उसका उच्च अवतार (जन्म) हुआ। (४) [उस समय] शशि पाँचवें स्थान पर था सूर्य सातवें, शुक्र दसवें और बृहस्पति नवें; (५) शनि नक्षत्र की ललाट पर दृष्टि थी [ऐसी] दशमी की रात को उसका अवतार (जन्म) हुआ।

(६) वह [पुत्र] मदन (कामदेव) की मूर्ति [जैसा रूपवान] तथा भाग्यवान था और

रानी-राजा [के जीवन] का आधार था; (७) वह राज-कुल का प्रकाश शुभ मुहूर्त में अवतरित हुआ।

टिप्पणी—(२) बधाई<वद्धावण<वर्धापन=हर्षसूचक वाद्य वादन। (५) लिलार<निलाड<ललाट।

[५०]

भोर भए पंडित जन आए[1]। रासि परखि औ[2] गरह गनाए।
पंडितन गनि[1] गुनि कहा बिचारी। होइ नरेस छत्रपति भारी।
गन गंध्रप मुनि बार जोहारहिं[1]। जग नरेस सब[2] सेवा सारहिं[3]।
लछनवंत बुधिवंत[1] बिनानी। रन छत्री साका परवानी।
दाता गरुव गरिस्ट गंभीरा। औ दयाल पर परखिहि[1] पीरा।
लछन चीन्ह रुइ रखा कंठ मांथ दुहु पाउ[1]।
सिंघ रासि कुल[1] दीपक धरेउ मनोहर नाउं॥

पाठांतर—(१) १ ए भो। २ ए रासि बार गन जो।
(२) १ ए गुनि।
(३) १ ए जोहारैं। २ ए सब। ३ ए सारैं।
(४) १ ए भागिवंत।
(५) १ ए पीरी।
(६) १ ए लच्छन चिन्ह कंठ माथे रुइ रेख दुहुं पाउं रा लछन चीन्ह रुधिर रेखा कंठ मांथ दुहुं पाउ।
(७) १ रा कुली।

अर्थ—(१) सवेरा होने पर पंडित जन आए, [जिन्होंने] राशि की परीक्षा करके ग्रहों को गिनाया (गिना)। (२) पंडितों ने गणना तथा विचार करके कहा यह भारी छत्रपति नरेश हो (होगा)। (३) गंधर्व गण तथा मुनि इसके द्वार पर जोहार (नमस्कार) करें (करेंगे) और जगत् के समस्त नरेश इसकी सेवा सारें (सारेंगे)। (४) यह लक्षणवान बुद्धिमान और विज्ञानी हो (होगा) और रण में प्रमाणित साका (शक्ति-प्रदीप) वाला क्षत्रिय होगा। (५) यह दाता (दानी) गुरु (गौरव वाला) गरिष्ठ और गंभीर हो (होगा) यह दयालु हो (होगा) और दूसरे की पीड़ा परखे (समझेगा)।

(६) दो रेखा के लक्षण-चिह्न इसके कंठ, मस्तक तथा दोनों पैरों में हैं (७) सिंह राशि में [उत्पन्न यह] कुल-दीपक हो (होगा)" [ऐसा कहते हुए] उन्होंने इसका नाम मनोहर रखा।

टिप्पणी—(३) गंध्रप<गंधर्व। बार<द्वार। (४) लछन<लक्षण। बिनानी<विण्णाणि<विज्ञानिन्।

[५१]

चौदह बरिस इगारह[1] मासा[2] । नवए दिन पूनिव[3] परगासा ।
जनम सूर सतए ससि सारा[1] । मिलै सजन काइ पेम पिआरा ।
बुधवार बिहफ[1] कै राती । उपजहि बिरह कुँवर कै[2] छाती ।
तेहि बियोग होइ[1] कुँवर बियोगी[2] । बरिसेक फिरै कुँवर भा[3] जोगी ।
तेहि पाछें पुनि जम जम[1] राऊ । अस किछु[2] लगन केर है[3] भाऊ ।
सुभ्भ लगन जनमौती प किछु गरह बिसेस ।
बरिस चतुरदस ऊपर किछु[1] उदास चित देस ॥

पाठान्तर—(१) १ ए एगारह। २ रा मासा। ३ ए पुनिव।
(२) १ ए तारा।
(३) १ ए बीफै। २ ए उपजै पेम कुँअर क।
(४) १ ए तेहि बियोग हो। २ ए बियोगी। ३ ए बरिस एक भौ फिरा सो।
(५) १ ए पाछे तौ जम। २ ए सो। ३ ए लग्न गरह का।
(७) १ ए कछु।

अर्थ—"(१) [इसकी आयु के] चौदह वर्ष और ग्यारह मास [के अनंतर] नवें दिन पूर्णिमा के प्रकाशित होने पर (२) जब कि [इसके] जन्म-स्थान पर सूर्य तथा सातवें स्थान पर शशि होंगे इसे कोई प्रेम-प्रिय स्वजन मिले (मिलेगा)। (३) बुधवार तथा बृहस्पतिवार [के बीच] की रात कुमार की छाती में विरह उत्पन्न हो (होगा)। (४) उस वियोग में कुमार वियोगी हो (होगा) और एक वर्ष तक कुमार योगी हुआ फिरे (फिरेगा)। (५) उसके पीछे फिर जन्म-जन्म तक राजा हो (होगा), ऐसा कुछ लग्न का भाव है।

(६) इसकी जन्म-पत्री में लग्न शुभ है, किंतु कुछ ग्रहों का विशेष (विरुद्ध प्रभाव) [भी] है (७) चौदह वर्षों के उपरांत [जन्म-पत्री में] इसका चित्त कुछ उदास दिखाई पड़ता है।"

टिप्पणी—(१) पूनिव < पूर्णिमा। (२) सजन < स्वजन। पिआरा < प्रियालु। (५) जम < जन्म। (६) जनमौती < जन्म-पत्रिका। गरह < ग्रह।

[५२]

छठी राति छठि बाजन बाजे । घर घर नगर बधावा साजे ।
सभ घर नगर उछाह बखानां । तोरनि तोरनि आनन्द निसानां[1] ।
राय गिरिन्ह सबही[1] सुनि[2] आए । कर[3] छतीसउ पौनि बधाए ।
त्रिभुअन तिलक[1] चतुरसम[2] भगा । औ सोभित[3] उर हार सुरंगा[4] ।
मुख तबोल[1] सिर सेंदुर रोरा । गावहि तरुनी होइ अंदोरा ।
सभ[1] घर नगर बधावा औ सभ[2] तोरनि अनन्द ।
सुरस कंठ सभ[1] गावहि[2] धुरवा धुरपद[3] छन्द ॥

पाठान्तर—(२) १ ए निसानां।

(३) १ ए में 'ही' नही है 'सब' मात्र है। २ रा सुनत। ३ ए करी।
(४) १ रा मात्र भ्रिवंम। २ ए चित्र थ। ३ ए सो भी। ४ ए तरंमा।
(५) १ ए तबोर।
(६) १ ए सब। २ ए जो।
(७) १ ए जो। २ ए गावै। ३ रा मगर भी।

अर्थ—(१) छठी रात को छठी (षष्ठी) के बाजे बजे और नगर में घर-घर बधावे (शुभ कामना के साथ) साजे गए। (२) नगर में सभी घरों में उत्साह (उत्सव) और कल्याण (मंगलाचार) [होने लगे] और गली-गली में आनंद के निशान (धौंसे) [बजने लगे]। [राजकुमार की षष्ठी] सुनकर राजभवन में सभी आए और छत्तीसो पौनिए (मंगल के अवसरों पर पुरस्कार पाने की अधिकारिणी छत्तीस जातियों के लोग) बधावे करने लगे। (४) जो मृगमद (कस्तूरी) का तिलक किए हुए थीं और अंगों में चतुरसम [का लेप] लगाए हुए थीं जिनके हृदय पर सुरंग (सुंदर) हार शोभित था (५) जिनके मुख में तांबूल था और सिर में सिंदूर की रोली थी ऐसी तरुणियाँ गा रही थीं और अंबोर (आंदोलन—हल्ला) हो रहा था।

(६) नगर में सभी घरों में बधावा तथा सभी गलियों में आनंद हो रहा था (७) और सभी लोग रसीले कंठ से धुरपद तथा ध्रुपद छंद गा रहे थे।

टिप्पणी—(१) बधावा < बद्धावण < वर्धापन < हर्ष अथवा शुभकामना पूर्वक बाद्य। (२) उछाह < उत्साह = उत्सव। (४) चतुरसम < चतु सम = चंदन अगुरु कस्तूरी और केसर को समभाग म लेकर बनाया हुआ एक सुगंधित लेप। (५) तंबोल < ताम्बूल।

[५२]

राजा घर भा अनंद बधाई[1]। सब परजनि पहिरौनी पाई[2]।
औ[1] जत घर अमनक[2] छाए। सब घर तुर पटोर पटाए[3]।
दस बिमान जहां लहि[1] आह। त सब[4] एक बरिस म उमाह।
औ जेत[1] नगर दस महं[2] दुखी। ते सब कीन्ह दाम द[3] सुखी।
औह[1] अनेग जो भई बधाई। सा माहि कोभि कही नहिं[3] जाई।
हाट पटोरन्ह छाए मिरगमद अगर कपूर।
नगर गोरि सब[1] महंकै तरुनिन मांग[2] सेंदूर॥

पाठान्तर—(१) १ ए राजा विहु मुनि हर्ष बधावा। २ ए सब घर पूरि पटोर पटावा। (शुद्ध परवर्ती अर्द्धाली)।
(२) १ रा औरु। २ ए जन मन अमनैर। ३ ए मन जन पहिराउरि पावे। (शुद्ध पूर्ववर्ती अर्द्धाली)।
(३) १ ए लगु। २ रा ए मन।
(४) १ ए जत। २ ए मा। ३ ए ते सब किये दान देर।
(५) १ ए औ। २ ए भी। ३ ए कहा न।
(७) १ ए सब। २ ए तरनी सिर।

अर्थ—(१) राजा के घर में आनंद की बधाई हुई (अभ्युदय-सूचक बाद्य हुआ) और

समस्त प्रजा (सेवक-वर्ग) ने पहिनने के वस्त्र पाए, (२) और जितने घर अमनैकों (आत्मीयों ?) के [उस नगर में] छाए थे उन सब घरों को [राजा ने] तुरंग (घोड़) और पटोर (रेशमी वस्त्र) भेजे। (३) देश में जहाँ तक (जितने भी) किसान (कृषक) थे वे सब एक वर्ष पर्यन्त उगाहे न गए (उनसे लगान नहीं ली गई) (४) और नगर तथा देश में जितने दुखी थे उनको दान देकर [राजा ने] सुखी किया। (५) और भी जो अनेक [प्रकार की] बधाई हुई, वह मुझसे जिह्वा के द्वारा कही नहीं जाती है।

(६) हुलें पटोरों (रेशमी वस्त्रों) से आच्छादित थीं मृगमद (कस्तूरी) अगर तथा कपूर (२) नगर की समस्त गलियों में महक रहे थे, और तरुणियों की माँगों में सिंदूर [शोभित हो रहा] था।

टिप्पणी—(१) बधाई < बर्द्धापन < वर्धापन = अभ्युदय-सूचक वाद्य। परजा < प्रजा। (२) अमनैक < आत्मीय (?)। तुरै < तुरग = घोड़ा। पटोर < पट्ट-कूल (?) = रेशमी वस्त्र। (३) उगाह < उद् + ग्रह = लगना। (७) (४) जेत < यत्तिक < यावत् = जितना।

[५४]

बरहैं दिन बरही भइ[1] भारी। नगर लोग नवता सब*[2] भारी।
दुखी लोग सबाइ[1] जेंवावा। अमनकन्ह[2] घर घोर पठावा।
औ जाचक जहवां लहि[1] आए[2]। भएनि मोंट पनवारा पाए[3]।
नगर छतीसौ पौनि सबाई*[1]। सब कहँ* राज दीन्हि*[2] बधाई।
भांट घोर द दे बहुराए। भाटिनि सब पटोर पहिनाए।
सोन रूप औ अम धन[1] हय गय[2] रतन पवार।
राम राज कुंवर क बधाई राखा किछु न भंडार॥

पाठान्तर—(१) १ ए बरहे दिन बरहे (< बरही—प्र. लि.) भी। २ ए जा नेवता रा नवना सब।
(२) १ रा बैठार। २ रा अमैकन के।
(३) १ ए जहवाँ लगु। २ ए आवा। ३ ए जा जम तेहि सब दै बहुरावा।
(४) १ रा ए सबाई। २ ए दीन्ह।
(५) १ ए सोना रूपा अम धन। २ रा पुनि (?)।

अर्थ—(१) [जन्म के] बारहवें दिन [राजकुमार की] भारी (धूमधाम की) बरही हुई जिसमें नगर के समस्त लोग सम्पूर्ण रूप से आमंत्रित किए गए। (२) [राजा ने] दुखिया लोगों को बिठा कर जिमाया और अमनैकों (आत्मीयों ?) के घर घोड़े भजे। (३) और जहाँ तक याचक आए, वे पनवारे (भोजन के पत्तल) पाकर मोटे हो गए। (४) नगर में समस्त छत्तीस पौनियों को उन सब को राजा ने बधाई दी (अभ्युदय-सूचक उपहार दिया)। (५) भाटों को [राजा ने] घोड़े दे-देकर वापस किया, और सभी भाटिनों को पटोर (रेशमी वस्त्र) पहनाया।

(६) सोना, चाँदी अन्न धन हय गज रत्न तथा प्रवाल (?) (७) राजकुमार की बधाई (जन्म के उत्सव) में [सब कुछ] देकर राजा ने भंडार में कुछ न रक्खा।

टिप्पणी—(२) अमनैक < आत्मीय (?)। पौनि = पानेवाले। मंगल के अवसरों पर पुरस्कारादि

पानेवाली जातियाँ। (४) बधाई<बर्धापन=अभ्युदय-सूचक उपहार। (५) पटोर<पट्टकूल (?)=रेशमी वस्त्र। (५) घोर<घोटक=घोड़ा। (६) पंवार<पवाल<प्रवाल=मूँगा (?)।

[५५]

पाँच धाइ[1] औ[2] सात खेलाईं[3] । राजै ढूँढ़ि सुजाति लगाईं[4] ।
बासर पाँच[1] अमित जेवनारा । दिन दिन बाढ़[2] राजकुमारा ।
जस बसंत तरिवर क[1] डारा । औटि दूध नित करै[1] अहारा ।
रानी राउ देखि रहसाहीं । अति हुल्लास सुख[1] अंग न[2] समाहीं ।
खिन खिन[1] राजा अंकम लावै । नवछावरि अति[1] दरब लुटावै ।
बिरिध बैस कै[1] संतति[2] खिन खिन[3] रहसै[4] राउ ।
सब[1] दिन कोड कोलाहल औ निसि[2] हरख बधाव ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्द्धाली २ तथा ३ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए धाइ। २ ए औ। ३ ए खेलाई। ४ ए सुजान मँगाई।
(२) १ ए पसरा पँच। २ ए बढ़ुहि।
(३) १ ए रितु सिर के। २ रा करहिं।
(४) १ ए यह शब्द नहीं है। २ ए न देह।
(५) १ ए खनखन। २ ए मित। ३ ए लुटावै (?)।
(६) १ ए देखि। २ ए संतत। ३ ए खन खन। ४ रा रहसहिं।
(७) १ ए सब। २ ए, सब दिन।

अर्थ—(१) राजा ने [राजकुमार के लिए] अच्छी जातियों की पाँच धायें और सात खेलाने वाली स्त्रियाँ ढूँढ़ कर लगाईं (२) [जिनके लिए] दिन में पाँच बार अमृतोपम जेवनार (रसोई) होती थी। [फलतः] राजकुमार दिन-दिन बढ़ने लगा, (३) जिस प्रकार वसंत में वृक्ष की डाल [बढ़ती है]। वह नित्य औटाकर (औटाए हुए) दूध का आहार करता था। (४) रानी और राजा उसे देख कर हर्षित होते थे और अति उल्लास और सुख से [वे] शरीर में नहीं समाते थे। (५) क्षण-क्षण राजा कुमार को अंक से लगाता था और उसकी न्यौछावर में बहुत-सा द्रव्य लुटाता था।

(६) वृद्ध वयस् की संतति से राजा क्षण-क्षण हर्षित होता था; (७) सभी (पूरे) दिन कोड (कौतुक) और कोलाहल तथा रात में हर्ष का बधावा होता था।

टिप्पणी—(१) धाइ<धात्री। (२) जेवनार<जीवनधारि=रसोई। (४) रहस<रभस्=हर्ष। (४) हुलास<उल्लास। (७) कोड<कुड्ड (दे.)=कौतुक। बधाव<बर्धापन=अभ्युदय सूचक बाद्य।

[५६]

निसि बासर कर[1] अस भोगा[2] । गजगवर मा[3] आउ[4] संजोगा ।
पचएं बरिस परसि भुइ पाऊ[1] । पढ़ित[?] बैसारेउ राऊ ।

दरब कोटि दुइ आगें[1] राखा। तहि पर वचन राउ अस[2] भाखा।
जइस मोर सुत तइसन तोरा। बिद्या देत न लागइ[1] भोरा।
मोहि तुम सों नहिं लागहि[1] भोरी। दिन दिन करब सेव म[2] तोरी।

आपुहि दोस[1] न लाएहु[2] बिनव चरन गहि राउ।
प्रतिपालहु बालपन[1] आपन मोर हियाउ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्द्धाली ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए सुत कै भोगू। ३ ए, भै। ४ रा बोही।
(२) १ ए पाँऊ। २ ए के।
(३) १ ए आगे। २ ए तापर बिनती राई।
(४) १ ए लाग।
(५) १ ए मोहि तोसौं न लागै। २ ए मैं मेवा।
(६) १ ए दोस। २ ए लावो।
(७) १ ए बालापन।

अर्थ—(१) एक दिन के ऐसे भोगों से राजकुमार की आयु का संयोग हुआ, (२) तो पाँचवें वर्ष में उसने भूमि पर पैर रक्खे और राजा ने पंडित [नियुक्त] कर उसे [पढ़ने के लिए] बिठा दिया। (३) दो कोटि द्रव्य उसने [पंडित के] आगे रक्खा और उस पर भी [पंडित से] राजा ने ऐसा वचन कहा "(४) यह जैसे मेरा पुत्र है वैसे ही तुम्हारा भी है; इसे विद्या देते भोर (भूल या कोर-कसर) न हो। (५) [यदि इस कार्य में] मुझे तुमसे कोई त्रुटि नहीं लगेगी (मिलेगी) तो मैं तुम्हारी सेवा दिन-दिन (निरंतर) करूँगा।"

(६) उसका चरण पकड़ कर राजा ने कहा, "अपने से (अपनी ओर से) तुम दोष (त्रुटि) न लगाना (करना) (७) और अपने और मेरे बालपन के हार्दिक स्नेह-व्यवहार का प्रतिपाल (निर्वाह) करना।"

टिप्पणी—(१) आउ < आयु। (३) दरब < द्रव्य।

[५७]

पन्डित अस कुँवरहि औरावा[1]। एक वचन महुँ अरथ पढ़ावा।
जोग कोक कुँवरहि औरावै[1]। भिन्न उरहिं[2] अरथ समुझावै[3]।
पोरइ न्नि भा कवर सयाना[1]। सब भेद महुँ भाउ[2] बखाना[3]।
जोग[1] अमर[2] औराव[3] सतभावा। पिंगल कोक कठ औरावा।
बियाकरन जोतिस औ[1] गीता। गीत कबित अरथ सो जीता[1]।

अउर गरथ गियान आस क[1] पढ़े[2] अनग कुमार।
नीपुन भो गुन बिद्या बादि[1] न कोऊ पार॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुनि पंडित कुँवर मन लावा।
(२) १ ए जो अस बोल कुँवर औरावा। २ रा उरेहिय (?) ए उरेहै।
३ ए बुझावा।

(३) १ रा मिमाना। २ ए भाँति। ३ रा बखानी।
(४) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए अमर व। अमर।
(५) १ ए ब्याकरन जे जोतिस। २ ए गीत गोबिंद। ३ ए कीता।
(६) १ ए भी जो ग्रंथ ग्यान जोग। २ रा कोरथ। ३ ए पढ़ा।
(७) १ रा माउ।

अर्थ—(१) पंडित ने कुमार को इस प्रकार रटा-रटा कर अभ्यास कराया कि एक-एक वचन के उसने बहुत-से अर्थ पढ़ाए। (२) वह योग तथा कोक शास्त्रों को कुमार को रटाता था और चित्र उरेह-उरेह कर उनके अर्थ समझाता था। (३) थोड़े ही दिनों में [पंडित के परिश्रम से] कुमार सज्ञान हो गया और वेद (विद्याओं) का भेद अनेक भावों के साथ बखानने लगा। (४) उसने योग तथा अमरकोश को सात (?) भावों से (कुमार को) रटा दिया और पिंगल तथा कोक-शास्त्र को भी कंठ करा दिया। (५) फलतः व्याकरण ज्योतिष और भगवद्गीता तथा गीतों और काव्यों के अर्थ करने में उसको कौन जीतता?

(६) शास्त्र और योग के अन्य अनेक ग्रंथों को भी राजकुमार ने पढ़ा। (७) और विद्या में वह ऐसा निपुण हुआ कि कोई उससे वाद नहीं कर सकता था।

टिप्पणी—(१) (४) औराव < उद्रुप् = जोर जोर से कहलाना रटाना। (२) उरेह < उल्लेखनम् = रेखाएँ खींचकर कोई आकृति बनाना। (३) बखान < बक्खाण < व्याख्यानम् = कहना विवरण देना। (७) नीपुन < निपुण।

[५८]

सो लहि[1] कुवर गुन[2] विद्या साधी । जौ लहि गाठि बारही[3] बांधी ।
तो पुनि कुवर भरौं[1] औराई । साधन नाउ*[2] सिस्टि जस[3] आई ।
गाढ़ फरी औ कुन*[1] कटारा । माल सरौं अति सुघर[2] कुमारा ।
धनुक[1] बान लावौं कहि जोरा । बार बांधि मोती सिर[2] पोरा ।
ऐंग[1] मुंधर मारग कर माजा । सरग धनुक[3] दमक[4] छपि[5] लाजा ।
रस मूरा[1] विद्या गुन पूरा दस औ चारि निधान ।
भागिवन्त सुभिवता[1] मन्न मुरति गुर(?)[2] ग्यान ॥

पाठान्तर—(१) १ ग जौ लगि। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए जौ लगि गाठी बांधी।
(२) १ ग तब जो कुवर भरौं। २ रा साधन कोट ग साधना कोट। ३ ग जे।
(३) १ रा औ माल ग औ बोल। २ ग माल गये जो माथु।
(४) १ ग धनुष। २ ग सिरि।
(५) रा ग ऐंगि। २ ग कुवर के मारग। ३ ग धनुष। ४ ग धरनी। ५ ग में यह शब्द नहीं है।
(६) १ ग रसमूर।
(७) १ ग सभिरत जो। २ ग गुर।

अर्थ—(१) तब तक कुमार ने गुणों और विद्या की साधना की जब तक कि उसकी बारहवीं वर्षगांठ बाँधी गई। (२) इसके अनंतर कुमार ने सरों (अस्त्र-विद्या) का अभ्यास किया और उन समस्त साधनों (धरनाम) का जितने सृष्टि में आए थे। (३) सोता करी गुंत (वर्छी) कटार और मारू सरों को कुमार अत्यंत कुशलता के साथ धारण करने (चलाने) लगा। (४) धनुष-बाण [के प्रयोग] में किससे उसकी तुलना की जावे? मोती यदि सिर पर बालों में बाँधे हुए होते थे तो उनको [बाणों से] फोड़ देता था। (५) कुँवर ने शार्ङ्ग (सींगों का धनुष) इस प्रकार साधा कि स्वर्ग (आकाश) का धनुष भी उसे देखकर लाज से छिप जाता था।

(६) वह रण में शूर हुआ और विद्या तथा गुणों से परिपूर्ण हुआ तथा चतुर्दश विद्याओं का निधान हुआ। (७) वह भाग्यवान बुद्धिमान [रूप में] मदन की मूर्ति और ज्ञान में गुरु हो गया।

टिप्पणी—(२) जेत < जेतिम < यावत् = जितना। (३) साउ < साधुम। (५) सारंग < शार्ङ्ग = सींगों कर बना हुआ धनुष। सरग < स्वर्ग = आकाश।

[५९]

बरहैं बरिस[1] कहौं अब गाई। सहज राज[2] चित उपजउ[3] आई।
अब मै बिरिध[1] बस न समारौं। राज तिलक गहि सुत हौ[2] सारौं।
पुनि राज[1] जन परिजन राए। औ अमनक नगर जेत[2] छाए।
सब सों राय कीन्हि[1] मतराई। आइउ मोरि पियरि धूप भाई।
पाँचहि मतें[1] आउ जौ आजू। कुवरहि दउ राज कौ[2] साजू।
पुरुखहि[1] बिरिध बस कै सतति नवजोबन बिन[2] कत।
कहा बसाइ[1] एन्ह[2] दूनौ ऊअइ[3] रितु[4] बसत॥

पाठान्तर—(१) १ ए बरहैं बरिस। २ ए को। ३ ए चाव। ४ ए पैमा।
(२) १ ए बिध। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए नहैं।
(३) १ ए राजै। २ ए अमसैउन नग को।
(४) १ ए सबसे राउ कीन्ह रा सब सौ राय बिएज। २ ए पिदर।
(५) १ ए पचहु मते। २ ए कै।
(६) १ रा मे यह शब्द नही है। २ ए जोबन बीते।
(७) १ ए कहहु काम। २ रा अब। ३ ए उजगी। ४ रा [illegible]

अर्थ—(१) बारहवें वर्ष की बात अब मैं गाकर कह रहा हूँ; राजा के [illegible] (परमार्थ-साधन का भाव) उत्पन्न हुआ। (२) [उसने सोचा] "अब मैं वृद्ध हूँ [illegible] सँभाल नहीं रहा हूँ (मेरी आयु शेष नहीं है) इसलिए पुत्र को पकड़ कर [illegible] राजतिलक कर दूँ। फिर राजा ने प्रजाजन और परिवार के लोगों को [illegible] अमनैक (आत्मीय?) उस नगर में छाए हुए थे [उन्हें बुलाया]। (४) [illegible] को [और कहा] मेरी आयु [अस्तमित सूर्य की] पीली धूप [जैसी] है [illegible] यदि पंचों के मन में आए तो आज जब कि अपनी आयु है कुमार को [illegible]

(५) पुरुष को वृद्धावस्था में संतान प्राप्त हो और यौवन के [illegible]

(७) तो इन दोनों का क्या कहना है? ये (ऐसे सुयोग) उजाड़ प्रदेश की बसत करते हैं।

टिप्पणी—(२) बैस < वयस्। (३) राव < रावय्=बुलाना आह्वान करना। अमनैर < आत्मीय (?) (४) आउ < आयु। (५) कंत < कान्त=प्रिय।

[६०]

अब सपति मोरी[1] केहि काजा। करहु[2] तौ[3] करौं कुंवर कहं[4] राजा।
मैं परिहरउं पिरिथमी[1] दडू। सुत बरसै अब[2] राज अनदू।
कहहु तौ[1] मदुक कुंवर सिर धरऊं। मैं हरि नाउं[2] जपी अहि[3] तरऊं।
जन परिजन राउत[1] औ[2] राने। कुंवर नाउं सुनि सम[3] रहसाने[4]।
राजा[1] बचन सब काहु[2] भावा। लागेउ होइ उछाह[3] बधावा[4]।
सात दीप नौ खंड पिरिथिमी[1] चहुं दिसि होइ[2] बधाउ।
साजा[1] राज कुंवर कहं चाहइ देउं[3] राज कहं[4] राउ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मोरे। २ रा कहिय। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए कुंवरहि करौं मैं।
(२) १ ए मैं प्रहरउं प्रिथिमी क। २ ए सुत को करौ।
(३) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए नाम। ३ ए जा।
(४) १ ए राउ। २ ए औ। ३ ए नाम सुनि कै। ४ ए रहसानें।
(५) १ ए राजा। २ रा सम सुनि कै ए सब काहू। ३ ए सब लोग हो आनद। ४ रा बधाऊ।
(६) १ ए प्रिथिमी। २ ए होउ।
(७) १ ए राजा। २ ए देउ राज कहं ग कर्ं अब मन।

अर्थ—"(१) अब मेरी सपत्ति [मेरे] किस काम की होगी? यदि आप लोग कहें तो कुमार को राजा कर दूं (२) मैं पृथ्वी के दण्ड त्याग दूं और पुत्र अब राज्य का आनंद भोग करे। (३) यदि आप लोग कहें तो कुमार के सिर पर [राज का] मुकुट रख दूं और मैं हरि नाम का जप करूं जिससे [भवसागर से] तर जाऊं।" (४) उसके [जितने भी] आत्मीय गुरुजन-परिजन राउत और राने थे कुमार का नाम सुन कर सब हर्षित हुए। (५) राजा की बात सब को अच्छी लगी और उत्साह (उत्सव) तथा बधावा होने लगा।

(६) सात द्वीप और नौ खंड में पृथ्वीतल पर चारों ओर बधावा होने लगा। (७) [क्योंकि] राजा राज्य कुमार को साजना चाहता था और कहता था कि वह उसको राज्य देगा।

टिप्पणी—(२) पिरिथमी < पृथ्वी। दड < दण्ड। (३) मदुक < मुकुट। (४) रहस < रभस् =हर्ष। (५) उछाह < उत्साह=उत्सव। बधावा < वर्द्धापन < वर्धापन=अभ्युदय-सूचक वाद्य।

[६१]

अस्सुनि[1] लगन बिरस्पति वारा[2] । औ ससि कर सीअर[3] उजियारा ।
सुकुल पच्छ मधु मास सोहावा । राजें[1] राजकुँवर हँकरावा ।
आवत कुँवर ठाढ़ भा राऊ । निहुरि कुँवर तब परसउ पाऊ[1] ।
पुनि राउ गहि[1] अंकम लावा । आपन ठाउ पाट[2] बैसावा[3] ।
प्रथमहिं जौ राउ[1] जोहरावा । तौ पुनि सकल दल[2] सिर नावा ।
सिर सों मटुक उतारि कै राजा धरउ[1] कुँवर के सीस ।
नगर उछाह कल्यान घरहिं घर[1] सभ[2] जग दइ असीस ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अस्वनि। २ ए बिहसपति। ३ ए औ ससि सूर करै।
(२) १ ए राजै।
(३) १ ए आइ कुँअर दुइ पकरा पाऊँ।
(४) १ ए राजै तौ। २ ए राज। ३ ए बैठावा।
(५) १ ए प्रथम आप राय। २ ए तौ जो सकल सिस्टि।
(६) १ ए धरा।
(७) १ ए नव काज आनंद कर। २ ए सब।

अर्थ—(१) अश्विनी लग्न में बृहस्पतिवार को, जब कि शशि का शीतल प्रकाश था (२) सुहावने मधु (चैत्र) मास के शुक्ल पक्ष में राजा ने राजकुमार को बुलवाया। (३) कुमार के आते ही राजा खड़ा हो गया तब कुमार ने झुक कर राजा के पैर छुए। (४) फिर राजा ने उसे पकड़कर अंक से लगा लिया और अपने स्थान पर उसे पाट (सिंहासन) पर बिठाया। (५) क्योंकि राजा ने उसे सब से पहले जुहार (नमस्कार) किया इसलिए फिर समस्त देश ने उसे सिर झुकाया।

(६) [अपने] सिर से मुकुट उतार कर राजा ने उसे कुमार के सिर पर रक्खा; (७) नगर में उत्साह (उत्सव) कल्याण (मंगलाचार) घर-घर में हुआ और समस्त संसार ने उसको आशीर्वाद दिया।

टिप्पणी—(१) सीअर < शीतल। (५) जौ < जओ < यत = क्योंकि कारण कि। (७) उछाह < उत्साह = उत्सव।

[६२]

राजा राउ जहाँ लगु आए[1] । राज अग्या*[2] कुँवरहिं[3] सिर नाए[4] ।
सात दीप नौ खंड जग जानां । उदै अस्त भइ[1] कुँवर कै[2] आनां ।
सरग ऊच महि मंडल आजा । राज [औ]* पाट कुँवर जग[1] राजा ।
त्रिभुवन सिस्टि[1] जो[2] आएसु मानां । कुँवर सीस[3] ठाकुर कै जानां ।
सिरजनहार[1] सिस्टि जत* सिरी[2] । सभ[3] पर आन कुँवर कै फिरी ।
उदै अस्त महि[1] मंडल सुर नर[2] मुनि गन देव[3] ।
सभ[1] अग्या प्रतिपालहिं*[2] करहिं* कुँवर कै सेव ॥

पाठान्तर—(१) १ रा सुरजर नाव जहं लगि भए। २ रा ए अग्या। ३ ए कुंवर ४ रा नए।
(२) १ ए भी। २ ए क।
(३) १ ए जुग।
(४) १ ए सिस्टि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए सबन्ह कुंवर।
(५) १ ए सिरजनिहार। २ रा जब सिरी ए जे फिरी (तुक परवर्ती चरण)। ३ ए सब। ४ ए की।
(६) १ ए महि। २ रा नर। ३ ए देउ।
(७) १ ए सब। २ ए प्रतिपारै, रा प्रतिपार्लहि (<प्रतिपार्लहि)। ३ ए की रा में यह शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) जहाँ तक (जितने भी) राजा और राव आए, राजा की आज्ञा से सब ने कुमार को सिर झुकाया। (२) संसार में सात द्वीप तथा नौ खंड में [उसका राजा होना] जान लिया और उदय (उदयाचल) से लेकर अस्त (अस्ताचल) तक कुमार की आन हो गई। (३) यह शब्द (समाचार) मही-मंडल में बज गया (प्रसिद्ध हो गया) कि राज्य और पाट (सिंहासन) दोनों से—कुमार [अब] जगत् का राजा है। (४) त्रिभुवन में जो सृष्टि थी उसने [कुमार का] आदेश माना और कुमार को [अपने] सिर पर स्वामी करके समझा। (५) सृजन-कर्त्ता ने जितनी सृष्टि की थी सभी पर कुमार की आन (आज्ञा) फिर गई।

(६) उदय (उदयाचल) से लेकर अस्त (अस्ताचल) तक महीमंडल के प्राणी देवता, मनुष्य, मुनि [तथा गंधर्व ?] गण (७) सब उसकी आज्ञा का निर्वाह करते और कुमार की सेवा करते।

टिप्पणी—(२) (४) (५) आन<आज्ञा। (३) पाट<पट्ट=सिंहासन। (४) आएसु< आदेश।

[६३]

पनमोती अत°[1] सुग दिन रहे। ते सभ[2] कुमरहि सुग निरबहे।
चौदह बरिस इगारह मासा। आवा दिन राति भोग बरासा[1]।
पुनि जो गरह दशा दिन[1] भारी। दीन्ह आनि कुँवरहि अपचारी।
सिघ लगन सूरज°[1] उजियारा[2]। सो गन पीछें ससि पैसारा[3]।
दइय जो प्रथि जसि गुनि[1] धरी। सुदपार बिरध सिर[2] परी।
जनमोती गनि साम दुग जो बिछ[1] लिखा लिलार।
तरि जो तीन भुवन मिलि[1] मागे लिखा न टरे सर[2] पार॥

पाठान्तर—(१) १ रा जन ए थे। २ ए भरे। ३ ए ते गव। ४ रा सुगन कुंवर।
(२) १ ए भरत दिन पुनीत प्रगासा।
(३) १ ए जा।

(४) १ रा अमुनी ए सूरज। २ रा पैनारा (तुल परवर्ती चरन)। ३ ए नौ सत कलक भी ससितारा।

(५) १ ए दई जो गुनी साठि गुन। २ ए बीर्फ़ै।

(६) १ ए रे।

(७) १ ए तेहि त्रिभुवन औ। २ ए मटै।

अर्थ—(१) जन्मपत्री में जितने सुख के दिन थे उन सब ने कुमार को सुख दिखाया (दिया)। (२) चौदह वर्ष और ग्यारह मास [होने पर] भोग-विलास की रति का दिन आ गया। (३) फिर जो उसकी ग्रह-दशा के भारी (कष्टकारक) दिन थे उन्होंने आकर कुमार को अंकपाली दी। (४) जिस लग्न में जब सूर्य उज्ज्वल (प्रकाशपूर्ण) था और शशि ने सोलह शृंगार करके [नक्षत्र-मंडल में] प्रवेश किया था (५) दैव ने जो ग्रंथि जिस प्रकार समझ कर रक्खी थी वह बुधवार और बृहस्पति [के बीच की रात] को कुमार के सिर पर आ पड़ी।

(६) जन्मपत्री के अनुसार रति-काम-सुख—जो कुछ भी ललाट (भाग्य) में लिखा होता है (७) उसको यदि तीनों भुवन भी मिलकर [मिटाने में] लगें, तो भी उस लेख को कौन मिटा सकता है ?

टिप्पणी—(१) (१) जनमौती < जन्म-पत्रिका। (१) जेत < जेत्तिअ < यावत् = जितना। (२) बेरास < विलास। रति < रति। (३) अकवारी < अंकपाली = आलिंगन। (६) लिलार < निलाड < ललाट।

[६४]

अब उतपति सुनु[1] रस क[2] बाता। जैसें[3] कुँवर पेम[4] मद माता।
एक दिन नट आए परदेसी[1]। नाचहिं कोउ[2] दखिलनी देसी।
कुँवरहिं सदा नाच मन भावा[1]। निसि बासर नित निरित[2] करावा।
दखिन नट कुँवरहिं[1] मन भाए। तुरित[2] बेगि कछवाह[3] मगाए।
सुरुजभान तहँ बसेठ[1] आई। औ[2] जो अहै सम[3] राज बधाई।
दखिन नाच अरभ[1] भै[2] रजनी भरसउ राज[3] भुवार[3]।
ऊभी सभा नाच औ कछनी[1] पौढ़न गएउ[2] कुमार[3]॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुन। २ ए पेम की ('पेम' शब्द परवर्ती चरण में आता है)। ३ ए जैसे। ४ ए पीरम।

(२) १ ए तेहि दिन आए नर प्रदेसी। २ ए मीरा।

(३) १ ए भावै। २ ए नौ गित।

(४) १ ए देखत नाच कुँवर। २ ए तुरंत। ३ ए कछवाय।

(५) १ ए जो बैस। २ रा और। ३ ए मन।

(६) १ ए मार (?) विरिध। २ ए भौ। ३ ए अरमे मुर्ज कुमार।

(७) १ ए उठि नाच नाँठ सब रा ऊभी सभा नट की कछनी। २ ए पये। ३ ए राजकुमार।

अर्थ—(१) अब रस की वार्ता की उत्पत्ति सुनो—जिस प्रकार कुमार प्रेम के मद में मत्त हुआ। (२) एक दिन परदेश के नट आए, जो कि दक्षिण देश के कौतुकपूर्ण नृत्य करते थे। (३) कुमार

को सदैव मन से नाच अच्छा लगता था इसलिए वह रात-दिन नित्य ही नृत्य कराता रहता था। (४) कुमार को देखते ही वे मद आ गए, इसलिए उसने इन्हें तुरंत और शीघ्र वेषादि से सुसज्जित करा कर बुलवाया। (५) सूर्यभानु राजा [भी] वहाँ आ बैठा और राज-सभा के जो सदस्य थे वे भी [आ बैठे]।

(६) नाच देखते-देखते आधी रात हो गई, और राजभूपाल अलसा गए; (७) सभा उठ खड़ी हुई नृत्य और उसकी वेष-भूषा का भी अंत हुआ, और राजकुमार शयन करने गया।

टिप्पणी—(२) कोड < कोडु < कुडु [दे] = कौतुक। (३) निरित < नृत्य। (५) अथाई < आस्थानिका = गोष्ठी गोष्ठी-मंडप। (७) उठी < उत्थित = उठी।

[६५]

पालक सेज बरनि को¹ कहा । कहौं सोइ जो कहिबे अहा² ।
सेज सभाग कुँवर जौ पाई । अरसानउ¹ सुख निद्रा आई ।
आपु मांह¹ बिछुर जो अहे । दोउ पलक निद्रा धरि² गहे ।
मिलि¹ पालक रति संगम जोगी । जनु बिछुरे दुइ मिले बियोगी ।
नींद परम¹ सुख बिधनै सिरी । पै जिन्ह बसि² न प्रेम किरकिरी³ ।
मैं का कहौं बिधातहि¹ तेहि बुधि² धरेउ³ पिरम सुख नाउँ ।
का कहि ताहि बखानौं जा कर नैन मांझ भा¹ ठाउँ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मैं बरनौं। २ ए कहुँवे आहा।
(२) १ ए अरसाई।
(३) १ ए आपुन मो। २ ए पै नींदन्ह।
(४) १ ए मी।
(५) १ ए नीरम। २ ए बसु। ३ ए कै करी।
(६) १ ए बिधाता। २ ए नींदहि। ३ ए धरा।
(७) १ ए मांह बिच।

अर्थ—(१) राजकुमार की उस पर्यंक शय्या को वर्णन करके कौन कहे ? अब मैं वह कह रहा हूँ जो कहने को है। (२) जब कुमार ने सभाग [शय्या] का संयोग पाया वह अलसा गया और उसको सुख निद्रा आ गई। (३) आपस में जो अब तक बिछुड़े हुए थे उन दोनों पलकों को नींद ने पकड़ लिया। (४) [वे दोनों अब ऐसे मिल गए] मानों रति-संगम योगी पर्यंक में मिल रहे हों, अथवा दो [परस्पर] बिछुड़े हुए वियोगी मिल रहे हों। (५) नींद को विधाता ने परम सुख [के रूप में] सृजा, किंतु उन्हीं के लिए जिनके पलकों में प्रेम की किरकिरी न पड़ गई हो।

(६) मैं विधाता और उसकी बुद्धि को क्या कहूँ जिसने प्रेम का नाम सुख रक्खा। (७) उसको क्या कह कर बखानूँ जिसका स्थान नेत्रों में हुआ ?

टिप्पणी—(१) (४) पालक < पर्यंक। (१) सेज < शय्या। (५) बसि < बसनु बसु। (७) बखान बखानन व्याख्यानम् = व्याख्या करना कहना।

[६६]

जगत सुखी अपनें[1] सुख माता[2] । दुखी आपन दुख उतपाता ।
जाके मन नींद सों[1] लागहिं । दुख सुख दोऊ छाड़ें[2] भागहिं ।
गुन औगुन निद्रा महं दोऊ । जाग सोइ जो जानै[1] कोऊ ।
नींदहिं जगत न[1] निंदहु भाई । बहुतन्हि[2] सिधि नींदहि महं[3] पाई ।
प जो कोइ सोइ जग जानै । सोइ परम निद्रा रस[1] मानै ।

जेहि सोवत औ जागत[1] एक भांति बेवहार ।
म सो[1] नींद सराह नहिं[2] जो[3] जियतें धरि मार[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ प अपने। २ ए माता।
(२) १ ए सुख। २ ए दुखौं छाडि जो।
(३) १ ए जो जागत।
(४) १ ए जन। २ रा हिये। ३ ए निद्रा महँ।
(५) १ ए सा पै नींद परम सुख।
(६) १ रा जागें।
(७) १ ए सा पै। २ ए नींद सराही। ३ रा कै। ४ रा मार।

अर्थ—(१) जगत् में सुखी अपने सुखों में मत्त है दुखी अपने दुख के उत्पात में [मत्त है]। (२) [किंतु] जिसके मन नींद से लग जाती है उसको छोड़ कर दुख और सुख दोनों भाग जाते हैं। (३) गुण और अवगुण निद्रा में दोनों ही हैं जागता वह है जो इनमें से किसी को जानता है। (४) हे भाई नींद की जगत् में निंदा न करो क्यों कि बहुतों ने सिद्धि निद्रा में प्राप्त की। (५) किंतु जो कोई जगत् में सोना जानता है वही परम निद्रा के रस (आनंद) को मानता है।

(६) जिसका सोते और जागते—दोनों दशाओं में एक-सा व्यवहार होता है [वही उस परम निद्रा के आनंद को मानता है]। (७) मैं उस नींद की सराहना नहीं करता जो [मनुष्य को] जीते जी ही मार डालती (अचेत कर देती) है।

टिप्पणी—(१) मांता < मत्त। (६) बेवहार < व्यवहार।

[६७]

जो जियतहि धरि मारि अडारा[1] । तहि निद्रा जनि सोउ गंवारा ।
छोटि मीचु निद्रा जग आई । मीचु जगत बडि मीन्हि उपाई[1] ।
जस सपने कर[1] सुग औ राजू । जागें आगें आव न[2] काजू ।
औ मूत बहु मन उपाई[1] । जागें सबहि झूठ होइ[2] जाई ।
जागत बहुरि सोवन अस अबही[1] । ये जग दुखी झूठ गनि रहही[2] ।

एक अगिनि[1] निद्रा जग कहिए[2] जो रे मभ भरि (धरि?) खाइ[3] ।
तेहि निद्रा जनि सोवसि[1] मूरुख जहि सम[2] मूर[3] नसाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जो जियते पै मार अंधारा।
(२) १ रा मीचु जगत निद्रा जग पाई।
(३) १ ए कै। २ ए जागे काज न कीजै।
(४) १ ए जौ मूठी जो जाहि सचाई। २ ए सोचि सबै मूठी भै।
(५) १ ए जागत सोवत जस है यही। २ ए येहि जग दूनौ मूठ गन देही।
(६) १ ए अग्नि। २ ए न यह शब्द नहीं है। ३ ए सिंधै न जाइ।
(७) १ ए सोवहू। २ ए जो सबै। ३ ए में यह शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) जो निद्रा [मनुष्य को उसके] जीते जी पकड़कर मार डालती है उस निद्रा में ऐ गँवार, तू शयन न कर। (२) निद्रा जगत् में छोटी मृत्यु हो कर आई मृत्यु जगत् में एक बड़ी निद्रा ही के रूप में उत्पन्न की गई। (३) जैसा स्वप्न का सुख और राज्य होता है जागने पर वह काम नहीं आता है। (४) और शयन करने पर आप बहुतेरे मंत्र (उपाय) उत्पन्न करते हैं (निकालते हैं) किन्तु जागने पर वे सभी मूठे पड़ जाते हैं। (५) [इसलिए] जो जागने पर पुन (भविष्य में) होता है और जो सोते समय जैसे तत्काल होता रहता है जगत् में ये दोनों मूठ माने जाते हैं।

(६) निद्रा को जगत् में एक प्रकार की अग्नि ही कहना चाहिए, जो कि सब को पकड़ कर खा जाती है। (७) ऐ मूर्ख उस निद्रा में तू न सो जिसमें सब मूल [भी] नष्ट हो जाता है।

टिप्पणी—(२) मीचु < मृत्यु। उपाय < उप्पाय < उत् + पादय् = उत्पन्न करना। (४) मंत < मंत्र। (७) मूर < मूल = पूँजी।

[६८]

हरि हरि कहाँ गएउँ[1] कह रहऊँ[2]। का किछु[3] कह लिए[4] का कहऊँ[5]।
कुँवर घात कहिय[1] न लई। सीच नींदि मोहि हरि लै गई।
अब हौं पलटि कहौं सुनु[1] बाता। जस[2] कुँमार सुख निद्रा माता।
बिधि संजोग मा[1] अछरिन[2] करा। सोवत कुँवर सज पर परा[3]।
दरा[1] गंध्रप मुरति अमोला। अछरिन केर दशि चित[2] डोला।
कहिनि[1] कि यह मानुस हम अछरीं और न हमर[3] काज[4]।
पै यह ? रुसिय धरहि पर[*] कामिनि[1] उद अस्त जेत[*] राज॥

पाठान्तर—(१) १ ए गय। २ ए आयउ। ३ ए कछु। ४ रा लिया। ५ ए कहेऊ।
(२) १ ए कटन।
(३) १ ए जो। २ ए जब।
(४) १ ए भौ। २ ए अछरि। ३ ए हेरा।
(५) १ रा देखत। २ ए देखि मुरतिहि कर मन।
(६) १ ए कहा। २ ए अछरि। ३ ए आज न हमारे। ४ रा काज।
(७) १ रा है जो (?) लगिय कर ए लहि भरि कन्या देइहू। २ ए जब ए महि।

अर्थ—(१) हरि हरि! मैं कहाँ था और कहाँ [पहुँच] गया? क्या कुछ कहने को लेकर

मैं क्या कह गया ? (२) मैंने तो कुमार की वार्ता कहने को ली (उठाई) किन्तु बीच में मुझे निद्रा हरण कर ले गई। (३) अब मैं फिर लौटकर [उसे] कह रहा हूँ, अब वह वार्ता सुनो जिस प्रकार कुमार सुख निद्रा में मत्त हुआ। (४) दैव [वशात्] उसे अप्सराओं का संयोग [प्राप्त] हुआ जिन्होंने कुमार को सोते हुए (जब वह सो रहा था) [उसकी] शैय्या कर घेर लिया। (५) जब अप्सराओं ने उस गंधर्व [सदृश राजकुमार] की अमूल्य मूर्ति को देखा उसे देख कर अप्सराओं का चित्त डोल गया।

(६) उन्होंने कहा, "यह मनुष्य है हम अप्सराएँ हैं और कोई कार्य हमारा [इससे] नहीं है (हो सकता है) (७) किन्तु [यह तो हो ही सकता है कि] हम यह देखें (प्रयत्न करें) कि उदय से अस्त तक जितना [विधाता का] राज्य है [उसमें से] यह सबश्रेष्ठ कामिनी का वरण करे।"

टिप्पणी—(४) अछरी < अप्सरस् = अप्सरा। (७) जेत < यैत्तिय < यावत् = जितना।

[६९]

उद अस्त जह लगि[1] जग रखा[2]। कौन सो ठाउ[3] जो हम नहिं[4] देखा।
हम हहिं सभ[1] सयसार बिनानी। ढूँढहि जग एहि[2] जोग परानी।
कोइ सराह[1] सोरठ गुजराता। कोइ कह सिंघल दीप क[2] बाता।
त्रिभुवन चित[1] आइ दौराई। कुवर जोग जग नारि न पाई।
पुनि उठि धनी एक अस[1] कहा। एहि र जोग[2] कन्या एक अहा।
बिक्रम राय सकबधी नगर महारस थान।
तहि घर है कन्या मधुमालति[1] रवि ससि रूप छपान॥

पाठान्तर—(१) १ ए जहाँ लगु। २ रा रखा। ३ ए ठाँव। ४ ए न।
(२) १ रा हम ही सभ महि (< मैंहि) ए हम हहिं सब। २ ए ढं बहु मैंहि सम।
(३) १ ए सराहैं। २ ए क।
(४) १ रा चत। २ ए जो।
(५) १ ए जो। २ रा में 'रि' नहीं है। ३ रा जोगन।
(७) १ ए तेहिक घर मधुमालती।

अर्थ—"(१) उदय से अस्त तक जहाँ तक जगत् की रेखा (सीमा) है ऐसा कौन-सा स्थान है जो हमारा देखा हुआ नहीं है ? (२) हम सब संसार की विज्ञानी हैं हम जगत् में इसके योग्य प्राणी ढूँढें।" (३) [यह सुनकर] कोई तो सौराष्ट्र और गुजरात की सराहना [रूप के संबंध में] करने लगी और कोई सिंहल द्वीप की बात कहने लगी। (४) वे तीनों भुवनों में अपने चित्त को दौड़ा आईं किन्तु कुमार के योग्य जगत् में उन्होंने नारी नहीं पाई। (५) तब [उनमें से] एक धनी (नारी) ने उठ कर कहा, "इसके योग्य एक कन्या है।

(६) जो सकबंधी (शक्ति-साधक) विक्रम राय महारस नगर नामक स्थान में है (७) उसके घर में एक कन्या मधुमालती [नाम की] है, [जिसके सामने] सूर्य-चन्द्रमा का रूप छिप गया है।"

टिप्पणी—(१) ठाउँ < स्थान। (२) बिनानी < विज्ञानिन्। (६) थान < स्थान।

[७०]

सुनत बात बहुतहि चित भाई[1] । कोइ कहै[2] कुँवर रूप अधिकाई[3] ।
पुनि सभ[1] मिलि[2] कहहिं[3] बिचारी । पटतर बरिय[4] कुँवर कुमारी ।
काइ कहै कुँवरहि ओहि ल आइय[1] । कोइ कहु[2] कुँवरि इहाँ ल आइय[3] ।
जनी एक पुनि[1] कहा बुझाई । आवहिं[1] जावत रैनि सिराई ।
पुनि मोहनि निद्रा चखि[1] लाई । लीन्हि कुँवर कै[2] सेज उचाई ।
जह सोव सुन सज[1] सोहागिनि तीनि भुवन उजियारि ।
ल पासक तह डासी[1] सम क देखहिं[2] रूप उहारि[3] ॥

पाठान्तर—ए म अर्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए सुनत मोह बहुते चित भाऊ। २ ए कोइ कह। ३ ए अधिकाऊ।
(२) १ ए सब। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ ए कहा। ४ ए बेलि।
(३) १ ए कोइ कह कुँवरि उहाँ लै जाई। २ ए कह। ३ ए आनि।
(४) १ ए जा। २ ए जाने।
(५) १ ए चखु निंद। २ ए लीन्ह कुँवरहि।
(६) १ ए सेज्या।
(७) १ ए डासा। २ ए देखा। ३ रा उघारि।

अर्थ—(१) यह बात सुनते ही [सब के] चित्त को बहुत ही भाई। [फिर भी] कोई कहने लगी "कुमार में रूप की अधिकता है।" (२) [किंतु] फिर सब मिलकर विचार करके कहने लगीं "कुमारी और कुमार में समतुल्यता ही दिखाई पड़ती है।" (३) कोई कहने लगी "कुमार को यहीं ले आया जाए।" (४) फिर उनमें से एक जनी (नारी) ने समझा कर कहा कि इस प्रकार आते-जाते ही रजनी समाप्त हो जाएगी। (५) [इसलिए] तदनंतर राजकुमार की आँखों में मोहिनी निद्रा लगा कर उन्होंने कुमार की शय्या को उठा लिया।

(६) जहाँ पर वह त्रिभुवन का प्रकाश वह सुहागिनी सुख-शय्या पर सो रही थी (७) कुमार की पर्यंक ले जाकर वहाँ पर उस [की शय्या] के बराबर करके बिछा दी कि दोनों के रूप की उघारी (आकृति) से देखें।

टिप्पणी—(४) रैनि < रयणी < रजनी = रात्रि। (५) सैन < शयन = शय्या।

[७१]

कामिनि सो आ[1] म[2] जाइ बखाना । रूप सूरज[3] निसि माँझ उजाना ।
बरनि रहा चित[1] कहा न जाई । दसि रूप गम[1] रही लजाई ।
रहि[1] दसहि तो अधिक सोहाई[2] । ओहि परसहि[3] तो रूप सवाई[4] ।
अपनी अपनी[1] कला सपूनी । दुइ मह कोउ न[2] पाव[3] बिहूनी ।
भान रूप कुँवर[1] निरमला । कर कामिनि मुह[1] सोम्य कला ।

जउ* जउ*[1] निरखि निहारै तेउ* तेउ*[2] अधिक सरूप ।
तीनि भुवन मह[1] बिधन एइ दोउ सिर[2] अनूप ॥

पाठान्तर—(१) १ ए म यह छन्द नहीं है। २ ए नहि। ३ ए मूर।
(२) १ प मचक रहा था। २ रा ए सब।
(३) १ ए मेहि। २ रा मकाई (?)। ३ ए निरखी। ४ रा सोहाई।
(४) १ ए मपने मपन। २ प कोइ म देखि। ३ रा पार।
(५) १ रा म यह छन्द नहीं है। २ प मस।
(६) १ रा ए जौजौ। २ रा ए तौतौ। ३ ए अधिके रुप।
(७) १ ए मो। २ ए म दुन सिर।

अर्थ—(१) उन्होंने यह देखा जो कहा नहीं जा सकता है [उन दोनों के सौन्दर्य के आगे] दिन का [स्वामी] सूर्य और रात्रि का [स्वामी] चन्द्र दोनों छिप गए। (२) वे ऐसी चकित हो रहीं कि कुछ कहते नहीं बनता है; [दोनों के] रूप को देखकर वे सभी लज्जित हो रहीं। (३) इसको देखती हैं तो लावण्य [इसमें] अधिक है और उसको परखती हैं तो [उसमें] रूप (सौन्दर्य) अधिक है। (४) अपनी-अपनी कला में दोनों संपूर्ण हैं, और दो में से कोई दूसरे से पाव (एक चौथाई) भी हीन नहीं है। (५) अपने रूप में कुमार निर्मल (निर्दोष) है तो उस श्रेष्ठ कामिनी का मुख षोडस कला संयुक्त है।

(६) [वे कहने लगीं] "जैसे-जैसे निरीक्षण करके देखिए, वैसे ही वैसे [दोनों का] स्वरूप (सौन्दर्य) अधिक लगता है (७) तीनों भुवनों में विधाता ने इन दोनों को अनुपम सृजा है।"

टिप्पणी—(४) सपूनी < संपूर्ण। पाव < पाद = एक चौथाई। (६) निरख < निरिक्ख < निर + ईक्ष = देखना अवलोकन करना। निहार < निभाल < निभालय् = देखना निरीक्षण करना।

[७२]

कहहि रुप उतिम ए[1] दोऊ । एक एक सयें*[2] अधिक न कोऊ ।
जो बिधि इन्ह दोउ दइ[1] मेरावा । आज तीनिउ[2] लोक बधावा ।
जोगिहि[1] जोग मिलें[2] सुख होई । औ मुख इन्हहि*[3] जो दख कोई ।
तीनि भुवन जगजीवन साइ । इन्ह दुहु प्रीति[1] मिलाव गोसाइ ।
त्रिभुवन सिस्टि ढूंढि हम रहीं[1] । इन्ह दुहु सम तीसर कोउ[2] नहीं ।
यह सूरुज वह[1] ससिहर यह ससिहर वह[2] सूर ।
इन्ह दुहु[1] पम प्रीति जो उपज त्रिभुवन बाजै तूर ॥

पाठान्तर—(१) १ ए देखा रुप अधिक दै। २ ए न।
(२) १ ए दुइ होइ। २ ए तीनों।
(३) १ ए जोगहि। २ ए मिलै। ३ ए इन्ह (< इन्हहि फ़ारसी लिपि) रा निग्ह।
(४) १ ए दुहु जोग।
(५) १ ए मैं रही। २ ए कोइ।

(६) १ ए बहु रे सूर महु। २ ए यहु।

(७) १ ए दुहु।

अर्थ—(१) वे कहने लगीं "ये दोनों रूप में उत्तम हैं और कोई भी एक [रूप में] अन्य से अधिक नहीं है। (२) यदि विधाता इन दोनों को मिलाए दे (दोनों का मिलन करा दे) तो तीनों लोकों—आकाश पाताल और मर्त्य लोकों में बधावा बजने लगे। (३) [या तो] योगी को योग के मिलने (सिद्ध होने) पर सुख होता है और [या तो] इन दोनों को [साथ-साथ] कोई देखे तो सुख मिलता है।" [फिर वे विधाता से कहने लगीं] "तू तीनों भुवनों में जगत् के बीच [माव] का स्वामी है तू इन दोनों की प्रीति करा, दे चोखाई मिला दे। (५) हम तीनों भुवनों की सृष्टि को ढूंढ कर हार गईं किन्तु [देखा कि] इन दोनों के समान तीसरा (अन्य) कोई नहीं है।

(६) यह सूर्य है तो वह चंद्रमा है और यह चंद्रमा है तो वह सूर्य है। (७) यदि इन दोनों में प्रीति उत्पन्न हो तो तीनों भुवनों में [बधावे का] तूर्य बजे (तूर्य हो)।"

टिप्पणी—(२) बधाव < बधावण < वर्धापन = अभ्युदय-सूचक वाद्य। (६) ससिहर < शश धर = चन्द्रमा। सूर < सूर्य। (७) तूर < तूर्य = तुरही।

[७२]

कहेन्हि कि[1] ए दुइ[3] धम पियारे[4] । जिन्हने जगत सइहि[5] भोतार[6] ।
हम एहि नयर परज गति आई[1] । घर्रहि जाहि[2] कौतुक अंबराई ।
जो सहि[1] एह सावहि[2] एहि[3] ठाऊं । तो सहि हम दर्साहि लखराऊं ।
क गवनी लखराउ सबाई[*1] । जागा राजकुंवर अंगिराई[3] ।
देखसि[1] दोसर सैन सम दासी[2] । राजकुंवरि[3] एक उहां नवासी ।
सूर न सरभरि[*1] पाव जो न सूर्द छाहु ।
नौ रस[1] कला सपूनी[2] सोम[3] जोबन उदासे[4] बाहु ।।

पाठान्तर—ए में दोहे के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए भी। २ ए यहु। ३ रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए पियारा। ५ ए भीमु। ६ ए औतारा।

(२) १ ए ही वहि नय मरा यति आई रा हम एहि नगर परज गति आई। २ ए जामहु जाग।

(३) १ ए सखि। २ ए मोरे। ३ ए देहि। ४ ए नौ सखि फिर देरी लगराऊ।

(४) १ ए को सौरी लगराउ गवाई रा में गवनी लगराउ सबाई। २ रा जागेउ। ३ ए औंगिराई।

(५) १ ए देखा। २ ए दासा। ३ ए राजकुंअर। ४ ए निवासा।

(६) १ ए सरवरि रा स्पष्ट नहीं है।

(७) १ ए दोष एकादसि। २ ए पूनि (< पूनी) रा सपूरन। ३ ए में शब्द नहीं है। ४ ए उमग।

अर्थ—(१) उन्होंने कहा "ये दोनों प्रेम-प्यारे हैं, इनको विधाता ने जगत् में स्वयं [निर्मित कर] अवतरित किया है। (२) हम इस नगर में अपने चरणों की गति से आई हैं [अब] कौतुक के लिए चलकर आम्रवाटिका को जायें। (३) जब तक ये दोनों एक स्थान पर सोते रहेंगे तब तक हम लखराउँ देख लेंगी। (४) वे सभी लखराउँ गईं और [यहाँ] राजकुमार अँगड़ाई लेकर जागा। (५) उसने देखा कि एक दूसरी शैय्या बराबर बिछी हुई है और एक राजकुमारी वहाँ निवसित है।

(६) [रूप में] सूर्य उस [राजकुमारी] की बराबरी नहीं पाता है और न चंद्रमा उसकी छाया खूँद (कुचल) पाता है, (७) [वह ऐसी है मानो] सोलह कलाओं से संपूर्ण नारी यौवन में तकिये के रूप में सिर के नीचे बाहु रख कर सो रही हो।

टिप्पणी—(१) पिआर < प्रियाल = प्रिय। (२) अबराई < आम्र राजी = आम्र-वाटिका। (३) लखराउँ < लक्खाराम < लक्षाराम = एक लाख वृक्षों का बाग। (४) सैन < शयन = सय्या। (६) सरभरि < सरिभरी [दे] = समानता सदृशता। (६) खूँद < खुंद = कुचलना मर्दन करना चूर्ण करना।

[७४]

चहुं दिसि मंदिल पटोर मढ़ावा[१] । हेम खंभ सभ[२] नगन[३] जड़ावा ।
मंदिल सरग ससि बदन [सो][१] नारी । तार रतन[२] भरे जनु तारी[३] ।
कचपचियाँ भइ[१] चेरिन्ह[२] टोला । पालक जानु[३] अकास खटोला ।
पालक पर जनु लाइ सवारी[१] । सोई[२] सेन सहज विकरारी ।
सेज सौंरि का बरनौं पारी[१] । कहत सुनत जो बात रसारी[२] ।
मौ सत साजें[१] बाला निभरम[२] सोव[३] सुख सेज ।
चेत परिहरेउ कुंवर चित[१] दखि हरेउ[२] बुधि तेज ॥

पाठान्तर—(१) १ ए ओढ़ावा। २ रा सब। ३ ए रतन।
(२) १ ए बसती। २ ए तारे नैन। ३ ए बरा जनु तारी।
(३) १ ए कचपचिया भी। २ ए चेरी। ३ ए जानो।
(४) १ ए एक जो आये सवारी। २ ए सोवत।
(५) १ ए सौरि का बरनै पारा। २ ए रसारा।
(६) १ ए साजे। २ ए म मह पाठ नहीं है। ३ ए सोवत है।
(७) १ चेत न रहा कुंवर तन। २ ए हरा।

अर्थ—(१) [उसने देखा कि] चारों ओर मंदिर (राजभवन) पटोर (रेशमी वस्त्रों) से मढ़ाया हुआ है और समस्त खंभे स्वर्ण के हैं और नगों से जटित हैं। (२) वह मंदिर (भवन) [मानो] स्वर्ग (आकाश) है और उसमें शशि उस नारी का मुख है उसमें तारे मानो वे रत्न हैं जो [उस मंदिर में] ताडित (जटित) हैं। (३) उस मंदिर [आकाश] में कृत्तिका की भाँति माला चेरियों की टोली हुई और वह पलंग मानो आकाश-खटोला (स्वर्ग-विमान) हुई। (४) और ऐसी पलंग पर वह नारी मानो लमा (लिटा) कर सँवारी हुई थी उस शय्या पर वह इस प्रकार सहज बेक़रार (अचेत) सोई हुई थी। (५) सेज (शय्या) का स्मरण कर मैं क्या वर्णन कर सकता हूँ? [मत] मैं उस वार्ता को कह-सुन रहा हूँ जो रसीली है।

(६) सोलह शृंगार किए हुए यह बाला सुख-शय्या पर निभरम (बेखटके) सो रही थी (७) (यह देखकर) कुमार के चित ने चेत त्याग दिया और उसकी बुद्धि का तेज हर उठा।

टिप्पणी—(१) पटोर < पट्ट + फूल (?) = रेशमी वस्त्र। खंभ < स्कंभ = खंभा। (२) तारी < ताडिय < ताडित = पीटा हुआ जड़ा हुआ (?)। (३) नखतपतिमा < हस्ति-नक्षत्र = कृत्तिका की नक्षत्र-माला। (३) (४) पालक < पर्यंक = पलँग। (५) खाट < खट्वा = चारपाई। (४) बिकरार < बकरार (फा) = अशांत चपल।

[७५]

सूती[१] सेज सहज बिकरारा। दखि सजग भा[२] राजकुमारा।
चकित चित्त चहुं दिसि फिरि[१] हेरा[१]। बिधि यह[२] नगर[३] मंदिर केहि केरा।
औ यह कौन सोय बिकरारी[१]। धनि जेहि लगि बिधन औतारी[२]।
देखत हियें समानी स्यामा[१]। कुवर[२] जीउ करि परनामा[३]।
सूती सुखी सेज दखि[१] बाला। नख सिख उठी कुवर के ज्वाला[१]।
        कवल[१] भांति परगास[२] पुरुख निरखि मुख सूर।
        देखत पेम पिरीत पुरुब[१] कै हिय उर महं अंकूर॥

पाठान्तर—(१) १ ए सोवत। २ ए भौ।
(२) १ ए मैं चहुँ दिस हेरा। २ ए मेहि। ३ ए में यह शब्द नहीं है।
(३) १ ए बिकरारा। २ ए धन बिधना पे कसि औतारा।
(४) १ ए स्यामा। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए जीय कै कीन्ह प्रनामा।
(५) १ ए सुख सोवत जो देखी। २ ए उग कुँवर तन जामा।
(६) १ ए कौल। २ ए दिन बिगसन।
(७) १ ए प्रीति पूरब। २ ए हीयर कीन्ह अंकूर।

अर्थ—(१) उसे शय्या पर सहज बेकरार (अचेत) सोई हुई देखकर राजकुमार सजग (सावधान) हुआ। (२) चित्त में चकराकर उसने सभी दिशाओं में घूमकर देखा [और मन में कहा] "हे विधाता, यह नगर और मंदिर (भवन) किसका है (३) और यह कौन है जो बेकरार (अचेत) सो रही है? वह धन्य होगा जिसके लिए विधाता ने इसे जन्म दिया है। (४) देखते ही वह श्यामा उसके हृदय में समा गई और कुमार के जीव उसको प्रणाम कर [चकरा] गए। (५) उस बाला को शय्या पर सुख में सोई हुई देखकर कुमार के शरीर में नख से शिख तक ज्वाला [सी] लग उठी।

(६) पुरुष [नारी के] मुख को देखकर उसी प्रकार प्रकाशित (प्रसन्न) होता है जिस प्रकार कमल सूर्य को देखकर होता है। (७) [अतः] उसको देखते ही कुमार के हृदय में पूर्व [जन्म] की प्रेम-प्रीति अंकुरित हुई।

टिप्पणी—(१) (३) बिकरार < बेकरार [फा] = अशांत चपल। (७) पुरुब < पुरुव < पूर्व = पूर्व।

[७६]

जउ* जेउ*[1] देख[2] रूप सिंगारा । खिन[3] मुरछ खिन[4] चेत सँभारा[5] ।
देखि रूप चकित चित रहा । विधि[1] यह कौन कहाँ मैं अहा[2] ।
एक रूप औ किए सिंगारा । मुनिवर परहिं[1] देखि मुख धारा ।
रूप रेख का[1] कहौं बखानी । सहस भाउ होइ हियें[2] समानी ।
देखत रूप जीउ[1] भरमाना । बकहुल[2] पात जिमि[3] प्रान उड़ाना ।
रूप सिंगार सोहागिनि[1] जउ* जउ* देखि अघाइ[2] ।
तउ* तेउ*[1] नैन न परिहरहिं[2] रूप[3] जो रह लोभाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ग ए जौ जौ। २ ए देखु। ३ ए खन। ४ ए खन। ५ एत का बिकरारा।
(२) १ ए बिध। २ रा पुनि रहा (तुल पूर्ववर्ती चरण)
(३) १ ए टरहिं।
(४) १ ए को। २ ए भै जीउ।
(५) १ ए कुँवर। २ ए बगुली। ३ ए जिमि।
(६) १ रा सिंगार समागिनि ए सरूप सोहागिनि। २ ए जौ न देखि अघाइ रा जौ जौ रहे लोभाइ (तुल परवर्ती चरण)।
(७) १ रा ए तौ तौ। २ ए रूप न परिहरै। ३ ए नैन।

अर्थ—(१) वह जैसे जैसे उस [बाला] का रूप और शृंगार देखता था, एक क्षण मूर्च्छित होता तो एक क्षण चेत सँभालता था। (२) उसका रूप देखकर वह चित्त में चकरा रहा [और कहने लगा] "हे विधाता यह कौन है और मैं कहाँ हूँ? (३) एक तो यह रूपवती है और दूसरे शृंगार किए हुए है, [इसलिए] इस बाला के मुख को देखकर बड़े बड़े मुनि भी स्खलित हो जाएँगे। (४) इसकी रूप-रेखा किस प्रकार बखान (वर्णन) कर सकूँ? यह तो सहस भाव होकर मेरे हृदय में समा गई है। (५) इस रूप को देखते ही उसका जी भरमाने (चकराने) लगा और उसके प्राण बकहुल (एक प्रकार का वृक्ष) के पत्तों की भाँति उड़ गए।

(६) जैसे ही जैसे उस सुहागिनी के रूप और शृंगार को देखकर [हृदय में] वह अघाता (परितुष्ट होता था) (७) वैसे ही वैसे उसके नैन [उस बाला के अंगों को] नहीं छोड़ रहे थे क्योंकि वे उसके रूप पर लुब्ध हो रहे थे।

टिप्पणी—(४) बखान < वक्खाण < व्याख्यानम् = विवरण देना वर्णन करना।

[७७]

उतपति मुमहु[1] मांग कै[2] भाऊ[3] । सरग पंथ अति[4] बिकट पहाऊ ।
दरसत मांग चिहुर कर[1] भावा । जिन भुलाइ तिन मारग पावा ।
अति सोभित सिर मांग सोहाई । सरग धार जनु रगत[1] बहाई[2] ।
मांग के पथ सरू[1] को पारा । परग परग धरु फनिहारा ।

जत गौन तेस मारे मारी[1]। परगट रगत दसु रतनारी[2]।
माँग सरूप सोहागिनि[1] जानु[2] खरग क धार ।
देखि बरनि को पार फिरतहिं[1] होइ दुइ फार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बहीं। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए सुभाऊ। ४ ए जो।
(२) १ ए चिकुर बन।
(३) १ ए जे रकत। २ ए कुमारी।
(४) १ ए माँग पन्थ चलन।
(५) १ ए मारे धाइ। २ ए परगट गमत मन दीसै जाई।
(६) १ रा ससागिनि (?)। २ ए जानहु।
(७) १ ए देखत।

अर्थ—(१) उत्पत्ति (आदि) में उसके माँग के भाव सुनो वह मानो स्वर्ग (आकाश) पथ का अति विकट चढ़ाव है। (२) माँग और चिकुर (बालों) का भाव देखकर एक क्षण वह भूल पड़ता और एक क्षण मार्ग पाता (चेत में आता) था। (३) उसके सिर में सुंदर माँग अत्यंत शोभित थी वह मानो खड्ग की धार थी जो रक्त से सुवासित (सिक्त) हो। (४) उस माँग के मार्ग पर कौन चल सकता था, जिसके एक एक पग पर [अलकों के रूप में] फाँसी देने वाले बैठे हुए थे। (५) जितने होते [उस मार्ग पर] गए थे उतने ही [उन फाँसी देने वालों के द्वारा] संपूर्ण रूप से मारे गए थे इसलिए उस रतनारी (लाल) माँग में प्रकट ही रक्त दिखाई पड़ता था।

(६) उस सुहागिनी की माँग का रूप (सौन्दर्य) ऐसा था मानो वह खड्ग की धार हो। (७) उसको देखकर कौन उसका वर्णन कर सकता, क्योंकि मुख फेरते ही वह [उस खड्ग की धार से] दो फाँक हो जाता।

टिप्पणी—(२) चिहुर < चिकुर = केश।

[७८]

सूर किरिन सिर माँग[1] सोहाई[2]। सम[3] जग जीति गगन पर आई[4]।
माँग न आहि[1] गगन क हाटा[2]। रवि ससि उए[3] अस्त न बाटा[4]।
कै जनु अमिअ[1] नदी बहि आई। बन्ध पार नहिं अमिअ[2] सिराई।
माँग सरूप दरसि जिउ हरा[1]। दीप पतंग जोति जनु परा[2]।
सिर पर ठाउ[1] दीन्ह बिधि नाहीं। बहि पटतर मैं[2] रखौं ताहीं।
स्याम रैनि जग[1] दामिनि[2] स्याम जलद[3] महँ दीस।
मरम हनै[1] जनु छुरी आइ परी त्रिय सीस ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सब किरनि जस मोर। २ ए सोहाई। ३ ए सब। ४ ए आई।
(२) १ ए आहि। २ ए सुरपटा। ३ ए उआ। ४ ए बटा न पाटा।
(३) १ ए अमिय। २ ए अभी। ३ ए सिराई।
(४) १ ए हरई। २ ए दीपक बदन आहि सो बरई।

(५) १ ए माथ। २ रा में यह शब्द नहीं है।
(६) १ ए महँ। २ ए में यहाँ 'चमकै' और है। ३ रा जसवि ए दक।
(७) १ ए हुते।

अर्थ—(१) "यह सिर की माँग [मानो] सुहावनी सूर्य की किरण है, जो जगत् को जीत कर आकाश पर आई हुई है। (२) यह माँग नहीं है, आकाश की हाट है, और सूर्य और चंद्र के उदय की बाट है। (३) अथवा यह बहकर आई हुई अमृत-नदी है इसीलिए उसके मुख-चंद्र का अमृत समाप्त नहीं होता है। (४) इस माँग के सौन्दर्य को देखकर [मेरा] जी [इस प्रकार] हर गया है मानो पतिंगा दीपक की ज्योति (लौ) पर आ पड़ा हो। (५) जिसको विधाता ने सिर पर स्थान दिया हो किसे लाकर उसकी तुलना में लगाऊँ?

(६) यह माँग ऐसी है मानो काली रात में काले बादलों में दामिनी दिखाई पड़ी हो (७) और वह स्वर्ग (आकाश) से छिटककर [इस] स्त्री के सिर पर आ पड़ी हो।"

टिप्पणी—(२) हाट < हट्ट = आपण बाजार। बाट < वट्ट < वर्त्मन् = मार्ग। (३) अमिम < अमृत। (६) रैनि < रयणी < रजनी।

[७९]

तहि[१] पर कच बिसधर बिस धार। लोटहिं[२] सब सहज लहकारे[३]।
लगबगाहि परतिख[१] मनियार। गरल भरे[२] बिसधर हतियार[३]।
निसि अजोर जैस[१] बदन दिखाए[२]। तस अँध्यार दिन कच मोंवराए[३]।
कच न होंहि बिरही[१] दुख सारा। भएउ[२] जाह मधु सीस सिगारा।
भूली दसौ दसा[१] निजु लाही। चिहुर[२] चिन्हारि भई[२] जग[३] जाही[४]।
छिटके चिहुर[१] सोहागिनि[२] जगत भएउ[३] अंधकार।
जनु बिरही जन[१] जिय[२] बध[३] कारन मनमथ रोपा जाल॥

पाठान्तर—इसके पूर्व का छंद ४१-७८ तक अंश मा में खंडित है।
(१) १ ए ता। २ ए लोटें। ३ मा लहुरारे (< लहकारे) ए बिकरारे।
(२) १ ए परतख। २ ए भरे। ३ ए हत्यारे।
(३) १ मा औ ए में यह शब्द नहीं है। २ रा बदन दिखाए, ए दिन देखराये। ३ ए निसि अँध्यार मुख मोंवराये।
(४) १ ए कवन हा बिरहे (< बिरही फारसी लिपि)। २ ए में रा यह शब्द नहीं है।
(५) १ ए दसौ दिसा। २ ए चिहुर। ३ ए भी। ४ ए माही।
(६) १ ए छिटका चीर। २ रा समागिनि (?)। ३ ए भा।
(७) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए बिधि।

अर्थ—(१) "उस पर भी इसके कच (सिर के बाल) विषपूरित विषधर (सर्प) हैं जो शय्या पर सहज ही [डसने के लिए] लहकारे (प्रेरित किए हुए) लोट रहे हैं। (२) ये मणिधर प्रत्यक्ष ही चकपका (चौंकते ही) रहे हैं ये हत्यारे विषधर जो गरल से पूरित हैं। (३) रात्रि में जैसे

[इस बाला के] मुख दिखाने से उजाला होता है वैसे ही कचों को मुक्त करने (खोलने) पर दिन में ही अंधकार [होता है]। (४) ये कच नहीं हैं यह विरहियों का संपूर्ण दुःख है जो कि मधुमालती के सिर पर आकर शृंगार हो गया है। (५) उसे अवश्य ही अपनी दशा बताएँ भूल जाती हैं जिसे इस संसार में [इस बाला के] चिहुरों का परिचय प्राप्त होता है।

(६) इस सुहागिन के चिहुर जो छिटके हुए हैं उससे जगत् में अंधकार हो रहा है, (७) [वे ऐसे लगते हैं] मानो विरहियों के प्राण-वध के लिए मन्मथ (कामदेव) ने जाल रोपा (लगा रखा) हो।'

टिप्पणी—(५) (६) चिहुर < चिकुर = केश।

[८०]

जग सुबास पूरित भै[1] आही[2] । किछु[3] जानसि कहुं[4] कारन काहीं[5] ।
कै जनु मिरिग मद नाभि[1] उघारी । कै मधु मालति चिहुर छिटकारी[2] ।
यह जो जगत मलयानिल बाऊ[1] । अति सुबास[2] जानसि केहि[3] भाऊ ।
दिन एक कामिनि चिहुर[1] छिटकाए । ठाढ़ मिरितु[2] निकट सहु[3] आए ।
तहि (तेही) दिन हुत[1] बहुत उदासा[2] । पै अजहूं नहिं[3] पूजी आसा[4] ।
चिहुर पास[1] मधु मालति जब सों[2] बहुत[3] बतास ।
तेहि दिन सों निसि बासर सतत बहा[1] उदास ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पूरब भा औरे। २ रा चाहेही २ ए भै चाही। ३ ए कछु। ४ ए तौ। ५ ए काही।
(२) १ ए नाभ (< नाभि फारसी लिपि)। २ ए चिकुर गिरारी।
(३) १ ए राऊ। २ भा ए सुगंध। ३ ए जानहि केहि।
(४) १ ए चिकुर। २ ए ठाढ़ भए तब। ३ ए जो रा होन।
(५) १ ए सींगो। २ भा भंवर उदासा ए भयो उदासा। ३ भा नहि (< नहिं नागरी लिपि ?) ए न। ४ भा गई सुबासा ए गौ सुबासा।
(६) १ ए बसा। २ भा से। ३ रा बही।
(७) १ ए सन्तति भई।

अर्थ—"(१) जिस सुवास से जग पूरित हो रहा है कुछ जानते हो कि किस कारण से ऐसा [हुआ] है ? (२) या तो मानो मृगमद (कस्तूरी) की नाभि उघाड़ (खोल) दी गई है या मधुमालती के चिहुर (सिर के बाल) छिटका दिए गए हैं। (३) यह जो जगत् में मलयानिल की वायु है जानते हो किस भाव (कारण) से वह अति सुवासित है ? (४) एक दिन कामिनी ने अपने चिहुर छिटकाए, और बहुतेरे [उसे देखकर] मृत्यु के निकट आ गए, (५) उसी दिन से वह (वायु) अत्यन्त उदास हो गया फिर भी अभी तक उसकी आशा नहीं पूरी हुई।

(६) मधुमालती के चिहुरों के पास से जिस दिन बतास (वायु) बहा (७) उसी दिन से वह बतास (वायु) रात-दिन उदास बहता रहा है।"

टिप्पणी—(२) (४) चिहुर < चिकुर = केश। (३) बाउ = वायु।

[८१]

निहकलंक[1] ससि दुइजि लिलारा । नौ खंड तीनि भुवन उजियारा[2] ।
बदन पसेउ[1] बुंद चहु पासा । कचपचिय[2] जनु[3] चाँद गरासा ।
म्रिगमद[1] तिलक ताहि पर धरा । जानहु चाँद राहु बस परा ।
गएउ मयंक[1] सरग जेहि[2] लाजा । सो लिलाट कामिनि पहँ[3] छाजा ।
सहस कला दरसिय[1] उजियारा । जग ऊपर जगमगत[2] लिलारा ।
तर मयंक ऊपर बिसु[1] पाटी बनी अहै[2] कसि रीति ।
जानहु ससि औ निसि सउ[2] भई सुरति[3] बिपरीति ॥

पाठान्तर—रा में उपर्युक्त अर्द्धाली १ तथा २ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ मा निरकलंक ए निरमली। २ ए उँजियारा।
(२) १ रा बदन पसेउ ए बदन पसीज। २ रा कचपचिया ए कचपचिए। ३ ए जो।
(३) १ रा मृगमधु।
(४) १ ए जी ममक। २ ए जो। ३ रा कहं।
(५) १ ए सहस कला देखा। २ ए जगमगहि, रा जगमगत।
(६) १ ए निसि। २ मा बाहि, ए है।
(७) १ ए जा। २ ए सें रा सा। ३ रा भई भाइ। ४ ए भी सूरति।

अर्थ—"(१) [इसका] ललाट द्वितीया का कलंकहीन शशि है जो नौ खंड और तीन भुवनों में उज्ज्वल (प्रकाशित) है। (२) [इसके] मुख पर जो प्रस्वेद बिंदु चारों ओर [झलक रहे] हैं वे [ऐसे लगते हैं] मानो कृत्तिका [की नक्षत्रमाला] ने चंद्रमा को ग्रस लिया हो। (३) [उस ललाट पर] जो मृगमद (कस्तूरी) का तिलक लगा हुआ है [उससे वह ललाट ऐसा लगता है] मानो चंद्रमा राहु के वश में पड़ गया हो। (४) जिसकी लाज से (जिससे लज्जित हो) मृगांक (चंद्रमा) स्वर्ग (आकाश) में चला गया वह (ऐसा) ललाट [इस] कामिनी के पास शोभित है। (५) वह सहस्र कलाओं के साथ उज्ज्वल (प्रकाशित) दिखाई पड़ता है और वह ललाट जगत् के ऊपर जगमगा रहा है।

(६) नीचे मृगांक (ललाट) है, और [उसके] ऊपर [चिकुर] पट्टिका है [दोनों की इस प्रकार की नीचे-ऊपर की स्थिति से] किस प्रकार की रीति (भंगिमा) बनी हुई है कि (७) मानो शशि और निशा से (में) परस्पर विपरीत रति हुई हो।"

टिप्पणी—(१) लिलार < लिलाड < ललाट। (२) पसेउ < प्रस्वेद। कचपचिया < कृत्ति प्रथित = कृत्तिका की नक्षत्र-माला। (४) (६) मयंक < मृगांक = चंद्रमा। (६) पाटी < पट्टिका।

[८२]

काम कमान रहसि कर लीन्हें[1] । मरमउ[2] तोरि टूक दुइ कीन्हें[3] ।
बिनु रस सउँ[1] धरि मसि अढारे[2] । सोइ[3] बनाइ मधु भौंह सँवारे[4] ।
भौंह नेवासि[1] सोह कस धारा[2] । मदन[3] धनुष[4] जनु धरा उतारी[5] ।

जो धनि धनु[1] भौंह बरनारी । इंद्र धनुष दइ[2] पनच अडारी ।
तहि धनु मदन[1] तिरभुवन जीता[2] । बहुरि[3] उतारि नारि कह[4] दीता[5] ।
जीति त्रिलोक[1] नेवासि[2] भौ[3] रहा जगत जुझार ।
दगत जाहि[1] हिय मर निकर तहि[3] को जीतै पार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बै लीन्हा। २ ए छी रा सौं। ३ ए बीन्हा।
(२) १ ए पुनि धरती सौं। २ ए सँवारी। ३ ए ते। ४ ए सँवारी।
(३) १ ए सँवारि। २ ए नारी। ३ रा इंद्र (तुल परवर्ती अर्द्धाली)।
४ ए धनुग। ५ भा ६ पनच अडारी (तुल तीसरी अर्द्धाली)।
(४) १ ए धनु बड़ी। २ ए धनुष दे।
(५) १ रा तेही धनुष ए ते धनुष मदन। २ भा जीते। ३ ए बरनी।
४ ए दे। ५ भा दीते।
(६) १ भा जीति तिभार रा औ गुह लोक। २ भा नेवासी। ३ भा भौ
नहीं।
(७) १ रा जाहि ए जा। २ रा ए हिये। ३ भा निर रा गाहि।

अर्थ—"(१) काम ने हठ पूर्वक धनुष हाथ में लिया और बल से उसे तोड़ कर दो टुकड़े कर दिया (२) [फिर] बिना [जोड़ने वाले] रस के दोनों टुकड़ों को पकड़ कर मिला दिया और [इस प्रकार] उस धनुष को [पुनः] बना कर मधुमालती की भौंहें [के रूप में] सँवारा। (३) बालिका [के शरीर] में निवास करने वाली भौंहें जिस प्रकार शोभा देती हैं मानो मदन ने अपना धनुष उतार कर रख दिया हो। (४) यदि इस श्रेष्ठ नारी के धनुषों पर भौंहें चढ़ जावें तो इंद्र अपने धनुष की प्रत्यंचा डाल दे। (५) उसी धनुष से मदन ने त्रिभुवन को जीता, और फिर उसे उतार कर इस नारी को दिया।

(६) वह धनुष त्रिलोक को जीत कर [इस बाला के शरीर का] निवासी हुआ, क्योंकि जगत् में [उसके सामने] युद्ध करने वाला कोई नहीं रहा। (७) जिसको देखने मात्र से हृदय से होता हुआ शर बाहर निकल जाए उसको कौन जीत सकता है?"

टिप्पणी—(१) स्मर < स्मृ = स्मर। (३) (६) नवासि < निवासिन् = निवास करने वाला। (४) धनु < धनुष < धनुः = कमान। (४) पनच < प्रत्यञ्चा। (७) निकर < निष्किर < नि + निर् = बाहर निकलना। पार < पारय् = सकना करने में समर्थ होना।

[८३]

गते स्याम गत औ[1] राम । स्यागत नि[1] निरखि रहि[3] जाम ।
धवल बिगास ताम अनि[1] धारे । गजन परन पग गउ[1] हारे ।
गारधि जनु अगनित[1] जिउ हर[2] । नोउँ धनुष[3] गोम गर गर[4] ।
गनमृग मीन मति जनु वाना । ए जनु दुर गजन उनि गहा ।
दुवौ नन प्रिय पर[1] पियासा[2] । स्याम उर मते क गाथा ।
अमिय[1] तय मा धनी धनसा[1] धर्नि न ना ।
जनु गारग गारग गर[1] निभगम पोहे[3] भा ॥

पाठान्तर—मा तथा ए में उपर्युक्त अर्धालो ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए सूत सत्र स्याम ओ। २ मा जागत हुते ए जागत होते (< हुते फारसी लिपि)। ३ मा ममरनहि (< निफरि हियें फारसी लिपि) ए हनि कै।

(२) १ ए ओ। २ ए ते, रा अनु।

(३) १ ए एमंत (< अमनित फारसी लिपि)। २ ए जीव टर्रई। ३ ए पौढ़ा धनुष। ४ ए रहई।

(५) १ मा दुवौ नैन अनु जिय के ए दुनौ नैन जीव कर। २ ए ब्याधा। ३ ए मरन।

(६) १ रा अचरिजु ए अचरज। २ ए जो बरना। ३ ए बरनति।

(७) १ मा सारंग सारग के तर, ए सारंग जो सारग तर। २ मा निरमै। ३ ए पौढ़ा।

अर्थ—"(१) [उसके नेत्र-बाण] जो श्याम श्वेत और रक्त वर्ण के [सूत्रों से] सूचित हैं हृदय में लगते ही [दूसरी ओर] बाहर निकल जाते हैं। (२) [अथवा] वे चंचल विशाल, तीखे और अति वक्र खंजन हैं जो पलक-पंखों से ढँके हुए हैं। (३) [अथवा] वे मानो अगणित जीव-हरण करने वाले पारधी (वधिक) हैं, जो अपने सिर के नीचे धनुष (भौंह) को रख कर लेटे हुए हैं। (४) [वे ऐसे लगते हैं] मानो सामने ही [वे] मीन केलि कर रहे हों, अथवा मानो वो (खंजन) उड़कर लड़ रहे हों। (५) दोनों ही नेत्र प्राणों के व्याध (वधिक) हैं [और ऐसे व्याध हैं कि] जिनके देखने से मरने की साध (आकांक्षा) उठती है।

(६) एक आश्चर्य [की बात] क्या कहूँ वर्णन करते हुए उसका वर्णन नहीं किया जाता है; (७) [ऐसा लगता है कि] मानो सार्ङ्ग (मृग-नेत्र) शार्ङ्ग (धनुष-भौंह) के नीचे आकर बेडर लेटे हों।"

टिप्पणी—(१) सूता < सूचित। सेत < श्वेत। रात < रक्त = लाल। निफर < निष्फिड़ < निः + स्फिट् = बाहर निकल जाना। (२) बाँक < बक < वक्र। पारधी < पारद्धि < पापर्द्धिक = शिकारी। (५) साध < सद्धा < श्रद्धा = स्पृहा। (६) अचिजु < आश्चर्य। (७) सारंग < सार्ङ्ग = सींग वाला प्राणी मृग। सारग < शार्ङ्ग = सींगों का बना हुआ धनुष।

[८४]

बरुनि अनावरि[1] विसहु बुभाई। भटकि[2] परत उर जाहिं[3] समाई।
बरुनि याम सनमुख भै[1] जाही। रोवें रोवें तन झाझर[2] ताही।
सिस्टि साथ ग हियें[1] सयानी। रुहिर करज कीन्ह भरि[2] पानी।
जबहीं[1] बरुनि बरुनि सौं[2] भरवे[3]। जानहु छुरी छुरी सौं टरवे[4]।
बरुनि बान को जीतें[1] पारा। एक मूठि सौं[2] कांड[3] पसारा।
बरुनि बान क मारत[1] मैं न मरेउँ जिउ[2] लागि[3]।
कहि न मिरितु जिय मावें[1] बरुनि सोहागिनि वागि॥

पाठान्तर—(१) १ रा मानबरि। ए बान। २ ए भटक। ३ ए बाहि।

(२) १ रा मा मा होइ ए भै (< भैं फारसी लिपि)। २ ए रोव रोव तन झाझर।

(३) १ ए दिस्टि पंथ गी हिये। २ ए रुधिर करेज औटि भी।
(४) १ मा ए रे। २ रा बरुनी। ३ मा ए मेरावै। ४ मा सार्ह ए मरार्ह।
(५) १ ए जीति को। २ मा सै। ३ ए सांट।
(६) १ मा ए मारे। २ मा सकी (<सका नागरी लिपि) जग ए सकेउ जग। ३ ए पेखि।
(७) १ रा भावे मिरितु काहु महि ए केहि न मितु भइ जग।

अर्थ—"(१) [इसकी] बरौनी विष में बुझाई हुई बाणावली है जो मदक के पड़ते ही हृदय में समा (व्याप्त हो) जाती है। (२) बरौनी के ये बाण जिसके सम्मुख हुए, उसके शरीर का रोम-रोम जर्जरित हो गया। (३) यह बरौनी इसकी दृष्टि के साथ जाकर [मेरे] हृदय में समा गई और [मेरे] कलेजे के रुधिर को लेकर इसने खाली कर दिया। (४) यह अपनी [एक] बरौनी को जब [दूसरी] बरौनी से मिलाती है तो मानो छुरी को छुरी से टेती (तेज करती) है। (५) बरौनी के बाणों को कौन जीत सकता है [जब कि] एक-एक मूठ में [यह बरौनी] सौ-सौ सांट (बाण) फेंकती है।

(६) बरौनी के बाणों के मारते ही मैं अपने प्राणों को देख नहीं सका (उनकी रक्षा नहीं कर सका) (७) और, इस सुहागिनी की बरौनी को देखकर किसको जी में मृत्यु अच्छी नहीं लगेगी ?"

टिप्पणी—(१) बनावरि<बाणावली। समाय<सम्+आप्=व्याप्त होना। (२) जाजर<जर्जर। (३) रुहिर<रुधिर। (४) छुरी<छुरिका।

[८५]

मांग[1] सरूप न[2] बरन पारौं[3] । तीनिउँ[4] भुवन हेरि कै[5] हारौं[6] ।
कीर ठोर औ[1] सरग कै[2] पारा । तिन्ह पुनि न बरनि न पारा ।
उन्यागिरि औ[1] करों तो[2] माहीं । ससि सूरुज[3] दुइ बार[4] कराहीं ।
लिलाट न गाउअ[1] सपने पारा । निसि दिन जिये मो बास[2] अधारा ।
कहि दे[1] जार पटनरों[2] भामा । ससि सूरज[3] अहि करहिं बनामा[4] ।
मांग[1] सरूप सोहागिनि केहि सें रावौं भाउ ।
जा कहँ ससि सूरज निसि जागर आगर मांगहिं दाउ[1] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मांग। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा ए पारेउँ। ४ ए तीनि। ५ ए मैं। ६ मा ए हारेउँ।
(२) १ ए जो। २ ए वि रा में यह शब्द नहीं है।
(३) १ ए जे। २ मा त। ३ ए ससि रे सुर। ४ मा दाउ बार रा दुइ उरै।
(४) १ ए कोउ। २ ए में यह शब्द नहीं है।
(५) १ ए मैं। २ ए जोरी पटतर। ३ ए ससि रे सुर। ४ ए, दुइ करै बनावा रा दुइ उरै न पावा।
(६) १ ए मांग।

(७) १ रा मा (<आ ढ़िली लिपि?) वह ससि और सूरज निसि दिन सार्राहि बाउ ए जाके ससि जे सूर निसि बोसरि सारैं बाउ।

अर्थ—"(१) मैं इसकी नाक के स्वरूप का वर्णन नहीं कर सक रहा हूँ [उसकी तुलना के लिए] तीनों भुवनों—आकाश पाताल, मर्त्य लोक—में खोज करके हार रहा हूँ। (२) सुए के ठोर, खड्ग की धार तथा तिल के फूल [से तुलना कर मैं उस] का कथन नहीं कर सकता हूँ। (३) यदि इसे उदयगिरि कहूँ तो वह नहीं है क्योंकि शशि और सूर्य दोनों (चंद्र और सूर्य नाम की दो नाड़ियाँ) इसके लिए बाद (झगड़ा) करते हैं। (४) इसके निकट कोई संचरण करने (जाने) नहीं पाता है और रात-दिन वह वासना (सुगंध) के आधार पर जीती है। (५) इस नासिका के लिए किसको जोड़ (तुलना) में लेकर सादृश्य स्थापित करूँ जिसकी शशि तथा सूर्य (चंद्र और सूर्य नाड़ियाँ) बताम (वायु) करते हैं?

(६) इस सुहागिनी के नाक के स्वरूप [कथन] के लिए किसका भाव (सौन्दर्य) लाऊँ (७) जिसको शशि और सूर्य (चंद्र और सूर्य नाड़ियाँ) रात-दिन बारी-बारी से वायु करते (सकते) हैं?"

टिप्पणी—(३) (५) (७) ससि सूरज<शशि-सूर्य=चंद्र और सूर्य नाम की दो नाड़ियाँ जिन्हें इड़ा और पिंगला भी कहा जाता है। वाम नासापुट का श्वास प्रवाह इड़ा है और दक्षिण नासापुट का पिंगला से माना गया है इड़ा शीतल स्वभाव की और इसलिए चंद्र नाड़ी मानी गई है, पिंगला उष्ण-स्वभाव की और इसलिए सूर्य नाड़ी मानी गई है। (७) बासर<अवसर =बला बारी।

[८६]

अति सुरंग[1] रस भर अमोला । जुग[2] सोभित मुख मंदि[3] कपोला ।
मतिहीनो[1] किछु[2] उकति[3] न आई । मधु[4] कपोल बरनौं कहि साई ।
महि जानौं दहुँ कइ तप सारा[1] । जो बरसिहि यह निधि[2] सर्वसारा[3] ।
अस कपोल बिधि सिर[1] सोहाए । जे न जाहिं[2] किछु उपमा छाए ।
मानुस बहु[1] बपुरा कहि माहा । देवता देखि कपोल नवाहीं ।
सुर नर मुनि[1] गन गंधप काहुँ[2] न रहउ गियान[3] ।
देखि कपोल नारि के निहच[1] टरै महस धियान[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सकल। २ ए जो। ३ ए कठ।
(२) १ रा मनमों पुनि ए मैं मतिहीन। २ ए में यह पद नहीं है। ३ ए बरनि। ४ ए मुख।
(३) १ ए बहु तप पसारा। २ रा जो बेरसहि बहु विधि ए मा बेरसहि निधि। ३ ए का भार।
(४) १ ए सिरा। २ ए जोय न जा।
(५) १ ए दहु।
(६) १ रा मैन २ ए काहू। ३ ए ग्यान।
(७) १ मा ए देखि कपोल सोहागिनि। २ मा टरेउ। ३ ए जा महत ध्यान रा महेस का ध्यान।

अर्थ—"(१) अत्यंत सुंदर रंग के रसीले और अमूल्य दो कपोल [इसके] मुख के मध्य शोभित हैं। (२) मेरी मति हीन है और कुछ (कोई) उक्ति स्फुरित नहीं हुई (हो रही) है, इसलिए मधुमालती के कपोल का वर्णन किस [उपमा] की सहायता से करूँ? (३) यह नहीं जानता कि जिसने [ऐसा] तप किया है जो संसार में [कपोलों की] इस निधि का विलास (भोग) करेगा। (४) विधाता के रचे हुए ये कपोल ऐसे शोभित हैं कि जिनकी कुछ (कोई) उपमा नहीं दी जा सकती है। (५) मनुष्य बेचारा भला किस [लेखे] में है? इन कपोलों को देखकर देवता भी तमोभिभूत (मूर्छित) हो जाएँ।

(६) देवता, मुनि और गंधर्व गण—किसी को भी ज्ञान नहीं रहा (७) इस नारी के कपोल देखकर महेश का भी ध्यान अवश्य ही टल जावेगा।"

टिप्पणी—(५) < बपुरा < बप्पुड (दे)=बेचारा। तमं < तम। (६) गंध्रप < गंधर्व।

[८७]

अधर अमिअ रस भर[1] सोहाए। प्रेम धरें हुत[2] रगत[3] सिसाए।
अति सुरंग कावल[1] रस भरे। जानहु मिब मयंकम धर[2]।
पटतर लाइ न जाहिं बखाने[1]। जनु ससि[2] अमी गारि विधि[3] सान[4]।
अधर अमीरस भरे अपोऊ। कुंवर आम मोर डोलहिं[1] जीऊ।
यह मो धरी विधि कब[1] दरसाइहि[2]। जब यह जिउ[3] मोरे घट[4] आइहि।
अमम मगन दुइ[1] अधर[2] सोहागिनि जगत सुधानिधि[3] जान।
अमिय जो अमित अगिनि सेउं देगत जरहिं परान[1]॥

पाठान्तर—(१) १ ए अधरस अमी छीर बास। २ ए पेम प्रीति हुती रा पम पीर दुइ। ३ ए रकत।
(२) १ ए सुगन्ध कोमल। २ मा भरे।
(३) १ ए जा- बखानी (< बखाने फारसी लिपि)। २ ए जानहु। ३ रा रग। ४ ए सानी (< साने फारसी लिपि)।
(४) १ ए भिमरे मन।
(५) १ मा कब मो अधर बिधिलहि (< बिधिलहि नागरी लिपि) ए कब मो धरी विधि। २ ए निर्माइहि। ३ ए कब यह जीव। ४ मा मुर (मोरे) अधरन्ह ए अगर पर।
(६) १ ७ ए मे य दो गरू नहीं है। ३ ए मुग्ध निप जाम रा गुद बिन ध्यान।
(७) १ रा अर्थान्नु यह देगत पे अबिन अधर मजरै पराम ए अधरन अबिन अगिन मम देगत जरै परान।

अर्थ—"(१) इसके अधर अमृत रस से भरे हुए और सुंदर हैं और प्रेम का वरण करने से वे रक्त से सुरंजित (प्यारे) हैं। (२) वे ऐसे लगते हैं मानो मृगांक (चंद्रमा) [को] अति रँगीले कोमल और रस भरे विद्रुमों को धारण कर रहा हो। (३) वे उपमान देकर वर्णित नहीं हो सकते हैं वे ऐसे लगते हैं मानो शशि का अमृत निचोड़ कर विधाता ने इन्हें बनाया हो। (४) वे अधर अमृत रस से भरे और अपीत (अनचखे) हैं।" [इन अधरों को देखकर] कुँवर (मनोहर)

को जान पड़ा कि उसके प्राण [निकलने के लिए] चंचल हो उठे हैं। (५) उसने कहा, "[पता नहीं] विधाता वह घड़ी कब दिखाएगा कि जब ये प्राण पुनः मेरे घट (शरीर) में आवेंगे।

(६) सुहागिनी के ये दोनों अधर अनल (अग्नि) वर्ण के हैं [यद्यपि] जगत् इन्हें सुधा-निधि जानता है, (७) और आश्चर्य यह है कि [जीवनदायक] अमृत अग्नि के साथ (होकर) ऐसा हो गया है कि उसको देखने से ही प्राण जलने लगते हैं।"

टिप्पणी—(१) अमिअ < अमृत। रतन < रत्न। तिसाए < तिसाइय < तृषित। (२) कॉवल < कामल। मयंक < मृगांक = चन्द्रमा। (४) अधीउ < अधीन = अनधिए। (७) अचिजु < आश्चर्य।

[८८]

दसन[1] जोति बरनी नहि[2] जाई । चौंधै[3] दिस्टि[4] दखि चमकाई ।
नेक[1] बिगसाइ (?) नींद महँ[2] हँसी । जानहु[3] सरग सउ[4] दामिनि[5] खसी[6] ।
बिहँसत[1] अधर दसन चमकाने । त्रिभुवन मुनि गन चौंधि भुलाने ।
मंगर सूक[1] गुरु सन्हि चारी[2] । चौंक दसन भय राजकुमारी[3] ।
नहि जानौं कहु कहँ[1] दुरि जाई । रहे[2] आइ ससि माहि लुकाई[3] ।
जो काइ कह कि[1] बिधि पसारा[2] तहि कर[3] सुनहु[4] सुभाउ ।
बिधि[1] गुपुत जग माहीं काहु[2] न दसा[3] काउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए निम्मल। २ ए बरनि न। ३ ए चौंधी (< चौंधे फारसी लिपि)। ४ मा द्रिष्टि।
(२) १ रा एक मा ठक (< नेक फारसी लिपि) ए नाक (< नेक फारसी लिपि)। २ रा मा बिगसाइ नींद महं ए बिगसाइ नींद मों। ३ ए जानहुँ। ४ रा तें ए सो। ५ रा कामिनी। ६ मा लसी।
(३) १ ए बिहँसत।
(४) १ मा ए सुक। २ रा मुह कै उजियारी ए गुर अस्थानि चारी। ३ ए चौंका दसन भई (< भय फारसी लिपि) कुमारी रा चौंक दसन गै भए कुमारी।
(५) १ ए कहु केहि। २ ए रहा। ३ मा छपाई।
(६) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए बुद्धि बिसरा रा बिधि बसा मा बिरह पसारा।
(७) रा ए बिरह। २ ए काहु। ३ ए में यहाँ 'जो' और है।

अर्थ—"(१) [इसके] दाँतों की ज्योति का वर्णन करते नहीं बनता है इनकी चमक देखकर दृष्टि चकाचौंध हो उठती है। (२) नींद में जो [कभी] तनिक हँसी बिकसित (?) हो जाती है तो ऐसा लगता है मानो स्वर्ग (आकाश) से दामिनी (बिजली) गिरी हो। (३) इसके अधरों के मस्त होने [मुस्काने] को इसके दाँत चमक उठे, तो तीनों भवनों के मुनि गण चकाचौंध होकर भूल (भ्रम) में पड़ गए। (४) मंगल, शुक्र, बृहस्पति तथा शनि—ये चार ग्रह मानो राजकुमारी के दाँतों [की चमक] के भय से (५) नहीं जानता कि कहाँ छिप कर के आकर चंद्रमा में छिप रहे।

(६) यदि कोई कहे कि यह विधि का प्रकार है तो उसका स्वभाव सुनो (७) विधि अदृष्ट में गुप्त है, उसको किसी ने कभी नहीं देखा है।"

टिप्पणी—(३) बिहर < बिहट < वि + घट् = अलग होना। (६) पकार < प्रकार। (७) काउ < कदापि।

[८९]

तिल जो[1] परा[2] मुख ऊपर[3] आई । बरनि न जा[4] किछु[5] उपमा लाई ।
जाइ कुँवर चखु रूप लोभाने[1] । हिलग बहुरि न आवहिं[2] आने[3] ।
तिल न होइ रे[1] नैन क[2] छाया । जासेउँ[3] सोभ रूप मुख पाया ।
अति निरमल मुख मुकुर सरीखा[1] । चखु छाया तामहँ[2] तिल दीखा[3] ।
स्याम कौंवर[1] लोचन पुतरी[2] । मुख निरमल पर तिल होइ[3] परी ।
अति सरूप मुख निरमल मुकुर समान[1] प्रवान[2] ।
तामहँ चखु क छाया दीसै तिल अनुमान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुइ तिल। २ भा परेउ। ३ ए पर। ४ ए जा। ५ ए के।
(२) १ रा भुलाये। २ भा न आए, ए आइ न। ३ रा आये।
(३) १ भा होइ यह ए होत। २ ए नैनि कै। ३ भा जाके रा जासौं।
(४) १ ए मूर सरीखा। २ ए मा। ३ ए देखा।
(५) १ रा कायल ए कुँवर। २ भा ए पुतरी। ३ रा छाया होहि ए पर तिल भै।
(६) १ ए मुकुता सम। २ भा परान।
(७) १ ए छाया चखु की छाया दीसै तिल अनुमान रा तामहँ छाया दीसहि मुख पर तिल अनुमान।

अर्थ—(१) इसके मुख पर जो तिल आ पड़ा है, [कुमार द्वारा] उपमा लगा (दे) कर उसका वर्णन नहीं किया जा सका। (२) ऐसा लगता है कि कुमार (मनोहर) के चक्षु जाकर [उसके मुख पर] लुब्ध हो रहे और उलझे ऐसे हिलग (चिपक) गए कि [वापस] आने पर लौटकर आते नहीं थे। (३) [वह कहने लगा] "यह तिल नहीं है [मेरे] नैनों की छाया है जिससे इसके रूप और मुख ने शोभा प्राप्त की है। (४) इसका मुख अति निर्मल मुकुर के सदृश है इसी कारण उसमें पड़ी हुई [मेरी] आँखों की प्रतिच्छाया तिल होकर दिखाई पड़ रही है। (५) मेरे कोमल लोचनों की काली पुतली निर्मल [मुकुर सदृश] मुख पर तिल होकर पड़ (अटक) रही है।

(६) इसका निर्मल मुख अत्यंत रूपवान है और वह स्वच्छ मुकुर सदृश है (७) उसी में [मेरे] चक्षुओं की पड़ी हुई छाया तिल के आकार की दिखाई पड़ रही है।

टिप्पणी—(२) चख < चक्खु < चक्षु। (५) लोयन < लोचन। (६) प्रवान < प्रमाण।

[९०]

सुधा[1] समान जीभ मुख बाला[2] । औ बोलति अति बचन रसाला ।
सुनत बचन वहि अम्रित[1] बानी । मिर्तक मुख आव भरि पानी ।
सुने बचन जानु रतन अमोल[1] । ते[2] सब भए[3] जगत मिठ बोले[4] ।
कौन सा तपा[1] जनमि जग[2] माइहि । जो रसना पर रसना लाइहि ।
अति रसारि[1] रसना मुख रसी । दुइ[2] अरि[3] बीच जाइ[4] रस बसी ।
अति रसारि[1] रसना मुख कामिनि अमी सुरस[2] परमान ।
बदन[1] चंद महं रसना[2] अमी सुरा क[3] जान ॥

पाठान्तर—(१) १ रा सुध। २ ए बाला।
(२) १ मा ए अम्रित रस।
(३) १ मा सुने जीभ जनु बचन अमोल ए सुनहु जीभ मुख बचन अमोला।
२ मा. सो ए सौ। ३ ए सब सौ। ४ ए बोला।
(४) १ मा तप जो। २ ए जग जम्मिहि।
(५) १ ए रसाल। २ मा दुइ। ३ ए अर (‹अरि फारसी लिपि)।
४ मा ए जाइ।
(६) १ रा उभट लाला ए अति रसाल। २ ए मूर्ख।
(७) १ रा चंदन। २ रा चंद मुख रसना मा चंद महं अंकित ए चाद तहं अंकित। ३ मा अमी मिराई ए अमी सराहि जे।

अर्थ—"(१) [इस] बाला के मुख में सुधा के समान जिह्वा है और यह अति रसीले वचन बोलती है। (२) उसके (इसके) अमृतवर्षी वचन सुन कर मृतक के मुख में भी पानी भर आवेगा। (३) मानो जिन्होंने उसके अमूल्य वचन-रत्न सुने वे ही सब संसार में मिष्टभाषी हुए। (४) ऐसा कौन-सा तपस्वी इस जगत् में जन्म लेकर आवेगा जो [इस] रसना पर [अपनी] रसना लगाएगा। (५) [इस के] मुख में जो अत्यंत रसीली रसना बोलती है, वह ऐसी लगती है मानो दो शत्रुओं के बीच में जाकर वह रस (प्रेम) से बस गई है।

(६) कामिनी के मुख में अत्यंत रसीली रसना है जो प्रमाण रूप से अमृत के सुरस वाली है। (७) [उसके] चंद्र-मुख में रसना ऐसी लगती है मानो अमृत की सुरा ही।"

टिप्पणी—(२) बानी ‹ वर्णिन् = वर्णवाला। (५) रस ‹ रस् = बोलना आवाज करना।

[९१]

सुभर[1] सीप दुइ स्रवन[2] सोहाए । सरग नखत जनु बीरि[3] जराए ।
तरिवन हीर[1] रतन नग जर । अग्नि[2] मुकु दुइ[3] गुटिका धरे[4] ।
दुहु दिसि दुवौ चक्र[1] अनियारे । ससि सम आनु[2] उए दुइ[*3] तारे ।
पग बारि अति भागि बिधाता । स्रवन[1] लागि वहि[3] कह[4] जो बाता ।
बामा बन्न पं ग्गधारी[1] । मानुकि राहु कीन दुइ फारी[2] ।

मानन्हि[1] चक्र नरायन[2] लहे दुहुँ[3] दिसि जोति ।
नातर[1] राहु गरासत जौं न चक्र भौ[2] होत[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मल्लिक ए सुधर। २ ए रा सवन। ३ ए पा बारि।
(२) १ ए हीरा। २ रा आदि। ३ ए ओ। ४ ए सुटिका (<सुटिका फारसी लिपि) परे।
(३) १ ए दुइ दिस दुइ चमकै। २ मा ए सम भाइ। ३ ए भौ।
(४) १ मा ए कानें असि (काने अस—ए)। २ रा ए लखन। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ मा कहै ए कहब।
(५) १ ए चाद रखवारा। २ मा मानिक राहु कीत दुइ भारी ए मौग राहु केतु (<कीत फारसी लिपि) दुइ फारा रा मानिन राहु गही दुइ धारी।
(६) १ रा मानसि। २ रा रासेन(?)। ३ मा दीन्ह औ दहु ए दीपै दइ।
(७) १ ए नातरि, रा नहिं तौ। २ मा ए भै। ३ ए होति।

अर्थ—"(१) इसके [दोनों] सुहावने श्रवण (कान) दो शुद्ध (निर्मल) सीप [जैसे] हैं जिनमें हीरियों के रूप में मानों स्वर्ग (आकाश) के नक्षत्र जड़े हुए हैं। (२) इसके तरिवन हीरा रत्न और नग-जटित हैं और आदित्य तथा शुक्र के रूप में यह दो खुँटिले धारण करती है। (३) [कानों में] दोनों ओर जो दो अनियारे (बाँके) चक्र हैं वे मानो [इसके] मुख-शशि के साथ दो तारे उदित हुए हैं। (४) हे विधाता इस जगत् में किसका [ऐसा] अत्यन्त भाग्य होगा जो इसके श्रवणों से लगकर बातें कहेगा? (५) इस बाला के मुखचंद्र की सुरक्षा के लिए, [ऐसा प्रतीत होता है] मानों [कानों के रूप में] राहु को दो फाँक कर दिया गया है।

(६) [इसके] कानों के चक्र दोनों दिशाओं में नारायण [के चक्रों] की ज्योति प्राप्त कर रहे हैं (७) नहीं तो [इसके मुखचंद्र को] राहु ग्रस लेता यदि इन चक्रों का उसे भय न होता।"

टिप्पणी—(१) सुधर<सुधम<शुद्ध=निर्मल। सवन<श्रवण=कान। हीरि<हीरक (दे)=तारक कर्णभूषण-विशेष। (२) अदित<आदित्य=सूर्य।

[९२]

गिय[1] उपमा[2] बरनौं कहि लाई । सद[3] मिगचरम भार फिराई[4] ।
कनक रंग[1] रहु माहि सिंगारा । कैइ[2] पयाग[3] दहु[4] करवत सारा ।
कहि लगि[1] बिधि असि गीव[2] सिरजई[3] । धनि सो कंठ जोहि लगि बरनई[4] ।
धनि[1] अग[2] जीवन धनि औतारा । जहिं लगि बिधि[3] अस गीवं सवारा[4] ।
लगन तीनि कंठ क[1] रेखा । सकल सरीर होइ[2] सग[3] भेखा ।
तीनि रेख असि[1] सामिन गीवं[2] गोरागिनि दीख ।
कौन सो तप[1] जाहि लगि निरमौ[2] लगि गाव[3] जगदीश ॥

पाठान्तर—(१) १ रा गिव ए गीव। २ ए अनूप। ३ ए औ। ४ ए भँवाई।
(२) १ ए लिखा। २ ए क। ३ ए प्रयाग। ४ मा लिन ए नै।

(३) १ ए के। २ रा कै। ३ मा ए निर्माई। ४ मा बनि जन जो बेरसहि सिर्म मांई, ए जग जीवन (पूर्व परवर्ती अर्द्धाली) जो बेलसब गीव लाई।
(४) १ ए जन। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए जेहि कलि बिबनी। ४ मा गीम। ५ ए सारा।
(५) १ ए की। २ ए अस।
(६) १ ए र्विम। २ मा गीम ए गीव।
(७) १ मा तप ए में यह शब्द नहीं है। २ रा जाहि कमि निरमस मा जेहि लागि निरमी ए पतिनी रमै। ३ मा अति मिय आनि ए अैस कौन।

अर्थ—(१) "[इसकी] ग्रीवा की उपमा का क्या लगाकर (कौन-सा उपमान देकर) वर्णन करें ? ऐसा लगता है कि मानों [इस चिकनी ग्रीवा को] स्वयं विश्वकर्मा ने चाक पर फिराया हो। (२) पता नहीं कि किसके भाग्य में कर्म की रेखा है अथवा किसने प्रयाग में करवत लिया। (३) [पता नहीं] जिसके लिए विधाता ने ऐसी ग्रीवा निर्मित की है। वह कंठ धन्य होगा जो इस ग्रीवा से लगकर उसका विलास (सुख प्राप्त) करेगा। (४) उसका जगत् में जीना और जन्म लेना धन्य है, जिसके लिए विधाता ने ऐसी ग्रीवा सवारी है। (५) उसके कंठ की तीनों रेखाओं को देखने पर शरीर किस भेद (प्रकार) से सजग हो सकता है ?

(६) सुहागिनी की ग्रीवा में तीन रेखाएँ अत्यंत सोभित होल रही हैं। (७) वह कौन तपस्वी है जिसके लिए विधाता ने ऐसी ग्रीवा निर्मित की है ?"

टिप्पणी—(१) गिवं < गिव < ग्रीवा। भई < स्वय। चाक < चक्र = कुम्हार की चाक। (२) करवत < करपत्र = आरा लोग मध्य-युग में मुक्ति प्राप्त करने के लिए आरे से तीर्थों में अपना शरीर चिरवाते थे। (३) बेरस < विलस् = विलास करना।

[९३]

भुजा सडहि*¹ बिसकरम गढ़ी² । छारउ हेरि न पन्तर रही³ ।
सबल सन्प अतिहि¹ बरियारी² । दखि बीर अवली³ बलिहारी⁴ ।
औ अनूप दुइ¹ धनी² कलाइ । काम कुदर³ फरि बनाइ⁴ ।
औ तिन्ह पर दुइ सुमर¹ हथोरी² । फटिक सिल्ला³ जनु इगुर पूरीं ।
चिरही¹ जन जहवाँ लहि² मार । तिन्हक³ रकत दस⁴ नगन⁵ रतनारे ।
सोभित सबल सरूप अति¹ त्रिभुवन जीतन हार ।
दह कहि दइ¹ आसिगन धनि² सो जग³ औतार ॥

पाठान्तर—रा म उपर्युक्त अर्द्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए सीमु। २ ए गढ़े (< गढ़ी फारसीलिपि)। ३ मा हेरि रहिउं ना पन्तर कही ए हेरि रहे तारन मुनि ठाढे।
(२) १ मा अति बरी ए अति। २ ए बरिआरे (< बरिआरी फारसी लिपि) ३ रा ए अबला। ४ ए बलिहारे।
(३) १ ए दोइ। २ रा बनी। ३ ए काम कमान ते मा काम कमीन (< कमान—नागरी लिपि) ते। ४ ए चूंदि चढ़ाई।

(४) १ ए औ देहि ऊपर सुन्दर। २ रा ए हथोरी। ३ ए औ। ४ मा गेंडुर पूरी ए ईगुर भोरी रा ईंगुर पूरी।

(५) १ भा बिरही। २ ए लगि। ३ रा ताहि। ४ ए दिसै। ५ ए में यह चरण नहीं है।

(६) १ मा ए सोहाए।

(७) १ ए देहि। २ ए मन। ३ मा भो (<सो नागरी लिपि) जगत।

अर्थ— (१) इसकी भुजाएँ स्वयं विश्वकर्मा की ही गढ़ी हुई हैं; तुलना ढूँढ़ता रह गया, किन्तु कोई पकड़ में न आई। (२) ये भुजाएँ बलवाली सुन्दर और अत्यंत बलिष्ठ हैं; इन्हें देखकर वीर और निर्बल दोनों बलिहार जाते हैं। (३) और इसकी दोनों कलाइयाँ अनुपम बनी हुई हैं मानों इन्हें कामदेव [जैसे] कुंदीगर ने फिराकर (खराद पर चढ़ाकर) बनाया हो। (४) और इन [भुजाओं] पर जो निर्मल हथेलियाँ हैं, [वो ऐसी लगती हैं] मानों स्फटिक शिलाएँ ईंगुर से पूरित हों। (५) इसने जहाँ तक विरही जनों को मारा है उनके रक्त से इसके दस नख लाल हैं।

(६) इसकी भुजाएँ जो त्रिभुवन को जीतने वाली हैं सबल और सुरूप बनी हुई सोभित हैं; (७) पता नहीं यह किसको [इन भुजाओं से] आलिंगन देगी जगत् में उसका जन्म लेना धन्य हुआ।

टिप्पणी—(१) सई < स्वयं। (३) कुंदेरा < कुन्दगार = खरादी। (४) सुभर < सुभ्र < शुद्ध = निर्मल।

[९४]

अति सरूप दुइ सिहुन अमोले। जिन्ह[1] दगत त्रिभुवन मन डोले[2]।
कठिन हिरद महं बिधि निरमए[1]। तातें कठिन सिहुन दुइ भए।
जबहिं हिरद[1] हिरद संचरे[2]। कुच आदर कहं उठ भै[3] खरे।
दुवौ अनूप सिरीफल लाए। भेंट आनि तरुनापै[1] दाए।
जबहिं प्रानपति हियरे[1] छाए। कुच सतोष उठि बाहर आए।
दुसई कठोर[1] बलिगिरे गरब न काहु मनाहिं।
दुवौ मीत[1] के संसदत आपुस महि[2] न मिलाहिं॥

पाठान्तर—(१) १ ए जहि। २ रा मों।

(२) १ ए निर्माये। २ ए भाये।

(३) १ मा जौहि प्रानपति (मूल उपर्युक्त पोथी भ्रष्ट है) ए जो रे हिरदै पर। २ ए सुमरे। ३ ए भौ।

(४) १ ए तरुनापा।

(५) १ मा न लिन मा होइ उर।

(६) १ मा ए कठिन कठोरे (कठोरे—ए)। २ मा ए काहु।

(७) १ ए मित। २ ए महँ।

अर्थ—"(१) [इसके] दोनों अनूप स्तन अति सुरूप (सुडौल) हैं जिन्हें देखते ही त्रिभुवन

का मन डोल जाए (चंचल हो उठे)। (२) ये विधाता के द्वारा उसके कठोर हृदय में निर्मित हुए हैं इसीलिए ये दोनों स्तन कठिन (कठोर) हुए। (३) जब हृदय हृदय में (से लगकर) समाए, तब कुच आदर (स्वागत) के लिए उठकर खड़े हुए। (४) दोनों ही स्तन अनुपम और नवीन श्रीफल (बेल) हैं जिन्हें [बाला के] तारुण्य ने भेंट के रूप में आकर दिया है। (५) जब [प्रिया के] हृदय में प्राणपति छा गए, ये कुच संकुच से उठकर बाहर आ गए।

(६) कठोर और काले सिरों के दोनों कुच गर्व से किसी को नहीं झुकते हैं (७) दोनों ही सीमा (पराकाष्ठा) के विजयी हैं और आपस में मिलते नहीं हैं।"

टिप्पणी—(१) मिहुन<स्तन। (४) तरुनापा<तरुणत्व। (७) मसान्त<मंजयितृ (?)=विजयी।

[९५]

अनियारे तीख[1] अनियाई[2]। दिस्टि साथ उर जाहिं समाई[3]।
सोभित लिए[1] स्याम सिर बान। महाबीर त्रिभुवन जग जाने।
दुवौ सींव[1] पर चाहहिं लरा[2]। हार आइ तब अंतर परा।
दुवौ बीर कुच[1] जूझ जुझारा। सोभहिं[2] आनि[3] सुनहिं रन मारा[4]।
अने बने अस तिनक[1] सुभाऊ। सतत सौंह[2] न पाछें[3] काऊ।
बिपरीत भाउ तिन्हहिं कर[1] महिं अचिरजु कबि पख।
जिन्ह उपजहिं महिं सालहिं[1] सालहिं[2] तिन्हहिं[3] ओ दख॥

पाठान्तर—भा में उपर्युक्त अर्धाली ३ ४ ५, का क्रम है ५, ३ ४।

(१) १ ए भा तीख। २ ए अन्याई। ३ भा पैठहि जाई, ए पैसहि जाई।
(२) १ ए देख।
(३) १ ए ठाउ लिख। २ रा जानहु।
(४) १ ए जग। २ भा सो नहीं ए सोहैं। ३ ए ऐस। ४ भा सहन रन मारा ए भी उर हारा।
(५) १ भा मिरत आनि उन्हकै ए अैनी पैनी उन्ह क रा अपने बिमने (<बयमे) अस तिनक। २ ए और। ३ ए पाछे।
(६) १ भा उन्हहि कर, ए तिन्ह कै। २ रा. नहि अचरिजु कबि भा करति न अचिजु ए सुनहु अचरिज। ३ भा बहु भेद ए बिसेम।
(७) १ ए जहां न उपजैं मालैं। २ ए मालै। ३ भा तिन्हो ए तिन्हकै।

अर्थ—"(१) इसके कुच [ऐसे] नुकीले तीक्ष्ण और अन्यायी हैं कि ये दृष्टि के साथ (देखने मात्र से) हृदय में समा जाते हैं। (२) सिर पर ये श्याम (काला) बाना लिए हुए शोभित हैं और ये त्रिभुवन तथा जगत् में महावीर प्रसिद्ध हैं। (३) दोनों ही सीमा पर [पहुँच कर] लड़ना चाहते थे तब दोनों के बीच [बचाव करने के लिए] हार आ पड़ा। (४) दोनों वीर कुच युद्ध में जूझने वाले हैं और रण या मारामारी की बात सुनते हैं तो [रणक्षेत्र में] आकर शोभित होते हैं। (५) अैनी पैनी (मार्ग-अमार्ग से) [प्रहार करना] ऐसा उनका (इनका) स्वभाव है ये सदैव सम्मुख रहते हैं और कभी पीछे नहीं रहते हैं।

(६) उनके इस विपरीत स्वभाव में कवि कोई आश्चर्य नहीं देखता है (७) [क्यों कि स्वभावतः] जिनको वे उत्पन्न होते हैं उनको नहीं सालते (शल्य के समान चुभते) हैं वे सालते उन्हें हैं जो इन्हें [लोभ की दृष्टि से] देखते हैं।

टिप्पणी—(३) सीव<सीमा। (४) मूह<मुख। (५) मैन मैन<मयन-म्ययन=मार्ग अमार्ग। (६) अविम्नु<आश्चर्य। (७) साल<शल्य=काँटा या कोई भी चुभने वाली या पीड़ाकारक वस्तु।

[९६]

रोमावलि नागिनि बिस[1] भरी। जनु करि हुतें बियर[2] अनुसरी।
नाभी कुंड परी जइ[1] आई। घूमि रही प[3] निकसि[4] न जाई।
पातर पट अनूप सुहावा[1]। जनु बिधि बासु[2] अंत निरमाया[3]।
लंक छीनि[1] देखि जिउ डरई[2]। भार नितंब टूटि जनि[3] परई[4]।
छइ न जाति[1] मत[2] हाथ पसारी। मंस छपतहि टूटहि हतियारी[3]।
टूटि परति करि[1] कामिनि गरुव[2] नितंब क[3] भार।
जौ न होत न्ह[1] बंधन कीन्हें[2] त्रिबली तासु मधार॥

(१) १ मा बिष। २ ए बेंबरहु ते मिरि मा जनु मिरि हुत बिवर रा जनु बेरार हुतें बहु।
(२) ए नाभि कुंड महँ परी जो रा नाभि कुंड हेरी जो। २ रा आवै। ३ रा पै। ४ मा ए निसरि।
(३) १ ए अनूप सोहाई। २ रा ए बासु। ३ ए निर्माई।
(४) १ ए छीन। २ मा देखि जो मरहरे (<जिउ कर हरई फारसी लिपि) ए देखि जिव हरई। ३ ए जौ। ४ मा परै रा हारै।
(५) १ मा ए जाइ। २ ए नि। ३ ए मानहु घुमत दूट हत्यारी।
(६) १ रा टूटि परति कटि ए टूटी परकर (<करि फारसी लिपि) मा टूटि परइ करि। २ मा गुरु। ३ मा कैं।
(७) रा दृढ़। २ मा ए यह पाठ नहीं है रा कीने।

अर्थ—"(१) [इसकी] रोमावली विषभरी नागिन है जो कि इसकी कटि से निकल कर मानों [नाभि] बिवर का अनुसरण कर रही है। (२) जब यह नाभिकुंड में आकर गिरी यह घूमती रह गई पर निकल न सकी। (३) इसका पतला पेट सुडौल और सुन्दर है और वह ऐसा लगता है मानों इसे विधाता ने बिना अंत्र (अँतड़ियों) के निर्मित किया हो। (४) इसकी क्षीण लंक को देखकर जी [इस बात से] डरता है कि यह नितंबों के भार से [कहीं] टूट न पड़े। (५) जितना भी हाथ पसारिये यह [ऐसी सूक्ष्म है कि] छूने में नहीं आती है और [यह भी डर लगता है कि] कहीं यह हत्यारी छूने ही टूट न जाए।

(६) कामिनी की कटि गुरु नितंबों के भार से टूट पड़ती (७) यदि त्रिबली जो उसका आधार है दृढ़ बंधन न किए होती।"

टिप्पणी—(१) करि<कटि। (२) जइ<यदा=जब। (३) बासु<वास<वस्त्र= रहित बिना। अंत<अंत्र=आँत अँतड़ी।

[९७]

करि माहें[1] त्रिवली कसि अही[2] । विधन गढ़त[3] मूंटि
पुरजन लाज मनहिं मन[1] मानेउं । तो नहि मदन भण्ड
बसि निरंव चिहुटि[1] चित लागा[2] । परत दिस्टि मनमथ
जुगुल जंघ[1] दखि मन थहराई[2] । भरमेउ जीउ[3] किछु[4]
राते कोंवल सेत[1] सोहाए । तरवन्ह कवल पटतर
विपरित कनक[1] केदली[2] औ[3] गज सुंड सुभ
उपमा बत सजानउ[1] सुनहु[2] कहौं सति भ

पाठान्तर—(१) १ ए कटि माहें। २ ए आई। ३ रा काढ़ि(<
रही ए मूठी ती गही।
(२) १ भा चितहिं मन ए चित मंह। २ ए मामा। ३
(३) १ ए चिहुट। २ भा लागे। ३ रा पुनि ए
४ भा जागे।
(४) १ ए जांघ। २ रा बरनि न जाई, ए चित थहराई
ए मन भरमा। ३ भा किछु बरनि ए कछु कहा।
(५) १ ए राते कौंल जो सेज। २ ए तरवा कौल नहिं
(६) १ ए कन। २ भा में यहां और है 'कर पटतर'
नहीं है। ४ रा गज मैमंत बरबार (?) ।
(७) १ ए सजानेउ। २ भा पा नहीं।

अर्थ—"(१) [इसकी] कटि में त्रिवली कैसी है, मानों त्रिवलत्त से
था उसने इसे [यहीं] मुट्ठी में पकड़ा था। (२) मैंने पुरजन की
इसलिए इसके मदन-भांडार (गुह्य अंग) का वर्णन नहीं किया। (३)
चित्त उसमें चिपककर आ लगा, और उस पर दृष्टि पड़ते ही शरीर में
उठा। (४) इसके युगल जंघों को देखकर मन थहरा (कांप) उठा और
कहते नहीं बनता है। (५) इसके पैरों के तलवे रक्त वर्ण के कोमल और
जिन्होंने कमलों को समतल जैसा (के रूप में) प्राप्त कर लिया है।
(६) [इसके पांव] उलट कर रखे हुए कनक-कदली और
(आकार) के हैं। (७) उसकी उपमा वैसे सुमन में लज्जित हुआ
कह रहा हूं।"

टिप्पणी—(१) करि < कटि। (५) रात < रक्त = लाल। कोंवल

[९८]

सोवत दसि[1] सन यिकरारा। उठेउ[2] कुँवर[3] तन विरह[4] विकारा[5]।
सहज चितहिं उपजउ[1] बैरागू। विरह आइ भाजिय[2] कर लागू।
बदन मदन मनु[3] दुति उदित दखि हरे मन चेत।
धनि सो जनम जग ताकर जा सेउं उपजै हेत॥

पाठान्तर—(१) १ ए बिना। २ ए सुते। ३ मा बरनि केउं पारा ए को बरनै पारा।
(२) १ ए जो बिधि सिरा पुरा। २ रा ए अनूपी। ३ रा त। ४ रा ए बाजु। ५ रा सरूपी ए अनूपी (तुक पूर्ववर्ती चरण)।
(३) १ मा सिपरित। २ मा सिरिष्टि। ३ मा लज्या बहुत मदन तें ए लज्जा बिहित मदन भी रा लज्यावत मदन सब।
(४) १ मा सुती देख ए सोवत देखा। २ रा भाउ ठी ग उठा। ३ रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए में यह शब्द नहीं है। ५ मा बकारा ए बिकरारा (तुक पूर्ववर्ती चरण)।
(५) १ ए चित उपजा। २ ए आइ भी जिव।
(६) १ मा ए बदन मदन (मनुग—ए) दुति उदित देखि हरे (न रहे—ए) मन (मुनि—ए) चेत रा झरता बहु मरता भवा जिम सो निरवाहि जाहि।
(७) १ मा ए धनि सो जनम जग ताकर जासा (जासौं—ग) उपजहि (उपजै—ए) हेत रा परत भाउ मन साने पावै भाग लजाहि।

अर्थ—(१) बिना कटाक्ष बिना हाव-भाव तथा बिना शृंगार के शय्या में प्रसुप्त उस नारी का वर्णन कौन कर सकता है? (२) विधाता ने पूर्व काल में जिन अनुपम नारियों की रचना की थी, वे बिना शृंगार के सहज ही सुरूपवती थीं। (३) [इस नारी के शरीर में] समस्त सृष्टि का सौभाग्य था, और इसका संपूर्ण गात्र मदन (काम) के कारण लज्जा-युक्त हो रहा था। (४) शय्या पर इस प्रकार इसे बेकरार (बेचैन) सोती देखकर कुमार (मनोहर) के शरीर में विरह-विकार उठा। (५) उसके सहज चित्त में [संसार से] वैराग्य उत्पन्न हो गया, और विरह आकर उसके जीव (प्राणों) का ग्राहक हो गया।

(६) इसके बदन (मुख) पर मदन (काम) की द्युति उदित देखकर [कुमार के] मन का चेत हर उठा (७) और उसने कहा "उसका जन्म जगत् में धन्य होगा जिसके [इसके मन में] हेतु (प्रेम) उत्पन्न होगा।"

टिप्पणी—(२) पुब्ब < पुव्व < पूर्व = पहले। बाजु < वज्ज < वर्ज = बिना। (३) गात्री < गात्र। (४) बिकरार < बेकरार (फा.) = अशांत अधीर।

[९९]

जोबन[1] सरसि निर्मल[2] गहिरानउ[3]। कमल न जगाइ[4] सिंगार बखानउ[5]।
अब उरग[6] रग याग बराई[1]। अधर[1] रंग[1] बरन गनत रग पाई[1]।
दुरो भभा गिर उरग[1] भानी। अंग मोरि बनिता[1] संभुभानी[1]।

सजग भए बिधि[१] लोचन कैसे[२] । उठ घात सर पारधि[३] जसे ।
सहज भाउ जो भौंह सकोरा[१] । मदन धनुक जनु[२] दीन्ह[३] टकोरा ।
मदन धनुक[१] दुइ[२] भौंह चढ़ौं[३] जो गाढ़ ठान[४] ।
तीनिउ लोक सकानें[१] तिन[२] भौंहन्ह के[३] बान ॥

पाठान्तर—(१) १ भा सूनी । २ भा बिरहिं, ए कीन । ३ ए पछ्ताने । ४ रा बकाइ ए जाइ । ५ ए बखाने ।
(२) १ रा कहानी ए कहाऊँ । २ ए और । ३ ए में यह शब्द नहीं है । ४ रा मानो ए माऊ ।
(३) १ ए कर सिर पर । २ ए अंग मरोरि मति । ३ भा जमुआनी ।
(४) १ रा सजग भए दुइ । २ भा कैसूं । ३ ए उठै अघात पारधी । ४ भा जैसें ।
(५) १ रा ए सकोरा । २ ए, मदन धनुक ती । ३ भा विएउ ।
(६) १ ए धनुक । २ ए दोइ । ३ ए चढ़ी । ४ रा गाढ़े ध्यान (ठान)
(७) १ रा सकामेउ ए सकानेउ । २ भा ते (<तिनें ?) भौंहन्ह के ए देखत भौंहन्ह, रा वलि भौंहन्ह के ।

अर्थ—(१) [उस कुमारी का] प्रसुप्त अवस्था का वर्णन कर मैं (मंझन) जी में पछताया क्यों न मैंने उसे जगाकर [उसकी जागृत अवस्था का] वर्णन किया । (२) अब उसे जगाकर रस-वार्ता [मुख से] कहलाइए, और रस-वचन सुनते हुए रस प्राप्त कीजिए । (३) दोनों भुजाएँ सिर के ऊपर लाकर उस वनिता ने अपने अंग (शरीर) को मोड़कर (अँगड़ाई लेकर) जँभाई ली । (४) उसके दोनों लोचन किस प्रकार सजग हो उठे जैसे [लक्ष्य-बेध को] घात में शिकारी के सर उठ गए हों । (५) उसने सहज भाव से जब भौंहों को सिकोड़ा तो ऐसा लगा मानों मदन-धनुष ने टंकार किया हो ।

(६) उसकी दोनों भौंहें मदन-धनुष [के सदृश] थीं जो प्रगाढ़ रूप से [लक्ष्य-बेध करना] ठान कर चढ़ गई थीं (७) [फलतः] उन भौंहों के वर्ग से तीनों भुवन शंकित हो उठे ।

टिप्पणी—(३) भुजा < भुजा । जंभुआए < जंभ < जृम्भ् = जँभाना । (४) बिधि < इव । पारधि < पारधिक < पापर्धिक = शिकारी । (७) बान < वर्ण ।

[१००]

जागि उठी पुनि[१] राज कुमारी । चकित[२] चहु दिसि हेर मो मारी[३] ।
मिरिगि[१] सजग भइ[२] न्हु[३] दिसि हेरइ[४] । चीन्हि कै सोह[५] सपूर महरइ[६] ।
पुनि जो दगइ कुँवरि[१] निछाई[२] । दोसरि सीम ह निरट इमाई ।
तहि[१] पर राजकुँवर एक भारी । दलि भरम बहु मति भइ बारी[२] ।
दगसि जोहि[१] पुरुष कै[२] करा । मरम होत जिय[३] डाउम धरा ।
मनुषी चिन[१] बर कामिनि पुनि उठि बैसु[२] सँभारि ।
थिरी धीर धरि[१] चिन महं बोली गज कुमारि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुनि। २ मा चकित। ३ ए निहारी।
(२) १ ए भिव। २ मा मर्ए, ए भौ। ३ ए चहुं। ४ ए हेरा। ५ ए सिंहके सिंह रा आयी सिंघ। ६ ए अहेरा।
(३) १ ए कुंअर देखु। २ मा निहुचाई, ए अमिराई। ३ ए अंमाई।
(४) १ ए दा। २ मा भरम भई भरमी बारी ए भरमित भी ओ बर बारी।
(५) १ रा देखेसि अर्बाहि ए देखसि बोहि। २ ए पुर्ख की। ३ ए जिउ।
(६) १ मा सकुचि विराहि ए सकुचि हिये। २ रा पुनि उठि बैठि ए पुनि उठि बैसु।
(७) १ मा तिरी थिरज धै ए तिया धीरज धर, रा त्रिया धीर धरि।

अर्थ—(१) फिर राजकुमारी जाग उठी और वह चारों ओर घबराई हुई देखने लगी। (२) ऐसा लगा मानों त्रस्त होकर कोई मृगी चारों दिशाओं में देख रही हो जब उसने आखेट में सिंह और शार्दूल को पहचाना हो। (३) फिर जो कुमारी ने निश्चय करके देखा [तो देखा कि] दूसरी शय्या [उसके] निकट ही बिछाई हुई है, (४) और उस [शय्या] पर एक भारी राजकुमार है; यह देखकर उसकी मति में बहुत भ्रम हुआ। (५) किन्तु जब उसने पुरुष की कला (आकृति) देखी तो भ्रम होते हुए भी उसने जी में ढाढस किया।

(६) वह श्रेष्ठ कामिनी चित्त में सकुच गई और फिर सँभल कर उठ बैठी। (७) उस स्त्री ने चित्त में धैर्य धारण किया और वह राजकुमारी [फिर] बोली।

टिप्पणी—(२) सीह < सिंह। सेदूर < शार्दूल = शरभ। अहेर < आखेट। (३) निरा < निश्चय < निर् + चि = निश्चय करना निर्णय करना। सैन < शयन = शय्या। (४) बारी < बालिका। (५) करा < कला। (७) तिरी < स्त्री।

[१०१]

पुनि वर कामिनि अधर अमोले। अंमित बचन कहन कहं खोले¹।
पूंछिसि मधुर बचन रसारा¹। को आहिहु तुम्ह कव कुमारा²।
कहहु¹ आपन तुम्ह² नाउं³ गोसाईं। कौनि सकति आएहु⁴ एहि ठाईं।
जहां मेवास करै सो यारा¹। पौन कर महि पावै² संचारा³।
गुपत कहहि*¹ द पूछौं ताही। कहहु बात आपनि² सत³ मोही।
कै तुम्ह इन्द्रासन¹ कै देवता कै पतार² कै नाग।
कै तुम्ह¹ मिरितु लोक कै मानुस कहहु² मरम बिन³ भाग॥

पाठान्तर—(१) १ ए बोल (< बोली फारसी लिपि)।
(२) १ रा ए रसारा। २ ए को आहि तै देव कुमारा रा को है आहि तुम देव दयारा।
(३) १ ए कहु। २ मा ए मोहि। ३ ए नाव। ४ ए आये।
(४) १ ए बारी। २ ए पवनौ करै न पाव मा पौनौ करै न पाव (< पाव फारसी लिपि)। ३ ए सँचारी।
(५) १ ए, सिधु। २ ए आपन। ३ मा सत ए निज।

(६) १ ए इंद्र सभा। २ मा पाताल ए पतार।
(७) १ ए तुह। २ ए कहौ। ३ मा चित ए जो।

अर्थ—(१) फिर उस श्रेष्ठ कामिनी ने [अपने] अमूल्य अधर अमृत [सदृश मधुर] वचन कहने के लिए खोले। (२) उसने मधुर और रसीले वचनों में पूछा, "हे देव कुमार, तुम कौन हो ? (३) हे स्वामी, तुम अपना नाम कहो, [और यह बताओ कि] किस शक्ति से तुम यहाँ आए (४) क्योंकि जहाँ यह बाला निवास करती है पवन भी संचार करने नहीं पाता है। (५) मैं अपनी ही शपथ देकर तुमसे पूछती हूँ : तुम अपनी बात मुझसे सच-सच कहो।

(६) क्या तुम इंद्रासन के देवता (इंद्र) हो या पाताल के नाग (वासुकि) हो (७) या तुम मृत्यु लोक के मनुष्य हो ? कहो (उत्तर दो) जिससे चित्त का भ्रम भगे (दूर हो)।"

टिप्पणी—(२) रसार < रसाल। (५) सउं < शपथम्। (६) पतार < पाताल।

[१०२]

कै तुम्ह[1] राकस भूत कै[2] छाया। कै तुम्हारि[3] यह मानुस काया।
कै गुर बचन सिद्धि किछु[1] पाई। कै नैनन्हि लोक अंजन लगाई[2]।
कै तूं[1] मंत्र सकति किछु पाई। कै रस[2] मूरि गुरदेव[3] देखाई।
कै तूं[1] चढ़ि[2] मन पौन खटोलें[3]। आएसि मोरें[4] मंदिल अबोलें[5]।
अगम पौंरि चारिहुं दिसि[1] लागहि। आस पास बहु पहरू[2] जागहिं।
भंवरीं सात मंदिल कै[1] जागहि धीर अपार।
तहं कैसें तुम्ह[1] आएहु जहं न समीर[2] सचार॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्धालियां ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए कै। २ ए की। ३ ए तोहारि।
(२) १ ए कै। २ रा कै नैननि कामि अंजन देखाई, ए कै मूरि गुन ग्यान सनाई। (तुल० परवर्ती अर्धाली)।
(३) १ मा तई, ए कै। २ रा रै, ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए गुन ग्यान।
(४) १ मा तई, ए कै। २ ए चढ़ेसि। ३ मा खटोला ए खटोले। ४ ए हमरे। ५ मा अबोला ए अबोले।
(५) १ ए चारौं दिस। २ मा सब पहरै, ए सब पहरू।
(६) १ मा भांवरि सात मंदिर कै।
(७) १ ए तुह। २ रा ए जहां न समीर।

अर्थ—(१) अथवा तुम राक्षस [अथवा] भूत की छाया हो, अथवा तुम्हारी यह काया मनुष्य की है (२) अथवा गुरु के वचन से कुछ सिद्धि तुमने प्राप्त की है अथवा [तुम्हारे] नेत्रों में लोकांजन लगाने के कारण तुम्हें [सब कुछ] दिखाई पड़ता है (३) अथवा तुमने कुछ मंत्र-शक्ति पाई है या [तुम्हारे] गुरु या [तुम्हारे] देवता ने रस-मूल दिखा दिया है। (४) अथवा तुम मन के पवन-खटोले (वायुयान) पर चढ़कर मेरे मंदिर (भवन) में अबोले (चुपचाप) आ गए ?

(५) चारों ओर अगम्य पौरियाँ लगी हुई (बंद) हैं और [उन के] आस-पास बहुत से प्रहरी जाग रहे हैं

(६) इस मंदिर (भवन) की सात भौरियों (फेरे लगाने के लिए बने मार्गों) में असंख्य वीर जागते [हुए पहरा देते] रहते हैं (७) तब यहाँ (ऐसे मंदिर में) तुम कैसे आए जहाँ पर समीर (वायु) का भी संचार नहीं है?

टिप्पणी—(१) राकस<राक्षस। (२) लोकअंजन<लोकाञ्जन—एक प्रकार का अञ्जन जिससे देखने की अद्भुत शक्ति प्राप्त होती मानी गई है। (५) पौरि<प्रतोली=मुख्य द्वार। पहरू<प्रहरी। (६) भौंरी<भ्रमरी=फेरे लगाने का मार्ग।

[१०३]

सुम्ह[1] पूछौं द सपत बिधाता। कहु माहि सउं सत भई जो[2] बाता।
कै तोहि कोइ[1] बरबस लै आवा। तेहि भरमसि मुग्ग[2] बकत[3] न आवा।
दखति हौं सम[1] मानुस करा। प्रगट लिलार भाग मनि बरा[2]।
कस र[1] मौन भा[2] रहसि अबोला[3]। दखि भरम मोरा मन[4] डोला।
दखि मोर जिउ भरमउ भारी[1]। अब्चिजु दखि जीउ हरबारी[2]।
कादरा कै उठि बैसहि भरमि न[1] मनहि मबात[1]।
तोहि सपत द पूछौं कहु सति आपनि[1] बात॥

पाठान्तर—(१) १ ए तोहि रा तुम। २ भा कहु मोहि सेउं निजु सत कै ए कहु निज माहि सौं सत रा कहु मोसों सत भई जो।
(२) १ भा केउ ए कोउ। २ भा तैहि भ्रम भरमसि ए तेहि भरमसि जीव। ३ ए बकति।
(३) १ भा ए सब। २ रा भरा।
(४) १ रा कै रे। २ ए भै। ३ ए अबोला। ४ भा मोर मानुस ए मोर मनसा।
(५) १ भा देखि देखि जीउ भ्रम परबरई (तुम परबर्तीचरण) ए देखि देखि जिय भर्म आई। २ भा अचिजु देखि डर मन परहरई ए अचरिज देखि मन पहुराई रा अचरिजु देखि जीउ हरमारी (<हरबारी फारसी लिपि)।
(६) १ भा बैसिउ ए बैसेउ ए बैसहि (<बैसहि)। २ भा भ्रम जिउ आहि न मान ए जिवहि आ मन मरान रा भरम नहिं मंघान।
(७) १ ए आपन।

अर्थ—(१) मैं [तुम्हें] विधाता की शपथ देकर तुमसे पूछती हूँ: मुझ से सत्य बताओ जो बात हुई हो। (२) क्या तुम्हें कोई बलात् ले आया और उसी से तुम बकरा रहे हो और तुम्हारे मुख से उचित नहीं आ (निकल) रही है? (३) [तुम्हारे में] मैं मनुष्य की समान कलाएँ देख रही हूँ; तुम्हारे ललाट में प्रकट (प्रत्यक्ष) ही भाग्यरूपी मणि (जल) रही है। (४) तुम कैसे (क्यों) मौन होकर अबोल (चुप) हो? तुम्हें देखकर भ्रम से मेरा मन डोल उठा है। (५)

[तुम्हें] देख कर मेरा भी बहुत भ्रमित हो उठा है और यह आश्चर्य (तुम्हारा आना) देख कर भी मैं हड़बड़ी (घबराहट) है।

(६) साहस करके तुम उठ बैठो और मन में शंका करते हुए तुम घबराओ मत (७) मैं तुमसे शपथ देकर पूछती हूँ तुम अपनी सच्ची बात कहो।

टिप्पणी—(१) (७) सपत<शपथ। (२) बकुन<चकित=उचित। (३) करा<कला। (४) मैं लिलार<ललाट=ललाट। (५) अचिरजु<आश्चर्य।

[१०४]

सुनौ¹ कुँवर अम्रित रस बाता। जाके² सुनत अमर भा³ गाता।
चक्रित¹ चित मन भरमि² भुलाना। दखि रूप तहि रहत न³ गेयाना।
लागे हिए कोंड अनिमार। भाउ कटाछ सान कै¹ सारे।
जसें¹ साँड नीर महँ परई। सहज अपान आपु² परिहरई³।
सौंह सरूप न सकै निहारी। दुखी मन कै¹ बार बिचारी¹।
दखि रूप चखु भरमें¹ सौंह न सकहिं निहारि¹।
रगत¹ आंसु बहु² नैनन्हि पलक न जाइ उघारि॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुना। २ मा जेहि कै। ३ मा भी ए हो।
(२) १ मा चकित। २ ए मोह। ३ मा तेहि रहत ए फिर रहे न।
(३) १ ए भौंह कटाछ सान है।
(४) १ ए जैसे। २ ग आपु आपुहि। ३ ए परहरई।
(५) १ मा बार न चारी।
(६) १ रा भरमेउ ए भर्म। २ ए मई भँमारि।
(७) १ ए रक्त। २ मा भर।

अर्थ—(१) कुमार (मनोहर) ने [कुमारी मधुमालती की] वह अमृतरस वाली बात सुनी जिसके सुनते ही उसका गात्र अमर हो गया। (२) उसका चित चकरा गया और मन भ्रमित होकर भूल गया [उस कुमारी का] रूप देखकर उसको ज्ञान न रहा। (३) उसके हृदय में वे नुकीले [दृष्टि के] कांड (बाण) लग गए जो भाव (प्रेम) पूर्ण कटाक्ष की सान (शाण) पर पैने किए हुए थे। (४) जैसे खाँड़ जल में पड़ कर अपना सहज आत्म (आत्मत्व) आप छोड़ देती है [वैसी ही राजकुमार की भी दशा हुई]। (५) सम्मुख [की दृष्टि] से वह [उस कुमारी का] स्वरूप नहीं देख सकता था, [अतः] वह दोनों नेत्रों के द्वार से कर विचारने लगा।

(६) उसके चक्षु [उस कुमारी के] रूप को देखकर भ्रमित हो उठे [किन्तु] वे सम्मुख दृष्टि करके उसे नहीं देख सकते थे; (७) रक्त के आँसू उसके नेत्रों से बह रहे थे और पलकें उघाड़ी नहीं जा रही थीं।

टिप्पणी—(३) सान<शाण=सान का पत्थर। (४) खाँड़<[शर्करा-] खण्ड। (४) अपान<आत्मन<आत्मन। (५) बार<द्वार। (६) चखु<चक्खु<चक्षु। सौंह<सम्मुख। रगत<रक्त।

[१०५]

सुनु बर नारि कहौं मैं तोही । सहज हेतु जो पूंछेहु[1] मोही ।
नगर कनगिरि उत्तिम थानां । सूरज भानु[1] पिता जग जानां ।
औ मोहि कुंवर मनोहर[1] नाऊं । राघौ बंस कनगिरि ठाऊं[2] ।
निमख नींदि लोयन जौ[1] लागी । मबहीं देखु उठा हौं[3] जागी ।
नहिं जानौं मोहि को ल आवा । जहि[1] तोहि मोहि भा[2] दिस्टि मेरावा ।
तोरे[1] रूप गड़े दुइ[2] लोयन[3] नहिं देखौं निसरंत ।
जेउ जउं गज परै पंक महं[1] सउ तेउं अधिक खूंत[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पूछे।
(२) १ ए सुर्जभान।
(३) १ रा में 'कुंवर मनोहर' शब्द नहीं हैं। २ ए ठाँऊँ।
(४) १ ए नैनन्हि। २ भा मोहि रा नहि। ३ ए मैं।
(५) १ ए जो। २ भा ए भौ।
(६) १ भा तारें। २ ए दोइ। ३ भा लोचे।
(७) १ भा ए जौ जौ गज (जग-ए) बर (परए) पंक नरि (मर्ह-ए)। २ भा ए तौ तौ अधिक गड़ंत।

अर्थ—(१) [कुमार कहने लगा] "हे श्रेष्ठ नारी सुनो; मैं तुमसे वह सहज हेतु कह रहा हूं जो तुमने मुझसे पूछा है। (२) कनक गिरि नगर एक उत्तम स्थान है [जहां के] मेरे पिता सूर्य भानु को जगत् जानता है। (३) और मेरा कुमार मनोहर नाम है मैं राघव (राम) के वंश का हूं और मैं [उसी] कनकगिरि स्थान का हूं। (४) एक क्षण के लिए मेरे नेत्रों में जो नींद लग गई तो यह देखो मैं अभी जाग कर उठ रहा हूं। (५) मैं नहीं जानता कि मुझे [यहां] कौन ले आया कि जिससे तेरा और मेरा दृष्टि-मिलाप हुआ।

(६) तेरे रूप (सौन्दर्य) के [दलदल में] मेरे दोनों लोचन गड़ (धंस) गए हैं और उनको निकलता नहीं देख रहा हूं। (७) [और यह ठीक भी है क्योंकि] जैसे जैसे गज पंक (दलदल) में धंसता जाता है वैसे ही वैसे वह उसमें और अधिक धंसता जाता है।

टिप्पणी—(२) थनें < थगय < थनक। थान < स्थान। (५) मेराव < मेलाव < मेल। (६) लोयन < लोचन।

[१०६]

भवरा मादि गए[1] उडि जागउं । दगि भग सुय[2] जोबन मागउं[3] ।
पुम्प[4] पुनि[1] भाग्उ पिछ मोग । जर्द[2] मग भानि दगाग्उ[3] तोग ।
मैं बरम्मा माहि जनम दमाग्उं[1] । ताहि पुनि[2] ताहि[3] दग्सन पाग्उं ।
कै[1] मन बनि बरहु[2] पमागा । बम्गउ मीम पुम्ब[3] बे[4] भागा ।
पाग्उं पुम्प नहि निरि पम[1] ताने । पनि पनि पुम्प[2] पुनि[3] जा माहो ।

पेम काढ़[१] हिय लागउ लोयन रहु[२] लोभाइ ।
तन मन[१] जिउ जोबन तुम्ह[२] चाहु कैसहु छाडि[४] न जाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा। २ ए आयेउँ। ३ मा जियँ ए अम। ४ ए लायेउँ।
(२) १ मा पूरब पुन्नि ए पूर्व पुन्य। २ ए आहि। ३ रा ए जाहि। ४ ए देखारा।
(३) १ ए देखायेउ। २ ए तेहि रे पुन्य। ३ मा मुख ए अब। ४ ए पायउ।
(४) १ ए औ। २ रा सेप। ३ मा तपिहु ए तीर्थ। ४ ए कलपा। ५ ए पूर्व। ६ मा तिन्ह।
(५) १ मा पाएउँ आइ सिरि तेहि फल ए आजु पायेउँ तीर्थ जो। २ ए धन्य धन्य पूर्व पुन्य। ३ मा थे।
(६) १ ए काँद। २ ए रा रहुउ।
(७) १ ए तनु मनु। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए चहै। ४ मा छोडि ए छाड़ि।

अर्थ—"(१) अभी मैं नींद टूटने पर जाग उठा (तो) तुम्हारा रूप देखकर अपना जीवन पैदा किया। (२) मेरा कुछ पूर्व पुण्य था जिसने मुझे [यहाँ] ला कर तुम्हारा मुख दिखाया; (३) अथवा मैंने उस जन्म में करवत लिवाया था (आरे से शरीर चिराया था) और उसी पुण्य ने [मुझे यहाँ] लाकर तुम्हारा दर्शन कराया (४) अथवा मैंने प्रयाग में मन-वांछित वरण (संकल्प) किया था और पूर्व के भाग्य से अपना सिर वहाँ काटकर चढ़ाया था। (५) उसी पूर्व [के पुण्य] से मैंने तुम स्त्री-रत्न को प्राप्त किया अतः मेरा पूर्व का जो पुण्य था वह धन्य था, धन्य था।

(६) [तुम्हारा] प्रेम-कांड (प्रेम-बाण) हृदय में लग गया है जिससे लोचन [तुम पर] लुब्ध हो उठे हैं; (७) तन मन जीव (प्राण), और जीवन—(प्रत्येक) तुम्हें चाहता है, और [इसलिए] तुम्हें किसी प्रकार भी छोड़ा नहीं जा रहा है।"

टिप्पणी—(१) करवत<करपत्र=आरा स्वर्ग की प्राप्ति के लिए काशी और प्रयाग में पहले लोग आरे से शरीर चिराते थे। (४) कलप<कल्प् (?)=काटना। पुन्न<पुण्य<पूर्व। भाग<भाग्य। (६) लोयन<लोचन।

[१०७]

पुन्य पुन्नि[१] फल भागु[२] हमारा । ससि पूनिउ[३] मुख दरस तुम्हारा[४] ।
पेम[१] काँड हिय लागउ[२] मोरें । बिरह जाल जिउ बाझेउ[३] तोरें ।
पुन्य[१] भाग जहि होइ लिलारा । तेहि दरस सो पाव बारा ।
तुम्ह[१] पूछौं एक हउँ कुमारी । कौन राज कहि[२] राज दुलारी ।
कहहु माउ[१] मोहि आपन बाला । पिता कौन कहि दीप[२] भुआला ।
मैं अपन नैनन्ह क[१] बसि बसि जहि रवौं तार[२] रूप ।
सो सपनेहु[१] कै[२] जो मुनौं[३] अगिन कथा[४] अनूप ॥

पाठान्तर—मा में पता नहीं है।

(१) १ ए पूर्व पुन्य। २ ए आपु। ३ ए पुनिंव। ४ ए तोहारा।
(२) १ ए चोट। २ ए लागा। ३ ए जिय बासा।
(३) १ ए कर्म। २ ए तुम दरिसन।
(४) १ ए तोहि। २ ए पर।
(५) १ ए नाम। २ ए देस।
(६) १ ए की। २ ए जो देखा तुम।
(७) १ ए रा सवनन्ह (मा में मर्दन सवन' और 'सवनन्ह' रूप आये हैं)। २ ए में यह विभक्ति नहीं है। ३ ए सुनेऊं। ४ ए बचन।

अर्थ—"(१) आज मेरा पूर्व (पूर्वार्जित) पुण्यफल [प्राप्त] हुआ कि पूर्णिमा के शशि [सदृश] तुम्हारा मुख मैंने देखा; (२) मेरे हृदय में तुम्हारा प्रेम-कांड (प्रेम-बाण) लग गया और मैं तुम्हारे विरह-जाल में बद्ध हो गया। (३) पूर्व (पूर्वार्जित) भाग्य जिसके ललाट में होता है वह तभी हे बाला, [ऐसा] दर्शन प्राप्त करता है। (४) अब मैं तुम से (तुम्हारे) रस (प्रेम) का हेतु पूछता हूँ : यहाँ का कौन राजा है और किसकी तुम राज-कन्या हो? (५) हे बाला मुझे तुम अपना नाम बताओ; तुम्हारा पिता कौन है और वह किस द्वीप का भूपाल है?

(६) मैं अपने नेत्रों की बलिहार जाता हूँ कि [उनके द्वारा] तुम्हारा रूप देख रहा हूँ (७) और अपने कानों की बलिहार जाता हूँ कि [उनके द्वारा] यह अनुपम अमृत कथा सुन रहा हूँ।

टिप्पणी—(१) (३) पुरब < पुब्ब < पूर्व। (१) पूनिवं < पूर्णिमा। (२) बाझ < बध् = बँधना फँसना। (५) भुवाल < भूपाल। (७) श्रवन < श्रवण = कान।

[१०८]

पुनि रंग बचन सोहागिनि बोली[1] । अमिअ बचन रसनच्छर घोली[2] ।
चमके दसन बहुत रंग[1] बाना । चौंधे तीनि भुवन मां[2] नाना ।
सुनतहि[1] बचन भ्रुवर मुरछाना । हरउ[2] मन चित गएउ गियाना[3] ।
दसन अधर स्याम ... भई । बचन सुनाइ सो बहुरि जिउ[1] दई ।
नागर भाव मोहि[1] बरनि न भाषा[2] । मुवइ चाह सो यतन जियावा[3] ।
अधर भाव धरमों माहि मुंह[1] बरनि न जाइ ।
मार[1] सो जियतहि मारै मुअहि[2] सो मारै जियाइ ॥

पाठान्तर—मा में पता नहीं है।

(१) १ ए बोला। २ ए रोचन छंद (< रतनच्छर वानी मिलि) घोला रा रसना सुर बानी।
(२) १ रा सुर। २ ए मय।
(३) १ ए सुनत। २ ए हरा। ३ ए चैन बैराना।
(४) १ ए सुनत सो फिर जिउ।
(५) १ ए बरन न पार नाहीं है। २ ए बातें। ३ ए मुअहि चाहि सो बहुरि जिआवै।

(६) १ ए मुख।
(७) १ ए सक। २ ए मुये।

अर्थ—(१) फिर वह सुहागिनी रसीले वचन बोलने लगी वह रतनच्छद (ओष्ठों) को खोलकर अमृत-वचन [कहने लगी]। (२) इन रस-वचनों को कहते समय जो उसके दाँत चमके, त्रिभुवन में गात्र (गात्र-धारी) चौंक उठे। (३) इन वचनों को सुनते ही कुमार (मनोहर) मूर्छित हो गया उसके चित्त से चेत हर उठा और उसका ज्ञान जाता रहा। (४) किन्तु जहाँ उसके अधरों को देखते ही वह ज्ञान हर लेती थी वहाँ [अमृत] वचन सुनाकर वह [उसे] पुनः जीवन दान भी करती थी। (५) दूसरे किसी भाव (प्रभाव) का मैं वर्णन नहीं कर सकता [यही कह सकता हूँ कि] यदि कोई मरना भी चाहता तो उसको अपने वचनों से वह जिला देती।

(६) उसके अधरों के भाव (प्रभाव) का मैं क्या वर्णन करूँ? मेरे लिए मुख से उसका कथन करना संभव नहीं है (७) [इन अधरों से] जीवित को वह मार सकती और मृत को जिला सकती थी।

टिप्पणी—(१) अमिअ < अमृत। (२) गात < गात्र = शरीर। (५) बकति < वक्ति = उक्ति। (७) मुअ < मृत।

[१०९]

पुनि जौ अमुझ[1] कुँवर अजाना[2]। छिन चित छिन आइ गियानां[3]।
छिनहिं छिनहिं जिउ*[1] बिसभर जाई। कबहुँ समुझि[2] घट आइ समाई।
घरी चारि पर पहिरेउ[1] जीऊ। जीउ समुझि घट भएउ सजीऊ[2]।
पुनि जौ चित जियहिं[1] ठहराना। अंब्रित बचन परे जत[2] काना।
परत स्रवन पीतम[1] रस भासा। सुनत भएउ सुभ[2] अस्टौ[3] गाता।
बहु भाग सो कामिनि अंब्रित बचन रसार।
अस्टौ गात स्रवन कै सुन सा[1] राजकुमार॥

पाठान्तर—भा में पत्रा नहीं है।

(१) १ ए अमुझहिं। २ ए ग्याना। ३ ए चोख बखाना।
(२) १ ए छिनहिं छिनहिं जिउ जिउ ए छिन छिन जीव। २ ए छिन समुझि।
(३) १ ए घट पलटा। २ ए पैसा जीऊ (तुल० पूर्ववर्ती चरण)।
(४) १ ए चित्तै। २ ए पराती।
(५) १ ए अवित। २ ए सीग भी। ३ ए आठौ।
(७) १ ए जो।

अर्थ—(१) फिर वह अज्ञान (चेतनाहीन) कुमार यदि समझता (चेत में आता) भी था तो एक क्षण चेत में आता और दूसरे क्षण उसका ज्ञान जाता रहता था। (२) क्षण-क्षण उसका जीव बे-सँभाल हो जाता था, और कभी [वह जीव] समझ (चेत) कर घट (शरीर) में आ समाता था। (३) चार घड़ी के बाद उसने जीव पहना (धारण किया) और जीव को [आया हुआ] समझ कर उसका घट (शरीर) फिर सजीव हो गया। (४) फिर जब उसने जी में चेत [कुछ समय तक]

कना रहा, [कुमारी के] जितने अमृत-वचन थे वे कान में पड़े। (५) प्रियतम की रसीली बातें जब कानों में पड़ीं उन्हें सुनते ही उसको गात के आठों अंगों में सुख हुआ।

(६) (जब) वह कामिनी रसीले अमृत वचन कहने लगी (७) तब उन्हें वह राजकुमार गात के आठों अंगों को कान के रूप में [परिणत] कर सुनने लगा।

टिप्पणी—(१) अजान < अज्ञान। (४) जेत < यतिम < यावत् = जितना। (६) रसार < रसाल।

[११०]

बहुरि कुँवरि[1] रस कथा उभासी । जनु कुमुदिनि ससि पम बिगासी[2] ।
कहसि महारस नगर अनूपा । बिक्रम राय पिता जगभूपा ।
तहि घर धिय[3] मैं राजकुमारी । मधुमालति दुहुँ जग उजियारी ।
मही पिता घर संतति बारी । राजगिरिह पुनि[4] राजदुलारी ।
औरि बाति जति[5] कामिनि कही । सो न कुँवर चित एको रही ।
समुझि समुझि स बात चित सौं हरउ गियान[6] ।
जस लोन पानि महँ परिकै[1] महजहि[2] खोव[3] अपान ॥

पाठान्तर—मा. में पता नहीं है। ए. में उपर्युक्त अर्द्धाली ३ का चरण २ और अर्द्धाली ४ का चरण २ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए. कुँअरि। २ ए. सिर समी प्रगासी।
(३) १ ए. धिया।
(४) १ ए. राजा घर मैं।
(५) १ ए. और बात जन।
(६) १ ए. चित सौं हरे ग्यान।
(७) १ ए. में यह शब्द नहीं है। २ ए. में कै। ३ ए. गोन थे।

अर्थ—(१) तदनंतर [राज] कुमारी ने [अपनी] रसमयी कथा उद्‌भासित (प्रकाशित) की, मानों कुमुदिनी शशि के प्रभ में विकसित हुई हो। (२) उसने कहा, "अनुपम महारस नगर में जो जगभूप विक्रम राय हैं वे मेरे पिता हैं। (३) उन्हीं के घर में मैं कन्या और राजकुमारी हूँ मैं मधुमालती [नाम से] दोनों जगत् में प्रकाशित (प्रख्यात) हूँ। (४) मैं ही बालिका पिता के घर में [एकमात्र] संतान हूँ और इसलिए राजगृह में राजा की दुलारी हूँ।" (५) और जो बातें उस कामिनी ने कहीं वे एक भी कुमार के चित्त में न रहीं।

(६) इन्हीं बातों को समझ-समझ कर उसके चित्त से ज्ञान हर उठा (७) [और उसकी दशा ऐसी हो गई] जैसे लवण पानी में पड़कर अपना आपा (आत्मत्व) सहज ही में खो बैठता है।

टिप्पणी—(१) उभास < उब्भास < उद्‌भासय् = प्रकाशित करना। (३) धिय < धीआ < दुहितृ = लड़की, पुत्री। (४) बारी < बालिका। (७) अपान < अप्पाण < आत्मन्।

[१११]

पुनि औ चेत चित[1] सवरि गियाना[2] । उठि बसउ[*3] प लाइ अपाना ।
पेम बान[1] दुहु लोयनि भरा[2] । मा[3] अचेत चरनन तर परा[4] ।
तब वर कामिनि अंम्रित नीरू । छिरकि कुंवर[1] मुख[2] परस सरीरू[3] ।
निरखि कुंवर मुख दया मयानी[1] । गहि आंचर पोछसि[2] चखु[3] पानी ।
दया भई[1] मन मोह जनावा । गहि चरनन[2] सा[3] सीस उचावा ।
बहुरि कुंवर[1] उठि बसउ[2] चितहि समारसि[3] चेत ।
अंम्रित बचन सोहागिनि पूंछ[1] लागि स[2] हेत ॥

पाठान्तर—(१) १ मा चेत भई ए चित मो। २ ए गौरी ग्याना। ३ ए बैठा रा बैठेउ।
(२) १ मा पानि ए प्यास। २ मा दुहु लोयन भरेऊ, ए दोइ लोयन भरेऊ। ३ मा मैं ए भौ। ४ ए चरनन्ह। ५ मा ए परेऊ।
(३) १ मा में 'कुंवर' शब्द नहीं है, ए छिरका कुंवर। २ मा चखु, ए के। ३ मा समर ममीक ए मुख ममीक।
(४) १ मा बहुरि कुंवर देखि चितहि मयानी रा बहुरि निरखि मुख दया मयानी ए बहुरि कुंवरि चित माया जानी। २ ए पोंछा। ३ मा मुख।
(५) ए भौ। २ मा चरनन्हि ए चरनन्ह। ३ ए सौं। ४ ए चनावा।
(६) १ ए कुंवरि। २ रा बैठेउ ए बैठी। ३ ए सँभारा।
(७) १ रा पूछहि। २ मा लागि सो ए लागी।

अर्थ—(१) फिर भी उसने चित्त में ज्ञान का स्मरण कर चेत किया, वह उठ बैठा किंतु आत्मा (चेतना) खोकर। (२) उसके दोनों नेत्रों में प्रेम के बाण भर गए थे इसलिए वह अचेत होकर [राजकुमारी के] चरणों के नीचे (चरणों पर) आ पड़ा। (३) तब उस श्रेष्ठ कामिनी ने कुमार के मुख पर अमृत-जल छिड़क कर शरीर का स्पर्श किया। (४) कुमार का मुख देखकर वह दया और ममता से भर गई और अपना अंचल पकड़ कर उसने [कुमार के] आंसुओं का पानी पोंछा। (५) उसके मन में दया हुई और मोह (ममत्व) ज्ञात हुआ [इसलिए] उसने [कुमार के] सिर को [अपने] चरणों से उठाया।

(६) तदनंतर कुमार उठ कर बैठ गया और उसने चित्त में चेत समाला (७) [उसको चेत में देख कर] सुहागिनी हेत (प्रेम) पूर्वक अमृत-वचनों में प्रश्न करने लगी।

टिप्पणी—(१) अपान < अप्पाण < आत्मन्। (२) लायन < लोयण। (४) चखु < चक्खु < चक्षु। (७) हेत < हित = प्रेम।

[११२]

रम रम पूंछ राज कुमारी । भ सचत बहु बचन[1] संभारा ।
निरभौ भए मरहि बमि[1] माथा । कौन भाउ[2] कौप तोर[3] गाथा ।

मोहि कहु अपने जिय कै पीरा । कांप कौन भाउ सरीरा ।
औ छिन छिन जिउ बिसभर जाई । कहहु सत्त तुम्ह पिता दोहाई ।
निभरम होहु न भरमहु काहू । कहहु कौन गुन खोइ गवाह आहू ।
सहज हेतु रस पूछौं कई तोर हरउ गियान ।
अमिअ छिरकि बसारउ समुझसि कस न अपान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मो सचेत कहु बात रा कहु सचेत होइ बचन।
(२) १ ए निरभै मो तजि कहहि म मा निरभै मैं मैं तजि कहु। २ ए भाव।
३ मा तुम्ह, ए तुम।
(३) १ ए आपन जिव की रा जिय अपने कर। २ मा कौन बिभाउ ए कौने भाव।
(४) १ ए छन छन। २ ए जिय। ३ रा कहहु सत तुम ए कहु सत तोही।
(५) १ ए सौं। २ ए कै।

अर्थ—(१) फिर धीरे-धीरे राजकुमारी पूछने (कहने) लगी "सचेत होकर सम्हाल कर वचन कहो (बोलो)। (२) निर्भय होकर जैसी-कुछ बात हो कहो; किस भाव से (किस कारण) तुम्हारा शरीर कांप रहा है? (३) और क्षण-क्षण तुम्हारा जीव बेसँभाल हो जाता है? सच कहो तुम्हें [तुम्हारे] पिता की दुहाई है। (४) निर्भ्रम (निर्भय) हो जाओ और किसी को भरमो मत (भय न करो) बताओ किस गुण (कारण) से तुम खो-सी जाते (अचेत हो-हो जाते) हो।
(५) मैं [तुम से] इस रस का सहज हेतु (कारण) पूछती हूँ; किसने तुम्हारा ज्ञान हर लिया? मैंने तुम्हें अमृत छिड़क कर बैठाया, [तब] क्यों तुम [अपने] आत्मा (आत्मभाव) को नहीं समझ रहे हो?"

टिप्पणी—(२) निरभो < निर्भय। (७) अपान < अप्पाण < आत्मन्।

[११३]

कहा कुंवर सुनु धनि पियारी । मोहि तोहि प्रीति पुरुब बिधि सारी ।
तहि खन जीवन मानि नाहि लाखा । म जिउ क तोर दुसर बनाव ।
म न आजु मोर दुसरै उपारी । तोर दुख गउ मोहि आनि निरारा ।
जहि दिन सिरजउ आगि बिधि मागा । तहि दिन मोहि लागउ दुख तोरा ।
यह कामिनि तोहि प्रीति क मान । मोहि मोरी मा ग्यानि सरीर ।
पुन दिना गउ आसा सुन्दरी प्रीति कै मोर ।
मोहि मारी बिधि ग्यानि क तो मह सिरउ सरीर ॥

पाठान्तर—मा ए ए अर्धाली २ तथा ३ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए प्रीति पुरुब ए पूर्व प्रीति।
(२) १ मा ... ए ...।
(३) १ ए ... मोरि आज म ... मैं ... तोर दुसर। २ ए तोरै दुख मोहि ... मोहि ... दुख मोहि ... ।

(४) १ ए जा दिन सिरा जाय। २ ए बरसा।
(५) १ मा तुम्ह ए जो। २ ए क। ३ मा भी ए लौं।
(६) १ रा पुब्ब दिनम सो मा पूरब दिन मेउ ए पूर्ब दिनहिं सौं।
२ ए जानौं। ३ ए तोहरी प्रीत क।
(७) १ ए एह मरा (< सिरा फारसी लिपि)।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा, "ऐ प्रेम-प्रिया, तुम में और मुझ में प्रीति विधाता ने पूर्व ही [निर्मित] कर दी थी। (२) [अब] इस समय में मुझे और तुम्हें जीवन का लाभ हुआ मैंने जीवन देकर तुम्हारा दुःख मोल लिया। (३) मैं आज ही तुम्हारे दुःख से दुखारी नहीं हूँ, तुम्हारे दुःख से मुझे आदि से पहिचान है। (४) जिस दिन विधाता ने मेरा मन (शरीर का सूक्ष्म रूप) बनाया, उसी दिन मुझे तुम्हारा दुःख दिखाई पड़ा। (५) हे श्रेष्ठ कामिनी तुम्हारी प्रीति के जल से मेरी मिट्टी को सान कर मेरा शरीर [निर्मित] हुआ।

(६) पूर्व के दिनों से ही मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रीति के जल में (७) मेरी मिट्टी को सान कर तब विधाता ने यह शरीर बनाया।"

टिप्पणी—(१) (६) पुब्ब < पुब्ब < पूर्व। (३) काम < काम। (५) (७) माटी < मृत्तिका।

[११४]

मै सब[१] तजि सकरेउँ[२] दुख तोरा । मोर जिउ तोर तोर जिउ[३] मोरा ।
प्रान आदि घट होत न आवा । बिधि तोर दुख मोहि तब[१] दरसावा ।
जौ रे बिकलपि[१] कहौं मैं[२] सोही । तोर दुख अधिक[३] दव[४] बिधि मोही ।
मै एहि दुख करौं[१] बलिहारी । सहस सुक्ख एहि दुख पर वारौं[३] ।
कौनि जीभि[१] बरनौं[२] दुख[३] बाता । दुख के रूप सुख निधि के[४] दाता ।
एक निमिख दुख कह[१] नहिं[२] पूज बारिहु[३] जुग क[४] सुक्ख ।
कौन कौन सुख बेरमब[१] तहि[२] दुख के[३] परमान ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए सब। २ मा सखेउ ए परखा। ३ मा दुख।
(२) १ मा तोहि। २ ए (पूरा चरण) बिधि मोहि ताहि भी दरस मरावा (गुल॰ १ ५७)
(३) १ रा बिकलपि ए कलपि। २ मा ८ रिघु। ३ रा रतन। ४ ए देह।
(४) १ रा दुख फेर ए दुख भी बलि। २ मा बलिहारी। ३ मा वारी।
(५) १ ए जीभ। २ मा बरनौं। ३ ए दुख। ४ मा सुक्ख निधि।
(६) १ मा दुख के ए कोई। २ ए न। ३ ए बारौं। ४ रा का।
(७) १ मा बरमउँ ए बसमेउ। २ ए लहि। ३ मा कैं।

अर्थ— (१) मैंने सब कुछ छोड़कर तुम्हारा दुःख संकलित किया और [तब से] मेरा जीव तुम्हारा और तुम्हारा जीव मेरा हो गया। (२) आदि (प्रथम) शरीर में जब प्राण नहीं आया था, तभी विधाता ने मुझे तुम्हारा दुःख दिखाया। (३) यदि मैं यह बनाकर कह रहा होऊँ, तो विधाता

तुम्हारा दुःख मुझे और भी अधिक है। (४) और मैं इस दुःख पर बलिहार जाता हूँ, सहज सुख इस दुःख पर न्योछावर हैं। (५) किस जिह्वा से मैं दुःख की बात कहूँ ? दुःख के [विविध] रूप सुख-निधि के देने वाले होते हैं।

(६) एक पल के दुःख को चारों युगों (के सुख) का स्वाद नहीं पा सकता है। (७) [पता नहीं] कौन-कौन से सुख उस दुःख के प्रसाद से मैं बिलसूँगा।

टिप्पणी—(१) संकर < संकल < सं + कल्प् = संकलन करना, जोड़ना। (६) सवाद < स्वाद।

[११५]

दुख मानुस करि[1] आदि गरासा। जहाँ[2] कँवल महँ दुख कर बासा।
जेहि दिन तहि दुख सिस्टि[1] समाना। तहि दिन तें जिउ[3] जिउ जाना।
मोहि न आगु उपजेउ[1] दुख तोरा। तोर दुख आदि संघाती मोरा।
अब मैं कहौं[1] दुक्ख कै भाँवरि[2]। दुइ जग[3] दउँ सुक्ख नउछावरि[4]।
न अपान[1] दै[2] तोर दुख लिया[3]। मरि न अब सो अम्रित[4] पिया[5]।
तोर दुक्ख मधु मालति सुख दाएक[1] संसार।
जहि जिय माहि[1] तोर दुख उपजा धनि[3] सो जग[4] औतार।।

पाठान्तर—मा ए में उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए कै। २ मा जम।
(२) १ मा दुगम सिरिस्ट, रा तेहि दुग ए दुग मेह सिस्टि। २ ए ता। ३ मा मैं जीउक जिउ ए तें जिउ जिउ कै।
(३) १ ए करमा।
(४) १ ए बाह। २ मा मोहि दुग गाऊ ए मोहि दुग भी। ३ ए जुग। ४ मा नेउछाऊ।
(५) १ ए मारन रा आपनो। २ ए तजि। ३ मा नियेऊ, ए लयऊ। ४ मा दुग अम्रित ए अम्रित रस। ५ मा पियेऊ।
(६) १ ए में यहाँ 'जा' और है।
(७) १ ए मोर। २ रा में यह शब्द नहीं है ए उपजै। ३ ए धन्य। ४ मा जगत।

अर्थ—(१) मनुष्य के नाते उसको दुःख ने आदि (सृष्टि के आरंभ) में ही ग्रास बनाया; [सृष्टि कर्ता] ब्रह्मा जिस कमल से उत्पन्न हुए उस कमल में ही दुःख का भी निवास था (उसी से दुःख भी ब्रह्मा की भाँति उत्पन्न हुआ)। (२) जिस दिन से उस (मानव) का दुःख सृष्टि में समाया (व्याप्त हुआ) उसी दिन से जीव ने अपने को जीव करके (ब्रह्म से भिन्न) समझा। (३) मुझे मात्र तुम्हारा दुःख नहीं उत्पन्न हुआ तुम्हारा दुःख तो मेरा आदि से ही संगी रहा है। (४) अब मैं दुःख की भाँवरि लेकर उसका हो रहा हूँ और उस दुःख पर दोनों जगत्—इहलोक तथा परलोक—के सुखों को न्योछावर [के रूप में] देता हूँ। मैंने अपनत्व (अपनापन—अपना पूरा

अस्तित्व) देकर [तुमसे] तुम्हारा दुःख लिया है और मर कर (अपना जीवन देकर) अब वह अमृत (मिलन-सुख ?) पिया है।

(६) तुम्हारा दुःख ऐ मधुमालती संसार को सुख देने वाला है, (७) और जिस जी में तुम्हारा दुःख उत्पन्न हुआ जगत् में उसका जन्म धन्य है।"

टिप्पणी—(२) समाय < सम् + आप् = व्याप्त होना। (४) कावरि < कम्बि = बाँस का टुकड़ा—कंधे पर रख कर बोझा ढोने के लिए बनाया हुआ बाँस का टुकड़ा जिसके दोनों छोरों पर ढोया जाने वाला बोझा लटका लिया जाता है।

[११६]

सुनिउं जाहि दिन[1] सिस्टि[2] उपाई। प्रीति[3] परवा विहुउं[4] उड़ाई।
तीनिउ[1] लोक ढूंढ़ि कै[2] आवा। आपु जोग कहु ठाउं[3] न पावा।
तब फिरि मोहि घट[1] पसेउ आई। रहेउ[2] लोभाइ न गएउ उड़ाई।
तीनि भुवन सब पूंछी बाता। कहु तुइ[2] कस मानुस घट[3] राता।
कहसि दुक्ख मानुस कर आसा[1]। जहाँ दुक्ख तह मोर नेवासा[2]।
जहि ठाँ[1] दुख होइ[2] जग भीतर[3] प्रीति होइ बस[4] ताहि।
प्रीति बात[1] का जान बपुरा जहि सरीर दुख नाहिं।।

पाठान्तर—(१) १ ए सुना जहि लगि। २ भा सिष्टि। ३ रा प्रान। ४ रा विएउ ए दीन्ह।
(२) १ ए तीनौ। २ ए मैं। ३ ए ठाँव।
(३) १ भा ए हम जिउ। २ ए रहा।
(४) १ ए पूछै। २ ग तै। ३ भा मौं।
(५) १ भा मानुस क भरासा ए मानुस कर बासू। २ भा तहाँ मोर बासा ए तहाँ मोर निवासू।
(६) १ भा में यह शब्द नहीं है। २ ए हो। ३ रा कलि तहं। ४ भा हाइ पुनि ए तिन्हौं पुनि।
(७) १ भा बात रा मात।

अर्थ—"(१) जिस दिन मैंने (इस जीव ने) सुना कि सृष्टि उत्पन्न हो गई है, मैंने प्रीति का पारावत उड़ाया। (२) वह पारावत तीनों लोकों को ढूंढ़ कर लौट आया किन्तु अपने लिए उपयुक्त स्थान उसने नहीं पाया। (३) तब वह फिर घट (अंतःकरण) में आकर प्रविष्ट हो गया और लुब्ध होकर [मेरे अंतःकरण में ही] रह गया उड़कर (अन्यत्र) नहीं गया। (४) तीनों भुवनों ने तब उससे यह बात पूछी 'कह, क्यों तू मनुष्य के घट (अंतःकरण) पर अनुरक्त है?' [प्रीति के पारावत ने] कहा, 'दुःख ही मनुष्य का आधार है और जहाँ दुःख रहता है, वहाँ मेरा भी निवास रहता है।

(६) जिस स्थान पर जगत् में दुःख होता है प्रीति भी उसी स्थान पर होती है (७) वह बेचारा प्रीति की बात क्या जान सकता है, जिसके शरीर में दुःख नहीं होता है।"

टिप्पणी—(१) उपाय < उत् + पादय् = उत्पन्न करना। परेवा < पारावत। (३) पैस < पविस < प्रविश् = प्रवेश करना। (४) रात < रक्त = अनुरक्त। (७) बपुरा < बप्पुड़ = बेचारा।

[११७]

तू मैं[1] दुवौ सदा संग[2] बासी । औ सतत[3] एक देह नेवासी ।
औ मैं तुइ दुइ[1] एक सरीरा[2] । दुइ माटी सानी एक नीरा[4] ।
एक बारी दुइ[1] महँ[2] पनारी । एक दिया[3] दुइ घर[4] उजियारी ।
एक जीउ दुइ[1] घट संचारा[2] । एक अगिनि[3] दुइ ठाए धारा[4] ।
एकै हम दुइ कै औतारे । एक मदिल[1] दुइ किए दुवारे[2] ।
एक जोति रूप पुनि एकै[1] एक परान एक[2] देह ।
आपुहि आपु जो देइ कोइ चाहै[1] तहि कर[2] कौन सनेह[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मैं तो। २ मा ए संग। ३ ए. संगति।
(२) १ मा औ हम तुम्ह दुइ ए औ हम तुइ तो। २ मा ए सरीरू। ३ मा ए दुवौ मांहि (माटी—ए)। ४ मा ए नीरू।
(३) १ रा मा कर बिन। २ मा बहीं ए भई। ३ मा ए दीप। ४ रा घट।
(४) १ मा. दुहुं। २ मा संचरेऊ, ए सचारेउ। ३ ए जगम। ४ मा. ठां भइ धरेऊ, ए ठा औतारेउ।
(५) १ मा मदिर। २ ए किया दुवारे।
(६) १ ए एक जोत रूप सब रा एक जोति रूप पुनि एकै। २ मा एक।
(७) १ ए. आपु भराम काह चाहै। २ मा ए एकर। ३ ए सनेह।

अर्थ—"(१) तू और मैं दोनों सर्वदा संग-संग रहने वाले थे और सर्वदा एक ही देह में निवास करते थे। (२) और मैं तथा तू दोनों एक शरीर [के] थे दोनों [के शरीर] की मिट्टियाँ एक ही जल से सानी गई थीं; (३) एक ही जल दोनों पनारियों में बहता [रहा] है एक ही दीपक दो घरों में उजाला करता [रहा] है। (४) हम एक ही जीव थे जो दो शरीरों में संचरित हुए; एक ही अग्नि थी जो दो स्थानों पर जलाई गई (५) हम एक ही थे जो दो करके अवतरित किए गए; एक ही मंदिर (भवन) था जिस के दो द्वार किए गए।

(६) एक ही ज्योति थी रूप भी एक ही था एक ही प्राण था और एक ही देह थी (७) [अतः] यदि [अब] अपने को कोई अपने को ही देना (समर्पित करना) चाहे तो उसका (उसके बारे में) कौन सा संदेह [होना चाहिए]?

टिप्पणी—(२) माटी<मृत्तिका। (३) पनारी<प्रणाली। दिया<दीअअ<दीपक। (५) दुवार<द्वार।

[११८]

तैं जो मरम कहसि मैं तोरी । तैं रवि मैं जग[1] किरनि अजोरी ।
मोहि आपुहि जनि[1] आन निरारा[2] । मैं सरीर तुइ[3] प्रान पियारा ।
मोहि तोहि जो प्रीति बनि गई[1] । एक जोति दुइ[2] भाउ[3] देखाई ।
हम[1] पियास मधु स्नेउ हरी । हम तुम्ह दुहुं परिच यम करी ।

अजहूँ मोहि न[1] चीन्हेसि बारी । सुमरि देखु चित आदि चिन्हारी ।
अलभग कौन पेम कर अहा[1] जा दुहु जिय केर[2] ।
होत आपु महँ परिच[1] सइँ मर भर जिउ[2] फेरि ॥

पाठान्तर—भा में अंतिम तीन अर्द्धालियाँ हैं क्रमशः उपर्युक्त ४ ५, ३।
(१) १ ए यह शब्द नहीं है।
(२) १ ए आपुन पै (<पनि फ़ारसी लिपि)। २ ए निनारा। ३ ए तैं।
(३) १ रा पछरावै माई। २ भा दुहुँ। ३ ए भाव।
(४) १ भा ए समुझि। २ ए देखौं।
(५) १ ए अबहुँ न मोहि तै।
(६) १ ए आहा। २ ए जो दुवौ घट फेरि।
(७) १ ए हुती जा आपु मो परचै। २ भा मइ मर परिए, ए सभै नीर भर, रा मम नर भर जिउ।

अर्थ—"(१) तू यदि समुद्र है तो मैं तेरी लहर हूँ; तू यदि सूर्य है तो मैं संसार में [उसकी] प्रकाश-किरण हूँ। (२) मुझे और अपने को तू [एक दूसरे से] अलग [किया हुआ] न समझ; मैं शरीर हूँ तो तू उसका प्रिय प्राण है। (३) मुझे और तुझे कौन अलग कर सकता है? एक ही ज्योति दो भावों (रूपों) में दिखाई पड़ रही है। (४) मैंने ज्ञान-चक्षु से सब कुछ निरख कर देखा; मेरा और तेरा—दोनों का पारस्परिक परिचय [न जाने] कब का है। (५) ऐ बालिका तूने आज भी मुझे नहीं पहचाना? स्मरण करके देख तेरी और मेरी पहचान आदि की है।

(६) क्योंकि दोनों जीवों का प्रेम का रूप [पहले से ही] उलझा हुआ था, (७) [इसलिए] आपस में परिचय होते ही मनुष्य [अब] स्वयं अपने जीव को वारण कर रहा है।"

टिप्पणी—(१) जौ<यद<यदि। (२) निरारा<निस्सारित<निर्सासित=निःसारित बाहर या अलग किया हुआ। (५) बारी<बालिका। (७) सइँ<स्वयम्।

[११९]

अब लहि बिनु जिय[1] जीवन सारा[2] । आजु[3] देखि तोहि जीउ सँभारा[4] ।
देखत जिन[1] पहिचानां[2] तोही । इह[3] रूप जइ छाँगा[4] मोही ।
इह रूप तब[1] अहुत छपानां । इह रूप अब[2] सिस्टि[3] समानां ।
इह रूप सकती औ सीऊ । इह रूप त्रिभुवन कर[1] जीऊ ।
इह रूप परगट महँ भसा । इह रूप जग रोंद[1] नरसा ।
इह रूप त्रिभुवन जग अरस[1] महि पयाल आगाम ।
गोई रूप परगट न देखा तुव मायें परगाम[1] ॥

पाठान्तर—(१) रा अब बिनु जिय ए अबही बिनु जीव। २ भा ए मारेउँ। ३ ए आजु न। ४ भा जीउ सँभारेउँ ए जीवन हारेउँ।
(२) १ भा देखत हीं ए देखत ही मैं। २ भा पहिचानेउँ। ३ ए एहि। ४ भा जिन छरेउ ए छरे न।
(३) १ ए तौ। २ ए तब। ३ भा सिस्टि।

(४) १ ए बी।
(५) १ ए राक।
(६) १ मा तिरभुवन बेरासी ए त्रिभुवन कै बेकमी। २ मा पाताल अकास ए पताल अकास।
(७) १ मा साइ रूप परगट ताहि माही देखेउ म्यान हिमास ए इहै सोमा प्रगट ताहि माथे देखै सान हुलास।

अर्थ—'(१) अब तक मैं अपने जीवन को बिना जीव के सम्हालता रहा आज ही तुझे देखकर अपने जीव को सँभालता हूँ। (२) आज मात्र में ही देखकर मैंने तुझे पहचान लिया [कि] यही रूप था जिसने मुझ को छल से वश में कर लिया था। (३) यही रूप तब छिपा (प्रच्छन्न) था और अब [देखता हूँ] यही रूप सृष्टि में समा रहा (व्याप्त हो रहा) है। (४) यही रूप शक्ति है यही रूप शिव है और यही रूप त्रिभुवन का जीव (उसकी चेतना) है। (५) यही रूप [सृष्टि में उसके] बहुतेरे वेषों में प्रकट हुआ है; यही रूप जगत् में रंक है और नरेश भी है।

(६) यही रूप त्रिभुवन और जगत् में विलस रहा है और यही रूप पृथ्वी पाताल और आकाश [में विलस रहा है]। (७) यही रूप मैंने प्रत्यक्ष देख लिया तुम्हारे मस्तक पर प्रकाशित है।"

टिप्पणी—(५) रांक < रंक = गरीब दीन। (७) पयार < पाताल।

[१२०]

इहै रूप परगट बहु[१] रूपा। इहै रूप बहु[२] भाउ[३] अनूपा।
इहै रूप सब[१] ननन्ह जानी। इहै रूप सब[२] सायर मोंती।
इहै रूप सब[१] फूलन्ह[२] बासा। इहै रूप रस भवर बरासा[३]।
इहै रूप ससिहर औ सूरा। इहै रूप जग पूरि अपूरा।
इहै रूप अस आगि निरमा। इहै रूप परि घर मो पियानी[१]।
इहै रूप जल थर[१] औ महिअर माउ अनग बगाउ।
आपु मवाइ[१] जो र मोइ[२] दरस मो रिछ[३] दरस पाउ॥

पाठान्तर—रा मे अर्धालियों का क्रम है उपर्युक्त २ १ ४ ३ ५।
(१) १ ए सब। २ मा जेहि ए जो। ३ ए भाव।
(२) १ मा ए सब। २ मा ए सब।
(३) १ मा ए सब। २ रा फूलनि। ३ ए सब माँग बेसामा।
(५) १ ए के बिरला जग काहु न जाना रा इहै रूप गम मिरग गमाना (तुल पूर्ववर्ती छः अर्धाली ३)।
(६) १ मा थल।
(७) १ ए अजान। २ मा ए में 'दे बाई' नहीं है। ३ ए चाउ।

अर्थ—"(१) यही रूप बहुत से रूपों में प्रकट हुआ है यही रूप बहुत से अनुपम भावों में व्यक्त हुआ है। (२) यही रूप समस्त नैनों में ज्योति [बनकर समाया हुआ] है यही रूप समस्त सागरों में मोती [बनकर उत्पन्न हुआ] है। (३) (३) यही रूप फूलों में बास बनकर व्याप्त है और

यही रूप भ्रमरों के विलास का रस है। (४) यही रूप शशि और सूर्य है और यही रूप जगत् में पूरित होकर उसको आपूर्ण कर रहा है। (५) यही रूप सृष्टि के आदि तथा अंत में रहेगा और निदान में भी रहेगा—उसके न होने पर भी रहेगा। और इसी रूप को हृदय में रखकर जो ध्यान किया जाता है, वह ध्यान है।

(६) यही रूप जल स्थल और महीतल में अनेक भाव (रूप) दिखाता है (७) जो कोई अपने को गँवा कर इसको देखता है, वही इसको किसी मात्रा में देख सकता है।

टिप्पणी—(२) सायर< सागर। (३) बराम< विलास। (४) ससिहर< शशधर= चन्द्रमा। (६) थर< स्थल। महिमर< महीतल।

[१२१]

सुनत सुनत रस भाउ कै[1] बाता। कामिनि जीउ[2] सहज मद माता[3]।
सुनतहि[1] पेम बात जिय[2] भाई। पूरुब प्रीति[3] समुझि चित[4] आई।
जस[1] सुबास सेउ[2] मिल समीरू। दुइ मिलि कै[3] भ[4] एक सरीरू।
एत भाइ दुहु नेह[1] समाना। भा दूनहु कर[2] एक पराना।
सहजहि दुवौ[1] जीव[2] मिलि गए। रहा[3] न अंतर एक[4] भए।
पुनि जो पेम पिरीत पुरुब[1] कै विधि[2] जिय आइ[3] समानि।
उठी[1] ऊमि उर सांस दुहुन के[2] समुझि आदि पहिचानि॥

पाठान्तर—(१) १ ए भाव क। २ ए जीव। ३ ए है राता।
(२) १ ए सुनत। २ ए जिय। ३ मा करत। ४ ए पो।
(३) १ रा जैस। २ ए बास म। ३ ए म यह शब्द नहीं है। ४ ए भी।
(४) १ मा ए हेतु भाइ दुहुं बीच। २ मा भै दुनहुं के ए भी दुनहुं कर।
(५) १ ए सहजे दुनौ। २ मा जीय। ३ मा रहेउ ए. रहे। ४ ए एक जो।
(६) १ मा पुरुब रा में यह शब्द नहीं है ए पूरब। २ रा दुहुं। ३ ए. पम।
(७) १ मा उठें ए उठि। २ मा ऊमि उर सांस दुहु दुहुंनां ए ऊभी उर सांस जो रा ऊमि उसास दुहुन के।

अर्थ—(१) रस और भाव की बात सुनते-सुनते कामिनी (मधुमालती) का जीव सहज (स्वतः उत्पन्न) मद में मत्त हो गया। (२) प्रेम की बात सुनते ही जी को भा गई और जब उसने समझा, पूर्व [जन्मों] की प्रीति उसके चित्त में आ गई। (३) जैसे सुवास से समीर मिल [कर अभिन्न हो] जाता है उसी प्रकार दोनों मिलकर एक शरीर हो गए (४) और दोनों में इतना [अधिक] स्नेह आकर समा गया कि दोनों के प्राण भी एक ही हो गए। (५) सहज ही में (आपसे आप) दोनों के जीव मिल गए और दोनों में कोई अंतर न रहा दोनों एक हो गए।

(६) फिर जो पूर्व की प्रेम प्रीति दोनों के जी में आकर समाई (७) तो आदिम परिचय का स्मरण कर दोनों के हृदय में सांस ऊभ कर (ऊपर आकर) उत्थित हुई।

टिप्पणी—(४) समाव< सम्+आप=व्याप्त होना। एत< एतत्र< इयत्=इतना। (६) पुरुब< पुरुब< पूर्व। (७) ऊभ< ऊभय=ऊँचा करना, ऊँचा होना।

[१२२]

बिहँसि कहसि पुनि रसहि जो आई[1] । तुम्ह हौं[2] रस बातन्ह बौराई ।
चकित रही किछ कहि नहि[1] आवा । सुनि[2] रस बचन रसहि[3] रस पावा ।
निहचै[1] मोहि तोहि अंतर नाहीं । एक पिंड प[2] दुइ परिछाहीं ।
मो जिउ तुम्ह[1] घट भीतर ठाऊं । औ मोहि सों तोहि[2] परगट नाऊं ।
रूप मोर घट[1] दरपन तोरा । मैं सूरुज तुइ[2] जगत अंजोरा[3] ।
जसें जोति रतन नग माहीं[1] मैं तोहि[2] मोहि तुइ[3] सार ।
रतन जोति एस मोहि तोहि को जग राख पार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बिहँसि मारि गइ रस भेराई। २ ए तुहइ उन्ह ।
(२) १ मा चकित रहिउं किछ कहै न ए चकित रही कछ कहैं न। २ मा. बिन्। ३ रा रसिक ए रमी।
(३) १ ए निस्चै। २ ए एक पिंड परी रा एक सरीर सो।
(४) १ रा मो जिउ मा मोहि जिउ तुम्ह ए मार जीव तुम। २ रा और मोहि ताहि सा ए औ मो सौं तुम।
(५) १ ए रूप घट मो। २ ए मैं जो सूर तै। ३ ए उंजोरा।
(६) १ ए जैसी जोती रतननिरि माहे। २ ए तै मोहि। ३ मा मोहि तुम (?) ए मो तै।
(७) १ मा रतन जोति आपुस महं मिलि गए, ए रतन जोति जो संग रहै।

अर्थ—(१) फिर जब वह (मधुमालती) रस [के प्रभाव] में आ गई उसने हँस कर कहा 'तुमने मुझे रस की बातों से बावला कर दिया। (२) मैं चकरा रही और मुझसे कुछ कहते नहीं बना; [तुम्हारे] रस-वचनों को सुनकर मैंने रस (प्रेम) का रस (आनंद) पाया। (३) निश्चय ही मुझ में और तुम में कोई अंतर नहीं है, हम दोनो एक ही पिंड (शरीर) हैं, केवल [उसकी] प्रतिच्छायाएँ दो हैं। (४) मेरे जीव का स्थान तुम्हारे शरीर में है और मुझी से तुम्हारा नाम (अस्तित्व ?) प्रकट है। (५) रूप मेरा है और [उसके लिए] दर्पण तुम्हारा शरीर है; मैं सूर्य हूँ, तो तुम जगत् के प्रकाश हो।

(६) जिस प्रकार रत्न और नग में ज्योति होती है मैं तुम्हारा, और तुम मेरे सार हो; (७) [अतः] रत्न और ज्योति ऐसे मुझ-तुमको कौन अलग करने में समर्थ हो सकता है ?"

टिप्पणी—(३) निहचै < निश्चय। परिछाहीं < प्रतिच्छाया।

[१२३]

अब गुन बंधन बान तु[1] मारी । प्रेम लाइ जिउ[2] लीन्ह[3] मजारी[4] ।
प्रीति तुम्हारि माहि जिय छाई । त्रिग मन प्रेम मो जा न छपाई ।
बिन्तु[1] मोहि रम बान बौरी । हरु जाउ गिर बाहि ठगोरी ।
एक जाउ पर अहउ[1] हमारा[2] । गोऊ तुम्ह[3] हरि लीन्ह[4] निरारा[5] ।
बस तोर जाउ[1] निरम[2] मन माना । मार जीउ गोपुन ताहि[3] राना ।

मति जानहु सतिभाउ पर[1] पुरुषहिं अधिक सुभाउ ।
चौगुन करि करि जानियहि[1] बाला कर सति[2] भाउ ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्द्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए हैं। २ ए. जिव। ३ मा लिएहु (?)। ४ ए मझोरी।
(२) १ ए ताहरे मोरे। २ मा भ्रिगमद निसक न जाइ, ए. पम भ्रिगमद ना रै।
(३) १ मा लिएहु।
(४) १ ए जीव घट माहिं। २ मा ए पिआरा। ३ ए मो सुइ ली। ४ रा ए लीन्ह (<कीन्ह फ़ारसी लिपि) मा. लिएउ। ५ मा ए निनारा।
(५) १ मा जस रे जीउ ए जस जिव तुह। २ ए प्रीतम। ३ ए तुह।
(६) १ ए मत माव प्रम।
(७) १ रा कै कै जानहु ए. कै चित बाधा। २ ए बाला महँ सत।

अर्थ—"(१) अब हे कुमार, तुम मेरी बात सुनो प्रेम के लिए (के कारण) तुमने मेरा जीव अपनी अंजली में कर लिया (छीन लिया)। (२) तुम्हारी प्रीति जो मेरे मन में व्याप्त हो गई, तो मृगमद (कस्तूरी) की भाँति वह प्रेम अब छिपाया नहीं जा रहा है। (३) तुमने मुझे रस (प्रेम) की बातों से बावली कर दिया और मेरे सिर पर ठगौरी (चेटक) डालकर मेरा जी हर लिया। (४) मेरे घट (शरीर) में मेरा एक ही जीव था और उसको भी हर कर तुमने [मुझसे] अलग कर दिया। (५) जैसा (जितना) तुम्हारा जी [मेरे] प्रेम-मद से मत्त है उससे भी चौगुना मेरा जीव तुम पर अनुरक्त है।

(६) यह न समझो कि सत्य भाव पर पुरुष ही को अधिक स्वभाव (स्वाभाविक आग्रह) होता है, (७) बाला (नारी) के सत्य भाव को [पुरुष की अपेक्षा] चौगुना करके जानना चाहिए।"

टिप्पणी—(४) निरारा<निस्सारित<निर्भीक्षित=निष्कासित बाहर किया हुआ। (५) पिरम<प्रेम। (६) (७) सति<सत्य।

[१२४]

सुनत कुँवर[1] रस भाउ कै[2] बाता । जागउ मदन बियापउ[3] गाता ।
मदन कीन्ह[1] सब[2] कया[3] बिगासा । सहजहि भाइ[4] जग भोग बरासा ।
काम बियापत[1] कोपउ[2] गाता । रतिपति दरस सुनत[3] रस बाता ।
रात बरस[1] सिस्सत भे[2] मना । दुहु रिमि[3] रची काम क[4] मना ।
संवर निसु[1] जासों[2] जग हारा । तासों को जग जीत[3] पारा ।
सो जोबन सो मनमथ सो सो रूप[1] अगम ।
औ मद[1] पथ परानी[2] कहहु रह किमि[3] धम ॥

पाठान्तर—(१) १ ए. सुनत। २ मा माउ क ए भावक। ३ ए जागा मदन बिआपा।
(२) १ ए कुसुम। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ रा कया ए ध्यान। ४ मा जेहि कै पै ए जाके देह।
(३) १ मा. ए बेरुप। २ ए व्यापउ। ३ ए दरा सुने।

(४) १ ए मैन। २ ए मा। ३ ए दुइ दिस। ४ ए की।
(५) १ ए जीत। २ मा जिहु सो ए जाहि ते। ३ मा तेहि सा। ४ मा. जीतै।
(६) १ ए रितु।
(७) १ ए सग। २ मा पियारी। ३ ए महु केउ रहै।

अर्थ—(१) कुमार ने मधुमालती की रस (प्रेम) की बातें जैसे ही सुनीं, मदन जागकर उसके गात्र में व्याप गया। (२) मदन ने तब [उसकी] काया में विकास किया, और जगत् का भोग-विलास पल्लवित हो आया। (३) काम के व्याप्त होते ही [उसका] गात्र काँप उठा और [मधुमालती की] रस (प्रेम) की बातें सुनते ही उसे रति-पति (काम) का दर्शन हुआ। (४) उसके नैन रक्त वर्ण के और निसज्ज हो गए, और दोनों दिशाओं में काम की सेना की रचना हो गई। (५) जिससे इस जगत् में सकर ही हार गए, उससे संसार में कौन जीत सकता है?

(६) नवयौवन था नव (नवांकुरित) मन्मथ था, मदन नव रूप था, (७) और संग में प्रेम-पात्र था; तब कहो किस प्रकार धर्म रह सकता?

टिप्पणी—(२) सहर < मवक [दे]= अंकुरित होना पल्लवित होना। (४) रात < रक्त < रक्त। (६) मयम < मन्मथ।

[१२५]

पियर गात[१] मनमथ परगासा[२]। धुम धुक उर[३] मुचत पट[४] सोमा।
काम बाम बधा न सभारेसि[१]। बर कामिनि उर हाथ पसारसि[२]।
तब सजि आपनि सज[१] सिगारी। मसउ[*१] जाइ सज[३] बर मारी[४]।
बर कामिनि तब[१] हाथ अहाई[२]। उठि क मज क घर कै[३] आई।
कहूमि कुँवर अधरम का[१] कीज। मंता पितहि अपकीरति[३] दीज।
एम तिम मुग के कारन[१] सरयम कौन[२] समाउ।
तिरिया[१] थोर[२] अनरम[३] जग अपरीरति पाउ॥

पाठान्तर—(१) १ मा औरातन (<पूरि रक्त? फारसी लिपि) ए और राग। २ ए विगामा। ३ ए जीउ। ४ ए मुक विमु ए म भ मात है। ५ मा स्वामा।
(२) १ मा. समारै। २ मा पसारै।
(३) १ ए आनें सेज ए आपन मैन। २ ए बैमहु ए बैमी। ३ ए जाइ मैन। ४ ए नारी।
(४) १ ए जे। २ ए अंदाई। ३ मा कैं।
( ) १ ए तरस्भन। २ ए ए मान। ३ मा आपकिरति ए ए आपजस मा।
(६) १ मा एक निमिष मुग कारन आगुँ ए तिन एह मुग के कारन। २ ए जनि अागुँहि।
(७) १ ए तिरिहि। २ मा थोरहि। ३ ए आपजस।

अर्थ—(१) [कुमार का] प्राण पीला पड़ गया और (जब) काम ने [उसमें] प्रकाश किया उसका हृदय धुक-धुक कर रहा था, और उसका घट (शरीर) निःश्वास छोड़ रहा था। (२) काम-बाण के वेग को वह न सँभाल सका और श्रेष्ठ कामिनी के उर (उरोजों) की ओर उसने हाथ बढ़ाया। (३) तब अपनी शृंगारमयी शय्या छोड़कर वह श्रेष्ठ नारी की शय्या पर जा बैठा। (४) श्रेष्ठ कामिनी ने तब हाथ को आड़े लगाया और वह उठकर कुमार की शय्या पर आ गई (५) और उसने कहा "हे कुमार, यह अकर्म क्या (क्यों) करते हो [और इससे] अपने माता-पिता को अपकीर्ति क्यों देते हो?

(६) तिल भर सुख के लिए अपना सर्वस्व कौन नष्ट करे? (७) स्त्री थोड़े-से ही अपकर्म से जग में अपकीर्ति प्राप्त करती है।"

टिप्पणी—(१) पियर<पीअल<पीत=पीला। मुंच<मुच्=छोड़ना।

[१२६]

तिरिया मन चाहइ[1] जौ[2] पापू । खिरवहि[3] भरि पुनि नासै[4] आपू ।
पाप कर घर[1] तिरिया जाती । राखै जौ कुल होइ संघाती[2] ।
नाहर[1] तिरिया[2] राखि को पारा । कुल पै[3] अकरम बरजन हारा[4] ।
निमिख लागि पापी का होई[1] । कै कै पाप निरंतर खोई[2] ।
औ मन[1] धरम[2] जो किया[3] कराबा । अकरम कै का आपु[4] गमावा ।
दसहु दिसा करि[1] निरमल घर[2] सुजस उजियार ।
पठि पाप कै ओबरी[1] बरबस होइ कौ[2] कार ॥

पाठान्तर—भा. ए. में इस छंद की तथा अगले छंद की चौथी अर्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ भा. ए. लेइ। २ भा. जौं। ३ भा. में यह शब्द नहीं है, ए. खड़ा ख विरवहि कै। ४ ए. पहुँ रे नसावै।
(२) १ ए. पाप क घर जो। २ भा. संघाती।
(३) १ ए. नाहरि। २ भा. तिरियहि। ३ भा. बिन कुल। ४ ए. बरजनिहारा।
(४) १ भा. ए. निमिष लागि को (के—ए.) आपुहिं खोवा। २ भा. औगुन नरक माहँ हुत बासा ए. भौ पद नरक मौ बस।
(५) १ ए. ऐस। २ भा. ए. करम। ३ ए. जे कीन्ह। ४ भा. कै कै गवै ए. कै कै करम।
(६) १ ए. कुल। २ भा. ए. करम।
(७) १ ए. पाप की बावरी। २ ए. भरै हाथ मुँह।

अर्थ—"(१) स्त्री यदि पाप करना चाहती है तो वह धर्म का नाश करके अपने को नष्ट करती है। (२) स्त्री जाति पाप का घर होती है; यदि उसके साथ कुल हो तो वही उसे रख (पाप से रोक) सकता है। (३) नहीं तो स्त्री को कौन रख (पाप से रोक) सकता है? कुल ही उसे अपकर्मों से मना करने वाला होता है। (४) एक पल के लिए पापी क्या (क्यों) हुआ जावे और पाप कर-कर के (अपने को) निरंतर क्यों खोया (नष्ट किया) जावे? (५) और [फिर]

समस्त जन्म (या जन्मों) का जो किया कराया है; उसको आप ही अकर्म करके कौन नष्ट करे ?

(६) निर्मल (कर्म) करके दसों दिशाओं में [स्त्री को] अपना मुख उज्ज्वल रखना चाहिए; (७) पाप की कोठरी में प्रविष्ट होकर बरबस ही कौन काला होवे (अपने को काला करे) ?

टिप्पणी—(४) निमिख < निमिष = नेत्र-संकोच अक्षि-मीलन। (५) जरम < जन्म (७) कोवरी < उववरिम < अपवरिका = कोठरी।

[१२७]

सुनो[1] कुंवर एक बचन[2] हमारा । धरम पंथ दुहु जग उजियारा[3] ।
जाके हियें[1] धरम गा जागी । सो जनु परै[2] पाप कै[3] आगी ।
कुल औ धरम दुवौ रखवारी । माता पितहि देइ[1] न गारी ।
निमिख लागि जो आपुहि नासा[1] । ता कहँ नरक माहिं भा बासा[2] ।
पाप पंथ चढ़ि जइ[1] सत राखा । सरग अमिअ फल तइ[2] पै चाखा ।
जग जीवन जग[1] परिहरहिं[2] जिन्ह[3] सत ऊपर भाउ[4] ।
सरबस तजहिं सत नहिं छाड़हिं[1] सुनहु कुंवर सतिभाउ ॥

पाठान्तर—मा में छंद १२७ तथा १२८ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

मा ए में इस छंद की तथा पिछले छंद की चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा सुनहु ए सुनसि। २ ए है बात। ३ ए जो देव सँवारा।

(२) १ मा जीव ए जीव। २ मा जनु जरै ए जनु परै। ३ मा कर ए की।

(३) १ ए. माता पितहिं दै जाय रा मांग पिता दै जाय न।

(४) १ मा ए निमिखि लागि पानी का (के—ए) होई। २ मा ए कै (करि—ए) कै पाप नरक का गोई।

(५) १ ए जो। २ ए सुरग अमीरस है।

(६) १ मा जिउ। २ ए परिहरै। ३ ए जेहि। ४ ए भाउ।

(७) १ ए सरबस तजि सत राखै।

अर्थ—(१) [उसने कहा] "हे कुमार, मेरी एक बात सुनो; धर्म का मार्ग दोनों जगत्—इहलोक तथा परलोक—में उज्ज्वल [होता] है। (२) जिसके हृदय में धर्म [का भाव] जाग गया, वह पाप की अग्नि में कैसे पड़ सकता है ! (३) कुल और धर्म दोनों [मनुष्य के शील की] रक्षा में तत्पर रहते हैं; [अतः] माता-पिता को गाली नहीं देने देती है। (४) एक पल के [सुख के] लिए जो अपने को नष्ट करता है उसको नर्क में निवास मिल चुका [ऐसा समझना चाहिए]। (५) पाप के मार्ग पर आरूढ़ हो कर भी जो सत्य की रक्षा करता है स्वर्ग का अमृत फल वही चखता है।

(६) जिन्हें सत्य पर प्रेम होता है वे जगत् के जीवन और जगत् को छोड़ देते हैं; (७) वे सर्वस्व छोड़ देते हैं किन्तु सत्य को नहीं छोड़ते हैं हे कुमार, यह सत्य बात ले सुनो।

टिप्पणी—(४) निमिख < निमिष = नेत्र-संकोच अक्षि-मीलन। (५) अमिअ < अमृत।

[१२८]

जो[1] बिधि तोहि इहाँ[2] लै आवा । औ मोहि तोहि मा दिस्टि मेरावा[3] ।
सोई[1] बिधि मोहि तोहि जम[2] खेइहि[3] । परिहरि पाप धरम निधि देइहि[4] ।
अकरम कै का धरम नसाई[1] । गए धरम[2] पुनि जिउ[3] पछताई[4] ।
धरम जाइ[1] मुख[2] लाग कारी[3] । कुटुंब लाज कुल[4] आव गारी ।
हम तुम्ह[1] साथ[2] बचा यह कीज । रुद्र[4] ब्रह्म हरि[5] अंतर दीज ।
प्रीति सपत दिढ़ बाचा मोहि रे[1] यहु तुम्ह लेहु ।
जम जम[1] निरबाहिहि[2] बिधि[3] मोहि तोहि[4] सनेहु ॥

पाठान्तर—मा में छंद १२७ तथा १२८ परस्पर स्थानांतरित हैं।
मा में उपर्युक्त अर्धाली ३ ४ ५ का क्रम ४ ५, ३।
(१) १ ए जो। २ मा इहवाँ। ३ मा दुई आनि मेरावा ए भी दिस्टि मेरावा।
(२) १ ए सो। २ ए जे। ३ मा खई, रा ए खोइहि। ४ मा खेई।
(३) १ ए को धरम नसावै। २ मा कै अकरम। ३ ए जो जीव। ४ ए पछतावै।
(४) १ ए जाय। २ मा मुह। ३ ए लावै कारी। ४ ए लोग कुटुंब कहैं।
(५) १ ए तोह हम। २ मा ए साथु। ३ ए जो बाचा। ४ ए इन्द्र। ५ मा कंस सिउ।
(६) १ मा में यह शब्द नहीं है।
(७) १ मा ए जम्म जम्म। २ रा निरबाहौं ए निरबाहौ। ३ रा मधु ए तौ। ४ ए देहु जन्म।

अर्थ—"(१) यदि [यहाँ तक हुआ कि] विधाता तुम्हें यहाँ ले आया और मेरा और तुम्हारा दृष्टि-मिलन हुआ, (२) तो वही विधाता मेरे और तुम्हारे जन्म (जीवन) को भी खेवेगा (पार लगावेगा) और पाप छोड़ (छुड़ा) कर धर्म की निधि प्रदान करेगा। (३) अधर्म करके क्या (क्यों) धर्म नष्ट किया जावे ? धर्म के जाने पर फिर जीव पछताता ही रहेगा। (४) यदि धर्म जाता है तो मुख पर कालिख लगता है, कुटुंब को लज्जा और कुल को गाली होती (मिलती) है। (५) हम और तुम साथ में हों (रहें) यह (ऐसी) बाचा हम दोनों को करनी चाहिए, और रुद्र ब्रह्मा और विष्णु को [इस वचन-दान में] मध्यस्थ (साक्षी) करना चाहिए।

(६) प्रीति [के निर्वाह] के लिए शपथ और दृढ़ बाचा (वचन) तुम मुझे दो और मुझसे लो; (७) तब विधाता मेरा और तुम्हारा स्नेह जन्म-जन्मांतर तक निभाएगा।"

टिप्पणी—(१) मेराव < मेलाव < मेल। (२) (७) जंम < जन्म = जीवन। (४) कारी < कालिम < कालिमन् = श्यामता कृष्णता दागीपन। (४) गारी < गालि = गाली अपशब्द। (५) (६) बचा बाचा < बच्च < वचस् = वचन। (६) सपत < शपथ।

[१२९]

राज कुँवरि[1] सुनु बचन हमार[2]। सपत बचा म[3] तुम्ह[4] सों हार[5]।
तोहि बिनु मोहि[1] जग जीवन नाहीं। तुम्ह[2] सरीर मैं[3] तुम्ह परिछाहीं[4]।
तुम्ह मो प्रान[1] मैं काया तुम्हारी[2]। तुम्ह[3] ससि मैं सो तोरि[4] उजियारी।
प्रान काया कहँ[1] जेंउ[2] प्रतिपारै। ससि[3] सतत[4] उजियारी[5] सारै।
मैं आपुन तेहि[1] दिन[2] परिहरा। जेहि[3] दिन तोर पेम जिय[4] धरा।
तुइ जो[1] समुँद म लहरि तुम्हारी[2] म जो[3] बिरिछ तुइ[4] मूल।
तोहि माहि सपत बचा[1] कहुँ[2] करौ म सुबास तुइ फूल[3]॥

पाठान्तर—(१) १ ए राजकुँवर (< कुँवरि फारसी लिपि)। २ ए बात हमारी बाचा माहि। ४ मा ए तोहि। ५ मा गनि हारी ए किरहारी।
(२) १ ए ताहि बिना। २ ए तुह रा तुम। ३ ए हम। ४ मा तोरि परछाहीं ए ताहरी छाँही।
(३) १ रा तुम मो प्राम ए तुह प्रान मा तुइ परान। २ ए हम का ताहारी। ३ मा तुइ रा तुम ए तुह। ४ मा तोरी ए सिरनि।
(४) १ ए काम कया के। २ रा जो (< जेउ फारसी लिपि) मा जिमि ... जमु। ३ ए ससी। ४ ए सतनि। ५ ए उजिआरा।
(५) १ रा मैं अपुनै तेहि ए मैं आपन। २ ए सबै। ३ मा जहि ... था। ४ मा जिन ए जिव। ५ ए धरा।
(६) १ रा तुम्ह ए तै। २ ए तोहारी। ३ मा तु जो ए तै रा मैं सो ... ४ मा ए मैं।
(७) १ ए बाचा। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा तु जो बास मैं फूल ... ए तै सुबास तै मन (तुम पूर्ववर्ती चरण)।

अर्थ—(१) [कुमार ने कहा] "हे राजकुमारी मेरे वचन सुनो; मैंने शपथ और वचन तुमसे हार दिये (हार दिए)। (२) तुम्हारे बिना जगत् में मेरा जीवन नहीं है; तुम शरीर हो तो मैं तुम्हारी प्रतिच्छाया हूँ। (३) तुम प्राण हो तो मैं तुम्हारी काया हूँ; तुम शशि हो तो मैं तुम्हारी ज्योत्स्ना हूँ। (४) प्राण जिस प्रकार काया का पालन-पोषण करता है और शशि [जिस प्रकार] सदैव उज्ज्वलता (प्रकाश) करता है [उसी प्रकार तुम भी मेरे जीवन को सार-संभार करो]। (५) मैंने तो आत्मत्व (अपना पृथक अस्तित्व) उसी दिन छोड़ दिया जिस दिन तुम्हारा प्रेम जी में धारण किया।

(६) तुम यदि समुद्र हो तो मैं तुम्हारी लहर हूँ मैं यदि वृक्ष हूँ तो तुम [मेरी] मूल हो। (७) मुझ में और तुम में शपथ का वचन ऐसा कब मैं सुवास हूँ और तुम [उसका आधार] फूल हो।"

टिप्पणी—(२) परिछाहीं < प्रतिच्छाया। (३) काया < काया। (६) बिरिछ < वृक्ष। (७) सपत < शपथ।

[१३०]

कवल कली[1] पुनि बदन बिगासा । सुरस बचन रस रस परगासा ।
पाप जो माता पिता[1] दुखाए । पाप जो बन महं दावा[2] लाए ।
औ जग[1] पाप करम[2] हहिं[3] जेत । नाउ लए[4] मोहिं जाहिं[5] न तेत ।
त सब पाप पन्तर पावौं[1] । जौ तुम्ह[2] प्रीति न मरि पहुँचावौं[3] ।
बचा[1] कीन्ह बिधि अंतर राखी[2] । रुद्र[3] ब्रह्म[4] हरि कह द साखी[5] ।
प्रीति तो एसी कीजिए[1] आदि अंत जहिं नेह ।
दुहु जग जो यह निरबहै[2] तौ कहु कौन सनेह[3] ॥"

पाठान्तर—(१) १ रा ए कली ।
(२) १ मा मता पितहि । २ रा बन माह दानी ए बन माह के दो ।
(३) १ रा मह जग । २ मा जनम । ३ ए हैं । ४ ए नाम सह । ५ ए जाहें ।
(४) १ ए पटन्तर पावै । २ ए तुम्ह । ३ ए मिर पहुँचावै ।
(५) १ ए बाचा । २ ए जानी । ३ ए रुद्र । ४ मा बम । ५ ए भगर जानी ।
(६) १ मा. में यहाँ 'जो' और है ।
(७) १ रा जुग जुग ए जग जग्म । २ रा यह परमै ए निरबाहो मा नहिं निरबहै । ३ मा. त्रिभुवन जनम सदेह ए तौ यह जनम सनेह ।

अर्थ—(१) फिर (तदनंतर) कमल कली सदृश मधुमालती के मुख ने विकास किया और यह अच्छे रस से पूर्ण वचन उसने धीरे-धीरे प्रकाशित किया; (२) "जो पाप माता-पिता को दुखी करने से होता है जो पाप वनखंड में दावाग्नि लगाने से होता है, (३) और भी जगत् में जितने पाप कर्म हैं उनके नाम मुझसे नहीं लिए जा रहे हैं (४) उन सब पापों की समानता पाऊँ यदि तुम्हारी प्रीति सीमा तक न पहुँचाऊँ (निबाहूँ)। (५) विधाता को अन्तर (बीच) में रखकर वचन दिया और रुद्र ब्रह्मा और विष्णु को साखी दी।

(६) प्रीति तो ऐसी करनी चाहिए जिसके आदि और अंत में स्नेह हो (७) फिर यदि यह (इस प्रकार की प्रीति) दोनों जगत्—इहलोक तथा परलोक—में निभ जावे तो कहो इसमें संदेह हो क्या है?"

टिप्पणी—मरि < मरिअं < मृतम् = मन भर पर्याप्त । (५) बचा < वच्च < वचम् = वचन। (६) नेह < स्नेह।

[१३१]

सपन बचा[1] आपुस मों[2] भएऊ[3] । पान प्रान सर्ग[4] मिलि गएऊ[5] ।
पुनि आपुस महं[1] रंग क[2] बाता । कहँ लाग जहिं[3] रंग जग[4] राता ।
प्रेम रंग[1] पूरन क राता । सहज निरस म[2] दूनौं माता ।
रतन हिरोनी[1] जरी निसानी[2] । कुंवर दीन्हि कुंवरहि[3] सहिदानी ।
औ जो कुंवरि[1] कर मुंदरी आही । सो आनें कर पाली[2] चाही ।

क्रीड़ा[1] कोह[2] विनोद लोमाने दुहु[3] जिय[4] पम समान ।
कबहू[1] रहसि जिउ[2] हुलसहिं कबहू[3] हरहिं गियान[4] ॥

पाठान्तर—मा में अर्द्धाली के दोनो चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए बाचा। २ रा मोहि (<मा) मा महं। ३ मा मिएउ, ए मैऊ। ४ ए प्रान को प्राम सेति। ५ ए मैऊ।

(२) १ ए मो। २ ए की। ३ रा कहै लाग जेहि मा कहै लाग जेहि ए कहैं जो लागे। ४ ए केहि रग।

(३) १ ए में यहाँ 'जो' और है। २ ए पीरम रस।

(४) १ मा हिरौंदी ए हिरौरी। २ मा मिदानी (?) ए बिनानी। ३ ए कुंमरि।

(५) १ ए और कुमर। २ रा ए पल्ली।

(६) १ मा कोरा। २ ए कन्द। ३ ए बिबि। ४ ए जो।

(७) १ ए कर्वाहि। २ ए जे। ३ ए कर्वाहि। ४ ए ग्यान।

अर्थ—(१) [जब] शपथ और वचन आपस में [उन दोनों में] हुए, तो प्राण प्राणों से मिल गए। (२) फिर वे आपस में रंग (प्रेम) की बातें कहने लगे—उस रंग (प्रेम) की जिससे जगत् रक्त है। (३) प्रेम के रंग में वे पूर्व [जन्मों] के ही रक्त (रँगे हुए) थे [इसलिए] सहज प्रेम मद में दोनों मत्त हो उठे। (४) रत्न और हीरों से जटित मुद्रा कुमार ने कुमारी को साभिज्ञान के रूप में दी (५) और जो कुमारी के हाथ में मुद्रिका थी उसे उसने अपने कर-पल्लव में कर लिया।

(६) दोनों के जी में प्रेम समाया था, [इसलिए] वे क्रीड़ा कौतुक और विनोद में लग्न हो गए। (७) कभी तो रभस् (हर्ष) में (से) उनके जी हुलास में आते थे और कभी उनके ज्ञान हर उठते थे।

टिप्पणी—(१) सपन < शपथ। बचा < बचन < बचस् = बचन। (३) रात < रत्त < रक्त = अनुरक्त। पिरम < प्रेम। (४) (५) साहिदानी < साभिज्ञान = चिरह स्मारक। पालौ < पल्लव। (६) कोह < कोट्ठ [दे] = कौतुक कुतूहल। (७) हुलस < उल्लस्।

[१३२]

पम भाउ दुनहु अनुसरऊ[1] । पर आपन भय जिम नहिं परऊ[2] ।
कबहूं आलिंगन रस[1] दई । कबहूं सन्ताप जीउ हरि[2] लेई ।
कबहूं मन[1] बान जिउ[2] मारहिं[3] । कबहू अमिअ बचन अनुसारहिं[4] ।
कबहू[1] सीस चरन[2] ले लावहिं[3] । कबहू[4] आपु अपान गवावहिं ।
कबहू[1] तन जीउ हरि लही । कबहू[2] अधर सुधानिधि[3] दई ।
नम सोहागिनि जिम बस अपन्[1] भजित बागु ।
नम सन्ताउं जो मर[1] बिरहि[2] जियावहिं[3] नागु ॥

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा दुइ जन अनुसरेऊ ए दुनौ जो करेऊ। २ रा दुइ घट प्रान एक होइ परऊ, ए परम अनर बिउ न परेऊ।

(२) १ ए कबहि आलिंगन जे हँसि। २ ए कबहि कटाछ जीव जो।
(३) १ मा ए मौंहि। २ मा जिम ए हनि। ३ मा ए मारै। ४ मा ए अनुसारै।
(४) १ ए कबहीं। २ मा धरनन्हि। ३ ए सावै। ४ ए कबही। ५ ए गँवावै।
(५) १ ए कबही। २ ए कबही। ३ ए स्वाद रस। ४ मा केही ए केही (तुल पूर्ववर्ती चरण)।
(६) १ रा अधरनि ए अधर।
(७) रा नैन कटाछ जे मरहिं ए नैन कटाछ जो मारै। २ ए बिहँसि। ३ मा ए जिआवै।

अर्थ—(१) दोनों ने प्रेम-भाव का अनुसरण किया और पराए और अपने का भय चित्त में न रखा। (२) कभी [वह कुमारी] आलिंगन का रस देती थी तो कभी कटाक्ष से [कुमार का] जीव हर लेती थी; (३) कभी [उस कुमारी के] नेत्र-बाण उसके जीव को मारते थे तो कभी [उसके] अमृत [तुल्य] वचन उसका अनुसरण करते थे; (४) कभी वे सिर चरणों से लगाते थे तो कभी अपना आतम (चेतना) गँवा बैठते थे (५) कभी [उस कुमारी के] नेत्र कुमार का जीव हर लेते थे तो कभी उसके अधर उसे सुधा-निधि का दान करते थे।

(६) सुहागिनी के नेत्रों में विष निवास करता था [तो] उसके अधरों में अमृत का निवास था; (७) नेत्र के कटाक्षों से यदि वह (कुमार) मरता था तो [कुमारी के] अधर हँस कर उसको जीवित कर देते थे।

टिप्पणी—(२) (७) कटाछ < कटाक्ष। (४) अपान < अप्पाण < आत्मन् = चेतना।

[१३३]

कबहुँ[1] चिहुर लहरि विस सारहिं[2] । कबहुँ[3] नैन मंत्र पढ़ि मारहिं[4] ।
कबहुँ[1] लीन[2] पेम रस माहाँ । कबहु आप माह गरुवाहाँ[3] ।
कबहुँ[1] भायसि[2] प्रीति बढ़ाव । कबहुँ[3] सहज भाउ रस आव[4] ।
कबहुँ नैन मिलि रस उपजावहिं[1] । कबहुँ[2] पेम अनंग बढ़ावहिं[3] ।
कबहुँ[1] पेम समुंद हिलोरा । कबहु आपु महँ[2] प्रीति निहोरा ।
कबहु[1] पेम रस माती[2] गरबन[3] दिस्टि न लाउ[4] ।
कबहु[1] पेम भाउ रस मोही[2] प्रीतम दासि[3] कहाउ[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कबही। २ ए सारै। ३ ए कबही। ४ ए मारै।
(२) १ ए कबहीं। २ मा. ए लीन। ३ मा कबहुँ उपमा रस रस माहाँ ए कबही आपुस मौं मसे बाहाँ।
(३) १ ए कबही। २ मा मानसेउ ए मन मिलि। ३ ए कबहीं। ४ मा नैन मिलि रस उपजावै (तुल अर्धाली ४) ए सहज रस भाव देखावै।
(४) १ मा कबहूँ अधर रस सहज बनावहि ए कबहीं नैन मिलि रस उपजावै। २ ए कबही। ३ मा बढ़ावहि।
(५) १ ए कबही। २ ए कबही आपु मे।

(६) १ ए कबहिं। २ मा ए मन मोती। ३ मा गरबहि, ए गरब। ४ मा काहू न ऊपर देइ।

(७) १ ए कबहिं। २ मा माहैं ए माने। ३ ए पीतम दास (<दासि फारसी लिपि)। ४ मा कहेइ।

अर्थ—(१) कभी [उस कुमारी के] चिकुर लहरें लेकर (लहराते हुए) [सर्पों की भाँति] विष मारते (लगाते) थे कभी उसके नेत्र [मानो बैदक का] मंत्र पढ़कर [कुमार पर] छोड़ते थे (२) कभी दोनों प्रेम-रस में लीन होते थे तो कभी वे आपस में गलबाहीं डालते थे; (३) कभी [वह कुमारी] भावपूर्वक प्रीति बढ़ाती थी और कभी सहज भाव के रस में [लोट] जाती थी (४) कभी उस कुमारी के नेत्र [कुमार के नेत्रों से] मिलकर रस की उत्पत्ति करते थे और कभी [वे नेत्र] प्रेम का आनंद बढ़ाते थे (५) कभी प्रेम-समुद्र की हिल्लोल [आती] थी तो कभी वे आपस में प्रीति-निवेदन करते थे।

(६) कभी [वह कुमारी] प्रेम-रस में मस्त हुई गर्व के मारे [कुमार से] दृष्टि नहीं मिलाती थी (७) तो कभी प्रेम-रस से मुग्ध होकर वह अपने को प्रियतम की दासी कहती थी।

टिप्पणी—(१) चिहुर < चिकुर = केश। (३) भाय ∼ भाव। (४) हिलोर < हिल्लोल = समुद्र की लहर।

[१३४]

कबहू[1] पेम घुमाइ[2] अड़ाव । कबहू[3] सुधारस सींचि जियावै ।
कबहू[1] पेम[2] अनद हुलासा । कबहूं दुहुन्ह वियोग[3] तरासा ।
कबहू[1] नैन रूप फुलवारी । कबहू[2] जिउ जोबन बलिहारी ।
कबहू[1] पेम महारस लहीं[2] । कबहू जीउ[3] नवछावरि कहीं ।
कबहू[1] लाज समुझि मन[2] भाया । कबहू[3] नेह हुलास होइ माया ।
जौ जिउ वारि[1] प्रीति मउ[2] राग[3] सनेहु रहा[4] न जाइ ।
जौ मोहि[5] भाउ[1] सहज मा मिलई[3] प्रीति आप जिउ जाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कबहो। २ मा मान (<पान ?) मारि, ए पा (प) मारि। ३ ए कबही।

(२) १ ए कबहीं। २ ए पेम रस। ३ ए कबहीं दुनो बिराग।

(३) १ ए कबहीं। २ ए कबहीं।

(४) १ ए कबहीं। २ ए लई। ३ ए कबहीं जिउ।

(५) १ ए कबहीं। २ ए ज। ३ ए कबहीं। ४ मा गो भाता ए बपाता।

(६) १ मा जीवन ए जौ जीव। २ मा प्रीति मा ए प्रीतम से। ३ ए, मे यह शब्द नहीं है। ४ मा. रानि ए वाहि।

(७) १ मा जौ मन भाउ ए जौ सुभाउ। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा मिलही ए मिले।

अर्थ—(१) कभी [वह कुमारी कुमार को] प्रेम में चक्कर खिलाकर गिरा देती थी तो कभी उसे [अधरों के] सुधारस से सिंचित कर जिला देती थी; (२) कभी दोनों प्रेमानंद से प्रफुल्लित

उल्लसित होते तो कभी दोनों को [भावी] वियोग का भास [होता] (३) कभी उनके नेत्रों में रूप (सौन्दर्य) की झलकाड़ी होती तो कभी वे जीव (प्राणों) और यौवन से [एक-दूसरे पर] बलिहार होते थे (४) कभी वे प्रेम का महारस पान करते थे तो कभी अपने जीव [प्राणों] को न्योछावर करते थे (५) कभी लज्जा का ध्यान करके कुल [मर्यादा] का विचार करते थे, तो कभी उन्हें हर्ष का उल्लास हो जाता था।

(६) जब वह बालिका [कुमार के] जीव (प्राणों) को (अपनी) प्रीति के साथ रखती (रखने को प्रस्तुत होती) थी तब [अपने जीव—प्राणों—को उसको दिए बिना] कुमार से किसी प्रकार रहा नहीं जाता था (७) और जब वह सहज भाव से उससे मिलती थी तब [कुमार का] जीव [अपनी] प्रीति के साथ [उसके पास] जाने को [उत्सुक] होता था।

टिप्पणी—(२) (५) हुलास < उल्लास। (२) तरास < त्रास। (५) रहस < रभस् = हर्ष। (६) बारि < बालिका।

[१३५]

कहत सुनत रस बचन[१] सोहाए। लोचन उमगि[२] नींद[३] भरि आए।
लुबुधे पेम सब निसि[१] जागे। होत भोर चारिउ[२] चखु लागे।
पुनि[१] सुरहिनि सब[२] आई तहाँ। गइ सोवाइ कुँवर[३] कहँ जहाँ।
अचिजु[१] आइ ते देखहिं कहा[२]। दिपत[३] पेम दुहु माथे अहा[४]।
सुरत भाउ देखत[१] उन्ह जाना। दरिमरि सेज[२] कुसुम[३] कुम्हिलाना।
कुँवर सज[१] पर कामिनि कामिनि सज[२] कुमार।
सज[१] कन्लि क[२] साथे जनु सुरत अंत बिकरार[३]॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहहिं सुरस रस बात। २ मा भवस ए उमहिं। ३ ए नीर।
(२) १ मा लुबुधे नैन पेम रस। २ रा चारिहुँ ए चारी।
(३) १ रा ए पुनि। २ मा सिरि, ए जा। ३ ए आई। ४ ए गई लागि कुँअर।
(४) १ रा ए अचरज। २ ए जो देखैं काहा। ३ रा रूप। ४ ए जा माथे माहा।
(५) १ मा भाउ देखेन्हि ए भाव देखे। २ मा दरमरि नैन। ३ रा कुसुम्ह।
(६) १ मा नैन। २ ए कामी नैन।
(७) १ मा नैन। २ ए जे। ३ ए दुनौं सुरति बिकरारि।

अर्थ—(१) सुहावने रस (प्रेम) के वचन कहते-सुनते दोनों के नेत्र उमंग में आकर नींद से भर गए। (२) प्रेम-लुब्ध [वे दोनों] समस्त निशा जागे थे इसलिए सबेरा होते-होते [दोनों के] चारों चक्षु [नींद से] लग गए। (३) तदनंतर वहाँ वे सब देवबालाएँ आ गईं जहाँ वे [पहले] कुमार को सुला गई थीं। (४) वहाँ आकर वे क्या आश्चर्य देखती हैं कि दोनों के मस्तकों पर प्रेम दीप्त था। (५) उनको देख कर उन्होंने सुरत का भाव जाना [क्योंकि उन्होंने देखा] शय्या दली-मली (दलित-मृदित) थी और फूल कुम्हलाए हुए थे

(६) कुमार की सेज पर कामिनी थी और कामिनी की शय्या पर कुमार था (७) और वे शय्या बदल कर इस प्रकार सोए थे मानों वे सुरतांत में बेचेत [सोए] हों

टिप्पणी—(२) चनु<चक्षु<चक्षु। (३) सुरहिनि<सुरांगना (?)=देव बाला। (४) अचिनु<आश्चर्य। (५) हरि-मरि<हसित-मुदित। (५) सेज<शय्या। (७) बिकरार<बेकरार [फा]=अशांत अचेत।

[१३६]

औ दूनहु मुन्दरी[1] कर करीं[2] । आपु माहि[3] पुनि पहिरें[4] फेरी ।
बलया सन परी किछु[1] फूटी । कछुसि कसनि उरहि ग टूटीं[2] ।
औ पुनि[1] अंग चीर गा भागी । नख रेखा कुच ऊपर[2] लागी ।
उरहीं हार हारावलि[1] टूटी । उघसी माँगि बेनि ग[2] छूटी ।
देखहि सेज[1] मलगजी आई । औ लिलार[2] गा तिलक मिटाई[3] ।
कुंवर अधर पर परगट परी औ काजर[1] लीक ।
औ सोभित कारी महँ दीसी[1] नैन[2] सोहागिनि पीक ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए मुंदरी। २ मा ए फेरी। ३ मा आपुन माहि ए आपुन महं। ४ ए जा पहिरा ए पुनि पहिरें।
(२) १ मा परी कछ ए पहिरा जा। २ मा पर छूटी ए जा टूटी।
(३) १ रा पुनि ए जो। २ ए के उर कुच।
(४) १ मा ए उरहि हार हारावलि (हरावलि—ए)। २ मा औ चलि माँग बेनि पर, ए उघसी माँग बेनि गिर।
(५) १ मा देखहि सैन ए देखा सैन। २ मा रा लिलार। ३ ए मनाई।
(६) १ रा काजल।
(७) १ ए और सैनहि पर सोभित रा औ सोभित कारी महं। २ ए पान।

अर्थ—(१) और दोनों ने हाथों की मुद्रिकाओं को आपस में बदलकर पहन लिया था (२) कुछ चूड़ियाँ शयन (शय्या) पर फूटी [पड़ी] थीं और [कुमारी की] चोली की कसनी उसके उर (हृदय) पर ही टूट गई थी (३) और फिर [उसके] शरीर से चीर भाग (हट) गया था तथा नख-रेखा [उसके] कुचों पर लगी हुई थी (४) उर (हृदय) पर हार तथा हारावली भी टूटी हुई थी माँग उद्घाटित हो गई थी और वेणी खुल गई थी (५) उन्होंने देखा कि शय्या में मलिनता आ गई थी और [कुमारी के] ललाट का तिलक (टीका) मिट गया था

(६) कुमार के अधरों पर पड़ी हुई [कुमारी के] काजल की रेखा प्रकट थी (७) और सुहागिनी के नैनों की कालिमा में [कुमार की] पीक शोभित दीख रही थी।

टिप्पणी—(१) मुंदरी<मुद्रिका। (२) कसनी<कसन=कसने वाली। (४) उघसी<उद्+घस=खिसक। (५) लिलार<लिलाट<ललाट। (६) पीक<पिक्क=रेखा।

[१३७]

जो अछरिन्ह देखा[1] मन जानीं । इन्ह दुहु आपु माहिं[2] रति मानीं ।
कहिन्हि[1] बिछोह इन्हहि का[2] दीज । बिरह बियोग[3] पाप का लीज ।
मरन कस्ट[1] होइ[2] खिन[3] एक केरा । बिरह मरन तिल तिल सौ[4] फेरा[5] ।
फुनि[1] सब मिलि क[2] कीह बिचारा । नहि बूझिय[3] अस मरम हमारा ।
इहां सो[1] घरी एक कै[2] पीती । इन्ह दुहु आपु माहि होइ[3] बीती ।
मांत[1] पिता जन परिजन लोग कुटुब सम[2] कोइ ।
एहि बिनु हिया[1] फाटि कै[2] मरिहैं सो हत्या हम होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अछरिन्ह देखि कहा। २ ए इन्ह दुनहु आपुम मो।
(२) १ ए कहा। २ मा म इन्ह दुहुं ए इन्हैं का। ३ ए बियोग।
(३) मा कष्ट। २ ए हो। ३ मा घरी ए छिन। ४ मा मैं ए जे। ५ ए घेरा।
(४) १ रा पुनि ए में यह शब्द नहीं है। २ ए य। ३ ए बूझो।
(५) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ मा केरि, ए की। ३ ए आपुम मो भै।
(६) १ मा ए में यहां 'उहां' और है। २ मा ए सब।
(७) १ ए मेहि बिना हिय। २ मा मब।

अर्थ—(१) जब अप्सराओं ने [इस प्रकार उन्हें] देखा तो वे मन में जान गईं कि इन दोनों ने आपस में रति मानी थी। (२) उन्होंने कहा "इन्हें वियोग क्या (क्यों) दीजिए और विरह वियोग का पाप क्यों लीजिए ? (३) मरण का कष्ट तो एक क्षण का होता है पर विरह में तिल-तिल कर के सौ बार मरण होता है।" (४) [किन्तु] फिर सबों ने मिल कर विचार किया 'हमारा मर्म ऐसा नहीं समझ पड़ता है; (५) यहां तो एक घड़ी की प्रीति थी जो इन दोनों में आपस में होकर बीत चुकी है।

(६) [किन्तु कुमार के] माता-पिता, जन (सेवक) परिजन (इत्यादि) लोक (प्रजा) और कुटुब सभी कोई (७) इसके बिना (इसके विरह में) हृदय के फटने से मर जाएँगे और वह हत्या हम [सब] को होगी।"

टिप्पणी—(१) अछरी < अप्सरस् = अप्सरा। (२) बिछोह < विच्छोह [दे०] = विरह, वियोग। (३) खिन < क्षण। (५) पीति < प्रीति। (६) लोग < लोक।

[१३८]

फुनि*[1] सब मिलि क[2] एकमत भइ । सज सहित कुंवरहि लै गइ ।
जहि ठां हुत[1] ले गइ उचाई[2] । तब आनि[3] फुनि*[4] तहां इमाई ।
मोइ आपुनु[1] कौतुक कै जाहीं । इहां भएउ[2] दुग दुहु[3] जिय माहीं ।
कुंवरि उनीन्दि[1] साइ अरमानी । जामहु रमिक गएउ[2] रति मानी ।
दसा सगिरह रमम गा[1] राई । परमट सुरत चीन्ह सब[1] पाई ।

देखि सबै[1] हिय[2] डरपीं भा अजुगुत यह माह।
जौं राजा अस[1] किछु[2] सुनि पाव धरि भाठी हम[3] बाह॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए भा. पुनि। २ ए में यह शब्द नहीं है।
(२) १ ए सो। २ ए उचाई। ३ ए सेज। ४ ए जों।
(३) १ ए आपुस मो। २ ए भौ। ३ रा दुइ।
(४) १ ए उनींद। २ ए भौ।
(५) १ रा गएं, ए कै। २ ए सबै चिन्ह जो।
(६) १ मा सभी ए सबै। २ ए जिउ।
(७) १ २ ए में ये दो शब्द नहीं हैं। ३ ए भाटी मो रा भाही हम।

अर्थ—(१) फिर सब मिलकर एकमत हुईं और शय्या-सहित कुमार को वहाँ से [उठा] ले गईं। (२) [पहले] वे जिस स्थान से [कुमार की शय्या] उठाकर ले गई थीं वहाँ पर पुनः शय्या को लाकर उन्होंने बिछा दिया। (३) वे स्वयं तो कौतुक करके जागती रहीं और यहाँ [इन] दोनों के जी में दुःख हुआ। (४) कुमारी उनिद्रा में सोकर [इस प्रकार अलसाई मानों [कोई] रसिक उससे रति मान गया हो। (५) सखियों ने देखा कि रमण (प्रिय) [उसके साथ] रमण कर गया था और प्रकट में सुरत के सब चिह्न पाए जा रहे थे।

(६) यह देखकर वे सभी हृदय में डर गईं कि यह क्या अयुक्त कार्य हो गया; [उन्होंने कहा] "यदि राजा ऐसा कुछ सुन पावे तो हमें भट्ठी में झोंक दे।"

टिप्पणी—(२) सेज < शयन = शय्या। (४) उनींदि < उन्निद्रा = उचटी नींद। (५) रवन < रमण। (६) अजुगुत < अयुक्त = अयोग्य कार्य। (७) भाटी < भट्टिआ < भ्राष्ट्रिका = भट्टी।

[१३९]

राज कुँवरि तब[1] सखिन्ह[2] जगाई। कहहिं कि[3] कहु[4] तुम्ह जागहु[5] आई।
देखहु अजग्या जागनि जागी। उन्हि[1] माहिं गिर भान्हु भागी।
कहु जानि बूझि बिरु गान्हु[1]। कौन लाभ कहु[2] मूर[3] गवान्हु[4]।
काहु असि मद[1] रिदह बसारा[2]। काहु बांध गांठि भगारा।
काहु आपुहि अगजग न्याउहु[1]। आपु गदनि[2] भो[3] कन्हि सजान्ह।
गिन एक न सुरा[1] कारन[2] कुवँरि मगान्हु[3] आपु।
औ कन्यारि निवान्हु[1] गिरहि पतान[2] पापु॥

पाठान्तर—ए में अर्द्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ भा. कनि ए कै। २ ए सखी। ३ मा कहहिं कै ए कहेंगि। ४ ए कै। ५ ए सुइ जागा।
(२) १ ए उन्हिंग। २ ए लागे।
(३) १ मा बिन साईं ए बिन लावे। २ ए कै। ३ मा मूर। ४ ए दीसे।
(४) १ रा मद मद ए कहि बहु। २ ए दिये बिसारा।

(५) १ मा. ए लाए। २ ए मर्मेमि मा गई। ३ ए में। ४ मा कुल लजवाए, ए कुलहि लजाये।
(६) १ ए तिल एक सुख कै। २ मा में यहाँ 'काहू' और है। ३ ए गमाये।
(७) १ ए दिखायमि। २ ए पाप चढ़ाये।

अर्थ—(१) राजकुमारी को तब सखियों ने जगाया और कहा, कि "तुम्हें किसने आकर नष्ट किया? (२) जाग कर अपनी अवस्था देखो तुम उठीं नहीं और सिर में तुमने आग लगा ली (लगने दी)! (३) क्यों जान-बूझकर तुमने विष खाया, और किस काम के लिए मूल को खो दिया? (४) क्यों अति मन-भ्रम विकार किया, और क्यों गाँठ में अंगार बाँध लिया? (५) क्यों तुमने अपने को अपयश लगाया? क्यों तुम स्वयं भी गई और तुमने [अपने] कुल को भी लज्जित किया?

(६) एक क्षण के सुख के लिए, हे कुमारी तुमने अपने को नष्ट किया (७) और [अपने] सिर पर पाप चढ़ाये हुए कुल को गाली दिलाई।

टिप्पणी—(१) मूर < मूल = पूँजी। (४) बकार < विकार। (६) तिल < क्षण। (७) गारि < गालि = अपशब्द।

[१४०]

बहुरि सजग* होइ कहु कुमारी[1]। काह सखी दहु[2] मोहि गारी।
असम करम मो[1] कर अयानी[2]। जहि न होइ कुल धरम क कानी[3]।
मोहि बरबस जनि[1] अपजस लावहु। कै बिचार[2] मोहि दोस* छुवावहु[3]।
पाप करम कर निरतो[1] कहू। जसि पुर तसि[2] किरिया दहू[3]।
तुम्ह सखी लावहु* सरभरि*[1] मोरी। तुम्ह सबै मोहि काज न[2] थोरी।
मोहि तुम्ह किछू न अंतर बसहु कहौं बिचार[1]।
सौंगुन सपन[1] न जानौं दहु को गा मोहि[2] मारि॥

पाठान्तर—(१) १ ए संग्राम भो राजकुमारी। २ मा देहहि।
(२) १ ए मो। २ ए अयाना। ३ ए काना।
(३) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए बिचार। ३ ए दिस्य लगावहु।
(४) १ मा ए कै निरती। २ ए जैस पुरै तस। ३ ए लहू (दुख पूर्ववर्ती-वत्)।
(५) १ मा. ए तुम्ह (हैं—ए) सखि अरथ सरीरी रा तुम्ह सखी काज सरबरि। २ ए ताहि मेलि मारि न छाई।
(६) १ ए अपारि।
(७) १ ए सपना। २ मा मएउ निसि।

अर्थ—(१) फिर सजग होकर कुमारी कहने लगी "हे सखी तुम मुझे गाली क्यों दे रही हो? (२) ऐसा कर्म वह मूर्खा करती है जिसे कुल और धर्म की कानि (मर्यादा) [की चिन्ता] नहीं होती है। (३) मुझे तुम बरबस अपयश न लगाओ विचार कर लो और [यदि संतोष न हो

तो] मुझे दिव्य छुआओ। (४) पाप कर्म (अविहित संयोग) के बारे में निर्णय [जिस प्रकार चाहो] कर लो और जैसी क्रिया स्फुरित होती हो वैसी क्रिया तुम [मुझे] दो। (५) हे सखी, तुम मेरी तरवार लगा रही (मुझसे तकरार कर रही) हो; तुमसे मुझे चोरी नहीं होना है सकती है।

(६) तुममें और मुझमें कुछ भी अंतर नहीं है; बैठकर विचार करो और देखो। (७) मैं नहीं जानती कि सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) था कि स्वप्न; और यह भी मुझे पता नहीं कि कौन [इस भाँति] मुझे मार गया (मेरा जीवन नष्ट कर गया)।"

टिप्पणी—(१) गारी < गालि = अपशब्द। (३) दिव्य < दिव्य = किसी आरोप को असत्य प्रमाणित करने के लिए छुआ या उठाया जाने वाला तप्त लौह-पिंड। (४) निरनौ < निर्णय। फुर < स्फुर = प्रकाशित होना, प्रकट होना। किरिया < क्रिया = सत्यासत्य निर्णय के लिए अपनाया गया कोई साधन, शपथादि। (७) सौतुख < स + प्रत्यक्ष (?) = अतिशय प्रत्यक्ष।

[१४१]

कुँवर एक सपने मैं[1] देखा। सपन रूप सौतुख कर लेखा।
बिधन[1] मदन मूरति निरमएउ[2]। जम न होइ[3] पै जिउ[4] लै गएउ[5]।
जम कै[1] मीचु[2] निमिख दुख देई। बिरह मरन तिल तिल जिउ[3] लेई।
एहि[1] दुख सखी कैसे[2] निस्तरिहू[3]। बिन जिउ किमि जग[4] जीवन सरिहू।
अब न सकौं रहि[1] ओहि बिनु घरी। अचक गाज यह मोहि सिर[2] परी।

बिनु[1] जिय सखी सरीर यह[2] एक[3] तिल रहत[4] सदेह।
जिउ[1] अति निठुर निछोही[2] सक तौ[3] रह बिनु देह॥

पाठान्तर—(१) १ ए हम।
(२) १ ए बिधि। २ ए निरमय। ३ ए होय। ४ ए जीय। ५. ए गये।
(३) १ ए कि। २ मा मिरितु ए मितु। ३ ए जिव।
(४) १ ए यह। २ मा कैसें ए कैस। ३ ए निस्तरिहौं। ४ ए में यह शब्द नहीं है।
(५) १ ए में 'सकौं रहि' के स्थान पर 'जिऔं' है। २ ए सहँ का ते।
(६) १ ए बिना। २ रा जेहि। ३ ए तिल। ४ मा रहन ए रह।
(७) १ ए जीव। २ मा निछोही ए बिछोही। ३ मा तं।

अर्थ—"(१) स्वप्न में मैंने एक कुमार को देखा; स्वप्न-रूप होते हुए भी वह सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) सा था। (२) उसको विधाता ने मदन की मूर्ति-सा निर्मित किया था; वह यम नहीं था पर वह मेरे प्राण ले गया। (३) यम की (यम द्वारा दी हुई) मृत्यु एक क्षण मात्र दुःख देती है; किन्तु विरह का मरना तिल-तिल करके प्राण लेता है। (४) इस दुःख से हे सखी, मैं कैसे निस्तार पाऊँगी और बिना जीव (प्राणों) के किस प्रकार इस जगत् में जीवन बिताऊँगी? (५) अब उस (कुमार) के बिना एक घड़ी नहीं रह सकती हूँ; यह वज्र अचानक ही मेरे सिर पड़ा है।

(६) बिना जीव (प्राणों) के, हे सखी इस शरीर के तिल भर भी रहने में संदेह है; (७) जीव [अवश्य] अति निष्ठुर और ममताहीन है वह शरीर के बिना रह सके तो रहे।"

टिप्पणी—(१) मौतुख<सं+प्रत्यक्ष (?)=अविलम्ब प्रत्यक्ष। (५) गाज<गज्ज< गर्ज=बिजली वज्र। (७) निठुर<निष्ठुर। छोह<क्षोभ=ममता।

[१४२]

जग जीवन भावै सब काहू। मोहिं मरि[1] बिरह मुए सखि लाहू।
सब कहँ[1] मरन[2] होइ एक बारी। मोहिं सखी मरन[3] भएउ दयहारी।
प्रीति लाइ मोहिं गा पछेली। जिउ लै गा[1] सिर मोहनि[2] मेली।
जनम न सुना[1] नाहुँ[2] दुख केरा। अचक भएउ[3] हम्हँ[4] दुख भटमेरा।
बिरह दगध औ[1] दुख के लाजा[2]। दनौं आइ हम्ह जिय सौं[3] काजा।
कठिन पीर सखि[1] बिरह क मो मुँह कही[2] न जाइ।
किछु उपगार करहि जौ[1] पारहु[2] तौ[3] मरिहूँ[4] बिसु लाइ॥

पाठान्तर—(१) १ मा एंहि, ए तौ।
(२) १ ए के। २ मा मिरितु। ३ ए दुख जम्म। ४ ए मौ।
(३) १ ए भौ। २ ए मोहन।
(४) १ मा सुनेउं। २ ए नाव। ३ ए भौ। ४ मा मोहि ए औ।
(५) १ ए में यह पद्म नहीं है। २ ए कर राजा। ३ मा परेउ आइ मोहि दुहु सौं ए परा आइ मोरे सिर।
(६) १ मा अति। २ मा मोहि सखि सही ए तिस तिल रहा।
(७) १ मा किछु उपकार करौ जौ ए जिउ उपकार करहु किछु। २ ए में यह पद्म नहीं है। ३ मा तउ ए न तौ। ४ ए मरौं।

अर्थ— (१) इस जगत् में जीवन सभी को भाता है, किन्तु विरह भरते (झेलते) हुए मरने में ही मुझे लाभ (कल्याण) है। (२) सब को [जीवन में] एक बार ही मरण होता है किन्तु मुझे तो हे सखी [प्रति] दिन का मरण हुआ। (३) वह (कुमार) [मुझसे] प्रीति लगाकर मुझे छोड़ गया और मेरे सिर पर मोहिनी डालकर मेरा जीव ले गया। (४) जन्म (जीवन) भर दुख का नाम नहीं सुना था अचानक ही हमारा और दुख का मचा दो भटों का भिड़ंत हो गया। (५) विरह का दाह और दुख की लाज—इन दोनों का ही अब हमारे प्राणों से कार्य आ बना है।

(६) विरह की पीड़ा इतनी कठिन है कि हे सखी वह मेरे मुख से कही नहीं जाती है। (७) यदि तुम कुछ उपकार कर सको तो [विष दो क्योंकि] मैं विष खाकर मरूँगी।"

टिप्पणी—(१) लाहु<लाभ। (२) दैवहारी<दिवह+री<दिवस। (७) उपगार<उपकार।

[१४३]

तब[1] उन्ह सखिन्ह* कहा[2] सुनु बारी। अब दिन दस काटहु[3] दुख भारी।
सुख फल केर फूल दुख आवा[1]। बिनु दुख काहूं सुख नहिं पावा[2]।
बर कामिनि जौ जिउ खति[1] सहिए। तौ पीतम[2] सौं लाहा लहिए।
तिमिर[1] रैनि जौहि[2] जागि बिहाई[3]। तौ अंजोर[4] भिनुसारा[5] पाई[6]।
बिन कांट जग फूल न आवा। बाजु*[1] नाग अंब्रित केइ[2] पावा।
मंझन एहि कलि दुक्ख बिन[1] सुख मति[2] चाह कोइ।
प्रथमहिं[1] तरु पतझार कर*[2] तौ नौ[3] पल्लौ होइ॥

पाठान्तर—ए में तीसरी अर्द्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा ए पुनि। २ ए कहि कहा सखी। ३ मा काढ़ु।
(२) १ मा दुक्ख पहिल पाछें सुख आवा ए दुख फर केर सुख फर आवा। २ मा सुख कस काहूं न पावा ए सुख काहु न पावा।
(३) १ ए जौ प्रीतम लागि दुख। २ मा तौ प्रीतम ए कहुँ प्रीतम।
(४) १ ए दुख की। २ मा जौ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा बिहावै। ४ ए उजार। ५ ए भिनुसारे। ६ मा पावै।
(५) १ मा ए बाजु। २ ए के।
(६) १ ए दुख बिना। २ मा सुक्ख न।
(७) १ ए पहिले। २ मा तरुवर पतझारे, ए तरु पतझार हो। ३ ए नव।

अर्थ—(१) तब उन सखियों ने कहा "ऐ बालिका सुनो; अब दस (कुछ) दिनों तक इस भारी दुख को काटो (२) अब सुख-फल का फूल दुख आया है [तो आगे सुख भी आएगा]; बिना दुख के सुख किसी ने नहीं प्राप्त किया है। (३) हे श्रेष्ठ कामिनी यदि जीव (प्राणों) की क्षति सहन कीजिए, तभी प्रियतम से लाभ प्राप्त कर सकती हैं। (४) तिमिरपूर्ण रजनी यदि जाग कर बिताई जाए तभी उज्ज्वल प्रभात मिलता है। (५) कांटों के बिना संसार में फूल भी नहीं आया। नागों के बिना किस ने अमृत प्राप्त किया है?

(६) मंझन कहते हैं इस संसार में दुख के बिना सुख की कामना कोई न करे। (७) पहले पत्ते झड़ता है तब उसमें नवपल्लव लगते हैं।"

टिप्पणी—(१) बारी < बालिका। (३) खति < क्षति। लाह < लाभ। (४) रैनि < रयनी < रजनी। (५) बाज < बज्ज < वर्ज = बिना।

[१४४]

जगि गुन[1] आगि बिरह[2] बिसतारा। ओहि गति*[1] हानि[illegible] पिन[4] सुनारी।
बिन पाप[1] आइ[2] लग न मारा। बिन मरत गनि[3] [illegible] गिरा।
जहं[1] बिधि नाहिं [illegible] मन गोरा। मरिहि [illegible][1] गगहि मन गोरा।
[illegible] पर[1] परउ गागा। गा न भाज पाप[2] बन्धियाद।

प्रथमहि नाकु[1] कांट न मारी । तौ घर फूल[2] बराम पारी[3][5] ।

दहां कुँवरि कहुं[1] निसि दिन बिरह दगध उतपात ।
उहां कुँवर के जामें मसन कहु दहु कैसी बात[1] ॥

पाठान्तर—भा में उपर्युक्त द्वितीय अर्द्धाली सात अर्द्धालियों के अंत में आती है।
रा में उपर्युक्त अर्द्धाली ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए तैं। २ ए बिरहें। ३ ए भा रा भा पुनि। ४ भा चेत। ५ ए सोहागी।
(२) १ रा घाव ए घाव। २ ए. भा। ३ ए है।
(३) १ ए जो। २ भा दिही ए दीन्ह। ३ ए औखद करै। ४ ए रासु।
(४) १ भा काम है ए कला है। २ ए घरा। ३ ए पाइ।
(५) १ भा नामहि ए सौंमै। २ ए तौ अनप। ३ ए बेसमै फुलवारी। रा बरामहि बारी भा बरामै बारी (तुल पूर्ववर्ती चरण)।
(६) १ ए के।
(७) १ रा उहां कुंवर के जामें कहु मसन कमि बात ए उहां कुंअर के जामे मसन कहु कैसी है बात।

अर्थ—"(१) जैसी तुम उसके विरह में बेक़रार (अर्थात बेचैन) हो [उसी प्रकार] फिर उसे भी तुम्हारी चिंता होगी (२) विरह के आघात से एक ही नहीं मारा जाता है [बरन् दो मरते हैं], क्योंकि विरह-वाण की मार दो ओर होती है। (३) जिस विधाता ने तुम्हें यह पीड़ा दी है, वही इसकी औषधि भी करेगा मन में धैर्य रक्खो; (४) [किन्तु] जिस [कार्य] को विधाता ने कल पर छोड़ रक्खा है वह बलात् आज नहीं पा सकती हो। (५) पहले काँटे की बाड़ लौपो तो फल-फूल का विलास कर सकती हो।

(६) यहां कुमारी को रात-दिन विरह दाह का उत्पात था (७) वहां कुमार के जागने पर, हे मसन कहो कि कैसी बात हुई (उस पर कैसी बीती)।

टिप्पणी—(१) बिकरार<बेक़रार [फा]=अशांत अचेत। (२) घाव<घात= आघात। (५) नाक=लाँघना। कांट<कण्टक=काँटा। बारी<वाटिका।

[१४५]

उहां कुँवर जो देखइ[1] जागी । जगत बिरह आगि तनु[2] लागी ।
ना वह[1] मदिल न वह[2] मृगराती । ना वह[3] राजकुँवरि रगराती ।
मुरछि परे[1] औ दहु दिसि[2] जोव । गिन गिन[3] ऊमि सांस ले[4] रोव ।
औ चित थत न सके सभारी । मन गुनि गुनि सुधि[1] धन पियारी ।
सवरि[1] सवरि[2] मधुमालति बाता । बिरह अनल ब्यापउ[3] सब गाता ।

कबहु धन चित चढ़[1] कबहु जाइ[2] बिसभार ।
सीस धुहमि हनि रावौ समुझि रूप गुन[1] नारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा देख। २ मा अगिनि जनु।
(२) १ ए बाह। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ ए बोह। ४ मा. कै जानी ए मदमाती।
(३) १ ए परी। २ ए जो दह दिस। ३ ए छन छन। ४ मा कै।
(४) १ मा गुन ए चो।
(५) १ मा कुंवर, ए मौरि। २ ए मौरि। ३ ए व्यापे। ४ मा ए सब।
(६) १ ए पल अचेत पल चेतै। २ ए पल ही पा।
(७) १ ए बर।

अर्थ—(१) वहाँ जब कुमार जागकर देखता (आँखें खोलता) है तो जागते ही विरह की अग्नि उसके शरीर में लग जाती है; (२) [वह देखता है कि] न वह मंदिर (राजभवन) है, न वह सुख की रात है और न वह प्रेम में अनुरक्ता राजकुमारी है। (३) [यह देखकर] वह मूर्च्छित हो पड़ता है और दसो दिशाओं में देखता है और क्षण प्रति क्षण उठ-उठकर साँस (उच्छ्वास) ले लेकर रोता है (४) और चित्त के चेत को उतना ही सँभाल नहीं सकता है जितना ही वह प्रेम-प्रिया की स्मृति को मन में गुनता है। (५) मधुमालती [के मिलन] की वार्ता का स्मरण करते रहने से उसके समस्त गात्र में विरह की अग्नि व्याप्त हो गई।

(६) कभी तो वह चित्त में चेत करता था किन्तु कभी वह बेसँभाल (बेचेत) हो जाता था; (७) वह उस नारी (मधुमालती) के रूप और गुणों का स्मरण कर सिर पृथ्वी पर मार (पटक) कर रोता था।

टिप्पणी—(१) जोव < जो [वे]=देखना। उच < ऊर्ध्वम् = ऊँचा होना उठना खड़ा होना। (५) संवर < समर < स्मृ = स्मरण करना। (७) पुहुमि < पृथ्वी।

[१४६]

महजा नाउं कुंवर न पाई। सुनतहि पूत पूत करि धाई[1]।
कहसि बार[2] आनों[1] यहु बाना। मैं सो तोरि[2] जमि[3] संपरना माना।
पूत कौन उपजी ताहि पीरा। जहि कारन नयनु ढारसि नीरा।
धन्न पूत जस गा[1] कुम्हिलाई। कौन दुरग[2] तोहि उपजउ[3] आई।
आपनि पीर पूत कहु मोही। न यद[1] दउ मा भोगहि[2] तोही।
मन उघारि दसि[1] पूत[2] कहसि ऊमि न गांस।
माहि जिय पाइ पीर सो उपजी[1] जाहि न भोगनि[2] मास॥

पाठान्तर—ए के उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ मा मैं आई ए करि आई।
(२) १ मा कहेसि कि राग जानो ए कहेसि बार (< बार नापरीनिरि) जानी ए कहेसि राज आउ। २ मा मैं तो तर (< तोरि) ए मैं तोहरि। ३ ए जम।
(४) १ ए भी। २ ए दाम। ३ ए उपजा।

(५) १ ए मैं रे। २ भा. ओखधि ए औखध।
(६) १ ए. देखु। २ भा में यहाँ 'धाई' और है।
(७) १ ए. मोहिं जिउ धाइ पुत सौं उपजा। २ भा औषधि।

अर्थ—(१) सहजा नाम की कुमार की एक धाय थी। वह [कुमार की यह दशा] सुनते ही "पुत्र" "पुत्र" करती (कहती) हुई दौड़ी [आई]। (२) उसने कहा "हे बालक [अपनी] बात कहो मैं [भी तो पसे] जानूँ। मैं तुम्हारी वैसी ही माता हूँ जैसी कमला है। (३) हे पुत्र तुम्हें कौन-सी पीड़ा उत्पन्न हुई जिसके कारण अपने चक्षुओं से तुम आँसू गिरा रहे हो? तुम्हारा फूल-सा मुख मुरझा गया है तुम्हें [ऐसा] कौन सा दुःख आकर उत्पन्न हुआ है? (५) हे पुत्र तुम अपनी पीड़ा मुझसे कहो तो मैं वह (उसके उपयुक्त) औषधि तुम्हें मिला (लाकर) दूँ।"

(६) [यह सुनकर कुमार ने] नेत्र खोल कर उसके मुख की ओर देख कर, उठ कर और साँस ले कर कहा (७) "हे धाय मेरे जी में वह पीड़ा उत्पन्न हुई है जिसकी औषधि [मिलने] की आशा नहीं है।"

टिप्पणी—(१) धाई < धात्री = धाय। (२) बार < बाल = बालक। (३) चखु < चक्खु < चक्षु। (६) ऊभ < ऊर्ध्वम् = उठना।

[१४७]

सो बियाधि उपजी जिय[1] माहीं । जाहि धाइ किछु ओखदि[2] नाहीं ।
तहाँ जाइ जिउ बस भा मोरा । जहवाँ[1] ग्यान कर पा खोरा[2] ।
मन अरु ग्यान तहाँ गे[1] धाई । मन के दिस्टि[2] जह जात सकाई ।
सो दसउँ[1] जो जाइ न कहा । तहाँ गएउ जहाँ[2] बस न रहा ।
जिउ अजोरि[1] मोर लीन्हा[2] धाई । छूंछी[3] क्या दसु संग[4] आई ।
प्रान जो पीतम सय रहा[1] क्या भई[2] बिनु जीय[3] ।
कै सौंतुस कै सपनों[1] न जानौं केइ[2] जीउ हरि लीय[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा उपजी उर, ए उपजा जिय। २ भा जेहि। ३ भा. औषधि ए औखध।
(२) १ ए जहाँ न। २ ए ग्यान के नपा रा ग्यान केर पानि। ३ रा खोरा।
(३) १ ए मन अरु ग्यान गा तेहि ठौं। २ भा मन की दिस्टि जहँ, ए मन की द्रिस्टि जहाँ।
(४) १ ए देसा। २ भा जिन।
(५) १ ए बजोरि। २ भा. लेगेउ। ३ ए छूछी। ४ भा ए. संग।
(६) १ रा प्रान पीतम संग रहा भा प्रान रहा पीतम पहँ ए प्रान जो प्रीतम संग भौ। २ ए भौ। ३ ए जीउ।
(७) १ भा. सपनें। २ ए. कै। ३ ए लीउ।

अर्थ—"(१) मेरे जी में वह व्याधि उत्पन्न हुई है जिसकी हे धाय कोई औषधि नहीं है; (२) मेरा जी वहाँ जाकर [अन्य के] वश हुआ जहाँ पर ज्ञान के पैर लँगड़े हो जाते हैं; (३)

[मेरा] मन वहाँ दौड़ता हुआ जाकर प्रसन्न भया वहाँ जाते हुए मन की बुद्धि भी शंकित होती है। (४) [मैंने] वह देखा जो अवर्णनीय है, और वहाँ गया, जहाँ चेतना न रही; (५) मेरे जीव (प्राणों) को [किसी ने], हे माय अंजली में कर (छीन) लिया और देखो खाली काया मेरे साथ आई है।

(६) क्योंकि मेरे प्राण प्रियतम के साथ रह गए, मेरी काया बिना जीव की हो गई (७) वह या तो सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) था या स्वप्न; न जाने किसने मेरे जीव (प्राणों) को हर लिया।"

टिप्पणी—(१) बियाधि < व्याधि। (५) छूछी < छुच्छ < तुच्छ। (६) जो < जतो < यतः = क्योंकि कारण कि। (७) सौतुख = स + प्रत्यक्ष (?) = अतिशय प्रत्यक्ष।

[१४८]

कै सौतुख कै सपनां अहा[1]। कह लउं[2] पै जाइ न कहा[3]।
यहि[1] कहँ कै सपन[2] कहाई। सौतुख भाउ सभ[3] जहि पाई।
सौतुख[1] देखउं[2] मैं सिंगारी[3]। औ सौतुख सुंदरी कर बारी।
औ अधरन्हि पर अंजन[1] लीका। औ परगट दुहुँ नैनन्ह[1] पीका।
औ उर हार चीन्ह मैं[1] देखउं[2]। सौतुख पै सभ[3] भाउ बिसरउं[4]।
बिरह अगिनि गुनु पाई[1] मोहि[2] तन लागी आइ।
कै[1] मधुमालति मिलि[2] तुम कै[3] मोहि मुएं[4] जुआइ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अही। २ भा लेइ। ३ ए कही।
(२) १ ए तेहि। २ ए सपना। ३ भा सब।
(३) १ ए सौतुक। २ भा देखी ए देखा। ३ ए संवारी।
(४) १ ए अधर मो काजर। २ ए औ सौतुख आंगिन्ह मों।
(५) १ भा कुमि न जो। २ ए देखी। ३ भा पै तुह ए सबै जो। ४ ए बिसेरी।
(६) १ भा बिरह अगिनि गुनु पाई ए बिरह आगि गुनि पा॰ रा बिरह अगिनि निर्ग (?) पाई। २ ए मो।
(७) १ ए की। २ ए मिले। ३ ए कि। ४ भा ए मुए।

अर्थ—"(१) या तो वह सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) था या स्वप्न उसको कहने को कैसा (करता) हूँ किन्तु वह कहा नहीं जाता है। (२) यह स्वप्न कैसे कहलाएगा जिसमें सभी भाव सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) पा जाएं? (३) मैं सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) [उस बालिका को] सिंगारी हुई साक्षात देख रहा हूँ और सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) ही मैं बालिका के हाथ की महिमा देख रहा हूँ। (४) प्रकट ही [अपने] अधरों पर मैं [बालिका के] अंजन को देखता और [उसके] दोनों नेत्रों पर [अपने] पान की पीक देख रहा हूँ (५) और [अपने] उर (वक्षस्थल) पर उसके हार का चिह्न देख रहा हूँ; यह सब भाव सौतुख (अतिशय प्रत्यक्ष) के हो तो विशेष (विरक्त) रहा है।

(६) हे धाय सुनो मेरे शरीर में विरह की अग्नि आ कर लग गई है; (७) वह अग्नि या तो मधुमालती से मिलकर बसेगी या मेरे मरने से बुझेगी।

टिप्पणी—(१) (२) (३) (५) सौंतुप < सं+प्रत्यक्ष (?) = अतिमय प्रत्यक्ष। (३) मुदरी < मुद्रिका। बारी < बालिका। (४) बिसेम < बिसेम < वि+शेषम् = विशेषता-युक्त करना किसी वस्तु को उसके गध आदि द्वारा दूसरी से भिन्न करना।

[१४९]

सुनु[1] धाई दुख बात हमारी। अब तोहि सउ मन[*][2] कहौं उघारी।
प्रान गएउ[1] परिहरि हम[2] देहा। कन्या बामु[3] जिउ[4] मरन सन्देहा[5]।
दुख कै[1] बात कह नहि[2] पारौं। जिउ घर होइ त कहत मभारौं[3]।
बिनु परान भइ[1] कया हमारी। जिउ लै गई[2] मो प्रान पियारी।
मधमालति जिउ लीन्ह[1] अजोरी[2]। धाइ सो[3] कया बामु[4] जिय[5] मोरी।
भावता सेउं[1] धाइ सुनु[2] मति बिछर जग काइ।
साजन[1] जनि[2] खति मानसि[3] करु जिउ सनि सभ[4] होइ[5]॥

पाठान्तर—मा. ए म उपर्युक्त अर्धाली ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए सुन। २ मा. तुम्ह सउं अब मन रा तोहि सौं मन ए तो मैं मैं मन।
(२) १ ए गौ। २ ए मम। ३ रा ए बाजु। ४ ए जो। ५ रा ए सनेहा।
(३) १ ए की। २ ए न। ३ मा. त घट न मभारा रा कहत न हारौं ए कहत संभारौं।
(४) १ मा भइ। २ मा लै गई प्रान।
(५) १ मा लिएउ। २ ए अझोरी। ३ मा में यह शब्द नहीं है। ४ रा ए बाजु। ५ ए जीव।
(६) १ रा गौं ए म। २ मा. धाई।
(७) १ मा ए सुजन। २ ए जन। ३ ए मानसै (= मानिसी फारसी लिपि)। ४ ए में यह शब्द नहीं है।

अर्थ—"(१) हे धाय मेरी दुख-वार्ता सुनो अब मैं तुमसे सब खोलकर कह रहा हूँ। (२) [मेरे] प्राण मेरे देह को परित्याग कर चले गए, और बिना जीव (प्राणों) के [मेरी] काया को मरण का संदेह हो रहा है। (३) [अपनी] दुख-वार्ता मैं कह नहीं सकता हूँ घट (शरीर) में जीव होता तो उसे कहते समय मैं संभाल (स्मरण कर) सकता। (४) मेरी काया बिना प्राणों की हो गई [क्योंकि] वह प्राण-प्रिया मेरे जीव को ले गई। (५) मधुमालती ने मेरे जीव को अंकमी में कर (छीन) लिया इसीलिए मेरी काया, हे धाय बिना जीव की हो गई।

(६) अपने चहेते से हे धाय सुनो, संसार में कोई न बिछड़ा हो; (७) स्वजन [कोई] क्षति न माने भले ही [अपने] जीव (प्राणों) की सभी [प्रकार की] हानि हो।"

टिप्पणी—(२) (५) बामु < बज्ज < वर्ज = बिना। (४) पियार < पिआर < प्रियाम। (६) बिछर < विच्छिड् = अलग होना। (७) साजन < सज्जण < स्वजन।

[१५०]

कस मैं देखी नैन सो बारा[1] । जेहि बस परउं[2] बिरह कै झारा*[3] ।
हरख अनद रहस बस[1] धाई । जहि जिय पम समानउ[2] आई ।
जिउ पतग घट अहा जो मोरा[1] । जाइ जरेउ सई[2] पम अजोरा[3] ।
पेम बनिज जग मोहनि[1] मुठानी । लाभ न दीस[2] मूल भइ[3] हानी ।
जग उपखान जो कहियत अहा[1] । धन खोए । बौराइ जोलहा[3] ।
धाई हरख अनद गा[1] औ गवा रहस[2] अभिमान । ॥
मधुमालति कर[1] बिरह दुख मोहि जिउ[2] रहउ[3] निदान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जो बाला। २ रा सिएउं ए परा। ३ ए बिरह का झाला रा बिरह का बारा।
(२) १ रा रहा संप ए रहस बा। २ मा समामेउं ए समाना।
(३) १ मा अहेउ जो मोरें ए आहि मारा। २ ए परा जाइ सो। ३ मा अजोरें।
(४) १ भा जग मोह ए जो जग त। २ मा भहेउ ए रहा। ३ ए भा।
(५) १ ए आहा। २ मा धन गंवाइ बौराए। ३ ए जोलाहा।
(६) १ ए भी। २ रा भी ह रहस ए उर हुम।
(७) १ ए कै। २ मा ए मैं। ३ ए रहा।

अर्थ— (१) मैंने नेत्रों से क्यों उस बाला को देखा ही कि जिससे मैं विरह की ज्वाला के वश में पड़ गया ? (२) हे भाग उसके लिए हर्ष आनंद (और सुख देखा) जिसके जी में आकर प्रेम समा (व्याप्त हो) गया ? (३) [मेरे] घट (शरीर) में जो मेरा जीव-पतंग (पतिंगा) था, वह प्रेम [की अग्नि] के प्रकाश में स्वयं जा कर जल गया। (४) प्रेम के वणिज ने संसार में अपनी मोहिनी ठान रक्खी है कि लाभ नहीं दीखता [जब कि] मूलधन की भी हानि हो जाती है। (५) यह तो जगत् में कहा जाने वाला (प्रत्यक्ष) वही उपाख्यान हुआ कि धन खोकर जुलाहा पागल हो जाता है।

(६) हे भाग [मेरा] हर्ष और आनंद गया और सुख तथा अभिमान गया; (७) अब तो मेरे जीव (प्राणों) में अंत में मधुमालती का विरह-दुख [मात्र] शेष रहा है।"

टिप्पणी—(१) बारा < बाला। झारा < ज्वाला। (२) समाव < सम् + आप् = व्याप्त होना। (२) (६) रहस < रभस् = हर्ष सुख। (३) सइ < स्वय। (५) उपखान < उपाख्यान = कथा।

[१५१]

पम अगिनि जहि जिय[1] उजगरई[2] । प्रीतम रानि[3] और गम जरई[4] ।
पम लुबुध गम[1] दुख भउं[2] भारी । निस दिन गहस मगन[3] दखारी ।
प्राग जात बर गाहि[1] मरीगा । बिपि बस मिरा[1] पम क पीग ।
गात लाइ[1] मन जोबन गाऊ । जब मउं[1] जिउ बिरहागिन[1] भागऊ ।

चढेउँ[1] पम पथ दुगम[2] भारी । क[3] जिउ आइ क मिल सो बारी[4] ।
घाई पेम समुद मह देयु[1] दौरि धसि[2] लउ[3] ।
क मानिक ल[1] निकरौं[2] क ओहि[3] पथ जिउ दउ[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पेम प्रीति जो जिउ। २ मा उन्परेऊ। २ रा दुक्ख। ३ मा सब जरेऊ ए सब जरई रा सब जरई।
(२) १ ए सब। २ रा सौं ए सौं। ३ ए सहस मरन मा. मरन सहस।
(३) १ ए. छोड़ (<छांडि फ़ारसी लिपि)। २ मा सिरेउ ए सिरे (<सिरी फ़ारसी लिपि।)।
(४) १ मा करै। २ रा सौं ए सौं। ३ मा बिरह बस ए बिसँभर।
(५) १ रा बिरहा ए चढ़ा। २ ए दुर्गम। ३ रा कहि। ४ मा मारी।
(६) १ ए देखि। २ ए धंस (<धसि फ़ारसी लिपि)। ३ ए लेउ।
(७) १ ए कै लै। २ मा निकसौं ए उबरौ। ३ ए ओह। ४ ए देउ।

अर्थ—"(१) प्रेमाग्नि जिसके जी में प्रवेश करती है उसका सब कुछ, एकमात्र उसके प्रियतम को छोड़कर, भस्म हो जाता है। (२) प्रेम-दुख समस्त दुखों से भारी होता है क्योंकि उसमें दिन भर में सहस्र बार तिल-तिल करके मरना होता है। (३) प्राण भले ही शरीर छोड़ कर चले जाते किन्तु विधाता ने यह प्रेम की पीड़ा क्यों बनाई? (४) राज्य धन और यौवन का [मेरा] सब चला गया जब से जीव विरह के वश में हुआ। (५) [अब तो] मैं प्रेम के दुर्गम पथ पर आरूढ़ हो चुका हूँ; या तो उस मार्ग में [मेरा] जीव जाएगा और या तो वह बालिका मिलेगी।

(६) हे भाय देखो मैं तो प्रेम-समुद्र में दौड़ कर डुबकी लगा रहा हूँ (७) अब या तो माणिक्य लेकर निकलूँगा और या तो उस मार्ग में जीवन दूँगा।"

टिप्पणी—(२) देवहारी<दिवह<दिवस। (३) सिर<सृज्=बनाना निर्माण करना। (५) दुगम<दुर्गम। (५) बारी<बालिका।

[१५२]

बिरह कठिन कोइ[1] जान न पीरा । कै विधि[2] जान क जान[3] सरीरा ।
राज मुकुट बिष बलि (बोलि)[1] परिहरऊ[2] । बिरह दुक्ख अगिन जिउ[3] धरेऊ ।
मन माहि महि मारग जिउ लाए[1] । प्रम प्रीति स मरि पहुचाए[2] ।
क महि[1] पथ मोर जिउ जाइहि । कै विधि प्रीतम आनि मिलाइहि ।
धाइ कत[1] दुख सुनिहसि[2] मोरा । बात बड़ी जग जीवन थोरा ।
भाई[1] बात पिरम कै[2] मोहि मुह[3] कही[4] न जाइ ।
जौ मैं सहस जीभ होइ[1] बनतौं बहु जुग करि न सिराइ[2] ॥

पाठान्तर—मा. में उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा. कोउ। २ रा सो। ३ मा. कि जाहि।
(२) १ मा बिस जेउ ए बिसै। २ रा ए परिहरेऊ। ३ ए जे अगिन।
४ रा. धरेऊ, ए धरेऊ।

(३) १ ए अब वोही मारग जिउ लावौं। २ ए पहुँचावौं।
(४) १ ए बोहि।
(५) १ ए बेनिक। २ मा सपने ए सहबे।
(६) १ ए भाइ सो। २ ए पीरम की। ३ मा ए मुख। ४ ए कहै (<कही फारसी लिपि)
(७) १ ए सौं। २ रा जीभ कही न जाइ (तुल पूर्ववर्ती चरण)।

अर्थ—"(१) बिरह ऐसा कठिन होता है कि कोई उसकी पीड़ा को जानता नहीं; या तो उसे विधाता जानता है और या तो उसे [बिरही का] शरीर जानता है। (२) राज-सुख को मैंने विष करार देकर छोड़ दिया है और जीवन में बिरह के दुःख-अमृत को धारण कर लिया है। (३) अब तो इसी मार्ग पर जीव (प्राणों) को लगाने से (मैं) और प्रेम-प्रीति को ले (अपना) कर उसे सीमा तक निबाहने से (मैं) ही मर्ने [कृतकृत्यता प्राप्त होगी]। (४) या तो इस पथ पर मेरा जीव जावेगा और या तो विधाता प्रियतम को लाकर मुझे मिलाएगा। (५) ऐ भाय तू मेरा कितना दुःख सुनेगी ? वार्ता बड़ी है और जीवन [उसे सुनाने के लिए] छोटा है।

(६) हे भाय प्रेम की वार्ता मुझसे [मुख से] कही नहीं जाती है; (७) यदि मैं सहस्र जिह्वा होकर कहूँ तो भी चारो युगों में न समाप्त होगी।

टिप्पणी—(१) सरि<सरिसं<सृतम्=सर्व सम पर्याप्त। (५) बात<बत्त<वार्ता। (६) पिरम<प्रेम।

[१५३]

उठउ[1] सूर जग भाण्ड अजारा[2] । कुंवर उठा[3] बिरह[4] दगजोरा ।
घन हरउ[1] जिउ गा भौराई । कया नगर भइ[2] बिरह रोहाई[3] ।
बिरह निसान चहू दिसि[1] बाजा । जिउ परजा बिरहा तन राजा ।
पकरा[1] पम पथ[2] अंग न मोरउ । लागा[3] फारि बस सिर तोरउ ।
बिरह दुराग[1] दुरगम म मभारसि । उगत अपान आयुहि[2] द मारगि ।
लाग मदुब मम[1] घाए राज गिरिह[2] मुनि[3] रोग ।
पार्ग गुनि मंबम्भवन[1] म्यारल फारि[2] पटार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए उगा। २ रा अजोरा। ३ मा उ॰। ४ ए बिरहे।
(२) १ ए रहा। २ ए भी। ३ मा कपाई।
(३) १ ए जग।
(४) १ मा पकउ। २ मा जिउ। ३ रा पराग ए लागा।
(५) १ ए चाप पम (तुल पूर्ववर्ती अर्द्धाली)। २ मा उगत अपान आयु ए उगी आयु आगम।
(६) १ मा ए सब। २ मा महिर ए पिह। ३ ए भा।
(७) १ मा पाई मुनि मनम्भावनी ए माप गुना बीनाम्बे। २ ए पाट।

अर्थ—(१) सूर्य [आकाश में] उठा (निकला) और संसार में प्रकाश हुआ, तो कुमार भी बिरह से दगजोर हुआ उठा। (२) उसकी चेतना हर उगी की और उसका जीव बदला (बावला)

हो गया था, [क्योंकि] उसकी काया-नगरी पर विरह का अधिकार हो गया था। (३) विरह का धौंसा चारों ओर बज रहा था और उस तन (नगरी) में जीव सब प्रजा बना हुआ था और विरह राजा। (४) कुमार ने प्रेम-पथ पर पड़कर अपने शरीर को नहीं मोड़ा उसने अपना कपड़ा फाड़ डाला और सिर के केश नोच डाले। (५) दुर्गम विरह-दुःख को वह सँभाल न सका और उठते हुए [पुनः] अपने आप को उसने भूमि पर पटक दिया।

(६) राज-गृह में कोलाहल सुनकर लोग (प्रजा-गण) तथा कुटुंबी दौड़ पड़े (७) और कमलावती (कुमार की माता) [भी] अपने रेशमी वस्त्र फाड़कर व्याकुल दौड़ पड़ी।

टिप्पणी—(१) मूर<मूल। (२) कया<काया। (५) दुगम<दुर्गम। (६) रार<राड़<रव=कोलाहल। (७) पटोर<पटोल<पट्टकूल (?)=रेशमी वस्त्र।

[१५८]

नगर देस महँ परि गा[1] रोरा[2]। राज मँदिल[3] किछु उठहि[4] अँदोरा[5]।
बैद सयान गुनी जन[1] आए। मात[2] पिता जन परिजन धाए[3]।
कह राउ[1] मैं जिउ धन[2] त्यागा। जीउ[3] मोर तहि क जिउ लागा।
अरथ दरब जत[1] लागु सो[2] लावहु। कुँवर जीउ[3] कवनहु बहुरावहु[4]।
क उपगार[1] सुतहि पलटावहु[2]। मोर जिउ लाग[3] तौ लाइ जिआवहु।
बैदन्ह आइ नाटिका[1] पकरी देखि बिचारन्हि[2] पीर।
भाँट मूरछ दुख[1] निरमल औगुन नाहि[2] सरीर॥

पाठान्तर—(१) १ मा गएउ। २ ए रोर। ३ मा. मंदिर। ४ रा. किछु भएउ ए कछु उठा। ५ ए अंदोर।
(२) १ रा बहु। २ रा मात ए माता।। ३ ए धाय।
(३) १ मा राव। २ ए धन गुन। ३ मा जीवन। ४ मा जाहिकें जिय ए एहिक जिउ।
(४) १ ए जत। २ ए. लाग। ३ ए कुँअर क जिउ। ४ ए पल्टावहु।
(५) १ ए उपकार। २ रा पनि पावहु। ३ मा. ए लाग।
(६) १ मा नाटिका। २ ए बूझि बिचारा।
(७) १ ए मूर्छ दु०। २ मा औगुन किछु न ए दोस न कुँअर।

अर्थ—(१) नगर और देस में यह कोलाहल मच गया कि 'राज-भवन में कुछ अंदोर (हल्ला) उठ रहा है'। (२) वैद्य सयाने और गुणी जन आए, माता-पिता और जन तथा परिजन (इत्यादि) दौड़ पड़े। (३) राजा कहने लगा "मैंने प्राण तथा धन त्याग दिए और मेरे प्राण उस (कुमार) के प्राणों [की रक्षा] के लिए दे उठे। (४) अर्थ और द्रव्य जितना भी लगे लगाओ और कुमार के जीव को किसी प्रकार से लौटाओ। (५) उपकार कर के मेरे पुत्र को लौटाओ और [इसके लिए] मेरे प्राण भी लगें तो उन्हें लगाकर उसे जीवित करो।"

(६) वैद्यों ने आकर [कुमार की] नाड़ी पकड़ी और [उसे] देखकर [कुमार की]

पीड़ा का विचार किया। (७) [तदनंतर उन्होंने कहा] "दोनों—चांद और सूर्य (पिंगला तथ
इड़ा नाड़ियाँ)—निर्मल हैं इसलिए शरीर में कोई अवगुण (विकार) नहीं है।"

टिप्पणी—(१) रोष < रोल < रव = कोलाहल। अंदोरा < आन्दोलन। (२) समान
सज्ञान। (४) ब्रह्म < ब्रह्म। जत < यैतिम < यावत् = जितना। (६) नाटिका < ना
= नाड़ी।

[१५५]

फिरि फिरि बद नाटिका गहे[1]। बेदन बिरह बद ना कहे[2]।
बहु कीन्हे गुन फेर उपाई[1]। कुंवर सरीर न बदन[2] पाई।
पुनि उठि[1] बद एक अस कहे[2]। बिरह भाउ पिछु आनत[3] अहे[4]।
कहेंसि[1] कुंवर लोचन सर मारा। बेदन सो जो न[2] माज हमारा
कुंवर सरीर दोस नहिं[1] पाई। चल्हु जाइ[1] कै राज जनाई
उठि निरास होइ[1] बहुर पंडित गुनी[2] सयान।
कुंवरहि पीर पिरम कै[1] ओखदि[2] कोउ न जान॥

पाठान्तर—(१) १ मा मरही ए गहई। २ मा कहही ए करई। २ ए बरना
(२) १ मा गुन कर उपाई ए करि कै जो उपाई। २ ए ... मा ए मौ जनित।
(३) १ ए उठि कै। २ मा ए कहा। ३ ए. मात ती जनित।
कहा।
(४) १ मा कहहि। २ ए बेदना तो नहि।
(५) १ ए कुंवर शरीर दुख नहि ए जो मिठ बेदना हो ... ती। २
(५) १ रा कुंवर शरीर दुरुग नहि ए कहेंसि चलो ती राउ।
जाइ कै राज ए कहेंसि चलो ती राउ।
(६) १ ए भै रा हूं। २ मा बैद।
(७) १ ए की। २ मा. औषधि ए. औषध।

अर्थ—(१) वैद्य पुन पुन नाड़ी पकड़ते किन्तु वेदना तो विरह की थी इस
कहते? (२) गुण (नाम) के उपाय उन्होंने अनेक किए, किन्तु कुमार के श
[का निश्चय] वे नहीं [कर] पा रहे थे। (३) फिर एक वैद्य उठकर ऐसा कह
का भाव कुछ जान पड़ता है।" (४) उसने कहा "कुमार दृष्टि-बाणों से मारा गया
वेदना वह (इस प्रकार की) है कि जिससे हमारा कोई कार्य (वास्ता) नहीं
के शरीर का दोष हम सब नहीं पा (जान) सके और हम सब चलकर यह
जता दें।"

(६) पंडित गुणी और सयाने वहाँ से उठकर निराश होकर लौटे। (७)
की पीड़ा की [जिसकी] औषधि कोई नहीं जानता था।

टिप्पणी—(१) नाटिका < नाड़ी = नाड़ी। (४) लोचन < लाचन। (
(७) पिरम ~ प्रेम। ओखदि < औषधि।

[१५६]

राज महथ[1] एक अहा[2] सयानां । गुन बिद्या[3] बहु खंड बखानां ।
ओहि सरभरि[*1] करि दोसर[2] न पावा[3] । गुन निधान जग नाउं[4] कहावा[5] ।
गुन सो[1] नाउं चहू खंड बाजा । कलि सहदेव कहिअ[2] तौ छाजा ।
महा सुबुधि चतुदस माहीं[1] । जान जिय क समस्या जाहीं[2] ।
औ मनि मंत्र बहुत पुनि[1] जान । एक मूरि गुन[2] सहस बखान ।
सुनसि कुंवर कर औनुस[1] आइ[2] बिचारसि पीर ।
कहसि नाटिका कर गहि[1] दोस न कुंवर सरीर ॥

पाठान्तर—(१) १ रा राज महंत मा राज महंथ ए राज क महथ। २ ए है। ३ ए गुन निधान (तुक परवर्ती अर्धाली)
(२) १ मा. ओहि सरबरि, ए बाइ सरबरि। २ ए कोइ पार। ३ मा पावै। ४ ए जगु नाम। ५ मा कहावै।
(३) १ मा रा मे यह चरण नहीं है। २ रा. कहा ए कही।
(४) १ ए माहि। २ मा जानै जिय कै समस्या काही रा जानै जियहि समस्या जाही ए जानी जीव कसमस्या यहे।
(५) १ मा सौ ए तौ। २ मा जिउ।
(६) १ मा सुनत कुंवर कर आरस रा सुनत कुंवर को औनेस ए सुनेसि कुंवर कै औनुस। २. ए आय।
(७) १ ए नाटिका गहि कै।

अर्थ—(१) राज्य में एक महता (महामात्य) सयाना था चारों खंड उसके गुण और उसकी विद्या का बखान (प्रशंसा) करता था। (२) कोई दूसरा उसकी समानता नहीं कर पाता था जगत् में उसका नाम गुणनिधान कहा जाता था। (३) उसके गुण का नाम (यश) चारों खंडों में बजता (प्रख्यात) था; उसे कलियुग का सहदेव कहा जाए तो उसको यह नाम शोभा दे सकता था। (४) वह चौदह विद्याओं में महा चतुर था और जीव (जीवन) की जो भी समस्याएँ हो सकती थीं उन सब को जानता था। (५) और वह मणियों तथा मंत्रों [के प्रयोगों] को बहुत जानता था तथा एक एक जड़ी के सहस्र-सहस्र गुण बताता था।

(६) उसने कुमार का औनस (अनुष्ण-रोग) सुना और आकर उसकी पीड़ा का विचार किया (७) उसने कुमार की नाड़ी को हाथों से पकड़कर कहा "कुमार के शरीर में कोई रोग नहीं है।"

टिप्पणी—(३) सहदेव—पांडवों में से एक जो अनेक विद्याओं के ज्ञान के लिए अपने युग में प्रसिद्ध थे। (६) औनुस < अउस + उनुस < अनुष्ण + उष्ण [दे]=अनुष्ण-रोग। (७) नाटिका < नाडी = नाड़ी।

[१५७]

क दगसि बहु भांति बिचारा । कफ पित बात न आहि सचारा[1] ।

कहेसि कथा[१] जो बेदन[२] होई । नारी माहिं रहु नहिं गोई[३] ।
आठो[१] अंग[२] दोख[३] किछु नाही । छिन छिन[४] नैन झांपि रहि[५] जाही ।
चांद सुरुज निरदोख अकासा । उठहिं[१] उरध कहि कारन स्वासा[२] ।
औ लोयन नहिं पलक[१] पराही । बिरह बाजु[२] एहि औगुन नाही[३] ।
ढर नीर दुहु[१] लोयन चित न थिर[२] समार ।
बिरह गरग कर[१] घायल किछु नाही उपचार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा आहि बिकारा ए अहै बिकार।
(२) १ ए ध्यान। २ ए बरना। ३ मा गोरि।
(३) १ मा आठहु। २ ए अंग। ३ रा दुक्ख। ४ ए छन छन। ५ मा कम ए कै।
(४) १ मा उठहि ए उठै। २ ए साँसा।
(५) १ ए पलक। २ ए भाव रा बाजु। ३ मा पै सब रत माहीं ए यह सब जग माहीं।
(६) १ ए ढार। २ ए चित नहिं चेत।
(७) १ ए कैर।

अर्थ—(१) उसने बहुत प्रकार से विचार कर देखा कि कफ, वात या पित्त का संचार नहीं है। (२) उसने कहा "काया में जो वेदना होती है, वह नाड़ी में गोपित (छिपी) नहीं रहती है। (३) इसके आठों अंगों में कोई दोष (विकार) नहीं है [फिर भी] इसके नेत्र क्षण-क्षण बंद हो जाते हैं और [पलक] गिर जाते हैं। (४) चंद्रमा और सूर्य (पिंगला तथा इड़ा नाड़ियाँ) आकाश (शरीर) में निर्दोष हैं तब किस कारण से इसकी श्वास ऊर्ध्व होकर उठती (बढ़ जाती) है और इसके लोचनों में पलकें नहीं पड़ती हैं? [हो न हो] विरह छोड़ कर इसे कोई [शारीरिक] अवगुण नहीं है।

(६) इसके दोनों नेत्रों से जल (आँसू) गिरता रहता है और इसका चित्त चेत नहीं सँभाल रहा है (७) [अतः] यह विरह-खड्ग से आहत है और [इसका] कोई उपचार [संभव] नहीं है।

टिप्पणी—(३) छिन छिन < क्षण-क्षण। (४) उरध < ऊर्ध्व। (५) लोयन < लोचन। बाजु < वर्ज < वर्ज = छोड़ कर।

[१५८]

पुनि मनमुग्ध हृदि पूछसि[१] बाता । कुंवर सार सिउ का मउं राता ।
कहु कर[१] सार धम[२] हरि लिया[३] । राम अमिय मूं[३] मन्या पिया[४] ।
जो मोहि गउं[१] मानहि सब[२] बाता । मरनी मार[३] जाहि हसि गाता ।
गरग[१] दव मन्यो[२] जो होई । मन गवनि तें[३] मरवौं माई ।
कुंवर जीउ[१] जनि हार[४] निरागा । त्रिभुवन धनि रु पुरवौं भागा ।
कहिसा[१] बात निज मागउं[२] कहि[३] सिउ लागेउ तोर ।
मैं पुन दिया न मरहि[१] मरवौ पार पसार ॥

पाठान्तर—(१) १ भा हाइ पूछी ए मैं पूछे। २ ए मीं रा सों।
(२) १ ए के। २ ए जिउ। ३ मा बिएउ, ए. लीमउ। ४ मा पुई, ए ठें। ५ मा पिएउ, ए पीमेउ।
(३) १ रा ए मागौं। २ भा ए मउ। ३ ए. ताहि। ४ ए हहि।
(४) १ रा प्रसन। २ रा ए कन्या। ३ मा ताहि ए कै।
(५) १ मा जियहि। २ ए जै। ३ भा होहि रा भएउ। ४ रा. ता।
(६) १ ए करमि। २ ए मीं। ३ मा कहि। ४ ए लागा।
(७) १ ए मैं बिद्या क गुन सकति सौं। २ मा चद।

अर्थ—(१) फिर उसने [कुमार के] सम्मुख होकर यह बात पूछी "हे कुमार, तेरा जी किसमें (किस पर) अनुरक्त है? (२) वह किसने तेरी चेतना हर ली और प्रेम का अमृत तुझे कहाँ दिया है? (३) यदि तू मुझसे सब बातें बता दे तो मैं उसे मिला दूं जिस पर तू अनुरक्त है। (४) यदि वह स्वर्ग की देव-कन्या हो तो उसे भी मैं मंत्र-शक्ति से मिलाऊँगा। (५) हे कुमार, तू जी में निराश न हो मैं त्रिभुवन—आकाश पाताल और मृत्युलोक—में जाकर [तेरी] आशा पूर्ण करूँगा।

(६) तू इसलिए ठीक-ठीक यह बात मुझसे बता कि किससे तेरा जी लग गया है। (७) मैं अपने गुणों और अपनी विद्याओं की शक्ति से चकोर (प्रेमी) और चांद (प्रेमपात्र) को मिला दूंगा।"

टिप्पणी—(१) रात < रक्त = अनुरक्त। (२) अमिअ < अमृत।

[१५९]

जौ यह तीनि लोक महं हाई । म तोहि आनि मरावौं[१] साई ।
भडि अगास समि[१] अमित गारौं । सकति मंत्र अपछरा[२] उतारौं ।
सुर नर नाग लोक कर भऊ[१] । कहौं सबहि[२] जौ पूछ केऊ[३] ।
मंत्र सकति मउं[१] गा बहुरावउ । कहहि[२] तौ मुवा जियाइ दगावउं ।
सस इन्ह गुन[१] सकति बुल्नावउ । कहौं त[३] मेरु सुमेरु डोलावउं ।
कहहि मोहि जनि गोवहि[१] कौन पीर[२] तुम्ह[३] जीय ।
मैं र महज किछु[१] उपजा[२] मैं र काहु[३] किछ दीय ॥

पाठान्तर—(१) १ रा. मिलावौं।
(२) १ रा आगासैं ए अगास जे। २ मा. ए अरग अपछरा मंत्र।
(३) १ रा माऊ। २ मा माइ। ३ रा काऊ।
(४) १ रा मीं ए मीं। २ भा ए कहहु।
(५) १ भा कै ए बर। २ मा ए तो रा द।
(६) १ ए कहु मोसौं जनि मोरगि। २ रा मन (?)। ३ ए तारे।
(७) १ ए कछु। २ मा उपजउ। ३ मा. कै काहू ए कै काहू। ४ मा. ए. दीय।

अर्थ—"(१) यदि वह (तेरा प्रेम-पात्र) तीन लोकों में होगा तो मैं उसे लाकर तुमसे मिला दूँगा। (२) मैं आकाश में चढ़ कर शशि का अमृत निचोड़ (निकाल) सकता हूँ और मंत्र-शक्ति से अप्सराओं को उतार सकता हूँ। (३) देव नर, और नागलोक का यदि कोई मुझसे पूछे, सभी का भेद कह सकता हूँ। (४) मंत्र-शक्ति से मैं गए हुए को वापस ला सकता हूँ और यदि तू कहे तो मृत को जीवित कर दिखाऊँ। (५) शेष और इंद्र को भी गुण-शक्ति से बुला सकता हूँ और यदि चाहूँ तो मेरु जैसे विशाल पर्वत को उसके स्थान से हिला (हटा) सकता हूँ।

(६) तू मुझसे कह दे गोपन न कर, कि कौन-सी पीड़ा तेरे जी में है। (७) क्या तेरे मन में सहज (परमार्थ का भाव) उत्पन्न हुआ है अथवा किसी ने कुछ दिया (खिलाया) है?"

टिप्पणी—(२) अगास < आकाश। (३) भेउ < भेद। (६) गोव < गोपय् = छिपाना।

[१६०]

महुअ[१] बात कही रस भरी । सुनत[२] जीउ आएउ गहमरी[३] ।
अपनें दुख[१] दुखी भो[२] पाएसि । मुहिल[३] कथा मन बसति[४] सुनाएसि ।
कहेसि कुँवर जग जिवन[२] पनारथ । तिरियहि लागि जनि खोव[३] अकारथ ।
तिरिया जगत न आपनि[१] काहू । तिरियहि[२] पेम कोइ लहु[३] न लाहू ।
तिरिया पेम जीय[१] जइ[२] लाएउ[३] । सँवर सुआ जैस[४] फल पाएउ ।
तिरियहि आपनि[१] कै न जगत न जानउ[२] कोइ ।
जनम जो अंम्रित नावहि[१] नीम कि मधु रस[२] होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए महुर्य। २ ए दुखर। ३ ए आपे पहुंचरी।
(२) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए दुखिया भै। ३ रा तात ए लागा। ४ ए भो नहिं।
(३) १ रा जगत। २ मा जीउ ए जीव। ३ मा तिरी लागि जन खरसि ए तिया लागि का खोवसि।
(४) १ ए भई नहिं। २ मा तिरी ए तिया। ३ ए कहु भई।
(५) १ मा जीउ ए जो। २ मा ए पीतम। ३ ए लाये। ४ ए जैस।
(६) १ ए तिया जो आपन। २ ए जग जानि जानै।
(७) १ मा जो जनम मधु सींचन ए जो जो अंब्रित सींचिये। २ ए निमरी मधुरी।

अर्थ—(१) मनोहर (महामात्य) ने जब [इस प्रकार की] रसीली बात कही उसे सुनने से [कुमार का] जी भर आया। (२) अपने दुःख में उसे जब दुखी पाया, कुमार ने स्वप्न की कथा कह कर सब सुना दी। (३) [उसको कहानी सुनकर मनोहर ने] कहा "हे कुमार, जगत् में यह जीवन एक [अमूल्य] पदार्थ है; उसे तू स्त्री के लिए व्यर्थ ही न खो बैठो। (४) स्त्री जगत् में किसी की अपनी नहीं हुई; स्त्री के प्रेम में कोई भी लाभ नहीं पाता है। (५) जिसने भी स्त्री का प्रेम जी में लगाया उसने सेमल के वृक्ष के समान फल पाया [जो उसके फल के तैयार होने पर वैसा ही पदार्थ पाकर निराश होता है]।

(६) स्त्री को अपना करके जगत् में किसी ने सुख नहीं पाया है। (७) जन्म (जीवन) भर यदि नीम को अमृत से सींचिए तो भी क्या वह मधु-रस (मधुर) हो सकती है?"

टिप्पणी—(२) मुहिन<मोहन। (४) नाह<नाथ। (५) सुँबस<स्ववशी। (७) नींब<निम्ब।

[१६१]

जो भल होत¹ तिरिया बेवहारू । तुरकी भाख² नहि³ कहत⁴ माक⁵ ।
कोइ न सका तिरिया¹ जग साधी । तिरिया सो² आगनि³ कर बियाधी ।
तिरिया जगत¹ माहि राकसिनी² । जनि पतियाहि³ ऊपर दिस⁴ बनी ।
जो रात तो बिरहें जार । जौ बिरत¹ तो खिन² महं मार ।
ऊपर निरमल पूनिउ दही¹ । भीतर स्याम अमावस अही² ।
तिरिया कांट कनुकी भौंर ओहट हुत बार¹ ।
प्रगट सरूप¹ दिसि² जनि भूलहि³ होइहि⁴ अंत बिकार⁵ ।।

पाठान्तर—(१) १ ए होइ। २ रा तुरुक के भाख मा. तुरकी भखा ए तुरकी भाखा। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए कही। ५ ए तमाक।
(२) १ मा कोई न सके तिरी ए कोइ न सकी (<सके फ़ारसी लिपि) तिरिआ। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा आगनि ए औगुन।
(३) १ ए जगति। २ ए माहा राकसिनी रा माहि रकिसनी मा महा रकसिनी। ३ मा पतियासि ए पतिमाहि। ४ रा में यह शब्द नहीं है।
(४) १ ए जौ नहि रहै। २ ए छोनक।
(५) १ मा मई ए देहा। २ मा अई ए देहा।
(६) १ मा तिरी कांट कैनुकि भर भंवरा ओहट ओहट बार ए तिया कांग कनुकी भौंर ओहट हुतो बार।
(७) १ ए रूप रूप। २ ए दसु कै। ३ मा भूलसि। ४ ए होइहै। ५ ए बिकार।

अर्थ—"(१) यदि स्त्री का व्यवहार अच्छा होता तो तुर्की भाषा में उसे माक अर्थात् मारने वाली (<माऐक=यमदूती) न कहते। (२) संसार में स्त्री को कोई नहीं साध सका—उस स्त्री की तो रूप-व्याधि की औषधि है। (३) स्त्री जगत् में राक्षसिनी है; ऊपर से इसे बनी-ठनी देखकर [किसी को] इसकी प्रतीति न करनी चाहिए। (४) यदि यह अनुरक्त होती है तो विरह में जलाती है और यदि अप्रसन्न होती है तो क्षण में मार डालती है। (५) यह ऐसी होती है कि जिसका देह ऊपर से पूर्णिमा [की रात्रि] के समान निर्मल किन्तु भीतर से अमावस्या [की रात्रि] के समान श्याम होता है।

(६) स्त्री केतकी का कांटा है, हे बाल भ्रमर, तू उससे पीछे हट (दूर हो)। (७) उसका प्रकट (ऊपरी) स्वरूप देखकर न भूल, अंत में तुझे विकार ही होगा (हाथ लगेगा)।"

टिप्पणी—(१) माक < माहक = चंद्रमुखी। (२) ओलगहि < ओलगहि। (३) पतिया < पतियम < प्रति + इ = विश्वास करना। (४) राच < रच्च < रज्य = आसक्त होना अनुराग करना। (५) कांट < कण्टक = कांटा। ओहट < ओहट्ट [दे०] = अपसृत पीछे हटा हुआ। (७) बेरार < विरार।

[१६२]

दिस्टि[1] परत खिन[2] चित गुन हरै[3] । ग्यान[4] हानि असपरसहिं करै[5] ।
जबहीं सुरत होइ निजु जानां[1] । कया मूल तब भय[2] परानां[3] ।
जनि पतियाहु[1] त्रिया[2] जग भली । पुरुष[3] भौंर महु[4] केतुकि कली ।
आपन सुख जहवां लहि[1] पाव । अधिक तिरी[2] पुरुषहिं[3] जिउ[4] लाव ।
बरबस प्रेम कर धरियाइ । प अपनी सब चोइ क ताइ[1] ।
महं जुग त्रिया[1] न आपनि बूझहि[2] मनहि गियान[3] ।
तिरियहि[1] प्रीति लागि जनि खोवसि[2] अविरथा कुंवर अपान[3] ।।

पाठान्तर—(१) १ मा दिस्टि। २ ए मन। ३ मा महं हरै ए परहरई। ३ मा ए कया। ४ रा अति पुरुष कै करै, ए तेहि पुर्न कि करई।
(२) १ ए जानी। २ ए भाग। ३ ए परानी।
(३) १ ए पतिमाहि। २ मा तिरी। ३ मा पुरुष। ४ ए जोहु रा जनु।
(४) १ ए सुख जी जोहु लगि मा सुक्ख जहा लहि रा सुख जहवां लगि। २ ए त्रिआ। ३ मा पुरुषहि। ४ ए मन।
(५) १ ए कि ताई, रा गुमाई।
(६) १ मा तिरी। २ ए समुझि। ३ मा ए देखु मन ग्यान।
(७) १ मा तिरी ए त्रिआ। रा मा प्रीतम (<प्रेम फारसी लिपि) लागि जनि मोसमि ए प्रेम लागि जनि। ३ मा ए बिरथा (त्रिया—ए) कुंवर अजान रा अविरथा कुंवर परान।।

अर्थ— (१) वह दृष्टि पड़ते ही क्षण [मात्र] में चित्त के गुण हर लेती है और स्पर्श से ज्ञान हानि करती है। (२) जब [उससे] सुरत होती है तब यह बात भलीभांति जानी हुई है वह काया के मूल में जो प्राण होता है उसको नाशी है। (३) यह प्रतीति न करो कि स्त्री जगत् में भली होती है पुरुष भ्रमर के लिए वह केतकी की कली होती है [जिसके कांटों में छिदकर भ्रमर अपने प्राण गँवाता है]। (४) जहाँ (जब) तक वह अपना सुख प्राप्त करती रहती है वहाँ (तब) तक वह पुरुष से अधिक जी लगाती है। (५) वह पुरुष से बरबस और बलपूर्वक प्रेम करती है किन्तु यह सब प्रेम वह अपनी चोइ (गरज) तक ही करती है।

(६) स्त्री चारों युगों में अपनी नहीं रही है यह बात तू मन के ज्ञान से समझ ले। (७) हे कुमार स्त्री की प्रीति के लिए तू आत्मा न खो।"

टिप्पणी—(१) असपरस < स्पर्श। (२) सुरत = मैथुन स्त्री-सम्भोग। पतिय < पतियम प्रति + इ = विश्वास करना। (५) चोइ < चाय (?) = चाह। (७) अविरथा < वृथा। अपान < अप्पाण < आत्मन्।

[१६३]

जिउ दै जनि दुख लमि[1] कुमारा[2] । तिरिया पेम अविरथा ससारा[3] ।
एक निमिख तिरिया जौ करे । नारि औ पुरुष सहज बज[1] मरे[2] ।
परिहरि कुँवर तिरिया[1] अवमरी । तिरिया भई जगत कहि करी ।
बाए सब तिरिया अवतारू[1] । सबन बाए जानु कुमारू[2] ।
औ गरथ[1] पुनि[2] बाए कहाई[3] । मूरख सो जो[4] दाहिन लाई ।
तिरियहि सबै[1] अलच्छन[2] एक सुलच्छन सार ।
महापुरुष जेत[1] जगत महँ[2] तिरियहि तें[3] अवतार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए. जिमि जनि दुख लेहु। २ मा. कुंवारा ए. जसारा। ३ ए. तिरिया पेम अविरथा ससारा मा. तिरी पेम बिरथा ससारा ए. जनि दुख देखसि राजकुमारा।
(२) १ ए. बिजु। २ ए. में अर्धाली का पाठ है— तिरिआ पेम क्रिया असारा। तिरिआ ताकें मन ववहारा।
(३) १ मा. तिरी।
(४) १ मा. अवतारे। २ मा. कुंवारे।
(५) १ ए. ग्रंथ पथ। २ रा. ए. पुनि। ३ मा. बाए कहै ए. बामा कहै। ४ ए. मूर्ख होइ सो। ५ मा. कहै ए. कहई।
(६) १ ए. सबै। २ रा. कुलच्छन।
(७) १ मा. को ए. में यह शब्द नहीं है। २ ए. जग माहें। ३ मा. तिरिया तें ए. तिरियहिं त।

अर्थ—"(१) हे कुमार, जीव (प्राण) देकर दुःख न [मोल] ले संसार में स्त्री का प्रेम व्यर्थ [की वस्तु] है। (२) एक पल के लिए भी यदि स्त्री [की संगति] की जाती है तो नारी और पुरुष दोनों सहज वज्र [-पात] से मरते हैं। (३) हे कुमार, तू स्त्री को अवमेरी (उन्मत्त) को छोड़ दे स्त्री संसार में किसकी हुई है? (४) स्त्री का जन्म ही [विधाता के] बाएँ अंग से हुआ है अतः, हे कुमार, उसे सर्वत्र बाएँ (प्रतिकूल) जान। (५) और ग्रंथ भी उसको 'बामा' कहते हैं वह मूर्ख है जो उसको दाहिने (अनुकूल) लगाता (समझता) है।

(६) स्त्री में सभी कुछ अलक्षण (बुरे लक्षणों का) होता है केवल एक ही सुलक्षण—सार होता है (७) और वह यह है कि संसार में जितने भी महापुरुष [हुए] हैं उनका जन्म स्त्री से [हुआ] है।"

टिप्पणी—(१) अविरथा<वृथा। ससार<संसार। (२) बज<बज्ज<वज्र। (३) अवमरि<अवमद (?)=उन्मत्त। (५) गरंथ<ग्रंथ। (७) जेत<जेत्तिअ<यावत्=जितना।

[१६४]

अनख बचन सुनि रहा न[1] गएऊ । कुँवर जीउ बिसमै किछु[2] भएऊ ।
कहसि महत[1] तू कलि सहदेऊ । कहतेउँ[2] और कहत जौ कोऊ ।
प्रेम पीर जाहि जिय न पिरानी[1] । कहु सो कहहि[2] असि[3] बात अयानी[4] ।
तोहि मुह[1] अस कस कहि आवा[2] । जानसि[3] तीनि भुवन कै[4] भावा[5] ।
मैं अपान अब बसउ[1] सोई । सिखवन सुनौं जो घट जिउ[2] होई ।
प्रेम पंथ सुनु महत[1] मैं बसउ[2] जिउ[3] खोइ ।
सुनौं सिक्ख सो तोरी जो घट म[1] जिउ होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा. अन कि बचन बिनु रहि नहि ए. अनमन बचन सुनि रहै न। २ भा. कबर (< कुंवर) बिसमहि बिसमौं एक रा. कुंवर फिरोज सुनि जिय महँ।
(२) १ ए. ए महथा। २ ए. कहि तो।
(३) १ ए. जीउ समाना। २ ए. कहत भले रा. कहँ सोइ। ३ सो। ४ ए. अयाना।
(४) १ ए. एहि कहँ। २ ए. आऊ। ३ रा. जानत ए. जानौं। ४ भा. लोक कर, ए. भुअन का। ५ ए. भाऊ।
(५) १ ए. मैं आपन सब बैठा। २ रा. सुनौं सिक्ख जौ जिय घट ए. सिख बुधि सुनौ जौ र जिउ।
(६) १ भा. महथा। ए. महथा २ ए. बैठा। ३ रा. अब।
(७) १ ए. जिया। २ ए. मो।

अर्थ—(१) महता (महामात्य) के इन रोष [दिलाने] वाले वचनों को सुनकर [कुमार से] रहा नहीं गया; कुमार के जी में कुछ विस्मय (विषाद) हुआ। (२) उसने कहा, "ऐ महता, तू कलियुग का सहदेव है [तुझे मैं कुछ नहीं कह सकता हूँ] यदि और कोई [इस प्रकार की बातें] कहता तो मैं [कुछ] कहता। (३) प्रेम की पीड़ा जिसके जी में नहीं हुई वह अज्ञानी भले ही ऐसी बात कहेगा; (४) किन्तु तेरे मुख से ऐसा कैसे कहा गया—जो तू तीनों भुवनों के भाव जानता है? (५) मैं तो आत्मघात को बैठा हूँ; मैं तेरी शिक्षा सुनता यदि [मेरे] शरीर में जीव होता।

(६) हे महता (महामात्य) सुन मैं प्रेम-पथ में अपना जीव खो बैठा हूँ; (७) तेरी शिक्षा तो तब सुनूँ यदि मेरे घट (शरीर) में जीव हो।"

टिप्पणी—(१) अनख < अमर्ष = रोष क्रोध। (२) (१) महँता < महामात्य। (३) अयानी < अज्ञानिन्। (५) सिखवन < शिक्षापन < शिक्षण (७) सिक्ख < शिक्षा।

[१६५]

ताहि जिय प्रेम न उपजा[1] आई । ना जानसि[1] दुख लाग पराई ।
मुहँ गुमान अति पगुर न भोरा[1] । जानि बूझि मग लागि निहोरा[1]

बिरह अगिनि महँ[1] कनक सोहागा । तोहि तन आँच[2] धूम[3] नहिं लागा ।
कया भसम भइ[1] भोस उड़ानी । कौन सुन तुम्ह सिकर[2] कहानी ।
गए साँप[1] का धुमनि(?)[2] ठठावसि*[3] । जानि बूझि कस[4] मोहि बौरावसि[5] ।
उठहि महुत[1] पाँ लागौं म दुहूँ जग तोहि आस[2] ।
जानि बूझि बग्बस तुइ[1] बाँधसि[2] जाम क मोंट बतास[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा. उसमेउ। २ मा. ए जानसि।
(२) १ ए. सुजाना। २ रा. कस देसि निहोरा ए. का हृदु बसाना।
(३) १ मा. बिरह अगिनि मैं ए. बिरह आगि मैं। २ मा. ताहि देहि आगि रा. तोहि आँच ए. ताहि तन आँच। ३ ए. धुआँ।
(४) ए. भै रा. होइ। २ ए. तारि तीन।
(५) १ रा. गर्मे साप ए. गए नाग। २ मा. भंसन ए. मसनी। ३ मा. ए. ठठावसि रा. ठठावहि। ४ मा. ए. का। ५ रा. मोहि बौरावहि।
(६) १ रा. जेहि। २ रा. मानि मुन। ३ ए. मैं तौ पैर तोहार।
(७) १ ए. है। २ ए. में यह शब्द नहीं है। ३ मा. जाम कि माट बताम रा. जाम के मोट बताम ए. गाँठी बाँधि बमार।

अर्थ—"(१) तेरे जी में प्रेम आकर उत्पन्न नहीं हुआ, इसलिए तू पराए [के प्रेम] की बात क्या जाने? (२) तू तो ज्ञानी और अति चतुर है, भोला नहीं है, तब तू जान-बूझकर मुझसे क्यों निहोरा दे (निवेदन कर) रहा है। (३) बिरह की अग्नि में मैं कनक (स्त्री) के साथ सुहागा बनकर पड़ चुका हूँ, (जब कि) तेरे शरीर में [बिरह-अग्नि की] आँच और [उसका] धुआँ भी नहीं लगा है। (४) मेरी काया भस्म हो गई है और उसकी राख भी उड़ गई है, तब तेरी शिक्षा की कहानी कौन सुने? (५) साँप के भाग जाने पर उसकी बाँबी (बिल) क्यों पीटता है? जान-बूझ कर तू मुझे क्यों पागल बना रहा है?

(६) हे महुता (महामात्य) उठ, मैं तेरे पैरों लगता हूँ, दोनों लोकों में मैं तेरी आशा करता हूँ। (७) [ऐसी दशा में] क्यों तू जान-बूझकर जाम की गठरी में वायु बाँध रहा (सन्तोषी बात कर रहा) है?"

टिप्पणी—(२) सुजान < सुज्ञान। निहोरा < निहोर [र] < निरय निवारण। (३) धूम < धूम। (६) महता < महामात्य।

[१६६]

कठिन बिरह दुख जाइ न कहई । बिरह पिया कह कसौ[1] हाई ।
जो आव सा कह मोहाती । मधिकौ उठ सार मुनि[1] ग्यानी ।
जहिं[1] जिय मानि[2] समानउ[3] कोई । प्रान साथ प निसरउ साईं ।
बुधि कि बिरह सेउ[1] सम्भरि*[2] पाव । बिरह पोस बुधि[3] ग्यान सुनाव ।
मूरख लोग न जानहिं*[1] एसी । जहाँ बिरह सह सिग बुधि कसी ।
कूबर सरीर सो औगुन[1] जहि जस मत्र[2] न मूरि ।
मूरख मसहि बिरह मैं[1] मूरख छावहिं[2] पूरि ॥

पाठान्तर—भा ए म उपर्युक्त अर्द्धाली ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए बहु मेंसनि।

(२) १ ए बिरह तन। २ रा में अर्द्धाली का पाठ है —
पम मेरु जो चित होइ आवै। अमकरे का मोहि बचावै।

(३) रा ए जेहि। २ भा जिय आइ, ए जिआइ। ३ ए समाना है। ४ भा. ए निसरै।

(४) १ रा. बुधि कि बिरह सौं ए बुधि बिरह की। २ रा ए भा सरबरि।
३ ए सिसु।

(५) १ ए मूरुष। २ भा जानै ए जानै।

(६) १ ए औगुन। २ ए जेहि जिय जगत।

(७) १ भा सब बिरहा मैं ए सब बरिआई। २ भा कि डांबहि ए कि डारै।

अर्थ—"(१) बिरह का दुःख कठिन होता है यह कोई नहीं जानता है कि बिरह की व्यथा कैसी होती है। (२) [बिरही के पास] जो आता है वह उसे सुहाने वाली बातें करता है किंतु उन्हें सुनकर [बिरही की] छाती में [बिरह की] ज्वाला और भी अधिक [प्रज्वलित हो] उठती है। (३) जिसके जी में कोई [प्रेमपात्र] यदि एक बार आ समाया तो वह उसके प्राणों के साथ ही [उसके मन से] निकला है। (४) बुद्धि बिरह से कहीं बराबरी कर सकती है? बिरह का पवन बुद्धि के दीपक को बुझा देता है। (५) मूर्ख लोग ऐसी [विषम स्थिति को] नहीं जानते हैं [इसीलिए वे उपदेश देते रहते हैं] किंतु जहाँ बिरह होता है वहाँ शिक्षा और बुद्धि का क्या प्रश्न?

(६) कुमार के शरीर में वह विकार है कि जगत् में न जिसका मन है और न जिसको मूल (औषध) है। (७) वे सभी मूर्ख हैं जो [इस प्रकार के] बिरह [की अवस्था] मेरे सूर्य को मूल से छिपाना चाहते हैं (बिरह की पीड़ा को सामान्य उपचारों से शांत करना चाहते हैं)।"

टिप्पणी—(२) झार < ज्वाला। (४) दिया < दीआय < दीपक। (५) सिख < सिक्खा < शिक्षा।

[१६७]

जो मरन भग कीन्ह बिधाता[१] । बरन सो जा न बाज हमारा[२] ।
बहुत बचन भो बहुत उपाई । के दरसि पुनि आगनि सुनाई[३] ।
जो निरस जिय[१] भएउ निरासा । भएउ मरन[२] सिसु परिहरि आसा ।
जाइ राय[१] सउ[२] कहेउ[३] पुकारी । बसि गिरिह गै पुन गोसारी ।
सुनत राय[१] ब्याकुल होइ धावा । अमर भएउ बिरह[२] मारा न आवा ।
गय रारि[१] दुख मार मन्दिर भएउ[२] अघोर ।
नगर नगर बिसमाउ[१] राज गिरिह मुनि[२] रोर ॥

पाठान्तर—ए म इस छंद के स्थान पर आने वा १ १ है जो यहाँ भी है।
भा मे उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ भा निज लिए। २ मुख पूर्ववती १६६४।

(२) १ रा एक न पाइ बनाई (?)।
(३) १ रा मिर्त्य मिउ। २ मा पुंवर।
(४) १ रा राज। २ रा मों। ३ मा महुमि।
(५) १ रा राज। २ मा खेउ मुह।
(६) १ रा राज राउ। २ रा औ।
(७) १ रा सम रोवा। २ रा सम।

अर्थ—(१) महता (महामात्य) ने जब इस प्रकार विचार किया कि यह वेदना वह है जिससे उसका कोई संबंध नहीं है (२) बहुत सी बातें बहुत से उपाय और अपना गुणीपन करके उसने देख लिया। (३) जब वह निश्चित रूप से जी में निरास हो गया तो महता (महामात्य) [रही सही] आशा को भी छोड़कर चला। (४) उसने आकर राजा से पुकार कर कहा "शीघ्र घर में आकर पुत्र की गुहार लगिए (रक्षा कीजिए)।" (५) यह सुनते ही राजा व्याकुल होकर दौड़ पड़ा; वह अकबका गया और [उसके मुख से] कोई वाक्य न निकला।

(६) राजा ने रो-चिल्लाकर दुःख का बहुत किया और [राज] मंदिर भर में अन्धेरा हो गया (७) और जब राजगृह का कोलाहल (शोर-गुल) [नगर-निवासियों ने] सुना तो सारा नगर विषाद में पड़ गया।

टिप्पणी—(६) रारि < राडि < राटि = चिल्लाहट। (७) नगर < नगर। रोर < रोल < रव = कोलाहल।

[१६८]

राय¹ पाग सिर मुइ द² मारी। गज मन्दिर³ रावहिं⁴ वर नारी।
मवला आइ परी क पाऊ¹। कहुसि² पूत का भाग³ विपाऊ⁴।
मोहि¹ पूत अनि² मरहु निरामा। दुहु जग मह³ मोहि तारी⁴ आसा।
पीर कहहु माता बलिहारी। कहि औगुन तुम्ह भाग भिखारी¹।
कौनि भगिनि जहि¹ त्रिभुवन जरई²। कौन सकति³ मोर अस जिउ हरई⁴।
मांत पिता मुख¹ देखत उपजी दया² कुवर क जीय।
मन उघारि कहसि¹ दुख बरवम² जो मधुमालति दीय॥

पाठान्तर—(१) १ रा राय। २ मा धरि। ३ मा मंदिर। ४ ए रोवै।
(२) १ रा पाया ए पाऊँ। २ मा कहै। ३ ए भौ। ४ रा विनावा।
(३) १ रा मुहि। २ ए ना। ३ ए दुनो जुग। ४ मा मोरै ताहि लगि ए मेरी तारी।
(४) १ मा तुम्ह होहु दुखारी ए (तुम) भैहु भिखारी।
(५) १ ए कौनी भामी ए कौन औगुन जेहि। २ मा जरेऊ। ३ ए कै सेकति। ४ ए मोरि भाम जे। ५ मा हरेऊ।
(६) १ ए के। २ ए दाया उपज।
(७) १ ए कहा। २ रा ए म मह पाठ नहीं है। ३ रा मोहि मधुमालति दीप ए मधुमालति जिन कीन।

अर्थ—(१) राजा ने अपनी सिर की पगड़ी भूमि पर पटक दी और राज-मंदिर में पेछ मारियाँ रोने लगीं। (२) कमला (कुमार की माता) ने आकर [कुमार के] पैर पकड़ लिए और कहा "ऐ पुत्र तुम यह क्या बेपैर (निराधार) हो गए? (३) हे पुत्र मुझे तुम निराश न करो दोनों जगत् (मृत्युलोक और परलोक) में मुझे तुम्हारी ही आशा है। (४) माता बलिहार जाती है, तुम अपनी पीड़ा बताओ [हमारे] किस अवगुण से तुम भिखारी बन बैठे? (५) यह कौन सी अग्नि है जिससे [मेरे लिए] त्रिभुवन (मेरा सुख-सौख्य) जल रहा है यह कौन सी दारिद्र है जो इस प्रकार मेरे प्राण (तुम्हें) हर रही है?"

(६) माता-पिता का मुख देखते ही कुमार के जी में दया उत्पन्न हुई (७) और उसने नेत्र उघाड़कर वह दुःख बताया जो बरबस ही मधुमालती ने दिया था।

टिप्पणी—(१) भइ < भमि। (४) पीर < पीड़ा।

[१६९]

फुनि*[1] कह कुंवर पिता सउ[2] रोई । मैं अपुनै[3] जिउ बसउ[4] रोई ।
दिन दस राय रजायसु[1] पावौं । आपन जीउ ढूंढि लै आवौं ।
दहु जग नगर महारस कहाँ । मोर जीउ हरि लीन्हेउ[1] तहाँ ।
आएसु होइ जाइ जिउ[1] हेरौं । जिउ[2] मिलि कया बात[3] सब[4] फेरौं ।
मन सो परम आगि मोहि[1] जाई । सपनें[2] पेम प्रीति जइ[3] लाई ।

आयसु होइ जाइ जिउ हेरौं मोर[1] जग जियन[2] सिराम[4] ।
परम होइ[1] कबहों[2] मकु दाहिम मोहि मिलि जाइ सो प्राम[3] ॥

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त अर्धालियों २ ३ ४ का क्रम है ४ २ ३।
(१) १ मा रा ए पुनि। २ ए सों। ३ मा ए आपन। ४ ए बैसा।
(२) १ मा दिन दस जो रे रजायेस रा राज के दिन दस आएसु।
(३) १ मा लीएउ ए लीन्हा।
(४) १ रा जिय। २ रा जिय मा जइ। ३ मा कया पात ए क ग्यान। ४ ए जै।
(५) १ मा मार ए मधु। २ मरन कै (?)। ३ मा जिनि ए जो।
(६) १ मा माहि। २ ए में यह चरण नहीं है। ३ ए जियन रा जीउ। ४ रा हेरान।
(७) १ मा हाहि। २ मा ए में यह चरण नहीं है। ३ मा जाहि पराम ए जाइ परान।

अर्थ—(१) फिर कुमार पिता से रोकर कहने लगा "मैं अपने-आप [अपना] जी लो (बैठा) बैठा। (२) [यदि] दस दिनों के लिए राजा का राजादेश पाऊँ, तो मैं अपने जी को ढूंढ लाऊँ। (३) पता नहीं जगत् में महारस नगर कहाँ है; जहाँ [उस ने] मेरा जीव हर लिया है। (४) यदि आदेश हो तो [जाकर] जाकर अपना जीव ढूँढूँ और जीव से मिलकर काया की सारी बातें बदल

फेर लाऊँ। (५) संभव है कि मेरा वह कर्म जग जावे जिसने (जिसके प्रसाद से मैंने) स्वप्न में प्रेम प्रीति लगाई।

(६) यदि [आपका] आदेश हो तो जाकर मैं अपना जीव ढूँढूँ जगत् में मेरा जीवन [अब] समाप्त हो गया है; (७) कभी संभव है कर्म (भाग्य) मेरे दाहिने (अनुकूल) हो जावे और [उसके परिणाम-स्वरूप] मेरा वह प्राण मुझे मिल जावे।"

टिप्पणी—(२) रजाएसु < राजादेश। (४) (६) आएसु < आदेश।

[१७०]

मांता पिता सुनत गह भर[1]। दुवौ[2] कुंवर के पायनि[3] पर।
कहन्हि[1] पूत जानहु[2] परवानां। हम दुहु घट कर तुमही[3] प्राना।
वरु हम पूत[1] अहारहु मारी। बिरिध बस जनि जाहु अहारी।
राजपाट सभ मिलिहैं मांटी[1]। हम तुम्ह बाजु[2] मरब हिय फाटी।
आइउ धूप पियरि जम घरें[1]। सरवन मोर[2] तुहीं दुख करें[3]।
हम[1] कह[2] बिरिध बस अति दारुन पूत[3] न छाड़हु मोर।
जस[1] समुद कर[2] बोहित तुम्ह बिन लाव को[3] तीर॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए गहबरे। २ ए दोउन। ३ मा पाऐं ए पायन्ह।
(२) १ ए कहेसि। २ ए जानेसि।
(३) १ रा जिउ मोर। २ ए हम दुनहु कर घट तुह।
(४) १ मा माटी। २ रा तोहि बाजु ए तुह बाजु।
(५) १ ए धूप पिअर। २ मा हम केरे, ए जस केरा। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ रा तुहि दुख केरें ए तुहरे की फेरा।
(६) १ तथा २ मा ए में ये दो शब्द नहीं हैं। ३ रा तोर।
(७) १ मा जग। २ ए कै। ३ ए तुह बिनु को लावै।

अर्थ—(१) [कुमार की ये बातें] सुनते ही [उसके] माता-पिता का जी भर आया और दोनों कुमार के पैरों पर गिर पड़े। (२) उन्होंने कहा "हे पुत्र यह प्रमाण [सच] मान लो कि हम दोनों के घटों (शरीरों) के तुम्हीं प्राण हो। (३) भले ही हमें हे पुत्र तुम मार डालो किन्तु इस [हमारी] वृद्ध वयस् में हमें डाल (छोड़) कर न जाओ। (४) राज-पाट सभी मिट्टी में मिल जाएगा, और हम भी तुम्हारे बिना हृदय के फट जाने से मर जाएँगे। (५) हमारी आयु (अवस्था) [संध्या की] पीली धूप है यम (काल) ने हमें घेर रक्खा है हमारे दुःखों के [लिए] तुम्हीं श्रवणकुमार हो [जिसने अपने अंधे माता-पिता की उनकी वृद्धावस्था में सेवा की थी]।

(६) हमको, अत्यंत दारुण वृद्धावस्था है ऐसे संकट के समय में तुम हमें न छोड़ो (७) जैसे समुद्र [के संतरण] के लिए बोहित (जहाज) होता है [उसी प्रकार हमारे लिए तुम हो], तुम्हारे बिना हमें कौन [दुःख-सागर के] किनारे लगावेगा?"

टिप्पणी—(२) परवांन < प्रमाण। (३) बैस < वयस्। (४) बाजु < वज्ज < वर्ज = बिना। (७) बोहित < बोहित्थ [दे]=प्रवहण जहाज।

[१७१]

जियँ[1] भरोस जनि[2] करहु हमारा । आइउ मोर दीप[3] भिनुसारा[4] ।
माता पितहि जनि[1] करहु निरासा । बिछुरि बहुरि कहि मिलन क[2] आसा ।
जौ म यह कलि[1] परिहरि जाऊ । ताहि सेउं[2] जियत रह जग[3] नाऊ ।
सुत बियोग जसरथ[1] कै नाई[2] । हम[3] पुनि[4] मरब पूत तुम्ह ताई[5] ।
हम दूनौं पहिलहिं[1] जिउ मारहु । तौ तुम्ह[3] पूत बिदेस सिधारहु[4] ।
मोरें[1] जियत न[2] बिछुरहु[3] मोरें[4] और न कोइ ।
हिया फाटि ररि मरिहौं संवरि गवरि[1] गुन[2] रोइ[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए जिय। २ ए जैं। ३ दीपक। ४ रा उजियारा।
(२) १ रा मात पितहि जनि ए माता पिता न। २ ए बिछुरे बहुरि के मिलना रा बिछुरे बहुरि मिलिय केहि।
(३) १ ए कली। २ ए तुह सौं। ३ रा. जगत रहै जस।
(४) १ भा ए दसरथ। २ ए नाउँ। ३ भा ए मैं। ४ भा रा ए पुनि। ५ ए तोरि ठाउँ।
(५) १ रा पहिलें ए पहिलै। २ रा जिय। ३ ए तुह। ४ ए सिधावहु।
(६) १ ए मोंहि। २ भा जनि। ३ ए मारहु। ४ ए मोरे।
(७) १ ए गो हरया। २ भा तोहि ए तुह। ३ ए हार।

अर्थ—(१) "[अपने] जी में [अब] हमारा भरोसा न करो; हमारी आयु (अवस्था) तो सवेरे का दीपक है। (२) माता-पिता को तुम निराश न करो क्योंकि एक बार बिछुड़ने पर किसको पुनः मिलने की आशा हो सकती है ? (३) यदि मैं यह कलि (जगत्) छोड़कर चला जाऊँ, तो [मुझे अभी तक आशा यह रही है कि] तुमसे (तुम्हारे द्वारा) जगत् में मेरा नाम जीवित रहेगा। (४) पुनः (अन्यथा) पुत्र-वियोग में हे पुत्र दशरथ की भाँति ही हम भी तुम्हारे लिए मर जाएँगे। (५) हम दोनों को जीव से तुम पहिले ही मार डालो, तब तुम हे पुत्र विदेश जाओ।
(६) मेरे जीते-जी तुम मुझसे अलग न हो क्योंकि मेरे और कोई नहीं है। (७) [अन्यथा] हृदय के फट जाने पर तुम्हारे लिए रटता-रटता और तुम्हारे गुणों को स्मरण करता रो-रोकर मैं मर जाऊँगा।"

टिप्पणी—(१) आइउ आयु=अवस्था। (२) बिछुर < विच्छुर् = अलग होना। (४) जसरथ < दशरथ। (७) ररि < रट < रट् = रटना चिल्लाना।

[१७२]

मांगा[1] तिन राउ जस[2] कहा । कुँवर कान सो [illegible] न[3] [illegible] ।
पग पग[1] [illegible] गनि गनि गाई । [illegible] जग रितु[1] मनुसहि महि[2] गाई ।
कठिन बिरह दुख सो न संभारी[1] । मागउ[2] [illegible] । [illegible] अपारा ।
पर मांस[1] मृग भगम पहारा[2] । गवन[3] कठिन मुंदा पहिरारा[4] ।

उदपानी कसि क कर[1] साटी[2] । गुन किंगरी बरागी[3] ठाटी[4] ।
कंथा मखलि[1] चिरकुटा जटा परी सिर[2] केस ।
बज्र कछौटा[1] बांधि क किय गोरख का बेस[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मात ए मातै। २ ए कहा। ३ ए कुंअर के कान न एकौ।
(२) १ रा पंथ। २ ए के। ३ ए दोनों जुग कछु। ४ ए समुझ न।
(३) १ मा गा बिसमारी ए जा न सँभारी। २ ए माँगा।
(४) १ मा हाथ। २ मा चढ़ावै। ३ रा ए स्रवन। ४ मा पहिराई।
(५) १ ए उदिका मिरुर कीयी (तुल परवर्ती चरण)। २ रा साठी।
३ मा बैरागिन। ४ ए सांटी (तुल॰ पूर्ववर्ती चरण)।
(६) १ ए मा मेखली। २ मा पराई, ए परा जा।
(७) १ मा कछौटी। २ मा कैमेउ मारग बेस ए कैसा गोरख भेस।

अर्थ—(१) माता-पिता ने रो-रो कर जितना-कुछ कहा, उसमें से एक (कुछ) भी कुमार के कान में न पड़ा (घुसा)। (२) प्रेम-पथ में जिसने भी सुधि-बुधि खो डाली वह दोनों जगत् (इहलोक और परलोक) की कुछ (कोई बात) नहीं समझता। (३) विरह का कठिन दुःख [कुमार से] सँभाला न जा सका और उसने [योगियों के] खप्पर, दंड तथा अधारी माँगे। (४) मत्थे (सिर) पर उसने चक्र रक्खा और मुख पर भस्म चढ़ाया श्रवणों को उसने स्फटिक की मुद्रा पहना दी। (५) उदपानी (जल-पात्र-विशेष) को उसने कसकर हाथ में लगाया, और उस बैरागी ने गुण (तांत की वह धनुही जिससे किंगरी बजाई जाती है) और किंगरी को उसने ठाट लिया (कस कर ठीक कर लिया)।

(६) [उसने] कंथा (गुदड़ा) मेखली और चिरकुटा (चीथड़ा) [सँभाला] और सिर के केशों की जटा पड़ गई; (७) वज्र-कौपीन बाँध कर उसने गोरखनाथ [या गोरखपंथी योगी] का वेश कर लिया।

टिप्पणी—(३) खप्पर < कर्पर = भिक्षापात्र। (४) स्रवन < श्रवण। (५) गुन < गुण = प्रत्यंचा धनुष। किंगरी < किन्नरी = एक प्रकार की तंत्री। (६) कंथा = कपड़ों गुदड़ी पुराने वस्त्रों से बना कपड़ा।

[१७३]

दुग उदास बराग भेरावा[1] । इन्ह तीनिउ[2] सिरमूर गढ़ावा[3] ।
औ[1] सनाछ करि जप मारी । औ सिंगी गिय[2] मल्प मधारी[3] ।
असाखी गोरख धघोरी[1] । ध्यान धरन मन पौन सकोरी[2] ।
पम पावरी[1] राखउ[2] पाऊ । ग्रिग छाला बराग सम्हाऊ[3] ।
दरसन लागि भस[1] सब परा । आंच[3] दुख मधुमालति केरा ।
ग्यान ध्यान औ[1] आसन[2] स्रवन[3] ननन्ह[3] सौं[4] लागि[5] ।
दरसन लागि भेस[1] भस[2] कीन्हा[3] मकु गोरख जा जागि[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मिलाऊ, ए मेराऊ। २ मा इन्ह तिन्ह मिलि ए इन्ह तीनहु। ३ ए चढ़ाऊ।
(२) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए जो। ३ ए अधारी।
(३) १ ए अधारी। २ मा ध्यान धरेउ मन पुनि सकोरी ए ध्यान धरै मन पौन सँभारी।
(४) १ ए पेम पंथ ए पेम पौरि पे। २ ए धारसि। ३ मा ए भुआऊ।
(५) १ ए हियँ ए बरस। २ ए तै। ३ मा पावै ए मरै।
(६) १ ए जो। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए सवननि। ४ मा लै। ५ ए लाइ।
(७) १ मा एउ। २ मा. सब ए तै। ३ मा कीन्हेसि ए फेरा। ४ ए मिलि जाइ।

अर्थ—(१) कुरूप उदास-भाव और वैराग्य को उसने मिलाकर एक किया इन तीनों का उसने त्रिशूल चढ़ाया; (२) और खप्पर की उसने अपमाला ले ली, और गले में [बाँध कर] सिंगी डाल ली और छोटी अधारी ले ली। (३) उसने बैसाखी तथा गोरख-धंधा ले लिया और ध्यान धारण करने के लिए मन और पवन (पंचप्राण) को उसने सिकोड़ (अन्य दिशाओं से हटा) लिया। (४) उसने प्रेम की खड़ाऊँ पर पैर रक्खा और मृग चर्म तथा वैराग्य के साज-सामान लिए। (५) [प्रियतम के] दर्शनों के लिए उसने यह सब वेश बनाया और [तदनंतर] मधुमालती के दर्शन की याचना करने लगा।

(६) ज्ञान ध्यान तथा आसन करने लगा; श्रवणों और नेत्रों में उसे [मधुमालती की] लय लग गई (७) [उसके] दर्शनों के लिए यह सब भेष उसने कर लिया और ऐसा लगने लगा मानो गोरख ही जाग गया हो।

टिप्पणी—(२) धारी<धारित्र। सिंग<शृंगा। (६) लौ<लय=तल्लीनता।

[१७४]

भिउ रूप दोसर बैरागी। मधुमालति कर दरसन मागी।
मारग जोग सिद्धि मन[1] होई[2]। बहुरि मिलै मधुमालति सोई।
गुरु दरसन गउ लौ[1] उपराजी[2]। सहज अनाहद[3] सिगरी गाजी।
मधु रूप गउ[1] रस[2] मिल[3] भजा। आसा मौन[4] पौन पर[5] गया[6]।
बिरह आगि गउ[1] तन मन जारेउ[2]। नैन[3] पानि मउँ सिर पखारेउ[4]।

स[1] गुरु रूप मन धरि ध्यान गवन समानहु पन[2]।
मधु दरसन गउँ[1] साद लौ[2] समउ साध मौन[3]॥

पाठान्तर—(२) १ मा सिद्धि गुन ए सिध सिध (<सिधि सिद्धि पानी सिधि)। २ ए सोई।
(३) १ मा दरसन भेउ भे ए दरसन भै भै। २ ए उपराई। ३ ए. नाद के ए अनद। ४ मा बाजी ए बाजै।

(४) १ रा सों ए मुनि (<सों फारसी लिपि)। २ मा. ए मस। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ मा गवान। ५ ए तजा।
(५) १ रा आगि सा ए आगि से। २ ए जारा। ३ ए मैन (बाद में यह शब्द पुनः आता है)।
(६) १ ए में रा में यह शब्द नहीं है। २ मा सवन समानेउ सीन रा सवन समानेहु बैन ए सुगहु मान न सैन।
(७) १ ए गुरु मधु दरसन रा मधु रूप सो। २ मा लै। ३ ए बैस साधि छे मौन रा बैठहु साध हाल।

अर्थ—(१) मधुमालती के दर्शनों के लिए [निकलता हुआ] विरक्त [कुमार] सिद्ध जैसा दीखता था। (२) [वह सोचता था,] योग-मार्ग से भले ही सिद्धि प्राप्त हो जाए और वह मधुमालती पुनः प्राप्त हो जाए। (३) [मतः] गुरु (प्रेम पात्र-मधुमालती) के दर्शनों (ध्यान) से उसने लय उत्पादित की और सहज मनाहत नाद से किंगरी बजाई। (४) मधुमालती के रूप (सौन्दर्य) से चित्त में उसने रस का भजन (आयोजन) किया और [अपने] आवागमन के पवन (प्राणों) को घट में संचित किया। (५) विरह की अग्नि से उसने तन-मन को जलाया और पवन (प्राणायाम) के पानी से उसने पिंड (शरीर) को प्रक्षालित (शुद्ध) किया।

(६) गुरु (प्रेमपात्र—मधुमालती) के रूप उसके नेत्रों में आ कर धँस गए, और उसके श्रवणों में उसके वचन सदा रहे (७) मधुमालती के दर्शनों से लय लगाकर वह मौन साधकर बैठ गया।

टिप्पणी—(३) (७) लौ<लय। (३) किंगरी<किन्नरी=एक प्रकार का वाद्य। (५) पखार<प्रक्षाल्य्=धोना। (६) सवन<श्रवण=कान।

[१७५]

मता पिता फुनि¹ आए पासां । देखि कुँवर उर बाढ़सि² सांसा ।
औ मुख देखि¹ छार लपटानी । घोवहिं कवर² कवल क पानी ।
कहहिं¹ पूत सुइ² आस हमारी । राज छाड़ि³ कत⁴ होसि⁵ भिखारी ।
मौ यह ह जग¹ अरथ भंडारा । अब रहिं² म तोहि लागि³ सँभारा ।
जौ तुम्ह¹ काज न आव² आजू । सो हमरें³ फुनि⁴ कौन काजू ।
अरथ दरब जन परिजन साथ सहु¹ यहुताइ ।
जौ मधुमालति भेंटहि¹ माँगि बियाहहुँ जाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा माता पिता पुनि ए मात पिता मुनि। २ ए बाढ़ा।
(२) १ ए देख। २ ए धोवा बदन।
(३) १ रा कहिन ए कहहि। २ ए तैं। ३ ए छोड़ि। ४ मा. ए कस। ५ ए होहु।
(४) १ मा मौर कहहि सब ए और मही जो। २ ए लगि। ३ ए में यह शब्द नहीं है।
(५) १ ए जो तुह काज। २ मा आवहि। ३ ए मोरे रा. हमरे। ४ रा ए पुनि।

(६) ए संग सिहु।
(७) १ ए मिलै। २ भा. बियाहहु ए बिआहेहु।

अर्थ—(१) माता-पिता फिर (तदनंतर) उसके पास आए। कुमार को देखकर उन्होंने हृदय से साँस छोड़ी (२) और कुमार के मुख पर राख लिपटी देखकर कमला (कुमार की माता) उसे कमल-नेत्रों के जल (अश्रुओं) से धोने लगी। (३) [पिता ने] कहा "हे पुत्र तुम हमारी आशा थे सो राज्य छोड़कर भिखारी क्यों हो रहे हो? (४) और यह जितना कुछ अन्न-भांडार है अब तक मैंने तुम्हारे लिए सँभाला है (५) यदि यह आज तुम्हारे कार्य नहीं आ रहा है तो फिर हमारे किस कार्य का होगा?

(६) मैं अर्थ-द्रव्य तथा जन-परिजन (भृत्यादि) को बड़ी संख्या में साथ ले कर चल रहा हूँ। (७) यदि मधुमालती मिलती है तो वहाँ जाकर उसे माँगकर तुमसे उसका विवाह कर दूँगा।"

टिप्पणी—(१) पास < पार्श्व। (४) जेत < जेत्तिअ < यावत् = जितना।

[१७६]

भोर[1] भएँ[2] दर परिगह साजा । कोस बीस संग[3] आए राजा ।
हाथी घोर बहु[1] सहन भंडारा । कटक अनग गन को पारा ।
औ अत जन परिजन साथ[1] आए[2] । कुंवर साथ सब[3] रायें[4] चलाए ।
पूंछत चल्ल महारस दसा । जहवाँ[1] बिक्रम राय नरेसा ।
चलत[1] आग सायर कर[2] तीरा । अगम अगाध अथाह[3] गंभीरा ।
हाथि घोर[1] दर परिगह औ सब[2] सहन भंडार ।
चढ़ा[1] कुंवर गा[2] बोहित लिखा को मन लिलार[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ दा भोर। २ ए भो। ३ भा ए संग।
(२) १ ए बोरा।
(३) १ भा सब। २ पूरे चरण का पाठ ए में है औ जन अगिनत परिजन साथे। ३ ए जो। ४ दा ए राय।
(४) १ दा जहाँ सो।
(५) १ ए चले। २ भा कै। ३ भा अथोर (< अथाह फारसी जि॰) अथाह ए अथाह जी॰।
(६) १ ए घोरा। २ ए जो।
(७) १ भा चाउ। २ गा ए भै। ३ ए पार।

अर्थ—(१) प्रभात होने पर दल और परिवार (अनुचर-भृत्यादि) को राजा ने सजाया; बीस कोस तक राजा [कुमार के] संग आए। (२) उसके साथ हाथी-घोड़े और सहन भंडार अनेक था, और अनेक सैनिक थे जिन्हें कौन गिन सकता था? (३) और जितने जन-परिजन संग आए थे सब को राजा ने कुमार के साथ चला दिया। (४) वे सब महारस देश को पूछते हुए

चल पड़े, जहाँ विक्रमराज नरेन्द्र थे। (५) वे चलते-चलते सागर के तट पर आ गए, जो अगम्य अमोघ (?) अथाह और गंभीर था।

(६) हाथी घोड़ा दल परिगह (अनुचर भृत्यादि) और समस्त सहन (संरक्षणीय सामग्री) तथा भांडार थे (७) और इनके साथ कुमार जा कर बोहित (जहाज) पर चढ़ा [कर्म का] लिखा कौन मिटा सकता है?

टिप्पणी—(१) परिगह < परिग्रह = अनुचर भृत्यादि। (७) बोहित < बोहित्थ [दे] = प्रवहण जहाज।

[१७७]

बोहित बोझि, समुद[१] चलावा । बिधि का[२] लिखा जानि नहिं[३] पावा ।
मांस चारि गए[१] पानिहि पानी[२] । पुनि[३] सो[४] अग्नि भरी नियरानी[५] ।
समुंद ल्हरि दरसहिं[१] अंधियारी[२] । दिसा[३] भुलान बोहित कड़हारी ।
मग अमग्ग नहिं गएउ[१] बिचारी । बोहित परउ भवर महं भारी[२] ।
परतहिं भएउ[१] टूक सौ साता । चहुं दिसि बोहित उठ[२] अघाता ।
बूड़े इस्ट[१] मित[२] जन परिजन[३] बूड़[४] सहन भंडार ।
बूड़े राज पाट जत आहा[१] बूड़े[२] कुर तोसार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा समुद्र। २ मा क। ३ मा किछु जानि न ए जानि ना।
(२) १ ए भौ। २ रा ए पानो पानी। ३ रा ए पुनि। ४ मा या ए म यह शब्द नहीं है। ५ रा म तुमानी मात्र है।
(३) १ भा दरसन ए निमि। २ ए अन्धारी। ३ भा दिसि।
(४) १ मा मग्ग अमाग न जा" ए मगु अगम न जाइ। २ रा परे भवर महं मारी भा परेउ लहर के भारी ए परा लहरि उठ भारी। (तुल पूर्ववर्ती अर्धाली का प्रथम चरण)।
(५) १ मा प्रथमहिं भएउ ए परतहिं भौ। २ ए उठा।
(६) १ ए बड़ा सबै। २ ए मीन रा में यह शब्द नहीं है। ३ रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए औ जो रा बूड़उ।
(७) १ मा बूड़ै राज माज जेत आहेउ ए बूड़ा राज पाट जन आहा रा बूड़उ राजपाट जेत आहा। २ रा बूड़उ ए बूड़ा।

अर्थ—(१) बोहित को [इस प्रकार] लाद कर समुद्र में चलाया (आगे बढ़ाया) गया किन्तु विधाता (भाग्य) के लेख को [कोई] जान नहीं पाया। (२) चार मास तक वे सब पानी पानी (जलमार्ग से) गए तो इसके अनंतर दुर्दिन का समय निकट आया। (३) समुद्र की लहरें अंधकारमयी दिखाई पड़ने लगीं और बोहित का कर्णधार दिशा भूल गया। मार्ग-अमार्ग विचारा नहीं जा सका और बोहित भारी भँवर में पड़ गया। (५) वह भँवर में पड़ते ही सात सौ टुकड़े हो गया, और उसके चारों ओर [लहरों के] आघात उठने लगे।

(६) इष्ट-मित्र जन-परिजन सहन (संरक्षणीय सामग्री) भांडार डूबने लगे; (७) जो

कुछ राज-पाट (राजकीय वैभव के चिह्न) था डूबने लगा और तुरय-तुखार (घोड़े) [आदि] डूबने लगे।

टिप्पणी—(१) बोहित < बोहित्थ [दे०]=प्रवहण जहाज। (३) कंडहारी < कर्णधार। (४) मग्ग-अमग्ग < मार्ग-अमार्ग। (७) तुरै < तुरग=घोड़ा। तोखार=तुखारिस्तान का घोड़ा घोड़ा।

[१७८]

कुँवर आस जिय कै परिहरी[1] । बहुरि ध्यान कै[2] सुमिरसि[3] हरी ।
तू त्रिभुवन[1] जग रच्छक साईं । केहि सुमिरौं तोहि छाड़ि[3] गोसाईं ।
जग जीवन दायक[1] पुनि[2] तोही । कर[3] बूड़त धरि साइँ मोही ।
जेइ गाढ़ें सुमिरउ[1] करतारा । भए[2] तासहु[3] फलवारि अंगारा ।
यहि अन्तर विधि मया[1] जनाई । कुँवर टप[2] बूड़त मह पाई ।
विधि परसाद कुँवर के आगे काठ एक उकिलान[1] ।
बूड़त राजकुँवर गहि पकरा[1] जान रहा[2] घट प्रान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जिय कै परहरी। २ मा पुनि कै ध्यान धरि। ३ ए सुमिरा।
(२) १ ए तीनि भुवन। २ ए तें रछपक। ३ ए कहि जापौं तोहि छोड़ि।
(३) १ मा देनहि। २ ए विनु। ३ ए को। ४ ए पै।
(४) १ ए जिन्ह गाढ़े सुमिरा। २ मा भएउ ए भौ। ३ ए ताके।
(५) १ मा ए दया। २ मा टेक।
(६) १ ए उकरान।
(७) १ मा कै पकरेउ ए एक। २ मा जात रहेउ ए जात रहान।

अर्थ—(१) कुमार ने जीने की आशा छोड़ दी, किन्तु फिर उसने ध्यान कर हरि का स्मरण किया। (२) उसने कहा "हे स्वामी [हरि] तू तीनों भुवनों और जगत् का रक्षक है [इसलिए] हे गोसाईं तुझे छोड़कर किसका स्मरण करूँ? (३) जगत् को जीवन-दान करने वाला भी तू ही है [इसलिए] हे गोसाईं मुझ डूबते हुए को हाथ पकड़ कर निकाल।(४) जिसने भी गाढ़े (संकट के) समय में हे कर्त्तार तेरा स्मरण किया उसके लिए अंगारे भी पुष्पवाटिका बन गए। (५) इस बीच विधाता ने कृपा दिखाई और कुमार ने डूबते हुए में सहारा पाया।

(६) विधाता की कृपा से कुमार के आगे एक लकड़ी का टुकड़ा उतराया; (७) उसे डूबते हुए कुमार ने लेकर पकड़ लिया और [उसके] जाते (निकलते) हुए प्राण उसके घट (शरीर) में रह गए।

टिप्पणी—(६) काठ < काष्ठ=लकड़ी। उकिल उतर < उद्+तृ=ऊपर आना।

[१७९]

भएउ कुँवर कहँ[1] आस अपारा । गयउ सरिस तजि उर धारा ।
तजि[1] जो कुँवर गरिर मह[1] गए । जिय गउ[1] जिवन आस परिहरा

बहुरि न ज्ञान कुँवर का भएउ । कहाँ हुतें[1] लहरि कहाँ ल गएउ ।
लहरि बहुरि ले[1] तहाँ अडारा । जहाँ न चाँद सुरुज उजियारा ।
लहरि अडार समुंद फिरि[1] आई । कुँवरहिं तीर अचेत अडाई[2] ।
फुनि[1] जौ चेत चित्त चेत[2] परा अहू[3] बिसँभार[4] ।
आगू[1] पाछु न कोई[2] बिनु दुख[3] कुँवर दयाल[4] ॥

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त अर्द्धाली ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा मा कुँवरहि बहु, ए भी कुँवरहि ज। २ रा पुनि। ए में यह शब्द नहीं है।
(२) १ रा. ए पुनि। २ ए भो। ३ रा जियमों ए जिउ ते। ४ ग जीव।
(३) १ मा हुत ए. तें।
(४) १ ए के। २ ए सूर।
(५) १ ए आ। २ ए लडाई।
(६) १ रा ए पुनि। २ रा. चीयें। मा देखें। ३ रा महा ए महीं। ४ ए बिसभार।
(७) १ मा आगे। २ मा पाछ न कोऊ, ए पाछू ना कोई। ३ मा दुख औ रा. में दुख मात्र है। ४ ए दयार।

अर्थ—(१) कुमार को वह लकड़ी का टुकड़ा आधार हो गया किन्तु समुद्र की लहर पुनः अपार रूप से उठी। (२) फिर (दोबारा) जो कुमार लहरों में पड़ गया तो उसने जी से जीने की आशा छोड़ दी। (३) फिर कुमार को इस बात का ज्ञान हुआ कि क्या हुआ और लहरें उसे कहाँ से कहाँ ले गईं। (४) किन्तु लहरों ने उसे ले जाकर वहाँ डाल दिया जहाँ चन्द्रमा और सूर्य का प्रकाश था। (५) वे लहरें कुमार को अचेत समुद्र तट पर छोड़कर अपने भीतर समुद्र में लौट आईं।

(६) फिर जो कुमार ने चित्त में चेत का स्मरण किया (चेत सँभाला) तो देखा कि वह बे सँभाल पड़ा हुआ है (७) और उसके आगे-पीछे दुःख तथा दयाल (ईश्वर) के अतिरिक्त कोई नहीं है।

टिप्पणी—(१) अपार<आपार।

[१८०]

राज साज सब गा जत[1] अहा । मधुमालति कर दुख सँग[2] रहा ।
दहुँ दिसि फिरि लखै कोइ नाहीं[1] । रही एक बन सँग[2] परिछाहीं ।
जेहि बन कबहुँ न मानुस आवा । तेहि बन[1] बिधि[2] लै कुँवर छड़ावा ।
पुनि उठि कुँवर चला बन माहीं । जहाँ पंथि पग मारग[1] नाहीं ।
अगम पंथ दुख[1] साथ न कोई । गिन[2] पाँव गिन[3] पग[4] रोई ।
सीस रहिर पाइ[1] आव पाव रहिर[2] सिर जाइ ।
कर सहस जौं[1] पग[2] तौ एक पाप मिटाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बूड़ा चल। २ मा ए दुख पै (पै दुख- ए) संग।
(२) १ मा ए चहुं (चहुं—ए) दिसि (दिस—ए) फिरि देखै को (कोइ- ए) नाही रा चहुं दिसा फिरि देखै नाही। २ मा ए पै संग।
(३) १ रा. पुनि। २ ए जो।
(४) १ ए परमारथ।
(५) १ मा दुक्ख सम। २ ए गम। ३ ए सन। ४ रा बैठे।
(६) १ मा रुहिर पा ए रुधिर पाँव। २ ए पाँव रुधिर, मा पाँव रकत।
(७) १ मा किएं। २ रा बैठे।

अर्थ—(१) [कुमार का] राजकीय वैभव [आदि] जो कुछ था वह सब चला गया केवल मधुमालती [के विरह] का दुःख उसके साथ रह गया। (२) दसों दिशाओं में घूम कर उसने देखा कहीं कोई नहीं था भले ही एक उसकी प्रतिच्छाया उसके साथ रह गई थी। (३) जिस वन में मनुष्य कभी नहीं आया था उस वन में विधाता ने कुमार को लेकर डाल दिया। (४) फिर कुमार उठकर उस वन में चल पड़ा जहाँ पर पक्षी भी पंख नहीं मारते (हिलाते) थे। (५) उस अगम्य वन में कोई साथ नहीं था; एक क्षण वह दौड़ता था तो एक क्षण बैठ कर रोता था।

(६) सिर का रुधिर पैरों तक आता था और पैरों का रुधिर सिर तक जाता था, (७) [चलते चलते] सहस्र बार [सुस्ताने के लिए] वह बैठता था तो एक पाव (आधा कोस) समाप्त होता था।

टिप्पणी—(२) परिछाहीं<प्रतिच्छाया। (३) मानुस<मानुष। (४) पंखि<पक्षिन। (६) रुहिर<रुधिर।

[१८१]

चला आइ बन माहँ[1] अकेला। अगम पंथ अति कठिन[2] दुहेला।
सोह[1] मयूर बिसरहिं[2] हाथी। एकसर कोउ[3] न दोसर[4] साथी।
चलत[1] न गिन मान बिसराऊं। अपन जीभि जा प्रीतम नाऊं।
पुनि पउजोधन कर पसारा[1]। परी भोम औ भा[2] अधियारा।
अति अगूत जहँ[1] रैनि न जाई[2]। कँवरि[3] कुंवर तहँ रैनि बिहाई[4]।
आसन मारि लाग लौ गुरु गउ चगउ पसरि धियान[1]।
जुग सम[1] रैनि[2] बियोग[3] क जागत भाय गुमान[4]॥

पाठान्तर—(१) १ ए मोर। २ ए औ कठिन।
(२) १ ए सिंघ। २ मा बिसारहि ए बिसारै। ३ ए दूसर। ४ ए दूसर।
(३) १ मा चलत। २ रा अपन जीभ मधुमालति ए जिह जिभा जो प्रीतम।
(४) १ ए के पैसारा। २ ए औ भी।
(५) १ ए औ अगुन कठिन। २ रा रैनि न जाई ए मा अन्धारा (कुछ पढ़नी अशोभी।) ३ रा बैठि। ४ मा तहँ रैनि गिराई ए औ नींद बैसारा।
(६) १ ए आसन मारि कै बैठा पसरि तहँ मन ध्यान।

(७) १ ए अगमन। २ रा बरैमि (?)। ३ ए. बियोग। ४ मा जागि भाव सुजान ए जाके मा सो जाम।

अर्थ—(१) वह वन में अकेला चला जा रहा था, मार्ग अगम्य, अत्यंत कठिन और दुःखपूर्ण था। (२) सिंह, शार्दूल (शरभ) और हाथी चिग्घाड़ रहे थे कुमार अकेला था, दूसरा कोई साथी नहीं था। (३) चलते समय वह क्षण भर को भी विश्राम नहीं मानता (करता) था और जिह्वा से प्रियतम का नाम जपता जा रहा था। (४) फिर [वहाँ] कदली-वन का प्रसार था संध्या आ पहुँची और अँधेरा हो गया था। (५) वहाँ अत्यंत सघन हो गया था और [सघनता के कारण] रेंगा तक नहीं जा रहा था वहाँ कुमार ने बैठ कर रात बिताई।

(६) आसन मार कर (आसन में बैठकर) गुरु (प्रेम-पात्र—मधुमालती) से लय लगाकर वह ध्यान किए हुए बैठ गया, (७) वियोग की रात युग के समान हो गई थी जिसमें वह सुजान (ज्ञानी) भाव (प्रेम) पूर्वक जाग रहा था।

टिप्पणी—(२) सीह<सिंह। सेदूर<शार्दूल=शरभ। (३) बिसराऊ<विश्राम। (४) कजली बन<कदली बन। पसार<प्रसार। (६) लौ<तल्लीनता=लय। (७) सुजान <सुज्ञान=ज्ञानी।

[१८२]

भा भिनुसार चला उठि राऊ। पिरम पंथ[1] सिर दै[2] कै पाऊ।
बिरह सरीर आइ अधिकानां। कहा कहाँ नहिं जाइ[1] बखानां।
मधुमालति मधुमालति ररई। सवरि सवरि[1] सिर मुँह न धरई।
पिरम भुलान न आपुहि[1] चीन्हा[2]। पत[3] औ[4] गयान सबहिं[5] हरि लीन्हा।
पिरम पंथ[1] जिउ देत न हारौं[2]। जौ सो जीउ[3] होहिं सौ वारौं।
चलत चलत बन भीतर[1] चौदिसि देखइ[2] राइ।
जबहिं बस भा[1] दसउ[2] समुझहिं[3] मनहिं[4] गुनाइ॥

पाठान्तर—चतुर्थ अर्द्धाली के चरण ए में परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए पीरम पथ। २ मा कै ए करि।
(२) १ ए मा जाय।
(३) १ ए सौंरि सौंरि।
(४) १ ए भौ अचेत न चाहू। २ मा चीन्हों। ३ ए चिन रा का पाठ स्पष्ट नहीं है। ४ मा में यह शब्द नहीं है। ५ मा ए सबै।
(५) १ रा पेम पंथ ए पीरम पथ। २ मा हारैं। ३ मा जौ मैं जीय पर। ४ मा होंहि निवारैं, ए. होर सौ वारौं।
(६) १ मा में 'देसा' और है। २ मा एक चौगंदी ए देगि चौगेंदी।
(७) १ मा जिनमहं चेत भएउ तेहि, ए जिउ भो चेत भा तेहि। २ ए देस। ३ मा समुझेउ। ४ ए मनै।

अर्थ—(१) प्रभात हुआ और राजा (राजकुमार) उठ कर चल पड़ा; उसने प्रेम-पथ में सिर

देकर पोच दिया था। (२) बिरह [उनके] शरीर में आकर इतना अधिक (प्रबल) हुआ कि क्या कहूँ? कहते नहीं बनता है। (३) [कुमार] "मधुमालती" "मधुमालती" रटने लगा और बार-बार उसका स्मरण कर सिर तथा मुँह [भूमि पर] पटकने लगा। (४) प्रेम में भूला हुआ वह अपने को नहीं पहिचान रहा था उसका चेत और ज्ञान सभी हर उठा था। (५) [वह कह रहा था,] "प्रेम-पथ में [अपने] जीव को देते हुए मैं हार नहीं सकता हूँ; सौ जीव हों तो मैं उन्हें भी उस पर न्यौछावर कर दूँ।"

(६) राजा (राजकुमार) ने वन के भीतर चलते-चलते एक चौखंडी (चार खंडों की मढ़ी) देखी (७) जब [उस चौखंडी को] देखकर उसे चेत हुआ वह मन में समाने और गुनने लगा।

टिप्पणी—(३) रर < रट < रट् = रटना चिल्लाना।

[१८३]

निल एस मनहि माह गुनि[1] राऊ। पुनि भीतर ओपारसि पाऊ[2]।
देखसि[1] गज मथल रंगराती। तहि पर कुंअरि सूत[2] मद[3] माती।
छिरकी[1] सेज सुगंध सुबासा[2]। लुबुड भंवर न छाड़हिं पासा[3]।
पुनि चलि राउ सेज तन गऊ। उपजी[1] संक भरम मन भऊ।
ससि बदनी जोबन बिरारारी। निहकलंक बिधन[1] अवतारी।
गुनवंती औ नागरि[1] मन[2] मोहसि संसारि[3]।
धनि सिरिस्टि जेइ सिरजी[1] धनि धनि[2] सूतनिहारि[3]॥

पाठान्तर—(१) १ रा मनमहँ पुनि ए माँह मनी। २ ए अवपारा पाऊँ।
(२) १ ए देखा। २ ए सागर राम कुंअर (< कुंअरि फारसी लिपि)। ३ मा रस।
(३) १ ए छिरका। २ मा ए सुबासू। ३ ए छोड़ै। ४ मा ए पासू।
(४) १ ए उपजा।
(५) १ मा निरमल बिधि जस।
(६) १ ए औ नागरी। २ मा जग। ३ रा ए संसार।
(७) १ ए धन्य सिस्टि जे सिरजा। २ ए धन धन। ३ मा सिरजनहार ए सिरजनिहार (पुन चरण के पूर्वार्द्ध में जेइ सिरजी)।

अर्थ—(१) चकित-सा मन में गुन (सोच) कर राजा (राजकुमार) ने फिर (तदनंतर) [उस चौखंडी के] भीतर पाँव रखे। (२) उसने देखा कि एक मज़बूत और रंगीन शय्या थी और उस पर (एक) कुमारी मदमत्त (अचेत) सो रही थी। (३) शय्या पर सुगंध और सुवास छिड़की हुई थी जिसके कारण भँवर मग्न होकर [उस शय्या का] सामीप्य नहीं छोड़ रहे थे। (४) फिर चलकर राजा (राजकुमार) शय्या की ओर गया (बढ़ा) तो उसके मन में शंका उत्पन्न हुई और भ्रम हुआ। (५) [तब उसने देखा कि वह कुमारी] चन्द्रवदनी उद्गतयौवना और वेदेन है और उसे विधाता ने निष्कलंक अवतीर्ण किया है।

(६) वह गुणवती है नागरी है (नगर-निवासिनी स्त्री) और संसार में मनमोहिनी है।

(७) [वह कहने लगा] "वह धन्य है जिसने सृष्टि में इसका सृजन किया और यह सोने वाली धन्य है धन्य है!"

टिप्पणी—(२) सेज<शय्या। (५) बिकरार<बेक़रार [फ़ा]=अशांत अधीर। (५) निहकलंक<निष्कलंक।

[१८४]

सोवति सेज[1] सरनि को[2] कहा[3] । कवल भवर जनु[4] संपुट गहा[5] ।
अम्रित बिख[1] दुइ जानि न गए । बिधि लोचन दहु जाकें[3] भए ।
बदन लिलाट सराहि न जानौं । बिन पूनिव बिन दुइजि[1] बखानौं ।
सारंग सारंग हिय[1] प्रतिपाला । ससि कें[2] प्रीति मिरिग[3] रथ घाला ।
तिल कपोल पर बनेउ[1] अपारा । एक बूंद भा सहस सिंगारा ।
सो सत साजें[1] बारा निभरम सेज[2] सुख सोव ।
दुइ चखु[1] कुवर चकोर भउ[2] चंद्रबदनि मुख जोव ॥

पाठान्तर—(१) १ भा नैन ए सेज। २ ए में बरनी। ३ भा. गाहा। ४ ए. धे।
५ मा. गाहा।
(२) १ ए बिस। २ भा में यह शब्द नहीं है। ३ रा दहुं जाम ए बहु जाके।
(३) १ ए धन पुनीव धन।
(४) १ मा. में यह शब्द नहीं है, ए जो। २ मा बहु ए को। ३ मा. ए मिगा।
(५) १ ए बने। २ भा भए, ए भी।
(६) १ ए साजे। २ भा सुभर नीद, ए निर्भम नीद।
(७) १ रा चख। २ रा भिमि।

अर्थ—(१) शय्या में सोती हुई [उस कुमारी] का वर्णन करके कौन [उसके विषय में] कहे? [शय्या में वह ऐसी लग रही थी] जैसे कमल ने भ्रमर को संपुट में पकड़ लिया हो। (२) अमृत और विष—दोनों नहीं जाने जा सके कि उसके दोनों नेत्र [उनमें से] किसके [बनाए] हुए थे। (४) उसके मुख और ललाट की सराहना (करने की युक्ति) नहीं जान पा रहा हूं; एक तरफ पूर्णिमा (मुख) और दूसरे तरफ द्वितीया के चंद्रमा (ललाट) का बखान करता हूं। (५) [उस मुख में नेत्र ऐसे लग रहे थे जैसे] शार्ङ्ग (कमल-मुख) शार्ङ्ग (हरिण-नेत्रों) का प्रतिपालन कर रहा हो [अथवा] शशि (मुख) प्रीतिपूर्वक मृगों (नेत्रों) को रथ में चला (हांक) रहा हो। (५) उसके कपोल पर तिल ऐसा लग रहा था कि मानो एक बिंदु से उस कुमारी का सहस्र गुना शृंगार हो रहा हो।

(६) सोलह शृंगार किए हुए वह बाला निश्चिंत सुख-शय्या पर शयन कर रही थी (७) और कुमार के दोनों चक्षु चकोर के समान उस चंद्रवदनी को देख रहे थे।

टिप्पणी—(३) पुनिवं<पूर्णिमा। (४) सारंग<शार्ङ्ग=कमल हरिण। (६) निभरम<निर्भ्रम। (७) चखु<चक्षु<चक्षु।

[१८५]

चिहुर नाग बिस लहर देई[1]। दरसत जिउ जोबन हरि लेई[1]।
अपिय[1] अमियरस भर कठोरा। उलटि धरे[2] कुच[3] कनक कचोरा।
तरवा रंग महावर[1] राती। रोंव रोंव जोबन गन्माती।
बेनी भाय बरनि नहिं[1] जाई। सेस सुमेर चढ़ा[2] अनु[3] आई।
अधर सुरंग देखि जिउ हरे[1]। त्रिभुवन मुनिगन[2] धीर न धरे[3]।
　　चित्र[1] सहज रंग भीन[2] नख सिख बने सुरेख।
　　जनम खुटक[1] हिय ताकें[2] एक निमिख जो देख॥

पाठान्तर—(१) १ मा लहरें देही ए लहरी देई। २ मा लेही।
(२) १ ए. आप रा अइसन। २.ए उलटिर मानो। ३ मा हिय।
(३) १ मा तरवा रंग महारम ए रंग मेंहदी कर पस्सी।
(४) १ ए ना। २ मा चढ़ेउ। ३ ए जो।
(५) १ ए मन हरई। २ ए गन। ३ मा धीरज टरे, ए धीर्ज न धरई।
(६) १ ए चतुर। २ मा रंग भीने ए रसमाती।
(७) १ रा रहै। २ मा ताकर, ए ताके।

अर्थ—(१) उसके चिकुर (केश) का नाग विष की लहरें दे रहा था, और देखते ही [देखने वाले का] जीव (प्राण) और यौवन का हरण कर रहा था। (२) उसके कुच अनपिए (अनुच्छिष्ट) अमृत-रस से भरे हुए, कठोर और उलटकर रखे हुए स्वर्ण कटोरे थे। (३) उसके [पैरों के] तलवे महावर के रंग से रक्त थे और वह रोम-रोम में यौवन के मद से मत्त थी। (४) उसकी वेणी का भाव (सौंदर्य) अवर्णनीय था [वह ऐसी लगती थी] मानो शेष सुमेरु पर्वत पर आकर चढ़ा हुआ हो। (५) उसके सुरंग अधर देखने पर जीव (प्राण) हर लेते थे और त्रिभुवन के मुनि गण [उन्हें देख कर] धैर्य नहीं धारण कर पाते थे।

(६) उसके नख से शिख तक के समस्त अंग सहज रंग से सिक्त और सुन्दर रेखा से अंकित चित्रोपम थे (७) जिसने एक पल उन्हें देख लिया, जीवन-पर्यंत उसके हृदय में खटका (स्मरण) बना रहा।

टिप्पणी—(१) चिहुर<चिकुर=केश। (२) कचोर<कच्चोल=कटोरा।

[१८६]

दसन चौक भए कहौं[1] रहाई। रवि ससि गए[2] उन्ह[3] कराई।
न यह मग्ग अराहग मारा। इन[1] मराग परनि महँ[2] डारी।
न यन[1] मग्ग बिग्मानि[1] माऊं। इहाँ माद निन कर[2] बिगराऊं।
मैं मद है धानि मन मरी। माया रूप परनि है परी[1]।
तो[1] जानत मोरे[2] आगे न पागा। इहाँ कहाँ दहु[3] मानुष भागा[4]।
　　कं यह मग पर[1] बनगति[2] न मोर जिउ सोगन[3]।
　　कं काहु मारि मोगन्ज[1] क हरउ भूत[2] समान॥

पाठान्तर—(१) १ मा छाँहि। २ ए सुरंग। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए सेवा
(२) १ ए केहि। २ मा ए बरसी थी।
(३) १ मा जेहि। २ ए बनसपति (तुक पटित ६)। ३ ए कर।
(४) १ मा मायां रूप धरे है फेरी रा काया रूप धरसि है फारी ए माया क
धरे हुसि फरी।
(५) १ मा सै ए. सै। २ मा कोउ। ३ ए कहु। ४ ए पासा।
(६) १ ए धरे, मा धरेउ। २ रा बन केरा। ३ ए मर्मानि।
(७) १ मा काहू। २ रा भाँरवा ए भोरवै। ३ मा एनौ मया ए उटवा मया

अर्थ—(१) [उसे देखकर कुमार को ऐसा लगा कि] संभवतः चंद्रमा हो जिसे दिवस में धर्ती पर रहा था और रात्रि में आकाश में जा कर उदय करता था। (२) अथवा यह किसी स्वर्ग की अप्सरा की बालिका थी जो इंद्र के शाप से पृथ्वी पर गिरा दी गई थी। (३) अथवा यह आकाश का बृहस्पति नामक [नक्षत्र] थी जो यहाँ आकर दिन में विश्राम करती थी। (४) अथवा यह वन की काय थी जिसने अपना रूप बदलकर माया का रूप धारण किया था। (५) [उसने मन में कहा] "योजनों तक आस-पास में यहाँ कोई नहीं है [अतः] यहाँ पता नहीं कहाँ (कैसे) मनुष्य का निवास हुआ।

(६) अथवा यह वेष धारण किए हुए [वन की] वनस्पति ही है अथवा मेरा जीव बावर हो गया है, (७) अथवा किसी ने मुझे भुलावे में डाल दिया है अथवा श्मशान के भूत ने मुझे छल है।"

टिप्पणी—(१) देवस < दिवस। रैनि < रयनी < रजनी = रात्रि। सरग < स्वर्ग = आकाश (३) बिरसपति < बृहस्पति। बिसराउँ < विश्राम। (४) कामनि < कामिनी। (७) मसान < श्मशान।

[१८७]

सुभर[1] नींद सोव बर नारी । भर जोबन सों[2] धन पियारी ।
दरि[1] कुँवर चित रहउ[2] लोनाई । मन निपट मन भमउ[3] जाई ।
कबहूँ[1] एक भरम मन[2] धरई । कबहूँ[3] पिरम रस निसरम[4] करई ।
पुनि करवट[1] सों हुसि[2] अगिराई[3] । सहज भाउ आई जमुहाई[4] ।
अँगिरातइ[1] भुज दुइ पसारे । ससि सूरज[2] दुइ भाग उजियारे[3] ।
गगन भए[1] बिबि[2] लोयन भौंह चढ़ी[3] कमान ।
सरग इंद्र नर पुहुमी[1] कनपति मठ[2] मसान[3] ॥

पाठान्तर—(१) ए निर्भम। २ मा सो। ३ ए जो।
(२) १ रा देगन। २ ए रहा। ३ ए भै बैसा ए बैठउ।
(३) १ ए कबही। २ मा एक भरमन मन ए भरम जीव मों। ३ ए कबही
४ ए निर्भम।
(४) १ ए करवट (< करवट फारसी लिपि)। २ ए सीगरा। ३ मा. अँगिराई
४ मा आई जमुहाई ए लिये पैसा आई।

[१००]

कै तोहि माहि[1] परम पद चीन्हा[2] । कै काहुं तोर मन हरि लीन्हा[3] ।
कै मूरुख मन रहसि[1] भुलाना । कै र ग्यान महं चित[2] समाना ।
कै तोर अरथ दरब हरि लीन्हा[1] । कै बिसहवास सत्रु[2] तोहि दीन्हा[3] ।
कै रंग मद मांता न सभारसि । कै र गरब सेंउ कहु न पारसि[1] ।
कै भरमसि देखत[1] यह ठाइ । बकसि सत्त पर सिद्धि[2] गोसाइ ।
निभरम होहु भरम तजु[1] जनि मानहु जिय संक ।
सहज भाउ सेउ[2] पूंछै[1] ससिबदनी निकलंक ॥

पाठान्तर—(१) १ रा. तुई माहि मा तैं महै, ए तोहि माह। २ ए प्रीतम मदमाता। ३ ए कै कहु तोर जीउ हरि राता।
(२) १ मा अरुषि ए रहा। २ मा कै गियान महं चेत ए कै चित मों न ग्यान।
(३) १ मा लिएऊ। २ रा शत्रु। ३ मा दिएऊ।
(४) १ मा कै रंग बात कहै नहि पारसि ए कै रंग मदमाता न संभारेसि (तुल० पूर्ववर्ती चरण)।
(५) १ मा देखे ए देखि। २ ए सिद्ध पर सिद्ध।
(६) १ ए निर्भम होहु भर्मंत जी।
(७) १ मा भाउमें पूछै ए भाव ते पूछौं रा भाउ कौं (<भउ फारसी मिलि) पूछहि। २ रा मधि मई कलंक।

अर्थ—"(१) अथवा तुझे परम पद का परिचय प्राप्त हो चुका है अथवा किसी ने तेरा मन हर लिया है? (२) अथवा तू मूर्ख है और तेरा मन भूला रहता है अथवा ज्ञान में तेरा चित्त समाया रहता है? (३) अथवा [किसी ने] तेरा अर्थ और द्रव्य हर लिया है अथवा शत्रु ने तुझे विश्वास दे दिया है (तुझे निश्वासित कर दिया है)? (४) अथवा तू रंग (प्रेम) के मद में मत्त होने के कारण अपने को सम्भाल नहीं पा रहा है अथवा गर्व के कारण कुछ कह नहीं सक रहा है? (५) अथवा तू यह स्थान देखकर भटक रहा है? सत्य बक्सि (उक्ति) पर ही हे गोसाईं (योगी) सिद्धि होती है।

(६) तुम निभ्रम (निर्भय) हो, भ्रम (भय) छोड़ो और जी (मन) में शंका न मानो। (७) [इस प्रकार] सहज भाव से वह निष्कलंक चंद्रमा के से मुखवाली [कुमार से] पूछने लगी।

टिप्पणी—(५) बकसि < बक्ति = उक्ति। (७) निकलंक < निष्कलंक।

[१०१]

१ रित आ[illegible] गन्ज पिता पड़ा[1] । कै न पम मागार पड़ो[2] ।
२ रैं मा[illegible][1] नोंि दाग[2] मगरा । कै माहं गिर टोमा माता ।

कै रे गूद तोरें[1] सिर फिरा[2]। कै रे सिस्टि[3] बिधि बाउर सिरा[4]।
कै रे[1] प्रेम मेद[2] किछु जाना। कै रे काहू[3] के[4] रूप भुलाना।
कै तोर जीउ सहज रंग[1] राता। कै तैं प्रेम सुरा मद[2] माता।
कै तुइ मूर[1] गवाँवा कै तोहि कुटुँब क[2] सोग[3]।
कै बर कामिनि बिछुटी[1] तेहि जिय भएउ बियोग[2]॥

पाठान्तर—(१) १ ए कै तैं भाव सहज चित चढ़ऊ। २ ए पढ़ऊ।
(२) १ रा माइ ए माय। २ मा दिहेउ ए कीन्ही।
(३) १ रा ए तोरे। २ मा ए फिरेऊ। ३ मा सिष्टि। ४ मा ए सिरेऊ।
(४) १ मा तैं। २ ए भेद। ३ मा ए के काहू। ४ ए जा।
(५) १ ए है। २ मा ए कर।
(६) १ मा ए गुम। २ ए गँवाए। ३ मा कुटुँब बियोग रा कुटुँब का सोच ए कठिन बिसाव।
(७) १ मा ए बिछुरी। २ रा तेहि जिय भएउ बियोग मा तहँ उपजउ जिय मह ए ते उपजा हिउ सोग।

अर्थ—"(१) अथवा क्या कुछ सहज (माया-मुक्त आत्मस्वरूप) का भाव आकर चित्त में चढ़ा है या तूने प्रेम-शास्त्र पढ़ा है? (२) अथवा तुझे माता ने शाप दिया है अथवा किसी ने तेरे सिर पर टोना (जादू) मढ़ दिया है? (३) अथवा तेरे सिर का घूरा फिर गया है (तेरा मस्तिष्क विकृत हो गया है) अथवा सृष्टि में तुझे विधाता ने बावला सिरजा ही है? (४) अथवा तूने प्रेम का भेद कुछ जान लिया है, अथवा तू किसी के सौन्दर्य पर भूला हुआ है? (५) अथवा तेरा जीव सहज (आत्मस्वरूप) के रंग (प्रेम) में अनुरक्त है अथवा तू प्रेम-सुरा के मद में मत्त है?

(६) अथवा तूने अपना मूलधन (पूँजी का धन) गँवा दिया है, अथवा तुझे कुटुंब का शोक है? (७) अथवा तेरी श्रेष्ठ कामिनी बिछुड़ गई है और उसका तेरे जी में वियोग हुआ है?"

टिप्पणी—(५) राता < रक्त = अनुरक्त। माता < मत्त। (६) मूर < मूल = पूँजी।

[१९२]

फुनि[1] उठि कुँवर बात अनुसारी। बर कामिनि तुम[2] प्रेम पियारी।
मैं परदेसी अहौं[1] बटाऊ। मन बैराग पंथ सिर पाऊ।
सत पूँछन आहौं मैं तोही[1]। निस्चै[2] सत्ति बात कहु[3] मोही[4]।
कहु[1] यह भवन भयावन आवा[2]। मैं जोजन मानुस नहिं[3] पावा[4]।
इहाँ कहाँ मानुस कर भाऊ[1]। सब डाइनि आहिंसि[2] एहि ठाऊँ।
रूप धरे जस डाइनि नीक[1] दुर्यो लछन[2] निरार[3]।
मानर[1] एस बस मह मानुस रह न[2] पार॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ रा ए पुनि। २ मा मुनु ए मुन।

[१९०]

क तोहि आहि[1] परम पद चीन्हा[2] । क काहु तोर मन हरि लीन्हा[3] ।
क मूरख मन रहसि[1] भुलाना । क र ग्यान मह चित[2] समाना ।
क तोर अरब दरब हरि लीन्हा[1] । क चिल्हवांस सत्रु[2] तोहि दीन्हा[3] ।
कै रंग मद माता न संभारसि । कै रे गरब सेंउ कहँ न पारसि[1] ।
कै मग्मसि देखत[1] मह ठाईं । बकति सत पर सिद्धि[2] गोसाईं ।
निभरम होहु भरम तजु[1] जनि मानहु जिय संक ।
सहज भाउ सेंउ[*] पूंछै[1] ससिवदनी निकलंक ॥

पाठान्तर—(१) १ रा तुईं आहि मा तैं अहै, ए तोहि आह। २ ए प्रीतम मदमाता। ३ ए कै कहु तोर चीउ हरि राता।
(२) १ मा अहसि ए रहा। २ मा कै गियान महं चेत ए कै चित मों न ग्यान।
(३) १ मा लिएऊ। २ रा काहुं। ३ मा दिएऊ।
(४) १ मा कै रंग बात कहु नहिं पारसि ए कै रंग मदमाता न संभारेसि (तुल० पूर्ववर्ती चरण)।
(५) १ मा देखे ए देखि। २ ए सिद्ध पर सिद्ध।
(६) १ ए निर्भम होहु भर्मत जी।
(७) १ मा भाउमें पूछै ए भाव ते पूछी रा भाउ कौं (<सेउं फ़ारसी लिपि) पूछहि। २ रा ससि महँ कलंक।

अर्थ—"(१) अथवा तुझे परम पद का परिचय प्राप्त हो चुका है अथवा किसी ने तेरा मन हर लिया है ? (२) अथवा तू मूर्ख है और तेरा मन भूला रहता है अथवा ज्ञान में तेरा चित्त समाया रहता है ? (३) अथवा [किसी ने] तेरा अर्थ और द्रव्य हर लिया है अथवा शत्रु ने तुझे चिल्हवांस दे दिया है (तुझे निष्कासित कर दिया है) ? (४) अथवा तू रंग (प्रेम) के मद में मत्त होने के कारण अपने को संभाल नहीं पा रहा है अथवा गर्व के कारण कुछ कह नहीं सक रहा है ? (५) अथवा तू यह स्थान देखकर चकरा रहा है ? सत्य बकति (उक्ति) पर ही हे गोसाईं (योगी) सिद्धि होगी है।

(६) तुम निर्भ्रम (निर्भय) हो भ्रम (भय) छोड़ो और जी (मन) में शंका न मानो।" (७) [इस प्रकार] सहज भाव से वह निष्कलंक चंद्रमा के से मुखवाली [कुमार से] पूछने लगी।

टिप्पणी—(५) बकति < बक्ति = उक्ति। (७) निकलंक < निष्कलंक।

[१९१]

क पिछु भाइ सहज चित पड़ो[1] । कै तैं पम साम्वर पड़ो[2] ।
क रे माइ[1] तोहि दीन्ह[2] सरापा । न काहूं सिर टोना थापा ।

क रे गूद तोरें[1] मिर फिरा[2] । कै रे सिस्टि[3] विधि बाउर सिरा[4] ।
कै रे[1] ग्रहा मद[2] किछ जानां । कै र काहु[3] क रूप भुलानां ।
क तोर जीउ सहज रग[1] राता । कै त पम सुरा मद[2] मांता ।
क गुइ मूर[1] गवावा क तोहि कुटुब क[2] साग[3] ।
क मर कामिनि विछुरी[1] तहि जिय भएउ वियाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कै तै भाव सहज चित चढऊ। २ ए पढऊ।
(२) १ रा माइ ए माय। २ मा दिहुउ ए कीन्हो।
(३) १ रा ए तोरे। २ मा ए फिरेऊ। ३ मा सिरि?। ४ मा ए सिरेऊ।
(४) १ मा तै। २ ए मद। ३ मा ए काहु। ४ ए को।
(५) १ ए है। २ मा ए कर।
(६) १ मा ए गुन। २ ए गँवाए। ३ मा कुटुब वियाम रा कुटुब का माम ए कठिन विराम।
(७) १ मा ए बिछुरी। २ रा तेहि जिय भएउ वियाग मा तहि उपजउ जिय मक ? ते उपजा जिउ माय।

अर्थ—"(१) अथवा क्या कुछ सहज (माया-मुक्त आत्मस्वरूप) का भाव आकर चित्त में चढ़ा है या तूने प्रेम-शास्त्र पढ़ा है ? (२) अथवा तुझे माता ने शाप दिया है अथवा किसी ने तेरे सिर पर टोना (जादू) मढ़ दिया है ? (३) अथवा तेरे सिर का गूदा फिर गया है (तेरा मस्तिष्क विकृत हो गया है) अथवा सृष्टि में तुझे विधाता ने बावला सिरजा ही है ? (४) अथवा तूने ग्रहों का भय कुछ जान लिया है, अथवा तू किसी के सौन्दर्य पर भूला हुआ है ? (५) अथवा तेरा जीव सहज (आत्मस्वरूप) के रंग (प्रेम) में अनुरक्त है अथवा तू प्रेम-सुरा के मद में मत्त है ?

(६) अथवा तूने अपना मूलधन (पूँजी का धन) गँवा दिया है अथवा तुझे कुटुंब का शोक है ? (७) अथवा तेरी श्रेष्ठ कामिनी बिछुड़ गई है और उसका तेरे जी में वियोग हुआ है ?"

टिप्पणी—(५) राता < रक्त = अनुरक्त। माता < मत्त। (६) मूर < मूल = पूँजी।

[१९२]

कमि[1] उठि कुवर बात अनुसारी । कर कामिनि तम[2] पम पियारी ।
म परदगी अहौं[1] बटाऊ । मन बराग पम मिग पाऊ ।
सत पुँछन आहौं म ताहा[1] । निम्ब[2] मति बात कहु[3] माहा ।
कहु[1] गइ भवत भवत म आवा[2] । म जानन मानुम महि[3] पावा ।
कहाँ कहाँ मानुम कर नाऊ[1] । मर डाइनि माहिमि[2] गहि ठाऊं ।
रूप पग जम डाइनि मीन[1] दमौं रूछन[2] निरार[3] ।
मानर[1] एसें बन मह मानुम रहु न[2] पार ॥

पाठान्तर—ए म उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित है।
(१) १ रा ए पुनि। २ मा मुनु ए मुन।

(२) १ ए बाहौं परदेसि।
(३) १ ए तोही। २ भा निस्चै ए निस्चै। ३ ए सत कहसि तै। ४ ए मोही।
(४) १ मा भी। २ भा आएउ। ३ ए मै जाना तीर मैं। ४ भा. पाएउं।
(५) १ ए सो जोजन मानुस ना पाऊ। २ मा आछसि ए आई।
(६) १ भा रुप धरे डाकिनि ए रुप धरे हसि डाकिनि। २ ए लखन। ३ मा निनार।
(७) १ ए मानरि। २ ए कि।

अर्थ—(१) तब उठ कर कुमार ने बात चलाई "हे वर (श्रेष्ठ) कामिनी और उस प्रकार (वाले) प्रेम प्रिया (२) मैं परदेशी और पथिक हूँ; मेरा मन विराग के पथ में है और उस पथ में सिर ही मेरा पाँव है। (३) मैं तुमसे सच पूछता हूँ तू मुझसे निश्चित रूप से सच्ची बात कह। (४) चारों खंड में भ्रमता-भ्रमता मैं [यहाँ] आया और सौ योजन तक मैंने मनुष्य को नहीं पाया। (५) यहाँ मनुष्य का नाम व निशान कहाँ (किस प्रकार) आया ? ऐसा तो नहीं है कि इस स्थान पर तू डाकिनी है ?

(६) तू रूप डाकिनी के जैसे रखे हुए है, ऐसा निरख्ता (स्पष्ट) लक्षण मैं देख रहा हूँ, (७) नहीं तो ऐसे वन में मनुष्य रह नहीं सकता है।

टिप्पणी—(३) निस्चै < निश्चय। (४) डाकिनि < डाकिनी। (४) भर्म < भ्रम्=चक्कर लगाना।

[१९३]

अहि बन महुँ[1] पन्थी न उड़ाई। तह मानुस पहुँ[2] कहाँ[3] कराई।
भरमत बन आए[1] जनु धाव। मानुस इहाँ कहाँ[2] दहुँ[3] आव।
औ[1] मानुस एहि रूप न होई। धरे रूप भयावन[2] हसि[3] कोई।
को आहसि[1] कहु आपन[2] नाऊँ। बस कीन्ह[3] बन भीतर ठाऊँ।
मो[4] न कोइ संग सखी[5] सहमी। बन निकुंज[3] किमि रहसि[4] अकसी।
निभरम चित अकेली बन महुँ[1] रहसि निसंक[2]।
हरि नैनी हरि बैनी हरि बदनी[1] हरि लंक[2]॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा। २ ए सहवा मानुस। ३ भा काह।
(२) १ ए ए आए। २ ए ए कहाँ। ३ ए बहु।
(३) १ भा अउ। २ ए धरे रूप भयावन। ३ ए है ग में यह शब्द नहीं है।
(४) १ ए आहहि। २ ए आपनि। ३ ग ए कीन्हे।
(५) १ ए अउ। २ ए साथ। ३ ग बैन कुंज। ४ ए रहौं रा किमि रह।
(६) १ भा में यहां 'महँ' और है ए मा। २ भा रहसि निसंक ए रहौ निसंक।

(७) १ ए सधि बरनी रा हरि [बा' का शब्द स्पष्ट नहीं है] २ ए निरकंक।

अर्थ— (१) जिस बन में पक्षी तक नहीं उड़ता है वहाँ पता नहीं मनुष्य क्या करता है? (२) भरमिए (भ्रमण कीजिए) तो यह बन मारने वाले दौड़ता है; पता नहीं मनुष्य यहाँ (इस बन में) कैसे आ गया। (३) और मनुष्य इस रूप का होता भी नहीं है तू भयानक रूप धारण किए हुए [और] कोई है। (४) तू कौन है अपना नाम कह तुमने कैसे (क्यों) बन के भीतर स्थान लिया है? (५) और, तेरे साथ कोई सखी-सहेली भी नहीं है तब तू इस बन-निकुञ्ज में अकेली कैसे रहती है?

(६) तू निर्भम (निर्भय) चित्त से अकेली निरकंक बन में रहती है, (७) तू जो कि हरि (हरित् या पीत)—नेत्र वाली है हरि (कोयल या मयूर) के बोल वाली है हरि (चंद्रमा) के मुख वाली है और हरि (सिंह) की कटि वाली है।

टिप्पणी—(१) पंखी < पक्षिन्। (६) निभरम < निर्भ्रम। (७) बैन < वयण < वचन।

[१९४]

कहि सों¹ दुख सुख आपन कहु² । कहि जिउ लाइ³ रैनि दिन रहु⁴ ।
दोसर कोइ न¹ देखौं पासा । बरागी चित² अधिक उदासा ।
प्रीति¹ आस तोहि सउं² मोहि आव । नहिं जानौं का भेद जनाव ।
नैन चिन्हारी तोरि न¹ पावहि । बचन तोर मोहि² भेद जनावहि ।
कहु कहि गध्रप क घर¹ नारी । कौन राज कै² राज दुलारी ।
प्रीति मेल¹ मैं पावौं तोहि सो² बहु कहि मोहि बिचारि³ ।
कान्हरि पम¹ पियारी² सुदरि कान्हरि राजदुलारि ॥

पाठान्तर—भा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए तै। २ ए आपन कहई, रा अपनी कहै। ३ रा.लागि। ४ ए. निर्वहई।
(२) १ भा. न काहू। २ ए जो।
(३) १ रा. पीति। २ रा. ए सौं।
(४) १ रा चिन्हारि तोरि जौ। २ ए जो।
(५) १ ए हमि। २ रा बर।
(६) १ रा बाम (तुम तुनीम चरण)। २ ए तो सौं। ३ ए बहु मोसे बर नारि।
(७) १ ए पम्म। २ रा तथा ए में यह शब्द नहीं है।

अर्थ— (१) तू अपना दुख-सुख किससे कहती है और किससे अपना जी लगा कर [यहाँ] दिन-रात रहती है? (२) दूसरे किसी को मैं तेरे पास नहीं देखता हूँ तू विरक्त है और चित्त में बहुत उदास है। (३) तुमसे मुझे प्रीति की दुर्गंध आ रही है पता नहीं तू कौन-सा भेद बताएगी। (४) मेरे नेत्र तेरा कोई चिह्न (परिचय) नहीं पा रहे हैं और तेरे बचन भी मुझे भेद (रहस्य)

व्यक्त कर रहे हैं। (५) तू कह कि किस गंधर्व की पुत्री (स्त्री) है और किस राजा की राज कन्या है।

(६) संभव है मैं तुम से अपनी प्रीति का भेद पाऊँ, इसलिए तू विचार कर यह कह कि (७) तू किसकी प्रेम-प्रिया है ऐ सुंदरी और तू किस की राजकुमारी है।

टिप्पणी—(१) रैनि < रयनी < रजनी = रात्रि। (२) पास < पार्श्व। (४) गंधप < गंधर्व।

[१९५]

अब सुनु बात कहौं[1] बर नारी। मैं राजा कै राजकुमारी[2]।
चित बिसराउं नगर मोर ठाऊं। चित्रसेनि धिय प्रेमा नाऊं।
भाग फिरे औ[1] कुदिन जनाए। लोग कुटुंब सेंउ[2] बिधि[3] बिछराए।
अल्प अभोरि पिरम नहिं[1] जानिहु[2]। पिता राज बालपन[3] मानिहु[4]।
बासर खाइ खेलि बहुराई[1]। बिनु[2] चिंता निसि सोइ गवांई[3]।
बिरह बियोग[1] संताप दुख नहिं जानिहु[2] कस होइ।
क्रीड़ा कोड बिनोद कराहर[1] निसि दिन बेरसिहु[2] सोइ॥

पाठान्तर—रा में अर्धालियाँ इस क्रम में आती हैं उपर्युक्त ५, ३ १ २, ४।

(१) १ ए कहौं। २ ए बर।
(३) १ रा भाए औ ए फिरा जो। २ रा ए सौं। ३ ए बिध।
(४) १ ए पीर न। २ मा ए जानौं। ३ ए बालापन। ४ मा ए मानौं।
(५) १ रा बहुरावौं। २ ए चित। ३ ए बिहावौं।
(६) १ ए बियोग। २ मा ए जानौं।
(७) १ मा क्रीड़ा कोड कुराहर रा क्रीड़ा कोड बिनोद कुलाहल ए खेलत हँसत जायु मो। २ ए बेलसौं।

अर्थ—(१) श्रेष्ठ नारी कहने लगी "अब मेरी वार्ता सुनो : मैं एक राजा की राजकुमारी (राजकन्या) हूँ। (२) मेरा स्थान चित्त-विश्राम नगर में है मैं चित्रसेन की बेटी (कन्या) हूँ और प्रेमा [मेरा] नाम है। (३) [मेरे] भाग्य फिरे और दुर्दिन ज्ञात हुए तब विधाता ने मुझे लोग-कुटुंब से वियुक्त कर दिया। (४) मैं अल्प [वयस्का] और भोली थी प्रेम नहीं जानती थी कि क्या होता है पिता के राज्य (पिता की अभिभावकता) में मैंने बाल्यावस्था ही जानी (समझी)। (५) दिन खा-खेलकर बहुलाती थी और रात्रि निश्चिंत सोकर गँवाती थी।

(६) विरह-वियोग का संताप-दुख नहीं जाना था कि कैसा होता है (७) रात-दिन क्रीड़ा कोड (कौतुक) विनोद और कोलाहल का ही विलास (भोग) किया था।

टिप्पणी—( ) क्रीड < क्रीडा < क्रीड्। (४) अभोर < भोर < भद्र < भद्रक। (७) कोड < कुड [दे] = आश्चर्य कौतुक कुतूहल।

[१९६]

नगर सोहावन[1] चित बिसराऊ। गोंइड़ नगर पिना लखराऊ।
सीतरि[1] छांह सघन[2] अँबराई[3]। जनु[4] कबिलास आनु[5] भुइ आई[6]।
बांध पेड़ सफर सब डारी[1]। औ सब[1] तरवर[2] पानि पनारी।
भल[1] अनेग पखी[2] पहू[3] छाए। करहिं[4] केलि रस बचन सोहाए।
सदा बसंत रहु अँबराई[1]। महत बास चहु दिसि[2] जाई।
अमिय समान[1] फर लाग तरिवर[2] सदा फर लखराउ[3]।
गन गंध्रप[1] रिखि मुनिजन आइ करहिं[2] बिसराउ[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा सुहावा।
(२) १ रा सीतल। २ ए घनी। ३ मा अँबराईं। ४ ए जनि। ५ रा उतरि। ६ मा आई ए. छाई।
(३) १ रा फरहिं फल भारी ए रहें सब डारा। २ ए अरु सब। ३ ए म यह शब्द नहीं है।
(४) १ मा फर, ए अरु। २ रा पछी। ३ मा सब ए जा। ४ ए भाए। ५ ए करैं।
(५) १ रा अँबराई। २ मा दिसि दिसि।
(६) १ ए सदा (तुल चरण का उत्तरार्द्ध)। २ रा ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा ए अँबराउ।
(७) १ मा गंध्रप औ। २ ए करैं। ३ ए बिश्राउ।

अर्थ— (१) चित्त-विश्राम नगर सुहावना था और नगर के गोइँड़ में पिना का लखराँव (लक्षाराम—एक लाख वृक्षों का बाग) था। (२) उसकी अमराई (आम्र-वाटिका) में [ऐसी] शीतल छाया रहती थी कि मानो कैलाश (शिवलोक) ही उतरकर भूमि पर आ गया हो। (३) सभी पेड़ बाँधे (सुसेवित) और फलयुक्त थे और सभी वृक्षों के नीचे जल-प्रणालियाँ थीं। (४) वहाँ पर अनेक भले (अच्छे) पक्षी छाए रहते थे और रसीले और सुहावने बोल बोलते हुए केलि करते थे। (५) उस अमराई (आम्र-वाटिका) में सदा वसंत ऋतु रहती थी और वायु उसकी सुगंध सभी दिशाओं में ले जाता था।

(६) उसके श्रेष्ठ वृक्षों में अमृत के समान फल लगे हुए थे और वह लखराउँ सदा फला रहता था; (७) वहाँ पर गंधर्व गण तथा ऋषि-मुनिगण आकर विश्राम करते थे।"

टिप्पणी—(१) (७) बिसराउ < विश्राम। (१) गोंइड़ < गोंइड < गोस्थिर = ग्राम से लगा हुआ भूभाग जो खाद आदि के कारण से उपजाऊ होता है। लखराउ < लक्षाराम = लाख पेड़ों का बाग। (२) कबिलास < कैलास = शिवलोक। (३) पनारी < प्रणाली। (५) अँबराई < आम्रराजी = आम की वृक्षावली। < रहु < रहा।

[१९७]

चित्रसारि एक तहाँ सवारी । तह खेलैं[1] हम जाहिं धमारी ।
दिन एक सब सखीं[1] मिलि[2] आइ[3] । कहन्हि चलहु खेल अबराई[4] ।
कहेउ[1] जौ अग्या मात क[2] पावौं । तौ तुम संग अबराइ[3] आवौं ।
मैं पुनि[1] उठि माता पहँ आई । मात चूँबि कोरां[2] बसाई[3] ।
कहिउ[1] जौ[2] तिल एक आएसु पावौं । सखिन्ह[3] साथ बारी होइ आवौं[4] ।
मातैं[1] कहा आजु इहवाँ[2] घर खेलहु केलि कराहु ।
भरम होइ किछु मो जिय[1] बाहर कतहुँ[2] न जाहु ॥

पाठान्तर—(१) १ ए खेलैं।
(२) १ रा ए सखी। २ ए को। ३ ए आईं। ४ ए चलौ खेलैं अँबराई।
(३) १ ए कहा। २ मा पिता क ए माता की। ३ मा सखिन्ह साथ बारी कै आवौं ए तौ तुम संग अँबराई आवौं।
(४) १ रा ए पुनि। २ ए माय चूँबि कै कोर। ३ मा बैठाई।
(५) १ ए कहेन्हि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ रा सखिन ए सखी। ४ मा बारी खिलि आवौं ए बारी में आवौं।
(६) १ मा मातैं। २ मा तुम्ह घरही।
(७) १ मा किछु मोहि जिय ए तौ जीव मो। २ ए बाहर।

अर्थ—"(१) वहाँ पर एक चित्रसारी सजाई हुई थी; वहाँ हम जाकर धमार (ऊधमपूर्ण खेल) खेलती थे। (२) एक दिन [मेरी] सभी सखियाँ मिलकर आईं और कहने लगीं 'चलो अमराई (आम्र-वाटिका) में खेलें। मैंने कहा 'यदि माता की आज्ञा पाऊँ, तो तुम्हारे साथ अमराई जाऊँ (चलूँ)। (४) मैं तदनंतर उठकर माता के पास आई और माता ने चूमकर मुझे गोद में बिठा लिया। (५) मैंने कहा, 'यदि तनिक आज्ञा पाऊँ, तो सखियों के साथ वाटिका हो आऊँ।

(६) माता ने कहा 'आज यहीं घर पर खेलो और केलि करो (७) मेरे जी में कुछ भ्रम (भय) हो रहा है, इसलिए कहीं बाहर न जाओ।"

टिप्पणी—(१) चित्रसारी < चित्रशाला। (२) अँबराई < आम्रराजी = आम की वृक्षावली। (४) कोर < क्रोड = गोद। (५) बारी < वाटिका।

[१९८]

जौ मात भय[1] बचन सुनावा । लरिकाइ[2] जिउ[3] गहभरि[4] आवा ।
आँसु पोंछि कै कहिन्हि[1] बुझाई । होहु सयानि छाड़ि[2] लरिकाई ।
और कहिन्हि[1] तुइ बारि कुमारी[2] । मात पिता कै[3] प्रान अधारी ।
मन खोट तोहि[1] तिल न कराऊँ । मिल जाइब छाड़हि[2] लराऊँ ।
पुनि अस कहिनि[1] बार जनि[2] लावहु । तिल एक खेलि सखि[3] घर आवहु ।

भा अनंद सुनि मन[1] महँ दुख गा[2] सुख भा जीय ।
रहसीं सब[1] सहेलीं सुनि क[2] पाई जो[3] आग्या धीय[4] ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्द्धाली ३ के चरण ए में परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए मातै देइ। २ रा लरिकाई। ३ मा हिय ए जिव। ४ मा ए गहबरि।
(२) १ रा मैं कहिनि ए जो कहा। २ मा छाड़हु ए छाड़ु।
(३) १ रा कहिनि ए कहा। २ मा तैं आहि कुंवारी ए तैं बारि कुमारी। ३ ए कर।
(४) १ ए पै। २ ए पावे छाड़हु।
(५) १ मा कहि कि ए कहा। २ ए पै। ३ ए बहुरि।
(६) १ मा सुनि कत महँ ए जिय सुनि कै। २ ए भाया।
(७) १ मा ए रहसी सबै। २ ए सहेली मिलि हँसि। ३ मा मता पो, ए माती। ४ ए आयसु दीज।

अर्थ— (१) जब माता ने इस प्रकार का वचन सुनाया (बात कही) तो लड़कपन के कारण मेरा जी भर आया। (२) तब उन्होंने मेरे आँसू पोंछ कर और समझा कर कहा 'सयानी होओ (अपने में सयानापन लाओ) और लड़कपन छोड़ो। (३) और उन्होंने कहा 'हे कुमारी तुम बालिका हो और माता-पिता की प्राणाधार हो। (४) तुम्हें मैं तनिक भी नेत्रों से ओझल न करूँगी; तुम अप्सराओं का नित्य का जाना छोड़ दो। (५) [किन्तु] फिर उन्होंने ऐसा कहा 'देर मत लगाओ तनिक खेल कर शीघ्र घर आ जाओ।

(६) यह सुनकर मुझे मन में आनंद हुआ दुःख चला गया और जी में सुख हुआ (७) और यह सुनकर सभी सहेलियाँ हर्षित हुईं कि दुहिता (प्रेमा) ने आज्ञा प्राप्त कर ली।

टिप्पणी—(४) लगराउ < लग्नाराम = लाग पड़ा का काम। (५) बार < वेला = समय। (७) रहस < रभस् = हर्ष।

[१९९]

पुनि माँग[1] सब सखी खोनाइ[2] । फूलनि सउ[3] गंधि सब[4] बनाइ ।
कनक थम्भ पुनि[1] थम्भ मारी । सिरजी जनु ससि अंबित[2] गारी[3] ।
चतुरि सभ[1] ओ[2] सहस दुलारी[3] । पनर औटि जनु मांझ ढारी[4] ।
कबहुँ भाउ जोबन कर दागा[1] । कबहु सहज लरिकाई पागा[2] ।
जोबन सो[1] निछ[2] जानि न जाई । दुहु दुर महँ[3] धाररि[4] अधिकाई[5] ।
दूनों वाद करहिं आपुस महँ[1] जोबन औ लरिकाइ ।
धनि[1] जोबन धमि[2] ते न्नि अरु धनि ते[3] बरसाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा माँगा। २ ए सखी खोनाई। ३ ए फूल्हि से रा फूलनि सों मा फूलन सेंइ। ४ रा सो सबै (?)।

(२) १ मा कंकन बंदन ए गगन बदन ता। २ भा सिरी ससी ससि पुनिवं ए सिरी समा पुनिम ससि। ३ ए सिमारी।
(३) १ मा ए सबै। २ ए जो। ३ ए दुलारी। ४ ए जो साँचे ढारी।
(४) १ ए कै देखी। २ ए पेखी।
(५) १ रा जोबन सा ए भरु सौतुख। २ मा ए मे नहीं है। ३ मा दिन दिन महं ए दुइ मो बहु। ४ ए काकी।
(६) १ ए करै मापुस मो।
(७) १ ए मन। २ ए घन। ३ मा औ मनि जो भस ए भर मन ते रा भर भर ते। ४ ए बेकसाइ, ग बसाइ।

अर्थ—"(१) फिर माता ने सब सखियों को बुलाया और फूलों से सब का शृंगार किया। (२) सब का स्वर्ण जैसा [दीप्तिपूर्ण] मुख [या शरीर] था और सब चंदन (चंदनौटा) की साड़ियाँ पहने हुए थीं [वे ऐसी लग रही थीं] मानो चंद्रमा का अमृत निचोड़ कर निर्मित हुई हों। (३) सभी चतुर थीं और सहज ही प्यारी [लगती] थीं; मानो वे स्वर्ण को औट (गला) कर साँचे में ढालकर बनाई गई हों। (४) कभी उनमें यौवन का भाव (आविर्भाव होता) दिखाई पड़ता था और कभी सहज लड़कपन दिखाई पड़ता था। [ठीक-ठीक] यौवन-तत्त्व कोई वस्तु अभी नहीं जान पड़ती थी पता नहीं दोनों (यौवन और लड़कपन) में किसकी अधिकता थी।

(६) यौवन और लड़कपन दोनों आपस में वाद (झगड़ा) कर रहे थे (७) वह यौवन धन्य था वे दिन धन्य थे और वे धन्य थे जो [इनका] विलास (भोग) कर रहे थे।

टिप्पणी—(२) बदन < वदन (फा.) = शरीर (४) पेख < पेक्ख < प्र + ईक्ष = देखना अवलोकन करना।

[२००]

और कहौं तोहि भाउ[1] बिचारी । धनि बिधि जइ[2] यहि[3] कलि औतारी ।
अजहु धम भाउ नहि[1] जानीं । अजहु न रतिपति[2] गात समानां ।
अजहूं रग रोस तिन्ह[1] थोरा । अजहु न उठे[2] कनक कचोरा ।
अजहु जोबन कली न मोरी[1] । अजहु सहज दुलारे[2] भोरी[3] ।
अजहु नहि[1] रस भरि[2] गिय[3] लाई । अजहु न रूठी[4] नाह[5] मनाई ।
अजहु सरीर न छाड़[1] लरिकाई[2] भर भाउ ।
अजहूं भूलि न[1] जानहि[2] धम सुरा भर चाउ[3] ॥

पाठान्तर—ए भ उपर्युक्त पाँचवी अर्धाली उपर्युक्त प्रथम दो अर्धालियों के बाद ही आती है।
(१) १ ए और कहौं जो भाव। २ ए धन बिधना। ३ मा दै [मा 'तिय'] ए जे।
(२) १ ए मा। २ ए नरपति।
(३) १ मा तेहि। २ मा प्रगटे।

(४) १ ए मान्ती। २ भा कुमार न। ३ ए बोली।
(५) १ भा ए न। २ भा फेरि, ए मिरे। ३ ए मीम। ४ ए रठे। ५ भा ए मान।
(६) १ रा छाड़रि भा छोड़उ। २ ए भरिनाई।
(७) १ भा मभामि ए भमोमि। २ ए जानों। ३ भा पम प्रीति कर माउ।

अर्थ—"(१) उनका भाव (सौन्दर्य) विचारकर मैं भी कह रही हूँ विधाता धन्य था जितने इन्हें इस कलि में अवतरित किया। (२) वे आज (अभी) तक प्रेम-भाव नहीं जानती थीं आज (अभी) तक उनके गात्र में काम नहीं समाया था। (३) आज (अभी) भी उनमें रंग (प्रेम) का रोप (उभाड़) थोड़ा था आज (अभी) भी उनके कनक-कटोरे (उरोज) उठे (उभड़े) नहीं थे। (४) आज (अभी) भी उनकी यौवन-कलिका मुकुलित नहीं हुई थी आज (अभी) भी वे सहज दुलार में डुबाई (डूबी) हुई थीं। (५) आज (अभी) भी उन्हें उनके पति ने गले से भर (कस) कर लगाया नहीं था और आज (अब) भी उन्हें रूठने पर उनके पति ने मनाया नहीं था।

(६) उनका शरीर आज (अभी) भी लड़कपन का भाव नहीं छोड़ रहा था (७) वे आज (अब) भी भूलकर [भी] प्रेम-सुरा का चाव (स्वाद) नहीं जानती थीं।

टिप्पणी—(३) कचोर < कच्चोल = कटोरा। (४) मौर < मउल < मुकुलम् = मुकुलित होना। (५) गिय < ग्रीवा।

[२०९]

अजहू पहिरि न जानहि चोला[1] । अजहू पम रस माउ अमोला[2] ।
अजहू अधर अमीरस बांक[1] । अजहू[2] भए न[3] लोचन बांके ।
अजहू मोहि मूति गाम न लाग[1] । अजहू सुरति काम नहि जाग[2] ।
अजहू सुरति सोहाग क[1] थाला । पम रहम सउ[2] कंठ[3] न गोला ।[4]
अजहू सुरति मन जिय माहा[1] । अजहूं उसीस[2] धरी न[3] बाहो ।
स मम[1] मिलि क हम मप[2] रहमि पसी[3] अंमगउ[4] ।
मन् भव सुधि न मभागिउ[*1] अहि अम[2] भइउ विपाउ[3] ॥[5]

पाठान्तर—जयपुर प्रति में ४ भा म दषा ५ है।
(१) १ ए जानी चोली। २ रा अमोला ए अमाली।
(२) १ ए डार। २ ए अजहू न। ३ भा ने।
(३) १ भा नहि सुर गात न लाग। २ ए काम न जाग भा भान (?) नहीं जाग।
(४) १ भा सोहाग का। २ रा गा। ३ भा कंठ। ४ ए में पूरी अर्धाली इस प्रकार है—
अजहूं प्रीतम नाहिन आवा। अजहूं काम भाव न अमावा।

(५) १ मा जिय माहीं ए मन माहीं। २ रा उसीसै ए उसधि। ३ ए. भरा मा।

(६) १ मा ए सब। २ मा हम सों ए संग ही। ३ रा चली। ४ ए अंबराउ।

(७) १ मा तब बुधि बिसंभारेउ ए बिधि तब न संभारा। २ मा में 'बस' नहीं है ए जो अस। ३ भइउं बबराउं ए भी बिपाउ। ४ ए. म उपर्युक्त दोहे के स्थान पर है —

अबहुं वहीं अमोली गहि जानी रस बात।
अबहुं मैन दीस न जाकें का जानी बिहुसंत॥

स्वीकृत पाठ का दोहा ए में २ २ के बाद आए हुए एक छंद में है जो रा मा में नहीं है। ऊपर दोहे का ए का पाठांतर उसी से लिया गया है।

अर्थ—"(१) वे आज (अभी) भी चोली पहिनना नहीं जानती थीं आज (अभी) भी [उनका] प्रेम-रस का भाव भोला (वासना-हीन) था। (२) आज (अभी) भी उनके अधरों के अमृत रस छिके (अछूते) थे और आज (अभी) भी उनके नेत्र बक नहीं हुए थे। (३) आज (अभी) भी पति [उनके साथ] सोकर उनके शरीर से लगे नहीं थे और आज (अभी) भी रति तथा काम [उनके हृदयों में] जागृत नहीं हुए थे। (४) आज (अभी) भी सुरत और सौभाग्य की चोली पहनकर उन्होंने प्रेम और हर्ष से कंठ नहीं खोला था। (५) आज (अभी) भी उनके जी में सुरत की शंका नहीं थी और आज (अभी) भी तकिए के रूप में किसी ने [उनके सिर के नीचे] बाहें नहीं रक्खी थीं।

(६) वे सब मिलकर हमारे साथ हर्षपूर्वक अमराई को चलीं। (७) कदाचित् तब मैंने बुधि नहीं सँभाली (विचार नहीं किया) जिसके कारण मैं ऐसी बिना पैरों की (असहाय) हो गई।

टिप्पणी—(२) लोयन < लोचन। बांक < बंक < बक्र। (३) नाह < नाथ = पति। (५) उसीस < उच्छीर्ष = तकिया। (६) रहस < रभस् = हर्ष। अंबराउं < आम्राराम = आम की बगीची।

[२०२]

तहि दिन भागि भई मोहि आए[1]। रहसि चली पालेपन धाएं[2]।
हम गौनों म्रिगननी बाला।[1] अधर[2] अमीरस भरे रसाला[3]।
सभ सुकुवारि[1] लता जिमि डोलहिं[2]। बचन सुरस कोकिल[3] जिमि बोलहिं[4]।
देखत रूप भरम जिउ डरई[1]। बिधि यह छवत टूटि जनि[2] परई।
अमिअ कुंड नाभीं वस धारीं[1]। बनी सीस मांग रमबारी[2]।
चतुर कला[1] सम नागरि[2] सुबुधि सुमत[3] सुजान।
भौंह धनुक[1] सर बरुनी मारहि ताकि परान॥

पाठान्तर—(१) १ ए. संग भी मद बाला। २ ए अपनैनी हँसि गौनी बाला मा रहसि चलिउ बालेपन धाए।

(२) १ मा हंस गवनि मिगनैन ते बाला ए रहसि चली बालापन बाला।
२ ए आपे। ३ ए रामाने।

(३) १ ए सब मुकुमारि, मा सब सुकुवारि। २ ए जो बोलै। ३ ए कोकिला। ४ रा ए म यह शब्द नहीं है।

(४) १ ए जिव करई। २ ए टूटना।

(५) १ रा नाभिहिं अम बारी मा नाभी मब बारी ए नाभि बम बारी।
२ मा ताहि रखवारी ए ताहि रखवारी।

(६) १ मा ए गुनी। २ ए सब नागरी। ३ मा सुबुधि सुमध ए सदरि सुबुधि।

(७) १ ए धनुख।

अर्थ—"(१) उस दिन भाग्य मेरे बाएं (प्रतिकूल) हुई और मैं हर्षपूर्वक लड़कपन की उमंग में चल पड़ी। (२) [समस्त] बालाएं हंसगमनी तथा मृगनयनी थीं उनके अधर अमृत रस से भरे हुए और रसीले थे। (३) सभी कुमारियां रम्भाओं के सदृश हिल (चल) रही थीं और कोकिल के सदृश रसीले वचन बोल रही थीं। (४) उनकी कटि देखकर [दर्शक का] जी भ्रम से शंकित होता था और [वे कहते थे] हे विधाता, यह [कटि] टूटे ही टूट न पड़े। (५) उन बालिकाओं की नाभि में अमृत कुंड का निवास था और उनकी वेणियां उसकी रखवाली करने वाले नागों के सदृश थीं।

(६) सभी नागरियां कला-चतुर, बुद्धिमती और सुजान (ज्ञानसंपन्न) थीं; (७) वे भौंहों के धनुष और बरौनियों के बाणों से [दर्शकों के] प्राणों को लक्ष्य करके मारती थीं।"

टिप्पणी—(१) भागि < भाग्य। (५) अमिअ < अमृत। बारी < बालिका।

[२०३]

केलि करत म मधुवन आई[1] । जहाँ अहा सभ[2] मन्न सहाई[3] ।
सुरस पगि भाग मन हर[1] । भाँगिग[2] पहुन[3] पीउ पिउ रर ।
कतहूं भौंर पहुप सपरान । कतहू पचम बन मुठान ।
कतहु अविकम[1] कसी निगाम । कतहू मार कारिला भाम ।
चहुं दिसि[1] फूल सुरग[2] सुबासा । जहं भ्रिमय[3] तह पम हुलासा ।
जहि सरीर महि[1] मनमथ सवग[2] तहि मन छाडि थिराइ[3] ।
मन्न सहाइ देगि अयगउ[1] मान्उ[2] अनग[3] जियाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा हम मधुवन आई। २ मा जहं लागी सब ए जहाँ आदि सब ३ ए मता (<मती नागरी लिपि) मताई।

(२) १ रा सुरसी पगि भाग मन हरई, ए सुरस सनी भाग बरई। २ ए चातिग। ३ मा पिउ पिउ। ४ मा करै, ए करई।

(४) १ रा अभिमान ए किमनी।

(५) १ ए कहूं। २ रा सुगध। ३ ए जहां देखि।

(६) १ रा मह ए मा। २ मा सवरउ। ३ तब ए मे यह शब्द नहीं है। ४ ए छोड पराइ।

(७) १ रा ए अंबराई। २ ए मुआ रा मुवह। ३ ए अंत भा अनेग (<अनग) रा मे यह शब्द नहीं है।

अर्थ— (१) मैं केलि करती (खेलती-करती) मधुबन आई जहाँ वह समस्त मदन-सहाय (काम-सेना) थी। (२) पक्षी [वहाँ] रसीली भाषा में [बोलते हुए] मन हरण कर रहे थे बहुतेरे चातक पी-पी रट रहे थे। (३) कहीं पर भ्रमर पुष्पों से लिपटे हुए थे और कहीं पर [कोकिल का] पंचम स्वर ठगा हुआ (निनादित हो रहा) था। (४) कहीं पर अविकसित कली विकास कर रही थी और कहीं मोर तथा कोकिल बोल रहे थे। (५) चारों ओर अच्छे रंग और सुगंध के फूल थे और जहाँ देखिए वहाँ प्रेम तथा उल्लास था।

(६) जिनके शरीर में (कभी) मन्मथ ने संचरण नहीं किया था उनके भी मन धीरता छोड़ रहे थे (७) अमराई में इस मदन-सहाय (काम-सेना) को देखकर मुर्दे का (के भीतर) भी काम जागृत हो जाता था।

टिप्पणी—(२) चातिग <चातक=पपीहा। रर<रड<रट=रटना चिल्लाना। (४) बास<वाश्=पशु-पक्षियों का बोलना आह्वान करना। (५) हुलास<उल्लास। (६) भिराई<धीरता।

[२०४]

दसि सखी सब रहसि[१] हुलासी। केलि करहिं खेलहिं मोला सी[२]।
कोइ गनि गनि कोकिला[१] उड़ावहिं[२]। कोइ मंजूर नाच[३] देखि धावहिं[४]।
चित आनद हुसत सब[१] सर्राहिं[२]। बहुते कुसुम[३] तोरि उर मर्राहिं।
बहुतन्हि[१] फूल चढ़ावा[२] माँथें। बहुतन्हि[३] हार गेंदुवा[४] गाथें।
कुसुम[१] सुवास[२] सुरंग जो पावहिं[३]। सो मोहि पास ल दौरत[४] आवहिं[५]।
रहसत भवहिं[१] से मधुबन तोरहिं[२] कुसुम[३] सुबास।
कवल बदनि मिरिगननी भवर न छाड़हिं[१] पास॥

पाठान्तर—(१) १ रा सब रस (?) ए भा रही। २ ए हुलासी। ३ ए केलि करैं गसैं मीलासी।
(२) १ भा गनि गनि कोकिल ए कोकिला काइस। २ भा उड़िआवैं ए उड़ावैं। ३ भा नाचन। ४ भा ए धावैं।
(३) रागन सब ए रहसी जो। २ ए गोसैं। ३ भा. बहुते कुसुम ए बहुत कुसुम। ४ गीत मेलैं।
(४) १ रा बहुतनि ए बहुतन्ह। २ भा चढ़ाए माथें ए चढ़ावा माथे। ३ रा बहुतनि ए बहुतन्ह। ४ भा गेंदुरा ए गीत गीत।
(५) १ भा. कुसुम। २ ए बास। ३ ए पावैं। ४ भा ए धाइ सी। ५. ए आवैं रा में यह शब्द नहीं है।
(६) १ ए रवैं। २ ए तारैं। ३ भा कुसुम।
(७) १ ए छोड़ै।

अर्थ—"(१) [उस अमराई को] देखकर समस्त सखियाँ हर्षित और उत्कंठित होकर नवलाओं (नव वयस्काओं) की भाँति केलि (खेल-कूद) करने लगीं। (२) कोई गिन-गिन कर कोकिलाओं को उड़ाने लगी, कोई मयूर का नृत्य देखकर [उसकी ओर] दौड़ने लगी। (३) चित्त में आनंद युक्त होकर हँसती हुई वे सब चलने लगीं, बहुतेरी फूलों को तोड़कर अपने उर (हृदय) से लगाने लगीं। (४) बहुतों ने फूलों को सिर चढ़ाया और बहुतों ने [फूलों के] हार और कंदुक गूँथ लिए। (५) उनमें से जो अच्छे रंगों के और सुवासयुक्त फूल पाती थीं, वे उन्हें लेकर मेरे पास दौड़ती आती थीं।

(६) [इस प्रकार] हर्षित होती हुई वे मधुबन में भ्रमण करने लगीं और सुवासित कुसुम तोड़ने लगीं; (७) उन मृग-नयनियों के मुख कमल-सदृश थे, इस लिए भ्रमर [उनका] संग नहीं छोड़ रहे थे।"

टिप्पणी—(१) रहस < रभसम् = हर्ष। हुलास < उल्लास। (२) मजूर < मयूर। (३) कुसुम < कुसुम। (४) गेंदुआ < कंदुक = गेंद। (६) भव ~ भ्रम् = घूमना फिरना।

[२०५]

एहि विधि केलि करत हीं[1] बारी[2] । कंवल बरन पुनि सभ[*3] सुकुवारा ।
ओ सभ गात[*1] सुबासिक लाए[2] । पुहुप बास तजि[3] मधुकर धाए ।
काहू क सीस जा चढ़ि [चढ़ि[1]] बस[2] । काहू क उर चाहहि पस[3] ।
अधर सुरंग अमिय[1] जा अहै[2] । कंवल बास त मधुकर गहै[3] ।
अब एहि[1] बहुत अंतर रस[2] रागा । त बरबस मधुकर चहै[3] लागा ।
कान्हे[1] अधर मसन्हि[2] के अकुलानी बरनारि ।
आगें मधुकर धरें[1] पाछें[2] गहें[3] पुकारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा करत रहें ए करें ते। २ रा बारी ए नारा। ३ ए त भनि रा मा सब।
(२) १ रा ए मा सुभ। २ रा औ तन अधिक सुबासि लाए, मा औ सब गात सुबासिन लाये। ३ रा तिमि ए ते। ४ मा धाएउ।
(३) १ मा काहू के सीस चढ़ि, रा काहू के सार (<सीस सागरी लिपि) चढ़ि; (रा तथा मा दोनों में एक-एक शब्द की कमी है। ऐसा लगता है कि दोनों के किसी पूर्वज में अन्तिम शब्द के पीछे दोनों में शब्द को दुहराने के लिए २ का अंक बनाया हुआ था जिसको प्रति-लिपिकारों ने न समझ पाने के कारण छोड़ दिया। इससे दोनों का कोई न कोई पूर्वज सामग्री लिपि का प्रमाणित होता है) ए काहू सीस जा चढ़ि चढ़ि। २ रा बैठ। ३ रा पै।
(४) १ रा., ए अमी। २ मा आहै। ३ मा. नहिं मधुकर चाएउ।
(५) १ ए एक लगि। २ ए ते। ३ रा कै।
(६) १ ए कांके। २ ए मकरंद रा मसनि।
(७) १ ए धेरे। २ ए पाछ। ३ ए रहे।

अर्थ—"(१) इस प्रकार बालिकाएँ केलि (खेल-कूद) कर रही थीं; वे सभी कमल-वदनी फिर (और) सुकुमारियाँ थीं (२) और सभी शरीर में सुवासयुक्त पदार्थ लगाए हुए थीं इसलिए पुष्पों की सुगंध छोड़कर मधुकर [उनकी ओर] दौड़ पड़े। (३) वे किसी के तो सिर पर बढ़-बढ़ कर बैठ गए और किसी के हृदय में उन्होंने प्रविष्ट होना चाहा (४) बालिकाओं के जो सुरंग और मधुपिपासु भ्रमर थे उनके मुख-कमल की सुगंध के कारण मधुकर उन भ्रमरों से लिपट गए। (५) अब तक जिस रस का [बालिकाओं ने] बहुत यत्न से सुरक्षित रक्खा था उसको बलपूर्वक वे मधुकर चखना चाहते थे।

(६) सभी के अधरों को उन भ्रमरों ने काट खाया, इसलिए वे श्रेष्ठ नारियाँ अकुला (घबरा) गईं; (७) आगे से मधुकर उन्हें घेर रहे थे और पीछे से [उनकी वेणियों को नाग समझ कर] उन्हें पुकार (मयूर) घेरे हुए थे।

टिप्पणी—(१) सुकुवारी < सुकुमारी। (२) पुहुप < पुष्प। (४) अपिय < अपीत = अनपिए।

[२०६]

बिगसत कवल उपम सम बारा[1]। बस[2] मधुकर किए गुंजारा[3]।
बिकल सो[1] बात कहू नहिं पावहिं[2]। सांस लस मुख पैसे आवहिं[3]।
अकुलाने भा[1] भग सिंगारा[2]। कंचुकि फाटि टूट गिय[3] हारा।
परी अवस्था सब[1] अकुलानी। मांसउ तिलक मांग उघसानी[2]।
नौ सत जो घर सउ[1] कै आइ[2]। नांसि चली[3] सें सब अबराईं[4]।
दुहुँ[1] कर बदन छपाए[2] धाईं त[3] बर मारि।
चित्र मारि भीतरगँ पसी[1] बार पौरि[2] दीन्ह टारि[3]॥

पाठान्तर—(१) १ भा बिगसत पंकज अरुन सब बाला ए बिगसी कौंल भांति ते बारी। २ रा बैठे। ३ भा किएं बेकरारा ए कै बिकरारी।
(२) १ भा बिकली ए ब्याकुल। २ ए पावैं। ३ भा मुह पैसे आवहि, ए मुह पैसे आवैं।
(३) १ भा अकुलाने भौ ए अकुलानी भौ। २ ए सिंगारू। ३ भा टूट गिय ए टूटिया।
(४) १ भा अवस्त सबै। २ भा अपमानी ए बिसरानी।
(५) १ ए से रा सौं। २ ए घर मे कै आई। ३ ए चली। ४ ए भंवराईं।
(६) १ ए दुइ। २ ए छपाए। ३ रा अकुलानी (दे पूर्ववर्ती दोहा) ४ रा बराम (?)।
(७) १ ए मैं पैठी रा गईं। २ रा बार पौरि दिन मान (?) ए पौरि दीन्ह सब टारि भा बार पौरि दिय टारि।

अर्थ—(१) सभी बालायें कमल के समान विकास कर रही थीं इसलिए मधुकर [उनके अधरों पर] बैठे हुए गुंजार करते रहे। (२) विकल होकर वे बात नहीं कह पाती थीं क्योंकि साँस लेते ही वे मुँह में प्रविष्ट हुए जाते थे। (३) दंश आने के कारण उनका शृंगार भंग (अस्त-व्यस्त) हो गया उनकी कंचुकी (चोली) फट गई और उनकी ग्रीवा का हार टूट गया। (४) [बुरी] गति आ बनी और वे सब लय आ गईं; उनका तिलक नष्ट हो गया और उनकी माँग अस्तव्यस्त हो गई। (५) वे जो सोलह शृंगार कर ले कर आई थीं उन सब को वे अमराई में नष्ट कर चलीं।

(६) दोनों हाथों से अपना मुँह छिपाए वे नारियाँ दौड़ीं; (७) वे चित्रशाला के भीतर जा घुसीं और पौरी (ड्योढ़ी) का द्वार उन्होंने मूँद दिया (बंद कर दिया)।

टिप्पणी—(२) (७) पैस<प्रविश्=घुसना। (३) गिय<ग्रीवा। (७) पौरि<प्रतोली=मुख्य द्वार, ड्योढ़ी।

[२०७]

एहि अवस्था तें[1] वर नारी । आइ धाइ मांझ[2] चित्रसारी[3] ।
बहुतन्हि[1] क कंकन कर[2] फूटे । बहुतन्ह[3] हार उरहिं के टूटे ।
बहुते अधर पयोधर टोवहिं । बहुत चीन्ह उरहिं[1] दखि रोवहिं ।
बहुत हँसहिं[1] बहुत[2] बिलखाहीं । बहुते माता पितहिं[3] संकाहीं ।
बहुतन्हि[1] सीस बस मो कराए[2] । बहुतन्हि[3] काजर नैन नसाए[4] ।
सबै सिंगार[1] भंग भा कोइ हँस[2] कोइ बिलखाइ ।
औरु भयें[1] जिय भरमी[2] घर दिमि धाइ[3] न जाइ ॥

पाठान्तर—भा में अर्द्धालियाँ ३ और ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ भा अवस्तते भव ए अवस्था ते बर। २ ए आइ धाइ मंदिर। ३ भा चित्रसारी।
(२) १ रा बहुतनि ए बहुतन्ह। २ ए उर कंचन। ३ रा बहुतनि। ४ ए गीव गहि।
(३) १ ए बहुतो। २ ए बहुतो चिन्ह अधर।
(४) १ रा बहुते हँसै ए बहुतो हँसहि, भा बाने हँसै। २ ए बहुतो। ३ ए बहुतो माता पिता।
(५) १ रा बहुतनि ए बहुतो। २ भा मोकरामेउ ए मोरमाए। ३ रा बहुतनि ए बहुतो। ४ भा नसामेउ।
(६) १ ए सबै सिंगार जो। २ ए हँसै।
(७) १ ए भये रा भरम। २ ए भै भरमीं रा जिय डर पुनि। ३ भा सरहि ए चले।

अर्थ— (१) इस [बुरी] अवस्था से (के कारण) वे श्रेष्ठ नारियाँ चित्रशाला में दौड़कर आ गईं। (२) बहुतों के हाथों के कंकन फूटे बहुतों के हृदय (वक्षस्थल) पर के हार टूट गए। (३) बहुतेरी अपने अधर और पयोधर [भर के भ्रमर-दंश] टटोल रही थीं और बहुतेरी अपने उरोजों पर [दंश के] चिह्न देखकर रो रही थीं। (४) बहुतेरी हँस रही थीं तो बहुतेरी बिलख रही

थीं बहुतेरी माता-पिता से शंकित हो रही थीं। (५) बहुतों के सिर के बाल खुल गए थे बहुतों के नैनों के काजल नष्ट हो गए थे।

(६) उनका समस्त शृंगार नष्ट हो गया था; कोई हँस रही थी तो कोई बिलख रही थी; (७) भ्रमरों के भय से जी में वे जो भ्रमित हुईं (चकराईं) तो घर की दिशा में [उनसे] जाया नहीं जा रहा था।

टिप्पणी—(१) बिलख < विलक्ष < विलक्ष = उदास दुखी। (५) मोकर < मुच् = छोड़ना मुक्त करना।

[२०८]

पुनि[1] आपुस महँ[2] कहिन्हि[3] बिचारी । घर कह चलहु[4] तजहु चित्रसारी[5] ।
बहुरि कहिन्हि[1] घर कसें जाइय[2] । जननि पूछिहि[3] तौ कहा[4] कहाइय ।
किछु घर सक जननि जिय[1] धरहीं । बहुत भरम[2] मधुकर कर करहीं[3] ।
जनीं चारि एक अही[1] सयानी । तिन्ह[2] किछु[3] अल्प सक जिय[4] मानी ।
कहिन्हि[1] चलहु होहिं[2] हम आगें । तुम सब आवहु पाछें लागें[3] ।
फुनि[1] उठि पौंरि[2] उघारिन्हि[3] निसरी सब सकात ।
भरम न मदन उघारहिं[1] सनन्हि[2] कहहिं त[3] बात ॥

पाठान्तर—(१) १ मा फुनि। २ मा मे मह मध्य नहीं है ए मो। ३ रा कहिनि ए कहीं। ४ ए घर कर चलौं। ५ ए तजौ चित्रसारी।
(२) १ रा कहिनि ए कहा। २ ए कैसे जाई। ३ ए जननी पूछ। ४ मा काह।
(३) १ ए किछ उर सका जननी क। २ ए संक। ३ मा करही।
(४) १ ए आइ। २ रा तिन ए ते। ३ ए कछ। ४ ए मन।
(५) १ मा कहिनि। २ रा होइ। ३ ए तुम आवहु हम पाछे लाय।
(६) १ रा ए पुनि। २ ए रा पौरि। ३ ए उघारा।
(७) १ ए मदन न भरम उघारैं। २ मा सामन्ह ए सामन। ३ मा कहहि तै ए बातें रा कहहि ता (?)।

अर्थ—"(१) फिर उन्होंने आपस में विचार कर कहा 'चित्रशाला छोड़कर घर को चलो।' (२) फिर वे कहने लगीं 'घर कैसे जाया जाएगा? माता पूछेंगी तो क्या कहा जाएगा?' (३) [अस्तु उनमें से] कुछ घर जाने में माता की शंका जी में धारण कर रही थीं और बहुतेरी मधुकरों का भ्रम (भय) कर रही थीं। (४) किंतु [उनमें से] चार [एक] स्त्रियाँ सयानी थीं उन्होंने जी में कुछ कम शंका मानी। (५) उन्होंने कहा 'चलो, हम आगे होती हैं और तुम [हमारे] पीछे लगी हुई आओ।'

(६) फिर उठ कर उन्होंने ड्योढ़ी उघाड़ी (खोली) और [उनके साथ] शंकित सभी निकल

थीं; (७) [भ्रमरों के] भ्रम (भय) के मारे वे मुख नहीं खोल रही थीं संकेतों से ही वे बातें कर रही थीं।

टिप्पणी—(४) समान < सज्ञान। (६) पौरि < प्रतोली = मुख्य द्वार ड्योढ़ी। (७) सैन < संकेत।

[२०९]

बाहर चित्र मारि सम[1] आइ। भ्रम न गएउ छटि फुनि[2] भरमाई।
डरहि म[1] आपु माहि बगराही[2]। एक[3] ठाव भई सब जाही।
फुनि[1] राकस एक आइ तुलानां। दखि सखिन्ह[2] सब तज[3] परानां।
तेहि देखत संका जिय[1] आई। हम रूखन[2] तर रही लुकाई[3]।
मैं जहि ठाँउ छपानी अही। राकस आइ तहाँ हौ[1] गही।
साठि सखिन्ह महि[1] एकसरि माहि पकरसि अगराइ[3]।
मन मत्क के मत्क मह[1] एहि बनखंड ल आइ॥

पाठान्तर—(१) १ भा बाहेर चितमारी सब ए बाहर चित्रमारि जो। २ भा भरम न गएउ फो तही भरमाई, ए भरम न गौ जो जिउ भर्माई।
(२) १ रा डर मानि ए डर मा। २ भा आपु माहि बिलगाही ए आपुस मों बेगराही। ३ भा ए एकहि।
(३) १ रा ए पुनि। २ रा सखिन। ३ पो तजा।
(४) १ ए देख मन संका। २ भा ए रूखन्ह। ३ भा रही छपाई ए रही छिपाई।
(५) १ ए हम।
(६) १ रा सखिन महि, ए सखी मा। २ ए धरेसि। ३ भा बिलगाइ।
(७) १ भा मैन मत्क के मत्कै ए मैन मत्क के मारग।

अर्थ— (१) सभी चित्रशाला से बाहर आईं किंतु भ्रम (भय) छूटा नहीं और वे फिर भी भ्रमित होती रहीं। (२) डर के मारे वे आपस में अलग-अलग नहीं हो रही थीं और सभी इकट्ठा होकर जा रही थीं। (३) फिर एक राक्षस आ पहुँचा और उसे देख कर [मेरी] सब सखियों ने [जैसे] प्राण छोड़ दिए। (४) उसको देखते ही जी में शंका आ गई और हम वृक्षों के नीचे छिप गईं। (५) मैं जिस स्थान पर छिपी थी, राक्षस ने वहाँ आकर मुझे पकड़ लिया।
(६) साठ सखियों में से अकेली मुझको औरों से अलग कर उसने पकड़ा (७) और वैसे अपने साथ (पल मात्र में) मुझे यह इस वनखंड में ले आया।

टिप्पणी—(३) राकस < राक्षस। (४) रूख < रुक्ख < वृक्ष।

[२१०]

एक बरिस मोहि[1] मा एहि ठाऊ। गयनहु सुमिरउं न मानुस नाऊ।
आजु मिलिग एक[1] जोबन लगाउ। मानस रूप जो र[1] तोहि दगउ।

बिन जिउ[1] कया रही[2] एहि ठाइ । जिउ[3] बिनु कया जियै[4] कब ताइ ।
कुटुँब बियोग[1] रैनि दिन दाहू[2] । पापी जिउ निसर[3] नहिं[4] चाहू ।
सुख हरि लीन्ह[1] दुक्ख जिय[2] बाढ़ा । बरबस[3] जीउ जाइ नहिं[4] काढ़ा ।
येहि[1] संताप दुख कब लगि[2] मैं[3] जग जीयत रहाबि[4] ।
जिमि सरजल[1] बिनु कदव[2] उरम फाटि मरि जावि[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए सपने मा सपनेहु।
(२) १ मा भक। २ मा सूर।
(३) १ रा जिय। २ मा भई रही ए भई रही। ३ ए जियब।
(४) १ ए बिछोग। २ ए दहई। ३ मा म निसरा ए निकसै ना। ४ ए चहई।
(५) १ मा लिएउ ए लीन्हा। २ ए जिव। ३ ए अब मा। ४ ए ना।
(६) १ मा येहि ए येह। २ ए की लगि रा मे ये दो शब्द नहीं हैं। ३ ए म मइ शब्द नहीं है। ४ ए रहाब।
(७) १ ए जस सरवर। २ ए कादौं। ३ ए मर जाब।

अर्थ— (१) मुझे इस स्थान पर [रहते] एक वर्ष हो गया और स्वप्न में भी मैंने मनुष्य का नाम नहीं सुना। (२) आज एक पल के लिए मैंने जीवन देखा (जीवन का अनुभव किया) जब मनुष्य के रूप में तुम्हें मैंने देखा। (३) बिना जीव (प्राणों) के काया इसी स्थान पर बनी रही किन्तु बिना जीव के काया कब तक जी सकती है ? (४) कुटुम्ब का वियोग मुझे रात-दिन दग्ध करता रहता है, किन्तु पापी प्राण [शरीर से] निकलना नहीं चाहते हैं। (५) जी में दुःखों ने बढ़कर मेरा सुख हर लिया, [फिर भी] जीव बरबस निकाला नहीं जाता है।

(६) इस संताप और दुःख में मैं जगत् में कब तक जीवित रहूँगी ? (७) जिस प्रकार सरोवर में जल के बिना कर्दम (कीचड़) [फट जाता है], उसी प्रकार मैं भी [शरीर के] ऊर्ध्व भाग के फटने से मर जाऊँगी।

टिप्पणी—(१) ठाउ < स्थान। नाउँ < नाम। (४) रैनि < रयणी < रजनी। निसर < निस्सर < निर् + सृ = बाहर निकलना।

[२११]

मैं आपन जिउ[1] परिहरि आई[2] । बिनु जिउ अब मोहि[3] रहा न जाई[4] ।
एहि[1] दुख म[2] दिन एक मरि जाइब[3] । कब लगि एसें जियत रहाइब[4] ।
मुए सरीर अपर[1] यह स्वाँसा[2] । छाड़ी कया जिवन[3] क आसा ।
कुँवर[1] दरसु त[2] मोहि बिचारी । बिनु जिउ[3] बान बहुति है मारी ।
रहेंउ चाव मुग मम[1] परिहरा । जेहि दिन सउँ मोहि दानव[3] हरा ।
बिनु आयें[1] पर जीउ हु तहि पर बिरह दहाइ[3] ।
जे[1] दिन जाहि बियोग महँ ते को[3] आउ गहाइ[4] ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्द्धाली ५ मा में उपर्युक्त प्रथम अर्द्धाली के बाद ही आती है।

(१) १ मा जिय ए मब। २ ए आई। ३ ए बिना जीउ मोहि, रा बिनु जिय अब मोहि। ४ मा जिइ न जाई ए जिए न जाई।

(२) १ ए महि रे। २ रा इस ए म यह शब्द नहीं है। ३ ए जैहौं। ४ ए म ऐसे जिउ रहिहौं।

(३) १ रा न बर। २ ए पर सांसा। ३ मा जियँ।

(४) १ रा में यह शब्द नहीं है। २ रा देखु नु ए देखि तै। ३ जिय। ४ ए कहै बर, रा कहै सो।

(५) १ रा सुन्न सब ए जे सब। २ रा ए मों। ३ मा दानव।

(६) १ मा आयू। २ ए ता। ३ मा दहेद।

(७) १ मा ए जो। २ ए जिउ जाइ बियोग मां। ३ मा मो को ए मा केउ। ४ मा आइ करेइ, ए आइ भनाइ।

अर्थ—"(१) *मैं अपना जीव छोड़कर आई, और अब बिना जीव के मुझसे रहा नहीं जाता है।* (२) इसी दुःख में मैं एक दिन मर जाऊँगी जब तक इस प्रकार जीती रहूँगी? (३) शरीर शून्य (चेतनाहीन निर्जीव) हो गया है मेरे ही अधरों पर श्वास है काया ने जीवन की आशा छोड़ दी है। (४) ऐ कुमार, तू विचार करके मुझे देख! यह नारी बिना जीव के बात कह रही है। (५) मैंने हर्ष उत्साह सुख—सब कुछ [उसी दिन से] छोड़ दिया जिस दिन दानव ने मुझे हर लिया।

(६) [अब तो] बिना आयु के ही मेरे घट में जीव है और उस पर भी विरह दाह करता रहता है। (७) जो विन वियोग में जाते हैं, उन्हें कौन आयु कहता है?"

टिप्पणी—(३) सुन्न < शून्य। (६) घट < घट [दे]= शरीर में गले से नीचे का भाग।

[२१२]

बारह मांस¹ रगत² में रोवा। मरन भला न तु³ एम बिछोवा।
समुझि समुझि सुख¹ फाटै² छाती। मांसु न रुधा विरह भा³ ताती³।
हिय फाटै¹ बन दगि अकेली। दुख भरी भाएउ² विरह सहेली।
बिधि किछु पुब्ब मद लिखि धरा¹। जनम बिरिछ तहि दुग फर फरा।²
क¹ काहू दुग दीन्हिउ मोरें²। मो अब³ उमटि पग माहि⁴ कोरें⁵।
सुपुत रगत¹ निसि बासर पियै² सबाई³ आउ।
निमि एक रगत मुख न¹ बाहर काढ़ि बहाउ²॥

पाठान्तर—(१) १ ए मास। २ ए रकत। ३ रा मरन भला न कि ए मरना भला न।

(२) १ ए ज। २ रा बिरह भए ए हाड़ भी। ३ ए तीनी।

(३) १ ए हिया फटै। २ रा मोहि दुग भएउ जउ ए दुसर मुन भौ।

(४) १ मा पुब्ब जन्म मंद कीन्हें ए पुरब मद लिखि गया। २ मा मो पर मोहि बिधाता दीन्ह ए जन्म बिट बिर फर माना।

(५) १ ए है। २ ए दीन्हा मोरे। ३ मा मकु ए रे। ४ मा मौर, ए मोरे। ५ ए कोरे।
(६) १ ए रकत। २ मा बीती रा पिय तस। ३ ए समाई, रा माई।
(७) १ मा बिनासि कै ए बिनासिहि। २ ए काढ़ बाउ।

अर्थ—(१) मैंने बारह महीने रक्त के आँसू रोए हैं मरना भला था न कि ऐसा बिछोह। (२) [अपने पहले के] सुखों को समझ-समझ कर छाती फटती है; शरीर में मांस नहीं रह गया है क्योंकि विरह [उसको काटने के लिए] कतरनी हो गया है। (३) [मुझे] वन में अकेली देखकर [मेरा] हृदय फटता है दुःख ही यहाँ मेरी सखी हुआ और विरह सहेली हुआ। (४) विधाता ने पूर्व जन्मों में कुछ बुरा लिख रक्खा था इसी से जीवन-वृक्ष दुःख-फल फला है। (५) अथवा मैंने किसी को भूल से दुःख दिया था और वही अब उलटकर मेरे कोड़ में आ पड़ा है।

(६) मेरी सम्पूर्ण आयु गुप्त रूप से दिन-रात [मेरे] रक्त का पान कर रही है। (७) [परिणामत:] एक दिन [ऐसा आएगा कि] वह [शरीर को] रक्तहीन करके कहेगी "इसे बाहर निकालो।

टिप्पणी—(१) रकत < रक्त। बिछोव < विच्छोभ [दे]=विरह वियोग। (४) पुब्ब < पुब्ब < पूर्व। (५) कोर < क्रोड = गोद।

[२१३]

कहौं[1] बात आपनि सब[2] तोही[3] । बिनु दुख और न साथी मोही[4] ।
मांस कोर न पखि न[1] दुलाइउ[2] । कौन अधरम दइय सों[3] पाइउ[4] ।
एहि[1] निकुंज बन दोसर न[2] कोई । जो मोहि दुक्ख[3] सघाती होई ।
दुख सताप बिनु और न पावौं । जहि सों[1] तिलएक जिउ बहरावौं[3] ।
प्रान तज चाहु[1] बढ नारी । जीवन भएउ[2] जगत बहु[3] भारी ।
पीर करजें हिए[1] दुग्ग देह दगध[2] उतपात[3] ।
दया भेउं करि[1] जिइहौं एहि रे[3] बिरह सताप ॥

पाठान्तर—(१) १ मा कहिउं। २ ए मैं। ३ ए तोही। ४ ए मोही।
(२) १ मा मता कोर पखिउ। २ मा दुलाई ए दुलाएउ। ३ ए पाप बिधना सौं। ४ मा मैं पाई ए पाएउं।
(३) १ ए येह। २ रा म न नहीं है। ३ ए जो मोरे दुखक।
(४) १ ए जासौं। २ ए दिस। ३ रा ए बहलावौं।
(५) १ ए चाहत है। २ २ मा। ३ मा मोहि।
(६) १ ए करेजे हिये। २ ए बिरह दगिध। ३ मा जिव ताप।
(७) १ रा करौं। २ मा जीवौं, ए जिओं। ३ मा गो मैं न यह दुख।

अर्थ—"(१) मैं तुमसे अपनी सब बातें कहती हूँ; दुःख के अतिरिक्त दूसरा कोई अन्य (मेरा) साथी नहीं है। (२) माता की गोद में रहते हुए मैंने पक्षी [तक] को दुःख नहीं पहुँचाया फिर भी पता नहीं कौन-सा पाप (पाप का परिणाम) मुझे दैव से मिला है। (३) इस निकुंज वन में

दूसरा कोई नहीं है जो मेरा दुख का संगी बने। (४) दुख और संताप के अतिरिक्त मैं यहाँ किसी को भी नहीं पाती हूँ जिससे मैं तनिक भी अपना जी बहला लेती। (५) भले ही [यह] भारी प्राण छोड़ना चाहती है जीवन [इसके लिए] जगत् में बहुत भारी [एक बड़े भार के सदृश] हो गया है।

(६) कलेजे में पीड़ा है, हृदय में दुख है और देह में दाह का उत्पात है (७) हे दैव किस प्रकार मैं इस विरह के संताप में जीवित रहूँगी ?"

टिप्पणी—(२) कोर < कोड = गोद।

[२१४]

मोर दुख सुख जहँवाँ रहि[1] अहा । तुम्ह सेंउ[2] मैं सब आपन[3] कहा ।
तुम्हहु[4] कहहु[1] आपन[2] दुख माहीं । जो रे इहाँ लै आवा[3] तोहीं ।
आदि दुखी मैं[1] तोहि नहि देखौं[2] । राजकुँवर अस[3] बदन बिसेखौं[4] ।
भाग उदित माथें[1] मनि बरा । जानहु चाँद सपूरन करा[2] ।
इस्ट भाइ सेवग[1] कोइ नाहीं । तोर संग[2] बासु[3] परिछाहीं ।
समुद नाँघि[1] तुइ[2] आएसि एकसर[3] यह अचरिजु[4] हइ मोहि[5] ।
राकस भूत भयावन कहुँ[1] कसें[2] छाड़न्हि[3] तोहि[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहाँ लगु। २ रा तमसा ए तो सौं। ३ ए साम छाँड़ि मैं।
(२) १ ए तैं पुनि कहु। २ रा अपनों। ३ मा आएउ।
(३) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए न देखौं मा न देखेउं। ३ मा जस। ४ मा बिसखेउं ए निरेखौं।
(४) १ ए माथे। २ ए जैसे सिस्टि भी मानुष करा।
(५) १ ए सेवक। २ ए मा संग। ३ रा ए बासु।
(६) १ मा ए नाँघि। २ ए कै। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए अचरज। ५ ए मोहि।
(७) १ रा ए में यह शब्द नहीं है। २ ए कैस। ३ रा छाड़ेनि ए छोड़न्हि। ४ ए तोहि।

अर्थ—"(१) मेरा दुख-सुख जो कुछ था अपना वह सब मैंने तुमसे कहा। (२) तुम भी अपना दुख मुझसे कहो जो [दुख] तुम्हें यहाँ ले आया है। (३) आदि (जन्म) से ही मैं तुझे दुखी नहीं देख रही हूँ [मैं तो तेरा] मुख राजकुमार के ऐसा विशेष रही हूँ। (४) तेरा भाग्य उदित है [जिसके कारण तेरे] मस्तक में [जैसे] मणि जल रहा (देदीप्यमान) है और वह ऐसा लगता है मानों संपूर्ण कलाओं का चंद्रमा हो। (५) किन्तु तेरा कोई भी इष्ट भाई और सेवक तेरे साथ [तेरी] प्रतिच्छाया के अतिरिक्त नहीं है।

(६) समुद्र लाँघ कर तू अकेला आ गया यह आश्चर्य मुझे है (७) राक्षसों और भयानक भूतों ने पता नहीं तुझे कैसे छोड़ दिया ?"

टिप्पणी—(३) बिसेख < विसेस < वि + शेषम् = विशेषण युक्त करना गुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना। (४) बर < ज्वल = जलना।

[२१५]

चांद सुरुज[1] जो उवै[2] अगासा । तिन्ह कर[3] इहां नाहिं[4] परगासा ।
तू[1] मानुस इहवां[2] कत आवा । पूंछति हौं कहु आपन[3] भावा ।
नगर कहहु औ पिता क[1] नाऊं । पुहुमि कहहु आछहि[2] जहं[3] ठाऊं ।
कुरी नीचि क[1] ऊंचि तुम्हारी[2] । राइ रान कै रांक[3] भिखारी ।
काया छीनि जनु[1] मरन सदेहा[2] । मांसु रकत नहिं देखौं[3] देहा ।
आदि अंत कहि आपनि[1] बात[2] कही मैं तोहि ।
तुइं पुनि[1] बसि[2] निमिख एक आपन दुख कहु मोहि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुरज। २ मा उवहिं ए आहिं। ३ रा का। ४ मा तिन्ह इहां न किएउ इहा ए ताकर इहा नाहिं।
(२) १ ए तौ। २ मा ए ऐठ। ३ ए आपनि (<आपन फ़ारसी लिपि) रा अपना।
(३) १ रा कहु व पिता कर, ए कहहु जे पिता कर। २ ए भूमि कहहु आपनि। ३ रा जेहि, ए जे।
(४) १ ए की। २ ए तोहारी। ३ ए राये रांक की अहौ रा राही रांक कि रान।
(५) १ ए छीन जे। २ रा ए समेहा। ३ मा देखेउं।
(६) १ रा अंत सा आपनि ए अंत कहि बातैं। २ ए सबै।
(७) १ मा तुम्ह पुनि ए तै पुनि। २ ए बैसु।

अर्थ—"(१) चन्द्र और सूर्य का प्रकाश भी, जो आकाश में उदित होते हैं, यहां नहीं होता (आता) है; (२) तब तू मनुष्य यहाँ कैसे आ गया ? मैं तुझसे यह प्रश्न करती हूँ, तू अपना भाव कह। (३) तुम अपना नगर और अपने पिता का नाम बताओ, और वह पृथ्वी [खंड] बताओ जहाँ [तुम्हारा] स्थान है। (४) तुम्हारा कुल ऊँचा है या नीचा, और तुम राजा-राणा हो या रंक (निर्धन) और भिखारी हो ? (५) तुम्हारी काया क्षीण हो गई है मानो [तुम्हारे] मरने का संदेह हो रहा है तुम्हारे देह में मैं मांस और रक्त नहीं देख रही हूँ।

(६) आदि से अंत तक मैंने तुमसे अपनी सब बात कह दी। (७) फिर तू भी एक पल बैठ कर मुझे अपना दुख बतला।"

टिप्पणी—(३) पुहुमि<पृथ्वी। (४) कुरी<कुल। (५) छीनि<क्षीण।

[२१६]

पेम घाव मम[1] जो पती । कुंवर मुनी[2] जहवां लहि[3] अही ।
चित भरमउ[1] मुनि रावग माऊं । मन महं चहसि इहां सो[2] आऊं ।
जो अबही यह[1] राखस आव । निमिख माहिं मोहि मारि मडावै[2] ।

मोहि आगें कहँ जाउ पराई। मुए मोहि[1] पछताव रहाई।
औ मोहि आगें[1] है बड़ काजू। जेहि लगि निसरउ[2] परिहरि राजू।
एह गियान गुनि मन महँ[1] ठाऊ[2] भएउ उठि राउ।
नैन नीर भरि पेमाँ[1] धाइ परी[2] ले पाउ॥

पाठान्तर—(१) १ भा ए सबै। २ ए मो। ३ ए मुना रा सही। ४ ए कहाँ लगि।
(२) १ ए मरमा। २ भा मनहिं कहेसि इहवाँ हुत ए मन मा कहेसि इहाँ सो।
(३) १ ए बोह। २ ए मड़ाई।
(४) १ भा हुतें ए धाइ।
(५) १ ए आगे। २ ए निसरे।
(६) १ ए येह मन ग्यान गुनि कै। २ रा ठाक (?)।
(७) १ रा पेमै।

अर्थ—(१) प्रेमा ने जब [अपनी] सभी बातें कहीं कुमार ने भी उनको वहाँ तक वे थीं सुना। (२) [किन्तु] राक्षस का नाम सुनकर [कुमार का] मन घबरा गया और उसने मन में कहा, "यहाँ से मैं चला जाऊँ। (३) यदि कहीं वह राक्षस अभी आ जाए, तो मुझको एक पल में मार कर छोड़ दे। (४) उसके आगे पलायित होकर मैं कहाँ जाऊँगा? मरने पर मुझे पछतावा रहेगा (५) और [मुझे] आगे [अभी] एक बड़ा कार्य [करना] है, जिसके लिए मैं राज त्याग कर घर से निकला हूँ।"

(६) मन में यह ज्ञान (चतुरता) गुन कर राजा (राजकुमार) उठ कर खड़ा हो गया (७) [तो] प्रेमा नेत्रों में आँसू भर कर दौड़कर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

टिप्पणी—(४) पराई<पलाइअ<पलायित=भागा हुआ। पछताव<पश्चाताप। (५) निसर<निस्सर<निर्+सृ=बाहर निकलना।

[२१७]

बहुरि[1] कुँवर बर मारि उभाई। देखि बरन हिय उठउ[2] छोहाई।
मोह भएउ[1] बिन[2] मया मरोरा। पेम[3] समुँद सो उठा[4] हिलोरा।
पेमां दुख कुँवर हिय जरा। आसहुँ जरति अगिनि घिउ[1] परा।
देखि कुँवर हिय गहभरि[1] आवा। चित मया निजु[2] जाइ न जावा[3]।
बदन देखि हिय उठउ[1] मरोहू। कुँवर बरज अबहिं भा मोहू।
दुखिया कर[1] दुख जान जेहि दुख होइ सरीर।
बिनु दुख करि[1] पीरा[2] का[3] जान दुख दाधे क[4] पीर॥

पाठान्तर—(१) १ भा निहुरि। २ ए बिन उभा।
(२) १ भा भएं, ए भौ। २ ए मन। ३ ए पीरम। ४ ए मे यह शब्द नहीं है। ५ भा उठउ ए दीन्ह।

(३) १ ए आगि मित।
(४) १ मा हिय गहबर, ए मन गहबरि। २ ए चित माया दे। ३ मा उआवा ए न आवा।
(५) १ ए चित उठ।
(६) १ ए सो।
(७) १ मा ए कर। २ मा. ए में 'पीरा' नहीं है। ३ ए में 'का' भी नहीं है। ४ ए का।

अर्थ—(१) तदनंतर कुमार ने उस श्रेष्ठ नारी को उठाया, और उसका मुख देख कर वह हृदय में [दया से] क्षुब्ध हुआ। (२) उसके चित्त में मोह और अन्दोरा (स्नेहजनित दुःख) हुआ तथा उसके प्रेम समुद्र में हिलोर उठी। (३) प्रेमा के दुख से कुमार का जी जल गया मानो जलती हुई आग में घी पड़ गया हो। (४) उसको देख कर कुमार का हृदय भर आया और चित्त की ममा (ममता) के कारण उससे बोला नहीं जा रहा था। (५) उसका मुख देखकर [कुमार के] हृदय में मरोह (दुःख) उठा और कुमार का कलेजा [उस दुःख की ज्वाला में] औट कर रक्त बन गया।

(६) दुखी का दुख वही जानता है जिसके शरीर में दुख होता है; (७) दुःख-जनित पीड़ा के बिना [कोई] दुःख-दग्ध की पीड़ा को क्या जान सकता है?

टिप्पणी—(२) हिलोर < हिल्लोल = समुद्र की लहर। (३) घिउ < घृत। (५) कलेजा < कालेय। लोहू < लोहिम < लोहित = रुधिर।

[२१८]

रगत आंसु[1] तस[2] पम[3] रोवा । जेइ र सुनां[4] सइ हिया करोवा[5] ।
मन गहभर हिय[1] उठेउ अन्दोरा[2] । नैन समुद द[3] रगत हिलोरा[4] ।
दुख व्यापा[1] मुख[2] बकति न आव[3] । निसखत बात कहु[4] नहिं पाव ।
लोयन दुवौ[1] पूरि जल भरे । सीपि[2] फूटि जनु मोती ढरे[3] ।
दुख तरंग[1] भरि हियें उपारी[2] । रोंव रोंव सों आंसू ढारी[3] ।
सूरुज चाद तराइन[1] आसुनि छत्र कुंवर ।
पेमा दुख सम[1] रोए धरती गगन[2] सुमेरु ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए धार। २ ए सम। ३ मा पेमा। ४ ए जेइ सुना। ५ ए मो हीए करोवा।
(२) १ मा. गहबर हिय ए गहबरी २ मा अंदोर। ३ मा. दह ए दो। ४ ए लोन्ह टंकोरा।
(३) १ मा व्यापै। २ ए मुख। ३ मा बचन न आवा। ४ ए कहन।
(४) १ ए दुनो। २ ए सीप। ३ मा ए. भरे।
(५) १ ए यहां 'जो' और है। २ मा ए हियें (हिये—ए) उभारे। ३ ए रोव रोव। ४ मा आमू भरे ए आगू ढरे।

(६) १ ए सुर्ज चाँद तारा गन।

(७) १ ए पेमा सब दुख। २ ए गमन।

अर्थ—(१) प्रेमा ऐसे रक्त के आँसू रोई कि जिसने भी सुना उसका हृदय कचोट उठा। (२) प्रेमा का मन भर आया था और उसके हृदय में एक अंदोरा (विलोल) उठा उसके नेत्र-समुद्र रक्त के हिलोर दे रहे थे। (३) [मन में] दुख व्याप्त होने के कारण मुख से वाक्य नहीं निकलता था; निःश्वासों के कारण वह बात नहीं कह पा रही थी। (४) उसके दोनों नेत्र आँसुओं से पूरित होकर भर गए [और वे इस प्रकार तदनंतर गिरने लगे] मानो सीपी फूटी हो और उससे मोती ढल रहे हों। (५) दुख की तरंग हृदय में भरकर जो उसने उभाड़ (झोल) दी तो वह रोम-रोम से आँसू गिराने लगी।

(६) सूर्य चन्द्र तारागण वासुकी इंद्र कुबेर (७) (धरती) आकाश और सुमेरु—सभी प्रेमा के दुख से रो पड़े।

टिप्पणी—(१) रकत < रक्त। (२) हिलार < हिल्लोल = समुद्र की लहर। (४) लोयन < लोचन। (६) तराइन < तारिका गण।

[२१९]

पर्मे दुक्ख[1] रगत जौ[2] रोवा । सुवट[3] तासु[4] रगत[5] मुह धोवा ।
पिक करार जरि भए[1] वौं[2] कारे । दुक्ख दगध[3] तरिवर[4] पतझारे ।
कंवल गुलाल भए[1] रतनारे । फूल समें तन[2] कापर फारे[3] ।
दारिउ मनार हिया बिहरानां[1] । नवू तुरुज[2] हारि पियरानां[3] ।
नारंग रगत[1] घूंट मइ[2] राती । धाय[3] मजूर फाटि गइ[4] छाती ।
आंब भए[1] दुख बाउर[2] महुवा भा[3] बिनु पात ।
ऊखि भई[1] दुख[2] टूक टूक मुनि पर्मा[3] उनपात ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए पर्मा नैन। २ ए रक्त भर। ३ ए सुमटे। ४ मा ताहि। ५ ए रक्त।

(२) १ ए करील जरि। २ रा दुनी ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा दुक्ख दाहि ए दुख दाधे ४ ए तरवर।

(३) १ ए भी। २ मा सबहिं तन ए सबन्ह तन। ३ ए कांपन तारे।

(४) १ ए बिहराने। २ ए बिनु तुरुम। ३ ए हार पियराने।

(५) १ ए रकत। २ ए भी। ३ मा धाय ए धायेन। ४ ए भी।

(६) १ ए भी। २ मा बौरा। ३ मा भण्उ ए भो।

(७) १ ए भी रा में यह शब्द नहीं है। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए में यहां 'पुग' और है।

अर्थ—(१) प्रेमा ने दुख के रक्त [के आँसू] रोने तो सुए ने उसके रक्त से मुँह को लिया [और इसी कारण उसका मुख लाल हो गया]। (२) पिक और काम उस (पेमा) की [दुख] दावाग्नि से जल कर काले हो गए, और [उसके] दुख-दाह से ही वृक्षों ने पत्ते झाड़ दिए। (३)

कमल और गुलाल लाल हो गए और सभी फूलों (कलियों) ने [अपने] शरीर के वस्त्रों (पंखुड़ियों) को फाड़ डाला। (४) अनार का हृदय [उसकी दशा] देख कर फट गया और तुरंज नीबू डाल ही में पीला हो गया। (५) नारंगी उस रक्त की घूंट पीकर लाल हो गई और खजूर की छाती [उस दुःख से] आहत होने के कारण फट गई।

(६) आम उसके दुःख से बावले (बौरे) हो गए, महुआ बिना पत्तों का हो गया (७) और ईख प्रेमा का दुःख-उत्पात सुन कर टूक-टूक हो गई।

टिप्पणी—(१) रगत < रक्त। सुवटा < सुअ < शुक। (२) करार < करास = काग। दौं < दव = दावाग्नि। (३) कापर < कप्पड़ < कपट = कपड़ा। (४) बिहर < बिघड < वि+घट् < टूट जाना। डारि < डाल [दे] = शाखा। (७) ऊखि < इक्षु = ईख।

[२२०]

भौंर भुजग दुखी दौं[१] जर। दुक्ख[२] करील पात परिहर।
मेहदी रगत घूंट रत[१] भीनी। जूही भई दुक्ख[२] तन खीनी[३]।
टेसू आगि लाइ[१] सिर रहा। कलिन्ह[२] बंद[२] दुख सपुट गहा।
फरी डारि तरिवर[१] दुख नाईं। कुमुद कवल जल बूड़ जाई[३]।
जामुनि[१] भई डारि दुख कारी। कटहर पहिरु काँट क[२] सारी।
रगत[१] रोई बन घुघुची रही जो रती होइ।
मुंह[१] कारा क बन[२] गई जगत जान सब[३] कोइ॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुखी दो। २ ए और।
(२) १ रा में 'रत' शब्द नहीं है ए. रती बट। २ ए दुखहि भो। ३ ए छीनी।
(३) १ भा लागि। २ रा कलीबद भा कलिन्ह बदन ए कलि बरनी।
(४) १ ए फरा डार तरुवर। २ ए नए। ३ रा बूडउ जाए, ए बूड़न गये।
(५) १ रा जमुनी। २ ए डार। ३ ए कै।
(६) १ ए रकत।
(७) १ रा मुख। २ ए बन। ३ भा ए जग जानै सब।

अर्थ—(१) भ्रमर तथा सर्प दोनों [प्रेमा के दुःख की] दावाग्नि में जल गए; उसी के दुःख के कारण करील ने पत्तों का त्याग कर दिया। (२) मेंहदी [उसके] अश्रु-रक्त की घूंट से सिक्त होकर रक्त वर्ण की हो गई और जूही तनु की क्षीण हो गई। (३) टेसू [उस दुःख के कारण] सिर पर आग लगा रहा (अंगारों के जैसे फूल उसने धारण किए) और कलियों ने बंद होकर अपने संपुटों में [उस] दुःख को ग्रहण किया। (४) तरुओं की फली हुई डालियां [उस] दुःख से नमित हो गई और कुमुद तथा कमल जा कर जल में डूब गए। (५) जामुन डाल में ही [उस] दुःख से काली हो गई और कटहल ने काँटे की साड़ी पहिन ली।

(६) बन में घुघुची रक्त [के आंसू] रोई क्योंकि वह रत्ती (अनुरक्ता) हो रही थी; (७) [तदनन्तर] वह अपना मुख काला करके बन में चली गई यह जगत् में सभी जानता है।

टिप्पणी—(१) दौं < दव = दवाग्नि। (२) खीनि < क्षीण। (३) टेसू < किंशुक। (५) जामुनि < जम्बू। (५) काँट < कण्टक। (६) जौ < जउ < यत् = क्योंकि कारण कि।

[२२१]

दुक्ख दगध भइहर पियरानां[1] । अविली टढ़ि भई जग जानां[2] ।
रसन दुक्ख[1] दांत मुह धरी[2] । गा कअपतह[3] पुहुमि परिहरी[4] ।
हारिल दुक्ख[1] हारि भुइ आवा । गादुर मह रुख[2] आपु[3] टगावा ।
दुख कर भ[1] अवरि डरानी[2] । भइ निस्तेज[3] रूख लपटानी[4] ।
चील्हि[1] जो दुख करें भौ डरी[2] । कबहूं[3] पुरुष कबहु इस्तिरी ।
बिबि[1] माया क आट लुकानेउ[3] जीभ[4] फरि भिंगराज[5] ।
तबहीं[1] भएउ दहि कोइला पर्मा दुख क[3] काज ॥

पाठान्तर—रा म उपर्युक्त अर्द्धाली ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए दुख दाधे भइहर पियराने। २ ए टेग्गी भौ। ३ ए जाने।
(२) १ रा दुखन। २ ए धरे(<धरी फ़ारसी लिपि)। ३ रा मा कलि पेड़ ए कलप बिठ। ४ ए परिहरे (<परिहरि फ़ारसी लिपि)।
(३) १ ए दुखहि। २ ए दुखते। ३ रा दुख।
(४) १ रा केरे भय ए के डर जो। २ ए औरि डेराणी। ३ मा निलज ए निर तेज। ४ मा लपटहु।
(५) १ मा चील्ह ए चिल्ह। २ दुख केरें भय ए दुख की भौते। ३ ए कबहि। ४ ए कबही।
(६) १ मा बहु ए दुइ। २ ए की आट। ३ ए लुकानी मा लुकाना। ४ मा भई ए केस। ५ ए भंगराज।
(७) १ मा तबहि। २ ए भौ। ३ ए एहि दुख।

अर्थ—(१) [उस] दुख के दाह से भइहर पीला पड़ गया और इमली टेढ़ी हो गई जो कि जग जानता है। (२) दुखों से [उस] दुख के कारण दाँतों से पृथ्वी को पकड़ लिया और कल्पतरु पृथ्वी को छोड़ कर चला गया। (३) हारिल [पक्षी] दुख से हार कर (थकित हो कर) भूमि पर आ गया और चमगीदड़ ने स्वयं वृक्ष में अपने को लटका लिया। (४) [उस] दुख के भय से लता डर गई और निस्तेज होकर वृक्ष से लिपट गई। (५) चील जो [उस] दुख के भय से डर गई कभी पुरुष और कभी स्त्री [होती रही है]।

(६) दो मायाओं की आड़ में अपनी जिह्वा बदल कर भृंगराज भी छिप गया (७) और इसी समय वेला के दुख के कारण दग्ध होकर वह कोयला [जैसा काला] हो गया।

टिप्पणी—(१) भई<भवं। (५) भौ<भय। (६) बिबि<द्वय=दो।

[२२२]

पुनि[1] पम रस बचन उचारा[2] । निसमन कह सुनु राज कुमारा[3] ।
रारस भरम मनहि जनि[1] करहू[2] । निसरस भाग रहहु जनि[3] डरहू ।
यह[1] नाकस अबहीं कहु[2] नाऊ । एकउ[3] निमिष नाग नहिं नाऊं ।

सगर[1] दवस वह[2] रहु चराई । रनि[3] आइ पहरा क
कहु आपन[1] दुख मोहि परसा । जहि दुख तें निकसहु क[3]
जौ लहि सबै[1] बात तुम्ह[2] आपनि[3] कुँवर न कहहु[4] मोहि ।
तौ लहि[1] निस्चै जानहु आइ न[3] देहुँ तोहि[4] ॥

पाठान्तर—(१) रा अपुनै मा भा फुनि। २ ए ज्वारे। ३ ए सुन राजकु
सुनु राजकुमार।
(२) १ ए जीवनी। २ मा बचू। ३ ए निर्भय होहु न मन मो।
(३) १ ए मोह। २ ए कै। ३ ए एक। ४ ए गये का।
(४) १ ए सरग। २ ए मोह। ३ रा साम।
(५) १ रा अपने। २ मा लै ए ते। ३ मा निसरेहु यहि ए निसरे
कहियहु। ५ ए म चरण का पाठ है जौ लगि आपन बात सब
कहसि ना माहि।
(७) १ ए तौ लगि। २ ए निस्चै। ३ ए निसरैं देउ न। ४ ए तोहि।

अर्थ—(१) फिर (तदनंतर) पेमा ने [अपने] रसीले वचन उत्पादित किए और मिठास
के साथ उसने कहा "हे राजकुमार, सुनो। (२) राक्षस का भ्रम (भय) तुम मन में मत करो
तुम निर्भ्रम (निर्भय) होकर रहो डरो मत। (३) वह राक्षस अभी कहीं गया हुआ है और अभी
तो उसको गए एक पल भी नहीं हुआ है। (४) सकल दिन वह चरता (विचरण करता) रहता
है [केवल] रात को आकर यहाँ पहरा (रखवाली) कर जाता है। (५) हे नरेश (राजकुमार)
तुम अपना वह दुख मुझसे कहो, जिसके कारण तुम [योगी का] वेष करके निकले।
(६) जब तक तुम अपनी समस्त वार्ता हे कुमार, मुझसे नहीं कहते हो (७) तब तक तुम
यह निश्चय जानो कि मैं तुम्हें जाने नहीं देती हूँ।

टिप्पणी—(४) सगर < सकल। रैनि < रयनी < रजनी। पहरु < प्रहर। (५) भेष <
वेष। (६) बात < वत्ता < वार्ता।

[२२३]

कह कुवर[1] सुनु राजकुमारी[2] । मैं मधुमालति[3] बिरह भिखारी ।
सो का कहौं[1] जो कहि नहि जाई[2] । सिरजन कहत जुग जुग न[3] सिराई ।
कहौं तोहि सुन[1] नहि मो आइहि । बिरह कथा नहि[2] कहत सिराइहि ।
उतपति बिरह मो[1] सबै कहाही । अब बिरह चाखिहु[2] जुग माही ।
मारि बिरह मौंगउ । सुनु[1] भावा । बिरह अंत जग काहु[2] न पावा ।
सातउ समुद जो होहि[1] ससि कागद गगन अकास ।
जुग जुग लिखत[1] न निबरै[2] पमा बिरह उदास ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मे मह शब्द नहीं है। २ ए कहा कुमर सुन धन पिआरो। ३ रा मे मह शब्द नहीं है।
(२) १ ए कहुं रा हौं। २ मा कही न जाई ए जाइ न कही। ३ ए म मह शब्द नहीं है। ४ ए सिराही।
(३) १ मा कहऊँ पै मोहि ए कहु कहौं जा। २ मा कही न आवहि ए कहै न आवहि। ३ भा का ए ना। ४ ए कह सिरावहि।
(४) १ ए बिरह तें रा धन मा। २ रा सबहू। ३ ए चारौं।
(५) १ मा माहि मों ए मा मा। २ ए सुन। ३ ए काह।
(६) १ ए हार।
(७) १ ए चहुं जुग कहन। २ रा धनि मोहि।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा "ऐ राजकुमारी सुनो। मैं मधुमालती के विरह में भिखारी [बना]। (२) वह मैं क्या बताऊँ जो बताई नहीं जा सकती? जिसके या कहने से वह युग-युग तक नहीं समाप्त होगी। (३) मैं तुमसे यदि कहूँ (कहना चाहूँ) तो वह मेरे मुख में नहीं आवेगी (समावेगी) और वह विरह-कथा कहने से समाप्त नहीं होगी। (४) विरह की उत्पत्ति तो सभी कहते (बताते) हैं किन्तु विरह का अंत चारों युगों में भी नहीं है। (५) विरह के आदि (उत्पन्न होने) का भाव मुझसे सुन लो विरह का अंत जगत् में किसी ने नहीं पाया है।

(६) सात समुद्र [का जल] यदि मसि बने और सात आकाश यदि कागज बने (७) तो भी हे प्रेमा, विरह की उदासी युग-युग तक लिखते नहीं निपट (समाप्त हो) सकती है।"

टिप्पणी—(६) समुद < समुद्र।

[२२४]

सुनु धनी जौं पूछ[1] मोही[2] । आपन दुक्ख कहौं मैं तोही[3] ।
नगर कनगिरि ठाउँ[1] सोहावा । जनु सुरपुर[2] धरि[3] आनि बसावा ।
पिता नाउँ[1] जान सयमारा[2] । सूरज भान दव[3] उजियारा ।
कोस सहस दस राज पसारा । हाथि घोर धन[1] कटक अपारा ।
सनति[1] एक महा औतरा[2] । सो प[3] दुख बिरह बस परा ।
दुख मधुमालति जिउ[1] बस का हौं[2] पीर[3] कहाउ ।
मन छुटि मोहि जिउ[1] जगत महँ दुख कहुँ[2] और न[3] ठाउ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा कुमँ ए पूछ। २ ए मोहि। ३ ए नाही।
(२) १ ए ठांव। २ मा सरीर। ३ ए धै।
(३) १ ए नाम। २ रा ए ममारा। ३ रा देस।
(४) १ ए हाथी घोरा बर।
(५) १ ए सनत। २ ए सही औतरेउ भा सदा औतरेउ। ३ भा सोइ ए सो। ४ मा दुक्ख बस परेऊ, ए बिरह बस परेऊ।
(६) १ ए जिन। २ मा बेरि मा ए का नीं। ३ ए बिरह।

(७) १ मा मकु छुटि मोहि जिय जगत महं ए मकु छोटी (<छूटे फारसी लिपि) जो जिउ जगत, ए मकु मोहि छाडि जगत न बहुं। २ ए दे। ३ मा ए नाहीं।

अर्थ—"(१) ऐ प्रेमा सुन यदि तू मुझ से पूछती है तो मैं अपना दुःख तुम से कहता हूँ। (२) कनैगिरि (कनक गिरि) नगर नाम का [मेरा] सुन्दर स्थान है जो मानो स्वर्ग ही [पृथ्वी पर] ले लाकर बसाया गया हो। (३) मेरे पिता का नाम संसार जानता है, सूरजभान देव उजियार (प्रकाशित) है। (४) दस सहस्र कोस तक उनके राज्य का प्रसार है; हाथी घोड़े धन और कटक असीम हैं। (५) संतान एक मैं ही उनके यहाँ अवतरित हुआ और वह भी तुम जैसा ही पक्षी हो विरह के वश में पड़ गया हूँ।

(६) मेरे जी में मधुमालती [के विरह] का दुःख निवास कर रहा है उस पीड़ा का मैं क्या कथन करूँ? (७) संभवतः मेरे जीव को छोड़कर संसार में दुःख को और कोई स्थान नहीं है।"

टिप्पणी—(२) कनै<कनक। ठावँ<स्थान। (४) पसार<प्रसार।

[२२५]

उतपति आदि¹ सुनहु दुख बाता² । जसें दुख जिउ मिलउ³ सघाता ।
अकथ कथा किछु कही¹ न जाई । थोरि कहौं किछु भाउ² बुझाई ।
एक¹ दिन मन नींद सेंउ लाग² । लेत उठेउ दुख जबही³ जाग⁴ ।
सौंतुख¹ सपन एक मैं देखा । सो दखेउ जो जाइ न बिसेखा² ।
सपन कहौं तो सपन न होई । सौंतुख¹ कहा² जाइ नहि³ सोई ।
सौंतुख¹ सपन न जानौं दहु का दखेउ² सोइ ।
सपन¹ कहौं तो सौंतुख² सौंतुख³ कहौं न होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा अउ ए अबरे। २ ए सुनहु न बाता। ३ ए जैसे दुखहि मिला रा जैसें दुख जिय मिलेउ।
(२) १ ए जो कहा। २ ए थोरा कहौं जो राउ।
(३) १ मा इक। २ ए नींद नैन सौं लागी। ३ भा लेतहि उठे दुख जब मा लेत उठा बिरहा दुख। ४ ए जागी।
(४) १ ए सौतुख। २ ए सपन जब सौतुख का लेखा।
(५) १ ए सौतुख। २ भा कही। ३ ए ना।
(६) १ भा सौंतुख ए सौतुख। २ भा कहेउ, ए देखा।
(७) १ ए सपना। २ भा सौंतुख ए सौंतुह। ३ ए सौतुख। ४ ए कोइ।

अर्थ—"(१) मेरी दुःख वार्ता की आदि उत्पत्ति सुनो जिस प्रकार दुःख मेरे जीव के साथ मिला (हुआ)। (२) वह अकथनीय कथा कुछ भी (तनिक भी) कही नहीं जाती है [केवल] उसका थोड़ा-सा अंश उसके कुछ भावों को बताता हुआ कह रहा हूँ। (३) एक दिन [मेरे] मन नींद से

लग गए, तो वे जब जब मैं दुःख [साथ] लेता हुआ रहा। (४) संप्रत्यक्ष या स्वप्न [के रूप में] मैंने वह देखा जिसको विश्रमित (विभूत) नहीं किया जा सकता है। (५) यदि उसका स्वप्न कहता हूँ तो स्वप्न वह है नहीं, और वह संप्रत्यक्ष है, यह भी नहीं कहते बनता है।

(६) मैं नहीं जानता कि वह क्या देखा—संप्रत्यक्ष देखा या स्वप्न (७) यदि स्वप्न कहूँ तो वह संप्रत्यक्ष लगता है और यदि उसको संप्रत्यक्ष कहता हूँ तो वह वह नहीं।"

टिप्पणी—(१) बात < बत्ता < वार्ता। (४) (५) (६) (७) सौंतुख < सम् + प्रत्यक्ष = विशेष रूप से प्रत्यक्ष। (४) बिसेख < विसम < वि + शेषय् = विशेषता युक्त करना, गुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना।

[२२६]

बिसहर चिहुर जौ दखिउं बारा[1] । अजहूं[2] लहरहिं चढ़ें कपारा[3] ।
तिन पर दिस्टि[1] जो मोरी[2] परी । तिल तिल सो तिल जिउ स[3] हरी ।
आदि अमिय एक[1] बुंद क ताई[2] । मोहि सहसन रगत तिसाई[3] ।
का बरनों ओइ[1] गजन ओरा । हरसि[2] जीउ[3] हसत लिन कोरा ।
लोयन दिस्टि[1] जाइ जह परी । ताहि ठां हूतें न आगें[2] टरी ।
दुहु लोयन मह[1] बासा गड जो कपर[2] अनियार ।
बाढ़ि रहउ महि निसरहि[1] गुरकहि बारहि बार[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा जौ दखउ बारा ए जै देखा बारा। २ मा बाढ़हि। ३ रा लहरनि हूँ विकरारा ए लहरि है चढ़ी अपारा।
(२) १ मा ए दिस्टि। २ मा आग मै ए जनै। ३ ए ते तिल तिल लीन्हा जी (< जिउ फ़ारसी लिपि)।
(३) १ ए अवर अमी एक। २ ए की ताईं। ३ ए माहि सहस मयन रकत तिसाईं मा मोहि सहस तें रगत पियाईं रा मोहि सहस ते रगत तिसाईं।
(४) १ मा दुइ, ए ओ। २ मा हरहि ए हरा। ३ जित। ४ मा लिन मारा ए तन मोरा।
(५) १ मा दिस्टि। २ ए मा नहि आवै।
(६) १ ए मध। २ रा माहे कुच रा यहे कनिस।
(७) १ रा बाग़ि रहे मा निसरै। २ ए बारबार।

अर्थ— (१) [उस] बाला के विषधर-चिकुरों को जो मैंने देखा, तो वे [चिकुर-विषधर] मेरे कपाल पर चढ़ आज भी लहरें ले रहे हैं। (२) [उस बाला के कपोल के] तिल पर जो मेरी दृष्टि पड़ी तो वह तिल तिल-तिल (थोड़ा-थोड़ा) करके मेरे जीव का अपहरण कर रहा है। (३) उस आदि-अमृत की एक बूंद (तिल) के लिए मेरे रक्त की सहस्र बूंदें तृषित [रही] हैं। (४) [और] उस गंजन पुंज (मेघ) को क्या कहूँ जिसने अपनी कोर से एक क्षण देखकर मेरे जीव (प्राणों) को हर लिया? (५) [मेरे] लोचनों की दृष्टि [उसके शरीर में] जिस स्थान पर पड़ी उस स्थान से वह आगे न टल (जा) सकी।

(६) [मेरे] दोनों लोचनों में [उस] बाला के जो नुकीले (बाँके) कुच गड़ गए, (७) तो [कितना भी] मैं उन्हें निकालता रह गया वे निकले नहीं और बार-बार [काँटों की भाँति] खटकते ही रहते हैं।"

टिप्पणी—(१) बिसहर < बिषधर = सर्प। चिहुर < चिकुर = केश। (३) मिरगा < मृग। (५) ठा ~ स्थान। (६) लोयन < लोचन।

[२२७]

बिउर[1] कुंवर सभ पाछिलि[2] बाता । असें[3] मधुमालति रंग राता ।
प्रथमहिं जिमि भइ रति[1] चिन्हाई । अरु[2] जस[3] पालक बदलाई ।
औ जिमि बचा आपु महं[1] कीन्हो[2] । औ सहिदानि मुंदरि[3] कर लीन्हीं[4] ।
औ जिमि[1] तजउ पिता घर राजू । औ निसरउ करि[2] जोगी[3] साजू ।
औ बूड़उ जिमि अरध मझारा[1] । औ सो[2] गहें[3] ल लहरि अधारा[4] ।

सभ[1] पाछिल[2] दुख पेमहिं कुंवर सुनावा[3] रोइ ।
बिच्छु न भाई[1] जाना आगें[2] बिधि का[3] लिखा का[4] होइ ॥

पाठान्तर—रा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा बहुरि, ए सारि। २ मा सब पाछिलि ए पाछिल दुख। ३ ए जैसे।
(२) १ मा जिमि भएउ सपम ए भौ जो नैन। २ मा औ। ३ ए जैसे।
(३) १ मा ए भी दूनों बाचा जिमि (जे—ए)। २ ए कीन्हा। ३ मा ए औ पुरुषवि मुंदरी। ४ ए लीन्हा।
(४) १ ए औ। २ मा निसरेउ कै ए निसरा कै। ३ ए जोगी क।
(५) १ ए बूड़ा जो सहन मझार। २ ए म यह पाठ नहीं है। ३ ए गहीं। ४ ए अधार।
(६) १ ए सब। २ रा पाछिला। ३ मा सुनाएउ।
(७) १ मा ए म यह पाठ नहीं है। २ ए आगे जा भागु। ३ मा दइ बिधि ए का बिधि। ४ ए म यह पाठ नहीं है।

अर्थ—(१) कुमार वह समस्त पिछली वार्ता विवृत करने लगा जिस प्रकार वह मधुमालती के प्रेम में अनुरक्त हुआ (२) [दोनों का] जिस प्रकार पहले-पहल रात का [पारस्परिक] परिचय हुआ और जिस प्रकार [दोनों की] सज्जा का परिवर्तन हुआ (३) और जिस प्रकार [दोनों ने] आपस वचन-बद्धता की और साभिज्ञान के रूप में कर की मुद्रिका ली (४) जिस प्रकार [कुमार ने] पितृगृह का राज्य छोड़ा और योगी का साज करके निकला (५) और जिस प्रकार [उसके साथ आया हुआ] अर्ध-ओझार [समुद्र में] डूब गया और उसको लिए हुए [समुद्र की] लहर ने [तट पर] डाल दिया।

(६) पेमा को [अपना] समस्त पिछला दुःख दुलार से रोकर सुना दिया। [और कहा] (७) "यह कुछ नहीं जाना जाता है कि आगे विधाता का क्या [कौन-सा] लेख होगा।

टिप्पणी—(१) बिउर < विवृ = विवरण देना (२) रैनि < रयणी < रजनी। पालक < पर्यंक। (३) सहिदानि < साभिमान = चिह्न। मुँदरी < मुद्रिका।

[२२८]

पेमा जिउ न रहा मोहि[1] गाता । बिनु जिय भा[2] बकतत हौं बाता ।
बिरह पिरम किछु[1] आनि न पाएउ[2] । जगत[3] जानु ठग लाडू खाएउ[4] ।
लाभ मूर[1] खति प्रापति बारा[2] । एक रहउ[3] घट जीउ हमारा ।
अचक बिरह चिनगी उर[1] परी । लाभ मूर[2] खति प्रापति जरी ।
नैन अमिअ[1] जउ[2] पिया रसारा[3] । नाउ[4] सतोस जियहिं[5] किमि बारा[6] ।
अमिअ रूप प्रीतम निसि बासर नयननि पिया जो होइ[1] ।
सवरि सवरि तहुं कसें[1] कहु मन धिरजम सोइ[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मुनि। २ ए बिना जीउ।
(२) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए पावा। ३ ए जगत। ४ ए खावा।
(३) १ भा ए मूल। २ ए बारा। ३ भा अहेउ रहा।
(४) १ भा भौ। २ भा मूल।
(५) १ भा ए अमी। २ भा जनु, ए जो। ३ रा जे पिया रैनारा भा पिएउ रसारा ए पिअर बसारा। ४ ए नाम। ५ भा सतोष जियै ए सतोष जिये। ६ ए बारा।
(६) १ भा पिया जिन होइ ए पिये जो होय रा पिया जो अघाइ।
(७) १ ए सुमिरि सुमिरि कहु कैसे। २ ए किमि मन धरौं साहाय रा कै मन धीरज रहाइ।

अर्थ—"(१) ऐ पेमा, मेरे गात्र में [अब] जीव [शेष] नहीं रहा; मैं बिना जीव का हुआ बातें कह रहा हूँ। (२) विरह और प्रेम में कुछ नहीं लाभ पाया, इस जगत् में मैंने ठग का लड्डू ही [मानो] खाया। (३) ऐ बाला, मूलधन के लाभ, क्षति तथा प्राप्ति [के नाते] घट में मेरा जीव मात्र था (४) [किंतु] विरह की चिनगारी अचानक हृदय में पड़ी और वह मूलधन का लाभ, क्षति तथा प्राप्ति भी जल गए। (५) यदि (जब कि) नेत्रों ने रसीला अमृत पिया है तो हे बाला, वे नाम के संतोष से कैसे जीवित रह सकते हैं?

(६) यदि नेत्रों ने प्रियतम का अमृत-रूप रात-दिन पिया हो, (७) तो उसका स्मरण कर कर, तुम्हीं कहो, मन को कैसे धैर्य दिया जाए?"

टिप्पणी—(२) पिरम < प्रेम। (३) मूर < मूल = पूँजी। खति < क्षति = हानि। प्रापति < प्राप्ति = लाभ। (७) सवर < समर < स्मृ = स्मरण करना।

[२२९]

जबहिं नैन मधु[1] रूप समाना । मैं निहचैं[2] अपनें जिय जाना ।
मोहि महु[1] रूप पम जौ[2] पियाइहि[3] । ओइस[4] दस विदेस फिराइहि[5] ।
बाला बिरह रगत जेत पिएऊँ[1] । सम[2] लोयन मग[3] बाहर किएऊँ[4] ।
दुहु लोयन बरिसा[1] दुख[2] बारी । जह भीतर मह आस रौ[3] भारी ।
प्रथम[1] जो भागि बीज[2] चमकानी । पुनि चमकै[3] मकु दसइ[4] पानी[5] ।
लोयन पावस[1] देखि क जिय सउ[2] आस न जाइ ।
नयनन्हि करम[1] बीजु जो चमकी[2] मकु पुनि[3] चमकै[4] आइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मुख। २ मा निस्चै ए निस्चै।
(२) १ ए मै मह रूप गही है। २ मा ए रस। ३ ए पिआही। ४ मा औसै ए अद जो। ५ ए फिराही।
(३) १ ए रकत जत पावा। २ ए सब। ३ मा मग ए संग (< मग ?) रा संब (< संग < मग ?)।
(४) १ मा बारिस। २ ए देखु। ३ ए जीभ भीतर वे औसर, रा जिम भीतरहि असरी।
(५) १ मा प्रथमहि। २ ए सोहाग बीच। ३ ए चमकै (< चमकी फ़ारसी लिपि)। ३ मा मुख देखि बहु ए मकु देखि जो। ४ ए बानी।
(६) १ मा पारिस (< बारिस फ़ारसी लिपि) ए बरिसा। २ ए तै मा सौं।
(७) १ ए 'नैन' मात्र। २ ए के चमके। ३ ए पुनि रा आनि। ४ ए चमके।

अर्थ—"(१) जभी [मेरे] नेत्रों में [उसका] मधुर रूप समाया मैंने अपने जी में यह निश्चित रूप से जान लिया (२) कि यह जब यदि (जिस प्रकार) मुझे प्रेम का पान कराएगा उसी प्रकार यह मुझे देश-विदेश भी घुमाएगा। (३) मैंने उस बाला के विरह में जितना [अपना] रक्त पिया था वह सब लोचनों के मार्ग से बाहर कर दिया है। (४) मेरे दोनों नेत्रों से दुःख का जल बरसता है, जिसके भीतर मुझे यह भारी आसरा रहा है (५) कि पहले जो [मेरे] भाग्य की बिजली चमकी थी, वह [इस दुःख के] पानी (अश्रु-धारा) को देखकर कहीं पुनः चमक उठे।

(६) लोचनों में वर्षा-काल देखकर जी से यह आशा नहीं जाती (७) कि नेत्रों में [एक बार] जो कर्म [भाग्य] की बिजली चमक चुकी है यह संभव है फिर आकर चमक जाए।"

टिप्पणी—(३) जेत < जेतिम < यावत् = जितना। (३) (६) लोयन < लोचन। (५) (७) बीज < विद्युत्।

[२३०]

बहु दिन जियन[1] भए तेहि[2] आसा । बिधि न आउ आजु तुम्ह[3] पासा ।
अमिय बचन तोहि[1] हिया मिराइउ[2] । प्रीति बाम मधुमालति पाइउँ[3] ।

जस कोइ परै समुद अवगाहा । मरत पाव बूड़त महँ[1] थाहा ।
अस मोहि तोर बचन देखि भागा[1] । दुख जल बूड़त भएउ अधारा[2] ।
मैं तौ मोहि[1] मारग[2] जिउ लावा[3] । जिय घट खोजि न कतहू पावा ।
राज पाट सुख परिहर[1] धन[2] जोबन जिउ सोइ ।
चढ़उँ[1] पेम पथ पर्मा देहु आगे का होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा. ए मरत। २ ए मो महि। ३ मा भाइ भागु ताहि ए भाग भागु तुम।
(२) १ ए तै। २ ए अमी सरावौं। ३ ए पावौं।
(३) १ ए मा।
(४) १ ए तुम मख देखा बदन उघारी। २ ए भी अधारी।
(५) १ मा मैं ता एहि ए मोहि तौ दई। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा जिउ लाहा ए जीवन लाहा। ४ मा जिय घट मैं मधुमालति लाहा ए जीउ आन मधुमालति चाहा।
(६) १ ए जो परिहरी (<परिहरे फारसी लिपि) रा दुख पऐ। २ ए म मह शब्द नहीं है।
(७) १ ए चढ़ा। २ ए देहु आगे।

अर्थ—"(१) उसी (इसी) आशा में जीवित रहते बहुत दिन हो गए, और विधाता आज मुझे तुम्हारे पास ले आया। (२) तेरे अमृत-वचनों से मैंने [अपने] हृदय को शीतल किया और [तेरे माध्यम से] मधुमालती की प्रीति-वासना प्राप्त की। (३) जैसे कोई अथाह समुद्र में पड़ जावे और डूबते-डूबते अचानक थाह पा जावे (४) इसी प्रकार, ऐ बाला तेरा मुख देखकर दुःख-जल में डूबते हुए मुझ को आधार हो (मिल) गया। (५) मैंने तो अपने जीव को उसी [मधुमालती के] मार्ग में लगा दिया है, इसलिए [अपने] घट (शरीर) को खोज कर [उस] जीव को मैंने कहीं नहीं पाया।

(६) मैंने राज-पाट के सुखों को छोड़ा और धन-यौवन तथा जीव को देकर, (७) ऐ प्रमा मैं प्रेम-पथ पर चढ़ गया हूँ; पता नहीं आगे क्या होगा।"

टिप्पणी—(२) सिर<सीअल<शीतल। (६) पाट<पट्ट=सिंहासन।

[२३१]

पर्मा जिय[1] दुख बात सुनाई[2] । एक एक क[3] तोहि सुनाई ।
मैं एकसर महि[1] बिरस उजारी । तेहि पर बिरह दुख सिरभारी ।
कोइ न सहै महारस साऊँ । पर्मा अब कौनि दिसि जाऊँ ।
कोइ[1] न रहा साथ एहि[2] बेरा । एक महँ[3] संग[4] दुख मोहि[5] केरा ।
तोहि सउँ[1] प्रीति बास मोहि भाव । जानौं[3] बिधि किउ[4] सुमुम सुनाव[5] ।
पर्मा प्रीति बास मधुमालति[1] तोहि सउँ[2] भाव मोहि[3] ।
तौ सब दुक्ख बात सब आपनि[1] रोइ सुनाइउ तोहि[2] ॥

पाठान्तर—ए मे उपर्युक्त चौथी अर्द्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा मैं ए सुनु। २ रा ए सबाई (< सबाई : नागरी लिपि)। ३ ए मैं।

(२) १ ए जे। २ ए तापर परा अधिक दुख।

(४) १ रा कोउ। २ ए बेहि। ३ ए रहा। ४ मा संग ए घट। ५ ए बोहि।

(५) १ रा ए सौ। २ ए मोहि। ३ ए आगहु। ४ ए बे। ५ मा बसह सुनाव ए सोभा पावै।

(६) १ ए पेम प्रीति मधुमालती। २ रा ए तो सौ। ३ ए मोहि।

(७) १ मा दाख अपनी ए जो आपनी। २ ए सुनावा तोहि।

अर्थ—"(१)—हे पेमा मैंने [अपने] जी का समस्त दुःख-वार्ता एक-एक करके तुम्हें सुना दी। (२) मैं इस विषम उजाड़ [स्थान] में अकेला हूँ और उस पर जी में भारी विरह-दुःख है। (३) मुझसे कोई महारस [नगर] का नाम नहीं कहता है, इसलिए हे पेमा मैं अब (अब) किस दिशा में जाऊँ? (४) इस बेला में कोई मेरे साथ न रहा एक मात्र उस [के विरह] का दुःख साथ है। (५) तुमसे मुझे प्रीति की वासना आ रही है, और मुझे लगता है कि [तेरे द्वारा] विधाता मुझे कुछ शुभ [संदेश] सुनाएगा।

(६) हे पेमा मुझे तुमसे मधुमालती की प्रीति-वासना मिल रही है (७) इसीलिए मैंने अपनी समस्त दुःख-वार्ता तुझे रोकर सुना दी।

टिप्पणी—(४) बेरा < बेला = समय।

[२३२]

कही कुंवर दुख बात सबाई[1] । पेमा जिय[2] सुनि मोह समाई ।
कहसि कुंवर दुख सउं अकुलानो[1] । बिरह दीरघ दुख[2] लघु क जानो[3] ।
धनि जोबन[1] तहि करा भारी[2] । जो जग भएउ[3] बिरह भिखारी[4] ।
सरग बुंद सभ[1] होहिं न मोती । सभ घट बिरह दहइ नहिं[2] जोती ।
कोटि माहिं[1] बिरला जग[2] कोई । जाहि सरीर बिरह[3] दुख होई ।
रतन कि सायर सायरहिं[1] गज मुकता[2] गज कोइ ।
चंदन कि[1] बन बन उपन[2] बिरह कि तन तन होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए सबाई (< सबाई : नागरी लिपि)। २ रा जिय ए जिव।

(२) १ रा मों अग्याना मा मेर मपुतानेहु ए तै अकुलानेहु। २ रा बिरह दीरघ दुख मा बिरह दुख्ख दुख ए बिरह दीरघ दुख। ३ मा दुख लघु जानेहु ए लघु कै जानेहु।

(३) १ ए जोबन। २ रा तेहि कर जग भारी ए तेहि केर भारी। ३ ए भौ। ४ ए भिखारी।

(४) १ मा ए सब। २ ए दे न रा दई न।

(५) १ ए कोटिन्ह महं। २ मा ए जग। ३ ए जेहि सरीर बिरहा।

(६) १ ए सायेर सायेर। २ मा गज मानी ए गज मानिक।

(७) १ ए कै। २ ए उसमैं।

अर्थ—(१) कुमार ने समस्त दुख-वार्ता कही जिसे सुनकर प्रेमा के जी में मोह जाग पड़ने लगा। (२) उसने कहा "हे कुमार, विरह-दुख से उकता (तंग आ) कर तुम विरह के दीर्घ दुख को छोटा करके समझ रहे हो। (३) उसका जीवन अत्यंत धन्य है जो जगत् में विरह पर बलिहार हो गया। (४) स्वर्ग (आकाश) [के बादलों] की समस्त बूँदें मोती नहीं बनती हैं और सभी के घट (अंतःकरण) में विरह-ज्योति नहीं देता है। (५) कोटि (करोड़) में विरला ही जगत् में होता है जिसके शरीर में विरह-दुख होता है।

(६) रत्न क्या प्रत्येक सागर में होते हैं? क्या गजमुक्ता हर किसी गज में होते हैं? (७) चंदन क्या प्रत्येक वन में उत्पन्न होता है? [इसी प्रकार] विरह भी क्या प्रत्येक के शरीर में होता है?"

टिप्पणी—(४) बुंद < बिन्दु। (६) सायर < सागर।

[२३३]

जहि जिय दय[1] विरह उपराजा। निहचै[2] तानि भुवन मो राजा।
पम[1] पथ जो[2] चढ़[3] जिउ सोई। क जिउ होइ[4] न प्रानम होई।
विरह दवां चारिहु दिसि[1] लागी। जा न जर मो गरुव अभागी[3]।
विरह दुक्ख दुख कहौ[1] न काई। जग मों विरह दुक्ख सुख[2] होई।
जहि जग दय[1] विरह दरसाव। सभ दुख सुख तहि डाठि दसाव[2]।
मसन अमर मूरि जग[1] विरहा जनम[2] जो[3] पाव तासु[4]।
निहचै[1] अमर[2] होइ मो जुग जुग काल न आव पास[3]॥

पाठान्तर—(१) १ रा दैम। २ भा ए निस्चै।
(२) १ भा विरह ए प्रथम। २ भा ए में यह शब्द नहीं है। ३ भा चढ़े ए चढ़ा। ४ ए जाइ।
(३) १ ए दिसा चारौं दिस। २ भा रा लागा। ३ भा रा गरुव अभागा।
(४) १ रा ए कहै। २ भा जम जन जिवन विरह बिन रा जग मौं विरह दुक्ख ए पाछ दुख ताहि सुख।
(५) १ भा पसि जिउ जाहि रा जहि जम द्रष्य ग जहि जिउ दैव। २ रा नहि बिधि नेहि सुख दिस्टि दसावै ग दुख सुख तेहि मैंगे मन आहि।
(६) १ ए गा। २ ग जम। ३ ग म यह शब्द नहीं है। ४ ग [illegible]।
(७) १ भा निस्चै ए निस्चै। २ ग अवर रा अमर भी। ३ [illegible] ताध।

अर्थ—"(१) जिसके जी में दव विरह उत्पन्न करता है निश्चय ही वह [illegible] होता है। (२) जो प्रेम-पथ पर चढ़ता है (आरूढ़ होता है) वह जीव ([illegible]) है। [किसी को भी] वो दे मैं एक ही मिलता है या तो जीव और या [illegible] नहीं मिलते हैं]। (३) विरह की दव जिसके चारों ओर लगी हुई [illegible]

तो वह बड़ा भारी अभागा है। (४) विरह-दुःख को कोई दुःख न कहो; इस जगत् में विरह का दुःख सुख होता है। (५) जिसको संसार में ईश्वर विरह दिखाता है, उसकी दृष्टि में समस्त दुःख सुख दिखाई देता है।

(६) मंझन कहते हैं विरह जगत् में अमृत-मूल है, और जो इसे जीवन में पाले ता है, (७) वह निश्चय ही युग-युग के लिए अमर हो जाता है, और काल उसके पास नहीं आता है (उसका नाश नहीं होता है)।

टिप्पणी—(१) दवा < दव = दावाग्नि। (३) गरुव < गुरु। (५) डीठि < दृष्टि।

[२३४]

पेम अमिअ फर[१] साध जो[२] करई। सहज अपान आपु[३] परिहरई[४]।
जिउ धरि मींचु धर नहिं पाऊ[१]। पेम अमिअ फर चाख न काऊ।
प्रथमहिं सीस हाथ क लेई। पाछें ओहि[१] मारग पगु दई।
बिरह रोपि जिय[१] नन उघारे[२]। त्रिभुवन ताहि लसें[३] उजियार[४]।
जनमि जो जिउ न पिरम[१] मद मांता। तोहि जीवन नहिं दइ[२] बिधाता।
बिरह समुद अथाह अति जग जान सब कोइ।
मानिक सो ल उभरे[१] जो मरजीवा[२] होइ॥

पाठान्तर—भा में उपर्युक्त दूसरी अर्द्धाली यथा पाँचवीं आती है।
रा में उपर्युक्त चौथी अर्द्धाली यथा पाँचवीं आती है।
(१) १ ए अमीफर। २ भा सो ए जे। ३ भा ए आपु अपान जो रे। ४ ए परहरई।
(२) १ ए जिउ पर तेज धरा जे पाऊँ।
(३) १ भा एहि, ए वोहि।
(४) १ भा रूप जिनि ए रूप जे। २ ए नैन उघारे, रा रूप उघारे। ३ भा मार्गे ए आये। ४ ए उग्यारे।
(५) १ ए सहज पीउ प्रीतम मद माता। २ भा ए तेहि जिय (जिउ—ए) जनम न देहि (लेइ—ए)।
(६) १ भा ए सब।
(७) १ ए सो लै उबरै। २ भा मरजीया ए मरजिया।

अर्थ—(१) प्रेम के अमृत-फल की जो आशंसा करता है वह सहज आत्म (चेतना) को स्वतः छोड़ देता है। (२) जो जी में मृत्यु का वरण करके पैर नहीं रखता है, वह प्रेम का अमृत-फल कभी नहीं चखता है। (३) [प्रेम-पथ का पथिक] पहले ही से [काटकर] अपना सिर हाथ में कर (रख) लेता है उसके पीछे वह उस मार्ग पर पैर रखता है। (४) जिसने विरह-दुःख को जी में रोप (लगा) कर नेत्र खोले उसके लिये तीनों भुवन प्रकाश-पूर्ण हैं। (५) जो जन्म-धारण कर [अपने] जी में प्रेम-मद से मत्त नहीं हुआ उसको विधाता [भले ही] जीवन न दे।

(६) बिरह-समुद्र अति अथाह है यह जगत् में सभी कोई जानता है। (७) [इस अथाह समुद्र से] माणिक्य लेकर वही ऊपर आ पाता है जो मरजीवा (जीवन्मृत) होता (बनता) है।"

टिप्पणी—(१) अमिय<अमृत। साध<श्रद्धा<श्रद्धा=स्पृहा आकांक्षा। अपान<अप्पाण<आत्मत्व। (२) मींचु<मृत्यु। (७) ऊभ<उब्भ<ऊर्ध्व।

[२३५]

बिरह अगिनि[1] जिय[2] लागि[3] न जाही । एहि[4] जग जनम अबिरथा[5] ताही[6] ।
जइ जिउ पेम तत नहिं लावा[1] । जोबन फर तइ[2] जनमि न[3] पावा ।
एहि जग[1] जनमि लहा[2] तइ लाहा । बिरह अगिनि महं जइ[3] जिउ दाहा[4] ।
तेहि दुख कह कसें दुख कहिए[1] । जेहि दुख सेंत[*2] प्रीतम निधि लहिए[3] ।
बिरह आगि[1] जेहि हिय उर जरेऊ[2] । सहज अपान आपु परिहरऊ[3] ।

पेम समुद दुक्ख जल[1] जबहीं उठइ[2] हुलास ।
परहिं[1] सनहो बापुर छाडि जियन[2] क[3] आस ॥

पाठान्तर—(१) १ अग्नि। २ रा ए जिव। ३ ए लागु। ४ रा ए येहि। ५ मा ए जीवन अबिरथा (अबिरथा—ए)। ६ ए. बाही।

(२) १ रा जेह जिय पेम न आइ समावा मा जिनि जीउ पेम तंत नहिं लावा ए जेहि जिउ प्राण तंत मन लावा। २ रा फल तेइ, मा फर तिनि ए फल ते। ३ रा मे यह शब्द नहीं है।

(३) १ मा एहि जगि ए एहि जगि। २ रा लिया ए लीन्ह। ३ ए अगिन मा जे। ४ मा दाहा।

(४) १ ए यह दुख सखी कहि सौं कहियै। २ रा ता ए ते। ३ ए लहियै।

(५) १ मा अगिनि ए अग्नि। २ ए मो जे जिउ जारा। ३ ए मैन पानि तें पिउ पजारा।

(६) १ मा समुद अमोग (<अमोघ पारसी लिपि?) जल रा समुद दुक्ख दुह ए अमोघ अमोघ जल। २ मा कर जल (जनु?) उठहि ए बीरी उठै।

(७) १ ए फिरहिं। २ मा ए छोड़ि जियन। ३ ए के।

अर्थ—"(१) जिसके जी में बिरह की अग्नि नहीं लगी, इस जगत् में उसका जन्म (जीवन) व्यर्थ है। (२) जिसने अपने जी को प्रेम-तंत्र में नहीं लगाया उसने जन्म लेकर भी जीवन का फल नहीं पाया। (३) इस जगत् में जन्म लेकर उसी ने लाभ प्राप्त किया जिसने बिरह की अग्नि में अपने शरीर को दग्ध किया। (४) उस दुःख को कैसे दुःख कहा जाए जिस दुःख से प्रियतम [जैसी] निधि प्राप्त की जाती है? (५) बिरह की अग्नि में जिसका हृदय जल गया (जाता है) वह अपने सहज आत्म (चेतना) को स्वयं ही छोड़ देता है।

(६) प्रेम-समुद्र के कुल-जल में अभी हुलास (हिलोर) उठता है (७) उसमें प्रेमी बेचारे जीवन की आशा छोड़ कर [कूद] पड़ते हैं।"

टिप्पणी—(१) अबिरथा < वृथा = व्यर्थ। (२) तउ < तव। (३) लाहु < लाभ। (५) अपान < अप्पाण < आत्मन्। (६) हुलास < उल्लास। (७) बापुरा ~ बप्पुड़ [दे]= बेचारा दीन अनुकंपनीय।

[२३६]

बिरह भाउ किछु[1] जान सोई । जो बसै[2] जिउ जोबन[3] सोई ।
बिरह जुआ कर तइ[1] किछु[2] पावा । जीउ पत[3] कौड़ी पर[4] लावा ।
बिरह उदधि[1] अवगाह अपारा । कोटि माँह एक[2] परनि हारा ।
बिरह कि[1] जगत[2] अबिरथा[3] जाई । बिरह रूप यह स्रिस्टि सबाई[4] ।
नैन बिरह अंजन जइ[1] सारा । बिरह रूप दरसन 'संसारा'[2] ।[3]
मंझन एहिं[1] जग जनमि कै बिरह न कीता[2] भाउ ।
सून घर का पाहुनो जेउं आवा[1] तउ जाउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए भाव तो जानै। २ रा बैठै ए बैसा। ३ रा जीवन।
(२) १ मा तिनि ए जे। २ ए कछु। ३ ए जुआ पैत। ४ मा जिनि ए जिन्ह।
(३) १ ए वग्ग (?)। २ रा कोइ।
(४) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए जीनि। ३ ए अबिथा मा अबिरथा। ४ रा यह स्रिस्टि सबाई, ए जो स्रिस्टि उपाई।
(५) १ मा जिनि। २ रा उंजियारा। ३ ए म पूरी अर्द्धाली का पाठ है—बिरह राज नल बिरहैं राता। बिरह राजा नल बिरह संघाता। (तुक —दोनों चरणों में बिरह राजनल')
(६) १ मा. यह, ए जो। २ रा ए कीन्हा।
(७) १ ए आवै।

अर्थ— (१) बिरह का भाव कुछ वही जानता है जो [उसके पीछे] जीव और यौवन को खो बैठता है। (२) बिरह के जुए का फल (लाभ) वही कुछ प्राप्त करता है जो अपने जीव को कौड़ी के दाँव पर लगा देता है। (३) बिरह का समुद्र अथाह और अपार है। कोटि में एक उसको तैर [कर पार कर] सकता है। (४) बिरह क्या जगत् में व्यर्थ जाता है? यह सारी सृष्टि ही बिरह रूप (बिरह का परिणाम) है। (५) जिसने नेत्रों में बिरह का अंजन लगाया उसको बिरह के रूप का ही दर्शन संसार में [मिलता है]।

(६) मंझन कहते हैं—इस जगत् में जन्म लेकर जिसने बिरह से रुचि नहीं की (७) वह उस सूने घर के पाहुने के सदृश है, जो जैसा आया है वैसा ही गया है (जिसका आना भी वैसा ही है जैसा जाना)।"

टिप्पणी—(२) पैत < पण्त < पउत्त < प्रयुक्त = जो प्रयुक्त किया गया या चला गया हो—दाँव। (४) अबिरथा < वृथा। (७) पाहुना < प्राघुणक = अतिथि मिहमान।

[२३७]

जौ लहि कर न सिर कह्[1] पाऊ । निबु ओहि[2] खोरि न मूद काऊ ।
नन लागि दस सम रूपा[1] । मर तौ पाव जीउ अनूपा ।
एक जीउ एहि पथ लगाव[1] । एक[1] जीउ क[3] सौ जिउ[4] पाव ।
होइ मौन बकत सब[1] बानी । सुन सबन सभ[2] अकथ[3] कहानी ।
आपु दिस्टि[1] देखइ[2] सब[3] भाऊ । रूप सो जाहि पतन[4] नहि[5] काऊ ।
भाउ अनग बिरह संउ[1] उपजहि[2] जाहि[3] सरीर ।
त्रिभुवन कर[1] जो दूल्ह तहि बिधि दइ[2] यह पीर ॥

पाठान्तर—रा में उपर्युक्त पाँचवी अर्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ रा सिय कह मा सिर कै ए सिर सौं। २ मा एहि ए यह।
(२) १ ए मूदि या देखु सरूपा। २ ए इन्ह नैनहु देखि जान सरूपा।
(३) १ मा जीउ जौ एहि पंथ लावै ए जीव माहि पथ लगावै। २ ए एहु।
३ ए सिउ मा। ४ मा सिय मैं ए कम कै।
(४) १ मा बकतै सब ए मैं बकतै। २ रा सुनै सबन सम मा सुनै सबन
सबि ए सुनै बात जा ।३ ए कथा।
(५) १ मा आवै (?) दिस्टि ए मुनि चलि दिसिट। २ ए देखु। ३ मा ए
सम। ४ रा जीउ बत। ५ ए न (<नहि फारसी लिपि)।
(६) १ रा सा ए सै। २ ए उपजा। ३ मा ए सुबर।
(७) १ ए कर। २ ए त बिधि दई।

अर्थ— (१) जब तक कोई सिर को पैर नहीं करता (सिर के बल नहीं चलता) वह ठीक-ठीक उस मार्ग में कभी मूँद (पैरों के द्वारा भूमि-मर्दन कर) नहीं सकता। (२) जो नेत्र खोल कर [जगत् के] सभी रूपों को देखता है वह मर जाता है तो अनुपम जीव (जीवन) पाता है। (३) एक जीव (जीवन) को इस पथ में लगाता है वह एक जीव (जीवन) के सौ जीव (जीवन) पाता है। (४) [वह] मौन होकर समस्त वाणी बोलता है और वह अपने श्रवणों से समस्त अकथनीय कथा सुनता है। (५) जो समस्त भावों को आत्म-दृष्टि से देखता है [उसका] रूप इस प्रकार का हो जाता है जिसका पतन कभी नहीं होता है।

(६) जिसके शरीर में बिरह से अनेक भाव उत्पन्न होते हैं (७) ऐसा जो त्रिभुवन का दूल्हा (स्वामी) होता है उसी को विधाता यह पीड़ा देता है।"

टिप्पणी—(१) पाउ < पाद = पैर। खोरि < खोड़ [रे] = गली मार्ग। (५) भाउ < भाव < भाव। (७) दूल्ह < दुर्लभ = दूल्हा वर, स्वामी।

[२३८]

सो जग जनमि जियन फर[1] पाव । जिउ आगन[2] तहि पथ लगाव[3] ।
जाकर पथ गाइ काइ जाइहि[1] । सो मनुआ होइ[2] पथ लगाइहि[3] ।

सहज हिय उपराजहि ग्याना[1] । मारग यह कह जासि भुलाना[2] ।
पाँचो तत (=तत्त) एक होइ[1] जैहहि । सहज भाउ एक एक देखैहहि[2] ।
औ फुनि[1] कया जीउ भ जाइहि ।[1] कया रूप जिउ प्रगट दिखाइहि ।[2]

बिरह दुक्ख निधि सुख न जिनि कोई एहि[1] अकुताउ ।
निरबाह[1] जे[2] बिधि सिर[3] प[4] दूनहु जग[5] राउ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा जियन फल ए जीवन फल। २ रा जिउ अपना मा जो अपान ए जो आपन जिऊ। ३ ए जोहि के सम लावै।

(२) १ ए जोइ जाही। २ ए आगे भै। ३ ए देखाही।

(३) १ मा हिये उपराज मियाना ए हाय उपराजै ग्याना। २ ए एक कत जाहु भुलाना।

(४) १ ए भै। २ मा सहस भाव एक एक दिखरैहहि रा औ पुनि कया जीउ देखैहहि।

(५) १ रा सहज भाउ एकै देखाइहि, मा औ पुनि कया जीउ मैं जाइहि ए अब जो दया जीव भै जाही। २ रा मिलि कै सफल पेम बिधि पाइहि, ए कया रूप मैं प्रगट देखाही।

(६) १ मा जिनि काइ गहि (<दैहि फ़ारसी लिपि)।

(७) १ ए निरबाही जो मा बिरह बाहु जे। २ ए जो। ३ ए सिर ४ मा भए है ए सा। ५ ए चारौं जुग।

अर्थ—"(१) वही जगत् में जीने का फल पाता है जो अपने जीव को उस (प्रेम के) पथ में लगाता है। (२) जिसके पथ में कोई जो (जावेगा) वह अगुआ होकर उसे पथ-निर्देश करेगा ही। (३) [ऐ मनुष्य] तू सहज हृदय से ज्ञान उत्पन्न कर मार्ग यही है तू कहाँ भटका हुआ जा रहा है? (४) पाँचो तत्व [इस मार्ग में] एक हो जावेंगे और प्रत्येक [उस] सहज भाव को दिखाएगा (५) और तब काया जीव हो जाएगी और जीव काया के रूप में प्रकट दिखाई पड़ेगा।

(६) बिरह-दुःख सुख की निधि है इससे कोई मत अकुलाओ (तंग आओ)। (७) इसका निर्वाह करने के लिए जो विधि द्वारा निर्मित हैं वे अवश्य ही दोनों जगत् (इहलोक और परलोक) के राजा हैं।"

टिप्पणी—(४) तत <तत्त्व।

[२३९]

दुग सा[1] जग अपुताउ[2] न कोई । दुग के अंत सुक्ख[3] प होई ।
दुइ दुग दीप सुक्ख सयंसारा[1] । बारी पन्थ[1] सत अस्स भारा ।
फागुन औ नरियर[1] पन मार । जौ पल्मो[1] सिर मेंउ[1] अनुसारै[1] ।
दुइ[1] पाथर बिष आपु पिसावैं[1] । तौ मेंहदी राता रंग पावै[3] ।
मोमा बहु बिधि[1] आपु छनाव । पदुमिनि उर्गहि[1] ठोउ तौ[3] पाव ।

दुइ दुख बीच सुक्ख है[1] निजु जानहु[2] सयसार[3] ।
जइ अति[1] रैनि अंधेरी तौ[2] अंजोर[3] भिनुसार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए से । २ रा अनुसार। ३ ए आगे मुख।
(२) १ ए दुइ दुख बीच सुक्ख संसारा मा दुहु सुख बीच दुक्ख सयंसारा। २ रा कारी घटा मा काली घटा ए काली के घट।
(३) १ ए फागुन तै जो तरु पतझारे। २ मा नौ पल्लौ सो ए तो नौ पल्लौ। ३ मा सिर सौं धारै, रा सिर सौं अनुसारै ए सिर तै अनुसारे।
(४) १ मा दुहु रा दोहूी। २ ए पिसावा। ३ ए पावा।
(५) १ मा दुख। २ रा अधरन्हि। ३ ए ठाँव जी।
(६) १ मा दुहुं सुख बीच दुक्ख। २ रा जानै। ३ ए संसार।
(७) १ रा दुख कै ए जौ अति। २ मा रैनि। ३ ए इजोर।

अर्थ—"(१) [हे कुमार] संसार में दुःख से कोई न अकुलाओ (तंग आओ); दुःख के अंत में सुख अवश्य ही होता है। (२) संसार में दो दुःखों के बीच में सुख इस प्रकार होता है जिस प्रकार काली घटा के बीच में श्वेत जल-धारा होती है। (३) फागुन में यदि वृक्ष पत्ते झाड़ता है तो वह सिर से नवपल्लव [भी] निकालता है (धारण करता है)। (४) मेहँदी दो पत्थरों के बीच में अपने को पिसाती है तो मेहँदी लाल रंग [भी] पाती है। (५) मोती जब अपने को बहुत प्रकार से छिदाता है तभी वह पद्मिनी के हृदय पर स्थान [भी] पाता है।

(६) संसार में दो दुःखों के बीच में सुख है यह निश्चित रूप से जान लो; (७) यदि अति अँधेरी रजनी है, तो उज्ज्वल प्रभात भी है।"

टिप्पणी—(४) रात < रक्त = लाल। (५) ठाउं < स्थान। (७) रैनि < रयणी < रजनी।

[२४०]

तुम[1] जो[2] कुंवर बहुत दुख पावा । अब बिधि[3] आनि संजोग मरावा ।
करम होइ[1] जो[2] लिखा लिलारा । तुम्ह[3] दुख रैनि भियर भिनुसारा ।
दया कर जो[1] देव दयारा । अलप दिनन्ह महं[2] मिलै सो बारा ।
पर महेउ[1] दुख समुद अपारा । सुबचन दउ होइ[2] कड़हारा ।
सुनहु बाह मोहि भउ[1] तहि केरी । जाहि दुक्ख तुम्ह कीन्ह हु बरी[3] ।
पठि समुद[1] धमि कीन्हसि[2] कीन्हसि बिरह सुभम[3] ।
सुदिन आइ मिअराना[1] सुनहु बहौं उपरेम ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त प्रथम तथा द्वितीय अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ मा ए तै। २ ए जो। ३ ए जा।

(२) १ मा होहिं। २ ए पो। ३ रा ए तौ।
(३) १ ए जो। २ रा बिलगि महं, ए बिला मों।
(४) १ मा परे महहि ए परा महो। २ ए बचन देउ जो हो।
(५) १ ए सुनहु बाह मोसों रा सुनु मैं कहौं बाह। २ ए बाहि। ३ ए जाके दुख कीन्हा तोहि परी मा जाहि के दुक्ख भिए हु पेरी।
(६) १ मा सुभेष। २ ए कीन्हा। ३ मा कीन्हे बिरह बहु भेस ए कीन्हा बिरह बिसेस।
(७) १ रा भियरानें।

अर्थ—"(१) ऐ कुमार, तुमने जो बहुत [विरह का] दुख पाया तो विधाता ने अब संयोग लाकर मिला भी दिया। (२) यदि ललाट में कर्म (भाग्य) का लेख हो तो तुम्हारी दुख-रजनी का प्रभात निकट है। (३) यदि दयालु दैव दया करे, तो वह बाला तुम्हें थोड़े ही दिनों में मिल जायेगी। (४) तुम जो अपार दुख-समुद्र में पड़े हुए हो तो मैं तुम्हें कर्णधार बनकर सुवचन (शुभ संदेश) दे रही हूँ। (५) तुम मुझसे उसका समाचार सुनो जिसके [विरह के] दुख को तुमने [अपने पैरों की] बेड़ी बना रक्खा है।

(६) समुद्र पर चढ़ाई करके तुमने उसमें डुबकी लगाई है और विरह का सुवेष किया है, (७) तो तुम्हारा शुभ दिन भी निकट आ गया है; [वह] उपदेश (संदेश) मैं कह रही हूँ सुनो।

टिप्पणी—(२) लिलार < निलाड < ललाट। रैनि < रअणी < रजनी। नियर < निकट। (४) कंडहार < कर्णधार।

[२४१]

सुनहु कहौं अब तेहि क[1] बाता । जेहि क[2] रंग तोर जीउ[3] राता ।
नगर महारस राजकुमारी । पम गहँ जेहि भएहु[1] भिखारी ।
मैं औ[1] वह[2] बार सप[3] सम्नी । मधुमालति मोरि बार सहेली ।
म औ मधुमालति[1] एक सगा । मानति[2] सबहि बाल्पन[3] रंगा ।
अब क[1] कुंवर न जानौं बाता । जब मठ[2] मन मोहि[3] दीन्ह बिमाता ।
मनत[1] एक सप[2] हम[3] दुनहु[4] खेलिन्हि बार[5] धमारि ।
भा एक बरिस दवस माहि बिछुरें[1] पन जब सउ बिधि हारे[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मैं तापरि। २ ए जाके। ३ रा जीवन।
(२) १ रा भई जेहि भएउ ए गहा जो भेउ।
(३) १ मा बह रा और। २ ए उन्ह। ३ मा बालपन ए. बाल भैन।
(४) १ रा मैं और वह बारे ए मैं मधुमालति रही। २ मा. माने ए माना। ३ ए सब बालापन।
(५) १ मा एहि ए अब गीं। २ रा अब मां ए जब गें। ३ ए. में यह पद नहीं है। ४ मा दिएउ।

(६) १ ए संतति। २ मा ए संग रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए म यह शब्द नहीं है। ४ ए इनौ। ५ मा नके बार, रा कतहि बाल ए कीन्हा बाल।

(७) १ भा अब मा एक बरिस मोहि बिछर ए अब बिछुरे भा बरिस दिन रा मा एक देवस मोहि बिछुरें। २ भा जब बिधि सै बन बार, ए बन कीन्हा बिधि बारि।

अर्थ—"(१) सुनो अब मैं उसी की वार्ता कर रही हूँ, जिसके प्रेम में तुम्हारा जी अनुरक्त है (२) उस महारस नगर की राजकुमारी की जिसके प्रेम को ग्रहण कर तुम भिखारी हो गए हो। (३) मैं और वह बाल्यावस्था में संग की खेली हुई हैं, [इसलिए] मधुमालती तो मेरी बाल-सहेली है। (४) मैंने और मधुमालती ने एक संग बाल्यावस्था का सभी रंग (सुख) माना। (५) अब की बात [अवश्य] है कुमार नहीं जानती हूँ जब से मुझे विधाता ने बन [वास] दिया है।

(६) सदैव एकसाथ हम दोनों ने बाल्यावस्था के क्रमपूम खेल खेले। (७) मुझे उससे वियुक्त हुए एक ही वर्ष हुआ जब से विधाता ने मुझे बन में बास दिया है।"

टिप्पणी—(५) बात < बत्ता < वार्ता। (६) संतत < सतत = निरंतर सदैव।

[२४२]

सुनत कुँवर रस बात[१] सोहाई। हिय गहभर मुरछा गति[२] आई।
पलटि पम सिर सउ[१] कुनि[२] लागा[३]। कनक अगिनि जनु[४] लसउ[५] सोहागा[६]।
पम परान[१] पलटि सो भएऊ। जरति अगिनि[३] जनु[४] घिउ[५] परि गएऊ।
जीउ गएउ[१] मधुमालति पासा[२]। परा भुम्मि[३] रहि धर बिनु साँसा।
गए[१] परी दुइ पल अपानां। ममुरसि नन उपारि गियानां[३]।
बिरह भाउ[१] तन काँप[२] पर पाउ[३] सहराइ।
मन नीर दुहु[१] भरि भरि[२] बहन[४] जो[३] लागु बहाइ॥

पाठान्तर—(१) १ रा बचन। २ ए गहबरि। ३ ए मुर्छा मन (< मनि फ़ारसी लिपि)।
(२) १ रा मा ए त। २ रा बहि(?) ए जा। ३ ए माग। ४ ए आगि की। ५ भा परेउ ए परा। ६ ए सोहागे।
(३) १ ए करार। २ रा एक। ३ ए आगि। ४ ए म यह शब्द नहीं है। ५ ए घिन।
(४) १ ए लागा। २ मा बासा। ३ मा परेउ भुम्मि ए परा भुरछि। ४ ए जा परति अपाना।
(५) १ मा गएं। २ ए मुनत। ३ ए उघरे रवि ग्याना रा उघारेसि अग्याना।
(६) १ ए पाव। २ मा ए काँपत। ३ मा परेउ पा ए परा पाँव।
(७) १ रा तब ए दुइ। २ ए बहि चला। ३ रा कहाँ की मा. बहि चलि, ए. बचन।

अर्थ—(१) यह सुहावनी रस-वार्ता सुनते ही कुमार का हृदय आनंद से भर आया और उसे मूर्छा आ गई। (२) प्रेम पुनः पलट कर उसके सिर से लग गया और उसकी दशा ऐसी हो गई मानो आग में पड़े सोने में सुहागा पड़ गया हो। (३) उस प्रेम से (के कारण) प्राण पलट कर फिर इस प्रकार नवीन हो गया मानो जलती हुई आग में घी पड़ गया हो [और वह घी पड़ने से नवीन हो गई हो]। (४) उसका जीव मधुमालती के पास चला गया और उसका धड़ बिना साँस का हो कर भूमि पर गिर पड़ा। (५) दो घड़ियाँ बीतने पर आत्मा ने चेत की और उसने नेत्र खोल कर ज्ञान समझा।

(६) विरह भाव से उसका शरीर काँप रहा था और उसके पाँव सहला कर (सहलाते हुए) पड़ रहे थे (७) तब वह नैनों में आँसू भर कर अपनी कहानी कहने लगा।

टिप्पणी—(३) नौ < नव = नवीन। (५) अपान < अप्पाण < आत्मन्।

[२४३]

कहु[1] कुंवर सुनु पेमा[2] बाता । जब सेउं[3] जिउ मधुमालति राता ।
सुना न दसा एहि[1] कलि कोई । जहि परिच मोहि[2] दस क[3] होई ।
सपनें[1] जब सउ[2] गई दसाई । तब सेउ[3] कबहूं[4] बाहु न[5] पाई ।
औ फुनि[1] नींदि मन सेउ[2] हरी । सपनेउ सोइ[3] न दर्सों[4] घरी ।
पेमा सपन सोइ[1] प[2] पाव । जाकें[3] नैन नींदि सुख आव ।
दुइ बसु नींद न लागहि जब सउ सपनें[1] गई दसाइ ॥
अस सो कहु उपगारु[1] देअ लागि जेहि घट[2] प्रान रहाइ[3] ।

पाठान्तर—(१) १ ए कहा। २ ए सुन पेम की रा रस पेमा। ३ रा ए सौं।
(२) १ मा एहि। २ ए मोहि। ३ ए की रा कै।
(३) १ रा सपना। २ ए रा सौं। ३ ए रा सौं। ४ मा फिर हूं ए कतहुं। ५ ए ना।
(४) १ रा औ पुनि ए अब तौं। २ रा ए नींद नैन सो। ३ ए जिउ घट रहत। ४ ए देखौ।
(५) १ ए पम सपन सोई रा पेमा सपना सोई। २ मा रा सो। ३ ए ए जाके।
(६) १ ए आव नयने मौं जब रा 'लागहि' नाम।
(७) १ मा अब कह पिउ उपकार ए अब मा कह उपकार है। ? ए घट मा रा जेहि घरा? ३ ए जीवन जाय।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा "हे पेमा, [मेरी] बात सुनो। जब से जी मधुमालती पर अनुरक्त हुआ, (२) इस कलि में किसी को सुना-देखा नहीं जिसे उस [के] दैसा का परिचय हो। (३) स्वप्न में जब से वह दीख गई तब से कभी उसका समाचार न मिला। (४) और फिर नैनों से निद्रा भी हर गई है जिससे उसे स्वप्न में भी मैं एक घड़ी उसको नहीं देख पाता। (५) हे पेमा स्वप्न भी उसी को मिलता है जिसके नेत्रों में सुख की निद्रा आती है।

(६) तब से मेरे दोनों चक्षु निद्रा से नहीं लग रहे हैं जब से वह मुझे दीख गई है। (७) अब दैव के लिए वह उपकार [मेरे साथ] कर कि मेरे शरीर में प्राण रह जाएँ।"

टिप्पणी—(१) बात ~ बत्ता < वार्ता। (६) चखु < चक्खु < चक्षु = नेत्र। (७) उपगार < उपकार।

[२४४]

कहु रस बचन जो[1] पूछौं तोही । एहि रस मरत जिआएहि[2] मोही ।
अब कहु कहाँ[1] सो प्रान[2] पियारी । औ तोहि ओहि सउं कसि[3] चिन्हारी ।
पेमां आजु सुदिन मोर आहा[1] । जहिं[2] पाएउ[3] मधुमालति चाहा[4] ।
दहि सो[1] सीख[2] जहि[3] मिलसो[4] बाला । जहि गुन हम सतत जप[5] माला ।
बिधि सो दवस कब होइहि[1] मोरा । जहिं दर्सौं[2] ससि बदन अंजोरा ।
लखमन कहं सकती परी[1] मोहि बिरह रहा[2] घट पूरि ।
पेमां तुह हनिवंत भ[1] मरउ[2] सजीवन मूरि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा सो ए जे। २ मा जियाइय ए जियावै।
(२) १ मा कहं ए कहा। २ ए पेम। ३ ए अब वा तो सा कैस रा औ ताहि ओहि गा कौनि मा औ तुम्ह उन्ह सेउं पैंनि।
(३) १ ए जा बाचा। २ रा जेहि ए जे। ३ ए पावा। ४ ए बाचा।
(४) १ ए म यह शब्द नहीं है। २ मा मत। ३ ए जो। ४ ए में यह शब्द नहीं है। ५ ए संतति जप गुन।
(५) १ मा होई ए होइ। २ रा जहि ए जो। ३ ए देखब। ४ ए इजोरा।
(६) १ ए लगन के सकती परी रा कठिमन गही सकति नहिं पारे। २ रा ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए भरि।
(७) ए तैं हनिवंत भै। २ ए मेरो।

अर्थ—"(१) अब तू वह रस-वचन कह जो मैं तुम से पूछता हूँ और इस रस से तू मुझ मरते हुए को जीवित कर। (२) अब तू बता कि वह प्राण-प्यारी कहाँ है और तुमसे-उससे किस प्रकार का परिचय है। (३) हे पेमा आज मेरा शुभ दिन है कि मैंने मधुमालती का समाचार पाया। (४) अब तू मुझे वह शिक्षा दे कि वह बाला मिल जावे जिसके गुणों की माला मैं सतत जपता रहता हूँ। (५) हे विधाता मेरा वह दिन कब होगा जब मैं शशि मुख कान्ति के प्रकाश को देखूँगा ?

(६) जैसे लक्ष्मण को शक्ति लगी थी, वैसे ही मेरे शरीर में विरह पूरित हो रहा है; (७) ए पेमा तू हनुमान होकर, संजीवनी मूल मुझे ला दे।"

टिप्पणी—(४) मीत < मित्त < मित्र। (६) लखमन < लक्ष्मण।

[२४५]

बात कहइ औ¹ चेत गवाव । बरबस समुझि² आप मह³ आव ।
खिन समुझ¹ खिन जा² बिकरारा³ । पेम गहा को आपु सँभारा⁴ ।
पेमां पाय¹ सीस धरि रोवा । नैन सलिल बिधु बदनी*³ धोवा⁴ ।
त्रिभुवन जग जीवन के¹ दाता । काहें न² मेरवसि³ जो जहि राता ।
कलि औतारि कुँवर क¹ नाईं । पेम बिछोउ² न दहि³ गुसाईं ।
और¹ दुक्ख संसार² कर³ जस भाव सत⁴ होउ ।
दुइ रात¹ आपुस मह बिधि जनि दसि³ बिछोउ ॥

पाठान्तर—मा में यह छंद अगले के बाद आता है।
(१) १ ए जो। २ रा ए समुझि। ३ ए जीउ घट।
(२) १ रा समझी ए चेतै। २ रा जाइ। ३ ए बिसंभारा। ४ ए न (<नहिं फारसी लिपि) आपु सभारा मा नहिं आपु सँभारा।
(३) १ मा पाइ। २ मा रोई, ए रोवै। ३ मा रा बिध बानी ए जो अंबुज। ४ ए धोव।
(४) १ ए तीनि भुवन जग जीवन। २ मा ए काहे। ३ ए मेरवहु।
(५) १ रा ए पुनि औतरी कुमर की। २ रा ए बिछोहु। ३ ए जै देहु।
(६) १ ए और। २ ए संसार। ३ रा के। ४ ए जत भावै तत।
(७) १ मा दुइ रातहिं ए दुनौ राते। २ ए मा। ३ रा ए देइ।

अर्थ—(१) वह बात कह रहा था और चेतना खो रहा था; बरबस (बलपूर्वक) जब वह समझता तब उसकी आत्मा में बस जाता। (२) एक क्षण वह समझता तो दूसरे क्षण वह बेचैन हो जाता। प्रेम से आविष्ट कौन अपने को सँभाल पाता है? (३) पेमा के पैरों पर सिर रख कर वह रोने लगा और नैनों के जल से उस चंद्रमुखी [के पैरों] को धोने लगा। (४) [पेमा ने कहा] "हे त्रिभुवन तथा जगत् को जीवन दान करने वाले, तू क्यों नहीं उसको उससे मिला देता जो जिससे अनुरक्त रहता है? (५) कुमार की भाँति किसी को भी कलि में अवतरित (जन्म दे) कर, हे स्वामी तू वियोग न दे।

(६) संसार के और दुःख भले ही जितने चाहें उतने हों (७) किन्तु, हे विधाता जो दो परस्पर अनुरक्त हों उनको तू वियोग न दे।"

टिप्पणी—(१) बरबस<बल+वश। (२) बिकरार<बेकरार [फा०]=बेचैन अशांत। (४) (७) रात<रक्त=अनुरक्त। (७) बिछोउ<विक्षोभ [दे०]=विरह, वियोग।

[२४६]

पुनि¹ बर नारि रूप गुन भरी² । मंत्रित कथा कहै³ अनुसरी⁴ ।
कहसि कुँवर अब चतु गियानी¹ । अंब्रित कथा कहौं कर² कानों ।
बिक्रम राइ¹ महारस मानी । कोस सहस दस तहि क² आनी ।

तहि घर धिय तिरभुवन अजोरी[1] । रबि ससि रूप न[2] पावहिं[3] ओरी[4] ।
मोरे जीउ[1] बुधि सो[2] नाहीं । लूटहिं[3] कुवर रूप परिछाहीं ।

रूप सोहागिनि उदधि जिमि[1] अंत न सूझहि[2] जाहि ।
जीभि बापु कर[1] बापुरी[2] किमि[3] करि संतर[4] ताहि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ ए भारी। ३ रा कहन। ४ ए अनुसारी।
(२) १ ए तैं धेनु ग्याना। २ ए सुन।
(३) १ ए राय। २ मा तिन्ह कै ए ताकी।
(४) १ ए धी त्रिभुवन मनिआरी। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ रा ए पावै। ४ ए उज्यारी।
(५) १ मा मारें जियहि। २ ए हौ। ३ ए लुटै।
(६) १ ए जो। २ ए सूझै।
(७) १ ए बापु कर रा नाहि सी। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए कैउं। ४ मा सत रै।

अर्थ—(१) इसके अनंतर वह श्रेष्ठ नारी (प्रेमा) जो रूप-गुण से भरी हुई थी अमृत-कथा (वह कथा जो मृत प्राय कुमार को जीवित कर सकती थी) कहने को हुई। (२) उसने कहा "ऐ कुमार, तू अब ध्यान देकर मैं [वह] अमृत-कथा कह रही हूँ और उसे तू कान लगा कर सुन। (३) चित्रसराय महारस स्थान के हैं और दस सहस्र कोस तक उनकी आज्ञा [चलती] है। (४) उन्हीं के घर में त्रिभुवन का प्रकाश वह दुहिता है, जिसके रूप (सौन्दर्य) की समतुल्यता सूर्य तथा चंद्रमा भी नहीं पाते हैं। (५) मेरे जी में वह बुद्धि नहीं है जो ऐ कुमार उसके रूप की प्रतिच्छाया को लूट (कुचल) सके।

(६) उस सुहागिनी का रूप (सौन्दर्य) समुद्र के समान है जिसका अंत नहीं सूझता है। (७) मेरी जिह्वा बेचारी बिना हाथों की कैसे उसका संतरण कर सकती है?"

टिप्पणी—(३) थान<स्थान। (४) धिय<धीया<दुहिता। (७) बाज<बज्ज<वर्ज्य=बिना। बापुरी<बप्पुडी [दे]=बेचारी अनुकंपनीय।

[२४७]

अउरि बात मो सुनहु[1] सोहाई। मांहि मधुमालति बहिनि सगाई।
जहिया मता[1] कोर[2] न बारी। मोहि ओहि[3] मा[4] तहिया[5] न बिन्हारी।
एक दिवस तहि क[1] महतारी। ठाढ़ी मिहैं कोर महं[2] बारी।
मोरउ सप मगी दस[1] गारी। मता दिस्टि ग भोन्ह पर[2] परी।
पनौं बीम एक दसिमि[1] ठाढ़ी। दगि जननि जिय[2] मया बाढ़ी।
तिन्ह महं[1] एक रूप गुन आगरि परगट भागि[2] लिलार।
तहि बनियां एक कन्यां[1] आछरि[2] कें[3] औतार॥
७

पाठान्तर—(१) १ मा ए और सुनहु (सुनौ—ए) रस बात।

(२) १ रा जहिया मांत ए तहिया माता। २ ए कोरा। ३ मा मोहि, ए मोहि। ४ मा सौं ए में यह छन्द नहीं है। ५ ए तहिऐ।

(३) १ मा आमन ए ताकी। २ मा ठाढी लिन्हें कार मैं ए ठाकि लीन्ह कोरा कै।

(४) १ मा ए औरउ (औ—ए) संग सखी दस। २ रा माता दिस्टि मै जोन्ह पर, मा मता दिस्टि मै मारें (?) ए माता डीठि परो उन्ह पर।

(५) १ मा देखेन्हि ए देखा। २ रा माता उर।

(६) १ ए तामो। २ ए भाग।

(७) १ रा तेहि कन्या एक कोरे, ए तकरे पर एक कन्या। २ ए अछरी। ३ रा ए के।

अर्थ—"(१) और भी यह सुहावनी वार्त्ता सुनो; मधुमालती और मुझ में बहनापा है। (२) जब कि मैं माता की गोद में बालिका थी मेरी और उसकी यह पहचान तब की है। (३) एक दिन उसकी माता गोद में [उस] बालिका को लिए हुए खड़ी थी। (४) उनके साथ में और भी दस सहेलियाँ खड़ी थीं। मेरी माता की दृष्टि जाकर उन पर पड़ी। (५) बीस-एक स्त्रियों को उन्होंने खड़ी देखा और मेरी जननी के मन में (उनके अपरिचित होने के कारण) शंका बढ़ी।

(६) उन में से एक रूप और गुण में बड़ी-चढ़ी थी और उसके ललाट में भाग्य [का लेख] प्रकट था; (७) उसकी गोदी में एक कन्या थी, जो अप्सरा की अवतार थी।"

टिप्पणी—(१) बात < वत्ता < वार्त्ता। सगाई < स्वक + त्व = आत्मीयता। (३) कोर < क्रोड = गोद। (७) आछरी < अच्छरी < अप्सरस्।

[२४८]

कलस कै मांथ[१] ओहरावा । उन पुनि[२] मिहुरि[२] सीस भुइं लावा[३] ।
बहुरि जननि बिनती ओधारी । आवहु उतरि हूठ घर भारी ।
अति सकोप किछु[१] कह न पारौं । उतरहु हूठ सब किछ[२] सारौं ।
जो दलेन्हि[१] मम जननि सुभाऊ । उतर कह[२] ओधारन्हि[३] पाऊ ।
उतरि[१] हूठ भटिन्हि[२] अंकवारी । बहिनि बचा[३] आपुन मह[४] सारी ।
दह चतुरमन सोरी[१] चीर बहुरि[२] पहिराइ ।
मंगल चार नगर भा घर घर बाज[१] सबद[२] बधाइ[३] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मार्ग। २ रा मा पुनि मिहुरि, ए. पो बहुरि। ३ मा ए बरसावा।

(३) १ ए. जै। २ ए पो सेवा।

(४) १ रा जो देखेनि, ए जौ देखा। २ ए उतरन कै। ३ मा ओधारेन्हि, ए ओधारा।

(५) १ रा. उतरीं मा. उतरी। २ ए दीन्हा रा भेंटिनि। ३ मा. बहिनि बाच ए बहिनी बाचा। ४ ए मापु में।

(६) १ मा. कीरें ए कीरिकै। २ मा. पहिरि, ए फिरि।

(७) १ रा. में यह शब्द नहीं है। २ ए मधन। ३ मा. बुझाइ ए बाहाइ।

अर्थ—"(१) हाइस कर [मेरी] माता ने उन्हें जुहार (नमस्कार) किया तो उन्होंने भी झुककर अपना सिर भूमि से लगाया। (२) तब [मेरी] जननी ने उनसे विनती की, हे मध्य नारी, नीचे उतर आओ। अति संकोच के कारण मैं कुछ कह नहीं सक रही हूँ, नीचे उतरो तो कुछ सेवा करूँ।" (४) जो उन्होंने मेरी जननी का स्वभाव देखा तो उतरने के लिए उन्होंने पाँव रक्खा। (५) नीचे उतरकर उन्होंने अँकवार भरी और [दोनों ने] आपस में बहिनापे का वचन दिया।

(६) [मेरी जननी ने] उनके शरीर में चतुरसम की खौर लगाई और तदनंतर उन्हें चीर पहिनाया। (७) नगर में घर-घर में मंगलाचार हुआ और बधाई के शब्द बजे।

टिप्पणी—(२) हेट < हेट्ठ [दे] = नीचे। (५) अंकवारी < अंकमाली = आलिंगन। (६) खोर < खउर < खपुर। (७) बधा' < बद्धापन < वर्धापन = अभ्युदय-सूचक वाद्य।

[२४९]

पनि¹ उन्ह जननि पूँछि असि बाता। कहिनि मत² कह मधन³ बिधाता।
राज एछन मम*¹ रूसौं² लागा। अधिकु³ दसि जिउ मरमउ मोरा।
माउ कहहु औ ठाउ¹ बखानी। औ कहहु कौन राज घर रानी।
गन गंधप क दउ¹ अपछरा। क र मिरिष्टि³ तुम्ह⁴ मानुष करा।
सो गुन यह¹ पूछि² कहहु³ बुझाई। जहि गुन आवहु जाहु उड़ाई।
अब जो आइ तुम्ह¹ हम² मउँ³ पस चिन्हारी कीत।
पमम ओर निरबाहौं¹ कामिनि पम पिरीत॥

पाठान्तर—(१) १ मा. पनि उन्ह उठि पूछी असि ए पनि उन्ह उनसे पूछी। २ मा. कहिनि मरम ए कहिनी सन। ३ मा. सत।

(२) १ रा मा. लछन मन ए लछन जे। २ मा. देखउ ए देखी। ३ रा अधिरजु ए अनगिछ। ४ ए भर्म मन।

(३) १ ए नाव कहहु जं ठाँव।

(४) १ मा. देवी मन गंधर्व ए देहि पन गंधर्व जे। २ ए कैसे। ३ मा. सिरिष्टि। ४ ए मा।

(५) १ ए जो यह पुनि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए कहौ।

(६) १ ए दोहि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए भी।

(७) १ ए अन्त अन्त निरबाहौ रा जस जस और निभा परन (?)।

अर्थ—"(१) फिर उनसे [मेरी] जननी ने इस प्रकार की वार्त्ता पूछी हे बहिन सत्य कहो, तुम्हें विधाता की शपथ है। (२) मैं तुम्हारे सभी लक्षण राजा के देखती हूँ और यह आश्चर्य देख कर मेरा जी चकरा गया है। (३) तुम नाम कहो और स्थान वर्णन करके कहो और कहो कि किस राजा के घर की तुम रानी हो (४) तुम गन्धर्व-राज या देवता अथवा अप्सरा हो अथवा तुम सृष्टि में मनुष्य की कला हो (५) और फिर यह (वह) गुण बताओ जिस गुण से उड़कर तुम आती-जाती हो।

(६) अब जो आकर तुमने मुझसे प्रेम-परिचय किया, (७) तो हे कामिनी मैं इस प्रेम-प्रीति का निर्वाह जन्म (जीवन) के अंत तक करूँगी।"

टिप्पणी—(१) बात < वत्ता < वार्त्ता। सपथ < शपथ। (२) लछन < लक्षण। अचिजु < आश्चर्य। (३) ठाउँ < स्थान। (४) गंधप < गंधर्व। करा < कला।

[२५०]

फुनि[१] घर कामिनि बात उघारी[२]। सुरस बचन रस रस अनुसारी।
कहेसि[१] महारस नगर हमारा। राजा बिक्रम राइ[२] भुआरा।
गधप राजन्ह मह[१] बड़ राऊ। करम तज अति बल बौराऊ।
मैं तहि घरनि[१] रूपमंजरी। भाग[२] सोहाग रूप गुन भरी।
संतति इह जो[१] दरससि कोरें[२]। आइउ फल[३] यह[४] कन्या मोरें[५]।
अब[१] जौ तुम्ह सउ उपजी[२] प्रीति[३] चिन्हारी मोहि[४]।
आए दूइजि[१] सतत[२] मैं मिलि आइबि[३] तोहि[४]॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ मा ए. रसारी (देखिए अगले चरण का 'सुरस बचन')।
(२) १ रा कहेसि। २ ए आइ (< आहि फारसी लिपि)
(३) १ रा गधप राजन मह मा मन गधप रायन्ह।
(४) १ मा घरहि, ए घरनी। २ ए भागु।
(५) १ ए मैं यह शब्द नहीं है। २ ए कोरे। ३ मा ए फर। ४ ए एक। ५ ए. मोरे।
(६) १ मा आपु। २ ए उपजति। ३ ए पम। ४ ए मोहि।
(७) १ ए दुइजि के। २ ए सतति। ३ मा ए आवै। ४ ए मोहि।

अर्थ—"(१) तदनंतर उस श्रेष्ठ कामिनी ने बात उद्घाटित की और रसीले वचन धीरे-धीरे कहने लगी। (२) उसने कहा 'हमारा नगर महारस है [जिसके] राजा विक्रमराय भूपाल हैं। (३) वे गंधर्व राजाओं में बड़े राजा हैं और उनके कर्म (भाग्य) तेज बल और पौरुष अपरिमित हैं। (४) मैं उन्हीं की गृहिणी रूपमंजरी हूँ और भाग्य सौभाग्य, रूप तथा गुण से भरी हूँ। (५) संतान एकमात्र यही है जिसको तुम गोद में देख रही हो; यही कन्या मेरी आयु (अब तक की अवस्था) का फल है।

(६) अब जो तुम से मुझे प्रीति-परिचय उत्पन्न हुआ है (७) तो अब मैं द्वितीया के आने पर सर्वथ निम आया करूँगी। "

टिप्पणी—(१) उभार < उब्भाड < उद् + बाट्य् = खोलना। (२) भुआर < भूपाल। (३) तिसाज < व्यवसाय। (४) घरनि < गृहिणी। (७) दुइजि < द्वितीया। सतत < सतत = निरंतर, सर्वथ।

[२५१]

मय एहि बचा[1] मोर अनुपुराव[2] । सदा दुइजि कहु[3] हम घर आव ।
एक बरिस मह बारह[1] बारी[2] । हमरें घर आव बर नारी[3] ।
ओ[1] मधुमालति राजकुमारी[2] । सतत आउ सथ[3] महतारी ।
कुंवर जाहु जौ चित बिसराऊ । हम घर जाइ[1] एहु हम नाऊं ।
भाई बहिनि पिता महतारी । करिहहि भगति[1] अनग तुम्हारी ।
मोर कुसर[1] जौ पइहहि[2] औ सुनिहहि[3] गुन तोर ।
मेरइ न्हिहि[1] मधुमालति बचन आनु[2] निजु मोर ॥

पाठान्तर—(१) १ ग अब भयि बाचा मोर। २ रा निबरावै ए परावै (< पुराव फारसी लिपि)। ३ ए के।
(२) १ ए हम बारह। २ मा बारी ए पारी। ३ रा आव बननि साथ बहु बारी।
(३) १ ए मैं। २ रा ए कुमारी। ३ मा संग।
(४) १ ए आहि। २ ए गुह।
(५) १ ए करिहैं भगति।
(६) १ रा ए मोर कुसल मा हम कसर। २ ए पैहैं। ३ ए सुनिहैं।
(७) १ ग मरद दिन्हि ए दिहै मरे। २ ए सुनु।

अर्थ—"(१) वह अब तक उस वचन को अनुभूति करती है और सर्वथ द्वितीया को हमारे घर आती है। (२) एक वर्ष में बारह बार वह भव्य नारी हमारे घर आती है (३) और राजकुमारी मधुमालती सदा माता के संग आती है। (४) हे कुमार, यदि तुम चित्त-विश्राम [नगर] को जाओ तो हमारे घर पर जाकर मेरा नाम लो। (५) [मेरे] भाई बहिन पिता और माता तुम्हारी बड़ी भक्ति करेंगे।

(६) वे [तुमसे] मेरा कुशल-समाचार पायेंगे और तुम्हारा गुण सुनेंगे (७) तो वे मधुमालती को तुम्हें मिला देंगे मेरा यह वचन निश्चित मानो।"

टिप्पणी—(२) बारी < वेला = अवसर। (३) सतत < सतत = निरंतर। (४) बिसराऊ < विश्राम। (६) कुसर < कुशल।

[२५२]

औ जति[1] सखीं सहुलीं भोरीं[2] । सभ चित[3] सुनि लागिहि[4] तोरीं[5] ।
औ जेत[1] कुटुम लोग परिवारा । करिहु सभै तोर[2] उपगारा[3] ।
औ तुम्ह उन्ह सउ[4] पहिलि पिरीती ।[1] प्रथम जो बचा सपत भ[2] बीती ।
जस तोहि बिरह दुक्ख जिय पीरा[1] । ओहि फुनि[2] होइहि दुक्ख सरीरा ।
कान कान कोइ आनि न[1] पाइहि । पम गहन[2] सहजहि[3] मिलि जाइहि ।
तुम्ह उन्ह प्रीति चिरानी[1] इह मोर[2] उपदेस ।
मिलिहि सो[1] पम परानी[2] आहु हमारे देस ॥

पाठान्तर—मा ए में चौथी तथा पाँचवी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए जति। २ ए मोरी। ३ मा चेत ए चिता। ४ मा लगिहहि ए लागिहि। ५ ए मोरी।
(२) १ ए जत। २ मा करइहि सभ मिलि तुम्हं ए करिहौ सबै तोर। ३ ए उपकारा।
(३) १ रा औ उन्ह सा तुम्ह पहिलिउ प्रीती ए औ तो सौं जो पहिली प्रीती। २ ए प्रथमहि बाचा। ३ रा सपत हाइ, ए होइ जो।
(४) १ ग पीरा। २ रा ए पुनि।
(५) १ ए आन। २ मा कही ए गहा। ३ ए सहजे।
(६) १ रा तुम्ह ओहि प्रीति चिन्हारी मा तुम्ह उन्ह प्रीति चिरानी ए तोहि ओहि पेम चिन्हारी। २ मा यह मोर तौ।
(७) १ ए मिलिहै। २ रा पियारी।

अर्थ— (१) और मेरी जितनी सखियाँ-सहेलियाँ हैं सभी [मेरा कुशल और तुम्हारा दुःख] सुनकर तुम्हारी (तुम्हारे दुःख-निवारण की) चिंता में लग जाएंगी (२) और जितने [मेरे] कुटुंबी लोग (स्वजन) तथा परिवार के हैं वे सभी तुम्हारा उपकार करेंगे (३) और जो तुम से और उन (मधुमालती) से पूर्व की प्रीति है और तुम दोनों में जो पहले शपथ और वचन-बद्धता हो चुकी है (४) [उसके परिणाम-स्वरूप] है भाई, जैसा तुम्हारे जी में विरह-दुःख है उसके शरीर में भी तो होगा ही (५) [अतः] एक कान से दूसरे कान कोई जान भी न पाएगा और तुम्हारा गूढ़ प्रम (प्रेमी) सहज ही तुमको मिल जाएगा।

(६) तुम्हारी और उसकी प्रीति प्राचीन है [अतः] मेरा यही उपदेश है (७) कि तुम मेरे देश आओ वह प्रेम-प्राणी मिल जावेगा।"

टिप्पणी—(१) जति < जेत्तिअ < यावत् = जितनी। (३) सपत < शपथ। (६) चिरानी < चिरायण < चिरतन = पुरातन प्राचीन।

[२५३]

पम कथा अंब्रित रस भरा । जबहीं[1] कुंवर के कानन्ह[2] परी ।
ओउ[1] रहउ[2] सुनि प्रीतम[3] बाता । पीत[4] बरन सुनत[5] मा राता[6] ।

मुक्ख मलिन जो मइउ[1] निरासा । सुनतहि[2] कवल भाँति परगासा ।
समुझि समुझि जिय[1] मह[2] रहसाई । रहस गहा[3] जिउ[4] घट न समाई ।
बिरह[1] दुक्ख दुखी[2] जो अहा । प्रीतम नाउ[3] सुनत गहगहा ।
कँवल कुमुद जिमि[1] बिगसहिं[2] रबि ससि क परगास ।
तिमि सुनि अम्रित कथा[1] कुँवर जिय[2] पूरा[3] पेम हुलास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अवरे। २ रा स्रवन।
(२) १ मा. जीय ए जीव। २ ए कहा। ३ रा पेम कै। ४ रा सेत।
५ ए सुनत। ६ रावा।
(३) १ ए मुख मधुमालती है। २ ए सुनते।
(४) १ ए जीव। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ रा रहा जिय।
(५) १ रा बिरह के दुक्ख दुखी ए बिरहे दुख दुखिआ। ३ ए नाव।
(६) १ ए जे। २ रा बिगसैं ए बिगसे।
(७) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए जिउ रा कह। ३ रा पूरेउ।

अर्थ—(१) अमृत-रस से भरी हुई [यह] प्रेम-कथा जब कुमार के कानों में पड़ी (२) [निश्चेतता हुआ] जीव प्रियतम की वार्ता सुनकर रह गया और उसका शरीर उसे सुनते ही पीत वर्ण का हो गया। (३) उसका निराश मुख जो मलिन था सुनते ही कमल की भाँति प्रकाशित हो गया। (४) वह समझ-समझ कर मन में हर्षित होने लगा और हर्ष से आविष्ट उसका जीव घट में नहीं समा रहा था। (५) जो [जीव] विरह-दुःख से दुखी था वह प्रियतम का नाम सुनते ही गह गह (हर्ष से पुरित) हो गया।
(६) जिस प्रकार कमल और कुमुद सूर्य और चंद्र के प्रकाश से विकसित होते हैं (७) उसी प्रकार उस अमृत कथा को सुनकर कुमार के जी में प्रेम का उल्लास पूरित हो गया।

टिप्पणी—(४) रहस < रभस् = हर्ष। (५) गहगह [दे] = हर्ष से भर जाना।

[२५४]

जिय हुलास मन हरख[1] अनंदू । कवल कमुद जिमि[2] निमियर चंदू ।
कहा[1] कुँवर सुनु राजकुमारी । मोहि सों[2] कहिसि कथा[3] में मारी ।
सुबचन दिह मोहि प्रतिपारा[1] । अब मोहि बिग तोर उपगारा[2] ।
में निरास भा बिनु जिय[1] आवा[2] । अमिअ छिरकि तुइ मोहि जिआवा[3] ।
तौ कसें परिहरि म[1] जाऊ । जिउ [illegible] का[2] तोहि छाडि[3] पराऊं ।
जोग कहुब तोर यह[1] आन्न करिहु[2] मार[3] ।
होइहि हम[1] कुल लज्जा कहन मन्मा तार[2] ॥

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त दूसरी तथा तीसरी अर्धालियाँ उपर्युक्त पाँचवी के बाद आती हैं।
(१) १ ए जिय हरखा मन हरस। २ ए मे यह शब्द नहीं है।

(२) १ मा ए कहै। २ मा तोहि सेउं ए. तो सौ। ३ मा बाव (<बाच) ए. बाचा।
(३) १ मा सो बचन दै तै मोहि पतिपारा ए. सुबचन कहि तौ मोहि प्रतिपारा। २ ए किमै तोर उपकारा।
(४) १ मा मैं बरबस बिन जिम मा। २ मा ए. बाबा। ३ ए अमी सींचि मैं तोहि जिआवा।
(५) १ मा तोहि कैसें परिहरि बस (<पुनि फ़ारसी लिपि) ए तोहि कैसे मैं परिहरि। २. ए. जीव लेइ। ३ ए छोहि।
(६) १ मा देखिहहि, ए तोहार सुनि। २ मा करिहहि। ३ रा तोर।
(७) १ ए मम। २ रा मोर।

अर्थ—(१) [उसके] जी में उल्लास और मन में हर्षातिरेक उसी प्रकार हो गया जिस प्रकार कमल और कुमुद को दिनकर तथा चंद्रमा से होता है। (२) कुमार ने कहा "ऐ राजकुमारी सुन; तुमसे मैंने [अब] अहित [के संबंध] की बचनबद्धता की। (३) तूने मुझे शुभ वचन देकर [उसका] प्रतिपालन किया, इसलिए अब मुझे तेरा उपकार करना ही [उचित] होगा। (४) मैं निराश हो चुका था, और मेरा भाव (अस्तित्व) बिना जीव का था किंतु तूने अमृत छिड़क कर मुझे जीवित किया (५) तो कैसे मैं तुझे छोड़कर जाऊँ? तुझे छोड़ कर और अपने जीव (प्राणों) को लेकर मैं क्या जाऊँ?

(६) [अब तेरे घर पर मेरे पहुँचने पर] तेरे परिजन और कुटुंबी दौड़ पड़ेंगे और मेरा आदर करेंगे (७) तब तेरा संदेश कहते समय मेरे कुल को लज्जा होगी।"

टिप्पणी—(१) हुलास<उल्लास। दिनयर<दिनकर=सूर्य। (४) अमिय<अमृत। (५) पराय<पलाय्=भाग जाना।

[२५५]

कुँवर बचन सुनत गहमरी[१]। मन कवल भाए जस भरी[२]।
रोम रोस पुहुमि[१] न भाव। जिउ दुख लीन्ह[२] मरन प भाव[३]।
निससत कहिसि ऊभि न सांसा। छाड़हु कुँवर मारि तुम[१] आसा।
मोहि लागि जनि[१] मासु अपाना। जो सिर देहुं सोइ थरु[२] पाना।
जा मुख दिएउ मो आगें लेहू।[१] जनि मोहि लागि अबिर[१] जिउ दहू।
मोहि[१] जियन जिय[२] अपनें[३] मुकुति न सूझहि[४] भाउ।
तैं जनि अबिरथा[१] मोहि[२] लगि कवर अपान गमाउ[३]॥

पाठान्तर—(१) १ रा कुवर बचन सुनत गहभरी का सुनतहि बचन कुपर गहबरी ए कुवर बचन सुनत गहबरी। २ ए गहबरी (तुम० पूर्ववर्ती चरण का तुक)।
(२) १ ए पुहमि। २ मा लिए, ए लाव। ३ ए. न भाइ पावै।
(३) १ ए निसवन कहो ऊभि कै। २ मा तुम्ह, ए जो।
(४) १ ए जै। २ भा अपानां। ३ ए जो सिर होउ सो धर दै।
(५) १ मा दैनि मुख भैय्या कै लेह ए जौ मीरे मुख औ आगे लेहू। २ ए जैं। ३ रा अबिरथ का बिरथा ए मे मह शब्द नहीं है।

(६) १ मा म यहाँ 'एक' और है। २ ए जीवत जी। ३ मा आपन ए अपने। ४ ए समुझी।

(७) १ मा बिरथाँ ए मिथ्या। २ ए माहि। ३ रा. म भापु।

अर्थ—(१) कुमार के वचनों को सुनते ही पेमा हर्ष से भर गई और उसके नेत्र-कमलों में जल [बिंदु] भर आए। (२) वह रोने और सिर को पृथ्वी से लगाने लगी उसके जी ने ऐसा दुःख लिया (किया) कि उसे मरना ही भाने लगा। (३) उसने निःश्वास छोड़ते हुए उठकर और साँस लेकर कहा "हे कुमार, तुम मेरी आशा छोड़ो। (४) मेरे लिए तुम अपने को नष्ट न करो और जो शिक्षा दे रही हूँ उसी को सुनो। (५) जो सुख तुमने किया वह आगे लो; मेरे लिए व्यर्थ ही तुम जीव (प्राणों को) न दो।

(६) मुझे अपने जीते-जी कभी भी मुक्ति नहीं सूझ (जान पड़) रही है। (७) हे कुमार तुम मेरे लिए व्यर्थ ही अपने को नष्ट न करो।"

टिप्पणी—(२) पुहुमि < पृथ्वी। भाव < भाम् (?) = पसंद होना उचित जान पड़ना। (३) ऊभि < ऊर्ध्वित। (४) (७) अपान < अप्पाण < आत्मन्। (४) सिख < सिक्ख < शिक्षा। (५) (७) अबिरथ < अविरथा < वृथा। (६) कउ < कदापि।

[२५६]

मोरी[1] चित कुंवर जनि[2] लागहु । आपन पहर[3] आइ तुम्ह[4] जागहु ।
मैं तौं अहिउ[1] मुई मोर ताएं[2] । तुइ[3] जनि मरसि[4] कुंवर मोहि लाए[5] ।
तहि[1] राकस बस परी हौं[2] आरा[3] । बिनु हरि मुकुति[4] दइ को पारा ।
जौं मैं सहस कोस चलि जावौं[1] । औ धरती[2] मह पठि छिपावौं[3] ।
पलक[1] परत मोहि[2] ऊपर आव । मोर तोर[3] जग सउं[4] भाउ ममाव[5] ।
एक आपने[1] दुख[2] दुखिया अहा[3] सन्त जिउ[4] मोर ।
दूजें आइ क[1] दुख पर दुख भा[2] सुनत[3] कुंवर दुख तोर ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मारी ए मोरे। २ ए जैं। ३ ए पहरा। ४ मा ए तुम।

(२) १ ए आहि। २ ए ठाइ। ३ ए तैं। ४ ए मरहि। ५ रा एहि ठाएं, ए मोरि ताईं।

(३) १ ए तोहि। २ ए राकस मों बारी। ३ रा मारा। ४ ए मुकुती।

(४) १ ए जाऊं। २ मा धरती। ३ ए पैसि समाऊं।

(५) १ ए पलक। २ ए. माहि। ३ ए मोरि तोरि। ४ रा मा ए सैं। ५ मा. आइ उठावै ए न उठावै।

(६) १ मा आपुहि। २ ए पर। ३ मा. अहेउ ए अहै। ४ ए जिम।

(७) १ मा ए मे 'आइके' शब्द नहीं है। २ ए परा। ३ रा. म यह शब्द नहीं है। ४ मा कुवर दुख तोर, ए सदेसा तार।

अर्थ—(१) "हे कुमार" प्रेमा ने कहा "मेरी चिंता में तुम न लगो तुम जाकर अपना पहरा जागो (अपना काम पूरा करो)। (२) मैं तो अपने तक (मेरे शील से) मरी हूँ अब तुम भी ऐ कुमार, मेरे कारण न मरो। (३) इसी (मरने के) लिए तो यह (यह) बाला राक्षस के वश पड़ी अतः हरि के बिना उसको कौन मुक्ति दे सकता है ? (४) यदि मैं सहस्र कोस तक चली जाऊँ और धरती में प्रविष्ट होकर छिप [भी] जाऊँ; (५) [तो भी] पलक गिरते [मात्र] में वह मेरे ऊपर आ जाएगा और मेरा और तुम्हारा नाम जगत् से मिटा देगा।

(६) एक तो अपने ही दुःख से मेरा जी सर्वथा दुखी था (७) दूसरे उस दुःख पर आकर और भी दुःख हो गया जब से हे कुमार, मैंने तुम्हारा दुःख सुना है।

टिप्पणी—(१) पहर < प्रहर। (३) बारा < बाला।

[२५७]

रहसि[१] कुँवर तब[२] बचन अमोला[३]। सुनहु जो[४] बरकामिनि सेउ[५] बोला[६]।
जौ अ पत्र दइ[१] निधि मोहीं[२]। राकस मारि आउ ल तोहीं[३]।
जीय[१] भरम जनि मानहु बारी[३]। म रघुबसि[४] राकस सघारी[५]।
गाइ त्रिया जौ करौ न[१] गोहारी। पमा कुल लाजै[२] महतारी।
तोहि परिहरि जौ[१] जाउ पराई। कुल लज्या[१] जम[२] धोइ न जाई।
तोहि छाड़ि जौ भाजौं[१] पमा राकस केरी[२] सक।
जग जीवन अपकीरति कुल प[१] चढ़ कलक॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त तीसरी अर्द्धाली का दूसरा तथा चौथी का पहला चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा नहीं। २ मा ए तब। ३ मा ए अमोलै। ४ ए पै। ५. रा मा ता ए मीठ। ६ मा ए बोले।
(२) १ ए देत। २ ए मोहीं। ३ ए तोहीं।
(३) १ रा ए जीउ। २ ए भै। ३ मा रा बारा। ४ ए रघुबसी ५ मा. रा सघारा ए सैंघारी।
(४) १ रा जा कर न ए मैं करबि। २ ए लाजी।
(५) १ मा हर। २ मा कारित। ३ रा हम ए मम।
(६) १ रा भागौं। २ ए महि राकस की मा 'राकस' गाय।
(७) १ मा कुल पुनि ए कुर्ला जी।

अर्थ—(१) कुमार ने हर्षित होकर तब जो अमूल्य वचन उस श्रेष्ठ कामिनी से कहा उसे सुनो। (२) [उसने कहा] "यदि विधाता मुझे जय-पत्र दे तो राक्षस को मार कर मैं तुझे ले आऊँ। (३) ऐ बालिका तू अपने जी में भ्रम (भय) न माने मैं रघुवंशी और राक्षसों का संहार करने वाला हूँ। (४) गाय और स्त्री की गोहार (रक्षा) यदि मैं न करूँ तो हे प्रेमा मेरी माता का कुल लज्जित होगा। (५) यदि तुझे छोड़कर मैं भाग जाऊँ, तो कुल की लज्जा जन्म भर में भी न धोई जाएगी।

(६) यदि राक्षस की शंका से मैं तुझे छोड़कर भाग जाऊँ, (७) तो जगत् में अपकीर्ति का जीवन [होगा], और [मेरे] कुल पर अवश्य ही कलंक चढ़ेगा।"

टिप्पणी—(१) बारी < बालिका। (५) पराय < पलाय् = भाग जाना।

[२५८]

राकस डर का मोहि डरावसि[1]। अगिनि भरम का छार उड़ावसि[2]।
राकस कर पार का मोरा। सहज कीट मर[1] दखि अजोरा।
राकस प्रान दखु कस हरऊ। एक निमिख महँ कस संघरऊ[1]।
खरग पानि सुउ[1] आगि[2] उठावौं। राकस धूरि बतास[3] उड़ावौं।
आइ बने खत्री[1] जो भाजइ[2]। कुल कलंक चढ़[3] जननी लाजइ[4]।
सत छाड़ें सुनु[1] धर्मा यहि कलि अमर[2] न कोइ।
तोहि छाड़ि जो भाजौं[1] कुल[2] लज्या हम[3] होइ॥

पाठान्तर—ए. में उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ भा सुनावसि ए डेरावहु। २ भा अगिनि। ३ भा. डरावसि ए उड़ावहु।
(२) १ भा मरु ए मर।
(३) १ भा का निघु करऊं।
(४) १ रा. धार सौं ए पानि सौं। २ रा अगिनि। ३ रा स्पष्ट नहीं है।
(५) १ रा ए छत्री। २ ए भाजौं। ३ ए हा। ४ ए लाजौं।
(६) १ ए छाँड सुन। २ ए अँवर।
(७) १ रा. भा जूझौं नवन। २ भा ए में यह शब्द नहीं है। ३ भा लाज मोर, ए लज्या मम।

अर्थ—"(१) तू राक्षस के डर से मुझे क्या डराती है? तू अग्नि के भ्रम से [यह] क्षार (राख) क्या उड़ा रही है? (२) राक्षस मेरा क्या कर सकता है? वह तो सहज कीड़ा है, जो उजाला देख कर मर मिटता है। (३) तू देख कि राक्षस का प्राण मैं किस प्रकार हर लेता हूँ और एक पल में किस प्रकार उसका संहार करता हूँ। (४) मैं खड्ग के पानी (धार) से आग उठाता हूँ राक्षस को तो धूम और वायु से ही उड़ाता (उड़ा सकता) हूँ। (५) [अवसर] आ बनने पर यदि क्षत्रिय भागता है तो [उसके] कुल को कलंक चढ़ता है और वह [अपनी] जननी को लज्जित करता है।

(६) सत्य को छोड़ कर हे प्रेमा इस कलि में अमर कोई (कुछ) नहीं है (७) तुझे छोड़कर यदि मैं भागता हूँ तो मेरे कुल को लज्जा होनी है।"

टिप्पणी—(१) छार < क्षार = राख। (५) खत्री < क्षत्रिय।

[२५९]

तुइ[1] जौ लेहि[2] मधुमालति नाऊं । तोहि[3] परिहरि कसें फनि[4] जाऊं ।
मधुमालति कर[1] पेम सभारी । का[2] किछु[3] करौं देखु वर नारी ।
बर कामिनि पीतम[1] बौसाऊ । सो किछु करौं जो कीन्ह[2] न काऊ ।
एक घाय[1] धरि[2] मेरवौं[3] माटी । टूक टूक कै डारौं काटी ।
रुहिर देखु कसि नदी बहावौं ।[1] मांसु गिद्ध जंबुक अघवावौं[2] ।
जौ मोहि[1] राकस सेतें[2] बिधि[3] भै दइ अघाउ ।
नत[1] मधुमालति नाउं लै[2] यह जिउ रहै कि[3] जाउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तै। २ भा लेउ ए लिय। ३ ए तोहि। ४ ए कैसे बन रा भा कैसें पुनि।
(२) १ ए का। २ रा कस। ३ ए कछ।
(३) १ भा पिरीति ए प्रीतम। २ भा कबै जो काहु किएउ ए करौं सो जो किया।
(४) १ रा घाव ए दाँव। २ ए पै। ३ ए मेरवौं।
(५) १ ए मं चरण का पाठ है माटी रुहिर दगु पै मेरावौं। २ ए जंबुक (हि) जिआवौं।
(६) १ भा ए बिधि। २ ए सती। ३ भा ए मोहि।
(७) १ रा जौ ए नाती। २ भा नाउं लगि ए नाव लगि। ३ भा गए उठ।

अर्थ—"(१) तू जो मधुमालती का नाम लेती है तो फिर मैं कैसे तुझे छोड़ कर जाऊँ? (२) मधुमालती के प्रेम को स्मरण कर मैं क्या-कुछ करता हूँ उसे ऐ श्रेष्ठ नारी तू देख। (३) ऐ श्रेष्ठ कामिनी [अपने] प्रियतम के बल पर वह-कुछ करूँगा जो कभी नहीं किया है। (४) [देख कि] एक आघात में मैं उसे मिट्टी में मिला देता हूँ और उसे काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देता हूँ। (५) देख कि कैसी रुधिर की नदी बहाता हूँ और [उसके] मांस से गीधों और स्यारों को तृप्त कराता हूँ।

(६) यदि मुझे राक्षस से (डर) विधाता भय देता है तो अघाया [होगा]; (७) नहीं तो मधुमालती का नाम लेकर यह जीव चाहे रहे चाहे जावे।"

टिप्पणी—(३) पीतम < प्रियतम। बौसाउ < व्यवसाय। (३) काउ < कदापि। (४) घाय < घात। (५) रुहिर < रुधिर।

[२६०]

औ र कुंवर बड़ बोल[1] सुनावा । कहा जिय[2] सुनि धीरज पावा ।
रस बातनि[1] गए[2] दुखौ भुलाई । गरग कर नियरि भै[3] आई ।

पेमाँ कहइ सुनु[1] राज कुमारा[2] । सजग होहु भइ[3] रामस बारा ।
सुनतहि[1] चकित भा[2] चित[3] माहाँ । अत्र[4] माहिं रिपु मारव[5] काहाँ ।
पम कहा न भग्महु राऊ । मत्र दव म कर मौमाऊ ।
सुमत माउ अत्र[1] कर[2] कुँवरि सउ[3] कुँवर भएउ हरखत[4] ।
पूँछेसि[1] अत्र[2] कहाँ तुम्ह[3] पाए[4] सो मो सउ[5] कहु[6] अंत[7] ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवी अर्धालियाँ रा में परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए कर बोलि । २ रा ए चित भा चिंत।
(२) १ मा बानन्हि, ए बानन्ह् । २ ए भो। ३ मा भएउ ए भा।
(३) १ ए पर्म कहा सुन। २ मा कुमारा। ३ ए भा।
(४) १ ए सुनते। २ मा चकित भएउ। ३ ए जिम। ४ ए अंज। ५ मा ए जीतब।
(६) १ ए अंत नाम। २ रा ए मे यह शब्द नहीं है। ३ मा में ये दो शब्द नहीं हैं ए में ये दो शब्द 'कुँवर' के बाद आते हैं। ४ मा उपर्युक्त रा का पाठ स्पष्ट नहीं है।
(७) १ रा पूछै। २ ए अंत्र। ३ ए तैं। ४ मा पाउब। ५ रा मो मो मों कहु मा मा माहि कहु निज ए माहि कहु निज। ६ ए मंत।

अर्थ—(१) जब कुमार ने [इस प्रकार] कहा (साहसपूर्ण) वचन सुनाया, प्रेमा ने भी ने उसे सुनकर धैर्य प्राप्त किया। (२) दोनों रस की वार्ता में भूल गए और राक्षस [के आने] की वेला निकट आ गई। (३) पेमा ने कहा हे राजकुमार सुनो तुम (अब) सजग हो जाओ [क्योंकि] राक्षस (के आने) की वेला हो गई है। (४) [यह] सुनते ही [कुमार] चित्त में चकरा गया, [और उसने कहा] "अस्त्र है नहीं शत्रु को किससे मारूँगा?" (५) पेमा ने कहा "हे राजा (राजकुमार) तुम चकराओ मत; अस्त्र मैं दूँगी तुम पुरुषार्थ करो।"

(६) कुमारी से अस्त्र का नाम (शब्द) सुनकर कुमार हर्षित हो गया (७) और उसने पूछा, 'तुमने अस्त्र कहाँ पाए? वह अंत (वृत्तान्त) तुम मुझसे कहो।"

टिप्पणी—(२) बर < बेला। (३) बार < बेला। (४) अत्र < अस्त्र।

[२६१]

अत्र क[1] बात कहौं प तोही[2] । जो तुम्ह[3] निजु पूछा[4] ह मोही ।
जग मानुस हत[1] राकम गाए । तिन्ह क[2] अत्र पर म[3] पाए ।
अब कुँवर[1] आगें सब आन[2] । लीन्ह[3] जो रिउ कवरहि[4] मन मान ।
गाढ भल्ल औ कंत कटारी ।[1] कुँवर[2] लीन्ह[3] सब अत्र[4] समारा ।
सिभरम जीउ बिरह[1] कर[2] भूता । तहि पर[3] गाग्य भम अवपूता ।
काम रूप अस दोनहि[1] बिरह भभूति कमार[2] ।
राकम बपुरा कहि[1] मर[2] सा नौ[3] त्रिभवन मारि[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मंत्र की। २ ए तोही। ३ रा तुम ए तैं। ४ ए पूछेहि। ५ ए मे यह शब्द नहीं है।
(२) १ ए जते मानुष येह। २ ए ताके। ३ ए मह।
(३) १ ए मन कुँवरि। २ रा के आगें आने। ३ मा लिए ए लेहु। ४ ए कुँअर जो कछु। ५ रा माए।
(४) १ मा ए एहि अंतर लागी मैं (जो मौ भुइ—ए) भारी। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ मा केत। ४ ए जो भव।
(५) १ मा निभरम होइ पिरम ए निर्भम बीज मर्म। २ ए का। ३ ए तापर।
(६) १ ए भै देखि। २ मा बहुत कुँवार, ए बिभूत कुमार।
(७) १ मा यह बैराम। २ ए मो। ३ मा त। ४ ए मार।

अर्थ— (१) मन्त्र की बात मैं तुमसे कहती हूँ जो तुमने मुझसे आवश्यक रूप से पूछी है। (२) जितने मनुष्य इस राक्षस ने खाए, उनके अस्त्र पड़े हुए मैंने पाए।" (३) [यह कहकर] उसने वे समस्त अस्त्र कुमार के सामने प्रस्तुत किए, और कुमार ने उनमें से जो-कुछ को चाहे ले लिए। (४) कुमार ने खड्ग भाले बर्छे और कटार [आदि] समस्त अस्त्रों को सँभाल लिया। (५) उस विरह के मूल का बीज निर्भम (निर्मम) था हो तिस पर भी अवधूत गोरख का वेष [उसने धर रक्खा था]।

(६) विरह की विभूति में (लपटाए हुए) कुमार काल-जैसा दिखाई पड़ता था; (७) राक्षस बेचारा [भला] किस [गिनती] में था? तब (इस समय) वह त्रिभुवन को मार सकता था।

टिप्पणी—(१) मंत्र<मन्त्र। (२) जेत<जेत्तिय<यावत्=जितना। (४) खांडा<खड्ग। भल<भल्ल=भाला। (६) भभूति<विभूति=राख। (७) बपुरा<बप्पुड [दे]=बेचारा अनुकंपनीय।

[२६२]

बहुरि कुअर बहु दिसि जो[१] देखा। पच्छ[२] दखिन दिसि राकस[३] रेखा[३]।
सरग धरति बिच माउ[१] उड़ाना। आइ मंदिल ऊपर[२] ठहराना[३]।
रूप भयानक[१] बिपरित भाऊ। सरग माँथ[२] धरती दुइ पाऊ।
सावन घटा भोन जस[१] आवा। तस राकस मूरति दरसावा[२]।
पाँच माँथ दस भुज[१] बर भारे[२]। दसौ मम धमकहिं[३] जनु तारे।
दसन पाँति जनु कोहड़ा[१] जारि धरा[२] बगाइ।
बिरसुम[१] बरन[२] भयावन दसत जीउ[३] डेराइ॥

पाठान्तर—(१) १ मा फिरि चहुँ दिसि ए चहुँ दिस जो। २ ए देखा दखिन दिस। ३ मा पसा।
(२) १ ए भाव। २ मा. रा मंदिर। ३ ए महराना (<ठहराना फारसी लिपि)।

(३) १ मा भयावन रूप बहु ए भयावन बिम्रित। २ रा भीम।
(४) १ ए बर्नी जनु। २ ए दलावा।
(५) १ ए भुज। २ रा ए बरियारे। ३ ए चमकै।
(६) १ मा जस कम्हुड़। २ मा घर।
(७) १ ए करिया। २ मा मे यहाँ 'अति' और है। ३ ए जीव।

अर्थ—(१) फिर जो कुमार ने दसों दिशाओं में [घूम कर] देखा, तो उसने दक्षिण दिशा में राक्षस को देखा देखी। (२) वह स्वर्ग (आकाश) और धरती के बीच में उड़ता आ रहा था और वह आकर उस मंदिर (भवन) के ऊपर ठहर गया। (३) उसका रूप भयानक था और उसका भाव (आकार-प्रकार) [मनुष्य से] विपरीत था आकाश में उसके मस्तक थे और धरती पर उसके दोनों पैर थे। (४) यावत जो घटा जिस प्रकार उमगित हो आई हो उसी प्रकार राक्षस ने अपनी मूर्ति दिखाई। (५) उसके दोष मस्तक थे दस बलशाली भुजाएँ थीं और उसके दाँतों मेघ एसे थे जसे तारे चमकते हों।

(६) उसको दन्त-पंक्ति एसी थी मानो [सफेद] कुम्हड़े के फल जोड़-बिठा कर रख गए हों। (७) वह कृष्ण-वर्ण का और भयावना था और उसको देखते ही जी डर जाता था।

टिप्पणी—(२) सरग < स्वर्ग = आकाश। (५) भुज < भुज। (७) किरमुन < कृष्ण। बरन < वर्ण।

[२६३]

दगि कुअर कहँ आगें[1] लरा। कोहु भगिनि[2] मिर पालहि[3] जरा।
कहसि कौन तुमि[1] का तोर नाऊ। काल गहा आएसि एहि[2] ठाऊँ।
मीचु[1] आइ आनहु सिर चढ़ी। तहि[2] अभाग आएसि एहि[3] मढ़ी।
न तें जिय[1] अपन पर रूसा। क र काल आइ[2] तो[3] घर मूँसा।
क र अत अनुपुरी[1] तारि आऊ। जम क मुह आएसु तैं पाऊ[2]।
त मानुस भस मोरा ल आएउ[1] करतार।
तोरि मीचु[1] नियरानी पूजउ[2] मोर अहार॥

पाठान्तर—मा मे यह छंद समस्त के बाद आता है और उस म उपयुक्त अर्धालियाँ ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित है।
(१) १ ए कुमर के आगम। २ ए अग्नि। ३ ए पीव मे।
(२) १ ए है। २ ए आयहु हम।
(३) १ ए मीच। २ ए तेहि। ३ ए आयेहु हम।
(४) १ ए जीउ। २ रा आ (< आइ)। ३ ए मे यह शब्द नहीं है।
(५) १ ए आउ। २ रा मुह आएसु तै पाऊ ए मुख मीं आयेस पाऊ मा. मुह आएसु मह आऊ।
(६) १ ए आवा।
(७) १ ए मीच ए आउ मा आइ। २ मा ए पूजा।

अर्थ—(१) [वह राक्षस] कुमार को [अपने] आगे खड़ा देखकर क्रोधाग्नि से सिर से पाँव तक जल उठा। (२) उसने कहा "तू कौन है और तेरा नाम क्या है तू काल के द्वारा पकड़ा जाकर इस स्थान पर आया है। (३) मृत्यु मानो आकर तेरे सिर पर चढ़ बैठी है यह तेरा अभाग्य है कि तू इस मढ़ी में आया है। (४) अथवा तू अपने जीव (प्राणों) पर रूठा हुआ है, अथवा काल ने आकर तेरे घर को मूस लिया है (तेरे घर की चोरी की है) ? (५) अथवा अंतिम रूप से तेरी आयु अपूर्ण हो गई है और तू यम (काल) के मुख से आवेश पा रहा है ?

(६) तू, ए मनुष्य मेरा भक्ष्य है और तुझे कर्तार [यहाँ] लाया है; (७) तेरी मृत्यु निकट आ गई है और [तेरे आने से] मेरे आहार की पूर्ति हो गई है।"

टिप्पणी—(३) मीचु < मृत्यु। (४) रूसा < रुष्ट। मूस < मुष् = चोरी करना। (६) भख < भक्ष्य। (७) अहार < आहार।

[२६४]

पमा मदिर[1] डंडवत परी । दुइ[2] कर जोरि मनाव हरी ।
सीस पुहुमि धरि[1] बिनव बाला । कुंवरहि सुइ[2] अ दहि[3] दयाला ।
तु[1] तिरभुवन कर सुख[2] दाता । कहि जाचौं तोहि छाड़ि[3] बिधाता ।
आस मोरि जनि ससि[1] अंजोरी । कुंवरहि सरन बिधाता तोरी ।
साहस बिरित[1] अहु[2] मोरि ताईं[3] । सिधि अब तोरें दिए गोसाईं[5] ।
मोंख मुकुति तुहि[1] दाता तुही निरासन्ह आस[2] ।
सबहि सिरिस्टि[1] तोहि जाच[2] महि पताल आगास[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मंदिर। २ मा ए दुई।
(२) १ मा ए पै। २ ए दै। ३ ए देहि।
(३) १ ए मे यह पंक्ति नहीं है। २ मा कर सुख दुख ए केर दुख सुख। ३ ए छाड़ि।
(४) १ ए आवति मारी सीम्ह।
(५) १ ए बरति। २ ए है। ३ ए ताई। ४ ए बिधि तो गहैं मैं देइ। ५ ए धरि माइ।
(६) १ ए मैं। २ मा तुही निरासन आस ए तू निरासन्ह की आस रा तुही आस निरास।
(७) १ मा सब सिरिष्ट ए सबै सिरिट। २ ए ताहि जोरे। ३ ए महि पाताल अकास।

अर्थ—(१) प्रेमा उस मंदिर (मढ़ी) में दंडवत पड़कर और दोनों हाथ जोड़कर हरि को मनाने लगी। (२) वह बाला सिर पृथ्वी पर रखकर विनती करने लगी "हे दयालु तू कुमार को जय दे। (३) तू त्रिभुवन को सुख देने वाला है [अतः] हे विधाता तुझे छोड़कर किससे याचना करूँ। (४) तू मेरी आशा अब अंजली में कर के दीन न ले; कुमार को, हे विधाता तेरा ही शरण

है। (५) साहस और दृढ़ (करतब) ही मेरे तक (मुझसे संभव) हैं सिद्धि अब हे स्वामी तेरे देने से [होगी]।

(६) तूही मोक्ष और मुक्ति का दाता है और तूही निराशों की आशा है। (७) समस्त सृष्टि —मही पाताल और आकाश—तुझसे याचना करती है।"

टिप्पणी—(२) पुहुमि < पृथ्वी। (६) मोंख < मोक्ष।

[२६५]

सुनत कुंवर राकस कै[1] बाता । रिस न्ह भएउ सिर पा लहि ताता[2] ।
कहसि छाड़ि[1] राकस अकनाई । मकर[2] भएउ[3] काल तोर आई ।
ताहि मारि पमहि[1] लै जाऊ । तौ रघुबंसि कहाऊ नाऊ[2] ।
औ[1] सजग मइ अब मनुसाई । कया गरब जनि जासि[2] भुलाई ।
दसौ भुजा पचारि उपारौं । पाँचौं[1] माँथ काटि भुइ डारौं[2] ।
अगिनि[1] चिनगि म रघुबंसी तूं[2] जस रूइ[3] पहार ।
निमिख[1] माँह परजारौं दहिन चाहिय[1] करतार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए की। २ ए भरा। ३ ए पाँव ते माथा।
(२) १ ए छोड़। २ ए मंगत (< मकर फारसी लिपि) भा।
(३) १ ए ताहि मारि पेमहि। २ मा रघुबंसि कुमाऊ नाऊं, ए रघुबंसी नाउ कहाऊ।
(४) १ मा अबिंब ए अबौं। २ ए काया गरब न जाहु।
(५) १ ए पाँचौं। २ ए पारौं।
(६) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ मा ए तैं। ३ ए रूईर।
(७) १ ए म यहाँ 'अगिनि' और है। २ मा दहिन गोइ ए दाहिन चही।

अर्थ—(१) राक्षस की बात सुनते ही कुमार रोष के कारण सिर से पाँव तक तप्त हो गया। (२) उसने कहा "ऐ राक्षस बकवास करना छोड़ तुझे तेरा काल आकर संकट हुआ है। (३) मैं तुझे मार कर प्रेमा को ले जाऊँ, तो मैं रघुवंशी नाम से कहलाऊँ। (४) और अब [मेरी] मनुष्यता सजग हुई है (पुरुषार्थ सजग हुआ है) अपने [बड़े] शरीर के गर्व से तू न भूल। (५) मैं तेरी दसों भुजाएँ पचार (ललकार) कर उखाड़ फेंकूँगा और तेरे पाँचों मस्तक काटकर भूमिपर डाल दूँगा।

(६) मैं रघुवंशी अग्नि की चिनगारी हूँ और तू जैसे रुई का पहाड़ है (७) मैं तुझे एक पल में जला डालूँगा, केवल कर्तार अनुकूल चाहिए।"

टिप्पणी—(१) ताता < तप्त। (५) उपार < उत्पाट < उत् + पाट् = उखाड़ना।

[२६६]

सुनत कुंवर कर बिस[1] बतो । रिसन्ह[1] भए[2] राउ[3] दस्रु[4] नतो ।
गगन गवन परतेहि[1] रिसियाना[1] । गरजा जिमि अंबर[1] घहराना ।

झपटि कहेसि जियतहि[१] धरि फारौं[२]। टूक टूक कै दहु दिसि[३] डारौं।
झपटत कुँवर सरग गौ[१] छूटी। एक मांथ बिबि भुज[२] गए[३] टूटी।
निठुरि मांथ भुज[१] लिहसि[२] उचाई[३]। कूक[४] मारि औ गएउ[५] पराई।
निमिख माह फिरि[१] आवा[२] भुज औ[३] मांथ लगाइ[४]।
बहुरि कुवर सउ[१] जूझ कहं[२] ठाढ़ भएउ[३] समुहाइ[४] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा राकस सुनत कुँवर के ए सुना कुंवर तनी बिस। २ रा रिसन। ३ रा मएउ ए भी। ४ रा स्पष्ट नहीं है। ५ ए दौउ।
(२) १ रा सुनत सरवन ए सबन सुनत। २ ए रिसाना। ३ ए अंमर।
(३) १ मा ए झपटा कहेसि जियन। २ ए धै मारौं। ३ ए दह दिस।
(४) १ रा सरग भै ए मूठि गौ। २ रा बिबि कर, ए बीस भुज। ३ ए गौ।
(५) १ मा धुमि रा मन (<धुनि?)। २ ए लीन्ह। ३ मा उंचाई। ४ ए हुंक। ५ ए जो गौ।
(६) १ ए निमिख माझ भी। २ मा आएउ। ३ रा ए भुज औ मा भुजबर। ४ ए बसाइ।
(७) १ रा सौं ए सै। २ ए जूझि कर। ३ ए भौ उठी। ४ मा बहुराइ, ए फहराइ।

अर्थ—(१) कुमार के विष-वचनों को सुनते ही [राक्षस के] दसों नेत्र रोष से लाल हो गए। (२) श्रवणों में [उन] वचनों के पड़ते ही वह रुष्ट हुआ और इस प्रकार गरज उठा जैसे आकाश घहराया हो। (३) झपट कर उसने कहा, "मैं तुझे जीता ही पकड़कर फाड़ डालूँगा और टुकड़े कर दसो दिशाओं में डाल दूँगा।" (४) उसके झपटते ही कुमार का खड्ग भी छूट पड़ा, [जिसके परिणाम-स्वरूप उसके] एक मस्तक तथा दो बाहु टूट गए। (५) [राक्षस ने] मुड़ कर मस्तक और भुजाओं को उठा लिया और किलकारी मारकर भाग गया।
(६) पल भर में वह मस्तक तथा भुजाओं को लगाकर फिर (लौट) आया (७) और कुमार से युद्ध करने के लिए पुनः उसके सम्मुख आकर खड़ा हुआ।

टिप्पणी—(१) बैन<वयन<वचन। रात<रक्त=लाल। (२) सवन<श्रवण=कान। (३) दह<दश। (४) भुज<भुज। (५) निठुर<निठुर [दे]=भुकना।

[२६७]

राकस बर सुनतहि[१] ससारा[२]। कुँवर सजग होइ धनुक समारा[३]।
बहुरि कुँवर जौ[१] निरखि निहारा। पांचो मांथ दसो भुज[२] मारा।
धनुक बान दनि नियर न आव। दूरि भए[१] माया दरसाव[२]।
माया[१] रूप धरि[२] राकस बाढ़ा। कहसि जियत धरि[३] निगरौं[४] ठाढ़ा।
मुह पसारि भयावन होइ धावा[१]। कुँवर फोंक सर धरि[२] छटपावा[३]।

जौ लहि आइ सो पहुंच बाम हिए[६] गौ लागि ।
लगतहिं गुपुत[१] रूप ध[२] कूक मारि कै भाग[३] ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्धालियाँ १ २ ३ ४ ५ रा में क्रमशः यथा अर्धालियाँ ५, १ २ ३ ४ हैं।

मा में उपर्युक्त तृतीय अर्धाली के दोनों चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए राकस केर सुना। २ ए संभाला। ३ ए मैं धनुस सँभाला।

(२) १ ए, म यह शब्द नहीं है। २ ए भुज।

(३) १ ए दुइ भये। २ मा डरवावै।

(४) १ मा भया। २ ए हे। ३ मा तोहि ए जो। ४ ए निगलै।

(५) १ ए मैं धाऊ। २ मा वै ए बै। ३ ए मिछुटाऊ।

(६) १ मा ए जौ महि (जौं लगि—ए) आइ पहुचैं। २ मा हिएं।

(७) १ ए लागत गुप्त। २ मा धरि, ए धरि। ३ ए कुकुमारि मा मागि।

अर्थ—(१) राक्षस का संसार (मत-जीवन) सुनते ही कुमार ने सजग होकर धनुष सँभाला। (२) पुनः जो कुमार ने ध्यान से देखा तो [राक्षस पाँचों मस्तक और दसो भुजाएँ लगाए हुए था। (३) वह दूर रहकर ही माया दिखा रहा था धनुष-बाण देखकर [कुमार के] निकट नहीं आ रहा था। (४) माया-रूप धारण कर राक्षस [आकार में] बढ़ा और उसने कहा "मैं तुम्हें जीता पकड़ कर तथा निगल जाऊँगा।" (५) मुँह फैलाकर और भयावना होकर वह दौड़ा तो कुमार ने कोक (बिना फल का) बाण [धनुष पर] रखकर छोड़ (चला) दिया।

(६) जब तक [राक्षस] आकर [कुमार के निकट] पहुँचता बाण उसके हृदय में लग गया (७) [किंतु बाण के] लगते ही गुप्त रूप धारण कर वह किलकारें मारकर भाग गया।

टिप्पणी—(२) भुज<भुज। (३) नियर<निकट। (५) कोक<फुक्का [दे]= मिथ्या।

[२६८]

एहि बिधि रैनि[१] गा रमि[२] सुलानी । कुँवरहि[३] अ महि[४] राकस हानी ।
भुग निसाचर तस[१] अकुलाना । कहसि मोहि तोहि जूझ[२] बिहाना ।
रैनि निसाचर गएउ पराई[१] । पमा बहुरि कुँवर पहँ[२] आई ।
कहसि कुँवर म कहतु[१] बिचारी । अब सुनु जेहि राकस आइ मारी[२] ।
मैं तुम्ह सेउं[१] तब कहै[२] म पाए[३] । जानों राकस मारु उपाए[४] ।
तीसि लोक जो लाग[१] मारि सकै[२] महि कोइ ।
मरम दूब जो काढ़ै पुनि सजीवं सो[१] होइ ॥[५]

पाठान्तर—(१) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ मा मद। ३ रा मे यह शब्द नहीं है। ४ ए मा।

(२) १ ए पै। २ ए मोहि तोहि पुष।
(३) १ रा पराई। २ ए परहि।
(४) १ रा कहमा। २ ए कही राकस मारा।
(५) १ रा नमसों ए तुहसें। २ रा कहस ए कहीं। ३ ए पारा।
४ ए का जेहि मारा (तुल० पूर्ववर्ती अर्धाली का दूसरा चरण)।
(६) १ मा मावहि ए कामै। २ ए मा।
(७) १ मा सजीवन। २ पूरे चरण का पाठ ए में है—
सहस टूक कै काटि पुनि रे सजीव मा होइ।

अर्थ—(१) इस प्रकार दिन गया और रात पुल गई (मा पहुँची) न कुमार को जय हुई (मिली) और न राक्षस की हानि हुई। (२) भूख से राक्षस ऐसा तंग हुआ कि उसने कहा "मेरा और तुम्हारा युद्ध कल होगा।" (३) रात को राक्षस करने के लिए चला गया, तदनंतर प्रेमा कुमार के पास आई। (४) उसने कहा "हे कुमार, [पिछली बार] कहते समय मैं बतलाना भूल गई; अब तुमसे जिस प्रकार राक्षस मारा जा सकता है। (५) मैं तुमसे तब [वह उपाय] कह नहीं पाई थी [इसलिए अब] राक्षस के काल (मरण) का उपाय जान लो।

(६) यदि तीनों लोक भी लग जावें तो उसे कोई मार नहीं सकता है; (७) सहस्र टुकड़े करके [कोई] उसे काट डाले तो भी वह पुनः सजीव हो जाएगा।"

टिप्पणी—(१) रैनि < रयणी < रजनी। (२) जूम < युद्ध।

[२६९]

पमां कह[1] कुँवरहि समुझाई। सुनहु कुँवर[1] अरि काल उपाई।
देखहि[1] दखिन दिसा जो लागी। तहि महु[1] एक अमित फर भारी[1]।
सघन सो फर[1] औ सीतरि[1] छाहाँ[1]। राकस जीउ बस तेहि माहाँ[1]।
जौ लहि बिरिछ पतन नहि[1] होई। कैसहु[1] मारि जाइ नहि[1] सोई।
राकस काल अंबिरिछ उपार[1]। मारत कैसहु मर न मार[1]।
अमित फल[1] बिरिछहि कसि[1] हम तुम मिलि कै मारहि[1] काटि[1]।
सहजहि मरे[1] सो राकस जाब मरें[1] हिय फाटि॥

पाठान्तर—(१) १ रा कहा ए कहै। २ मा कही।
(२) १ मा देखसि ए देखिन। २ ए लागी। ३ ए फुलवारी।
(३) १ मा मोकम ए फूल औ। २ रा ए सीतल। ३ ए छाँहा।
४ ए माहा।
(४) १ ए जौ लगि बिछ पतन मा। २ ए कैसेहु। ३ ए मा।
(५) १ मा के वारें ए के उजारें। २ ए मारहि केहू मरत न मारें।
(६) १ मा मे यह अमित नहीं है। २ मा चमहु। ३ मा. काटहि कै।
४ ए में चरण का पाठ है अमित बिरिछ हम तुम चमहु उपारहि काटि।
(७) १ मा ए मरहि। २ ए भई।

अर्थ—(१) पेमा कुमार को समझाते हुए कहने लगी "हे कुमार शत्रु के काल (मरण) का उपाय सुनो। (२) दक्षिण दिशा में जो वाटिका देख रहे हो उसमें एक बड़ा अमृत फल [का वृक्ष] है। (३) वह फल [का वृक्ष] सघन है और उसकी छाया शीतल है राक्षस का जीव उसी [वृक्ष] में बसता है। (४) जब तक उस वृक्ष का पतन नहीं होता है यह राक्षस किसी प्रकार मारा नहीं जा सकता है। (५) राक्षस का काल (मरण) उस अमृत [-वृक्ष] को उखाड़ने से होगा नहीं तो, किसी प्रकार भी मारने से वह नहीं मरेगा।

(६) चलो हम और तुम मिलकर उस अमृत-फल के वृक्ष को काट कर जला दें (७) इस प्रकार आगमात्र के बढ़ने (लपटने) से वह राक्षस हृदय के फटने से सहज ही में मर जावेगा।"

टिप्पणी—(२) बारी < वाटिका। (५) उपार < उप्पाड < उत्+पाटम् = उखाड़ना। (६) बिरिख < वृक्ष। बार < ज्वालम् = जलाना।

[२७०]

सुनत नाउँ[1] अम्रित फर करा । उठि क[3] कुँवर दखिन दिसि[4] हेरा ।
निहचै[1] भएउ कुँवर मन[2] माहा । राकस मरि मरि जिय सो काहीं[4] ।
कहा कुँवर पेमा सथ[*1] आवहि[2] । अम्रित फर[3] ल मोहि[4] दखावहि[5] ।
चला कुँवर पेमा सथ[1] लागी । राकस आउ सीस धरि[2] आगी ।
पेमा ल कुँवरहि गइ[1] तहाँ । अम्रित बिरिछ फर अम्रित[2] जहाँ ।
दखि कुँवर हिय[1] हरखउ[2] रहस समानउ[3] जीय[4] ।
निसच भएउ कि[1] अब[2] बिधि जस पत्र मोहि[3] दीस[4] ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्द्धालियाँ ४ तथा ५ रा म परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए नाव। २ रा फल। ३ ए जे। ४ ग दिस।
(२) १ मा निस्च ग निस्चै। २ ए भी। ३ मा सुनत जिय ए सुनत जिव। ३ मा मरि मरि जीवन काही ए मरै बस्मि जो काही।
(३) १ रा अब मोहि सथ मा ए पेमा संघ। २ ए आवहु। ३ रा ए फल। ४ ए जे मोहि। ५ ए देखावहु।
(४) १ मा ए संग। २ मा धर ग धर।
(५) १ ग भी। २ मा सुफल फरा है ए फल लाया है।
(६) १ रा पेमहि कुँवर दखि कै। २ ग हरखा। ३ ए समाना। ४ जीउ।
(७) १ रा निहचौ भी कै ए निस्च भी जो। २ मा मार। ३ ए बिधि (किन्तु चरण के पूर्वार्द्ध में यह आ चुका है)। ४ ग दीउ।

अर्थ—(१) अमृत-फल का नाम सुनते ही उठकर कुमार ने दक्षिण दिशा में देखा। (२) कुमार को मन में निश्चय हो गया कि राक्षस क्यों मर-मर कर जीता है (जीवित होता है)। (३) कुमार ने कहा "पेमा तू संग आ और [मुझ] से चलकर तू [उस] अमृत-फल को दिखा।" (४) कुमार पेमा के संग लगा हुआ चला राक्षस आ रहा था और उसके सिर पर आग जल रही थी। (५) पेमा कुमार को लेकर वहाँ गई जहाँ पर अमृत-वृक्ष अमृत [-फल] फल रहा था।

(६) [अमृत-फल के वृक्ष को] देखकर कुमार हृदय में हर्षित हुआ और उसके जी में हर्ष समाया (व्याप्त हुआ); (७) उसे निश्चय हो गया कि अब विधाता ने उसे विजय-पत्र दे दिया है।

टिप्पणी—(१) हेर [दे०]=देखना निरीक्षण करना। निहचै<निश्चय। (४) बर<बल्। (५) बिरिछ<वृक्ष। (६) रहस<रभस=हर्ष। समा<सम्+आप्=व्याप्त होना।

[२७१]

कुँवर निरखि जो बिरिख¹ निहारा। देखत² सुफल सघन कनियारा³।
देखि कुँवर जिय¹ दया बनाई। फरा बिरिख² जो³ काटि न जाई।
पुनि¹ पूछै² कुँवरहि बर मारी। अरि आएउ³ पर⁴ बिलम कहा री⁵।
जौ रिपु बस अपने कै पाइय¹। कहहु² कुँवर काहे³ बिलमाइय⁴।
मोर¹ बोल निहचै² जिय मानहु³। अगिनि ससु⁴ जनि⁵ थोर⁶ कै जानहु⁷।
बेगि होहु जनि बिलमहु¹ जौ अरि² रुहिर पियास।
सो जौ बस¹ कै पाइय लइ न दीजिय सांस³॥

पाठान्तर—उपर्युक्त पाँचवीं अर्द्धाली मा में इस छंद के प्रारंभ में है।

(१) १ ए अमित फल निरखि। २ मा देखसि ए देखि। ३ रा सघन कनियारा मा सुगन (<सुघन) कनियारा ए फल का मनिआरा।
(२) १ ए जिउ। २ ए बिछ। ३ मा जरि।
(३) १ रा फिर। २ ए पूछै। ३ ए मारी। ४ मा ए में यह शब्द नहीं है। ५ मा बिलम कुम्हारी (?) ए बिलंब का करी।
(४) १ ए पाई। २ ए कही। ३ ए कैसे। ४ मा बिलमाइय ए बिलँबाई।
(५) १ ए मोरि। २ मा निस्चै ए निस्चै। ३ मा जिय जानहु ए कै जानहु। ४ ए पीसु। ५ ए में यह शब्द नहीं है।
(६) १ मा जनि बिलमहु ए बी बिलमहु रा बिलंबहु। २ ए अति।
(७) १ मा में यहाँ 'अपने' और है। २ ए पाई। ३ ए लेन कि दीजिय।

अर्थ—(१) कुमार ने जो वृक्ष को निरीक्षण करके देखा, तो [देखा कि] वह देखने में एक सुफल (भलीभाँति फला हुआ) और सघन कर्णिकार था। (२) उसे देखकर कुमार के जी में दया आ गई कारण कि (क्योंकि) फला हुआ वृक्ष काटा नहीं जाता है। (३) तब कुमार से वह श्रेष्ठ नारी (प्रेमा) पूछने लगी "अरे, शत्रु के आने पर भी क्या विलंब है? (४) यदि शत्रु को अपने वश में कर पाया जाए, तब हे कुमार, तुम कहो क्यों विलंब लगाया जाए? (५) मेरी बात तुम जी में निश्चित मानो; अग्नि का लेश भी थोड़ा करके न जानो। (६) शीघ्रता करो और विलंब न करो यदि तुम्हें शत्रु के रुधिर की पिपासा है। (७) जिसे वश में कर पाइए, उसे साँस न लेने दीजिए।

टिप्पणी—(१) निरख<निरक्ष~निरीक्ष=निरीक्षण करना देखना। कनियार<कर्णिकार। (२) जौ<जउ<यत=यदि। (५) निहचै<निश्चय। (६) रुहिर<रुधिर=रक्त।

[२७२]

पेमैं¹ जौ कुँवरहि समुझावा² । सुनतहि चेत कुँवर चित³ आवा⁴ ।
पुनि¹ उठि बिरिछ निकट गा² राऊ । भुज मरोरि सँवरसि³ बवसाऊ ।
दुहुँ¹ कर गहि हरिनाउँ² सँभारा । अमिय बिरिछ³ सेंउ⁴ मूर⁵ उपारा ।
पुनि¹ जेत डारि² पात फर आहे³ । ते सभ⁴ कुँवर आगि महँ दाहे⁵ ।
पीड़¹ क काठ रहा² जो भारी । सो पुनि³ दिएउ⁴ अगिनि महँ जारी⁵ ।
अमिय बिरिछ¹ उपारि² कै जारि कीन्ह तेहि³ छार ।
रहसत आए¹ चौगड़ी कामिनि और कुँवार² ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पमा ए पेमैं। २ मा समुझाई। ३ ए सुनत कुँवर के चित। ४ मा आई।
(२) १ रा पुनि उठि ए पुनि जा। २ मा नियर गौ ए निअर गा। ३ रा कीन्हेसि ए सँवरा।
(३) १ ए दुइ। २ ए नाम। ३ ए बिछ। ४ मा सौं मूल रा सै मूर, ए कर मूर।
(४) १ रा ए पुनि। २ ए जा डार। ३ मा अहे ए रहा। ४ ए ते सब। ५ मा अगिनि महँ दहे ए अग्नि मो दहा।
(५) १ ए पेड़ (<पीड़ फ़ारसी लिपि)। २ मा अहउ। ३ रा पुनि ए दे। ४ ए दीन्ह। ५ मा अगिनि मुख डारी (<जारी नागरी लिपि) ए आगि मो डारी।
(६) १ ए बिछ। २ रा उपारि। ३ मा सब त पै।
(७) १ ए आय। २ रा ए कुमार।

अर्थ—(१) पेमा ने जब कुमार को समझाया सुनते ही कुमार के चित्त में चेत (ध्यान) आया। (२) तब राजा (राजकुमार) उठकर वृक्ष के निकट गया और उसने भुजाओं को मरोड़ कर व्यवसाय (पुरुषार्थ) का स्मरण किया। (३) [वृक्ष को] दोनों हाथों से पकड़ कर उसने हरि-नाम का स्मरण किया और अमृत-वृक्ष को जड़ से उखाड़ डाला। (४) तदनंतर जितने डाल, पत्ते तथा फल थे उन सब को लेकर कुमार ने अग्नि में जला दिया। (५) पीड़ का जो भारी काष्ठ था तब उसको (कुमार ने) अग्नि में डाल दिया।

(६) अमृत-वृक्ष को उखाड़कर और उसे जलाकर [उन्होंने] राख कर डाला (७) और तदनंतर हर्षपूर्वक कामिनी (पेमा) और कुमार चौगंडी को आ गए।

टिप्पणी—(२) भुज<भुज। सँवर<सँभार<सं+भाल्=सँभालना याद करना। (४) जेत<जेत्तिअ<यावत्=जितना। (५) पीड़<पिण्ड=वृक्ष का धड़ के पास का भाग। (६) छार<क्षार=राख।

[२७३]

रजनी घटि[1] रवि किरनि पसार[2]। राकस हाँक बार भ[3] मार।
करिया रूप भयावन कीन्हें। दुऔ हाथ दुइ चाका[1] लीन्हें।
सुनतहि[1] कुंवर धनुक[2] हथवासा[3]। औ खरग उर[4] रुहिर पियासा।
फरसा कुत लिएउ[1] कर लाई। औ भभूति[2] मुख अंग चढ़ाई।
डंड चक्क[1] तिरसूल जो लीन्हउ[2]। सरन बिधाता ओनवन[3] कीन्हउ[4]।
काल रूप धस निसरेउ[1] हरि हिरदौ[2] सभारि।
राकस देखि रिसाई[1] मारसि चाक[2] पवारि॥

पाठान्तर—(१) १ मा गत ए गति (<गत : फ़ारसी लिपि)। २ ए पसारा। ३ ए आनि हाँक फुनि।
(२) १ मा दुनहु ए दुनौ। २ ए चाक जे।
(३) १ ए सुनते। २ ए धनुख। ३ मा हथवासा रा स्पष्ट नहीं है। ४ ए जे।
(४) १ ए कोठ लीन्ह। २ ए बिभूति।
(५) १ मा ए चक्र। २ मा लीन्हा ए लैऊ। ३ ए ओडन रा ओडर। ४ मा कीन्हा ए कैऊ।
(६) १ ए मैं निमरा। २ मा हरिमरि सरन ए हरि हरि नाम।
(७) १ मा रिसाइ करि ए रिसाना। २ ए चक्र।

अर्थ—(१) [जब] रात बीती और सूर्य किरणें प्रसारित करने लगा [तब] राक्षस द्वार पर आकर हाँक लगाने लगा। (२) वह काला और भयावना रूप लिए हुए था और दोनों हाथों में दो चक्र लिए हुए था। (३) [उसकी हाँक] सुनते ही कुमार ने धनुष भी हाथ में लिया, और खड्ग को [हाथ में] लिया जो रुधिर का प्यासा था। (४) फरसा और बर्छा भी उसने हाथ में लगा लिया और मुख तथा शरीर पर उसने विभूति चढ़ा ली। (५) फिर जो उसने दंड चक्र और त्रिशूल लिया विधाता की शरण में उसने अवनमन (नमस्कार) किया।
(६) हरि को हृदय में स्मरण करके वह काल-रूप बना निकल पड़ा (७) [उसे] देखकर राक्षस रुष्ट हुआ और उसने चक्र गिरा (चला) कर उसे मारा (उस पर प्रहार किया)।

टिप्पणी—(१) पसार <प्रसारम् = फैलाना। बार <द्वार। (२) चाक <चक्र <चक्र। (४) फरसा <परशु। (५) डंड <दण्ड। चक्क <चक्र। ओनवन <अवनमन = नमस्कार। (७) पवार <पवार <प्र + पातय् = गिराना।

[२७४]

राकस चाक रिसाइ पवारा। कुंवर आड़ि क[1] आपु उबारा[2]।
दोसर चाक फुनि[1] लिहसि[2] सभारी। कुंवर दीन्ह[3] ओडन[4] सिर टारी।
चाक भा[5] ओड़न[1] लग लागा। अगिनि भभूक[2] सरग ग लागा[3] (गलांगा?)।

बहुरि कुँवर कर पलटउ दाऊ[1] । झपटि किएसि[2] राकस सिर[3] घाऊ ।
पाँच माँथ[1] जारी[2] बड़ करा । सरग घाउ सोई भुमि[3] परा ।
मरम घाउ[1] जब[2] लागउ[3] लीन्हसि[4] माँथ उचाइ[5] ।
दक्खिन दिसि[1] जह बारी[2] तहि दिसि गएउ उड़ाइ[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा कुँवरि कै ए बाट भै। २ रा संभारा।
(२) १ रा पुनि ए म यह शब्द नहीं है। २ ए लीन्ह। ३ मा दिएउ। ४ ए ओड़न।
(३) १ ए ओड़न। २ ए भभूका। ३ मा तेउ लागा ए मैं लागा (किंतु इन दोनों पाठों का रूप नहीं है या पूर्ववर्तीकरण का है) रा स्पष्ट नहीं है।
(४) १ ए कुँवर का पलटा दाऊँ। २ रा ठेहि कीन्हेसि ए झपटि कीन्ह। ३ ए माड़े कर।
(५) १ ए माथ सों। २ रा जारत। ३ ए भौंमि।
(६) १ ए घाव। २ मा जौ। ३ ए लागा। ४ ए लीन्हा। ५ रा उचाइ।
(७) १ मा दक्खिन दिसा ए दक्खिन दिस। २ ए बारी रही। ३ ए तहवाँ। ४ रा गएउ बहाइ, मा चमेउ उड़ाइ ए-मै (उ) उड़ाइ।

अर्थ—(१) राक्षस ने रुष्ट होकर चक्र गिराया (चलाया) किंतु कुमार ने उसे ढाल पर रोक कर अपने को बचा लिया। (२) राक्षस ने फिर दूसरा चक्र सम्हाल कर लिया तो कुमार ने फिर हटाकर ओड़न (ढाल) को सामने कर लिया। (३) चक्र आकर ओड़न (ढाल) में ऐसा लगा कि उससे अग्नि की लपट निकलकर आकाश को जा लगी। (४) फिर कुमार का दाँव पलटा और उसने झपटकर राक्षस के सिर पर आघात किया। (५) पाँचवाँ मस्तक जिसकी बड़ी कला थी खड्ग के उसी आघात से गिर पड़ा।

(६) जब [इस प्रकार का] मर्माघात लगा (राक्षस ने) मस्तक को उठा लिया (७) और वह दक्षिण दिशा में जहाँ वाटिका थी उसी ओर उड़ कर चला गया।

टिप्पणी—(१) पचार < पचार < प्र+पातय्=गिराना। (२) चाक < चक्क < चक्र। (४) घाउ < आघात। (७) बारी < वाटिका।

[२७५]

बहुरि कुँवर[1] बारी निमि[2] धावा । पवनहि अग्नि करि भावा[3] ।
मरम घाउ[1] लाग मितनानी[2] । दगधसि राकस भव[1] भुलानी ।
जह सा[1] अग्नि निरिखि[2] उपाग[3] । राकस माँथ आनि तह डारा[4] ।
जो राकस मरित[1] नहिं[2] पावा । सा निगम मन कामु जनावा ।
आएउ गिरिहि लागि सो आयो[1] । कया[2] पगास परिहर लागो[3] ।
जिमि हरियर[1] जरि काटे[2] तन[3] धरगेंसि पर[4] निदान ।
तिमि राकस पुहुमी परउ[1] कया परिहर[2] पगान ॥

१

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए राक्स। २ ए दिस। ३ ए फल आवा।
(२) १ ए भाव। २ मा लागतहि निआना रा लागेउ बिगनाना ए लागे बिततानां। ३ ए देखत राकस भरम।
(३) १ ए जहा से। २ ए बिछ। ३ रा उजारा। ४ ए मारा।
(४) १ ए म यहाँ 'फल' और है। २ ए न।
(५) १ ए आउ विहि लागि गौ लागी। २ मा पिंड। ३ ए परिहरि गौ भागी।
(६) १ ए तरुबरि। २ मा काटैं ए काटिये। ३ मा ए में यह शब्द नहीं है। ४ धरि खस परै रा धर खसि परेउ।
(७) १ ए मुह खसि परा। २ मा परिहरेउ ए परिहरा।

अर्थ—(१) तब कुमार [भी] वाटिका की ओर दौड़ा कि अमृत के भाव [-अभाव] [के परिणाम] का वह पकड़ता (अनुमान) लगावे। (२) उसने देखा कि मर्माघात लगने से राक्षस बिलाया और भूला हुआ चक्कर काट रहा है। (३) जहाँ वह उजाड़ा हुआ अमृत-वृक्ष था राक्षस ने आकर वहाँ [उस छिन्न] मस्तक को डाल दिया। (४) राक्षस ने जब अमृत नहीं पाया वह निराश हो गया और उसके मन में काल [आया हुआ] जान पड़ने लगा। (५) वह घर पर आ गया [क्योंकि] उसको [मानो] आग लग गई थी; उसकी काया अब प्राणों को छोड़ने लगी।

(६) जिस प्रकार [किसी] बड़े वृक्ष को जड़ काटिए तो उसका तना अंत में धरा पर गिर पड़ता है (७) उसी प्रकार, राक्षस पृथ्वी पर गिर पड़ा और [उसकी] काया ने प्राणों का परित्याग कर दिया।

टिप्पणी—(१) बारी < वाटिका। (२) भंव < भ्रम् = भ्रमण करना घूमना। (३) उपारा < उत्पाटित = उखाड़ा हुआ।

[२७६]

जौ राकस निजु तज[1] परानां। पमां बलि जीउ[2] रहसानां।
दौरि[1] कुंवर पर माँवर वारा। अति मरोह[2] स हिय उर[3] सारा।
कहसि कहा[1] मउछावरि[2] सारौं। सहस जीउ घट होहिं[3] तौ वारौं।
धनि[1] सो पिता जइ रे तोहि[2] जाए। धनि सो माइ जेइ[3] दूध पियाए।
अब परिहरिय[1] बगि यह ठाईं[2]। मोरा मुकुति जौ दउ[3] गोसाईं।
मोर हिया डर[1] डरपै भरमि भरमि[2] जा जीउ।
मूए हूं[1] यह[2] राकस पुनि[3] अमि[4] होइ सजीउ॥

पाठान्तर—(१) १ मा तजेउ ए तजा। २ ए जीउ।
(२) १ ए और। २ ए मंनोल। ३ ए कै ही बर।
(३) १ मा कुंवर। २ ए मउछावरि। ३ ए हो"।
(४) १ ए धन। २ रा जेई रे मुम ए जो ताहीं। ३ मा धनि सो माइ जिनि ए थन बाँधे जो।

(५) १ ए परिहरु। २ ए महि ठाईं। ३ ए तोहि दीन्ह।
(६) १ मा हियउ डर, ए हीयर हिय। २ ए भरम भरम (<भरमि फ़ारसी लिपि)
(७) १ मा मुएं हुतें ए मुये ते। २ ए ए । ३ मा फिरि। ४ ए मति।

अर्थ—(१) जब राक्षस ने निश्चित् रूप से प्राण छोड़ दिए, पेमा का जी यह देखकर हर्षित हुआ। (२) उसने दौड़कर कुमार पर अंचल वारा और अत्यंत स्नेह (संवेदना) के साथ उस [अंचल] को लेकर हृदय से लगाया। (३) उसने कहा "मैं [तुम पर] क्या न्यौछावर करू ? इस शरीर में यदि सौ जीव हों तो मैं उन्हें भी न्यौछावर कर दूं। (४) वह पिता धन्य है जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया और वह माता धन्य हैं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया। (५) अब शीघ्र ही इस स्थान को हम छोड़ दें कि ईश्वर हमको [अब भी] मोक्ष-मुक्ति दे।

(६) मेरा हृदय डर से डर रहा है और मेरा जीव भ्रम भ्रम (डर-डर) जाता है (७) कि मरकर भी यह राक्षस [कहीं] फिर न जीवित हो उठे।"

टिप्पणी—(५) ठाईं<स्थान। मोख<मोक्ष। (६) हिया<हृदय।

[२७७]

बहुरि कुंवर कामिनि सउ[१] कहा । गा सो भरम जो तुम्ह चित अहा[२] ।
चित सेउं[१] सब[२] परिहरु दुख बाता । तुम्ह दुख हरि[३] सुख दिएउ[४] बिधाता ।
कौनहु दुख जनि[१] होहु दुखारी । आवहिं[२] लाख दुख चित हमारी ।[३]
फुनि[१] उठि दुवौ[२] पथ सिर भए[३] । मांस[४] चारि वनहा बन गए[५] ।
बहुरि देस बसती महं आए[१] । दखत बसि क[२] भाउ सुहाए[३] ।
बहुरि निकट जो आए चित्रसमि क गाउ ।
नगर अनूप सोहावन चहुं दिसि भन अमराउ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा. सौं ए से। २ ए चित मों अहा।
(२) १ मा सा ए सेंती। २ मा सब ए म मह शब्द नहीं है। ३ — तोहि दुख भरि, ए राक्स हन।
(३) १ ए कौनहु दुख न। २ मा उर्वाहि। ३ ए मै दुख … राक्स हन सुख दीन्ह मुरारी। (सुख पूर्ववर्ती अर्धाली का …
(४) १ ए पुनि। २ ए दुनौ। ३ ए भैऊ। ४ ए मास। ५ — …
(५) १ ए बसती मों आई (<आए फ़ारसी लिपि)। … ए भाव सोहाई (<सोहाए : फ़ारसी लिपि)।
(७) १ ए सोहाएउ। २ ए अमराव।

अर्थ—(१) तदनंतर कुमार ने कामिनी (पेमा) से कहा, "… को तुम्हारे चित में था। (२) [अब] तुम चित से समस्त दुःख की बात … विधाता ने [तुम्हें] सुख दिया। (३) [अब] तुम किसी दुःख के … करने के लिए आने वाले] लाख दुख मेरी चिंता के लिए आवें। (४) …

बढ़ हुए, और चार मास तक वन ही वन चलते रहे। (५) तब वे कवि के सुहावने भाव देखते हुए एक देश की बस्ती में आए।

(६) इसके अनंतर वे चित्रसेन के ग्राम (नगर) के निकट आए (७) वह नगर अनुपम भाँति से सुहावना था और [उसके] चारो ओर सघन अमराई थी।

टिप्पणी—(५) बसती < वसति। (७) अवराउ < अंबाराम < आम्राराम = आम्र-वाटिका।

[२७८]

पर्मा दीठि नगर पर[१] परी। मन अनदि[२] हरखी हिय करी[३]।
दखि उतंग अवास सुहाए। पर्मा हियें[१] हुलास बधाए।
पुनि चलि निकट[१] कुँवर कें[२] आई। कहसि करहु जिय[३] हरख बधाई।
म जो कहत[१] तुम्ह[२] सों[३] नित नाऊं[३]। पिता नगर[४] यह[५] चित बिसराऊं।
दरसन जोग उतारहु राजा। कहु सिद्धि सभ[१] साहस काजा।
चित सउ दुख परहलहु[१] करहु अनद बधाउ।
तुम्ह[१] औ[२] मधुमालति[३] सउ[३] य ही[४] नगर मेराउ[५]॥

पाठान्तर—(१) १ ए जो। २ ए अनद। ३ ए हरख जो करी।
(२) १ रा मनहि ए हिरदै।
(३) १ ए जो मीत। २ रा ए के। ३ मा करहु मन ए नि कह मन।
(४) १ मा कहीं ए कहा। २ ए तो सौं। ३ मा तब नाऊं, ए बिसराऊं। ४ मा राज। ५ रा जो।
(५) १ ए जो।
(६) १ मा चित सौं दुख परिहरहु ए चित सौं सब दुख परिहरु।
(७) १ मा तोहि ए तुह। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ रा सौं, ए सनी। ४ मा निजु अबही ए मेहि। ५ राउ।

अर्थ—(१) प्रेमा की दृष्टि नगर पर पड़ी तो वह मन में आनंदित होकर हृदय में बहुत हर्षित हुई। (२) [उस नगर के] उत्तुंग (ऊँचे) और सुहावने आवासों को देखकर पेमा के हृदय में उल्लास के बधाए [होने लगे]। (३) फिर वह चलकर कुमार के निकट आई और उसने कहा, "हृदय में हर्ष की बधाई करो। (४) मैं जो नाम तुमसे नित्य कहा करती थी यह पिता का [वही] नगर चित्त-विश्राम है। (५) ऐ राजा (राजकुमार) योग (योगी) का वेश (वेष) उतारो और समस्त साहस-पूर्ण कार्य की सिद्धि लो।

(६) अपने चित्त से सब दुख का तिरस्कार करो और आनंद-बधावा करो; (७) तुमसे और मधुमालती से इसी नगर में मिलाप होगा।"

टिप्पणी—(१) दीठि < दृष्टि। (२) उतंग < उत्तुङ्ग = ऊँचा। हुलास < उल्लास। बधाए < बधावन < वर्धापन = हर्षोल्लास सूचक वाद्य। (७) परहेल < प्रहेल = अवहेला या तिरस्कार करना।

[२७९]

कुँवर नाउँ[1] कामिनि सुनि काँपा । सुनत बिरह सब[2] गात बियापा ।
मधुमालति कर सुनत[1] मरावा । जानहु मुए पिंड जिउ[2] आवा ।
कै जनु पाउ पियास[1] पानी । कै जनु चकइहि[2] रैनि बिहानी ।
कै जनु मधुमालति रस बासा[1] । कै जनु अंबुज सूर[2] परगासा[3] ।
कै जनु पपिहा धार सवाती । कै जनु कुमुदिनि ससि रंग[1] राती ।
पूरुब पेम बिछूरें[1] जहिं[2] दिन दुवौ[3] मिराहिं[4] ।
मनही मनहिं[1] बधावरा[2] मंदिल काह[3] कराहिं ।।

पाठान्तर—(१) १ ए नाम। २ मा सब ए जो।
(२) १ ए कै सुना। २ ए सुआ पलटि जी।
(३) १ ए पाव पियासे। २ ए चकई।
(४) १ मा ए बासा। २ रा कँवल सूर। ३ ए बिगासा रा परगसा।
(५) १ रा में यह शब्द नहीं है।
(६) १ ए बिछुर पेम बिछोही। २ ए जा। ३ ए दुनौ। ४ रा ए मिलाहिं।
(७) १ ए मनि माँह। २ ए बधावा। ३ रा मन्दिल काह ए मंदिल करा।

अर्थ—(१) कामिनी (मधुमालती) का नाम सुनकर कुमार काँप उठा उसे सुनते ही समस्त गात्र में विरह व्याप्त हो गया। (२) [किन्तु फिर] मधुमालती के मिलाप की बात सुनकर उसे ऐसा हो गया मानो मृत पिंड (शरीर) में जीव आ गया हो (३) अथवा मानो प्यासे को पानी मिल गया हो अथवा मानो चकवी के लिए रात्रि समाप्त हो गई हो (४) अथवा मानो मधुकर को मालती की रसीली सुवास [मिल गई हो], अथवा मानो कमल को सूर्य का प्रकाश [मिल गया हो], (५) अथवा मानो पपीहे को स्वाती की धारा [मिल गई हो], अथवा मानो कुमुदिनी चंद्रमा के प्रेम में अनुरक्त हुई हो।

(६) अलग किए हुए पूर्व के दोनों प्रेमी जिस दिन मिल जाते हैं (७) [उस दिन] उनके मन ही मन में बधावा होता है बता मादल क्यों (क्या) करते?

टिप्पणी—(३) चकई < चक्रवाकी। रैनि < रयनी < रजनी। (६) बिछूरे < विच्छुरण (?) = अलग किए हुए। (७) बधाव < बद्धावन < वर्धापन = हर्षोल्लास-सूचक वाद्य। मादल < मद्दल < मर्दल = वाद्य-विशेष मुरज मृदंग।

[२८०]

धनि[1] बर नारि चतुर पट आई । निअरें होइ कै कहसि[2] बुझाई ।
सुनहु कुँवर एक[1] बात हमारी । एहि नगर राज पर बारी[2] ।
करमें[1] तनि मम पर जान्य[2] । काहे दुरजन[3] लाग हँसान्य[4] ।

(७) १ रा पम कहं लिखी मा मम कहं लिखेउ ए सब कौ लिखा। २ ए जोहार।

अर्थ—(१) [इधर] पेमा ने बैठकर दुःख की पत्रिका लिखी जिसे सुन कर वज्र जैसी छाती भी फट जावे। (२) दुःख की जितनी कुछ वार्ता [मन में] जाग्रत हुई वह सब मसि बन कर कागज पर लग गई (उतर आई)। (३) मन का दुःख जितना कुछ था वह लिखते हुए किसी प्रकार भी समाप्त होना नहीं चाहता था। (४) दुःख [का विवरण] लिख कर उसने माता-पिता कुटुंब तथा परिवार को जुहार (नमस्कार) लिखा (५) और जितनी बालिकाएँ उसकी सखियाँ-सहेलियाँ थीं उन सबको उसने प्रेम की अँकवार लिखी।

(६) बहिनों भाइयों जन (घर के लोगों) परिजन (भृत्यों) लोक (प्रजाजन) कुटुंब और परिवार (७)—सबको समझ-समझ कर [यथायोग्य] उसने जुहार (नमस्कार) लिखा।

टिप्पणी—(१) बिहर <बिहड <वि+घट्=टूटना फटना। (२) कागर <कागज [फा]। (५) बारी <बालिका। अंकवारी <अंकपाली=आलिंगन।

[२८३]

दुख पाती जौ लिखत[1] सिरानी। बारि एक हँकराएउ आनी[2]।
पेमाँ बारी के पाँ[1] परी। बेगि चलहि[2] जनि बिलमहि[3] घरी।
लै पाती बारी उठि धावा। रहस गहा भुइँ पाउँ[1] न लावा।
बारी बाउ पौन सेउ[1] करई। दिस्टि चाहि पग अगुमन[2] धरई[3]।
निमिख माँहि बारी चलि[1] गएऊ। राज[2] दुआर ठाढ़ भ भएऊ[3]।
परतिहार सौं कहि पठएसि[1] आइ जनाउ नरेस।
बार ठाढ़[1] एक बारी कहै[2] पेमाँ क[3] सँदेस॥

पाठान्तर—मा म उपर्युक्त अर्द्धालियों २ ३ ४ का क्रम है ३ ४ २।
(१) १ मा लिखी ए लिखि। २ ए बारी एक हँकारेउ आनी।
(२) १ रा पम ए पाँव मैं। २ ए चलहु। ३ मा जनि बिलमहि ए न बिर्म बहु।
(३) १ ए पाँव।
(४) १ ए सौं। २ मा पम आगे ए आगू मग। ३ ए धरई।
(५) १ ए गइ मा बारी गैऊ। २ ए राये। ३ ए भैऊ।
(६) १ ए प्रतिहार सै कहि पठ्या।
(७) १ ए ठाढ़ि (<ठाड़ फारसी लिपि)। २ ए कहै। ३ रा का।

अर्थ—(१) जब वह दुःख-पत्रिका लिखते-लिखते समाप्त हुई उसने एक बारी को बुलवा मँगाया। (२) पेमा उस बारी के पैरों पड़ी और [उससे उसने कहा] "तू शीघ्र जा और एक घड़ी का भी विलंब न कर।" (३) पत्रिका लेकर बारी उठ दौड़ा; हर्षातिरेक होने के कारण उसने भूमि पर पाँव नहीं रखा। (४) वह बारी [चलने में] हवा से बात (बातें) करता था; पैर आगे

दृष्टि से भी आगे (अपित वेग से) रखता था। (५) एक पल में बारी चला गया और जाकर राज द्वार पर खड़ा हो गया।

(६) प्रतिहार को उसने यह कहकर भेजा "राजा को जाकर बताओ कि (७) द्वार पर बारी खड़ा है जो पेमां का संदेश कह रहा है।

टिप्पणी—(१) रहस < रभस = हर्ष। (७) बार < द्वार।

[२८४]

परतिहार सुनतहिं[1] उठि धावा । राज गिरिहं[2] ग भाग जनावा ।
राजबार बारी एक आवा । अमिअ बचन किछु कह सोहावा ।[1]
पर्मा राजकुमारी बारी[1] । सहिक[2] सदेस कह किछु बारी ।
पर्मा माउ[1] सुनत उठि धावा[2] । मन रहमा[3] किछु गुन न पावा[4] ।
धाए सुनि राजा औ[1] रानी । बिछुरि मीन पावा जनु[2] पानी ।
मता[1] पिता जन परिजन[2] सगी सहेला नारि[3] ।
धाइ बार[1] चलि आए सुनत माउ[2] वर नारि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुनते। २ ए राजा ग्रिह।
(२) १ ए अमी बचन जे कहि सेराबा।
(३) १ ए माहि जे राजकुमारी। २ ए बारे।
(४) १ ए नाम। २ भा धाएउ। ३ भा रहसेउं। ४ भा पाएउं।
(५) १ ए औ। २ भा बिछुरी मीन पाव जनु। ए बिछुरा मीन जस पावै।
(६) १ रा माता ए मात। २ ए परजन। ३ भा सहेली छिनारि, ए सोसी नारि।
(७) १ ए बारी। २ ए नाव।

अर्थ—(१) प्रतिहार यह सुनते ही उठ दौड़ा, और राज-भवन में जाकर उसने यह बात विज्ञप्त की, (२) 'राज द्वार पर एक बारी आया हुआ है, जो कुछ सुहावने अमृत [-तुल्य] वचन कह रहा है। (३) बालिका पेमां जो राज-कन्या है उसी का कुछ संदेश वह बारी कर रहा है। (४) पर्मा का नाम सुनते ही मैं उठ दौड़ा। मन ऐसा हर्षित हुआ कि मैं कुछ गुन न पाया। (५) यह सुनकर राजा और रानी ऐसे दौड़ पड़े चले [जस से] बिछुड़ कर मीनों ने [पुनः] पानी पाया हो।

(६) माता, पिता स्वजन प्राय सखियाँ सहेलियाँ, संपूर्ण वय से (सभी एक साथ) (७) दौड़कर द्वार पर चले आए जैसे ही उन्होंने उस श्रेष्ठ नारी (पेमां) का नाम सुना।

टिप्पणी—(२) बार < बार < द्वार। (४) रहस < रभस् = हर्ष।

[२८५]

पर्मा नाउ[1] सुनत सभ[2] धाए[3] । उठि चलि राज कुमार[3] आए[4] ।
राजा उठि पाराउ[1] बिसभारा । औ रानी सिर पा स[2] सभारा ।

आगें भै बारी जोहरावा[1] । औ पेमां कै कुसल[2] जनावा[3] ।
बहुरि दिहेसि[1] पेमां क[2] पाती । चित्रसेनि ल लाई छाती ।
ब्याकुल भ पूछसि[1] महतारी । कतिक दूरि सो राजदुलारी[2] ।
बारी कहा इहां सेउ[1] कोस डेढ़ एक[2] गाउं ।
तहां आपु हहि बसी[1] मोहि पठएन्हि तुम्ह[2] ठाउं ॥

पाठान्तर—(१) १ ए नाथ। २ ए उठि धाई (<धाए फारसी लिपि) रा सब धाए। ३ भा दुआरहिं। ४ ए आई (<आए फारसी लिपि)।
(२) १ ए धाए। २ ए सिर पांव [स नहीं है]।
(३) १ ए आगे भै बारी जोहरावा रा आगें होइ बारी धसि आवा। २ ए भा बचन। ३ भा सुनावा।
(४) १ रा पुनि दीन्ही ए पुनि दीन्हेसि। २ ए की।
(५) १ भा भइ पूछहि ए भै पूछै। २ ए है राजकुमारी।
(६) १ रा ए सौं। २ भा अहि ए एक लगि।
(७) १ ए तहँ आपुन होइ बैसे। २ ए तुम।

अर्थ—(१) पेमा का नाम सुनते ही सब दौड़ पड़े और उठ कर तथा चलकर राज-द्वार पर आ गए। (२) राजा उठकर बेतहाशा दौड़ पड़ा और रानी ने भी सिर-पैर नहीं सँभाला। (३) आगे हो (आ) कर बारी ने [उन्हें] जुहार (नमस्कार) किया और पेमा का कुशल बताया। (४) फिर उसने पेमा की पत्रिका दी जिसे चित्रसेन ने लेकर छाती से लगा लिया। (५) व्याकुल होकर माता पूछती है "वो कितनी दूर [अभी] राज-दुलारी (पेमा) है?"

(६) बारी ने कहा "यहाँ से डेढ़ कोस पर एक गाँव है, (७) [पेमा] वहाँ स्वयं बैठी हुई है, और मुझे उन्होंने तुम्हारे स्थान पर भेजा है।"

टिप्पणी—(१) दुआर<द्वार। (४) पाती<पत्रिका। (७) ठाउं<स्थान।

[२८६]

राजा सुनत भएउ[1] असवारा । औ जत[2] कुटुंब लोग परिवारा ।
औ रानी[1] चढ़ि पालकि साजें[2] । हरख अनंद बधावा[3] बाजे[4] ।
तेहि पाछें सभ[1] चलीं सहेली[2] । बालगन[3] मध हुता ज[4] सकेली ।
नगर छतीसौं पौनि[1] गवांई[2] । पेमां माउ[3] सुनत सभ[4] धाई[5] ।
हय पाखर औ[1] पड़ी अंबारी[2] । चलउ राउ आगें[3] भा[4] बारी ।
बलि सो दवस बलि सो घरी बलि सो मिलिआ चाव[1] ।
तन बलि मन बलि[1] जीउ बलि[3] धन बलि जग बलि[4] राव[5] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए भौ। २ ए जो।
(२) १ भा रानिहि। २ ए कै पालक साजी (<साजे फारसी लिपि)। ३ भा बधाए। ४ ए बाजी (<बाजे फारसी लिपि)।

(३) १ ग पाठे मद। २ ग मोरी। ग ग्रगर्ई। ४ भा जनी मंग ए गग गाप जो।
(४) १ ग छनीमा पौर। २ ग मचार्ई ग जा आह। ३ ग माव। ४ भा मत्र ग उठि। ५ ग पाइ।
(५) १ भा भै रा म यह गब्द नहीं है। २ ग चाउवा बारी भा चर्मी अबारी ए परी उजारी। ३ भा ममा ए आम। ४ ए भौ।
(६) १ भा बलि बलि जीउ जब सम्प ए पलि मिर्म गर तब।
(७) १ ग म दा गब्द नहीं है। २ ए नैन। ३ ग म यह गब्द नहीं है। ४ ग ए म गब्द नहीं है। ५ ग सब।

अर्थ—(१) राजा [यह] सुनते ही सवार हुआ और जितने कुटुम्बी लोक (प्रजा जन) तथा परिवारी थे [वे भी सवार हुए] रानी के लिए उन्होंने पालकी सजाई और हय तथा धावन के बचाये बजे। (३) [राजा के] पीछ [धर्मा की] सब सहेलियां चलीं जो धात्यावस्था से उसके साथ पली हुई थीं। (४) नगर में समस्त छत्तीस पावनी जातियां थीं; वे सब धर्मा का नाम सुनते ही दौड़ पड़ीं। (५) पीछे पाखरों (अश्व-कवचों) से सजाए हुए और उन पर अंबारियां पड़ीं और बारी राजा के आगे होकर चला।

(६) [वे सब सोचते चले जा रहे थे] 'यह दिन बलि है वह घड़ी बलि है वह (लग्न) बलि है जब [प्रेमा से] मिलन हो (७) [उस मिलन के लिए] तन बलि है मन बलि है जीव बलि है धन बलि है संसार बलि है और सब [कुछ] बलि है।"

टिप्पणी—(१) जेन < यनित < यावत् = जितना। (२) पाखर < पक्खर। धवार < धवाव < धवलित। (४) पौनि = मंगलादि के अवसरों पर उपहार-पुरस्कार पाने वाली जातियाँ। (५) पाखर < पक्खर [दे] = अश्व कवच।

[२८७]

पमहि आइ मिला¹ परिवारू² । होइ³ लागि मउछावरि⁴ यारू⁵ ।
माता⁶¹ पिता पा लागी बारी । औन्ह मिली मो दे² अकवारी ।
बहुरि आइ सभ¹ मिली² सहेला । मरिचाई मय माय जो³ मेली ।
फुनि¹ गावनि सभ² धरा³ आई⁴ । पाउ⁵ लागि कै⁶ मिली सवाइ⁷ ।
आई पौनि¹ छत्तीसौ² जाती । तन मन सिर मेंदुर राती ।

मगर बघावा घहु दिसि हुलसहि¹ सभ² परिवार ।
होहि उछाह कल्यान¹ कोलाहर² घर घर मंगलचार ॥

पाठान्तर—मा प्रति इसके पूर्व खंडित है।
(१) १ मा भा मिलेउ। २ मा ग भा परिवारा। ३ ग दिये। ४ ग नउछावरि। ५ मा अपारा ए मारा भा बारा।
(२) १ मा भा ए रा माता। २ मा ... भा ... ग ...।
(३) १ मा मे यह शब्द नहीं है। २ ग मिली। ३ भा उसी मन भा ग मंग नाथ जा।

(४) १ रा ए पुनि। २ मा ए सब। ३ ए चेरी। ४ मा आईं। ५ ए पाँव मा पायँ मा पाइ। ६ ए में यह शब्द नहीं है। ७ ए मिली सब बाईं, मा सबाईं रा मवाईं (<सबाईं नागरी लिपि)।

(५) १ मा मा पवनि ए पौंनि। २ ए छत्तीसो।

(६) १ मा ए हर्षित मा हरखित। २ मा सब।

(७) १ मा होइ उछाह कस्यान कोलाहल ए होइ कस्यान कोलाहल मा होइ लाम कस्यान कोराहर रा भएऊ सुरुम कोलाहल।

अर्थ—(१) पेमा से [उसका] परिवार आकर मिला और न्यौछावर का बारना (उतारा) होने लगा। (२) बालिका (पेमा) माता-पिता के चरणों से लगी अग्यों को बहु अँकवार देकर मिली। (३) तदनंतर [उसकी] वे समस्त सहेलियाँ आकर [उससे] मिलीं जो लड़कपन में उसके संग-साथ खेली हुई थीं। (४) तदनंतर पाली हुई समस्त चेरियाँ आईं और वे सब [उसके] पैरों से लगकर [उससे] मिलीं। (५) [तदनंतर] छत्तीसों जातियों की पौनियाँ (मंगल अवसरों पर पुरस्कारादि पाने वाली जातियों की स्त्रियाँ) आईं जो शरीर पर चंदन तथा सिर पर सेंदुर से रंजित थीं।

(६) नगर में चारों ओर बधावा हो रहा था और समस्त परिवार हर्षित हो रहा था तथा (७) उत्साह (उत्सव) कस्याण (स्वस्ति-पाठ ?) कोलाहल और मंगलाचार घर-घर में हो रहे थे।

टिप्पणी—(१) नेउछावरि < निवच्छ [दे]+ अवली = उतारी या वारी जाने वाली वस्तुओं की राशि। (२) अँकवारी < अंकपाली = आलिंगन। (४) चेरी < चेडी < चटी = दासी नौकरानी। (५) रात < रत्त < रक्त = रंजित। (६) बधावा < वद्धावण < वर्धापन = हर्षोत्साह सूचक बाद्य। (७) उछाह < उच्छाह < उत्साह। कोराहर < कोलाहल।

[२८८]

चित्रसेनि[1] पुनि पूछ[2] बारा । केइ[3] तोहि[4] दिन्ह मोंख[5] निस्तारा ।
कइ[1] दानौं मस छूटें छड़ाई[3] । मोंख मुकुति[4] बसें तुम्ह[5] पाई ।
कहहु मोहि समुझाइ सो बाता । जसें तोहि भा दाहिन[1] बिधाता ।
दोसर[1] नाम मौनरद[2] आई । रावन हुनि क[3] गिय[4] छड़ाई[5] ।
अब पहु कौंन सो माग्यौ तोरा[1] । जइ अधिमर[2] जग कीन्ह अजोग[3] ।
सुघ दरसन बिनु मनहिं जगत रहा जो अंधिआर[1] ।
तहु कहि स पुरुषारथ भाग्उ एम[2] उजिआर ।।

पाठान्तर—मा. में उद्धृत द्वितीय या तृतीय अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा चित्रसेनी। २ रा पूछै मुनि मा मा फनि पूछी ए पनि पूछै। ३ ए के। ४ रा तुम्ह ए तोहि। ५ मा दिन्ह मोख ए राम मनि।

(२) १ ए के। २ ए पसु (<बस फ़ारसी लिपि)। ३ मा ए छोड़ाई। ४ मा मोख मुकति। ५ ए तुम पैये।

(३) मा मा कहना जैसे तोहिं मा जने तोहि भी दहिन रा जस तोहि लागि भएउ ए पैगे भी मो दहिन।

(४) १ मा दुसरे म मा दोसर म। ३ ए रावन हरी औ मा रावन हनि जिन मा रावन हनि कै। ४ मा मा सीय ए सिया। ५ मा ए छोड़ाई मा छड़ाई।
(५) १ मा सारथी तोरा मा मो सारथि तोरा ए निस्तार तारागा। २ मा पाई अंधार, ए पो अँधार। ३ ए उजारा मा अजोरा।
(६) १ मा मा जग पो अहेउ अँधेर (अंधियार—मा) ए जगत हता अधार।
(७) १ मा कै। २ मा भएउ औ जग ए भी तेम।

अर्थ—(१) चित्रसेन तदनंतर बाला (पेमा) से पूछने लगा 'तुम्हें मोक्ष और निस्तार किसने दिया? (२) किसने तुम्हें दानव के वश में से छुड़ाया और तुमने मोक्ष-मुक्ति कैसे पाई? (३) मुझसे समझाकर यह वार्ता कहो कि विधाता तुम्हें किस प्रकार दक्षिण (अनुकूल) हुआ। (४) [लगता है कि] दूसरे राम आकर अवतरित हुए, [जिन्होंने] रावण (दानव) को मारकर सीता (तुम) को छुड़ाया। (५) अब बताओ कि तुम्हारा वह सारथी कौन है जिसने [हमारे] अंधकार-पूर्ण जगत् (जीवन) को प्रकाश-पूर्ण कर दिया।

(६) तुम्हारे दर्शनों के बिना हमारे नेत्रों के लिए जो जगत् (जीवन) अंधकारपूर्ण था (७) बताओ वह किसके पुरुषार्थ से इस प्रकार प्रकाशपूर्ण हो गया?"

टिप्पणी—(१) बारा < बाला। मोख < मोक्ष। (२) दाहिन < दक्षिण = अनुकूल। (३) बाता < वत्ता < वार्ता।

[२८९]

पमा लागि पिता सौं[1] कहइ[2]। कुँवर एक मार[3] सय[4] अहइ[5]।
महावीर रूपवन्त औ ग्याता[1]। सो मधुमालति के रंग[2] राता।
जग[1] सुर कुँवर का पाछिल अहा[2]। मता[3] पिता सउँ[4] पेम[5] कहा।
औ जिमि दानो हनउ[1] पचारा[2]। सो सब कहउ[3] पिता सेंउ बारी।
औ जस माहुस[1] बात मनाई[2]। पम[1] कहो पितहिं[2] समुझाई।
जहि धन माह अही म[1] बिधि कुँवरहिं[2] स आउ।
कहिउ दुरुख सब[1] आपन औ आहिक सुनिउ[2] मनि भाउ॥

पाठान्तर—(१) १ ए लाग पिता सौं। २ भा ए कहै। ३ मा मारें। ४ मा भा ए गय। ५ भा ए अहै।
(२) १ मा मा गियाना ए मा ग्याना। २ ए संग।
(३) १ ए मा जग। २ मा कुँअर पछिला आहा ए कुँअर पाछिल अहा। ३ ए ए मोर। ४ ए ए सौं। ५ भा मे पेमै कही है।
(४) १ ए दानौ हनेउ (<हनेउ भाषरी लिपि) ए गरजि हना। २ ए पचारी। ३ ए सब कहा। ४ मा सौ ए ए सौं।
(५) १ मा जस मानस ए सब मानुष। २ ए मनाई। ३ भा पेमा। ४ मा कन्ह पिता ए कहा पितहि।
(६) १ मा धनगोह मैं मनोज मा धनगह मैं आही भा धनगेह मैं म/ी धरमी। २ मा कुँअरहि ए कुँअरहि ता कुँवर।

(७) १ ए कहेउँ दुख सब मा कहेउं सबै दुख रा कहेउ सभ। २ मा मा मो मोहिका सुमेरं ए औ मोहि कर।

अर्थ—(१) पेमा पिता से कहने लगी "एक कुमार मेरे साथ है (२) वह महावीर कुलीन और ज्ञाता है वह मधुमालती के प्रेम में अनुरक्त है। (३) कुमार का जितना भी पिछला दुःख था पेमा ने [उसे] माता-पिता से बताया (४) और जिस प्रकार [उसने] दानव को ललकार कर मारा था, यह सब पिता से बालिका ने कहा। (५) उसकी और भी जितनी साहस की बातें थीं उन्हें भी पेमा ने पिता को समझाकर बताया।

(६) [उसने कहा] "जिस वन में मैं थी [उस वन में] विधाता [उस] कुमार को ले आया (७) [उससे] मैंने सब दुःख बताया और उसका [दुःख] सत्य भाव से सुना।

टिप्पणी—(२) रात < रत्त < रक्त = अनुरक्त। (३) (५) जेत < जेत्तिअ < यावत् = जितना। (४) बारी < बालिका। (७) सति < सत्य।

[२९०]

कहिउ¹ बात आपनि² सति भाऊ³ । जिमि दानौ मोहि⁴ बन ल आऊ⁵ ।
औ पुनि¹ सुनिउं² कुंवर क³ बाता । जसें मधुमालति रंग राता ।
जो म निजु अपन जिय¹ जानी । यह मधुमालति² रूप भुलानी ।
सो म सब घर कामिनि¹ करी । बात कुंवर के आगें² नरी³ ।
औ आपनि¹ ओहि² करि हियारी । जसें नान्हें³ कीन्हि बिम्हारी ।
औ जो गई क बाचा¹ मधुमालति कै² भाइ ।
सो अब लहि निरबाहति¹ सतत² दुइ जिहि आइ³ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहेउं। २ ए आपन रा स्पष्ट नहीं है। ३ मा भा भावा। ४ ए दानौं मोहि। ५ मा ना आवा।
(२) १ रा ए पुनि। २ रा सुनिहुं ए सुना। ३ मा की।
(३) १ ए तो मैं आपन जिउ कै। २ ए मधुमालति के।
(४) १ ए बात सबै बोहि ('बात' परवर्तीकरण में आता है) मा सब मधुमालति। २ ए सब आगें भा कै आगैं। ३ मा बरनी।
(५) १ ग भानी। २ मा बोरह भा इन्ह (मा 'एहि') ए बोहि। ३ मा नहउं मोहि जिमि जननि ए कहेउं मोरह जिमि जमि।
(६) १ मा औ गइ कै बाचा ए जो गई औ बाचा रा जो मोहि दुइ बाचा। २ मा ए की।
(७) १ मा मा ए निरबाहि। २ ए सतनि। ३ मा दुइ जिमी सोभाई ए यम दुद मा° मा दुइनि यह मिलि जाइ।

अर्थ—"(१) [उसने] मैंने सत्य भाव से अपनी बातें कहीं जिस प्रकार दानव मुझे वन में लाया था (२) और फिर कुमार की बातें सुनी, जिस प्रकार वह मधुमालती के प्रेम में अनुरक्त हुआ था। (३) जब मैंने भली-भाँति अपने मन में जान लिया कि वह (कुमार) मधुमालती के रूप

(सौन्दर्य) पर भूला हुआ है (४) तब मैंने [उस] श्रेष्ठ कामिनी की समस्त वार्ता कुमार के आगे सुलझा कर कही (५) और मैंने (बताई) अपनी और उसकी सौहार्दिकता जिस प्रकार बचपन में उससे मैंने परिचय किया था।

(६) और [बताई] उस बचन-बद्धता की [बात] जो मधुमालती की माँ [मेरी माँ से] कर गई थी (७) और यह [बताया] कि वह अब तक [प्रत्येक] द्वितीया को सर्वत्र आकर उसका निर्वाह करती है।"

टिप्पणी—(१) (४) बात < बता < वार्ता। (१) सनि < सन्य। (२) राग < रग < रक्त = अनुरक्त। (३) जो < जउ < यदा। तो < तउ < तदा। (७) मतन < मतन — मर्द निरन्तर।

[२९१]

सुनत कुँवर मधुमालति¹ बाता। हरखित भएउ पीत सउ² राता।
सुनतहि परा¹ पाउ² पर मोरे³। कहसि जीउ निउछावरि⁴ तोरे⁵।
कुँवरि चाह¹ म कतहु न पाएउ²। आजु कुँवरि³ तुइ मोहि जियाएउ⁴।
अब जो तोहि¹ बन छाड़ौं² मारी। लाज³ जननि मरु⁴ बन्ध गारी।
औ त¹ मधुमालति क² सहुली। तोहि कर्म³ बन तजौं अकेली।
राकस मारि मोहि ल आएउ¹ अपन घर बौमाइ²।
आदर मान करहु ओहि¹ केरा ओहु³ मोर बचाक भाइ²॥

पाठान्तर—(१) १ मा कामिनि की ए कामिनि की। २ मा पिता मुनि रा मा पीन गों ए पिता माँ।
(२) १ मा सुनने परेउ ए सुनतै परा। २ मा मा पाए, ए पाँव। ३ मा मोरा। ४ मा कही सी जीउ मोर आरती मा करेसि जीउ मोर वारी ए कहै जीव मोर वारनि। ५ मा तारा।
(३) १ मा ए गोज। २ ए पावा भा पाएउ। ३ मा ए मरन ती। ४ ए मोहि जिआवा।
(४) १ ए ताहि। २ मा छाड़ी। ३ ए लाजौं। ४ मा बड़ै (< बड़ुई)।
(५) १ ए औ रा जौ तू। २ मा की ए केरि। ३ ए तोहि सँग।
(६) १ रा आउ भा ए आवा। २ ए आगे कर बौमाउ भा जागे घर (अथवा 'भी') बौमाइ।
(७) १ मा रखु तहि ए करहु तेहि। २ ए और मार बाचा क भा' भा मा मोर बचा का भाइ रा औ मोहि बचा का भाइ मा और मोर बाचा पुजाइ।

अर्थ—"(१) मधुमालती की वार्ता सुनते ही कुमार हर्षित हुआ और वह पीले (रक्तहीन) से लाल (रक्त वर्ण का) हो गया। (२) [उसे] सुनते ही वह मेरे पैरों पर गिर पड़ा और [उसने] कहा "यह जीव तेरे [हेतु] न्योछावर है। (३) मैंने कुमारी का समाचार कहीं नहीं पाया था; आज ही, ऐ कुमारी तुमने [उसे सुनाकर] मुझे जीवित किया। (४) अब यदि ऐ कामिनी तुम्हें मैं बन में छोड़ दूँ [और चला जाऊँ] तो [मेरी] जननी लज्जित होगी और

मेरे कुल को गाली लगेगी। (५) और (फिर) तुम मधुमालती की सहेली हो, (इसलिए) तुम्हें वन में अकेली कैसे छोड़ दूँ ?

(६) [फलतः] राक्षस को मारकर मुझे वह अपने बल-व्यवसाय (पुरुषार्थ) से [यहाँ] लाया; (७) उसका आदर-मान करो [क्योंकि] वह मेरा वचन का भाई है (उसे मैंने वचन देकर भाई बनाया है)।

टिप्पणी—(१) बात < वत्ता < वार्त्ता। रात < रत्त < रक्त = लाल। (२) निछावरि < निवञ्छ [दे०] + अवली = उतारे (वारे) जाने वाले पदार्थों का समूह। (६) बौसाइ < व्यवसाय = पुरुषार्थ।

[२९२]

चित्रसेनि सुनि मति पठावा[1] । आदर क कुँवरहि लै आवा ।
उठि राज गहि[1] अंकम लावा । अपनें निकट[2] पाट बसावा ।
कहसि[1] तोरि का[2] अस्तुति सारौं । जिउ मति निश्चित[3] लाज निवारौं[4] ।
राजकुँवर[1] पुरुषारथ तोरें[2] । गएउ जीउ घट आएउ मोरें[3] ।
किछु विकलप जनि जिय महँ[1] मानहु । राज पाट आपन कै[2] जानहु ।
जसें[1] पिता राज[2] घर रहहु तसें[3] इहाँ[4] रहाहु ।
दुख उदास बैराग छाँड़ि[1] चित सलहु[2] कसि कराहु[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा कनि महथा बुलावा ए तौ महथ बोलावा मा फुनि मंत्र (अथवा मतिहिं) पठावा।
(२) १ मा राजै पै ए कै गहि। २ ए मा अपने। ३ मा ठाव।
(३) १ मा कहेउ मा कहेन्हि। २ ए का तेहि। ३ मा जीउ सती की चित जीउ कठिन है। ४ मा ए लाज नवारौं (< निवारौं फारसी लिपि)।
(४) १ मा कुआ ए कुमर। २ ए तोरी (< तोरे फारसी लिपि)। ३ मा गया जीव घट आएउ मोरे, ए गया जीव घट आहि मोरी रा मा सो जीउ घट आइम मोरैं।
(५) १ मा कुछ विकल्प चित माह न ए किछु विकल्प न मन धीं मा किछु बिकलेव चित माहँ न रा किछ बिचार जनि जिय महँ। २ मा सब अपना कै मा आपन सब रा आपनी कै।
(६) १ ए जैस। २ मा घुनेहिं मा घुग्र पहेहु। ३ मा तैसेहि। ४ मा अबहु।
(७) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए छोड़हु। ३ मा कराइ।

अर्थ—(१) [यह] सुनकर चित्रसेन ने मंत्री को भेजा जो आदर करके कुमार को लिवा लाया। (२) राजा ने उठकर और पकड़कर उसे अंक से लगा लिया तथा सिंहासन पर [उसे] अपने निकट बिठा लिया। (३) [राजा ने] कहा 'तुम्हारी क्या स्तुति करूँ ? केवल यत्किंचित् (जो कुछ) अपने जी में लज्जा की उतना निवारण कर रहा हूँ। (४) हे राजकुमार, तुम्हारे

पुरुषार्थ से जो जीव चला गया था वह मेरे पाट (शरीर) में आ गया। (५) अपने मन में कुछ भी विकल्प न करो (अन्यथा न समझो) [मेरे] राज्य और सिंहासन को अपना करके रखो।

(६) जैसे तुम [अपने] पिता के राजगृह में रहते वैसे ही तुम यहाँ रहो, (७) और चित्त से दुःख उदासीनता और वैराग्य छोड़कर खेलो और केलि (आनंद) करो।

टिप्पणी—(१) मंति < मन्त्रिन्। (२) पाट < पट्ट = सिंहासन। (३) कलिकिंचित < यत्किञ्चित् = जो कुछ। (५) विकलप < विकल्प।

[२९३]

औ जो किछु[1] जिय महँ हैं[2] बाता। सो प[3] मरइहि आनि बिधाता।
औ पनी मम राजदुलारी। सतत करिहि[1] सब तुम्हारी।
औरु अत[1] परिजन हु मोरा[2]। अस जानहु[3] सभ सवक तोरा[4]।
राज निकट[1] एक मंदिल[2] सवारा। आनि कुंवर कह उतहिं[3] उतारा।
सभ[1] मिलि कर[2] लागु[3] सवकाई। मकु बिलव ओ कहूं[4] न जाई।
कुंवर सदा बैरागी मधुमालति के नेह[1]।
कया[1] इहाँ जिउ तहवाँ[1] पा सउ[2] लागु सनेह[2]॥

पाठान्तर—(१) १ मा और जो कुछ। २ ए है मन की। ३ मा फनी ए पनि।
(२) १ ए सो निज करइहि।
(३) १ मा औ अत मम मा औ अन मब ए औ अन परिजन। २ ए मोरे। ३ मा जानेहु। ४ मा. ए सब। ६ रा तोरे।
(४) १ ए नगर। २ मा मा मंदिर। ३ मा मा तेहि ठाउ ए तहि ठाँव।
(५) १ मा सब। २ ए करै। ३ मा लागि। ४ मा मकु बिलमै कत कतहु मा मनु बिलमै इतहु कतहु।
(६) १ मा सनेह।
(७) १ ए कुंवर जीउ तहवा निज मा काया इहा जीव तहुवा ए काया इहवाँ जिउ उहवाँ। २ ए जासों लागु सनेह मा जासों लाग्यो नेह।

अर्थ—"(१) और जो कुछ [तुम्हारे] जी में बात है उसे तो विधाता लाकर मिलाएगा ही (२) और मेरी राजदुलारी पेंनी सर्वत्र तुम्हारी सेवा करेगी (३) और जितने मेरे अन्यादि हैं [उन्हें] ऐसा समझो कि [वे] सब तुम्हारे सेवक हैं।" (४) राजा ने [राज महल अपने भवन के] निकट ही एक मंदिर (भवन) को सजाया, और लाकर कुमार को वहीं (उसी में) उतारा (ठहराया)। (५) सब [राज-परिवार आदि] मिलकर [कुमार की] सेवा करने लगा कि संभव है [कुमार इस सेवा के कारण] रुक जावे और कहीं [अन्यत्र] न जावे।

(६) [फिर भी] कुमार मधुमालती के स्नेह में सर्वत्र विरक्त रहता। (७) उसकी काया [अवश्य] यहाँ थी किन्तु जीव वहाँ (उसके पास) था जिससे उसका स्नेह लगा हुआ था।

टिप्पणी—(१) बात < बत्ता < वार्ता। (२) मंदिल < मन्दिर = निवास मंदिर। (७) उहा < तत्र = वहाँ। (७) कया < काया = शरीर।

[२९४]

एहि[1] बिधि गए[2] कुँवरहि दिन चारी । बिरह क आगि हिएँ[3] परजारी ।
पेमहि राय कहेसि सुनु[1] बाला । मो तन उठी[2] बिरह क[3] ज्वाला[4] ।
अग्या देहु मोहि जौ बारी[1] । ढूँढौं[2] जाइ सो पेम पियारी[3] ।
सूत[1] भाग जागि मकु जाही[2] । परगट मिलै जो गुपुत जिय माहीं[3] ।
बिरह आगि हिय तिल[1] न बुझाई[2] । अमर अगिनि बिरह तन लाई[4] ।
कठिन आगि बिरह क[1] तिल तिल दह[2] सरीर ।
सुनि न आइ तसि[1] पेमा[2] दुसह[3] पेम क[4] पीर ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा एहि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए आगि पुनि हीयर मा अगिनि फुनि हिये मा अगिनी फुनि हीआ।
(२) १ ए राउ कहा सुन। २ मा मा मम भिम उठी ए मम तन उठी। ३ मा ए की। ४ ए ज्वाला।
(३) १ ए जो तुह बर नारी। २ मा बूढी ए बूढी। ३ मा ए पिआरी।
(४) १ मा सूती। २ मा भाग्य जागि मोर जाही ए भाग जाहि मकु जागी। ३ ए जो राज सभागी।
(५) १ ए बिरह अगिन न तिल मा बिरह दगध हिय तिल मा बिरह दग्ध चीमत स। २ ए न बोलाई। ३ ए अब प्रगट। ४ मा बिरहै जिय लाई, ए बिरहै जिउ लाई, मा बरिहहि लपाई।
(६) १ मा अगिन बिरह की मा आगि बिरही (मा 'बिरहे') कै ए आगि बिरह की। २ मा दहति।
(७) १ मा मा मई न पारी ए कहै न पारी। २ ए बिरह दुख (पूर्व पंक्ति चरण में 'बिरहा' के आने से पुनरुक्ति है)। ३ ए उठा रा दोसर। ४ मा प्रेम की ए पेम की।

अर्थ—(१) इस प्रकार कुमार को चार दिन हो गए, [तब] विरह की अग्नि उसके हृदय को जलाने लगी। (२) राजा (राजकुमार) ने पेमा से कहा "हे बाला सुनो; मेरे शरीर में विरह की ज्वाला उठी हुई है; (३) [अतः] यदि हे बालिके तुम आज्ञा दो तो उस प्रेमप्रिया को जाकर ढूँढ़ूँ। (४) संभव है कि मेरे सोए हुए भाग्य जग [ही] जावें और यह मुझे प्रत्यक्ष मिल जावे जो [मेरे] मन में गुप्त है। (५) [मेरे] हृदय में विरह की अग्नि तिल (तनिक) भी नहीं बुझ रही है; विरह ने [मेरे] शरीर में अमर अग्नि लगा दी है।

(६) विरह की कठिन अग्नि में [मेरा] शरीर तिल-तिल (थोड़ा-थोड़ा करके) दग्ध हो रहा है; (७) हे पेमा जैसी दुस्सह प्रेम की पीड़ा [होती] है वैसी [अन्य] सुनाई नहीं पड़ती है।"

टिप्पणी—(३) जौ < जउ < यदि। बारी ∠ बालिका। (४) सूता < सुप्त = सोया हुआ। (७) पीर < पीड़ा।

[२९५]

सुनि[1] यह[2] बात कुँवरि[3] दुख भारी । कहेसि कि[5] अब[4] कत होहु दुखारी ।
कहिउँ भेद[1] तुम्ह आगे सारा[2] । सो मन[3] तुम्ह चित हुते[5] बिसारा[6] ।
काल्हि[1] दुलहिनि आइहि[2] ओहि[3] बारी[3] । आइहि जननि साथ सो बारी[5] ।
बारी महँ[1] चित्रसारी[2] जहाँ । तुम्ह[3] परभात गए[4] बैसहु तहाँ ।
हम[1] और वह मिलनहि[2] मिलि जहँ[3] । मेरु मिसुन चित्रसारी[5] अहँ[6] ।
जौ उपाजहि परिच तिसु तुम्ह मउ[1] पाछिलि प्रीति[2] समारि ।
महकर्हि[1] दुवौ जनी[2] मिलि जइहु[3] तुम्ह[4] औ[5] राजकुँवारि[6] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए धनि । २ मा मा ए इन । ३ ग कुँवर । ४ मा बजनारी मा ए बरनारी ('दुखरि' के साथ 'बजनारी' और 'बरनारी' म पुनरुक्ति है) । ५ मा भा कहसि (कहसि कि—मा) ग कहै । ६ मा बात ।

(२) १ मा कहिओं मन मा कहिउ मन ग कहेउ दुख । २ ग मोहि आगे । ३ मा मा भारी । ४ ग सो मनु तुम मा सो मन तुम्ह ग सो तुम्ह । ५ ग हुते । ६ मा भा बिसारी ।

(३) १ मा ग कालि । २ ए दुलहन अहै । ३ मा मा ओहि बारी ए उन बारी । ४ मा अहै । ५ मा जननि सहित कर नारी ग जननी सहित कुँवारी मा जननि साथ कर बारी ।

(४) १ मा बारी माह ए बोह हम । २ ए चित्रसारि है भा चित्रसारी । ३ ग तुह । ४ मा मै ए मै ।

(५) १ मा मा ग मैं । २ ग औ बोह मिलन । ३ मा मैरौ ग मैरा । ४ मा मा मेलन मिसु ग मलन मिसु । ५ मा चित्रसारी । ६ मा भैरौ ग लगी ।

(६) १ मा मा जौ उपजिहि परचै तुम्ह मेरी (मनी—मा) ग जौ उपजहि उनसे तुम्हे परचै मनी । २ मा करन ।

(७) १ मा महकरि । २ मा दुनी जन ग दुनी ग जन । ३ ग मा जैहहि । ४ ए तुह । ५ मा मौर । ६ रा ए कुमारि ।

अर्थ—(१) यह बात सुनकर कुमारी को भारी दुख [हुआ], और उसने कहा, "अब कहो (क्यों) दुखी हो रहे हो ? (२) मैंने [तो] तुम्हारे आगे सारा भेद कह दिया था [किन्तु] उसे तुमने चित्त से विस्मृत कर दिया । (३) कल दुलहिन को उस [के आगे] की वाटी है [अतः कल] वह वालिका माँ के साथ [यहाँ] आएगी । (४) वाटिका में जहाँ चित्रसारी है प्रभात में तुम वहाँ जाकर बैठ जाना । (५) मैं और वह मिलने ही हिल-मिल जाएँगी और खेल के मिस (बहाने) से चित्रसारी में जा जाएँगी ।

(६) यदि पिछली प्रीति का स्मरण कर उसमें और तुममें परिचय उत्पन्न हुआ (७) तो तुम और वह राजकुमारी दोनों जन साथ ही मैं मिल जाओगे ।"

टिप्पणी—(३) बारी < वाटिका । (४) बारी < वाटिका । (५) मिसु < मिष = बहाना एवं व्याज ।

जनु तुइ हौं धरि[1] बाँह उचाई[2]। कहेहु[3] कि चलु उठि खेलहिं[4] जाई।
जागि उठिउँ[1] कोइ साथ न बारी। रोएउँ पालि[3] हँकारि[4] गुहारी[5]।
एहि[1] अंतर का देखौं बिधि परसन[2] भा आइ।
दुख क[1] रैनि अँधरी[2] छिनु[3] महँ[4] गई बिलाइ[5]॥

पाठान्तर—(१) १ मा सनति। २ मा पूछी ए पूछे मा पूछा।
(२) १ मा भा सुमिरि ए गोरि। २ मा रहिओ (<रह्या : फ़ारसी लिपि ?) ए रही।
(३) १ मा भा ए अति दुख अहेउ (रहा—ए) दुखी जिउ (जिव—ए)। २ मा देखिओ (<देख्यो फ़ारसी लिपि ?) ए देखा। ३ मा मोइ सपन ए मो सपना।
(४) १ मा भा तैं मोहि धरि। २ रा उठाई। ३ मा कहे ए कहा। ४ मा खेलै भा ए खेलै।
(५) १ ए उठी। २ मा भा ए पास। ३ मा भा रोइ पाली ए रोएउँ पालि। ४ ए हँकारि। ५ मा भा पुकारी।
(६) १ मा एहि। २ ए प्रसन्न।
(७) १ मा ए की। २ ए अँधारी। ३ रा छिन। ४ ए मा। ५ मा ए बिहाइ।

अर्थ—(१) जब बालिका ने शपथ देकर पूछा तब [वह] वार्ता कहने लगी। (२) [उसने कहा] "एक दिन दुष्ट को स्मरण कर मैं रोई और दुख से सो रही; कोई भी पास में नहीं था। (३) क्योंकि मेरा जी अत्यधिक दुख में था, इसलिए मैंने स्वप्न में तुम्हारा मुख देखा। (४) [देखा कि] मानो तुमने बाहों से पकड़ कर मुझे उठाया है और तुम कह रही हो 'चलो उठो हम चलकर खेलें।' (५) मैं जाग उठी किन्तु हे बालिका कोई मेरे साथ (पास) नहीं था [इसलिए] मैं हुंकार डाल कर (चीत्कार कर) और गुहार (रक्षा के लिए पुकार) [लगा] कर रोने लगी।

(६) इसी बीच क्या देखती हूँ कि विधाता प्रसन्न होकर आ गया और (७) दुख की अंधेरी रात क्षण में विलीन हो गई।"

टिप्पणी—(१) जौ<जउ<यत्=जब। सपत<शपथ। (२) (५) बारी<बालिका। (१) बात<बत्ता<वार्ता। (३) जी<जआ<यत्=क्योंकि। (६) परसन<प्रसन्न। (७) छिन<क्षण। बिला<वि+ली=विलीन होना।

[२९९]

निसिग माँह सुम[1] बरी सुभानी। दुग क[2] आगि[3] परा मग[4] पानी।
दूबर तन राता रग हारें[1]। लै[2] माएउ[3] बिधना सिर मारे[4]।
आहि पुछिउँ[1] न सपन[2] बिधाना। रोइ पहुमि जैसे मोहि राता[3]।
अस दुग सुबर बगानउ[1] सोग। सुनि न रहेउ[2] जिउ टान्ह भाग।

सुनि दुख मोहि जिय[1] परेउ फफोला[2] । नैन नीर भा[3] चिप चिप[4] चोला[5] ।
पेम बात पाछिलि[1] अति[2] तुम्ह दुहु कर[3] बेवहार[4] ।
सो सब[1] कहसि रोइ मोहि[2] आगें पेम घायें[3] बिसँभार[4] ॥

पाठान्तर—भा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए गो। २ भा की ए के। ३ भा अगिनि। ४ भा भा परेउ। ५ भा सिर।

(२) १ ए तोरे। २ भा मेइ। ३ ए आवा। ४ ए मोरे।

(३) १ ए ताहि पूछौं। २ भा देइ सपति। ३ ए जैसी होन।

(४) १ भा बनानीर ए बनाना। २ ए रहा।

(५) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ भा भभाला ए भर्म भोला। ३ ए भी। ४ भा चलबल भा चकचक (<चिपचिप फारसी लिपि ?) ए रचा।

(६) १ ए पाछिली। २ ए जेति भा भा बत बाही ए गर। ३ ए दुइ दस को। ४ भा व्यवहार।

(७) १ भा सब। २ भा भा ए मोहि आग (*आगें—भा*) ए मोहि। ३ ए ए पाव। ४ ए बिसभारि।

अर्थ—"(१) क्षण भर में वह दुख को पड़ी सुन गई (आ पहुँची) और दुख की अग्नि पर दुख का पानी पड़ गया : (२) तुम्हारे प्रेम में अनुरक्त एक कुमार की विपाता मेरे सिर (पास) से आया। (३) उसको मैंने विधाता की शपथ देकर पूछा तो उसने रो रोकर बताया जिस प्रकार वह तुम पर अनुरक्त हुआ था। (४) कुमार ने तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) दुख इस प्रकार बताया कि [उसे] सुनकर मेरा जी स्थान पर नहीं रहा (विचलित हो उठा)। (५) उस दुख को सुनकर मेरे जी में फफोला पड़ गया और [मेरे] नैनों के नीर (अश्रुओं) से मेरी चोली चिप्पी चिप्पी हो गई (भीगकर शरीर से चिपक गई ?)।

(६) पिछली जितनी प्रेम-वार्त्ता थी और तुम दोनों का [जितना भी] व्यवहार [हुआ] था (७) वह सभी उस प्रेम-घाव से अचेत [कुमार] ने मेरे आगे रो-रोकर कहा।"

टिप्पणी—(२) (३) रात < रक्त = अनुरक्त। (३) सपत < शपथ। (४) बनान बखान < व्याख्यानम् = बखाना। (५) बात < बत्ता < वार्ता। अत < अतिम < यावत् = जितना बवहार < व्यवहार।

[३००]

स बनि बसि सुख परमन्ह भरी । जिनि काम्हे मोरी दुख की[1] भरी ।
मउघाउरि[1] का मारौं ढोरी । जहि पम्मार मुरनि भइ[2] मारी ।
दुख गमु बूड़ति म[1] बारी । त[1] मोरि भइगि[1] आन पहारी[4] ।
सुख परमन्ह[1] पर औ[2] जिउ बारौं । तबहु[1] न मोग[4] ताम पारौं ।
जो म क धर चिन रायन[1] ढोही[2] । हैगें माग हौन बनि[1] मोही ।

सहस जीउ निउछाउरि आनि[1] करौं मैं तोरि ।
जहि परसाद बिधात मोंख मुकुति दिए[1] मोरि ।।

पाठान्तर—ए में इस दोहे के स्थान पर भी बाद के छंद वाला दोहा है।

(१) १ रा जेहि परसाद कटी मोहि (तुल परवर्ती अर्द्धाली के दूसरे चरण की शब्दावली)।

(२) १ ए नेवछावरि। २ ए मुकुती भौ।

(३) १ मा समुद बूड़त मोह ए समुद मो बूड़ति भा समुद बूड़त माहि। २ मा तू। ३ ए भई। ४ मा मवहारी।

(४) १ रा तुम चरनन ए कुंअरि चरन। २ ए मैं जीव। ३ मा तौ ही। ४ मा निवां रा निमिख। ५ ए देन में मा तोर दै।

(५) १ ए रावत तोही। २ ए कैसे। ३ मा होती मोख बदी ए होत मोख पद।

(६) १ मा आसी मा एक।

(७) १ मा किय मा किही।

अर्थ—"(१) मैं तुम्हारे चरणों की बलिहार हूँ जिन्होंने कुल की मेरी बेड़ी काट दी। (२) मैं तुम पर क्या न्यौछावर करूँ जिसकी कृपा से मेरी मुक्ति हुई ? (३) हे बालिका मैं दुःख-समुद्र में डूब रही थी और तुम आकर मेरी कर्णधार हुई। (४) यदि तुम्हारे चरणों पर अपने जीव (प्राणों) को वार दूँ तब (तो) भी मैं तुम्हारा [तुम्हारे ऋण का] एक निष्क (सिक्का) न दे सकूँगी। (५) यदि कुमार का चित्त तुम पर अनुरक्त न हुआ होता तो बंदी [-गृह] से कैसे मेरा मोक्ष होता ?

(६) मैं तो तुम्हें सहस्र जीव लाकर न्यौछावर करूँ (७) जिसकी कृपा से विधाता ने मुझे मेरी मोक्ष-मुक्ति दी।"

टिप्पणी—(३) बारी < बालिका। कंडहार < कर्णधार। (४) भौ < भउ < यदि। नीख < निक्का < निष्क = एक पुराना सोने का सिक्का। (५) (७) मोख < मोक्ष।

[३०१]

पहुरि मोहि पूछसि सुनु बारा[1] । तोहि मोहि तस मन्त्र अस बवहारा ।
तो म[1] दुख आपन जस[2] भहा । परिहरि राज[3] कुंवर सउ[4] कहा ।
फनि[1] म आपनि तोरि[2] हियारी । जसि भही तसि कही उघारी[3] ।
सुनि तोर माउ[1] परा[2] मुरछाई । बिसहर[3] डसा[4] लहरि जनु[5] आई ।
पुनि[1] जो चन चितहि[2] भा ताही । पूछ[3] बात कहमि[4] जगि जाही ।
हारे बिरह भभूता[1] काछें[2] भरा अवधूत[3] ।
रावस मारि मोहि ल[1] आवा[2] धनि जननी[3] जेहि पूत[4] ।।

पाठान्तर—(१) १ ए माहि पूछमि ना बारी। २ भा तोरेंहि बन कहु का बवहारा ए तोहि मोहि बन मन क बेवहारी भा तोरे एहि मन कहु का ब्यवहारा।

(२) १ ए पर्मै। २ भा ए जन। ३ ए राम। ४ भा से ए है ए सों।

(३) १ रा ए पुनि। २ ए भाखन हार। ३ भा जैसी माहि तैसी कही बिचारी ए जसि आहा तसि कहा बिचारा भा जैसि अही तसि कहउ बिचारी।

(४) १ ए नाम। २ भा भा परेउ। ३ भा बिखपरि, ए बहुरि। ४ ए ऐसा। ५ ए जा।

(५) १ भा. फुनि। २ ए चितहि। ३ ए पूछई भा. पूछिमी भा पूछिमि। ४ भा कहइ भा कहेउं।

(६) १ भा बिभुता। २ ए माहि। ३ ए मधून।

(७) १ भा मोहि लइ ए माहि मैं। २ भा भा आनउ। ३ भा भा मो जननि। ४ ए तेहि।

अर्थ—"(१) तदनंतर हे बाला सुनो उसने मुझसे पूछा 'तुमसे और उस (मधुमालती) से क्या व्यवहार है? क्या (वह) बताओ। (२) तब मैंने अपना जितना (जो कुछ) दुख था सब खोलकर कुमार से बताया। (३) तदनंतर मैंने अपना और तुम्हारा सौहार्द जैसा था वैसा खोल कर (स्पष्ट) बताया। (४) तुम्हारा नाम सुनकर वह मूर्च्छित हो कर गिर पड़ा मानो उसे विषधर (सर्प) ने काटा हो और उसे लहर आ रही हो। (५) फिर, जो उसे चित्त में चेत हुआ पूछने पर उसने जैसी वार्त्ता थी बताई।

(६) वह तेरे विरह की राख लपेटे और अवधूत (योगी) का वेष काछे (बनाए) हुए था। (७) राक्षस को मार कर [वहाँ] मुझे [यहाँ] ले आया वह जननी धन्य है जिसका वह पुत्र है।"

टिप्पणी—(१) बारा < बाला। (२) बवहार < व्यवहार। (२) जत < जत्तिम < यावत् = जितना। (३) हियारो < हृदयारणा = सौहार्द। (३) उघार < उग्घार < उद् + घाटय् = खोलना। (४) बिसहर < विषधर = सर्प। (५) बात < बत्ता < वार्त्ता। (६) भभूति < विभूति = राख।

[३०२]

सुनत चकित भइ[१] राजकुमारी। कहेसि मोहि माहि कसि बिसारी[२]।
कौन[१] कवन का जानौं बाता। मोरें रूप कहाँ[२] यह[३] राता।
दग मोहि कहाँ ओइ[१] पावा। औ कइ ओहि[२] मोर नाउ[३] सुनावा[४]।
पिता गिरिह[१] म राजकुमारी[२]। पर पुरुषहि मोहि कसि[३] बिसारी।
जो भम सखा[१] पिता मनि[२] पावहिं। मोहि जियत[३] धरि ठाइ[४] गड़ावहिं[५]।
अग आगम तुम[१] पर्मो कान्ह भावसि माहि[२]।[३]
मोहि लागे गोरि[१] न्याहा मति[२] मोरें रानि[३] तोहि[४]।[५]
११

पाठान्तर—(१) १ ए मा। २ रा काहे रानी देखि मोहि गारी।

(२) १ मा कवन। २ ए कहवाँ। ३ मा ए कोह।

(३) १ ए देखै कोन कहवाँ मोहि। २ मा मा केइ काही ए के कोह। ३ ए नाव। ४ मा मा ए सुनावा।

(४) १ मा प्रीहै ए ग्रिह। २ मा बारि कुवारी। ३ कैस।

(५) १ ए मा मात रा मांत। मा पाठ त्रुटित है २ रा पावै। ३ मा भा जिमते। ४ ए पै गारा। ५ मा गड़बावही ए मरावहि, रा गड़ावै।

(६) १ मा ए तैं। २ ए यमा यहा लमावसि मोहि भा बरबस काइ लमावसि मोहि। ३ मा मे पूरे चरण का पाठ त्रुटित है।

(७) १ ए लाहु तोहि। २ ए पत। ३ ए पत। ४ ए तोहि। ५ मा में चरण के प्रथम पंक्ति तक पाठ त्रुटित है।

अर्थ—(१) यह सुनते ही राजकुमारी (मधुमालती) चकरा गई और उसने कहा, "मुझसे उससे कसी पहिचान? (२) वह कुमार कौन है और उसकी वार्ता मैं क्या जानूँ? मेरे रूप पर वह कहाँ अनुरक्त हुआ? (३) वह मुझे देखने कहाँ पाया और किसने उसे मेरा नाम बताया? (४) मैं राजकुमारी हूँ और पिता के घर मे [रहती रही] हूँ; [अत] पर-पुरुष से मेरी पहिचान कैसी? (५) यदि [मेरे] माता-पिता ऐसा सुन पावें तो वे मुझे जीता-जी गड़वा दें।

(६) तू ऐसे पैमा इस प्रकार का अपयश मुझे क्यों लगा रही है? (७) मेरे लाभ से तेरा [भी] लाभ और मेरी क्षति से तेरी [भी] क्षति है।"

टिप्पणी—(२) बात < वत्ता < वार्ता। रत्त < रात = अनुरक्त। (७) लाहु < लाभ। खति < क्षति = हानि।

[३०३]

सुइ¹ सुजानि औ चतुरि² सयानी। कहत बात अगि तूँ³ म⁴ अजानी।
बहिर्उ सयति¹ म तोहि उपदमा। बात कहिय जहि¹ किछु² लव³ मरा।
म क्स्वति गज घर घिया¹। महत लाज ताहि¹ आइ न छिया।³
तोहि मतें¹ मोहि बार² हियारी। तो म महो अइसि तारि³ गारी।
गरग घ जग करें पसारा¹। हम पुहु कम पम ववहारा²।
रूप न ननहु¹ देखिउ औ गवनहु² गुनिउ म माउ।
ता मउं¹ अपजस लावसि जावर² नाउं³ न जानौं ठाउ॥

पाठान्तर—मा में उपयका तीसरी तथा चौथी अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा मा ए तैं। २ ए सुजान ज चतुर। ३ भा मा कवि तैं ए तैं मोहि। ४ ए मे यह शब्द नहीं है।

( ) १ भा बहिउ मनो मा बड़ो मरनि ए गुर्जन मनो। मा बहिउ ए नहीं। ३ ए जा। ४ ए मे यह शब्द नहीं है।

(३) १ मा भा जाई। २ ए नाहे। ३ मा भा बरन छिया गुर (तोहि—

मा) लाज न आई, ए कहत लाज तोरे आइ न हिया।

(४) १ मा तोहि सेंठी ए तोहिं सेंठी। २ मा मोरी घर, ए मोहि बार। ३ मा मा तोरि मस ए ऐसी तारि।

(५) १ मा बसै मीन पतारा ए मा बस मनि (मीन—भा) पतारा। २ मा. गव्हु। ३ मा कैसा। ४ मा ब्यवहारा।

(६) १ रा नैनन ए नैन नाहि। २ ए बला। ३ रा स्रवन सुनिउ नाहि (?) नाउँ ए सुवन सुना मा नाउ भा औ स्रवन सुनेउ नहिं नाउ मा औ स्रवनन्ह सुनेउ न काउ।

(७) रा तेहि सौं ए तासौं मा सेठै ठै। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए नाम। ४ मा ए में यह शब्द नहीं है।

अर्थ—"(१) तू जानकार चतुर और सयान है [तब भी] ऐसी बात कहते तू लज्जित नहीं हुई? (२) मैं [पूरी] शक्ति के साथ (भरसक) तुझे यह उपदेश कह रही हूँ कि बात वह कहिए (कहनी चाहिए) जिसका कवलेस [तो] हो। (३) मैं कुलीना और राजगृह की कन्या हूँ [फिर भी ऐसी] लज्जा की बात कहते हुए तुझे छिया (अस्पृश्यता की अनुभूति) नहीं आई? तुमसे-मुझसे बालपन का सौहार्द है तब मैंने तेरी ऐसी गाली सहन कर ली है। (५) स्वर्ग (आकाश) में चन्द्रमा होता है और पाताल में कुमुदिनी होती है इन दोनों में प्रेम-व्यवहार कैसा?

(६) मैंने [उसका] रूप नेत्रों से नहीं देखा और न श्रवणों से उसका नाम सुना (७) तू तो मुझे उससे (उसके निहोरे) अपमान लगा रही है जिसका न मैं नाम जानती हूँ और न स्थान।"

टिप्पणी—(१) सुजान < सुज्ञान। सयान < सज्ञान। (३) धिया < दुहितृ = कन्या। छिया < अस्पृश्य (?) (४) हियारी < हृदयालुता = सौहार्द। (४) कुई < कुमुदिनी। (५) बेवहार < व्यवहार। (६) स्रवन < श्रवण = कान।

[३०४]

बात बूझि तौ अहु¹ सयानी । अइसि बात उतर² तिय³ पानी ।
कथन छोर मोहि¹ सिख जनु² लागा । अस कोइ³ सर पूरि कर लागा⁴ ।
अबहु जननि कोर¹ मैं बारी । का जानौं कसि² पुरुष हियारी³ ।
पुरुष न जानौं कार कि¹ सनू । प्रीति कसि कस² पुरुष क³ हतू ।
अस अपजस कोइ लाउ न कहू¹ । प्रीति बरनि क² चित्र उरेहू³ ।
जसि तुइ बात मह भगि अनभो¹ असि जग कोइ न कहाइ² ।
तिया जाति आजम कर¹ पागा² पापन्ह जाइ समाइ³ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा बुझि कै कहिब ए बूझिनी नहीं। २ मा एसी बातन्ह उठै ए जस बातन्ह सो मा असि बातन्ह उतरै। ३ मा तिय ए उतरै, मा दै।
(२) १ ए मोहि। २ भा सुनि। ३ मा ए रा रा कोउ। ४ मा पूरी पर लागा।
(३) १ मा कैर, ए कोरा मा कोर। २ ए घर मा कैसी। ३ हियारी।

(४) १ ए पुर्ख न जानै कापरि मा पुरुस न जानी मुयाम कै। २ मा कैंधि। ३ रा का। ४ ए पर पुरुषहि मोहि कैसन हेतु।
(५) १ ए लाव नाहीं। २ मा भा तो करिय ए कै करी। ३ ए उरेही।
(६) मा जसि तै बात कही सखि अनमी ए जस तै बात कहत हँसि मा जैसी तैं बात कही लगी अनुभव रा जसि तुई बात कहै सखि।
(७) १ ए पर। २ ए मे यह शब्द नहीं है, मा फुर। ३ मा बातहि जाइ न नहीं ए कुल पै नासै सोउ।

अर्थ— (१) हे सयानी बात समझ लो कह ऐसी बात से स्त्री का पानी उतर जाता है। (२) तेरा वचन मुझे मानो विष लगा। ऐसा भी मूल का वाणा (निराधार कथन) कोई करता (करता) है? (३) मैं तो आज (अब) भी जननी के क्रोड़ में [रहती हुई] बालिका हूँ मैं क्या जानूँ कि पुरुष से सौहार्द कैसा होता है? (४) मैं नहीं जानती कि पुरुष काला होता है या श्वेत और उसकी प्रीति कैसी होती है और कैसा होता है उसका हेतु (प्रेम)। (५) ऐसा अपयश कोई किसी प्रकार नहीं लगाता है भित्ति देख कर चित्र का उल्लेखन करो (आधार-युक्त कथन करो)।

(६) हे सखी जैसी अनहोनी बात तू कर रही है ऐसी जगत् मे कोई नहीं कहता है। (७) स्त्री-जाति अपयश का क्रोड़ होती है (अपयश उसमें पलता है) और [इस प्रकार की] बातों से वह नष्ट हो जाती है।"

टिप्पणी—(३) (७) कोर<क्रोड़=गोद। (३) हियारी<हृदयामना=सौहार्द। (५) कैहु<केह<कीदृश्=किसी प्रकार। उरेह<उल्लिख्<उद्+लिख्=रेखांकित करना।

[३०५]

सुनत उतर मधुमालति केरा। कामिनि मुख पम हसि हेरा।
कहसि मोहि न बरजहु[1] बाला। दसौ[2] बोलहि हतु कहि[3] गाला।
मोमनि हट[1] अब[2] मन धुनाई। मो सेउं[3] कपट कै[4] बात बनाई।[5]
अमुगाई मोमउ बनि[1] आदहि। धाइ क आगे[2] पट छपाइहि[3]।
मानहि[4] बात छानि ए[1] जाय[2]। सपा मउ[3] चोरी नहि पावै[4]।

मानि अंत मउ[1] जानौं न गम[2] बात तुम्हारि[3]।
पम कि छन छपाए[1] चोरी कहु मम[2] यात उपारि॥

पाठान्तर—(१) १ ए मोरि भै (तुम अमले बरस के मोह न भै) मा पमा हसि।
(२) १ मा मोहि हार बरजहु ए मोहि भै बरनी। २ ए, देखो। ३ मा हतु कहने ए है कैहि। ४ ए हाला।
(३) १ मा ए हो मा. बाहु। २ ए को। ३ मा मोहि सो है ए मो सो को। ४ ए क। ५ मा. मोहि कतो ए बात बनाई।
(४) १ मा आमेउ बनि न ए न मा मै बनि। २ मा धाई मेउ ए धाइ के आगे आ धर्म कतो कि। ३ मा कह पट लपटाइहि।
(५) १ मा छानिहि बाट छिपी है ए छानिहि पाट छिपहि जो

मा दान बात छंदर पै रा मूठी बात छदरि पै। २ मा जाचई, मा भावै। ३ मा सगियन का चोरी फावई, ए मंमी सन की चोरी फावै मा सगी सनों कि चोरी फावै।

(६) १ मा से ए लगि मा सौं। २ मा ए सब। ३ मा ए तोहारि।

(७) १ मा छिपहि छिपाये ए छपै छपाये मा छपहि छपायें। २ मा मा कहु तुम ए कहहु न।

अर्थ—(१) मधुमालती का उत्तर सुनते ही उस कामिनी के मुख को (की ओर) प्रेमा ने हँस कर देखा (२) और कहा, "सम्मुख होकर कहो तो देखूँ कि तुम किस गाल से बोलती हो। (३) तुम अब नेत्रों की धूर्तता सीख रही हो [जिससे] तुमने मुझसे कपट की बात बताई है। (४) [तुम्हारी] यह चतुरता मुझसे बन आएगी जो तुम धाय के आगे पेट छिपा रही हो! (५) अन्य से भले ही बातों में छल किया जाए, किन्तु साखी से चोरी नहीं फबती है।

(६) आदि से अंत तक मैं तुम्हारी सभी बातें जानती हूँ (७) ऐ बावली प्रेम क्या छिपाए से छिपता है? सब बातें खोल कर कहो।

टिप्पणी—(३) धुनाई < धूर्तता। (५) आन < अन्य। छल < छद्म। (७) चोरी < चोरि < चौर्य। बात < बत्ता < वार्ता।

[३०६]

कहहि बात मो सउ[1] मतिमाता । परिहरि[2] बहुत[3] भाँति कर धावा ।
बदन पियर औ खीन सरीरा । परगट तोहि[1] पेम क[2] पीरा ।
कहहि[1] कहाँ रहि[2] बात बनाए[3] । चोरी पेम न[4] छपै छपाए[5] ।
तुइ मोरि सखी जीव तें[1] प्यारी । कस न कहहि मोहि[2] बात उघारी ।
जौ नहि[1] मोहि पतीजसि बारी । माँगि देउ महिरानि तुम्हारी[2] ।
मुदरी माँगि कुँवर सउ[1] कर[2] कामिनि के[3] दीन्हि ।
कहसि कहाँ[1] एहि छाडिहु[2] नेहु मो[3] आपनि[4] कीन्हि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए कहहु बात मोहि (मो—ए) सौं। २ मा परिहर। ३ मा बहुत।

(२) १ ए तोहि मा लखिय। २ मा ए की।

(३) १ ए कहहु। २ रा ए लगि। ३ मा मनाए, ए बनाये। ४ ए मा कि मा को। ५ मा छिपइ छिपाये ए छपै छपावै मा छपहि छपाए।

(४) १ मा मा तू मोहि (मोरि—मा) सखी जीव सौं ए तैं जो सखी मोरि पेम। २ ए कहो मोहि मा कहहि मोहि रा कहसि मोहि।

(५) १ ए न (<नहि फारसी लिपि)। २ ए महिरान तोहारी।

(६) १ मा मे ए सौं। २ मा सब। ३ मा मा कर ए लक।

(७) १ ए कहो। २ मा ए छाडहु (एहु—ए) छोडहु। ३ ए नेहु जो। ४ ए आपहु।

अर्थ—"(१) मुझसे तुम सत्य भाव से बात कहो और बहुत दीवाल [पर] का दौड़ना छोड़ दो [क्योंकि तुम्हें उससे कभी न कभी नीचे उतरना हो पड़ेगा]। (२) तुम्हारा मुख पीला है और शरीर क्षीण [अतः] प्रकट ही तुम्हें प्रेम की पीड़ा है। (३) तुम कहाँ तक बना कर बातें करोगी ? ऐ बावली प्रेम छिपाने से नहीं छिपता है। (४) तुम मेरी सखी हो और मुझे प्राणों से भी प्रिय हो फिर क्यों तुम मुझसे [सारी] बातें खोल कर नहीं कहती हो ? (५) यदि तुम ऐ बालिका मेरी प्रतीति नहीं करती हो तो मैं तुम्हारी सहदानी माँग कर दूँ।"

(६) [यह कह कर] उसने कुमार से मुद्रिका माँग कर [उसे] कामिनी के हाथों में दिया (७) [और] कहा "इसे तुमने कहाँ छोड़ा था ? तुम अपनी वह पहचान लो।"

टिप्पणी—(१) मति < सत्य। (२) खीन < क्षीण। (३) बौरी < बाउली < वातुली। (५) पतीज < प्रतिज्ञ ~ प्रति + इ = विश्वास करना। बारी < बालिका। साहिदानि < साभिज्ञान = चिह्न। (६) मुदरी < मुद्रिका।

[३०७]

जबहाँ दिस्टि परी सहिदानी । दुवौ[1] डोलन्ह भरि आएउ[2] पानी ।
चाहसि बहुत[1] जतन[2] छपाव[3] । बरबस जल चखु भरि भरि आवै[4] ।
प्रिग मन पेम रह नहिं[1] गोवा । यह[2] सुवास यह[3] सवरि बिछोवा ।
गर्गे पमु न रहै[1] छपानां । उमड मन जगत सभ[2] जानां ।
पम पिरीमम कर[1] बिछावा । परगट भा निजु रहे[2] म गोवा ।
पाछिलि प्रीति[1] सबरि जिय[2] मसन[3] उपजा[4] विरह विकार[5] ।
माँभि म मसी सामि गिय[1] पमी राएमि[2] पालि इफार[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुनउ। २ मा नैन मायै भरि मा डोल आए भरि रा डाल भरि आए।
(२) १ ए बहुत। २ मा जतन न। ३ ए छपाय। ४ ए आवै।
(३) १ ए रहा ना भा रहेउ नहि। २ मा उनह ए येह। ३ मा इनह ए यह। ४ मा मुमिरि, ए सौरि।
(४) १ ए राग पेम न रहा भा राग पम न रहेउ। २ ए मा सब।
(५) १ मा प्रम प्रीतम कर ए पम प्रीति का रहा रा पम पिआरे केर। २ मा भा भएउ ए भौ। ३ ए औ रहा भा निजु रहेउ।
(६) १ ए मा पाछिलि बात रा पाछिली प्रीति। २ मा सोवरी जिय ए सपुति जिउ। ३ मा मतन। ४ मा भा उपजउ। ५ मा पुकार।
(७) १ मा पर ए सीर। २ ए गई। ३ मा ए इरारि।

अर्थ—(१) जब वह सहिदानी दृष्टि पड़ी [मधुमालती के] दोनों नेत्रों में पानी भर आया। (२) यद्यपि यत्न करके उसने उसे छिपाना चाहा किन्तु उसके नेत्र बरबस ही भर भर आते थे। (३) कुमार और प्रेम गोपित नहीं रहते हैं क्योंकि उनमें सुवास होती है और इनके स्मरण करने (स्मरण करने) वियोग होता है। (४) [छिपा कर] रखने से प्रेम छिपा नहीं रहता है क्योंकि नेत्रों के

[आँसुओं से भरकर] उमड़ पड़ने पर उसे समस्त जगत् जान जाता है (५) और प्रेम-प्रियतम का बिछोह [एक बार] प्रकट हो गया तो फिर वह भलीभाँति गोपित नहीं रहता है।

(६) पिछली प्रीति का जी में स्मरण कर (करने पर) मगन कहते हैं [मधमालती के मन में] विरह का विकार उत्पन्न हुआ। (७) [तब] वह [अपने को] रोक न सकी और पेमा के गले लग कर डकार (चीत्कार) छोड़कर रोने लगी।

टिप्पणी—(१) सहिदानि<साभिज्ञान=चिह्न। डोम<दोन्म [दे]=श्यामल मेघ। (२) बगु<बकल<घन=मेघ। (३) (५) गावा<गोपित=छिपाया। (५) बिछोव<बिच्छोह [दे]=विरह वियोग। (७) थाँम<थम<स्तम्भ्=निराम करना रोकना।

[३०८]

पर क पम कठ छगावा[1]। हरखी औ[2] परमाधि बुझावा[3]।
बिरह बियासेसि[1] उनरठ बानी। यान कहु पिम मरम भुलानी।
पूछसि[1] कुवर कहा मा बारा[2]। सपनें बिरह जा गा माहि मारा[3]।
सपन जागि[1] जो दगउ हुरा। मजि मागि नहि ह ओहि करी।[2]
जो मुरगी यह करहि जा तोही[1]। स गा मागि आपनि द मोही।[2]
अब महि बिरह आगि[1] जिय रागिउ[2] लाग[3] कहुँम क कानि।
लाज म कहिउ न काहु मउ[4] गुपुत महिउ जिय[5] हानि॥

पाठान्तर—उपयुक्त पाँचवा अर्द्धाली रा में नहीं है।

(१) १ मा छाई भा छाई ए छाड़ावा। २ रा हरख और मा हरी कि मो। ३ मा. परबादि बुझाई मा परबाधि बसाई ए परबाधि बसावा रा परमाद जगावा।

(२) १ ए ब्यापुली। २ ए सिर कर रा बाहिल।

(३) १ ए पूछै। मा भा करा (कहु—मा) मा कुअर करनारी ए कुअर्हि कहा मा मारी। ३ मा सपने गयेउ मोह मौंगुर मारी भा सपन जो मौ माहि मौंगुर मारी ए सपन बिरह माहि गो मारी।

(४) १ मा सपन जागि भा जगें सपन। २ मा देखी ए देखौं। ३ ए मै गो माहि मारन मो फरा।

(५) १ ए है कर मानै। ए मन मोगि न बाँ मैं करी मा मै मैं बारि आपनि दै मारा।

(६) १ मा भा आगनि ए अगिन। २ ए जिउ रागा मा जीउ रागउ भा जिय रागउ। ३ मा. भा लागि।

(७) १ मा भा लाजन्ह कहउ म काह मै (काह—मा) रा ए लाजन कहउँ काह मौ। २ मा मति ए मता। ३ ए जिउ।

अर्थ—(१) देखो ने बरबस गला छुड़ाया; उसने उसे [रोने से] हटका (मना किया) और प्रबोधन देकर समझाया। (२) [फिर भी] विरह से व्याकुल [मधुमालती] उत्कंठित वाणी से और चित्त में भ्रम से भूली हुई बातें कहती रही। (३) उसने पूछा "ऐ बालिका वह कुमार कहाँ है जो मुझे स्वप्न में [अपने] विरह से मार गया था ? (४) स्वप्न से जागकर जो मैंने अवलोकन करके देखा तो [पाया कि] शय्या मेरी नहीं उसकी है। (५) और यह मुद्रिका जो तब [मेरे] हाथ में थी इस मेरी [मुद्रिका] को वह ले गया और अपनी मुझे दे गया।

(६) अब तक मैंने विरह की अग्नि को लोक (देश) और कुल की कानि (मर्यादा के ध्यान) से अपने जी में [छिपाए] रक्खा (७) लज्जावश किसी से नहीं कहा है और अपने जी में ही गुप्त रूप से उस हानि को सहन किया है ।"

टिप्पणी—(१) परबोध < प्रबोध = जाग्रत करना ज्ञान देना। (३) बारी < बालिका। (४) सेज < शय्या। (५) मुंदरी < मुद्रिका। तौर < त < तव।

[३०९]

कठिन बियोग[1] अधिक जिय[2] पीरा । निलज जीउ जो रहु[3] सरीरा ।
कौनि घरी भौ सही[1] अभागी । मोहि माहि[2] यम प्रीति जेहि[3] लागी ।
म न जरिउ एकसर[1] तेहि[2] आगी । कौन सो जग[3] जेहि जीय न[4] लागी ।
अब लहि[1] गुपुत जरिउ तेहि[2] आगी । अब परगट भै दहु दिसि[4] लागी ।
गुपुत जरौं अहवालहि[1] चोरी[2] । परगट जरौं[3] दसौ दिसि[4] हारी[5] ।
कौन[1] गम्य न जानौं बिषम मोहि दगारउ[2] आनि ।
एक निमिख जेहि दरसै[1] सहिउ जनम भरि[3] हानि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए बिछोग। २ ए जी। ३ मा ए रहै न मा रहु न।
(२) १ ए भौ माहि रा भा सही मा. यह सही। २ ए मोहि ताहि।
३ ए जो।
(३) १ मा न जरी अकसरि ए न जरी एकसर। २ मा वेहि मा एही ए था।
३ ए जो। ४ मा भा जीव न ए नैना।
(४) १ ए लगि। २ मा जरिउ एही ए जरी जे। ३ रा हा ए जा।
४ मा ए दहू दिसि (दिस—ए)।
(५) १ रा कहवा लगि मा कहा सही ए कही लगि। २ मा जोरी। ३ मा जरमो रा जरौं। ४ ए दसो दिस। ५ मा मोरी ए बारी भा मोरी।
(६) १ ए कौना। २ मा देगारउ ए देगारा।
(७) १ रा न पावन। २ ए कोटि मरा। ३ मा जीव ए जिव मा जिय।

अर्थ—"(१) [मेरे] जी में कठिन वियोग की पीड़ा अधिक है [मेरा] जीव निर्लज्ज है जो [फिर भी] शरीर में रह गया (बचा हुआ) है। (२) वह भाग्यमानिनी घड़ी कौन-सी थी जिसमें मेरी और उसकी प्रीति लगी। (३) मैं उस अग्नि में अकेली नहीं जली संसार में कौन है जिसके जी में वह न लगी हो ? (४) अब तक गुप्त [रूप से] उस आग में जलती रही हूँ [किंतु]

अब वह आग प्रकट होकर दसो दिशाओं में जल (फल) रही है। (५) चोरी चोरी गुप्त [रूपसे] कहाँ तक जलूँ जब कि दसो दिशाओं में प्रकट (प्रत्यक्ष) वह होली जल रही है?

(६) न जाने कौन-सा स्वरूप विधाता ने लाकर मुझे दिखाया (७) जिसको एक निमिष (पल) देखने पर मैंने जन्म (जीवन) भर हानि सही है।

टिप्पणी—(५) होरी < होलिका। (७) निमिख < निमिष = नेत्र-सकोच अक्षि-मीलन।

[३१०]

गएउ बिरह दौं[1] मो हिय[2] लाई । दिन दिन सखी दगध[3] अधिकाई ।
कत जननी मोहि दूध[1] पियावा[2] । दूध ठाउ[3] कस बिस न पियावा[4] ।
नाभि मार जौ काटी[1] बारी । कसन दिहिसि मोर गिय डारी ।[2]
अब ओहि बिनु खिनु जीउ न मोही[1] । औ[2] न सकौं न[3] परिहरि ओही[4] ।
औ न[1] काल बस मोरें[2] धारा । कसें[3] होइ मोंख[4] निस्तारा ।
पम बिछाह[1] न सहि सकौं मरौं तौ[2] मरि नहिं[3] जाइ ।
दुइ[1] दूभर महँ म परी दगध न हिए[3] बुताइ[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा गएउ बिरा दौं ए गा बिरहा दौ। २ मा मोहि हिय भा मोरे, ए मोहि हिय। ३ ए बिरह।

(२) १ मा मा जनमत मोहि जननि। २ मा पिआउ भा पियाएउ ए पिआए। ३ ए ठाँव। ४ मा पिआउ ए पियाय (लुप्त पूर्ववर्ती चरण का तुक) मा लियाएउ रा लवावा।

(३) १ मा भा नाम मार काटेहि जेहि ए नाभि मारि न कारी। २ मा कसन मोरि गिय दीन्ही डारी भा कस न मो मोर गियं दीन्हेहु मारी ए कस न दीन मारे गिह डारी रा कस न दिहिसि मार गिर डारी।

(४) १ ए अब यह तन मा जीव न मोही भा अब ओहि बिनु खिनु जियत न माही। २ ए अब। ३ मा सकौ। ४ ए भा जीउ। ५ ए बाही।

(५) १ मा कौन। २ ए मोर। ३ ए कैसे। ४ मा मा ए मोर।

(६) १ मा बिछोवा ए वियोग। २ भा त। ३ मा मरइ न ए मरै न भा मरी न।

(७) १ मा भा दुहुँ। २ भा बिच मैं ए मा हौं। ३ ए हिये। ४ मा भा बुताई ए बोताइ।

अर्थ—"(१) विरह मेरे हृदय में दावाग्नि लगा गया, और हे सखी, दिन दिन उसके दाह की अधिकता होती जा रही है। (२) माँ ने मुझे दूध क्यों पिलाया? दूध के स्थान पर उसने [मुझे] विष क्यों न पिला दिया? (३) धारी ने जो मेरी नाभि की नाल [मेरे जन्म के समय] काटी उसे उसने क्यों नहीं मेरे गले में [फाँसी के रूप में] डाल दिया? (४) अब उसके बिना क्षण भर भी मेरा जीना नहीं [संभव] है और मैं उसको [अब] छोड़ नहीं सकती हूँ। (५) और हे बाला काल [भी] मेरे वश में नहीं है तो मेरा मोक्ष और निस्तार कैसे हो?

(६) प्रेम का बिछोह मैं नहीं सह रही हूँ और मरने भी तो मरा नहीं जाता है। (७) मैं कठिनाइयों में मैं पड़ गई हूँ [इसलिए] हृदय में कुछ बाहु बुसता नहीं है।"

टिप्पणी—(१) दौं < दव = दावाग्नि। (५) बारा < बाला।

[३११]

सो पाछिल्हि सभ[1] बात जो अही। मधुमालति पर्मा सउ[*] कही।
मन जो कामिनि बचन सोहाए[1]। पर्मा नैन सलिल[2] भरि आए[3]।
प्रीतम लागि जौं र दुख सहिए[1]। दसगुन सुखफल[2] आगे लहिए[3]।
एक सुख[1] लागि सहस दुख सहिए[3]। सहस सुक्ख एक दुख[4] निरबहिए[5]।
एक फूल कारन सुनु[1] बारी। सचिए[2] सहस काँट दुखहारी[3]।
पेम समुद पा धारि कै[1] पाछ न टरिअइ[2] काउ।
कै प्रीतमु सग हाथ चढ़ै[1] कै सागरहि जिउ[2] जाउ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पाछिलि सब ए पाछिल दुख। २ ए मा रा सौं।
(२) १ ए सुनत कामिनी बात सोहाई मा सुनत मा कामिनि बचन सोहाए। २ मा नजन। ३ ए आई (< आग फारसी लिपि)
(३) १ मा मा कहेसि प्रीतम (पिरीतम—मा) सखी (सखि—मा) दुख चाही ए कहै प्रीतम लागि दुख सहिए। २ रा सुफल ए लाहा। ३ मा मा आगे (आगैं—मा) चाही ए आग लहिए।
(४) १ मा मा म 'सुख' शब्द नहीं है। २ मा मा मरनार। ३ मा सहिजी ए सहिए। ४ मा सहस दुक्ख एक सुख। ५ मा निरबाहिजी ए निरबाहिए।
(५) १ ए सुन। २ मा सबी चाही ए मा सहिए। ३ मा फुलवारी।
(६) १ रा पेम समुद महँ पैं मा प्रेमा समुद पा धोरी कै ए पेम समुद पैरि कै। २ मा पाछ न टरिअ ए पाछ न टरिले।
(७) १ मा चढ़ै (< चढ़ि) ए चढ़ै। २ मा कै जिउ जाए त ए कै सिर जाइ तौ मा कै सिर जाइ न।

अर्थ—(१) तब पिछली सभी बातें जो कुछ हुई थीं मधुमालती ने पेमा से कहीं। (२) पेमा ने जब उस कामिनी के सुहावने वचन सुने उसके नेत्रों में जल (आँसू) भर आए (३) [और उसने कहा] "यदि प्रियतम के लिए दुख सहन कीजिए तो दस गुना सुख-फल आगे प्राप्त कीजिए। (४) एक सुख (मिलन) के लिए सहस्र दुख सहन करना होता है और [विरह के] एक दुख से सहस्र सुख का निर्वाह होता है। (५) एक फूल के [प्राप्त करने के] लिए, हे बालिका सुनो, अनेक दिन सहस्र काँटों का संचय करना होता है।

(६) प्रेम-समुद्र में पाँव रखने पर (उतर कर) कभी पीछे न हटिए (७) [आगे बढ़ने पर] या तो प्रियतम-सग हाथ चढ़ेगा और या तो [उसको पाने की] लालसा में जीव जाएगा।"

टिप्पणी—(१) सौं < सउ < सत = सब। बात < वार्ता = बातें। (६) चढ़ < चढ़

=प्राप्त करना। (५) देवहारी < दिवह < दिवस = दिन। (६) बार < द्वारम् = दरवाजा। बाउ < कदापि।

[३१२]

कहसि तुम्हार¹ सुदिन भनि आजू । मन कामना सिद्ध² सब काजू ।
औ सनि* हइ¹ सखी छट्ठउ² तुम्हारा । चढ़िहि³ हाथ पाछिलि निधि बारा ।
नवए गुरु हइ सखी¹ जो तोही । निसु जानहु बिन मिल बिछोही ।
औ मंगल हइ¹ तिसरें² तेजा । चढ़ इ आइ पीतम⁴ निसु⁵ सेजा ।
औरु सूरुज दसए¹ उजियारा । सुख निधि देइ दुक्ख हरि बारा² ।
इग्यारह बिधि¹ जनम बुध सुक्र बुद्ध भ्रिग अंक ।
मानउ¹ ग्रह तुम्ह दाहिन² गनि गुनि³ दखिउ अंक⁴ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहै तोहार। २ ए सिध।
(२) १ मा ससि (< सनि) रा रवि (दे अर्द्धाली ५) मा मन (< सनि— फारसी लिपि) ए में यह शब्द नहीं है। २ मा भा छठ ए छम। ३ मा चढ़ही (< चढ़ही)। ४ ए निध (< निधि फारसी लिपि)।
(३) १ ए नवएं गुरु सखी है। २ भा मा ए में 'जो' नहीं है। २ मा जानहु ए जानहु। ३ मा बिना ए में यह शब्द नहीं है।
(४) १ मा भा मंगलकर, ए मगल जो। २ ए तिसरे। ३ मा चढ़ै (< चढ़ै)।
४ भा मा ए प्रीतम। ५ ए निज मा पै।
(५) १ ए औरउ दस दसा। २ ए सुख निधि देगु सुख निधि बारा ('सुख निधि' की पुनरुक्ति है)।
(६) १ रा इग्यारह बन (< बिधि फारसी लिपि) मा एगारह देखी भा. इगारह बिधि ए एगारहे बिधि। २ भा मंगल।
(७) १ रा दखउ ए मानों। २ मा दहिन तुम्ह भर ग तुम दाहिन ए सुभ सुभ। ३ ए गुनि गुनि। ४ मा देखउ अंक रा देगु मर्मंक रा दखिय मक (?)।

अर्थ—(१) उसने कहा "आज हे सखी तुम्हारा सुदिन है [तुम्हारे] सब कार्य मनोकामना [के अनुसार] सिद्ध हुए। (२) और हे सखी शनि तुम्हारे [जन्म के] छठे स्थान पर है इसलिए हे बाला तुम्हारी पिछली निधि [जिसे तुम एक बार खो चुकी हो] फिर तुम्हारे हाथ चढ़ेगी। (३) हे सखी तुम्हारे नवम स्थान पर जो बृहस्पति है उससे चित्त में यह भलीभाँति जान लो कि बिछुड़ा हुआ मिलेगा (४) और तीसरे स्थान पर मंगल तेजवान है इसलिए [तुम्हारा] प्रियतम अवश्य ही [तुम्हारी] शय्या पर आकर चढ़ेगा (५) और जो सूर्य दशम स्थान पर प्रकाशित है वह [तुम्हारे] दुःखों को हे बाला हर कर, सुख, सुख-निधि देगा।

(६) [और] तुम्हारे जन्म के ग्यारहवें स्थान पर जो (?) बुध, बुध तथा शुक्र है (७) मैंने गिनकर और विचार करके देखा है मानो वह तुम्हारे दक्षिण (अनुकूल) है।"

टिप्पणी—(४) छेज<चम्पा। (५) बारा<बाला। (६) चिचि<इव। (७) गुन<गुणय्=गिनना विचार करना।

[३१३]

राहु अहइ माठौं तुम्ह[1] मारा । निजु बिछुरा मिल[2] पेम पियारा ।
हौं जानति[1] कुँवरहिं[2] दुख भारी । पै तुहुँ[3] जैसें[3] कुँवर[4] दुखारी ।
एत[1] दुख सहिहु लागि जेहि[2] बारा । मिलिहि[3] आजु सो[4] पम पियारा ।
तोर ध्यान चित महँ धरि[1] बारी । बसउ सब[2] संसारु[3] बिसारी ।
जब दरसि[1] तुम्ह मुख[2] उजियारा[3] । सब[4] जग किहसि नैन अँधियारा[5] ।
दसु आइ गति ताकरि[1] जेहि[2] ताहि बिनु नहिं[3] कोइ ।
तन मन जिउ[1] जोबन सब[2] तोहि लगि[3] बसउ[4] सोइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा राहु समान आहि तुम्ह ए राहु समान आहि पौ। २ मा चहि बिछुरे मिलै ए च मिलि बिछरै भा मिल बिछरै मिल।
(२) १ मा. मा ए मैं जानौं। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा पेमी अति दुख ए पै तोहि जैसें मा ए पै अति तै (तै अति—मा) दुख। ४ मा भा दिल्ह ए मे वह शब्द नहीं है।
(३) १ मा अति ए अस। २ मा सहे जहाँ लगि ए सहे लागि ज भा सहे जाहि लगि। ३ ए मिलै। ४ ए ताहि।
(४) १ मा भा तोर पियार चितहि भरि ए तोर ध्यान धरति है। २ ए बैसा सब भा बैसेउ सब। ३ मा संसार ए गसार।
(५) १ मा देखिसी ए देखा। २ मा तु समुख ए तोर मुख। ३ ए उजारा। ४ मा भा ए सब। ५ ए कीन्हा नैनहिं अन्धारा।
(६) १ मा भा ताकी ए ताहि कै। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ मा भा और न।
(७) १ ए जीव। २ ए सबै मा सब सरबस भा सब सरबस रा सब। ३ ए मोह सो। ४ मा बैसी रा बैस्उ ए बैसा।

अर्थ—"(१) हे बाला, राहु तुम्हारे सामने है [इसलिए तुम्हें] बिछुड़ा हुआ प्रेम-प्रिय अवश्य ही मिलेगा। (२) मैं जानती थी कि कुमार को ही भारी दुःख [तेरे वियोग का] है, किंतु तुम भी कुमार की भाँति दुखी हो। (३) ऐ बाला, इतना दुःख जिसके लिए सहन किया है वह प्रेम प्रिय [तुम्हें] आज मिलेगा। (४) ऐ बालिका, चित्त में तुम्हारा ध्यान धारण कर कर समस्त संसार को विस्मृत कर बैठा है। (५) जभी उसने तुम्हारा प्रकाश-पूर्ण मुख देखा, समस्त जगत् को उसने अपने नेत्रों में अंधकार-पूर्ण कर (मान) लिया।
(६) उसकी दशा आकर देखो, जिसे [इस संसार में] तुम्हारे बिना (अतिरिक्त) कोई नहीं है; (७) तन मन जीव और यौवन सभी-कुछ वह तुम्हारे लिए खोकर बैठा हुआ है।"
टिप्पणी—(१) (१) पियार<प्रियकार=प्यारा। (३) एत<एतत्र<इयत्=इतना।

[३१४]

अस्ति भ भसम बिरह[1] जरि काया । देखि कुँवर चित[1] उपज दाया ।
रहा[1] न कया मासु[2] तस[3] रता[4] । तहि पर[5] बिरह हाड़ दिय बती[6] ।
जासु[1] जिउ बरबस हरि[2] लीज[3] । तोहि बहु पलटि[4] दया पुनि कीज[5] ।
सब[1] सरूप दखाउ कुमारी[3] । पाछें सम दीज दुख मारी ।[4]
बिधि चरित्र सतें सखि[1] डरिअ । भूजिय[2] सोइ करम जो करिअ ।
पेम कि निरफल[1] जाइ जग[2] सुनहु कहौं समुझाइ ।
कबहुँ क रहै[1] कुँवर दुख तुम्ह[2] सिर सखी बिसाइ[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा. भव भा. भसम बिरह ए. अति भी बिरह भस्म। २ ए. सौं।
(२) १ भा. रहउ। २ भा. माहि। ३ भा. ए. मसि भा. सुख। ४ भा. राती।
५. ए. ताउपर। ६ भा. भा. दिय बाती ए. दउ बाँसी रा. रै बनी।
(३) १ ए. जाका। २ ए. में यह शब्द नहीं है। ३ भा. लीजा। ४ भा. ए. ता।
५ भा. मया पुनि ए. पिया तौ रा. दया पुनि। ६ ए. कीजै भा. कीजा।
(४) १ भा. सहू। २ भा. देखराव भा. दखाइ। ३ ए. तै बारी भा. कुँवारी।
४ ए. तै पुनि दरसहि कथा उजारी।
(५) १ भा. मॅन सुख ए. मेतो पै। २ ए. भूजी रा. भूजब।
(६) १ भा. निफल ए. निरफल। २ ए. जाय जौं।
(७) १ भा. कबहु कै रहउ ए. कबहुँ क रहै। २ भा. तुम ए. तुह। ३ भा. बसाई ए. बिसाइ।

अर्थ—"(१) बिरह से [उसकी] काया अत्यंत भस्म हो चली है; [अतः] कुमार को देखकर चित्त में दया उत्पन्न होती है। (२) उसकी काया में मांस रत्ती भर भी नहीं रह गया है उस पर भी विरह हड्डी में बत्तियाँ दिए (लगाए) हुए है। (३) जिसका जीव (जिसके प्राण) बलपूर्वक कोई हर ले उस पर फिर उसे लौट कर दया [भी] करनी चाहिए। (४) ऐ कुमारी तुम तनिक अपना स्वरूप [उसे] दिखा दो, पीछे [तुम] इसी प्रकार का दुख उसे [भले ही] दो। (५) हे सखी विधाता की लीला से डरना चाहिए, क्योंकि जो कर्म कोई करता है वही उसको भोगना भी पड़ता है।

(६) संसार में प्रेम क्या निष्फल जाता है? सुनो मैं तुम्हें समझाकर कहती हूँ (७) ऐसा न हो कि कभी कुमार का यह दुख ऐ सखी तुम्हारे सिर बिसाए।"

टिप्पणी—(१) रती < रक्तिका = घुँघची। बती < वर्तिका = बत्ती। (३) बर < बल। (५) भूज < भुज् = भोग करना। (७) बिस < बिस ~ बि + सृ = हिला करना, मोल करना।

[३१५]

पुनि पम गहि[1] बोह उघाई । माप लिहें[2] बाग लिमि[3] आई ।
कहिसि पकर[1] ग दगध सोई[2] । जहि दुख जग सौं[3] छाड़ न काई ।[4]

धजहु लाज औ जिय[1] निठुराई । दया करहु[2] मेकु देखहु आई ।[3]
जो लहि क[1] मारग जिउ नर । सो तहि सउ कैसें[2] मुख[3] फेर ।
आऊ दुक्ख दुखी कोइ हाई । ताहि सुक्ख सुखिया जग सोई ।[1]
पुनि[1] पम सखि आपनि[2] पठई[3] आइ जनाउ कुमार[4] ।
मधुमालति औ पेमा दुवौ ठाढ़ि हहि बार[1] ॥

पाठान्तर— रा म उपर्युक्त प्रथम अर्द्धाली यथा पाँचवी है।
रा म उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा मा फुनि पमै परि रा ए पुनि पेमैं (पॅमैं—ए) गहि। २ ए लिये। ३ ए लिए।
(२) १ ए चलहु। २ मा देखहु आई ए देखि सोहाई। ३ मा दुहु जग तोहि, ए दूनौ जुग। ४ मा दया करहु नेकु देखहु आई (तुल० उपर्युक्त अर्द्धाली ३)।
(३) १ मा मा. जीवित ए जिन की। २ ए दया करि। ३ मा होहु दयाल दया करहु आई।
(४) १ ए जाके। २ रा मा लेहि सो ए कैस लागों। ३ मा मुह।
(५) १ मा मा जौ सुख देखिअ (सुखी—मा) जाहि सुख कोउ (कोई—मा) ए दुखिअ दुखी ताहि दुख सोउ (सोई—मा) ए नौहि सधी जाही सुख होई पाछे सुख ताही सुख होई।
(६) १ रा ए पुनि। २ मा रा अपनी। ३ मा पठई रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए जाउ जनाउ कुमारि (<कुमार फ़ारसी लिपि) मा जाइ जनाउ कुमार।
(७) १ ए बारि।

अर्थ—(१) फिर पेमा ने [उसकी] बाँह पकड़ कर [उसे] उठाया, और [अपने] साथ [उसे] लिए हुए वह वाटिका की ओर आई। (२) उसने कहा "चलो और जाकर उसको देखो जिसको दोनो जगत् (इहलोक और परलोक) में कोई नहीं छोड़ता है। (३) लज्जा और जी की निष्ठुरता छोड़ो दया करो और तनिक आकर [उसे] देखो। (४) जो (यदि कोई) जिस (जिसी) के मार्ग में (किसी के निमित्त) [अपने] जीवन को निकालता है [तो] वह उससे कैसे मुँह फेरता है ? (५) जिसके दुःख में कोई दुःखी होता है उसके सुख से ही वह जगत् में सुखी होता है।"
(६) तदनंतर पेमा ने अपनी [एक] सखी को यह कहकर भेजा "जा और कुमार को सूचित कर (७) कि मधुमालती और पेमा—दोनों द्वार पर खड़ी हैं।"

टिप्पणी—(१) बारी<वाटिका। (२) छाड़<छर्द [दे]=छोड़ना। (६) पठव<प्रस्थ<प्र+स्थान=प्रस्थान कराना भेजना।

[३१६]

उवा। गनि[1] मधु मार्ड सुमाया[2] । —गउ मु—ाहि मालिक माया ।
—न भाउ मुग आउ ग यना । पिर्नाहि मन गा दाग मनी ।

डरै¹ अगिनि मह् जसें² रांगा । तिमि नितज मा³ अस्टौ⁴ आंगा ।
पर्मा स¹ छिरका मुख² पानी । कहसि³ जागु सिधि घरी तुलानी ।
कहु जो किछ कहिव¹ हौ² बाता । पुनि³ अस न्नि कव कर⁴ बिधाना ।

आजु भाग तुम्ह¹ दाहिन बसहु चित्त² सभारि ।
ठाढ़ि अह³ सिर ऊपर साहस सिद्धि तुम्हारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा जब मर्पा मैं भा जब रे सखी । २ ए मधुमाल मा बिधि नाउ । ३ मा जमाया । ४ ए दरमा । ५ मा भा सुनतेह (सुनतहि—भा) मात्तिक ए सुनत सत्ति कै रा सुनत स्वाति कर ।
(२) १ मा मा भई, ए भौ । २ मा मार्ग ए माव । ३ ए चित गौं । ४ मा ए मापत मा छार्ने ।
(३) १ मा डरई । २ ए भागि मा नैम । ३ ए रे तेज गौं । ४ मा मा आठहु ए आगी ।
(४) १ मा पमै । २ मा मैं । ३ ए चल । ३ ए कहै ।
(५) १ मा कहहु जो कुछ कहब ए मा कहु जो कछु कहब (कहबें—भा) २ मा हु ए मे यह गाय नही है । ३ रा ए पुनि । ४ ए म यह गाद नहीं है । ५ रा करहिं ।
(६) १ रा ता ए तार । २ मा मा चेत ।
(७) १ ए अहि । २ मा ए सहस (साहस—ए) मिधि तोहारि ।

अर्थ—(१) सखी [प्रेमा की उस] सखी ने 'मधु [मालती] नाम सुनाया उसे सुनते ही [कुमार के शरीर में] सात्त्विक भाव दिखाई पड़े । (२) कंप हुआ और मुख से वचन नहीं निकला (स्वरभंग हुआ) चित्त का चेत गया और नेत्र मंद गए । (३) जैसे अग्नि में रांगा द्रवित [कर निस्तेज हो] जाता है उसी प्रकार वह अपने आठों अंगों से निस्तेज हो गया । (४) प्रेमा ने पानी लेकर उसके मुख पर छिड़का और कहा "जागो अब सिद्धि की घड़ी पहुँच गई है । (५) जो कुछ बातें तुम्हें कहनी हों कहो पता नहीं पुनः ऐसा दिन विधाता कब करे ।

(६) आज तुम्हारा भाग्य दक्षिण (अनुकूल) है चित्त को सँभाल कर बैठो (७) तुम्हारे साहस की सिद्धि [अब] तुम्हारे सिर पर खड़ी है ।"

टिप्पणी—(१) मात्तिक < सात्त्विक ।

[३१७]

सुनत नाउ¹ साहस सिधि जागा । कह अभिन मम बचन मा² लागा ।
कहसि कौन न्नि आजु सोहावा । जु हौं¹ काम प्रीतम कर² पावा ।
पूर्णी मन त¹ पम फलधारी । जहि सुमाल पूरिन² महि मारी³ ।
पोन¹ भाग रारि म आएउ³ । जहि र मालि बिनु म समाएउ⁴ ।
भा दरस हिय¹ विरह फलौमे² । पम³ सिरोमन आउ अमाने⁴ ।

मैं तुव[1] कारन सब[2] तजा जत किछु[3] एहि[4] संसार[5]।
एक न तुव[1] दुख[2] परिहरेउ[3] जो जग जीवन सार ॥

पाठान्तर— रा. म. उपर्युक्त अर्द्धाली २ तथा ३ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
उपर्युक्त पंचम अर्द्धाली के चरण ए. म. परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए. भाव। २ मा. मा. ए. कहै (कहैं—ए.) बचन अमित से (सम— ए.) रा. कहत अमित सम बचन सो।

(२) १ मा. मा. जेहि मैं ए. जाहि। २ मा. प्रीतम की ए. प्रीतम मैं मा. पिरीतम।

(३) १ मा. पूनी मुए त ए. फूली मकु रे। २ मा. पुरी मा. पुरी। ३ ए. मा. बारी।

(४) १ मा. पवन। २ मा. काफरि लेइ ए. काफर मैं। ३ मा. आवा। ४ ए. ताहि। ५ मा. बिनु मद मनमातेउ मा. बिनु मद मनावा ए. मैं मन मातेउ।

(५) १ ए. बीर। २ मा. मा. मंमोली ए. फफोला। ३ रा. पमा। ४ ए. प्रीति जे आव। ५ ए. अमाता।

(६) १ मा. तुम्ह ए. ताहि। २ मा. ए. सब। ३ मा. जत कुछु ए. जत कछु। ४ मा. एहि। ५ रा. ए. संसार मा. संसैसार।

(७) १ मा. तुम्ह ए. मा. तोर। २ मा. में 'दुख' नहीं है। ३ ए. परिहरा।

अर्थ—(१) 'सारस-सिद्धि' का नाम (शब्द) सुनते ही [कुमार] जाग पड़ा और वह अमृत-तुल्य वचन कहने लगा। (२) उसने कहा "आज कौन-सा सुहावना दिन है कि मैंने प्रियतम की सुगंध पाई। (३) संभवतः प्रेम की फुलवाड़ी [आज] फूल उठी जिसकी सुवास से समस्त पृथ्वी सुरभित [हो गई] है (४) पवन जिसकी सुवास लेकर आया है कि जिससे उसने मुझे बिना मदिरा के मत्त बना दिया है। (५) तू आकर मेरे विरह के फफोलों को देख ऐ अमूल्य प्रेम-प्रियतम तू आ!

(६) मैंने तेरे कारण जितना कुछ संसार में [मेरा] था वह सब त्याग दिया; (७) एकमात्र तेरा (तेरे विरह का) दुःख मैंने नहीं त्यागा जो जगत् में [मेरे] जीवन का सार है।"

टिप्पणी—(२) (३) (४) बास < वासना = सुगंध। (६) जत < यतिक < यावत् = जितना।

[३१८]

गन्हु[1] जो धन सौंप हिय[2] माहीं। गा मन मिरो यग[3] नि नि बाही।
सुर नर सुर अम्न मा याग[1]। तुम्ह दुख रनि न मा मिनुमारा[2]।
मर त[1] आनु सौंपी दुख[2] गनी। क पानिय[3] गिर बगिग मवानी।
गारे दुग्ग[1] जूभा पर याग। तीन मा बिग जो म म ग्गो[1]।
दिन्न[1] आनु हम दे म्ने माहा। कान्हि[2] आनु मनि हा नि नाहीं।

आजु जो किछु[1] है करना कस न अबहिं करि सोइ[2] ।
कालिह[1] बहुरि का जानी[2] दहु कसी[3] कलि[4] होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए मैंहु। २ रा किय। ३ ए मा मा रा पर।
(२) १ रा दुख कर सूर अस्त भा बारा मा सुख कर सार अस्त भौ बारा ए सुख कैसे निपित भा भीरा। २ रा तुम्ह सुख रैनि रहा उजियारा ए दुख दुख रैन भई जौ पीरा।
(३) १ मा बरत ए मरहुं। २ ए बिती सु। ३ म ए चातिक।
(४) १ मा मा ए बिरह। २ ए जु भा। ३ मा मा न मैं हारी ए मैं ना हारी रा मैं न महारी।
(५) १ मा ए मिलहु। २ ए हमैं। ३ मा देइ ए म यह शब्द नहीं है। ४ मा गमि भा गम ए गमे। ५ मा भा कालि। ६ ए भम।
(६) १ मा कुछ ए कछु। २ भा मा कस न कहु करि मा ए कैसा करि बिधि हो (दुख पूर्ववर्ती चरण)।
(७) १ मा कालि। २ मा जानि भै ए जानो। ३ ए कैसी बिधि। ४ भा कलि ए लिखा।

अर्थ—"(१) तुम प्रेम की जो रेखा मेरे हृदय में खींच कर चली गई वह मिटी नहीं वरन् दिन दिन बढ़ती रही; (२) [परिणाम-स्वरूप मेरे] सुख का सूर्य हे बाला अस्त हो गया और तुम्हारे [विरह की] दुख की रजनी का प्रभात नहीं हुआ। (३) सम्भवत आज वह दुख रात्रि बीत गई अथवा चातक के सिर पर स्वाती की वर्षा हुई। (४) तुम्हारे [विरह] दुख रूपी जुए में फड़ पर वह कौन विषय (पदार्थ) है जिसे मैं नहीं हार चुका हूँ? (५) आज तुम [मेरे] गले में बाहें देकर मिलो [क्योंकि] कल [का दिन] आज के ऐसा हो या न हो।

(६) आज जो कुछ करना है वह तुम अभी क्यों नहीं करती? (७) कल फिर पता नहीं कि कैसी कलि (सुख-शांति) हो।"

टिप्पणी—(१) लीक < रेखा। (३) चातिग < चातक। सवाती < स्वाती। (४) जुआ < द्यूत। फर < फलक < फलक = फड़ वह फलक जिस पर खेलने के लिए जुए की व्यवस्था की जाती है।

[३१९]

जब[1] परगट भा रूप तुम्हारा[2] । तब न हम चखु दरसनिहारा ।
जहि दिन आदि रूप तोर[1] मोहा । सहि दिन हुतं तोहि हौं[2] मोहा ।
जउ[3] जउ[4] रूप उन्नित अस तोरा । तउ[3] तउ[4] जिउ बिरहा[1] बस मोरा ।
रूप तुम्हार[1] मार दुख बारा । दस दस ग[2] भण्ड पसारा[3] ।
दिन दिन रूप अधिक जइ[1] तोही[2] । अब वह सुरति बिरह सउं मोही ।[3]
जइ तुय बदन उपाधि क[1] लगा रूप निमाइ ।
तइ धनि धनि कहि[1] पाइ कै हम चखु मूंद[2] माइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तोहारा।
(२) १ मा भा तोहि, ए तुह। २ ए ता दिन तै तोहि मइ।
(३) १ रा जेहु जेहु मा ए जौ जौ मा जीउ जीउ (< जेउ जेउ फारसी लिपि)। २ रा तेहु तेहु मा ए तौ तौ मा तीउ तीउ (< तेउ तेउ फारसी लिपि) ३ मा जीउ परह (< बिरह फ़ारसी लिपि) ए भा जीव बिरह।
(४) १ ए तोहार। २ मा माइ (< गइ) ए गै। ३ ए भैउँ पवारा।
(५) १ भा मा जय ए जै। २ मा मोही। ३ मा अब कहा मुकत बरह (< मुकति बिरह फारसी लिपि) सौ मोही ए अब मा छकौ मैं परिहरि मोही।
(६) १ रा जइ तुम रूप उघारि कै मा जिनि तुम बदन उघाइ कै ए जौ तुह बदन निहारि कै। २ रा देख नैन निछाइ, ए देखा बदन अघाइ ('बदन' की पुनरुक्ति है)।
(७) १ मा तिनि धन धन कै ए तिन्ह धनाधन रा धई धनि धनि मइ। २ मा चुमे ए चूमा।

अर्थ—"(१) जब तुम्हारा रूप (सौन्दर्य) प्रकट हुआ तभी के हम चक्षुओं से उसे देखने वाले हैं (तभी मैंने उसे चक्षुओं से देखा है)। (२) जिस दिन तुम्हारा प्रथम रूप शोभित हुआ उसी दिन से मैं उस पर मोहित हूँ। (३) [तदनंतर उत्तरोत्तर] जिस-जिस प्रकार से (जितना ही जितना) तुम्हारा रूप-रूप उदित (प्रकाशपूर्ण) होता रहा उसी-उसी प्रकार से (उतना ही उतना) मेरा जीव तुम्हारे विरह के वश में होता गया। (४) तुम्हारा रूप और मेरा [विरह] दुःख (दोनों के विवरण) देश-देशान्तर में जा पहुँचे और [उनके संबंध में वहाँ] पँवारा (कथा आख्यान) बन गया। (५) [किन्तु] क्योंकि तुम्हारा रूप दिन-दिन (उत्तरोत्तर) अधिक होता जा रहा है, अब मुझे विरह से मुक्ति कहाँ?

(६) जितने भी [तुम्हारा] मुख खोलकर [तुम्हारा] रूप निरीक्षण करके देखा (७) उसी ने 'धन्य-धन्य' कहकर दौड़कर और आकर मेरे चक्षुओं का चुंबन किया।"

टिप्पणी—(१) (७) चखु < चक्खु < चक्षु। (४) पवारा < प्रवाद—कथा आख्यान। (५) जइ < यत = क्योंकि। (६) निखा < निक्खा < नि + ईक्ष = निरीक्षण करना।

[३२०]

बाँक नैन कटाछ सोहाए। तुमहु पलक बिष रगत[1] तिखाए।
बिरह अगिनि जग[1] दहइ[2] न जेता[3]। तोइ बिरह[4] मोहि दाहइ तता[5]।
अब न सहइ[1] पारौं दुख तोरा। तोर जस जिउ चाहइ[2] नहि मोरा[3]।
जेउ जेउ[1] बिरह अगिनि परजार[2]। समुझि समुझि जिउ तोहि[3] समार।
बिधि मह[1] पेम पीर जस कीन्ही[2]। जौ तुम्ह[4] चित्त न चाया[5] दीन्ही[6]।
एहि दुख माँह एक होइ[1] म निज जानौं जीय[2]।
कै हम भुम बस तुम्ह गरें[1] कै तुम्ह हय हम गीय[2]॥

पाठान्तर— मा में उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा माँ चहुँ नव लगि मोहि रकत ए दुइ पलक मो रकत।

(२) १ रा मोहि ए जो। २ ए दहा। ३ मा भा यता ए एता। ४ मा तुम बिरह भा तुम बिरहैं ए तुह बिरह। ५ मा मोहि दाहेउ अता ए जो उपजा एता (तुल पूर्ववर्तीचरण का तुक)।

(३) १ ए नहीं। २ मा पाम मा पाथर। ३ ए में पाठ है—तोर दुख देखि जस हाथ संकोरा (किंतु यह ३२१ ४ है)।

(४) १ मा रा जो जो ए जो जिव। २ मा तनु जारै ए मो जारै। ३ ए मे यह शब्द नहीं है।

(५) १ मा इमह। २ मा पम प्रीत ए परम पीर। ३ रा दिहे। ४ ए उन मा तुम। ५ ए मामा मा मा दया नहि। ६ रा दिहे।

(६) १ मा एम्ह दुई मह येर होइ कै ए यह दुख मो पै होन एक। २ मा पीउ।

(७) १ ए कै तुह भजबर हाथ मरे, मा कै तुम्ह भव कर आग गल रा कै तुव भुज कर हम मरें। २ मा कर तुम्ह हाथ हम मीम ए कै मत हम तुह गीव मा. कै हम हप तुम्ह मीव रा कै हम गल वीय।

अर्थ—"(१) तुम्हारे बाँके नयन जो कटाक्षों से सुहावने हैं दोनों पलकों के बीच रक्त के प्यासे हैं। (२) जितना कि संसार भर [मिलकर] विरह की अग्नि में दग्ध नहीं हुआ था उतना मुझे तुम्हारे विरह ने दग्ध किया। (३) अब मैं तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) दुख नहीं सहन कर सक रहा हूँ [क्योंकि] मेरा जी तुम्हारे [जी] जैसा पाषाण [का] नहीं है। (४) जैसे-जैसे मुझे [तुम्हारे] विरह की अग्नि जला रही है मेरा जीव [अधिकाधिक] तमस-तमस कर तुम्हें स्मरण कर रहा है। (५) विधाता ने [मेरे हृदय में] यह प्रेम की पीड़ा ही कहाँ (क्यों) की यदि उसने तुम्हारे जी में दया नहीं की?

(६) इस दुख में अकेला होकर मैंने जी में भलीभाँति जान लिया (७) कि या तो तुम्हारी भुजाएँ मेरे गले में वलयित होंगी (वलय की भाँति लगेंगी) और या तो तुम्हारे हाथ में [कटी हुई] मेरी ग्रीवा होगी।"

टिप्पणी—(१) बांक < बंक < वक्र। रकत < रक्त। तिसाए < तिसाइय < तृषित = तृषातुर प्यासा। (३) पाहन < पाषाण। (४) परजार < पज्जाल < प्र + ज्वाल्म् = जलाना। (५) दुख < दुःख। (७) गीव < ग्रीवा = गला।

[३२१]

मैं एकसर एहि[1] मनस म[2] दहा[3] । कौन सो अंग जहँ[4] तोहि न चहा[5] ।
मोर तोर पम न जानत[1] कोई । जो न कहत दुइ लायन रोई ।
जौ मानस जिउ तोहि घट पाव ।[1] तो तुम्ह सउ[2] जिउ निज न आवै ।[3]
गएउ गोद जिउ[1] नाजि[2] न पावा । जहि पूछउ[3] सो मोहि दगावा ।
मैं फनि[1] हो जिय गों जिउ ओरा[2] । अब मोहि छाडि जाइ भा[3] तोरा ।

कौन बनिज न बनिजउं[1] का न बिढ़एउ[2] जाइ ।
अंतरहिं[1] मूल गवाएउ[5] लाभ क कौन निमाइ[3] ॥

पाठान्तर— उपर्युक्त १ ४ ५ अर्धालियों का क्रम मा भा मे है ५, ४ १। ए मे उपर्युक्त ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा अकसर नहीं ए एकसर मोइ। २ ए असिम ए म 'न' नहीं है। ३ मा भा ए चाहा। ४ ए मे यह शब्द नहीं है। ५ मा भा ए चाहा।

(२) १ ए जानै। २ मा भी न कहवे भेड़।

(३) १ मा मैं कुनि आपुन उस जीउ पावा भा आपन अस जीउ जौ पावा ए आपुन माउ जीव न पावा। २ मा भा तौ तुम्ह सैं (सो—मा) मैं जीव जौ (अति निउ—मा) लावा ए तौ मोसे जिउ बस है लावा रा तौ तुम्ह सौं जिउ मिल कै लावा।

(४) १ ए मौ खोइ जग भा गउ बारी जिउ। २ मा ए खोज। ३ मा पूछौ भा ए पूछौं।

(५) १ रा ए पुनि। २ मा भा यही जिम से जीव (जिउ—मा) तोरा मोह जीव जिउ तोरा। ३ ए मोहि छाँड भाइ भो।

(६) १ मा मैं बनिजौ ए मैं बानिज। २ मा बीहुसी (<बीसूहुसी) ए बिड़वा।

(७) १ ए ही। २ रा ए गंवावा। ३ मा भा काम की (क—मा) कौन निमाई (निमाइ—मा) ए काम कौनि उपाइ रा कायइ कौन उपाइ।

अर्थ—"(१) मैं अकेला इस भस्मि में नहीं दग्ध हुआ; संसार में कौन ऐसा है जिसने तुम्हें न चाहा हो? (२) ऐसा कोई नहीं है जो मेरे और तुम्हारे प्रेम को न जानता हो और उसका कथन दोनों लोचनों से रोकर न करता हो। (३) यदि [कोई] अपने जी को तुम्हारे मठ में पा सकता, तब तो वह तुम (तुम्हारे मठ) से उसे ले आता। (४) [मैं तो] खो गया और अपने जीव को [तुम्हारे मठ में] खोज न पाया और जिससे भी मैंने [अपने जीव के बारे में] पता लगाया, उसने तुम्हीं को [उसको अपना कैसे धारक] बताया। (५) तब तो मैंने अपने जीव को तुम्हारे जीव से संयुक्त कर दिया, जब [मैंने देखा कि] वह मुझे छोड़कर तुम्हारा हो गया है।

(६) मैंने [भी] आकर यह कौन-सा वाणिज्य किया और आकर मैंने क्या उपार्जित किया (७) कि उस [वाणिज्य के] अंतर (बीच) में नुकसान ही देता बैठा! फिर लाभ का कौन सा न्याय (प्रश्न) हो सकता है?

टिप्पणी—(१) बनिज < वाणिज्य। बिढ़ब < विढव [दे]=उपार्जन करना कमाना। (७) निमाइ < न्याय।

[३२२]

सह[1] सुनि कवल कली बिगसानी । खुले[2] भमर दुइ[4] अंखित खानी[5] ।
लाज न पारौ[1] कहि सखि आगें[2] । जिम[3] न लाज रहु[4] पेम के आगें[5] ।
पमें कहा लाज जनि[1] मानहु । मोर तोर सखि[2] एक कै[3] जानहु ।

तब तजि लाज[1] कहै दुख दाधी । मइउ[2] मांह तुम्ह दुख दहि आधी[3] ।
कहिउ[1] न लाज कहु एह[2] पीरा । सहिउ गुपुत प[3] दाह[4] सरीरा ।
एक दिसि[1] पीर[2] पिरम कै एक दिसि[3] कुल क कानि[4] ।
माहि दुऔ मिसि दूभर[1] भइसि[2] इत कुल उत जिय[3] हानि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा इमह। २ मा मा ए बिहसानी। ३ मा कुमी। ४ मा कहुँ मा दुहु ए म यह शब्द नहीं है। ५ ए रा अमी बिहरानी मा अमिअ मिरानी।
(२) १ मा पारै। २ ए कहै मनि लाग। ३ मा ए पै। ४ मा ए एह। ५ मा मागे ए माग (पूर्ववर्ती चरण का भी तुक नहीं है) रा लागें।
(३) १ ए मा। २ मा मा ए मैं लाजि सगी। ३ मा मा मिउ।
(४) १ ए मम तजि दुख। २ मा मई ए रही। ३ ए नाह तारे दुख आधी ।
(५) १ मा कहेउ ए कहौं। २ मा मा काहु इमह (मह—मा) ए काहु एह। ३ मा मा सहेउ गुपुत जीम ए सहा गुपुत जिय। ४ ए डाह।
(६) १ मा ए दिस। २ मा म 'माव' नहीं है रा लाज ए आन। ३ मा ए दिस। ४ ए हानि (तुक परवर्ती चरण का तुक)।
(७) १ रा दोऊ दिसि भारी। २ ए भइ । ३ ए तजि उत कुल।

अर्थ—(१) यह [बातें] सुनकर कमल-कलिका (मधुमालती) [प्रसन्नता से] विकसित हो गई (खिल उठी) और अमृत की खानि [उसके] दोनों अधर [बोलने के लिए] खुल पड़े। (२) [उसने कहा,] "मैं लज्जा [की बात] सखी के आगे नहीं कह सकती हूँ। [किंतु] प्रेम के जागने पर भी मैं लज्जा [भी] नहीं रखती हूँ।" (३) पेमा ने कहा "तुम [मुझसे] लज्जा न मानो मेरा और अपना है सभी तुम एक [जान] कर जानो। (४) तब वह दुख-दग्धा लज्जा त्याग कर कहने लगी "हे नाथ मैं तुम्हारे [विरह] दुख में दग्ध होकर आधी हो गई हूँ। (५) मैंने लज्जा के कारण किसी भी प्रकार से यह पीड़ा नहीं बताई है और गुप्त रूप से ही शरीर का यह दाह मैंने सहन किया है।

(६) एक ओर प्रेम की पीड़ा थी और एक (दूसरी) ओर कुल की कानि (लज्जा) थी। (७) [अत:] मम [तो] दोनों दिशाएँ दूभर हो गईं क्योंकि इधर [जहाँ] कुल की हानि थी [वहीं] उधर जीव की थी।"

टिप्पणी—(१) कली < कलिका। (४) नाह < नाथ = स्वामी। (५) कह ~ कीदृश = कैसे किसी प्रकार। (६) पिरम < प्रेम।

[३०३]

तुम्ह पुनि[1] कारन[2] दुख मो लागी[3] । मरहु[4] अग्नि बिमि बिरह न जागी ।[5]
म लाजहु अम[1] पम छपावा । एहि काहु नहि[2] मरम पावा ।
सगो सहमो भय[1] जा आहा[2] । तउ मरम पर जानहि नाहा[3] ।

एक दिसि[1] जम एक दिसि[2] दुख तोरा । तोर दुख देखि जम हाथ संकोरा[3] ।
जम जिउ ल एक बार[1] निबार[2] । यह[3] र बिरह खिन खिन जिउ मार[4] ।
तुम्ह[1] चित चचल निरदई[2] बसेहु सभ[3] जग लागि ।
म अबला किमि निरबहौं[1] तिल तिल जिबरा पलि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा तुम्ह पुनि ए तुहू जो। २ रा का पाठ स्पष्ट नहीं है। ३ मा दुख मोहि लागी मा जो मोहि बिध लागी ए दुख हम लाग। ४ मा सहेउ। ५. रा पीर। ६ ए मे चरण का पाठ है सहहु बिरह दुख हम आवे (तुक पूर्ववर्ती चरण)।
(२) १ रा लावनि अस ए लावन्ह जो। २ मा मा ए अब नहि काहु न।
(३) १ मा ए सखी सहेली (सहेली—मा) संग। २ मा जो रहही भा रहाही। ३ मा न (<यह फारसी लिपि) जानहि नाही मा नहि जानहि ताही ए जानि नहि पावहि।
(४) १ ए दिस। २ ए दुसरे।
(५) १ ए जम की म्रितु जनक। २ मा नरबाहे ए निरबाहे मा निबाहै। ३ मा एकह, ए यह। ४ मा जम नित नित बाहे मा जम नित जिउ चाहै ए खिन खिन दाहै।
(६) ए तुहू। २ ए निरदै। ३ ए बैसु सब।
(७) १ ए निरबहौं। २ मा तिल जेवर (एक 'तिल' छूट गया है लगता है कि आदर्श मे 'तिल' के बाद २ बना था) ए तिल तिल जीरा मा तिल तिल जिवरा रा तिल तिल जोतरा (?)।

अर्थ—"(१) तुम फिर, मेरे लिए दुख [उठाने की बात] कहते हो; [तो यह बताओ कि] तुमने विरह की कठिन अग्नि को कैसे सहन किया। (२) मैंने तो लज्जा के कारण इस प्रकार से प्रेम को छिपाया कि [मेरे] प्रेम की कोई चरख (भाप) भी नहीं उठा। (३) [मेरी] सखियाँ-सहेलियाँ जो [मेरे] साथ थीं वे भी इस मर्म को नहीं जानती हैं। (४) [मेरे] एक ओर यम (काल) था और दूसरी ओर तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) दुख था किन्तु तुम्हारे (तुम्हारे विरह के) दुख को देखकर यम (काल) ने भी [हार मान कर] हाथ सिकोड़ (खींच) लिया। (५) यम (काल) तो जीव (प्राणों) को लेकर एक बार में ही निवृत्त कर देता है, किन्तु यह विरह क्षण प्रतिक्षण जीव (प्राणों) को मारता है।

(६) तुम चंचल-चित्त और निर्दयी थे और तुम समस्त जगत् को छोड़कर—उसका सुख लेकर—जा बैठे (७) किन्तु मैं अबला जीव (प्राणों) को [तिल की भाँति] तिल-तिल (तनिक तनिक करके) पेर कर किस प्रकार निर्वाह करूँ ?"

टिप्पणी—(४) संकोर < सकोड < सकोटम् = सिकोड़ना।

[३२४]

कुवर बचन कामिनि सुनि[1] रोवा[2] । कहसि[3] मोर दुख तोहि न गोवा[4] ।
जो किछु[1] तुम्ह[2] मोहि जियपर[3] कीन्हा । सम जानति हहु[4] आपन[5] चीन्हा ।

सो का दुख पूंछ तहि करा । हिय माह जहि कर बसरा ।
मोर दुक्ख मोहि[१] पूंछसि[२] कहा[३] । आपुहि पूंछु किह जस अहा[४] ।
सदा ठाउ[१] जिय[२] भीतर तोही[३] । मोर दुक्ख का[४] पूंछहि[५] मोही[६] ।

सदा हिए महं[१] बाला ठाउ रह[२] कर तोर ।
जानि बूझि सब[१] मरम हिय[२] का पूंछसि[३] दुख मोर[४] ॥

पाठान्तर— उपर्युक्त अर्द्धाली १ ४ ५ का क्रम मा मा ए में है ५, ४ १ पुनः उपर्युक्त अर्द्धाली ३ के चरण क्रमश परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए कामिनि बचन सुनि कै। २ मा रोआ। ३ ए कहै। ४ मा गोआ।
(२) १ मा कुछ। २ ए न यह धन्द नहीं है। ३ मा मोहि जिस ए मारे जिउ। ४ ए कीन्हा। ५ ए सब जानौं ज रा सब जानति हम मा मा तुम जानति हहु। ६ रा अपनी।
(४) १ ए माही। २ ए पूछै। ३ मा मा ए काहा। ४ मा मा किय बहु काहा ए किय जो काहा (तुक पूर्ववर्ती चरण का तुक)।
(५) १ ए सदा ठाँव। २ मा जिअ ए जिव। ३ ए तोही। ४ ए मरम का मा मा दुख का तद। ५ मा ए पूछसि (पूछसि—ए)। ६ ए मोही।
(६) १ ए हिये मा। २ ए रहन।
(७) १ मा सब। २ ए जीव कै। ३ ए पूछै। ४ मा बिहुन तुम्हारे औ जिअ मोरा मकुबे दुखी देखि मुख तोर (तुक परवर्ती छंद की दूसरी अर्द्धाली)।

अर्थ—(१) कुमार कामिनी (मधुमालती) के [इन] वचनों को सुनकर रो पड़ा और उसने कहा "मेरा दुःख तुम से छिपा हुआ नहीं है। (२) जो-कुछ तुमने मेरे जी पर किया वह सब अपना [किया हुआ] किन्तु तुम जानती हो। (३) वह उसका दुःख क्या पूछता है जिसका उसके हृदय में निवास हो? (४) मेरा दुःख तुम मुझसे क्या पूछती हो? तुम अपने से पूछो जैसा जैसा तुमने कर रक्खा है। (५) सर्वदा [मेरे] जी के भीतर तुम्हारा स्थान (निवास) है [फिर] मेरा दुःख क्या मुझसे पूछती हो?

(६) हे बाला [मेरे] हृदय में सर्वदा तुम्हारे रहने का स्थान [रहा] है। (७) [तब] [मेरे] हृदय का सब मर्म जानकर क्या (क्यों) [मुझसे] मेरा दुःख पूछती हो?"

टिप्पणी—(१) गोआ < गोपित = छिपाया हुआ। (६) ठाउँ < स्थान।

[३२५]

यन्न तोर[१] का[२] माहि छपावत । जो तुव[३] बिहुरन पूंपट आपन ।
बिहुर[१] तुम्हार औरु[२] जिउ मोरा[३] । लखुप दुयो[४] दगि मुग तोग[५] ।
जसें तुरतुर गरो दिन चग[१] । मोंह न जाइ गुर तन[२] हृग ।
मन गुर[१] बिप भाहि म काई[२] । आपनि पमनिमा आपुहि माई[३] ।

छोटे हाथ न पहुँचइ पारौं ।[1] तौ मुख ऊपर सउ कच टारौं ।[2]
चिहुर संकरूह[1] वाला दिनयर[2] उद कराइ ।
लोयन जर बियोग[1] क पिर्महि सरूप[2] अघाइ ॥

पाठान्तर— भा मे उपर्युक्त पहली तथा दूसरी अर्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
मा मे उपर्युक्त अर्धाली २ पिछले छन्द म चली गई है।

(१) १ ए तोर। २ मा को ए कोर। ३ मा तुम ए तुह।

(२) [मा के पाठांतर पिछले छन्द से हैं] १ मा चिहुत। २ मा तुम्हार औंर, ए तोहार औंर, मा तुम्हारे औंर। ३ रा मोरौं। ४ ए दुनौ। ५ रा तोरौं।

(३) १ मा भा जस दुइ पहर घरी दिर (दिन—भा) बेरा ए जस दुपहरी बरमरि बेरा। २ मा सूम तनु, ए सुरत मा।

(४) १ मा सुर। २ मा कहा न कोई। ३ भा आपन चमका आपुहि सोई, मा आप चमनी का आवे सोही ए अपने जागनि का आपन छोई, रा आपु चोतिका आपुहि छोई।

(५) १ रा चतन किएं तोहि पहुँची नाही ए छोट हाथ ना पहुँचै पारौं। २ रा तो कच लाव छोटि मोरि बाही मा तुम मुख पर सेउ किमि करि टारौं ए तुह मुख से ऊपर केउ टारौं।

(६) १ ए सकोरहु। २ मा दिनयर, ए दिनकर।

(७) १ मा बियोग। २ ए रूप।

अर्थ— (१) तुम्हारा मुख [अपने को] मुझसे क्या छिपा लेता यदि तुम्हारे चिकुर (बाल) घूँघट [के रूपमें बीच में] न आ जाते? (२) तुम्हारे चिकुर और मेरा जीव—दोनों तुम्हारा मुख देखकर [उस पर] लग्न हो उठे। (३) [किंतु] जिस प्रकार दिन में दोपहर की घरी (घड़ी) बेला होती है [जिसमें] सूर्य की ओर सम्मुख होकर देखा नहीं जाता है, और (४) [यद्यपि] नेत्रों और सूर्य के बीच कोई पदार्थ नहीं होता है फिर भी वह (सूर्य) [हमारे नेत्रों के सम्मुख] अपनी चमनिका (व्यवधान) आप ही [अपने तेज के कारण] बन जाता है [उसी प्रकार तुम्हारा रूप मेरे नेत्रों के लिए व्यवधान बन गया]। (५) [अपने] छोटे [मानवीय] हाथों से मैं पहुँच नहीं पाता हूँ कि तुम्हारे मुख पर से मैं तुम्हारे कचों को हटा सकूँ।

(६) ऐ बाला तुम अपने चिकुरों को बटोरो कि [जिससे] तुम्हारा [मुख] दिनकर उदय करे (प्रकाशित हो) (७) और [मेरे] लोचन जो वियोगाग्नि के जले हुए हैं [तेरे] स्वरूप को छक (तृप्त हो) कर पिएँ।"

टिप्पणी—(१) चिहुर < चिकुर < केश। (३) सौंह < सउंह < सम्मुख। (६) संकिल < संकिल्ल [दे]=सिकोड़ना। दिनयर < दिनकर = सूर्य। (७) लोयन < लोचन।

[३२६]

जो कोइ देख चाह[1] मम रूपा । सुनहु बात एक[2] कहौं[3] अनूपा ।
क[1] सकोच मम नैन पसारा[2] । दिस्टि माँगि लै[3] आउ उधारा ।

ताहि दिस्टि चाहइ मम रूपा[1] । इन्ह ननन्हि[2] दसि[3] जाइ[4] न रूपा[5] ।
जौ मम नैनन[1] दिस्टि हुचिआव[2] । मोहि दसि तोहि और न भाव ।[3]
कहौं[1] कुँवर म निहच[2] ताही । इन्ह ननन्हि दसि[3] सक न[4] मोहा ।

क जिउ जोवन सब मन[1] नन सवन[3] द[4] बाग्नि ।
तब तो[1] लोयन[2] उघरहिं[3] जहिं[4] सूम अन आदि ॥

पाठान्तर—(१) मा देखि चाहै ए देखै चाहु। २ ए जो। ३ मा चहउ।
(२) १ ए दिसि। २ मा भा मम नयन विसारा (पसारा—मा) ए तुहि (?) नैन पसारा। ३ मा सेइ।
(३) १ मा ताहि दिस्टी देखै मम रूपा ए मा ताहि दिस्टि चाहौ (देखउ—मा) मम रूपा। २ ए नैनहु। ३ मा एक नयनन्ह दखै। ४ मा ए जा। ५ मा मा ए सरूपा।
(४) १ मा जौ मन नयन ए मम नैनन्हि। २ मा हय भावै मा हाय भावै ए ठहरावै। ३ ए मोहि वस ताहि और न भावै भा मोहि देखो औ और जो भावै मा माहि देखै औ जा कुछ भावै।
(५) १ मा कोउ। २ मा निरचै ए निस्चै भा निर्पै। ३ मा मा येइ लोयन दखि ए यह दखि नैन। ४ मा सकहि न ए सकै ना।
(६) १ मा कै जा जिउ जोवन औ तन मन मा कै जिउ जौ बन तन मनु। २ मा नयन। ३ मा भा ए सवन। ४ मा दइ।
(७) १ ए त रा तै। २ मा लोयन। ३ मा बरहि ए उपरै। ४ ए जा।

अर्थ—(१) [उत्तर में उस कामिनी ने कहा] "यदि कोई मेरा रूप देखना चाहता है तो मैं एक अनुपम बात कहती हूँ उसे सुनो। (२) वह मेरे नेत्रों के प्रसार का संकोच कर [मन से] दृष्टि उघार कर के और [तब] आवे (३) और उसी दृष्टि से वह मेरा रूप देख इन (सामान्य) नेत्रों से [मेरा] रूप देखा नहीं जाता है। (४) यदि तुम मेरे नेत्रों की दृष्टि हृदयंगम कर [मुझे देख] लो तो मुझे देख लेने पर तुम्हें और [कुछ] नहीं भाएगा। (५) हे कुमार, मैं निश्चित [तथ्य] बता रही हूँ इन (सामान्य) नेत्रों से [तुम] मुझे नहीं देख सकते हो।

(६) अथवा तुम जीव (प्राण) यौवन तन, मन नयन सभी को अलग कर (रख) दो (७) तब तुम्हारे [वास्तविक] नेत्र खुलेंगे जिससे तुम्हें आदि तथा अंत—सब कुछ—ज्ञात होंगे।

टिप्पणी—(१) जौ<जउ<यदि। (२) उघार<उद्घार=खुला। (५) निहचै<निश्चय। (६) सवन<श्रवण=कान। (७) उघर<उग्घर<उद्घट्=खुलना।

[३२७]

हिय माह मनन[1] तुव[2] ठाऊ । औ रसना बर[3] जप तुव नाऊ ।
औ ननन्ह मह[1] ठाउ तुम्हारा[2] । दिस्टि माँगि का करौं उघारा ।[3]
तुही[1] दिस्टि ननन्ह मह मोर[2] । लोयन अघ जाति बिनु तोर[3] ।
जब लहि त म होहि चगु माहा[1] । दिस्टि बासु[2] चगु दरसि चाहा[3] ।

जहाँ न तोर रूप[1] उजियारा । तह दिनयर[2] आछत अँधियारा ।
बाला जहाँ न[1] उद कर[2] तोहि[3] मुख[4] ससि उजियार[5] ।
सहस सूर जौ उगवहि[1] तौहू[2] सो ठाउ अँधियार ।

पाठान्तर— ए में उपर्युक्त अर्धाली ३ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।
मा में उपर्युक्त अर्धाली ४ के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए संतति। २ रा तोहि। ३ मा ए पर। ४ मा जपै ए जपई मा नम।

(२) १ ए मो। २ ए तोहारी। ३ ए दिस्टि माँह तुह मुरति अपारी।

(३) १ मा मा तही ए तोरि। २ मा मोरी। ३ मा जब नहीं तद न होहि जप मोरी। (तुल० परवर्ती अर्धाली का प्रथम चरण)।

(४) १ मा मा जब (जौ—मा) नहीं तद न होहि (होसि—मा) चखु माहैं ए जौ नहि नैन भर्व चखु मोही। २ रा बाजु मा बाहु। ३ मा जप देपै काहे, ए जो देखी तोही मा चखु देखौं काही।

(५) १ ए तोरा मुख। २ ए तहाँ दिन। ३ मा ए अछत।

(६) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ ए करै। ३ मा मा तुम ए तुह। ४ रा मे यह शब्द नहीं है। ५ ए उज्यार।

(७) १ मा ऊगवही ए उटै। २ ए तबहुँ। ३ ए ठाँव अधार, मा तहाँ अँधियार।

अर्थ—(१) [यह सुनकर कुमार ने कहा] (मेरे) हृदय में सदैव तुम्हारा स्थान [रहता] है [इतना ही नहीं मेरी] रसना भी तुम्हारा नाम जपती रहती है (२) और [मेरे] नेत्रों में तुम्हारा स्थान है, तो [तुमसे] दृष्टि उधार माँग कर मैं क्या करूँ? (३) मेरे नेत्रों में तुम्हीं दृष्टि [बन कर रहती] हो और मेरे नेत्र तुम्हारी ज्योति के बिना अंधे हैं। (४) जब तक तुम मेरे चक्षुओं में नहीं होती हो बिना दृष्टि के [मेरे] चक्षु किसे देखें? (५) जहाँ पर तुम्हारे रूप का प्रकाश नहीं है, वहाँ दिनकर के होते हुए भी अंधकार है।

(६) हे बाला, जहाँ पर तुम्हारे मुख शशि का प्रकाश उदय नहीं करता है (७) वह स्थान यदि एक सहस्र सूर्य उदय करें तो भी अंधकार [-पूर्ण] रहेगा।"

टिप्पणी—(१) संतत < सतत = निरंतर, सदैव। (२) ठाउ < स्थान। (३) लोयन < लोचन। (४) चखु < चक्षु। बाजु < वज्ज < वर्ज्य = बिना। (५) दिनयर < दिनकर = सूर्य।

[२२८]

संवत सपत बाचा[1] जो कीन्हें । मोहि आपुहि बिधि अंतर[2] दीन्हें ।
ससि पूनिउ[1] मुख जग उजियारा । सो किमि छप छपाए[2] बारा ।
सदा हियँ मह[1] रहमि तुम्हारी । का मो सउ[2] गोवसि मुख नारी ।
देहि अधर रस अमिअ[1] अघाई । तजत जो प्रान कया बसवाई[2] ।

बगि दगाउ रूप मोहि[1] बारी । कै निमु भइ सि[2] जीउ समहारी ।
कौन दोस[1] कहि औगुन[2] बदन छपावसि[3] मोहि ।
औगुन इह जो सकल सिस्टि पर मैं अस्थापेउँ तोहि[1] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मंवर सपन मोहि बचा मा मिवर मपनि बाचा। २ ए मोहि मनर बाचा मा।
(२) १ ए पुनीव। २ ए छपाय।
(३) १ ए हिये मा। २ ए वोहारी। ३ मा मा ए बारी।
(४) १ ए पेहु अमी रस अधर। २ मा तजन प्रान का जा केलमाई, ए जात प्रान काया बलंबाई, मा तजन पराग क्या बेममाई।
(५) १ ए माहि। २ ए ठै निमु भई।
(६) १ मा दोस रा ए दुख। २ रा कारन। ३ ए छपावें।
(७) १ मा भा औगुन इहै जो सकल सृष्टी पर मैं अस्थापउ (अस्थापा—भा) ताहि ए औगुन इहै सकल सिस्टि परी अवस्था ताहि रा औगुन इहै जो सिस्टि महं भई अवस्था ताहि।

अर्थ—"(१) तुम उन सपथों और वचनों का स्मरण करो जो तुमने किए थे और [इतना कि] अपने और मेरे बीच तुमने छिपाकर जो रखा था। (२) तुम्हारा मुख पूर्णिमा के शशि के समान संसार में प्रकाशित है; वह, हे बाला छिपाने से कैसे छिप सकता है? (३) सदा [मेरे] हृदय में तुम्हारा निवास है फिर क्यों मुझसे ऐ नारी तुम [अपना] मुख छिपा रही हो। (४) तुम [अपने] अधरों का अमृत रस भर पेट दो (पिलाओ) कि मेरी काया प्राणों का त्याग करने से बच जाए। (५) ऐ बालिका शीघ्र ही तुम [अपना] रूप दिखाओ; अथवा क्या तुम जीव (प्राणों) को लेने वाली ही हो गई हो?

(६) तुम [मेरे] किस दोष और किस अवगुण के कारण अपना मुख मुझसे छिपा रही हो? (७) मेरा अवगुण यही [हो सकता] है कि समस्त सृष्टि पर मैंने तुम्हें स्थापित किया है।

टिप्पणी—(१) सपन < शपथ। (२) पूनिव < पूर्णिमा। (३) हिय < हृदय। गोव < गोपय् = छिपाना। (४) अमिअ < अमृत। अघा < अग्घा [ह]=तृप्त करना। (७) जो < यतो < यत = कारण कि दि।

[३२९]

मंवर बचन मुनि गवुज करी[1] । बिपमिन[2] होइ रस बाउन परा[3] ।
पहेमि[1] मोहि बट बल बर मोमा[2] । कुकरम[1] न को मरबमु[2] मोमा ।
एक[1] म ममों[2] मइ[3] तुम गारी । लाजहि[4] बन्धुक पिता महतारी ।
बाभा दहि[1] जो मो कह[2] पोऊ । करों माइ मोहि पर बमि[1] जीऊ ।
गमन[1] करए जो मोमउ[3] माही । मिमउँ माइ[4] तुम्ह दइ[5] गम[6] याही ।
बिरह नाथ बस जिय नहीं होउ न एहि तन आगि ।[1]
मनि मम धरम बीर पर[1] पर गाप कर दागु[2] ॥

पाठान्तर— ए में उपर्युक्त तृतीय अर्द्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा कली ए कारी। २ मा प्रकषित। ३ मा भा भै ए भो। ४ मा बातन्ह बरी मा बातन्ह छली ए बातन्ह कारी।

(२) मा ए कहेसि। २ ए कुलगारी नासा। (तुक परवर्ती चरण का तुक) मा बड़ कुलकर संसा। ३ मा अकरम। ४ मा आपुहि ए आपुहि।

(३) १ ए एत। २ रा ए नासौं। ३ मा चढ़ै (<चढ़े) ए चढ़ै। ४ ए लाजौं।

(४) १ मा देहु। २ ए मो के। ३ मा मा तुम्ह पर बलि ए तोर पर बल (<बलि फ़ारसी लिपि)।

(५) १ मा सपति ए एत। २ ए कही। ३ मा मो सउ ए मो सौं। ४ रा मिलहुं भाइ, ए मिलै आजु तुहि। ५ मा दै ए मे यह शब्द नहीं है। ६ मा गले।

(६) १ मा भा बिरह अगिन कर जीअ सही येही डर होउ न भग (भागि—भा) ए बिरह आगि जो जिउ सही तेहि डर होउ न भागु।

(७) १ मा भा मति मम (हम—मा) धरम चीर पर, ए मति मम धरम चरि परै। २ ए चढ़ै पाप कै दागु, रा परै पाप के दाग।

अर्थ—(१) कुमार के वचनों को सुनकर उस कमल-कलिका ने विकसित होकर बातों का रस धारण किया। (२) उसने कहा "मुझे कुल का बड़ा संशय है कुकर्म कर के कौन [अपना] सर्वस्व नष्ट करे? (३) उससे एक तो मैं नष्ट हूँगी और [दूसरे] मेरे कुल को गाली चढ़ेगी [फिर] मेरे कुटुंब पिता और माता लज्जित होंगे। (४) हे प्रिय यदि तुम वचन दो तो मैं आकर तुम पर अपने जीव (जीवन) को बलि दूं। (५) यदि तुम हे नाथ मुझ से शपथ करो तो मैं तुम्हारे गले में बाहें देकर आकर तुम से मिलूं।

(६) भले ही मैं विरह का दाह [अपने] जी में सहन कर रही हूँ किन्तु इसी डर से [प्रकट रूप से] भाग नहीं हो रही हूँ (७) कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे धर्म-चीर पर दाग लग जावे।'

टिप्पणी—(१) करी < कलिया < कलिका। (२) सांसा < संशय। (५) सपत < शपथ।

[३३०]

कह्यो कुँवर मैं[1] तोहि[2] सति भाऊ । पानिप उतरि चढ़ नहिं[3] काऊ ।
पानी तात करि[1] जौ रे जुड़ाइय[2] । पहिल सवाद न तहि महं पाइय[3] ।
सूखे फूल कै[1] बासु न आई । औ न रूप किछु तहि क नसाई[2] ।
प न पहिल अस गारो रोई । औ आदर सउ[1] लेइ न कोई ।[2]
तस तिरिया[1] जो[2] पानिप खसै[3] । सो निजु आदि अंत कहं नस ।
जौ लहि[1] पिता सकलप नहिं[2] मोहि क[3] कन्यादानु[4] ।
तौ लहि[1] होइ[2] न सुरत[3] रस औरु सबै रस मानु[4] ॥

पाठान्तर— मा में प्रथम अर्द्धाली नहीं है तथा द्वितीय का द्वितीय चरण नहीं है।

(१) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ मा तुम्ह ए तोहि। ३ ए पाप के भाव चढ़ै मा भा पानिप उतरि फनि चढ़ै न।

(२) १ ए कै। २ ए जुड़ाई। ३ मा भा ए पहिल सवाद कि तामह (कै तापहं—ए) पाई (पाइय—मा)।

(३) १ मा सूधे कुसुम की ए भा मूल कुसुम कै। २ मा मा मौ न रुप कुछ बोहीक घटाई ए और रुप कै बोहि घट भाई।

(४) १ रा ए सौं। २ मा म यहाँ निम्नलिखित चरण और है पर बाहिर सम हासी हाई।

(५) १ मा वैस तिरी मा तसि तिरिया। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा ए पानिप पासी मा पानिप गर्मी। ४ रा सा पुनि आदि अंत लहि नम मा सा निमु आदि अंत गई गमी मा पुनी जु अंत न भामी ए जानि बूमि जा ताहि न भामी।

(६) १ ए लगि। २ मा मा ए न संकल्पी। ३ रा देई ए मा करै न। ४ ए दान।

(७) १ ए लगि। २ मा हान मा हाउ। ३ ए सुरत मा मिष्टि। ४ मा रमि भा रम तोहि माहि। ५ ए मान।

अर्थ—"(१) हे कुमार, मैं तुमसे सत्य भाव से कह रही हूँ, श्री [एक बार] उतर जाती है तो कभी नहीं चढ़ती; (२) जल को तप्त करके यदि उसको ठंढा कीजिए, तो उसमें पहला (पहले जैसा) स्वाद नहीं पाइएगा। (३) सूंघने पर फूल की सुगंध नहीं जाती है और न उसका रूप (रंग) ही कुछ नष्ट होता है (४) किंतु [पुन:] न पहले जैसी सुरता [उसमें] होती है और न उसे कोई आदर के साथ ग्रहण करता है। (५) उसी प्रकार स्त्री यदि पानी (श्री) गिरा देती है तो वह भली भाँति आदि और अंत के लिए नष्ट हो जाती है।

(६) जब तक [मेरे] पिता कन्यादान करके मुझको [तुमको] संकल्प नहीं देते, (७) तब तक [हममें-तुममें] सुरत रत न हो, तुम अन्य सभी रस (भले ही) मानो।"

टिप्पणी—(३) बास < वासना = सुगंध। (४) गारी < गौरव = मान्य, गुरुत्व। (५) तिरिया < स्त्री।

[३३१]

कहै[१] कुँवर सुनु[२] धनि[३] पियारी। उतपति सपन[४] जो[५] हम तुम[६] गारी।

आनिहि भरन जो हम्ह तुम्ह बिगाऊ।[१] गढ़ मत्य[२] हरि[३] अनत[४] भिगाऊ[५]।

कहु[१] गगन मोहि[२] तोहि[३] मति भाऊ[४]। पाप पय पा[५] परौं न काऊ[६]।

भइ फनि[१] बाचा[२] सपन[३] मोहि[४] तोरी। बिरचि न ग्यों बाचा[५] यह मोरी।[६]

जो लहि परम नह फर न मोरा।[१] मोहि मगाजु अंजिन पग तोरा[२]।

दोहरा—वर पामिमि जब ताइ[१] तोहि मोहि होइ न परम बियाह[२]।

पाप न अतर मघर विधि याचा निमु याहि[३]॥

[३३३]

जिअ की बात जो दुहु जिय होई । तहि कर मरम न आन[1] कोई[2] ।
सुरसरि जानु पियासा परा ।[1] मुए पिंड जनु जिउ[2] अनुसरा[3] ।
दुइ जोबन ग उरहि समान । अधर अमर[2] रस पियत अघाने[3] ।
मिल्त[1] पिरीतम जो[2] सुख होई । सो का जीभि कहि[3] पार कोई ।
बिबि[1] सरीर एक होइ गए[2] । बठे[3] पहर एक दुइ भए ।
नीर माँझ लहि बूड़[1] रह पियासे दोउ ।
परगट भाउ[1] सो बरनेउँ[2] गुपुत जान[3] का कोउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुनी जिअ होई, मा दुइ जीअ होइ। २ मा ए तेहि का मरम न जानै मा तेहि कर मरम आन का। ३ मा ए कोई।
(२) १ ए जो रसार पिआ असबारा मा सुरसरि जान पिआसा पीरा। २ ए मुये पिंड पानी मा मुये पीउ जनु जीउ। ३ मा ए अनुसारा।
(३) १ मा मै ए मद्दि। २ मा अमी। ३ ए न जानै।
(४) १ रा मिल्तहि। २ ए जैस। ३ मा सो कि जीहि कहि मा सो कहि जीभ कि ए सो किमि जीभ कहि।
(५) १ मा बेबी। २ ए भै बैठ। ३ मा बीत। ५ ए भयेऊ।
(६) १ ए लगि बूड़ेउ।
(७) १ मा भा भयेउ ए भै। २ रा बरनिय। ३ मा जानै।

अर्थ—(१) जी की उस बात का मर्म जो दोनों (दो प्राणियों) के जी के भीतर होती है, कोई [अन्य] नहीं जानता है। (२) [किन्तु प्रत्यक्ष रूप में ऐसा प्रतीत हुआ] मानो प्यासा सुरसरिता (गंगा) में आ पड़ा हो, अथवा मानो मृत पिंड (शरीर) में जीव आ गया हो। (३) [मधुमालती के] दोनों यौवन (कुच) [कुमार के] हृदय में जा समाए और [कुमार के] अधर [मधुमालती के अधर-रस का पान कर तृप्त हुए। (४) प्रियतम के मिलने पर जो सुख होता है, उसे क्या कोई जिह्वा कह सकती है? (५) दोनों शरीर एक हो गए, और बैठे-बैठे [दोनों को] एक-दो पहर हो गए।

(६) नाक भर पानी में वे दोनों डूबे जो प्यासे थे। (७) दोनों का प्रकट (प्रत्यक्ष) भाव मैंने बताया [उनका] गुप्त भाव क्या कोई जान सकता है?

टिप्पणी—(३) समान < सम् + आप् = व्याप्त होना। अघा < अग्घा [दे] = तृप्त होना। (५) बिबि < द्वय। पहर < प्रहर।

[३३४]

फुनि ग दुवौ[1] सेज पर बसे । सोभित रति मकरध्वज[2] जसे ।
कबहू[1] दुवो पाछिल दुख कहहीं । कबहू आपु माँहि मिलि रहहीं ।

रवि अथवा[1] ससि सिय परगासा । एक सन दुहु कीन्ह[1]
जग जीवन पर कहत सो एही[1] । जहि[1] बिछुर दुइ मि
रमि बिहानि दुवौ सुख जाय[1] । जिन्ह[1] जगु मोहि भार
अधर अधर उर उर सउं[1] भरइ[1] रहु सुख
देखत समुझि न[1] जिय परहि[1] दहु हहि एक कि

पाठान्तर—(१) १ मा फनि उठि दुनौ रा ए पुनि मैं दुनौ। २ मा
ए मधुकर मकरन्द रा रवि मकरन्दुज (नागरी भारती)
(२) १ ए करहि। २ मा मा आपुस महु मन मिलही
रहही।
(३) १ मा अंथवैउ ए अथवा। २ ए कीन्हु। ३ मा म
(कीन्ह—मा) ए एक नैन दुइ किआ रा किमनी
(४) १ ए फरकत कम एही रा कम जीनार म सोही। २
३ ए मा मिले मिलेही।
(५) १ मा बिहानी दुहु सुख जामी (<जाम फारसी मि
एम जाम। २ मा कहु ए कमु। ३ मा कहु ए भी
(६) १ मा मे रा ए मी। २ ए मेरे।
(७) १ ए देखि समुझि ना। २ रा मन परै मा जीम
रही ए रहु हहि।

अर्थ—(१) फिर दोनों जाकर सय्या पर बैठे और ऐसे सोभित हुए
(काम) हों। (२) कभी दोनों पिछला दुख कहते, और कभी आपस में
करते)। (३) सूर्य अस्त हुआ और ससि ने प्रकाश किया एक समय (प्रात
किया। (४) [लोग] जगत् में जीवन का फल [इसलिए] यही कहते
स्नेही [परस्पर] मिल जावें। (५) दोनों के सुख में जागते जागते रात बी
उनकी आँखों में नींद आ जाती] और जिनकी आँखों में नींद होती है उनको
(६) वे अधरों को अधरों से और हृदय को हृदय से मिलाकर सुख से
हुए वे भी [दर्शक को] ये नहीं जान पड़ते थे कि एक हैं या दो।

टिप्पणी—(१) सज < सय्या। (३) अथव < अस्ताय < अस्ताम् = अ
मैन < मयन = मय्या। (५) जमु < जगु < जगु।

[३३५]

पाम्बर प[1] दीन्ह दुवारो[1] । घर्मा मद पहर[1]

इहाँ सखिन सब[१] पेमा कर सहज रस कलि ।
उहाँ रूपमजरी[१] जिय[२] मह[३] भरम क वलि ।।

पाठान्तर—(१) १ रा पाटबार तब ए पाट मन्बर। २ मा दुवारी। ३ मा मा पेमा मह पहूरै, ए पेमा भी पहुव रा पेमहि भोर मएउ। ४ मा चित्रसारी।
(२) १ ए सहेली। २ ए बेरी। ३ ए, मा बी। ४ मा मा ए सम। ५ ए पचपच। ६ ए बरी।
(३) १ मा सब। २ मा ए सवय। ३ मा बारी। ४ ए जो। ५ मा अनुहारी मा उनहारी।
(४) १ ए समै हँसै। २ मा मा सबै ए रहे। ३ ए ठाई। ४ मा बाद जनु, मा बै भई। ५ ए मे चरण का पाठ है—पमा बहुरि बैसै सब माई।
(५) १ ए किस। २ रा चित्रसारी। ३ मा किआ। ४ रा मा कापर कोट किए साज दुवारी ए केलि करत है राजदुलारी मा केलि करत मैं साज दुवारी।
(६) १ ए सखी सग मा सखिन सग।
(७) १ मा ए मे यहाँ 'के' और है। २ ए, जिउ मा चित। ३ ए चढ़ी।

अर्थ—(१) पेमा ने द्वार पर का रेशमी परदा डाल दिया और वह चित्रसारी के पहरे पर [नियुक्त] हुई। (२) पेमा की सहेलियाँ साठ थीं और [उनमें से] प्रत्येक के साथ चार-चार दासियाँ थीं। (३) वे सभी रूपवती और यौवन-संपन्ना थीं वे एक वयस् की और एक-सी उनहार (मुखाकृति) की थीं। (४) वे सभी एक स्थान पर खेल और हँस रही थीं : पेमा शशि थी और वे सब तारिकाएँ थीं। (५) उन्होंने चित्रसारी के आसपास चारों ओर तथा द्वार पर कपड़े का परकोटा [खड़ा] कर दिया था।

(६) यहाँ सखियों के साथ पेमा सहज भाव की रस-क्रीड़ा कर रही थी (७) और वहाँ रूपमंजरी (पेमा की माँ) के मन में भ्रम (संशय) की बेली बढ़ रही थी।

टिप्पणी—(२) चरी < चेरी = दासी । बैस < वयस् = अवस्था। उनहारि < अनुहार < अनहार = अनुकृति। (४) तराईं < तारिका। (५) कापर < कप्पड < कर्पट = कपड़ा। (७) बेलि < वल्लरी।

[३३६]

रूपमजरी बसि जो अही[१] । अकस्माद[२] चिता चित गही[३] ।
चकित[१] चित्त औ मन शरमानी । भई ठाढ़ि उठि हियें[३] सुगानी[४] ।
फुनि[१] मधुरा सेउ[२] बहसि बोलाई । पियग[३] दह[४] तहि[५] बिधि मोकराई[६]।
गई साझ हुते[१] दुबो ते बाला[२] । अहीं[३] न जानौ कौनें हाला[४] ।
कौन काज दुइ राज दुलारी । घर तजि राति रहहिं[१] चित्रसारी ।
मधुर कहा म[१] धरी पठई हु[२] ओन्ह पास ।
ओइ अब लिम मह[१] आइहहिं[२] बसहु[३] सजहु[४] उदास ।।

1

पाठान्तर— ग मे उपयुक्त अर्धालियां ३ ४ ५ का क्रम है ५, ३ ४।

(१) १ मा बैसी अही ग बैठि आ अही मा बैसी आही ए आ बैसी अही। २ मा. मा अकममात ए अममम ते। ३ ए दही।

(२) १ १ मा चरित। २ ए प मर्म मुलामी। ३ ए आ हिय। ४ ए मुग्धामी मा ग सयानी।

(३) १ ग ए पुनि। २ ग मा. मधुरा सा मा मधुर सौ ए मधुरा ते। ३ मा कहेसि बुमाई मा कहसि बालाइ, ए कहा बोलाई। ४ मा मा चीज कि ए की की। ५ मा देइ ए आगि। ६ मा महि मा महि ए म मह छम्म नहीं है। ७ ए माव्कार्ई।

(४) १ ए धाम कि गई, मा गइ धाम की। २ रा दुभी मो बाला। ३ मा रही। ४ मा बाला।

(५) १ मा रैनि बमी ए राति रही।

(६) १ मा मा मधुर कहा अबहि मैं ए मधुर कहा मैं। २ मा पर ही। ३ ए उन्हुक।

(७) १ ए छिन मो। २ ए एह मा भैरही। ३ मा रा ए भैरहु। ४ ए तजी।

अर्थ—(१) रूपमंजरी जब बैठी हुई थी, अकस्मात् चिंता ने उसके चित्त को घर पकड़ा। (२) चित्त में घबराई मन में भरमाई और हृदय में सन्देह करती हुई वह उठकर खड़ी हो गई। (३) तदनंतर उसने मधुरा से उसको बुलाकर कहा "[ऐसा लगता है कि] सन्ध्या इस प्रकार अपना देह (चित्र) छुपा कर गई है। (४) संध्या से ही वे दोनों बालाएँ गई हैं, पता नहीं वे किस दशा में हैं। (५) क्या प्रयोजन है कि दोनों राजकुमारियाँ घर छोड़कर रात में चित्रसारी में [वहीं] रहें?" (६) मधुरा ने कहा "मैंने उनके पास चेरी को भेजा है। (७) वे अब क्षण में ही आयेंगी तुम बैठो और अपना उदासी का भाव छोड़ो।"

टिप्पणी—(१) जौ < जब < यदा = जब । अकममात < अकस्मात् = अचानक । (२) ...ाना = शुक की भाँति मोहातुर होना। (३) चिप < दुहिता = कन्या। (४) साम < सन्ध्या। (६) चरी < चरी = दासी (७) छिन < क्षण।

[३३७]

कहसि निमिष न रहो तहाँ । मधुमालति औ पेमा जहाँ ।
मनु जिय भरम मोहि चित भारी । भोगन सिधु रहौं चित्रसारी ।
मधुर बता गुनहु तुम्ह रामी । चतुर सुबुधि हहु मन सयानी ।
...य आहट औ मिमि अधियारी । कौन काज जाए चित्रसारी ।
...र बगहु न भोग्ह हुइ राखौ । कहद तो म रह म स मावौ ।
भोर हुँ बार मरमो ममहि कमि बगारि ।
मोर ताग मोन पराजन जो ममिन मा आरि ॥

पाठान्तर— मा तथा ए में उपर्युक्त ३ ४ तथा ५ अर्धालियाँ यथा १ २, ३ आती हैं और उपर्युक्त १ २, के स्थान पर उनमे यथा ४ ५ निम्नलिखित आती है ओइ आपुस महं (मो—ए) बार सहेली। करहिं (केहिं—ए) पिता घर कै रसकेली। बिछुरी मिली बहु दिनन्ह (बहुते दिन—ए.) दोऊ। तेहिं बरजत ओन्ह (उन्ह—ए) बरज न कोऊ। मा तथा ए में ये अगले छद में आती हैं।

(२) १ मा चितसारी।

(३) १ मा औ फुनि कहै ए. औ पुनि कहा। २ ए. चतुर है। ३ ए हो। ४ रा में इस अर्धाली के स्थान पर है —

मधुरा बरजि रही बहु आती। पै रानी जिय मई न साती।

शेष समस्त प्रतियो मे यह अर्धाली अगले छन्द मे आती है।

(४) १ ए ओट। २ ए मे यह शब्द नही है। ३ मा चितसारी।

(५) १ ए. तनिक चौराओं। २ ए. कहौ तौ यही उन्हें।

(६) १ ए बाल सहेली आ बार सनेही।

(७) १ ए जे। २ मा करिकेन्ह मा करिकन्ह। ३ ए यहं।

अर्थ—(१) [उपमंजरी ने] कहा 'एक पल मै वहाँ [जाकर] देखूं [तो], वहाँ पेमा और मधुमालती हैं (२) अन्यथा चित्त में मुझे भारी भ्रम हो रहा है और चित्रसारी में मैं कोई बुराई देख (समझ) रही हूँ। (३) मधुरा ने कहा "ऐ रानी सुनो तुम चतुर, बुद्धिमान और सर्वज्ञ सयान [रही] हो। (४) [चित्रसारी का] पथ ओहट—पीछे हटा हुआ है और रात अँधेरी है तुम किस प्रयोजन से चित्रसारी को जा रही हो? (५) तुम बैठो, मैं उन दोनों को बुलाती हूँ; और कहो तो मैं स्वयं जाकर उन्हें ले आऊँ।

(६) वे दोनो बाल-सहेलियाँ हैं वे खेल रही और केलि कर रही हैं (७) मेरा तुम्हारा क्या प्रयोजन है कि लड़कों में जायें?

टिप्पणी—(१) निमिख < निमिष = अक्षि-मीलन। (२) नतु < अन्यथा < अन्यथा। (३) सयान < सज्ञान। (४) ओहट < ओहट्ट < अपसृत = पीछे हटा हुआ। (५) हाँक < हक्क्= पुकारना आह्वान करना। सई < स्वयं। (६) बार < बाल। (७) परोजन < प्रयोजन। जौं < जओ < यद = कि।

[३३८]

मधुरा बरजि रही बहु भाँती। पै रानी हिय[1] भई न साँती ।
ओइ आपुस महं बार[2] सहेली। करहिं पिता घर क रस केली।
बिछुरि मिलीं बहुते दिन[1] दोऊ। तहि खेलत उन्ह बरज न कोऊ।
बरजी[1] न मानेसि गइ[2] चित्रसारी। मधुरहि[3] लाज भई जिय भारी[4]।
थेरी[1] दोस सिहसि[2] सग[3] लाई। सइ आपुन चित्रसारो[4] आई।

बरजि रही बहु[1] मधुरा रानी स्रवन[2] न कीन्ह।
सइ भवनी[1] चित्रसारी[2] ग देखसि[3] सब चीन्ह ॥

मा ए म उपर्युक्त प्रथम अर्द्धाली यथा तृतीय है और द्वितीय तथा तृतीय अर्द्धालियों के स्थान पर यथा प्रथम तथा द्वितीय हैं —
कहेसि निमिष भै (एक—ए) देखौं तहां। मधुमालती भी (ए म 'भी' नहीं है) पर्मा (पेम है—ए) जहां।
उपजउ (अब ओ—ए) मग्न मोहि (मो—ए) चित (ओ—ए) भारी (भारी—मा)। औगुन किछ (कछु—मा) देखौ चित्रमारी।

(१) १ ए जिउ मा जिय। २ ए म इन अर्द्धाली के स्थान पर है —
मधुरैं कहा सुनहु सुन्दर रानी। चातुर बुद्धि सुन्दर मया सयानी।
(किन्तु यह पूर्ववर्ती छंद की तृतीय अर्द्धाली है।)
(२) १ रा बात।
(३) १ मा बहु दिन ते।
(४) १ मा बरजो ए बरज। २ ए मानै नी। ३ रा मधुर। ४ ए मी जो।
(५) १ ए सीमह। २ मा ए मंग। ३ ए मी पुनि चित्रमारि था।
(६) १ ए था। २ रा ए मा भवन।
(७) १ मा भागु आ— ए मी मीमी। ८ मा चित्रमारी। ३ ए क्या।

अर्थ—(१) मधुरा बहुत प्रकार से मना करती रही किन्तु रानी (रूपमंजरी) के हृदय में शांति नहीं हुई। (२) [मधुरा ने कहा] "वे आपस में बाल-सहेलियाँ हैं पिता गृह में रस-केलि कर लें। (३) वियुक्त होकर वे बहुत दिनों पर मिली हैं इसलिए उन्हें रसते हुए कोई मना नहीं कर रहा है।" (४) [किन्तु] मना करने पर भी [रूपमंजरी ने] माना नहीं और वह चित्रसारी की गई [इस पर] मधुरा को भी मैं भारी लज्जा हुई। (५) उस (रूपमंजरी) ने बीस सखियाँ साथ ले लीं और स्वयं अपने से ही चित्रसारी आई। (६) मधुरा बहुत मना करती रही किन्तु रानी (रूपमंजरी) ने कान न किया (७) वह चित्रसारी गई और जाकर उसने सब चित्र (सभय) देखे।
टिप्पणी—(५) गई<स्वयम्। (६) भवन<भवन=भान।

[२३९]

जो रानी चित्रसारी[1] आई। ...मि सा था बहुत सजाई[2]।
...मि महल रवि[1] किरनि छपानी[2]। रवि दगत[3] ससि आनि हरानी[4]।
...गत राहु जगि भइ[1] भारी। पमा पाम आइ दई[2] गारी।
...ह[3] निलज ताहि[1] जानि न मोरी। लाग दिहसि बम पानिया बारी।[3]
एहि[1] तजो भराम तोरें[1]। बम बनक[3] बम मानहि[4] मारें।
सनि भागा सनन्ह कर सनत आ र कहंगिह[1] समुनाइ।
भाग[1] होइ[2] सो निम्प कार राप[4] जो[5] बमाइ॥

—(१) १ मा चित्रमारी। २ ए कहा न आई।
(२) १ मा ससि मंदिर रवि ए रवि मंदिर थो। २ मा. गमानी मा. समाना।
१ ए देम मा देखेसि। ४ मा देखना।

(३) १ ए देखा राति भई जो। २ मा दिसा ए दिहु।
(४) १ मा ए है। २ ए है निलज्ज तुहु मा हिर्दे रे निलज। ३ मा मा दाग दिहे कस पोतिआ (बतिया—मा) कोरी रा दाग दिहे कस छोबी (?) कोरे, ए दाग दिये कर पौति अकबोरी।
(५) १ रा है, ए मेह मा हमहीं। २ ए भरोसे तोरे। ३ मा कारिख। ४ मा मा ए लाये।
(६) १ रा सत भाखा सो सतत मह रै कहेनि ए सत भाखा मुनि तिन्ह कै सत कही।
(७) १ मा ए कार। २ मा मे और है 'अंतहिं'। ३ मा निरचै ए मा निस्चै। ४ मा मा ए सग। ५ रा मे यह शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) जब रानी (रूपमंजरी) चित्रसारी आई उसमे वह देखा जिसको कहते लज्जा ज्ञात होती है। (२) शशि-मंडल (प्रेमिका की गोद) में सूर्य (प्रेमी)-किरण छिप रही थी, और सूर्य (प्रेमी) को देख (पा) कर शशि (प्रेमिका) की ज्योति लुप्त हो गई थी। (३) यह देखते ही वह राहु जैसी काली हो गई और पेमा के पास उसने आकर माली दी (४) "तू निर्लज्जा है और तुझे मेरी कानि (मर्यादा का ध्यान) नहीं है। तूने कोरी साड़ी पर कैसे (क्यों) दाग लगाया? मैंने तो इसे तेरे भरोसे छोड़ रक्खा था [तो] तूने [मेरे] कुल को कलंक कैसे (क्यों) लगाया?

(६) संतों की भाषा सदैव सत्य होती [रही] है, जिन्होंने समझा कर कहा है (७) कि "यह अवश्य ही काला हो जाता है जो काले के संग निवास करता है।

टिप्पणी—(१) जौ < यद < यदा = जब। (४) पोतिआ < पोतिआ < पौतिका = धोती साड़ी। (६) सति < सत्य। सतत < सतत = सदैव। (७) निहचै < निश्चय।

[३४०]

पम कहा सुनहु[१] मैं कहऊँ[२]। तुम्ह माता बोलहु सो[३] सहऊँ[४]।
मोहि न मांख किछु[१] तुम्हरी[२] गारी। जसि मथुरा तसि गुरु[३] महथारी।
प किछु[१] कोरि[२] लाइ लै[३] मोही[४]। तौ गरिआउ भाउ अस[५] तोही[६]।
भरम न किछु[१] मानहु जिय[२] रानी[३]। त[४] दूनौ जस[५] सुरसरि पानी।
म पाछिलि इन्ह दुहु क[१] प्रीती। सम[२] जानौ अत आदि जेउ[३] बीती।
उतपति बात कही सम पेम[१] मिल दुनौ[२] जेहि[३] भांति।
पालक[१] फरि बदलि[२] कर[३] मुंदरी पहिरन्हि[४] भइ निय[५] सोति॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुनसि। २ मा माइ कहौं। ३ मा जो। ४ मा सहौं ए कहऊं (तुल० पूर्ववर्ती चरण का तुक)।
(२) १ ए मा। २ ए तोरी। ३ मा तस ए मा तै।
(३) १ मा कुछ। २ ए सोइ। ३ मा ए के। ४ ए मोहीं। ५. मा तौ गारी अउ भावउ ए तौ गरिआव भाव अस। ६ ए तोही।
(४) १ मा कुछ ए च। २ ए जीव। ३ ए मारी। ४ मा मेह, मा केह, ए, एक। ५ ए दुनहु अस।

(५) १ रा में पछिनी वाह हुई कै ए मा भी पाछिलि बुझइ मैं (कि—मा)। २ मा मव। ३ मा मा ग जा।

(६) १ ए जो पमै मा मव पर्मी। २ मा मिस रमो त प्रीति मिम्मी। ३ मा जहि।

(७) १ मा पार्लंम। २ रा म यह मप्प नहीं है। ३ ए बैं। ४ मा पहुँरीन्ह मा पहिरेन्हि। ५ मा मह जिम मा भै जिम ए जीव भो।

अर्थ—(१) ऐसो न कहो तुम [मेरा भी] सुनो मैं कह रही हूँ। तुम [मेरी] माता हो और जो बोलती हो वह मैं सहन कर रही हूँ। (२) तुम तुम्हारी माली का अमर्ष नहीं है [क्योंकि] जैसी मधुरा मेरी माता है, वैसी ही तुम भी हो। (३) किन्तु कुछ खोटापन (दोष) तुम में लगा (प्रमाणित कर) तो तो जितना तुम्हें अच्छा लगे गाली दो। (४) हे रानी तुम भ्रम न मानो वे दोनों ऐसे [निष्कलंक] हैं जैसे गंगा का जल [होता है]। (५) मैं इन दोनों की वह पिछली प्रीति [तथा] सब कुछ जानती हूँ जो इनमें आदि से अंत तक बीत चुकी है।"

(६) पेमा ने आदि की वह सब वार्ता बताई जिस प्रकार दोनों [एक-दूसरे से] मिले थे (७) [और जिस प्रकार दोनों ने परस्पर] वर्मों परिवर्तित की थी और मुद्रिकाएं बदल कर हाथों में पहनी थी और तब [उनके] जी को शान्ति हुई थी।

टिप्पणी—(२) माप < अमर्ष। (७) बान < वता < वार्ता। पालक < पर्यंक। मुदरी < मुद्रिका।

[३४१]

गना पमा निकट बुझाई[1]। कहसि जा पूछौं[2] कहहि बुझाई।
कहु माहि एहि कहि[1] मांति बपहारा। रोव दुखो[2] कै नरस[3] मुबारा।
कुम्भ कर ऊब क र[1] कुल हीना। क र बिरह दुग हुते मलीना।
प सइ मुनि काहू भउ[1] बासा। क र देखि[2] ओढ़ि[3] क रंग राता।
सब पर्मे निजु माल जा मही[1]। रूपमजरी सउ[2] मम[3] कही।

गढ़ह[4] सुहावन बनगिरि[1] सूदअमान सुबार।
नियरत अह[1] राव कर ठाकुर[2] कमसा[3] प्रानअधार॥

पाठान्तर—(१) १ ए बोलावा। २ मा ए करेसि। ३ रा मा. जा मो मा ए पूछो। ४ मा वह समुमाई ए. वह गन माया।

(२) १ रा वह मोहि एहि गहि मा वह माही मही मा ए वहु मोति एव। २ मा. दुख। ३ मा र्भ माहि ए भी माहि।

(३) १ ए. मीर किहै। २ ए. हन रा हुगा।

(४) १ मा वहु मनमप पुरव भी ए र्भ मन मजूर र्भ रा मा मैरें भए सुनि भाए र्मा। २ ए बैन देखि। ३ मा एटि ए मटि।

(५) १ मा माही। २ रा ए मा. सो। ३ ए. सब।

(६) १ रा मा कुल सुहाव कनै गिरि ठाकुर, मा मह (<मरह) सोहावन कनका गिरि, ए गढ़ सुहावन कनै गिरि।

(७) १ मा बाही ए उहवाँ। २ ए राजा ठाकुर। ३ मा केवल। ४ ए भिखार।

अर्थ—(१) रानी (रूपमंजरी) ने पेमा को [अपने] निकट बुलाकर कहा "जो मैं पूछती हूँ वह तू समझा कर बता। (२) मुझसे यह कह कि इसका व्यवहार कैसा है, यह रंक दुखिया है या नरेश भूपाल है। (३) यह कुल का उच्च है या कुल का हीन है अथवा विरह के दुःख से मलिन है? (४) यह स्वयं ही किसी से [उसकी] बात सुनकर उसके प्रेम में अनुरक्त हुआ है अथवा उसे देख कर? (५) तब पेमा ने बड़ी ठीक-ठीक बात कही, रूपमंजरी से सब बताई।

(६) उसने कहा, "[एक] सुहावना गढ़ कनकगिरि है, [जहाँ का] भूपाल सुरजभान है। (७) यह [कुमार] उसी का टिकैत (युवराज) और राज्य का स्वामी (उत्तराधिकारी) है और यह [अपनी माता] कमला के प्राणों का [एकमात्र] आधार है।

टिप्पणी—(२) वेवहार<व्यवहार। (२) (३) भुवार<भूपाल। (४) सद<स्वयम्। (४) रात<रक्त=अनुरक्त।

[३४२]

सुनु माता पै[1] इन्ह दुख[2] माही । दरस[3] परस छाड़ि मन[4] किछु[5] नाही ।
मै काहें[1] असि भइउँ[2] अयानी । मरवों[3] निर्मल[4] खीर महुँ[5] पानी ।
दधित कुंड जस[1] औतरा । अजहुँ दधु औहस हु भरा[3] ।
पम छीन[1] हहिं[2] पाप न नास[3] । अजहूँ सुरसरि नीर[4] पियास[5] ।
कवल करी[1] नहि लीन्ह बिगासा । भवर बिमोहि फूल नहिं[3] बासा ।
अजहु सवाती धार सीप[1] लगि धोरि[2] गगन[3] पहराति[4] ।
अजहु असि जनमी[1] मधुमालति दई राखी[2] तेहि भाँति[3] ॥

पाठान्तर— मा प्रति इस छंद के अनन्तर छंद ४२४ तक खंडित है।

(१) १ मा मा पुनि ए पै। २ मा येन्ह दुख ए दुखें बिच। ३ ए दुसर। ४ मा मा छाड़े ए चोरि। ५ मा कुछ, ए पै।

(२) १ मा काहे। २ मा असि भइ, ए कौ भैउँ। ३ मा ए अवतारा। ४ मा ए निरमल। ५ ए छीर मौं मा खीरहि।

(३) १ मा जाइस ए तैस। २ मा ए अवतारा। ३ मा औहस है भारा ए ओहसे है धारा मा तैसह है भरा रा वैसी है बरा।

(४) १ रा लीन्ह। २ मा हही मा हहिं। ३ ए ए न पासे मा बिनासें। ४ मा तीर। ५ मा पियासें।

(५) १ मा रा ए कली मा करी। २ मा कंवल मा किया ए काहु न। ३ मा मा मांझ (भंवर—मा) बिमोहि रूप औ ए और बिमोहि रूप भी।

(६) १ मा मनहु सबती धार छीपगइ, ए भा बनहु मधानी धार सीप ए बनहूं स्वात नीर। २ मा ए बार। ३ मा बनर। ४ मा पुबती मा ए गुमाति।

(७) १ मा नैसि पनी ए जैस जननी मा जैस जनम। २ मा बिधि राखी ए पहिरि जीउ मा दैय राखि। ३ मा तैहि भाति ए मी भाति।

मर्म—"(१) किंतु माता सुनो, इन दोनों में [परस्पर] दर्शन और स्पर्श के अतिरिक्त इनके मन में कुछ नहीं है। (२) मैं क्यों ऐसी अज्ञान होने लगी कि निर्मल दूध में पानी मिलाऊँ? (३) अमृत कुंभ (स्त्री गुह्यांग?) जिस प्रकार अवतरित हुआ था आज भी देखो तो उसी प्रकार भरा हुआ है। (४) [दोनों] प्रेम-लीन हैं पाप से मग्न नहीं [हुए] हैं, [दोनों] सुरसरि के नीर (सुरत रस?) के लिए पिपासार्त हैं। (५) कमल-कलिका (स्त्री गुह्यांग?) ने [अभी तक] विकास नहीं ग्रहण किया है और भँवर (पुरुष गुह्यांग?) ने विमुख होकर फूल (स्त्री गुह्यांग?) में वास नहीं किया है।

(६) आज भी स्वाती की धारा (पुरुष गुह्यांग?) सीपी (स्त्री गुह्यांग?) के लिए घुमड़ कर आकाश में घहरा रहा है (७) मधुमालती आज भी वैसी ही है जैसी वह जन्मी (जन्म के समय) थी देव ने [अभी तक] उसको उसी भाँति रक्खा है।"

टिप्पणी—(२) अयानी < अज्ञानि। खीर < क्षीर। (५) कली < कलिमा < कलिका। (६) सेवाती < स्वाती। घार < घोल < घुम्म < घूर्ण = घूमना चक्राकार फिरना।

[३४३]

पेमा वचन सुनसि जब[1] गाना । भई भाँति तब जिय[2] मुस्काना ।
महुँमन फरगहि यह सतत[1] राम । बिया साजि माहि मउ[2] यह गाव ।
कबहु धनिन[1] हार[2] बहु[3] निमि दया । कबहु मौन होइ[4] रहु अलगान[5] ।
कबहु सीस धरि[1] कसि लवाई । कबहु ठाढ़ धुनि[2] हुम हुमाई ।
कबहु कह दरपन सउ*[1] बनों । कबहु रहिर भरि आवहि[2] नर्नां ।
कबहु दवस धारि मन छाड़[1] कबहु राम दुख[2] गोइ ।
कबहु मारो*[1] बिरह बियाकुलि[2] बदन डाकि रहु[3] गोइ ॥

पाठान्तर— मा ए म अन्तर्गत तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ मा सुन्यों जब ए सुना जौ। २ ए मा मनोज जिउ।
(२) १ ए कगहु मनति त। २ ए पैना भाव सो सी, मा बिया साज मैं बोलो।
(३) १ मा धनिन। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा. बहु ए बह। ४ ए पुण्य भै मा भूप हाइ। ५ मा अछेमा।
(४) १ मा गिर धुनि, ए सीस धै। २ ए भै।
(५) १ रा बरै दरपन या ए देनै दरपन ठै मा बरै दरपन दे। २ ए रहिर भे आवै।
(६) १ ए अस छाडै। २ ए में यह शब्द नहीं है, मा. दुइ।

(७) १ ए म मह शब्द नहीं है, भा मोली। २ ए व्याकुली। ३ ए झाँपि रहु, मा झाँकि रह।

अर्थ—(१) प्रेमा की बातें जब रानी (रूपमंजरी) ने सुनीं उसे शांति हुई और वह जी में स्वस्थ हुई। (२) उसने कहा "सचमुच यह सदैव रोती है, और अपनी व्यथा लज्जावश मुझसे छिपाती है। (३) कभी यह चकरा कर चारों ओर देखती है और कभी मौन होकर घुम-घुम रहती है। (४) कभी यह सिर पकड़कर बैठ जाती है और तमोभिभूत हो जाती है और कभी खड़ी होकर हँसती-हँसती है। (५) कभी यह दर्पण [के प्रतिबिम्ब] से वचन कहती है तो कभी [इसके] नेत्रों में रुधिर [का अश्रु-जल] भर आता है।

(६) कभी बार-बार दिनों तक अन्न [खाना] छोड़ देती है तो कभी अपना मुख छिपा कर रोती है (७) और कभी बालिका विरह-व्याकुल होकर मुख ढँककर सो रहती है।

टिप्पणी—(२) सतत < सतत = निरंतर, सदैव। (४) तम < तम = तमोभिभूत होना। (६) गोव < गोपय् = छिपाना। (७) बारी < बालिका।

[३४४]

तहि ऊपर पापिनि त काहे¹ । बुझी आगि पर घिउ स बाहे² ।
एक एसइ¹ तहि² चित³ बरागी । तहि पर त का बई बजागी⁴ ।
एहि आपन कछु¹ हुत म² समारा । त का बज्र ताहि पर मारा ।
पारस्व एक हम नग पारी । एहि के मदिस¹ काहु² लै धरी ।
तहि दिन सेउ यह मरि मरि जिय¹ । अन न खाइ सडवानि न पिय² ।
आजु बात सब जानिउ¹ औ बूझिउ सब मम² ।
त कस हरिस डारि धसि काटी¹ आगें² कौन यह धम³ ॥

पाठान्तर— उपर्युक्त तृतीय अर्धाली के चरण ए म परस्पर स्थानान्तरित है।
(१) १ ए तैं एहु का कीन्हे। २ ए मित ऊपर दीन्हे।
(२) १ ए औदहि। २ ए में यह शब्द नहीं है, भा वैहि। ३ ए रही भा हुति। ४ ए ऊपर तैं बई बज्र आगी।
(३) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए न हो।
(४) १ भा मदिर। २ ए काहु।
(५) १ ए तै जौ मरि मरि जीअइ। २ रा भागु नीर खड़वानि न पियै ए अन न खाइ पानी न पीअइ।
(६) १ भा तिनु जानिउं ए सब जाना। २ ए औ बूझा सब मर्म।
(७) १ ए तैं काजर खाइ सिर काडे भा तैं का डारि हरी धरि काटी। २ ए आगू भा एक। ३ ए धर्म।

अर्थ—"(१) उसके ऊपर (यह सब होते हुए भी) ऐ पापिनी तू क्यों बुझी अग्नि पर घी लेकर चला (फेंक) रही है? (२) एक तो यों ही उसका चित्त विरक्त था, [फिर] उस पर तूने यह

बन्यालिन क्या (क्यों) हो गी ? (३) इसको अपना कुछ भी स्मरण नहीं था फिर उस पर तूने क्या वज्र डाल दिया ? (४) एक पर्यंक स्वर्ण और मणि-खचित इसके मंदिर (महल) में कोई [एक दिन] लाकर रख गया (५) उसी दिन से यह [मानो] मर-मर कर जीती है और न यह अन्न खाती है और आँख का पानी (रस) पीती है।

(६) आज मैंने सब कर्म जानी और सब मर्म समझा। (७) तूने यह हरी डाल क्यों घिस कर कम डाली और फिर यह कौन-सा कर्म किया ?"

टिप्पणी—(१) थाह < थाहय् = थकाना। (२) बव < वप् = बोना। (३) पार < पाड < पातय् = गिराना। (४) पालक < पर्यंक = पलंग। (५) अन < अन्न। (७) हरिय < हरित = हरा।

[३४५]

अति भिए[1] रिसि किछु[2] चेत न रहा। रानी रोइ सखिन्ह सउं[3] कहा।
अस बेगराबहु इन्ह दुहु जानी[1]। जस गिर पोख सउं[2] पानी।
सखिन्ह[1] दुहु बिच करवट दीन्हा[2]। एक न्ह जनु[3] दुइ ठा कीन्हा[4]।
असि मोहनि जनु[1] निद्रा लागे[2]। करवट दीन्ह सबहु नहिं[3] जागे[4]।
कुंवरहि ल सो कनगिरि डारा[1]। मधुमालति न मंदिर उतारा[2]।
बिसमारि[1] सउं[2] रानी फनि[3] गइ[4] मधुरा पास।
कहुसि[1] हाइ[2] जो अम्मा चलहु मवरें[3] बास॥

पाठान्तर— ए मे उपर्युक्त तृतीय तथा चतुर्थ अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए भी। २ न यह पाठ नहीं है। ३ रा हाइ जन्मि मा ए बहुरि सखी ते भा राइ सखिन्ह सौं।

(२) १ ए अस बगराबहु दूनहु जनी भा रा अस बहराबहि इन्ह दुइ (दुहु—रा) जानी। २ ए जैसन गगन पत्र ते भा जैसें पत्र सौं रा जैस मिरै पात मा।

(३) १ रा सखिन। २ ए बीच दुहुं करवट दैऊ भा दुवो बिच करवट दऊ। ३ ए तब। ४ ए भा दियेऊ।

(४) १ रा दिछ। २ ए जागी (<जागे फारसी लिपि)। ३ ए दल बहुरि भा भा दई तबहु नाहि। ४ ए जागी (<जाग फारसी लिपि)।

(५) १ ए भा लिया नाम मैं डारउ (डारेन्हि—भा)। २ ए उतारउ भा उतारेन्हि।

(६) १ मा भा बिसमारि। २ भा ए रा सौं। ३ रा ए पुनि। ४ ए गो।

(७) ए कहन। २ ए दहु। ३ ए अमउ मवरा ए भाउ जानें।

अर्थ—(१) अति रोष करने से [रूपमंजरी को] चेत नहीं रहा [तदनंतर] रानी (रूपमंजरी) ने रोकर सखियों से कहा (२) "इन दोनों जनों को इस प्रकार दो (अलग-अलग) कर दो जैसे [पानी के] पंख से पानी गिर [कर अलग हो] जाता है। (३) सखियों ने दोनों को

मोह से करवट ली मानों उन्होंने एक देह को दो स्थानों पर कर दिया हो। (४) वे आँखों की ऐसी मोहिनी निद्रा में सने (पड़े) हुए थे कि करवट ली गई और तब भी वे नहीं जागे। (५) कुमार को लेकर [रूपमंजरी की सखियों ने] कनकगिरि में डाल दिया और मधुमालती को ले [जा] कर उन्होंने [उसके] मंदिर [भवन] में उतार दिया।

(६) चित्रसारी से तदनंतर रानी (रूपमंजरी) मधुरा के पास गई (७) और उसने कहा, "यदि आज्ञा हो तो सवेरे (शीघ्र) ही [अपने] वास (निवास) को प्रस्थान करें।"

टिप्पणी—(२) उघट<विघट<वि+घटय्=ताड़ना खंडित करना। (५) कनै<कनय<कनक। (७) मयूरा<माता।

[३४६]

कुवर इहाँ जागेउ[1] जह आना । चकित[2] चित[3] भा मरमि भुलाना[4] ।
सौंतुख सपन न जा किछु[1] कहा । दसत चरित चकित होइ[2] रहा ।
माहि खह सिर धुनि धुनि रोव । नैन रगत मुख अंबुज धोव ।
कहाँ सो चित्रसारि[1] कविलासा । कहा सो आछरि जहि सग[2] बासा ।
रजनी अंत[1] होत भिनुसारा । चलेउ कुवर तहु जहं हुत दारा[2] ।
कहं कविलास नवास बास[1] वह[2] कहं आछरि कर संग[3] ।
निमिख माह वह[1] राजसुख कइ रे कीन्ह अस भंग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जागा। २ भा चकित। ३ ए जो। ४ भा मन मरमाना।
(२) १ सौंतुख सपना जात न। २ ए देखा चकित चित मैं भा देखि चरित चकित होइ।
(४) १ भा चित्तसारि। २ ए सो रही जाहि सग भा सो सुरहिनि जहि सग।
(५) १ ए गत। २ ए कहं होत हियारा भा उठि जहां सो दारा।
(६) १ ए में यह छन्द नहीं है। २ ए जे। ३ ए कहां सुरज बस संग भा कहं सुरहि निकर संग।
(७) १ ए जो। २ ए भइ केहि कीन्हा।

अर्थ—(१) कुमार यहाँ जगा जहाँ [वह] ले जाया गया था वह चित्त में चकराया और भ्रमित होकर भूला रहा। (२) यह [सब] संमुखता था या स्वप्न कुछ कहा नहीं जा सकता था। इस चरित्र को देखकर वह चकराया हो रहा। (३) मिट्टी डालकर वह सिर पीट-पीट कर रोता था और नेत्रों के रक्त (रक्ताश्रु) से मुख-कमल को धोता था। (४) [वह सोचता था] "कहाँ वह चित्रसारी का स्वर्ग होगा और कहाँ वह अप्सरा होगी जिसके साथ उसने निवास किया था।" (५) रात्रि के अंत में सवेरा होते ही कुमार वहाँ [के लिए] चल पड़ा जहाँ वह दारा (स्त्री) थी?

(६) [वह सोचता जाता था] "कहाँ [रहा] वह स्वर्ग का निवास और कहाँ [रहा] वह अप्सरा का साथ? (७) निमेष (पल) मात्र में किसने उस राज-सुख को इस प्रकार भंग कर दिया?"

टिप्पणी—(२) मौंगुन < गं + प्रत्यय (?)। (३) बाह < वाह्< बग्माना। गम रक्त। (४) (६) बावमाग < बग्गम = ग्यम। (४) (६) माछरि < मच्छरि < प्रग ग = बग्गरा। (७) निमिष < निमिष = अंग-मीलन नेत्र-सकाच।

[३४७]

काइ मध मास[1] न[२] ब्रिनु बग्गाग । गोवन चलउ पाग्नि[३] सिर छाग ।
नन मकर गहिय मन माग[१] । मग जीवन मध[२] माहि चिन्त भाग[३] ।
मघ[१] न माय पम मग माता । पिग्म म घग बकन नहि[२] चाना ।
बाइ चला एकमर गिनि गती । मधुमालति कर पम मघाती ।
बन मायर जग आगों[१] पग । पम प्रताप तें गम आइ सिर[२] ।
यह तो उहाँ[१] चला तहि मारग जहाँ प्रथम भइ सिधि[२] ।
मधुमालति जो माग[१] मम जो[२] लोगनि निधि[३] ॥

पाठान्तर—(१) १ ग माल। २ ए म घर पाप्त नहीं है। ३ ग चग बाग्न मा बग्गु मिलि।

(२) १ ग मो गे मोमाई ग गेह मन माग। २ ए म घर पाप्त नहीं है। ३ ग इगी नहि माई मा मेरि ठाले भवर (?)।

(३) १ ग मा मध। २ ग म बरमो बहीं जो मा म घटी बरत नहि।

(४) १ ग जा माप। २ ए ठेगा ठबर मा म मबरे लगे।

(६) १ ए एह ठो इहाँ। २ ए जहि प्रथम भी सिधि मा जग परथम मइ सिधि।

(७) १ ए इहाँ जागी मा इहवाँ जागी। २ ग म यह पाप्त नहीं है। ३ ग माग निधि।

अर्थ—(१) शरीर के अतिरिक्त [कुमार के] संग-साथ कोई नहीं था [किन्तु] वह [इसी प्रकार अकेले] सिर पर राज्य डालकर चल पड़ा। (२) [उसने मत्ता,] "नदी में उसरा रमकर [रमकर] मन को [उसने] लगाए हुए अपन् का जीवन अब मुझे किस भाग (काम) का रहा? (३) उसके संग-साथ [कोई] नहीं था और वह प्रेम-मद (मदिरा) से मत्त था उसका प्रम कम नहीं हो रहा था और वह [किसी से] बातें नहीं बोल रहा था। (४) वह अकेला दिन रात चला जा रहा था, [केवल] मधुमालती का प्रम [उसका] सखी था। (५) वन और सागर जितने भी उसके सामने (मार्ग में) पड़े प्रम के प्रताप से उन सब को वह पार कर गया।

(६) वह (कुमार) तो वहाँ के लिए उस मार्ग में चल पड़ा जहाँ इसे प्रथम बार (प्रारंभ में) सिद्धि प्राप्त हुई थी (७) और वहाँ मधुमालती जब जागती है तब संजनी है कि उसने निधि गवाँ दी।

टिप्पणी—(१) चाम < प्र [दे] = फैरना डालना। पार < सार = राज। (३) माग < मग। पिरम < प्रेम। (४) सायर < सागर। दैर < दीपक < दामन् = जिसना। (५) सिर गर < गृ = तैरना। (६) जो < जउ < यदा < यत्र। (७) माग [दे] = गंगार हवा गवाना। मो < उभा < पग = वान्त कि।

[३४८]

मधुमालति औ सोवति जागी । बिरह अगिनि[1] नखसिख तन[2] लागी ।
ऊभि साँस हिय गहु भरि[1] आव । तजि लज्या चखु रुहिर बहाव ।
नैन भरनि[1] भरि धार जो छूटी[2] । सेज पूरि जनु[3] बीर बहूटी ।
जबहीं[1] दसन झपारत खोला[2] । दामिनि चमकि चमकि जनु बोला[3] ।
मुकलित कस रजि[1] अँधियारी । सहज भाउ भादौं झपकारी[2] ।
रुदन[1] करति मधुमालति बिरह बिथा[2] तन साल ।
लोगन्ह अचरिजु भा बहु भारी[1] अब दुइ बरखा[2] काल ।।

पाठान्तर—(१) १ ए आगि। २ ए तौ रा था।
(२) १ ए पिउ गहि गहि मा हिय गहि गहि।
(३) १ रा नैन रकत ए नैनहि भरि। २ ए फूटी। ३ ए नैन बीर (<बीर फारसी लिपि) चलु, रा सेज पूरि जनु।
(४) १ ए जागो। २ ए बरसत झकोरत बोला। ३ ए तौ बोला रा मन बोला।
(५) १ ए रही। २ ए अब दुख आवे सुख उजियारी।
(६) १ ए रोवत। २ मा बिथा।
(७) १ रा अचरिजु भा बहु भार, ए लोगन्ह अचरिज उपज मा लोगन्ह अचिजु सदा बरखा इक। २ रा दुइ बरखा एक काल।

मर्म—(१) मधुमालती जब सोते-सोते जगी विरह की अग्नि उसके शरीर में नख से शिखा तक लग गई। (२) उसकी श्वास ऊर्मित हो गई थी और उसका हृदय भर-भर आता था। वह लज्जा छोड़ कर चक्षुओं से रुधिर [के अश्रु] बहा रही थी। (३) उसके नेत्रों से भरनी (वर्षा के एक नक्षत्र) की भरी धारा जो फूट पड़ी तो उसकी शय्या [उसके रक्ताश्रुओं के कारण] मानो बीर-बहूटी से पूरित हो गई। (४) झपारते (पुकार छोड़कर रोते हुए) जब वह दाँतों को खोलती थी, तब (ऐसा लगता था) मानो बिजली चमक-चमक कर बोलती हो। (५) उसके मुक्त केश अँधेरी रात थे [जिनके कारण] सहज भाव से भादौं की झपकारी (व्यापक रूप से ढँक लेने वाली कालिमा) हो रही थी।

(६) मधुमालती रुदन कर रही थी, [क्योंकि] विरह-व्यथा उसके तन को साल (शल्य की भाँति कष्ट दे) रही थी; (७) लोगों को बहु भारी आश्चर्य हुआ कि अब दो वर्षा काल [होने लगे] हैं।

टिप्पणी—(१) जौ<जउ<यदा=जब। (२) ऊभि<ऊर्मित। चखु<चक्खु<चक्षु=नेत्र। रुहिर<रुधिर। (६) बिथा<व्यथा।

[३४९]

मघरा मउ[1] अग्याँ जौ पाई । रानी नगर महारस आई ।
धाइ आइ मधुमालति पासा । देखसि रोवै ऊभि स[1] साँसा ।

कनक देह सब मिलि ग[1] माटी । तन मीर धोएसि बिधु[2] पाटी ।
फारेउ तार तार तन चोला । रोवत भ[1] गत दुइ डोला[2] ।
सवरि सवरि प्रीतम उनिहारी[1] । रोव धालि खेह[2] सिर बारी ।
प्रथमहि[1] प्रेम जो[2] उपनउ तब हुति[3] बारि अयानि[4] ।
अब भर जोबन किमि रहु[1] प्रीतम कहत परान ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए भौ। २ रा ए अग्या।
(२) १ ए देखि रहै सिर ढावै मा देखत रहै ऊमि सौं।
(३) १ एके सब मिलि भी मा सब मिलि पै। २ ए बाब निधि।
(४) १ ए भौ। २ ए ढोला।
(५) १ ए अनुहारी। २ ए रहै जा लाइ धाहि।
(६) १ ए प्रथमहि। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ ए हुती जा। ४ मा अयानि।
(७) १ ए रहौ। २ ए मिलेउ का पानी प्रान।

अर्थ—(१) मधुपुरा से जब आज्ञा पाई रानी (रूपमंजरी) महारस नगर आई। (२) वह मधुमालती के पास दौड़ी आई और उसने देखा कि वह ऊर्मिल श्वास लेकर रो रही है, (३) [तथा] उसकी कनक [जैसी] देह सब मिट्टी में मिल गई है (विवर्ण हो गई है) और उसने विधु-पट्टिका (?) को धो डाला है। (४) उसने शरीर पर की चोली को तार-तार फाड़ डाला है और रोते-रोते उसके दोनों नेत्र लाल हो गए हैं। (५) प्रियतम की उनहार का स्मरण कर करके बालिका सिर पर धूल डालकर रो रही है।

(६) पहले जो प्रेम उत्पन्न हुआ था उस समय बालिका अजान (अज्ञात यौवना?) थी, (७) अब भरे यौवन में उसके प्राण 'प्रियतम' कहते (प्रियतम का स्मरण करते) कैसे रह सकते थे?

टिप्पणी—(१) अयसु < आज्ञा। (२) ऊमि < ऊर्मिल। (३) पाटी < पट्टिका। (४) डोल < डोलक [दे]= नेत्र। (५) खेह [दे]= धूली रज। बारी < बालिका। (६) अयान < अज्ञान।

[३५०]

प्रेम प्रीति बाउर जो[1] होई । मान न करै कहै जग कोई[2] ।
जोहि का लाइ बिरह तन[1] राजा । तोहि न गरै[2] मदि धुनि[3] लाजा ।
मधुमालति किछु[1] मनुस न बारी[2] । रोइ रोइ धरनी[3] गात[4] पछारी[5] ।
पुनि निकट[1] रानी बसि आई । बहुमि लाज सुद कन्हि गवाई[2] ।
मागसि दुवो हाथ[1] मोहि[2] मोगा । इह[3] कम बोरिन का तोहि[4] लागा[5] ।
रूप मन त बारी लाहि दनु रोन सियाग[1] ।
गढ मोत भा[1] रहसि मतो लहि जो लहि सिर[2] मनाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बाहर जिउ। २ ग जो कोई ए जत होई, मा जत कोई।

(२) १ ए जहाँ प्रेम बिरहा तन मा जहि तन माह बिरह भा। २ ए तहाँ न रहे भा तेहि न रहै। ३ मा मे 'भी' और है।

(३) १ ए समुझावै तौ रा बुझरि निकट। २ मा बारा। ३ ए धरनि रा धरती। ४ मा पछाए।

(४) १ ए पुनि आमेँ। २ ए तैं कुलहि लजाई, मा तै कुरहि मवाई (<गवाई)।

(५) १ मा कुहुम सुमर ए हाथ दुवौ। २ ए बोह। ३ ए है। ४ ए तोहि भा है। ५ मा लाया।

(६)—(७) १ रा सोम। २ मा होइ। ३ मा तब कहि। ४ रा मे यह अंश नहीं है। ५ ए मे दोहे का पाठ है —

कुल दाप बिरहे जरा घट न मिलन अपार।
पेम बियोग देइ जनि काहू अग्गत एहि संसार॥

अर्थ—(१) जो प्रेम-प्रीति का बावला होता है वह कोई जितना भी कहे कान नहीं करता है। (२) जब विरह आकर शरीर में राजा हो जाता (अधिकार कर लेता) है, तब सुधि-बुधि और लज्जा नहीं रह जाती है। (३) बालिका (मधुमालती) समझाने से कुछ समझ नहीं रही थी और रो-रोकर धरती पर पछाड़ खा [कर गिर] रही थी। (४) फिर रानी [उसके] निकट चली आई और उसने कहा, 'तूने कुल की लाज गँवा दी। (५) उसने [अपनी] माथे में दोनों हाथ मारे (सिर पीट लिया) और कहा "तू कुल को डुबोने वाली है तुझे क्या [भूत प्रेत] लग गया है?

(६) हे बालिका, तू तो [मेरी] दुग्धपान की है (ऐसी है जिसने माँ का दूध पीना छोड़ा ही है) [अतः] पता नहीं तुझे कैसा (कभी) वियोग हुआ। (७) जब तक [वर का] संयोग न प्राप्त हो तब तक तू मुग्ध (निर्लोभ) और शांत हुई क्यों नहीं रहती है?

टिप्पणी—(१) बाउर < बाउल < बातुल = बावला पागल। जेत < जेत्तिअ < यावत् = जितना। (२) (७) जो < जउ < यदा = जब। (२) (७) तौ < तउ < तदा = तब। (३) बारी < बालिका। (४) नियर < निकट। (५) बौर < बोड्य् = डुबाना।

[३५१]

मता[1] पिता कुल लाएहि[2] खोरी। अनमति कस न सुहसि[3] कुलबोरी।
कुल मुख कारि किहे[1] करमुही। तोहि जरमें मैं भइ अति[2] दुखी।
जो बारें[1] मरतसि कस्नासी[2]। होति न अस मोहि असि हाँसी[3]।
यह[1] कारिख कस दहु लाइय[2]। कारिख आन[3] होइ तो धोइय।
बहुत भाँति समुझावा[1] रानी। सबन[2] न कीन्ह[3] पम बौरानी।
रानी बहुत[1] जतन के रखा[2] कसहु[3] समुझ न सोइ।
का तहि पर सिख लागै[1] जहि जिउ हाथ न होइ॥

पाठान्तर—(१) रा ए माता। २ ए मा लायें। ३ ए मुई।
(२) १ ए कालिख किये। २ ए जनमत मयेउँ मैं मा तोहि जनमें मैं मर बनि।
(३) १ मा बारेहिं। २ ए कुलबारी। ३ ए देस मा हाँसी मोरी मा अइसि देस महँ हाँसी।
(४) १ ए एह। २ ए मा धोई (मूल परवर्तीचरण का मुक)। ३ ए और। ४ ए मा धाई।
(५) १ ए कुसिलावी मा समुझाएउ। २ रा ए मधन। ३ रा करै।
(६) १ रा बहुतै। २ मा देखउ। ३ ए मैमतु।
(७) १ ए मा तहि सिखा सिर रुपै मा इमहि सिख बुधि हर लयै।

अर्थ—"(१) तूने माता-पिता के कुल को कलंक लगाया है, [इसलिए] ऐ कुल को जलाने वाली, तू जन्म ग्रहण करते ही कैसे (क्यों) न मर गई ? (२) तूने कुल के मुख को, ऐ काले (कालिख लग) मुख वाली, काला कर दिया [इसलिए] तुझे जन्म देने के (अथवा तेरे जन्म लेने) के कारण मैं अति दुःखित हुई। (३) यदि तू बालपन में ऐ कुल-नाशिनी, मर जाती, तो देश में एसी हँसी न होती। (४) यह कालिख पता नहीं किस प्रकार मिटेगा; अन्य कालिख हो तो धो भी डालिए।" (५) रानी ने उसे बहुत प्रकार से समझाया किंतु उस प्रेम की पगली ने उसे कान नहीं किया।

(६) रानी ने बहुतेरा मत्न करके देखा, किंतु वह किसी प्रकार भी नहीं समझ रही थी। (७) अवश्य ही उसे शिक्षा क्या लगे (प्रभावित करे) जिसका जी उसके हाथों में न हो ?

टिप्पणी—(३) बार < बाल। (४) आन < अन्य। (५) तवन < मदन = काम। बाउ < बाउल < बातुल = बावला पागल। (७) सिख < शिक्ख < शिक्षा।

[३४२]

जो मधुमालति[१] रानी हारी । किछु रस बचन हृदय किछु मारी[२] ।
कान न कीन्ह बरनि अस लपा[१] । जनु हकार कथा कर जपा ।
जो गर सिख बुधि किछु नहि लगी[१] । रानी चकित रही जनु ठगी ।
सिख बुधि सुन जाहि बुधि[१] हाई । बौरहि का सिख बधि न्ह[१] धाई ।
ठो जिय[१] डरी कहसि का करऊँ । एहि सजोग म मन बहु डरऊँ[१] ।
तब विरथा मर लक पढ़ि छिरकसि मुख पानि[१] ।
लागत सिर[१] मधुमालति[१] पछो हाइ उड़ानि ॥

पाठान्तर— ए मे उपर्युक्त चौथी तथा दूसरी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
रा म उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए मधुमालत। २ ए कछु किछु रस भरी।
(२) १ ए अस लागा मा बहु लगा। २ ए जिव जौपी सौ आतुर जागा मा मीन भई बैसी होइ लगा।
(३) १ ए न लागी।
(४) १ ए जहि जिय मा जाहि बुधि। २ ए बौरी बरा। ३ ए ३।
१

(५) १ ए तब बिउ। २ ए कुसहि डराउँ।

(६) १ ए तब चिरवा भर पानी पढ़ि छिरका मुख रानि मा तब लैकर चिरवा पढ़ि छिरकेसि मै मुख पानि।

(७) १ ए सन। २ मा मे यहाँ 'मुख वस' और है। ३ ए पछी भै रे उड़ानि मा पंखि होइ बहुरानि।

अर्थ—(१) जब समझाते समझाते रानी हार गई उसने कुछ रस के वचन हलके और भारी [सभी प्रकार के कहे] (२) [किन्तु,] जितना भी जननी ने आलाप किया (कहा) उसने कान नहीं किया मानो वह काया के अहंकार का जप करता रही। (३) जब निश्चय ही उसे शिक्षा तर्क आदि कुछ नहीं लगे रानी थकरा गई मानो वह ठगी हो। (४) शिक्षा तथा बुद्धि (तर्क) वह सुनता है जिसे बुद्धि होती है पागल को कोई क्या शिक्षा और बुद्धि देगा? (५) तब वह [अपने] जी में डरी और कहने लगी "क्या करूँ? इस संयोग (मनोहर के साथ मधुमालती के संबंध) से मै अपने कुल के विषय में डर रही हूँ।

(६) तब चुल्लू भर पानी लेकर उसने [मंत्र] पढ़ कर [मधुमालती के] मुख पर छिड़का; [उस पानी के] लगते (पड़ते) ही [मधुमालती] क्षण [मात्र] में पक्षी होकर उड़ चली।

टिप्पणी—(१) हरुव < हरुअ < लघुक = हलुका। (२) जप < जप् = कहना। हंकार < अहंकार। (३) (४) सीख < शिक्ष < शिक्षा। (४) बाउर < बाउल < वातुल = बावला पागल। (५) तौ < तउ < तदा = तब। (६) चिरवा < चलअ < चुलक = चुल्लू, पसर, एक हाथ का संपुटाकार रूप। (७) खिन < क्षण। पछी < पक्षी।

[३५३]

पछि रूप मधुमालति भई[1]। कोउ[2] न जान कहाँ उडि गई।
एसिय[1] अही पेम क[2] बौरी। तहि पर पाँख जो[3] भए ठगौरी।
पौनहु चाहि अधिक उडि भागी। बहुत पाछ गए[1] हाथ न आगी।
सगर नगर उठि पकर धावा[1]। पंछि मात महिं पाँखी पावा।
रूपमंजरी मन पछितानी[1]। कहु कहा[2] म कीन अयानी[3]।
मता[1] पिता तहि पुत्री कारन रोवत[2] भए अचेत।
पुतरी नैन कारि जो बोइ कीन्हि दुहु[1] सेत॥

पाठान्तर— ए म उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए होई। २ ए केउ।

(२) १ ए मा ऐसहि। २ रा मे 'क' नहीं है ए की। ३ ए तापर पंखी।

(३) १ ए गिआ।

(४) १ ए देखै धाई मा हेरै धावा। २ ए पंछी रूप पख नहिं पाई।

(५) १ ए पछतानी। २ मा काह, रा काहा। ३ ए कीन्ह सयानी रा कीन्ह अयानी।

(६) १ रा ए मात। २ ए रोइ रोइ।

(७) १ ए पुनी (<पुतरी फारसी लिपि) नैन जो रात रोइ बिनु राह रोइ कीन्हा मा पुतरी नैन वारि या इस्मी भाइ कीन्ह हुई ना पुतरी नैन स्याम जो भाइ कीन्ह सो।

अर्थ—(१) मधुमालती पक्षी-रूप में हुई [तो] कोई नहीं जान सका कि उड़कर वह कहाँ गई। (२) [वह] यों ही प्रेम की पागल थी उस पर जो उसे पंख (प्राप्त) हो गए, वह उसके लिए ठगौरी हो गई। (३) वह पवन से भी अधिक [वेग से] उड़ भागी अहुतेरे [उसके] पीछे गए, किंतु वह पकड़ में न आई। (४) समस्त नगर ही उठकर उसे पकड़ने के लिए दौड़ा किंतु उस पक्षी के साथ कर उसके पक्ष भी नहीं पा सका (५) कमलमंजरी मन में पछताई [और कहने लगी] "मैं ने [भी] क्या भूलता की!"

(६) माता-पिता उस पुत्री के कारण रोते-रोते अचेत हो गए (७) नैनों की पुतलियाँ जो काली थीं रोनों ने [रो] धो कर श्वेत कर डाला।

टिप्पणी—(१) (४) पछि<पक्षिन्। (२) बाउर<बाउल<वातुल=पागल। (२) पांख<पक्ष=डैना। (४) नगर<नगर। (५) पछतानी<पश्चात्तापना। (७) नैन<नयन।

[३५४]

पीतम पीतम[१] मधु जिय भजा[२]। मधुमालति मन[३] धधा तजा।
छाड़उ[१] मया मोह ममकारा[२]। छाड़उ कुटुंब लाग परिवारा।
छाड़ी सखी सब[१] जो सखी[२]। छाड़उ रहस[३] भाउ सुख[४] कसी[५]।
छाड़उ भोग भुगुति जिय[१] भामा। छाड़उ माता पिता घर ठामा।
छाड़उ अरथ दरब सब[१] भावी। छाड़उ सब परिजन सब[२] भावी।
छाड़उ राजपाट सुख सम्पा[१] रैनि मीत[२] दिन भूंग[२]।[३]
छाड़उ चित[१] भाउ सुख[२] कीन्ह[३] कमरा संग[४]॥

पाठान्तर—(१) १ मा प्रीतम धन। २ ए मधुर नाथ सुनि जिउ भजा। ३ मा न मन।
(२) १ ए छाड़सि। २ रा ए ममकारा।
(३) १ रा सब। २ मा छाड़उ सखी आहि सम सखी न छाड़उ मै सब कारि सहेली। ३ ए सहस। ४ ए रस। ५ ए केली।
(४) १ ए भक्ति सब। २ रा ए भाव।
(५) १ ए सब। २ मा ए सब।
(६) १ रा सम्पा। २ रा रैनि दिन मीत औ भूंग। ३ ए मे चरण का पाठ है छाड़उ राजपाट सब सुख सेज्या मीत भाग।
(७) १ मा चेत। २ मा न यहाँ जैसे और है। ३ ए लिन्हु। ४ न छाड़उ धरम भाउ सब लिएउ धम धन मोप।

अर्थ—(१) मधुमालती का जी 'प्रियतम' 'प्रियतम' भजने लगा, और मधुमालती ने [अन्य] सभी धंधे छोड़ दिए। (२) उसने संसार का माया-मोह छोड़ दिया और उसने कुटुंब

लोक (प्रजा) और परिवार को छोड़ दिया। (३) उसने सखियों को छोड़ दिया जो उसके साथ खेली हुई थीं और उसने हर्ष उत्साह तथा सुख-केलि छोड़ दी। (४) [अपने] जी में उसने भोग और भोजन की आशा छोड़ दी और उसने माता-पिता के घर का निवास छोड़ दिया। (५) उसने अर्थ-द्रव्य तथा अस्ति (प्रवेश) छोड़ दिया और उसने स्वजन, भृत्यादि तथा संगी-साथियों को छोड़ दिया।

(६) उसने राज सिंहासन, सुख की सय्या रात की निद्रा तथा दिन की भूख को छोड़ दिया; (७) उसने चित्त के उत्साह तथा सुख को छोड़ दिया, और वृक्ष पर बसेरा लिया।

टिप्पणी—(३) रहस < रभस् = हर्ष। (४) भुगुति < भुक्ति = भोजन। (५) आथि < अत्थि < अस्ति = प्रवेश। (६) पाट < पट्ट = सिंहासन। नींद < निद्रा। भूख < बुभुक्षा = क्षुधा। (७) रुख < रुक्ख < वृक्ष।

[३५५]

मधुमालति सभ छाडि[1] उदानी। खोजति[2] खोजति करसि हैरानी[3]।
ब्याकुलि भई भव[1] बिकरारा[2]। जस बाउर हो बीछु क[3] मारा[4]।
गिरि सायर[1] बन फिरि फिरि[2] हेरा। कतहु न खोज पाउ ओहि[3] केरा।
नग पट्टन[1] जग[2] फिरी[3] उदासा। प नहि हिय क[4] पूजी आसा।
ठउ ठउ घर घर[1] दस बिदसा। जन जन ढूंढे[2] राँक नरेसा।
कजली[1] बन गोदावली[2] मथुरा गया पयाग[3]।
दव द्वारिका औ सभ[1] तीरथ फिरि फिरि माँग[2] सोहाग॥

पाठान्तर— रा में उपर्युक्त द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।
(१) १ ए. सब छोड मा सब छाडि। २ रा में पाठ स्पष्ट नहीं है। ३ रा खोवत खोवत करई हैरानी।
(२) १ ए मैं भवै। २ ए बिकरारी। ३ मा बाउरि होइ बीछी। ४ ए मारी।
(३) १ ए साबेर। २ रा में दूसरा 'फिरि' नहीं है। ३ ए पिउ।
(४) १ ए. पटनन मा पाटन। २ ए. में यह शब्द नहीं है। ३ ए भवै। ४ ए पै मोहि कीना मा पै न हियें कै।
(५) १ रा पुरपुर। २ ए ढूंढउ।
(६) १ ए केन्ली मा कदली। २ मा गोदावरी। ३ ए बनारसि प्रयाग मा मथुरा गया बनारसि प्रयाग।
(७) १ ए मा सब। २ रा माँगै।

अर्थ—(१) मधुमालती [अपने प्रिय को] देखते खोजते और [उसके लिए] हैरान होते हुए सब कुछ छोड़कर उड़ गई। (२) वह व्याकुल होकर [इस प्रकार] अबाध भ्रमण करने लगी जैसे कोई बिच्छू का मारा (डसा) हुआ बावला हो। (३) उसने गिरियों सागरों और वनों को घूम-घूम कर देखा किंतु कहीं भी उसका खोज [उसने] न पाया। (४) वह नगर

और पट्टन (महानगर) में उदास फिरी किन्तु [उसके] हृदय की आशा नहीं पूरी हुई। (५) उसने घूम घूम घर-घर देश-विदेश वन वन और रंक-नरेश सभी [के यहाँ उस] को ढूंढा।

(६) काशी वन गोदावरी मथुरा गया, प्रयाग (७) (जगन्नाथ) देव द्वारका और समस्त तीर्थों में घूम-घूम कर उसने [अपना खोया हुआ] सौभाग्य (पति) मांगा।

टिप्पणी—(२) बिकरार<बेकरार [फा.] अशान्त, बेचैन। बाउर<बाउल<बातुल= पागल। बीछ<वृश्चिक=बिच्छू। (३) सायर<सागर। (४) रन<अरण्य। (६) हिय<हृदय। (७) सोहाग<सौभाग्य।

[३५६]

खोजति बिकल फिरि[1] दिन राती। पेम सुरा व्याकुल मद[2] माती।
एक दिन उड़ी जाति हुति[1] बारी। परी दिस्टि एक कुंवर उन्हारी।
फिर क[1] गिरत जात पथ बारा[2]। देखसि एक कुंवर उजियारा[3]।
ताराचंद नाहिं कर नाऊ। पुरि पौनारि[1] मानगढ़ ठाऊ।
अति सुंदर रूपवन्त सरूपा[1]। मन्त्री बन्सा मनोहर[2] बन्सा[3]।
रूपवन्त मधुरन विद्या[1] मूरति मत्त कुलीन।
बहुत उन्हारि मनोहर क[1] नहि देखि भई मधु लीन[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए. घूमत फिरत हेरत मा. घूमत फरफराति। २ ए. मद मा. होइ।
( ) १ ए. हाल। २ मा. परी दिसिटि नाह।
(३) १ ए. फिरफि। २ रा. देखु बाग ए. पथ बारी। ३ ए. देखा कुंवर क। रूप उन्हारी (यह पूर्ववर्ती अर्द्धाली का द्वितीय चरण)
(४) १ ए. पवैरि, मा. पैनैरि।
(५) १ ए. सुरूपा। २ ए. धर्मी परिमाऊ मा. रा. धर्मा बनी मनोहर।
(६) १ रा. चारि पुरान वेद गुनि विद्या मा. और सकल गुन गुन विद्या।
(७) १ ए. न यह सारा कहा है। २ ए. देखत बिधि (मन धारना निरि) मा. लीन रा. देखत बहु बिधि लीन।

अर्थ—(१) वह बौरानी हुई दिन रात विकल (बेचैन) फिर रही थी [क्योंकि] वह प्रेम सुरा का पान कर व्याकुल और मद-मत्त थी। (२) वह बालिका एक दिन उड़ी जा रही थी, तो उसकी दृष्टि कुमार (मनोहर) की एक उन्हार पर पड़ी (एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जो कुमार मनोहर की उन्हार था)। (३) [उसने] मार्ग में जाते (उड़ते) हुए उस बालक को एक स्थान [विशेष] स्थिर कर एक उज्ज्वल (कांति-संपन्न) कुमार को देखा। (४) उसका नाम ताराचंद था और उसका स्थान मानगढ़ में पौनारि (पवन नगरी) पुरी में था। (५) वह अति सुन्दर रूपवान, तथा सरूप (सती) था वह बड़ी लक्षित मन्याहृत (उत्तेजित) देख था था।

(६) वह [अच्छे] लक्षणों वाला, विद्याओं में संपूर्ण ज्ञान की मूर्ति और कुलीन था।

(७) उसकी उनहारि (आकृति) बहुत (अभिलाषा में) मनोहर थी [अतः] उसको देख मधुमालती [उसके ध्यान में] लीन हो गई।

टिप्पणी—(१) माव < मद। (२) बारी < बालिका। (२) (७) उन्हारि < अनुहार < अनुकार = अनुकृति आकृति। (३) थिर < स्थिर। बारा < बाला। (४) धौरैहरि < धव नगरी। (५) धरेख < धमिखित जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो। दमी < धमिय। अगाहुत < अग्गाहुय < अभ्याहृत = उत्तजित। (६) सबन < श्रवण।

[३५७]

तब[1] धौराहर बैठी आई। देखत अतिहि सुरूप[2] सोहाई।
हरिम पंख[1] पग[2] अरुन[3] सुठोरा। नैन फार[4] जनु मानिक जोरा।
कुँवर उन्हारि मन बुद्ध लाएसि। अरति बिरह दौं[1] आसरौ पाएसि।
कुँवर दिस्टि[1] पुनि पंछी[2] लागी। देखत मोह मया मन जागी।
रहे नैन छिन लाए[1] ध्याना। देखे राय रोक[2] परधाना।
समनि[1] कहा अस पंछी यहि[2] कलि दिस्टि न[3] आउ।
कोटि बरिस जग धूमनि[1] तबहु न देखा[2] काउ[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा फुनि। २ ए अतिरे रूप मा अती सुरूप।
(२) १ ए हरे पांख। २ ए मा मे यह शब्द नहीं है। ३ ए थे। ४ ए फारि।
(३) १ ए म यह शब्द नहीं है। २ मा अस रम।
(४) १ मा नैन। २ ए वी पखिहि, मा फुनि पखिहि।
(५) १ ए रही (< रहे : फारसी लिपि) देखि जति (< बस : फारसी लिपि) लाइ (< लाए : फारसी लिपि) मा रहेउ देखि छिन लाए। २ ए देखत राय रोक मा पुनि लेखा राए राय।
(६) १ ए सबन्ह मा सबहि। २ रा ए पैहि। ३ ए कबहुं न मा किन्हि न कबहुं।
(७) १ ए कोटि नैन जो होहिं जग मा. काल जो कोटि नैनकर बाकर। २ ए देखै पाउ मा देखे काउ रा देखा काउ।

अर्थ—(१) वह तब [उस कुमार के] धवलगृह पर आ बैठी; देखते हुए (देखने में) वह अति ही सुरूप और सुहावनी थी। (२) उसके पंख हरे तथा पैर अरुण थे ठौर (चोंच) सुन्दर थी और उसके स्फार (विशाल) नेत्र मानो माणिक्य-युगल थे। (३) कुमार (मनोहर) की उस अनुकृति पर उसने अपने दोनों नेत्रों को लगाया (स्थिर किया) तो विरह की दावाग्नि में जलते हुए उसने आसरा (सहारा) पाया। (४) तदनंतर कुमार (ताराचंद) की दृष्टि उस पक्षी पर [जा] लगी और उसको देखते ही उसके मन में [पक्षी के लिए] मोह और मया (ममता) जाग उठी। (५) उसके नेत्र एक क्षण [उस पक्षी पर] ध्यान लगाए रहे और [उस पक्षी को] राजा, रंक और प्रधानों (मंत्रियों) [सभी] ने देखा।

(६) [फिर] सभी ने कहा 'ऐसा पक्षी इस कलि [युग] में दृष्टि में नहीं आती है (७) [इतना ही क्या] जगत् के करोड़ वर्ष पूरे हो गए, तब भी किसी ने कभी [ऐसा पक्षी] नहीं देखा।"

टिप्पणी—(१) धौराहर < धवल गृह = प्रासाद। (२) हुलिस < हुलस् = हर्ष। पसार < प्रसार = विस्तार विपुल। (३) उन्हारि < अनुहार < अनुकार = अनुहारि समान आकृति का व्यक्ति। दौं < दव = दावाग्नि। आसरी < आश्रय। (४) मया < माया (?) = ममता। (५) मिन < सम। रांक < रङ्क = दरिद्र। (७) पूज < पूर < पूर्य् = पूर्ति करना। काउ < कदापि = कभी।

[३५८]

रुपमा देखि[1] कुँवर उनिहारा। बसि[2] आइ तहि आस[3] अगारी।
कहँसि जर सह[1] नैन सिरावौं[2]। बिरह आगि तहि दरस बुझावौं[3]।
बूड़त पाइ आस तिनु मई। तिनुका बूड़त[1] आसरो दई।
ओस पियास न बिगा[1] बुझाई[2]। भाव माथ कउ[3] अविन्ना जाई।
बिरह आगि जहि उर[1] पजारा। हाड़ सनाम न[2] जनि उन्हारी।
मधुमालति[1] मुख[2] कुँवर निहारत लखि रूप भएउ[3] लीन।
तारावर कुँवर जिय पटपनि[1] जिमि जल बिछुर[2] मीन॥

पाठान्तर—(१) १ ए म 'के' और है। २ रा मा बैठि। ३ ए आइ ('आइ' पाठ हा मा चुका है)।
(२) १ ए तेहि मा मेइ। २ ए अमी सिराबौं। ३ ए तौ अग्ग बालावौं मा मैंहि दरस बुझावौं।
(३) १ मा डूबत।
(४) १ रा तिरिस। २ ए बुझाई। ३ ए की।
(५) १ मा. जहि हिय ए. हीयर। २ ए मा मे यह स्पष्ट नहीं है।
(६) १ ए पाछी रूप ('रूप' बाद ही आया है)। २ ए म यह पाठ नहीं है। ३ मा मा मा. भइ।
(७) १ ए तारावरहि पत्पनी २ ए ज्यौं जल बिछुरै मा जिमि जल बिछुरे।

अर्थ—(१) [मधुमालती-पक्षी] कुमार (मनोहर) की उस उनहार को देखकर हर्षित हुई और उस [को देखने] की आशा से आश्रय कर आ बैठी। (२) [मन में] वह कहने लगी "मैं जब कहे हैं कि नहीं [इस कुमार के दर्शन से] शीतल करूँ और उस (इस) दर्शन से विरहाग्नि को बुझाऊँ।" (३) डूबता हुआ तिनके का आश्रय लेता है और तिनका भी डूबने को आश्रय (सहारा) देता है (४) [परन्तु] ओस [के चाटने] से न प्यास [जाती है] और न भूख जाती है। भाव की भूख कहीं हलकी से पूरी होती है? (५) विरह की अग्नि जिसके हृदय को जलाती रहती है उसे [प्रिय की] उनहार (छाया) देखकर संतोष नहीं होता है।

(६) मधुमालती कुमार का मुख देखते-देखते उसका रूप (सौन्दर्य) देखकर [उसके] लीन

हो गई (७) और उधर ताराचंद कुमार के जी में [उसे पाने के लिए] ऐसी छटपटी (आतुरता) हुई जैसी जल से अलग होने पर मीन को होती है।

टिप्पणी—(१) रहस<रभस्=हर्ष। (१) (५) उनिहारि<अनुहार<अनुकार= अनुकृति समान आकृति का व्यक्ति। (१) अटारी<अट्टालय=प्रासाद या भवन का ऊपरी भाग। (२) सियराव<शीतलाव<शीतलापय्। (३) बूड=बुड्<बुड्=डूबना। तिनु, तिनुका<तृण। (४) ओस<ओसाम<अवश्याय। पियास<पिपासा। साध<सद्धा<श्रद्धा=स्पृहा अभिलाषा वांछा। (५) निहार<निभाल<नि+भालम्=देखना निरीक्षण करना।

[३५९]

पंछि रूप दखि कुंवर भुलाना[1]। नेगी कहसि भौंह द[2] साना[3]।
नेगी[1] समुझि जना दौराए। व्याधा[2] नगर सब[3] धरि लाए।
कहसि सबै दिसि[1] जाल बिछावहु[2]। औ ले तहाँ अन्न छिटकावहु[3]।
पछिउ[1] प्रेम प्रीति[2] जिय गही। लाए[3] नैन दुइ कुंवरहिं[4] रही।
जाल फांदि भौ चित[1] न आना। रही कुंवर मुख लाए ध्याना।
छिन एक गए[1] सजग भ[2] पंछी[3] उडन कै[4] मनसा कीय।
कुंवर कहइ जौ उड़ि[1] मह[2] जाइहि साथ[3] चलिहि मम जीय॥

पाठान्तर— रा में उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा लुभाना। २ ए नेगिन्ह कहा औ भौंह मा नेगिन्ह कहेसि भौंह दै। ३ ए सिखाना।
(२) १ ए नेगि मा नेगिन्ह। २ ए व्याध। ३ ए सबै।
(३) १ ए मा. चहुँ दिस। २ ए पसारेहु। ३ ए औ तेहि ऊपर कै अन्न बिथारेहु मा और तेहि पर लै अंन छिरियावहु।
(४) १ रा ए. पंछी। २. ए चित। ३ ए लाइ। ४ ए कुंवरहिं।
(५) १ मा औ चितहि।
(६) १ ए भी मा बैठि। २ ए भै होइ। ३ मा में 'पुनि' और है। ४ ए को।
(७) १ ए जब उड़ि मा जबही। २ ए मेह। ३ ए संग।

अर्थ—(१) कुमार [उस] पक्षी का रूप देखकर भूल गया (मुग्ध हो गया) और नेगी को भौंह से संकेत देकर [उसे पकड़वाने को] कहा। (२) नेगी [संकेत] से समझकर सेवकों को दौड़ाया जो नगर के समस्त बहेलियों को पकड़ लाए। (३) [नेगी ने] कहा 'सभी दिशाओं में जाल बिछाओ और वहाँ अन्न ले [जा] कर छिटकाओ।' (४) पक्षी ने भी जी में प्रेम-प्रीति ग्रहण की और वह अपने दोनों नेत्र कुमार को (की ओर) लगाए रही। (५) जाल में फंद (फँस) कर भी उसका चित्त अन्य [प्रकार का] नहीं हुआ और वह कुमार के मुख पर ध्यान लगाए रही।

(६) एक क्षण बीतने पर पक्षी सजग हुई और उसने उड़ने की इच्छा की (७) [यह देख कर] कुमार ने कहा "यदि यह उड़ जाएगी तो इसके साथ ही मेरा जीव भी [उड़] चलेगा।

टिप्पणी—(१) मेगी < नैगमिक (?) = निगम (नगर) का अधिकारी (?)। मान < मर्केत। (२) म्याव < म्याव = बहेलिया। (५) मान < मम्य। (६) मिन < सम।

[३६०]

रोपा जाल चहू दिसि घेरा । ठाउ ठाउ भामि[१] भ्रम विथरा[२] ।
पछी होइ सी भ्रनहि लोभाई । यह भूली बिरह्[१] बौराई ।
छिनक उन्हारि मास जिउ लाएसि[१] । बहुरि उड कह पंख उचाएसि[२] ।
पखि उड़ कह[१] पंख मकारा[२] । कुंवर ठाउ भा[३] हाथ मरोरा ।
कहसि जौ रे[१] यह[२] भाइ[३] उड़ाई । सुधि बुधि मोरि साथ एहि[४] जाई ।
कहा कुंवर उड़ि जाइहि[१] हाथ[२] धरो म[३] जाइ ।
धावत मटुक सीस तेउ उछग्उ[१] मोति[२] गए छिरियाइ[३] ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त तृतीय अर्द्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ ए ठाव ठाव जा। २ मा बितरा।
(२) १ ए बिरहे।
(३) १ ए आमरा पायसि। २ ए उड़ै को पिन बोगमसि मा उड़ै कह पिस उचाएसि।
(४) १ ए पखी उड़न को भा पखि उड़न छह। २ रा मकोरा। ३ ए भै।
(५) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ ए येह। ३ मा धाई। ४ ए सिधि सिधि। ५ ए येह मा तेहि।
(६) १ ए में यहां और है अब मैं। २ रा हाथ। ३ मा एहि।
(७) १ ए ते उछरा रा सा छटक। २ रा मनी। ३ ए गौ छितराइ, रा गए छटकाइ।

अर्थ—(१) [व्याधों ने] जाल लगाया और [पक्षी को] चारों ओर से घेर लिया; स्थान स्थान पर उन्होंने ला कर भ्रम फैला दिया। (२) पक्षी हो तब तो भ्रम पर लुब्ध हो, यह तो भूली हुई और बिरह में पागल [स्त्री] थी। (३) एक क्षण इसने [मनोहर को] उस उन्हार (तारावंद) पर ही में आशा लगाई और तदनंतर उड़ने के लिए पंख उठाए। (४) पक्षी ने उड़ने के लिए पंखों को सिकोड़ा तो कुमार (तारावंद) [उठ] खड़ा हुआ और हाथ मलने लगा (५) [और] उसने कहा "यदि यह पक्षी उड़ जाती है तो मेरी सुधि-बुधि इसी के साथ जाएगी।"

(६) कुमार ने कहा, "यह उड़ जाएगी, [अतः] मैं जाकर इसे हाथों से पकड़ लूं।" (७) दौड़ने समय उसका मुकुट उसके सिर से उछल गया और [उससे] मोती छिटक गए।

टिप्पणी—(१) बिथर < बिस्तार < वि + स्तारय् = फैलाना। (२) भ्रम < भ्रम। (३) उन्हार < अनुआर < अनुहार = अनुहृति समान आकृति का व्यक्ति। (४) मकार < मंकोर < संकोच् = सकोड़ना। (५) सुधि < शुद्धि < शुद्धि = चेतना। (७) मटुक < मुकुट।

[३६१]

मुकुता परे[1] जाल बहुराई । जति पंखि तो दिस्टि[2] फिराई[3] ।
उड़न क[1] मनसा जो चित अही[2] । रही खिनक मुकुता तन[3] चही[4] ।
तब कुंवरहि[1] अस कहा पुकारी[2] । यह पछी निजु मोति अहारी[3] ।
मुकुता बहुत आनि धन दीन्हा । कुंवर आपु कर भरि भ लीन्हा[1] ।
बहुत आनि अनबेध[1] मोंती । दिए बिथराइ गगन गुन[2] जोती ।

तब मधुमालति मन गुना पम पथ जिउ देउ ।
आपु फदाइ जाल एहि केरें[1] चाहु मनोहर कउं ॥

पाठान्तर—(१) १ ए परा। २ ए देखि पखी तौ दिस्टि रा देखि पखि तब। ३ भा बहुराई।
(२) १ ए में कै नहीं है। २ ए माई। ३ भा तेज। ४ ५ एही मुकुता तै खिन चित लाई।
(३) १ ए तबहि कुंवर, रा तब सो कुंवर। २ ए कहा बिचारी भा कहेसि पुकारी। ३ ए निज प्रान अधारी।
(४) १ इस अर्द्धाली का पाठ ए तथा भा में है —
ए अनबेधे मुकुताहल भीरिआ। मर्म येहि का पाव न परिआ।
भा आनि भार मुकुता हल ढेरे। मर्म मेहिक पाएउं मन धरे।
(५) १ ए आये धन लै अनबिधें भा आए धन अनबेधे। २ ए आनि बिथोर गगन जहि भा आनि बिथोरे गगन।
(७) १ ए आपु बझाई जाल महु।

अर्थ—(१) [वे] मुक्ता छलक कर जाल पर गिरे, तो उन्हें देखकर पक्षी ने [उनकी ओर] दृष्टि घुमाई (२) जो उड़ने की इच्छा उसके चित्त में थी [उससे] रुक कर एक क्षण वह मोतियों की ओर देखने लगी। (३) तब [व्याधों ने] कुमार से पुकार कर इस प्रकार कहा "यह पक्षी केवल मोती का आहार करने वाली है।" (४) उनको ने बहुत-सा मोती लाकर दिया और कुमार ने उन्हें अपने हाथों में भर कर ले लिया, (५) [और] बहुत से अनबिंधे मोती लाकर उसने इस प्रकार फैला दिए जैसे गगन में ज्योति[-बिंदु] हों।

(६) तब मधुमालती ने मन में सोचा, "प्रेम के मार्ग में [अब] मैं [अपने] जीव (प्राणों) को दूं (७) और इसके जाल में अपने को फँसाकर मनोहर का कुशल-समाचार प्राप्त करूँ।"

टिप्पणी—(४) बिथरा < बिस्तार < बि + स्तारम् = फैलाना।

[३६२]

जो निहुर्य[1] मधुमालति जाना । कुंवर जीव सम हेतु समाना ।
एक बगिम मोहि भा एहि भमा । कतहुं न पाएउं[1] कुंवर संदेसा[2] ।
एहि उनहारि भाख जिउ लाई[1] ।[2] मुभो खिन एक बसिउ भाई ।[3]
अब हौं चाखि मरम एहि[1] लेऊ । औ पुनि[1] मरम जीय[2] कर गऊ ।

मकु पावौं किछु[1] प्रीतम चाहा । मरौं त[2] रहौं पम पम लाहा ।
यह मनसा क पम दीप मह परी बगि होइ[1] आइ[2] ।
पांव[1] पाव मधु अरुझानी[3] रही निकसि नहिं[4] आइ[5] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए किरबै। २ ए मा जीउ।
(२) १ ए पावा। २ ए उरमा।
(३) १ मा लाई रा लाइउ। २ ए बहुरि कुंअरि जी भाषा हाई। ३ रा में इस चरण के स्थान पर भी अपनी अर्द्धाली का दूसरा चरण है। ए मधु पेह कुंअर बाह पों मारै भा मूली लिन एक बैमिउ भाई।
(४) १ ए मन में बूझि मर्म मह मा मन मैं फांदि मर्म पेह। २ ए निज रा पुनि। ३ ए जीव रा जीउ।
(५) १ ए बछ। २ ए तो।
(६) १ मा भय मह। २ ए पेह मन दीप पमह परेउ फलि मा मैं बाहि (तुल० परवर्ती चरण का तुक)।
(७) १ मा जाते ए चार। २ मा बाउ ए पाँव रा पाव मोह। ३ ए अरुझान मा लछ। ४ ए निकल निकसि नहि मा निय है निकसि न ५ ए जाहि।

अर्थ—(१) जब मधुमालती ने निश्चित रूप से यह जान लिया कुमार के जी में उसका प्रेम समा गया है (२) उसने मन में कहा, "मुझे इस वेष में एक वर्ष हुआ और कुमार (मनोहर) का संदेश (समाचार) मैंने कहीं नहीं पाया (३) और [मनोहर की] इस उनहार पर जो मैं आशा लगा कर भूली हुई एक क्षण के लिए आकर मैं बैठ गई (४) [तो] अब मैं जाल में डालकर इस [कुमार] का मर्म लूं और फिर [इसे भी अपने] जी का मर्म दूं। (५) संभव है कि [इस प्रकार ही,] कुछ पता प्रियतम का पा जाऊँ, [किन्तु] यदि [इस प्रयास में] मर भी जाऊँ तो प्रेम पथ का लाभ प्राप्त करूँगी।"

(६) यह विचार कर वह [पतिंगे के समान] प्रेम-दीप [स्वरूप उस जाल] में वह शीघ्र आकर पड़ गई; (२) [उसने] पाँव [उस जाल में] रखाए और मधुमालती उसमें [इस प्रकार] उलझ रही कि उससे निकला नहीं जा सकता था।

टिप्पणी—(१) किछुवै<किंचन। (२) मम<वर। (३) उनिहारी<अनुहारि<अनुहारि=अनुकृति। लिन<क्षण। (४) बाझ<बध्=बंधना फँसना। (५) लाह<लाभ।

[३६३]

पठि फांदि तो[1] याबा[2] धाए । आम महित जियत[3] न भाए ।
दगि[1] कुँवर मन भएउ[2] हुलासा । सूर उए जिमि[3] कँवल बिगासा ।
विरह गए बनख बर मानो । तहि मह कौर पठि[1] मन मानो ।
खिनि हुमें गिन एक न टार[1] । मनि मुकुता हि आगे टार[2] ।
जन गाजो[1] पठिन्ह न[2] जानी । सब[3] कुंवर तहि[4] आगे आना ।

निमिख न पिंजरा[1] परिहर औ न काहु पतियाइ ।
हियँ[1] ऊपर निसि बासर पिंजरा[2] लिहें[3] रहाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पंछि फरी तब ए पछी बीम तौ। २ मा अधावे। ३ मा जीवत।
(२) १ ए कहेसि। २ ए मो। ३ ए उदित मो रा सूर उदे भनु।
(३) १ ए तामहँ पछी किन्हा। २ मा पाला।
(४) १ ए टारी। २ ए मान टारी ('टारी पिछले चरण में आ चुका है)।
(५) १ ए चाली। २ मा पखिन्हकर। ३ ए मा सबै। ४ रा में यह चरण नहीं है। ५ ए आगे।
(६) १ मा पिंजर।
(७) १ रा ए हिय। २ मा पिंजर। ३ ए लिये मा लिए।

अर्थ—(१) पक्षी फँस गई, तब व्याध आए, और जाल-सहित उसको जीवित ही [कुमार के पास] ले आए। (२) [उस पक्षी को] देख कर कुमार के मन में उल्लास हुआ जिस प्रकार सूर्य के उदय से कमल [के मन में उल्लास होता और वह] विकसित होता है। (३) वह एक सोने का पिंजड़ा लाया और उसमें पक्षी को [बंद] कर दिया तब उसका मन माना। (४) वह उसको अपनी दृष्टि से एक क्षण के लिए नहीं हटाता था और मणि तथा मुक्ताफल (मोती) [उसके खाने के लिए] उसके आगे डाला करता था। (५) जितने भी खाद्य पक्षियों के खाते हैं, उन सभी को कुमार ने उसके आगे ला रखा।

(६) एक पल के लिए वह पिंजड़े को नहीं छोड़ता था, और न वह [उस पक्षी के संबंध में] किसी का विश्वास करता था। (७) वह [अपने] हृदय पर रात-दिन उस पिंजड़े को लिए रहता था।

टिप्पणी—(१) तौ < तउ < तवा = तब। (२) हुलास < उल्लास। सूर < सूर्य। (४) मुकुताहल < मुक्ताफल = मोती। (५) खाजी < खाद्य। (६) निमिख < निमिस < निमिष = अक्षि-मीलन नेत्र-संकोच। पिंजरा < पञ्जर। पतियं < पतिअ < प्रति + इ = प्रतीति करना विश्वास करना।

[३६८]

तीनि दवस बीत एहि[1] भाँता । कुँवर पंखि दुहु किछौ[2] न खाता ।
पुनि उपजउ[1] खाला मन माहें[2] । यह[3] मोहि लागि मरै कोहि लाहें[4] ।
यह[1] सो[2] राज कुँवर सुकवारा । मर सौं[3] हत्या चढ़ अपारा ।
यह गुनि बोल[1] राज कुमारी । कौन[2] अरथ तुम्ह कुंवर[3] दुखारी ।
मोहि तोहि दहुँ[1] कहु[2] कसि पिरीती[3]। पछिहि[4] मानुस[5] कौन प[6] रीती[7] ।
मे पछी जिउ जोबन द करि[1] यह दुख लिएउ[2] बेसाहि ।
ते तो[1] राजकुँवर सुख भोगी दुख केहि मरण[2] सहाहि ॥

पाठान्तर— (१) १ ए बीता येहि। २ रा कुँवर पंखि दुहु मम ए कुँवर पछी तौ किछो ... ३ ए एहि। ४ ए कहि ला...
(२) १ ए उपजा। २ ए बालापन माहे।

(३) १ मा काम ए मिला। २ ए में यह मन्द नहीं है। ३ मा त ए ना।
(४) १ ए जो मरै मा पुछै। २ रा कौन। ३ ए तैं कुमार रा तुम्ह हार।
(५) १ ए मा माहि ताहि दहु।२ ए मा म यह दाम्द नहीं है। ३ ए मा कमी रीनी। ४ ए पछिहि। ५ मा मनुमहि। ६ ए मा प्रीनी।
(६) १ रा मैं पछी जिउ जाबन दै ए माप जीउ जीवन दै मा जिउ जोवन मन दै करि। २ रा यह दुग लिएउ ए यह दुग लिया मा यह दुग लिएउ।
(७) १ ए म य दो मन्द नहा है। २ रा काम।

अर्थ—(१) इस भाव में (इस प्रकार) तीन दिन बीत गए, और कुमार तथा पक्षी दोनों ने कुछ भी न खाया। (२) तदनंतर उस बाला (मधुमालती) के मन में यह [विचार] उत्पन्न हुआ "यह मेरे लिए किस काम से मर रहा है? (३) यह तो कुमार राजकुमार है यदि यह मरता है तो मेरे कपाल पर हत्या चढ़ती है। (४) यह सोचकर राजकुमारी कहती है "हे कुमार, तुम किस प्रयोजन से दुखी [हो रहे] हो? (५) भला, मुझसे-तुमसे तुम्हीं कहो कैसी प्रीति? पक्षी और मनुष्य में कौन-सी रीति [संभव है] ?

(६) मैं पक्षी हूँ जीव (प्राणों) और यौवन को [मूल्य में] देकर यह दुख मैंने मोल लिया है; (७) किंतु तुम तो राजकुमार और सुख भोग करने वाले हो; तुम किस प्रयोजन से दुख सहो?"

टिप्पणी—(२) काह < काम। (३) कपार < कपाल = सिर। (६) बेसाह < बिसाह < बि+साध = विशेष रूप से सिद्ध अथवा मन में करना मोल लेना।

[३६५]

बहुरि पछि[१] अखिन गुन खोला[२]। कहु बचन रस भर अमोला।
मैं पछी दुद[१] राजकवार[२]। मोहि तोहि कस[३] गम ववहार।
तुम्ह[१] तौ राजकुंवर सुख[२] भोगी। म बरागिनि पछि[३] बियोगी।
कौनि प्रीति आपनि[१] मोरि जानी। तौनि दवम छाइहि अनखानी।
पहिल रूप[१] जो देखहु[२] मोरा। सो जत बिछ करहु मन[३] थोरा।
रूप गाज हरि लीन्हा[१] पछि कीन्ह[२] करतार।
औ पनि भाग न जानों[१] दहु[२] का लिखा लिलार॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुनि परी। २ ए खाला।
(२) १ ए मा मैं। २ रा कुमारा। ३ ए कैसे।
(३) १ ए तुह। २ ए म। ३ ए बैरागी पर्नी।
(४) १ रा जानी। २ ए छाडे।
(५) १ रा रूप। २ मा देखेहु ए देखसनि। ३ ए जा मन बरनस तस मन का तौ मन विछ करेहु मन।
(६) १ मा. हरि लै करि। २ मा पछि किए ए पनि किन्ह।

(७) १ ए औ पुनि और न जानै मा औ फुनि आन न जानौं रा औ पुनि आगू न जानौं। २ ए विधि।

अर्थ—(१) पक्षी ने फिर [अपना] अमृत [तुल्य वचन कहने वाला] मुख खोला और वह रस भरे अमूल्य वचन कहने लगी (२) "मैं पक्षी हूँ और तुम राजकुमार हो। मुझमें-तुममें प्रेम व्यवहार कैसा? (३) तुम तो राजकुमार और सुख-भोग करने वाले हो, [जब कि] मैं विरक्त और वियुक्त पक्षी हूँ। (४) तुमने अपनी और मेरी कौन-सी प्रीति समझी कि तीन दिन तक तुमने अन्न-पानी छोड़ दिया? (५) यदि तुम मेरा पहिले का रूप देखते तब [भले ही] जो कुछ करते वह थोड़ा था (होता)।

(६) कर्तार ने मेरा रूप और राज [-सुख] हर लिया और पक्षी कर दिया (७) और फिर आगे (इसके अनंतर) नहीं जानती कि उसने [मेरे] ललाट (भाग्य) में क्या लिखा है।

टिप्पणी—(१) अमोल < अमूल्य। (२) बेवहार < व्यवहार। (४) अन < अन्न। (७) लिलार < लिलाट < ललाट।

[३६६]

हरखित कुवर पखि[1] सुनि बर्ना। जिमि र[2] चकोर दखि[3] नर्ना।
पखि बचन सुनि राज कुमारा[1]। रहा चकित[2] मन[3] कर बिचारा।
बहुरि सपत द पूंछसि[1] बाता। कहु आपनि[2] सति बात निराता[3]।
सपत तोहि जौ फुर न रहाही[1]। पसु पखी[2] क मानुस आही[3]।
जौ मा पखि रूप जिमि तोही[1]। सपत तोहि[2] फुर भाखु न[3] मोही।
कौन नाउ औ ठाउ[1] कहाँ[2] तोर[3] बास कहि[4] देस।
कौने पाप केहि अपरस[1] भइसि पखि क भेस॥

पाठान्तर—(१) १ ए पखी। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए चाद देखु।
(२) १ रा राजकुमारा। २ ए चकित। ३ मा होइ।
(३) १ ए पूछेसि। २ रा अपनी। ३ रा हिराता।
(४) १ ए ना कहही। मा अब पखि ए पसु पखी। ३ रा अहाही ए अहही।
(५) १ ए पखी रुप जा तोही मा पखि रूप केहि तोही। २ ए आह (आहि फारसी लिपि)। ३ ए भाख न मा भाखसि।
(६) १ रा मे ये दो शब्द नहीं हैं। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए यहाँ 'मोर' और है। ४ ए कौन तोर है मा बास कहहु देहि।
(७) १ रा कारन। २ ए भैहु जो पखी।

अर्थ—(१) पक्षी के वचन सुनकर कुमार हर्षित हुआ जिस प्रकार चकोर चंद्रमा को नेत्रों से देखकर [होता है]। (२) पक्षी के वचन सुनकर राजकुमार चकित हो रहा और मन में विचार करने लगा। (३) तदनंतर शपथ देकर [उसने पक्षी से] वार्ता पूछी [उसने कहा] "तू अपनी

सत्य वार्ता निरुवार (समझा कर) कह। (४) तुझे शपथ है यदि तू स्फुट (स्पष्ट) न कहे कि तू पशु, पक्षी या मनुष्य है (५) और जिस प्रकार तुझे पक्षी का रूप हुआ, तुझे शपथ है यदि स्फुट (स्पष्ट) तू न कहे।

(६) [तेरा] नाम कौन-सा है स्थान कहाँ है और तेरा निवास किस देश में है? (७) तू किस पाप से और किस अधर्म से पक्षी के वेष में हुई?"

टिप्पणी—(१) बैन<बयन<बचन। (३) (४) गाम<ग्राम (३) बात<बत्ता<वार्ता। सति<सत्य। निराना<निरुवय<निरुव्य=निरवहन। (४) जौ<जउ<यदि। (४) (५) फुर<फुर<स्फुट=स्पष्ट अथवा विमद (४) मानुस<मानुष<मानुष=मनुष्य।

[३६७]

यह सुनि पंछि रुहिर भरि नैना । गाइ रोइ कह कुंवर सउं बैना ।
जो रे मयन क पूंछहि मोही । कहौं मरम सब आपन ताही ।
नगर महारस विक्रम राऊ । पिता राय असि बल बौराऊ ।
जम्बू दीप मारग मइ राजा । और सिर छात पाट सब छाजा ।
म तहि पर पुत्री ओतरी । अमर अवस्था मोहि सिर परी ।
नाउं मोहि मधुमालति राज गिरिहि ओतार ।
कुंवर का मन विधि लिखा जो किछु करम लिखार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा यह सुनि बचन रुहिर भरि, मा ए येह सुनि पछी रुहिर भरि (भे—न)। २ ए सौं रा उस।

(२) १ ए पूछ मही। २ रा कहौं बात कही मैं ए मा कही मरम सब।

(३) १ मा राउ।

(४) १ ए भरथ। २ ए औ जस पाट छत्र सिर, रा और सब राज पाट अति।

(५) १ ए ताहि। २ ए देगु मह मा देगु अमि।

(६) १ ए नाउ नार। २ ए राजा घिर मा. औ गज गिरि।

(७) १ रा औरे लिखारे विधि लिखा मा का मै पार मा कुंवर का मै विधि कहा लिखा जो करम लिखार।

अर्थ—(१) यह सुनकर पक्षी नैनों में रुधिर [के आँसू] भरकर और रो रो कर कुमार से वचन कहने लगी "(२) यदि तू शपथ देकर मुझसे पूछता है तो मैं अपना सब मर्म तुझसे कहती हूँ। महारस नगर में विक्रम राय हैं वे मेरे पिता हैं राजा हैं और बल और व्यवसाय (पुरुषार्थ) में मर्यादित हैं। (४) जंबू द्वीप के भारतखंड के राजा हैं उनके सिर पर छत्र है तथा [उन्हें] सिंहासन [आदि] सब शोभा देते हैं। (५) मैं उनके घर में पुत्री उत्पन्न हुई और अचानक ही यह अवस्था मेरे सिर पर आ पड़ी।

(६) मेरा नाम मधुमालती है और रावपुर में मेरा जन्म हुआ है; (७) (किन्तु), हे कुमार, विधाता ने जो कुछ कर्म (भाग्य) [का लेख] ललाट में लिख दिया है उसे कौन मिटा सकता है ?"

टिप्पणी—(१) रुहिर < रुधिर = रक्त। बैन < वयन < वचन। (२) सपत < सपथ। (३) बौसाउ < व्यवसाय = पुरुषार्थ। (४) छाव < छत्त < छत्र। पाट < पट्ट = सिंहासन। छाव < छद्म [दे] = शोभित होना चमकना। (७) लिलार < लिलाड < ललाट।

[३६८]

पुनि*[1] पाछिलि सब[2] बात जो अही । मधुमालती[3] कुँवर सउँ[4] कही ।
उतपति रैनि जो भएउ[1] मरावा । अस किछु अहा[2] कहा[3] सति भावा ।
औ जत दुख बिछुरें[1] पुनि*[2] सहा । सो सब[3] एक एक करि[4] कहा ।
औ पुनि[1] कहेसि जो[2] दोसरी बारी[3] । मिले दुवौ[4] पेम चितसारी[5] ।
औ सोवत जसें[1] बिछुराने । जब जागे तब दिसि दिसि[2] आन ।
औ जिमि जलनि नीर पड़ि छिरका[1] लोग कुटुंब क कानि[2] ।
सो सब[1] आदि अंत लहि[2] एक एक कुँवर सउँ[3] कहेसि[4] बखानि ।।

पाठान्तर—(१) १ मा रा ए पुनि। २ मा पाछिलि सब ए पछी सब। ३ रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए कुँवर सौं मा सब कुँवरहि रा कुँवर पहँ।
(२) १ ए रैन जो भौ। २ ए कछु आह। ३ मा कहेसि।
(३) १ ए जत दुख बिछुरे। २ मा सहु, रा पुनि ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए मा सब। ४ मा रा कै।
(४) १ रा ए पुनि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा दोसरी बारी। ४ रा मेरए दोउ। ५ रा पेम चित्रसारी।
(५) १ ए जैस। २ ए देस देस।
(६) १ ए पुनि जलनी पानी पड़ि छिरका मा औ जिमि जलनि नीर पड़ि छिरकेउ रा औ जिमि जलनि नीर सिर छिरका। २ मा कुटुंब लाज कुल कानि।
(७) १ ए मा सो सब रा ते सब। २ रा अत लगि रा आनी (?)। ३ ए कुँवर सौं कहा रा एक एक कहे मा एक एक कुँवरहि कहेसि।

अर्थ—(१) फिर पिछली समस्त बातों को जो थीं वह मधुमालती ने कुमार से कहीं। (२) उत्पत्ति (आदि में) रात्रि में जो [मनोहर से उसका] मिलाप हुआ था वह जैसा कुछ [हुआ] था, सत्य भाव से उसने बतलाया। (३) और फिर जितना दुःख [उससे] बिछुड़ने पर उसने सहा था वह सब उसने एक-एक करके बतलाया। (४) और फिर उसने यह बताया जो (जिस प्रकार) वे दूसरी बार प्रेम की चित्रसारी में मिले थे (५) और जिस प्रकार वे सोते हुए ही [एक-दूसरे से] अलग कर दिए गए थे और [जिस प्रकार] जब जागे थे तो उन्होंने देखा था कि वे भिन्न-भिन्न दिशाओं में ला दिए गए थे।

(६) और जिस प्रकार लोक (वेद) और कुटुंब की मर्यादा के ध्यान से उसकी ने [मंत्र] पढ़कर उस पर जल छिड़का था (७) वह सभी आदि से अंत तक एक-एक [वार्ता] उसने कुमार से विवृत कर कही।

टिप्पणी—(१) बात < बत्ता < वार्ता। (२) रैनि < रयणी < रजनी। मराव < मेलाव < मेल = मिमाप मिलन। सति < सत्य। (३) बारी < वेला = अवसर। (५) बिहुर < बिहुड < वि + भद् = अलग होना। (७) बखान < बक्खाण < व्याख्यानम् = विवृत करना कहना।

[३६९]

औ फुनि राजकुंवर क[1] बाता। आदि अंत सभ कहसि निराता।
आदि रैनि जिमि भई[1] चिन्हारी। औ बिधि बचा बोध द[2] सारी।
औ जिमि तजेउ पिता घर बारा[1]। औ बूड़उ जिमि अरध भंडारा[2]।
पेमहि आइ मिलउ[1] जहि भांती। सुनि मोरि बात हिमें भइ[2] सांती।
राकस हनि पेमहि[1] लै आवा। मा आदर बहु मान[2] बधावा।
फुनि पेमा[1] चित्रसारी[2] विषन[3] क मरए हम[4] दोउ।
तिन एक मन परक सेउ[1] मायत भएउ जो एस बिछोउ[2]॥

पाठान्तर— ए में उपर्युक्त पंचम अर्द्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ रा पुनि राजकुंवर भे ए सब राजकुंवर की। २ ए सब कहा।
(२) १ ए आदि अंत जिमि भौ मा आदि रैनि जहि भएउ। २ ए औ जिमि बोध किम।
(३) १ ए तजा पिता घर राजू मा तजा पिता घर बारू। २ ए औ बूड़ा जिमि सहस भंडारू रा और बूड़उ सब अरध भंडारा।
(४) १ ए पेमहि मिला आइ रा पेमै आइ मिलेउ। २ ए. मा. बीतम बात पाए भा (भइ—भा) सांती।
(५) १ ए राकस मारि बोहि। २ ए सब अनंद बहु मान रा. मा आदर बहु मांनि।
(६) १ ए पुनि पेमै रा पुनि पेमा। २ मा चित्रसारी। ३ ए विधि। ४ ए लै मेरवा हम रा लै मेरए जिमि।
(७) १ रा ए. सा। २ ए विधि हम कित्रा बिछोउ रा भौ जो एस बिछोह।

अर्थ—(१) और फिर उसने राजकुमार (मनोहर) की वार्ता आदि से अंत तक सब निरंतर कर कही (२) जिस प्रकार आदि रात्रि में [दोनों में परस्पर] परिचय हुआ था और दोनों ने विधाता का बोध में रखते हुए वचन-बद्धता की थी, और जिस प्रकार [राजकुमार ने] पिता का घर बार छोड़ा था और जिस प्रकार [समुद्र पार करते समय] उसका अर्थ-भांडार डूब गया था, (४) और जिस प्रकार वह पेमा से आकर मिला था, और [जिस प्रकार] मेरा समाचार सुनकर [उसी] हृदय मे शांति हुई थी, (५) और [जिस प्रकार] वह राक्षस को मार कर पेमा को ले आया था, और [जिस प्रकार] उसका [पेमा के घर पर] बहुत सम्मान और आदर हुआ था तथा [वहां] बधावा हुआ था,

(६) फिर [जिस प्रकार] पेमा की चित्रसारी में विधाता ने लेकर हम दोनों को मिलाया था, (७) और [जिस प्रकार] एक क्षण के लिए नेत्रों के पलकों से लगते ही जो इस प्रकार का [दोनों में] बिछोह हुआ था।

टिप्पणी—(१) बाता < बता < वार्ता। निराता < निरत्त < निरस्त = निराकृत। (२) रैनि < रयणी < रजनी। (३) बार < द्वार। (४) बूड़ < बुड़ = डूबना। (५) राकस < राक्षस। अपाव < अर्पापन = अस्मरण अथवा हर्षसूचक भाव। मेरव < मेलम् = मिलाना।

[३७०]

पाप न घटउ[1] कुँवर हम माहँ[2] । यह दुख परा न जानौं काहँ[3] ।
राज कुँवर कहु कहु ल[1] डारा । नहिं जानो हइ जियत क[3] मारा ।
भए, पाँख जब मो तन आई ।[1] रहि न सकिउ निसरिउ[2] बौराई ।
बूड़िहु[1] उद अस्त[2] सयसारा[3] । मिला न कितहू पम पियारा ।
पहिलिहि चाह[1] परा[2] दुख भारी । तब अचत अब[3] जोबन बारी ।
सकल सिस्टि म हेरी होइ पछि क[1] भेस ।
कोई एस नहिं[1] मोहि[2] मिला कहै जो कुँवर संदेस ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए घटउ। २ ए माहे। ३ ए काहे।
(२) १ ए कै कहा कहु। २ ए कहु जीअत। ३ ए में यह शब्द नहीं है।
(३) १ ए भा पाँखी जब मा तन आई, रा भइउ पाखि जिउ रहा न जाई।
२ ए पेम अगिनि निसरी रा रहि न सकिउ निकसिउ।
(४) १ ए बूड़हि। २ भा आदि अंत रा पाठ स्पष्ट नहीं है। ३ ए ससारा।
(५) १ ए पहिले चाह, रा पहिलउ चाह। २ भा परेउ। ३ ए अब।
(६) १ ए पंखी के जो भा होइ पखि कै रा पखि कै।
(७) १ रा ए न ऐसा। २ ए मोहि।

अर्थ—"(१) हे कुमार, हम [दोनों] में पाप (व्यभिचार) नहीं घटित हुआ। [तब भी] यह दुख न जानें क्यों [हमारे सिर पर] पड़ गया। (२) पता नहीं [लोगों ने] राजकुमार को ले जाकर कहाँ छोड़ा और नहीं जानती कि वह जीवित है या मृत। (३) जब मेरे शरीर में पंख आ हुए (निकल आए) तब मैं रुक न सकी और पागल होकर निकल पड़ी। (४) उदयाचल से अस्ताचल तक संसार को ढूँढ डाला किंतु मेरा प्रेम-प्रिय कहीं नहीं मिला। (५) प्रथम अभिलाषा में ही भारी दुख [हमारे सिर पर आ] पड़ा था, [किंतु] तब मैं अचेत (अज्ञात-यौवना) और अब यौवनवर्ती (ज्ञात-यौवना) हूँ।

(६) सारी सृष्टि में मैंने पक्षी के वेष में होकर [उसे] ढूँढ डाला, (७) किंतु मुझे ऐसा नहीं मिला जो कुमार का संदेश (समाचार) कहता।

टिप्पणी—(१) पाँख < पक्ष = डैना।

[३७१]

कुँवर मरम मोर जत किछु[1] अहा । लाज छाड़ि मैं तुम्ह सउँ[2] कहा ।
जौ खोजत कितहू नहि पाइउ[1] । सकति आइ तुम्ह जाल बझाइउ[2] ।
देखिउ[1] तोहि[2] प्रीतम उनहारी । बसिउ आस तेहि[3] आइ[4] अटारी ।
अब जौ छाडि देहु मोहि[1] राऊ । पेम पंथ पुनि होव[2] बटाऊ ।
कै हेरत[1] मिलिहि[2] जाइहि पीऊ । कै लागिहि ओहि[3] मारग जीऊ ।
मंझन चढ़ि कै पेम सर[1] कर[2] न जिय कर लोभ ।
प्रीतम काज जो[1] जिउ घटै[2] सो जीउ[3] दुनहु जग[4] सोभ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा कुंवर मरम मोर जो किछु ए मोरम कमें कुंवर जत। २ छोड़ि मैं तो सौं मा छाड़ि मैं सब तोहि।
(२) १ रा जब खोजत कितहु नहि पाइउ ए जौ खोजत जिय तुम भेंट मा जो दयाल हिय माँ तुम्ह पाएउ। २ ए मा आपु तुम जाल बझाएउ (बझाइउ —मा)।
(३) १ ए देखि तोहि मा देखि तोहि। २ ए कैसी प्रिय परि, मा कैसिउ प्रिय भरि। ३ ए मा आस।
(४) १ ए देहु मोहि। २ ए होउ।
(५) १ ए मा ढूँढत। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए मोहि मा कहि।
(६) १ रा ए पेम। २ ए परिख।
(७) १ ए जो। २ रा जिय। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए दुनौ जुग।

अर्थ—"(१) हे कुमार मेरा मर्म जितना-कुछ था, [वह सब] लज्जा छोड़कर मैंने तुम से कहा। (२) जब खोजते-खोजते [अपने प्रिय को] मैंने कहीं नहीं पाया [तब] बलपूर्वक आकर मैंने तुम्हारे जाल में [अपने को] बँधा दिया। (३) तुम्हें मैंने प्रियतम की अनुहृति का देखा इसी आशा से मैं तुम्हारी अटा पर आकर बैठ गई। (४) अब यदि हे राजा (राजकुमार) तुम मुझे छोड़ दो तो मैं अपने प्रेम-पथ का पथिक पुनः बनूँ। (५) [अब] या तो ढूँढते-ढूँढते मेरा प्रिय ही मिलेगा और या तो उसके मार्ग में मेरा जीव लगेगा।"

(६) मंझन कहते हैं प्रेम की चिता पर चढ़ कर जीव का लोभ [कोई] न करे। (७) जो जीव (जीवन) प्रियतम के निमित्त कम जाता है वह जीव दोनों जगत में शोभित होता है।

टिप्पणी—(१) जेत < जेत्तिम < यावत् = जितना। (२) जो < जउ < यदा = जब। बझाव < बध्य् = बँधाना। (३) उनहारि < अनुहार < अनुकार = अनुहृति। अटारी < अट्टालय = भवन का ऊपरी भाग। (६) सर < सर = चिता।

[३७२]

सुनत राय[1] पंछी[2] दुख बानी । भया भीजु भरि आए[3] मनी ।
कुँवर बात सुनि कै जिउ[1] त्यागी । मोर दुख सुनें[2] उर उर जागी ।

धनि किछु करु चिंता चित[1] माही । ओटवौं[2] सोइ उद्धरसि जाहीं ।
अगम गहौं[1] बाला तोहि लागी । जिमि बुझाइ तो हिय उर[2] आगी ।
मोर बेवसाव भाग तोर बारा । मेरवन हार एक करतारा ।
राजपाट सभ[1] परिहरि दुख अगवौं[2] तोहि लागि ।
मकु[1] साहस सेउ[*2] हौं[3] सिधि पावउँ[4] बुझ हिय तोहि आगि ॥

पाठान्तर—(१) १ ब राह मा राव। २ ए पवित। ३ ए भर बार्व।
(२) १ ए कुँअर सुनी आपन जिउ रा कुँअर कहा सुनि रे जिय। २ ए मा सुनत।
(३) १ ए मे यह अर्द्ध नहीं है। २ ए चिंता करसि जिउ। ३ ए उठवौं।
(४) १ मा अगम करौं ए अब सबम मी। २ ए तोरे हीयर।
(५) १ ए मेरवमिहार।
(६) १ मा सुख ए सब। २ अंगरौं मा सहुउ।
(७) १ रा मकुच। २ रा मा सी। ३ रा ए होम। ४ रा ए मे यह अर्द्ध नहीं है। ५ ए बुझै हीयर मा बझै हियै तोरि।

अर्थ—(१) धनी के दुःख के वचन सुनते ही राजा (राजकुमार) के नयनों में दया के अश्रु भर आए। (२) कुमार ने कहा, "हे जीव (जीवन) का त्याग करने वाली तेरा दुःख सुनकर हृदय में आग जल रही है। (३) तू चित्त में कुछ भी चिन्ता मत कर; मैं वह करूँगा जिससे तू उद्धार पा जावे। (४) हे बाला, मैं तेरे लिए अगम्य [असंभव] को भी ग्रहण (समय) करूँगा जिससे तेरे हृदय की आग बुझे। (५) मेरा व्यवसाय (पुरुषार्थ) [होगा] और, हे बाला तेरा भाग्य [किन्तु तेरे प्रिय को तुझसे] मिलाने वाला तो एक [मात्र] कर्तार ही होगा।

(६) मैं राज्य तथा सिंहासन सब छोड़कर तेरे लिए दुःख को अंगों पर लूँगा (लादूँगा)। (७) संभव है कि साहस [करने] से मैं सिद्धि पा ही जाऊँ और तेरे हृदय की आग बुझे।"

टिप्पणी—(१) औटव < आवर्त्त < आ+वृत्=करना। (५) बेवसाव < व्यवसाय = पुरुषार्थ।

[३७३]

जइ लगि सकौं[1] जीउ मौं[2] जाती । मेरवौं[3] ताहि जाहि हुति राती ।
प्रथमहि[1] नगर महारस जाऊ । पुनि[*2] हेरौं गे[3] पिउ बिसराऊ ।
मकु मोहि अस दै धाल बिधाता । बहुरि मिलै[1] तोहि पम संघाता ।
मिलहि न जौं[1] लहि[2] प्रीतम तोही[3] । तौ लहि[4] छाति नाहि उर मोही[5] ।
जौ लहि[1] पहिल रूप नहि पावसि[2] । तौ लहि[3] कुँवर काज नहि आवसि[4] ।
नगर महारस जाइ कै पहिल रूप तुव[1] देइ ।
सोधि[2] कुँवर तोहि[3] मेरवौं जौं बिधि आउ न लेइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ना सकौं। २ रा और। ३ ए मेरवौं।
(२) १ ए प्रथमहि। २ रा ए मा पुनि। ३ ए गै।
(३) १ मा मिलहि।
(४) १ मा मिलै न जब। २ ए लगि। ३ ए ताहो। ४ ए तौ लगि मा तब लगि। ५ ए हाइ न मोही मा न हिय उर मोही।
(५) १ ए जौ लगि मा जब लगि। २ ए ना पावहि। ३ ए लगि। ४ ए मा आवहि।
(६) १ ए ताहि।
(७) १ मा ए मानि। २ ए तोहि, मा ताहि।

अर्थ—"(१) जहाँ तक अपने जीव तथा शक्ति से कर सकूँगा मैं उसको [तुझे] मिलाऊँगा जिससे तू अनुरक्त है। (२) [सोचता हूँ] पहले तो मैं महारस नगर जाऊँ, और फिर चित बिसराउ नगर जाकर [उसे] ढूँढूँ। (३) पता नहीं [कहीं] मुझे विधाता यश दे ही डाले और तेरा प्रेम का साथी मुझे फिर मिल जावे। (४) जब तक [तेरा] प्रियतम मुझे नहीं मिलता है तब तक मुझ हृदय में शांति नहीं है। (५) [किन्तु] जब तक तू अपना पहले का [नारी] रूप नहीं पाती है, तब तक तू कुमार (मनोहर) के पास नहीं जा सकती है।

(६) [इसलिए] महारस नगर जाकर तुझे पहले का रूप दे (दिला) कर (७) कुमार (मनोहर) को खोज कर मिलाऊँगा यदि विधाता [इस बीच] मेरी आयु न ले ले (न समाप्त कर दे)।"

टिप्पणी—(१) रात < रक्त = अनुरक्त। (७) मेरव < मेलव < मेलय् = मिलाना।

[३७४]

पर दुख हियें दुखम जहि होई। एहि[1] कलि माह सो विरला कोई।
साहस जीउ तहि[1] पर सम्हारी[2]। जो कमाउ पर आपु उजारी[3]।
ज्यग्ह तर भा ढोल जो मारी। ओहि ऊपर भा फल टपकारी[1]।
मोरहि दगि जगत[1] जा मांसा। तहि बह दइ मोंति भरि[2] हाथा।
जा र करावा[1] बचन रानी। साम दइ तहि बारह बानी।
ज्याहि मूँधी (?) चातुरी जो पर रूप[2] मुख[3] लागि।
गहहि कठिन दुख आप सिर हिय रगत मुख आगि[1] ॥

पाठान्तर—ना प्रति में यह छंद नहीं है और मा प्रति में यह अगले छंद के बाद है।
(१) रा एहि। मा ते बिरले।
(२) रा तेहि। २ रा अविचारी। ३ रा जा पर दुख लागि हाय दुखारी।
(३) रा में अर्धाली है
बनि भो जगत जियन तेहि केरा। पर दुख लागि मरै जो पीरा।

(४) १ रा सोरहु देह कलपि। २ रा एहि(।)।

(५) १ रा पाव काइ।

(६) १ रा बारि तु। २ रा परार। ३ रा दुख।

(७) १ रा कापि।

अर्थ—"(१) दूसरों के दुख से जिसके हृदय में दुख होता है वह इस कलि में बिरला ही कोई होता है। (२) उस पर [एक ही नहीं] सहस्र जीव बलिहार हैं जो अपने को उजाड़ (बिगाड़) कर दूसरे को बसाता (बनाता) है। (३) मूलों के नीचे होकर [मिट्टी के] ढेले जिसने मारा (जो मारता है) उसके ऊपर फलों की टपकान हुई (होती है)। (४) सीपों को देखकर अमृत जो उन पर मत्त [होता] है [वह इसलिए कि] वह उसे हाथ (अंजली) भर मोती देता है। (५) जो कंचन (सोने) की खाल को कुरेदता है, उसे वह बारह वर्न का (खरा) सोना देती है।

(६) मूँधी (?) बेचारी को देखो, जो पर के सुख के लिए (७) हृदय में रक्त और मुख में अग्नि [रखकर] अपने सिर पर कठिन दुख सहन करती है।"

टिप्पणी—(१) बिरला < बिरल। (३) रूख < रुक्ख < वृक्ष। ढील < ढल [दे]=ढेला ढोम्ह ढेला। (४) सीप < सिप्पि < सुत्ति < शुक्ति = सीपी। मोति < मुत्तिअ < मौक्तिक = मोती। (५) कचन < काञ्चन = सुवर्ण सोना। बारहबानी < द्वादशवर्णिन् = खरा पहले सोने के खरेपन की सोलह कलाएँ मानी जाती थी (दे० नीलकंठ राय छन्द ४८—हिंदी परिषद् संस्करण) किन्तु मुस्लिम-शासन काल में बारह बर्नों की कसौटी का प्रचलन। हुआ। बारह बर्नों का सोना खरा माना जाता था और जितने ही वर्ण कम होते थे सोना उतना ही खोटा माना जाता था। खरेपन की कसौटी के लिए वर्णों के अनुसार शलाकाएँ बनवा कर रख ली जाती थी जिन्हें 'बनवारी' कहते थे [दे० पद्मावत छन्द ९ ५, १० ८ हिंदुस्तानी एकेडमी संस्करण तथा आईने-ए-अकबरी', आईन ६] (७) रतत < रक्त।

[३७५]

कहि रस मधन पसि[१] सलोनी । स बिदेस निसरउ जिउ[३] जोनी ।
पर सुख लागि दुक्ख जिय[१] भावा । परिहरि सुख दुख अकम[२] लावा ।
राज[१] पाउ सम[२] सुख परिहरा । दुख कर छात रहसि[३] सिर धरा ।
म बलि बलि तिन्ह परसे परा[१] । पर दुख दुखी हिया[२] जिन्ह करा[३] ।
कारन आपु दुखी सम होई ।[१] पर दुख दुखी सो[२] बिरला कोई[३] ।
ताराचंद कुँवर[१] पर सुख लगि[२] लिएउ दुक्ख[३] सिर मार ।
पर सुख लागि ज दुख सहहि[१] गनिय ते जन[२] सयसार[३] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मरम। २ ए पंछी। ३ रा सै बिदेस निसरउँ सम ए कैउ बिदेस की आसिर।

(२) १ ए जीव। २ ए मन।

(३) १ ए राज भा में यम कौड़े द्वारा कटा हुआ है। २ ए भा सब। ३ रा छत्र रहसि ए मोर आसि।

(४) १ ए दुख वर्नम्ह केरी (तुल० १० १) रा सिम पगसे पैठा। २, रा लागि हिया ए दुलिमा (<दुरन हिया फ़ारसी लिपि) ३ ए जिन्ह केरी।

(५) १ ए भा सब हारई रा मन कर्ई। २ ए जन। ३ रा हारई।

(६) १ ए म यह चरण नहीं है। २ ए लागि। ३ ए लीन्ह आपु।

(७) १ रा ए भा दुख सहै। २ ए मर्न तहि म रा पहुन ठेम न। ३ ए संसार।

अर्थ—(१) [इस प्रकार] रसीले वचन कहकर उसने सखी (मधुमालती) का संतोष किया और उस जीव को जोखिम में डालने वाले [राजकुमार] ने [धनी को] लेकर विदेश के लिए प्रस्थान किया। (२) पर-सुख के लिए उसे जी में दुख भाया और सुख छोड़कर उसने दुख को आलिंगन किया। (३) राज्य का चाव और समस्त सुख उसने छोड़ दिए, और हर्षपूर्वक दुख का छत्र सिर पर धारण किया। (४) [मानस कहते हैं] मैं [ऊपर] बलि बलि गया और मैंने उनके चरणों का स्पर्श किया जिनका हृदय पर-दुख से दुखी होता है। (५) अपने लिए तो सभी दुखित होता (दुख उठाता) है पर-दुख से दुखी विरला ही कोई होता है।

(६) तात्पर्य कुमार ने पर-सुख के लिए सिर पर दुख का भार लिया। (७) पर-सुख के लिए जो दुख सहन करते हैं उन्हें [ही] संसार में जन (मनुष्य) गिनिए (समझिए)।

टिप्पणी—(१) निसर < निस्सर < निर्+सृ = बाहर निकलना। (३) छात < छत्त < छत्र। (४) हिय < हृदय।

[३७६]

फनि पाएउ[१] गुनि[१] बाए मयाना। ऍबर मनँ राएउ[१] अधिराऊ।
कहसि परा[१] मोहि[२] सिर बड़[३] भारू। होइहौं परवसा राजि राजू।
जो सुद बाल[१] सयानी मोरा। रहे[२] मोहि[३] पर अह[४] तार निहोरा।
एहि[१] परोग मोर सब[२] मावसि। धाल प्रीति[३] सिर पहुँचावसि।
परहौं न कोइ जगत भल तोही[१]। एहि ठां जो मय दमिन मोही[२]।
एत सुइ[१] बाल रापानी औ वधौ हमि मोर।
आवहि[१] फाज एहि[१] औसर लायहु आनु निहार[२]॥

पाठान्तर—(१) १ रा गुनि पाए गुनि भा पुनि पाए मन ए पाय गुनि है। २ ए मने पाये।

(२) १ भा परेउ। २ ए मारे। ३ ए में यह चरण नहीं है।

(३) १ ए तैं हमि भा गै हामि। २ ए र[१]। ३ भा मार ए मो पर्ई। ४ ए नै (<नइ) रा विमि।

(४) १ ए यहि रा एहि। २ भा जो। ३ ए भा मन। ३ ए बाल प्रीति रूप, ए यम प्रीति है।

(५) १ ए कहै न भला आज कउ मारा भा कहीं न केउ जगत भल तोहीं। २ भा संग। ३ ए यहि ठाँ पै सग बैठ न तोरा।

(६) १ ए. भा तै। २ ए बन्धी हहि भा पै बन्धी।

(७) १ ए काजु, भा काज। २ भा एहि। ३ ए लावो न मापन मोर, रा काउ न आपुहि कोरि।

अर्थ—(१) फिर (तदनंतर) यह सुनकर [तारार्चंद का] एक बाल-सखा दौड़ पड़ा आधी रात को उसे कुमार (ताराचंद) ने मन्त्रणा के लिए बुलाया था। (२) [ताराचंद ने कहा,] "मेरे सिर पर एक बड़ा कार्य [आ] पड़ा है, [जिसके लिए] मैं राज्य छोड़कर परदेसी हूँगा (विदेश जाऊँगा)। (३) यदि तू मेरा बाल-सखा है और मुझ पर तेरा निहोरा (कृपापूर्ण स्नेह) है (४) तो तू इस प्रयोग में मेरे साथ आ, और बालपन की प्रीति को सिरे तक पहुँचा। (५) तुम्हें जगत् में कोई भला न कहेगा यदि तू इस स्थान पर [मेरा] साथ न देगा।

(६) एक तो तू [मेरा] बाल-सखा है और दूसरे तू मेरा बांधव है; (७) तू इस अवसर पर मेरे काम आ मैं तुझे अपना निहोरा लगा रहा हूँ (अपने स्नेह की दुहाई दे रहा हूँ)।

टिप्पणी—(१) राव < रावय् = पुकारना आह्वान करना। (४) परोग < प्रयाग। (५) ठा < स्थान। (६) बंधी < बान्धव।

[२७७]

कंवर सुहिरदौं सुनि यह[1] बाता । सिर पाँ हुत कापेउ सब[2] गाता ।
कहसि होहि[1] जौ[2] सो[3] जिय मोरें[4] । देउ सब[5] नेउछाउरि तोरें[6] ।
जौ न काजु[1] तोर सब[2] अहहू[3] । पुनि[4] कहि काज काल्हि[5] न अहहू[6] ।
जो जिउ नेग न लागिहि तोरें[1] । सो जिउ बहुरि काज कहि मोरें[2] ।
तुम्ह सब जौ[1] न आउ एहि[2] बेरा । इहाँ रहौं मै न[3] कोहि केरा ।
तुम्ह बिनु कहं गौनहु[1] छाड़ि राज कटकाइ[2] ।
मैं जो रहौं तुम्ह[1] परिहरि को भल मोहि[2] कहाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा सुहृदउ सुनत यह ए सो हिरदै सुना सो। २ भा सिर पायहि कांपउ सब ए सिर पाँयहु ते काँपा।

(२) १ ए हो। २ ए. म यह शब्द नहीं है। ३ भा सै। ४ ए मोरा। ५ ए भा सबै। ६ ए. तोरा।

(३) १ ए काज। २ भा ए सब। ३ ए अहौं। ४ रा ए पुनि। ५ ए काल्हि। ६. ए एहौं।

(४) १ ए लागे तोरे। २ ए भा मोरे।

(५) १ ए तुह संग जौ भा तुम्ह संग जौ। २ ए यहि। ३ रा म यह शब्द नहीं है।

(६) १ ए. गौनब भा गौनत। २ ए भा समुदाइ।

(७) १ ए तुम। २ ए को मोहि भला रा मोहि भल कोइ न।

अर्थ—(१) कुँवर का सुहृद् (मित्र) यह बात सुनकर पैर से सिर तक समस्त गात्र से काँप उठा। (२) उसने कहा "यदि सौ जीव मेरे हों, तो मैं उन्हें भी तेरी न्यौछावर दे (कर) डालूँ। (३) यदि मैं आज तेरे साथ नहीं जाऊँगा तो कल मैं तेरे किस काम आऊँगा? (४) यदि मेरा जीव तेरी सेवा (भेंट) नहीं लगेगा (होगा) तो वह जीव फिर मेरे किस काम (आवेगा)? (५) यदि मैं इस बेला में तुम्हारे साथ न जाऊँगा तो मैं यहाँ किस का होकर रहूँगा?

(६) तुम राज्य तथा सेना को छोड़ कर विदेश जा रहे हो (७) तो मैं तुम्हें छोड़ कर यदि (यहाँ) रह जाऊँ तो मुझे कौन भला कहेगा?"

टिप्पणी—(१) सुहिरदी < सुहृदय = सुहृद मित्र। बात < वत्ता < वार्ता। (२) निछावरि < निवच्छ [दे०] + आवलि = उतारे (वारे) हुए पदार्थों का समूह।

[३७८]

पुनि मवधि[१] राजा[२] मनवारा[३]। राजकुँवर अपिरानि हकारा[४]।
आयो[१] कुँवर परिछि[२] सिर[३] लीन्हा[४]। आइ[५] जोहार मागु होइ कीन्हा[६]।
कहा जाइ सो[१] तुर पलानहिं[२]। मासिहोब जिमु बह त आनहिं[३]।
बूझ भरथ[१] सम जानहिं[२] जही। सहस माहिं[३] म[४] आउ[५] जबही।
पाठि बाहिं[१] पाखर मानपानी। तुर मोल सब आए[२] पलानी।
मरत न पूज तज तिन्ह[१] चरन रन तुरियाँहि[२]।
चरहिं रीम प[१] भावत निरखि निकट परिछाँहि[२]॥

पाठान्तर—(१) १ का कवि ही बंध ए पुनीबध। २ रा राय। ३ ए मनधाम। ४ ए हंकार।
(२) १ रा ए आया। २ ए प्रछि। ३ ए ज रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए लेइ, का लीन्हेउ। ५ ए आय (< का० फारसी लिपि)। ६ ए आय में कैइ का अपीन में कीन्हेउ।
(३) १ ए कहा कुमर ज रा करेसि जाइ सी। २ ए तुरै पलानु। ३ ए मास हाथ जो मम आनु का मासि होउ ज गए ते।
(४) १ रा बाक भर ए नाँव क भरथ का नाव भरथ। २ ए जो जानै का पंथ जानहि। ३ ए महलगह मा। ४ ए में यह शब्द नहीं है का मह। ५ ए का आनु।
(५) १ ए पाखि। २ ए तुरिन तुरगम आन।
(६) १ ए ते मन का तज निधि। २ ए चरन रैन तुरि जाहि रा चरन नज तुरियाइ।
(७) १ ग चरै जा रोम जिइ पावै ए चरहिं रीम कर्न पारखि। २ ए प्रगटि का निरह जोह (< छाँह)।

अर्थ—(१) पुष्प-मधवि [नामक] राजा का कोषेदार (या चौकीदार) था; राजकुमार ने उसे अपनी राज को बुलाया। (२) उसने कुमार की आज्ञा को ग्रहण कर उसे सिर पर धारण किया,

और सामने आकर उसने कुमार को नमस्कार किया। (३) [कुमार ने] कहा 'जाकर सौ घोड़े लाओ और जिसे (जिन्हें) शालिहोत्र (अश्व-शास्त्र) कहता (बतलाता) हो तुम उसे (उन्हें) ले आओ। (४) जो कूच (चाल) का समस्त मर्म जानते हों सहस्रों में से [ऐसे चुने हुए] घोड़ों को जान-समझ कर ले आओ।" (५) तब पीठों पर सोने के पर्त की पाखर डाले हुए सौ-एक घोड़े पलान (सुसज्जित) कर लाए गए।

(६) [वे ऐसे थे कि] उन घोड़ों के चरण-रेणु का तेज (की तेजी) हवा नहीं पाती थी (७) [वे ऐसे थे कि] जो दौड़ते समय [अपनी] परछाहीं को भी देखकर रोष करते थे [अपनी परछाहीं को भी अपने समकक्ष देखना नहीं सहन कर सकते थे।]

टिप्पणी—(१) थनवार < थानवाल < स्थानपाल = थानेदार या चौकीदार। परिछ < परिच्छ < प्रति + इष् = ग्रहण करना। (३), (६) तुरिय < तुरग = घोड़ा। (३) (५) पलान < पल्लाण < पर्याणय् = अश्वकवचादि से सुसज्जित करना। (४) कूच < कोचक [दे] = चाल आह्वान। उम्हह < उम्मेह < उद् + प्र + ईश् = जानना समझना। (५) पाखर < पक्खर = अश्व कवच। बानी < वर्णिन्। (७) परिछाह < प्रतिच्छाया।

[२७९]

दरब लादि गाडीं[१] दस लीन्हा[२] । सुदिन साधि पस्थानो कीन्हा[३] ।
लोग[१] कुटुंब परिहरि सहदेसी[२] । पर सुख दायक[३] भएउ[४] बिदेसी ।
जेते अहे इस्ट सँग बासी[१] । भए[२] साथ मिलि सभ[३] उदासी ।
पुनि[१] कुँवरनि कह परोहन बाँटे[२] । पौन बेग जिन्ह पाँस[३] न काटे ।
धावत चरन लखिय नहिं आए[१] । जनु मन मों हुहिं पाव कराए[२] ।
सुकल पच्छ[१] सनिवार सातवें[२] सुलतान[३] कीन्ह[४] पयान ।
मधुमालति कर पींजरा[१] सभ[२] छै[३] उतरे आइ मलान[४] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए बाढी। २ ए लीन्हा। ३ ए कीन्हा।
(२) १ ए मित। २ ए परिहरि सौसी। ३ ए दायि। ४ ए भौ।
(३) १ ए यहाँ पाठ संपबासी या अहे इस्ट संग बासी। २ ए भौ। ३ ए साथ भौ सबै या साथ मिलि सबै।
(४) १ रा ए पुनि। २ ए कुँवरन्ह कै बेराहन बाटे या पुनि कुँवरन्ह कहं परहन बाँटे। ३ रा जेहि पाय ए जो पंख।
(५) १ ए लखा ना जाई या लखे नहिं आए। २ ए मन मौ रौ हुइ पाँव हेराई या जनु मन महं यौं बहु बाहर जाए।
(६) १ मा पक्ख। २ ए छौ बरसातें रा सुभ साधि कै। ३ ए सुभकाल। ४ मा किएउ।
(७) १ मा कर पिंजर रा ए कै पिंजरा। २ ए मा संग। ३ ए मा ले उतरे और है। ४ ए आइ मेरान मा पाइ मेलान रा बमि मलान।

अर्थ—(१) उसने दस माने द्रव्य लाद लिया और अच्छा दिन निश्चित करके प्रस्थान कर दिया। (२) [अपने देश के] लोगों, और कुटुंबियों और देशवासियों को छोड़कर वह परमुख देनेवाला (परमुख के लिए) विदेशी हो गया। (३) उसके साथ जितने भी इष्ट और सगे थे वे सब उसके साथ जाकर उदासी बन गए। (४) फिर [कुमार ने] कुमारों को [ऐसे] प्ररोहण (सवारी के जानवर—घोड़े) बाँटे पवन वेग (तीव्र गति) में जिनके पक्ष नहीं काट सकता था —समकक्ष नहीं हो सकता था (५) दौड़ते समय जिनके चरण आप जाकर भी देख नहीं सकते थे मानो उन्होंने मन में ही पैर कराए (अथवा रक्खे) हों।

(६) शुक्ल पक्ष की सप्तमी को शनिवार के दिन अच्छी लग्न में [कुमार तथा उसके साथियों ने] प्रयाण किया (७) मधुमालती का पिंजड़ा साथ में लिए हुए वे मेलान (पड़ाव) करने के लिए आ उतरे।

टिप्पणी—(१) दरब < द्रव्य। पस्थान < प्रस्थान। (४) पराहन < प्ररोहण = सवारी का जानवर। (६) पयान < प्रयाण।

[३८०]

पूँछत[1] नगर महारस जाहीं। इह चित चिंतत चित माहाँ[2]।
पहिरे मकुन पाव[1] जो[2] एही। तौ[3] ढूंढौ ग[4] एहि क सनही।
मधुमालति पिंजरा[1] उर लायें[2]। चला जाइ चित चाय पराए[3]।
जेउ[*] जेउ[*1] पाव महारस चाहा। तउ[*] तउ[*2] हिय महँ होइ[3] उछाहा।
देखि महारस नगर सोहावा। जरत हिया जनु[1] अमिअ सिरावा[2]।
पुनि जौनी माल्सिनि क[1] बारी[2] उतरउ[3] राजकुमार[4]।
मालिनि पुहुप लिए भरि डालिइ[1] कीन्हेउ[2] आइ जोहार॥

पाठान्तर—(१) १ ए पूछत। २ ए चिंता मन भीतर जाही।
(२) १ मा पाव। २ ए जब। ३ ए तब। ४ ए जा।
(३) १ मा पिंजर। २ ए हिय लाएँ मा हियें लाएँ। ३ ए चल मोल पा दाई रा चला चाह पराएँ।
(४) १ रा ए मा जो जो। २ रा ए मा तो तो। ३ ए जिउ मा होत रा मन महँ हाइ।
(५) १ ए ज। २ ए सवारा।
(६) १ मा जानों मालिनि कें ए जौना मालिनि रा जौनी कें। २ मा बारी। ३ ए उतरे। ४ मा कुमार।
(७) १ ए पुहुप भरि डारी। २ ए कीन्हा।

अर्थ—(१) वे महारस नगर को पूछते चले जा रहे थे चित्त में [लगातार] यही चिंता कर रहा था, (२) "यदि यह दुर्लभ खबर पा जावे तो [तदनंतर] जा कर इसके स्नेही को ढूँढ़ूँ। (३) [कुमार] मधुमालती का पिंजड़ा हृदय से लगाए हुए और चित्त में पराए (के गुण) की चाव (उमंग) में चला जा रहा था। (४) जैसे जैसे वह महारस नगर का समाचार पाता था वैसे वैसे उसे हृदय

में उत्साह होता था। (५) कुमारने मदनारस नगर को देखकर उसने मानो जलते हुए हृदय को अमृत से शीतल किया।

(६) तदनंतर जौना मालिन की वाटिका में राजकुमार उतरा (७) और उस मालिन ने डाली भर पुष्प लिए हुए आकर [उसे] नमस्कार किया।

टिप्पणी—(४) उछाह < उच्छाह = उत्साह। (६) बारी < वाटिका। (७) पुहुप < पुष्प।

[३८१]

फुनि जौनां कह[1] पूछ[2] राऊ । बिसमौ[3] नगर कहहि[4] कहि[5] भाऊ ।
हरषवत कोउ[1] कतहु न दरसिय[2] । कारन कौन दुखी सभ परसिय[3] ।
जौन कहा[1] सुनहु नरनाहाँ[2] । बिसमौ[3] नगर बात मोहि पाहाँ[4] ।
बिक्रम राउ न्रिपति[1] एहि गाऊं । रानिहि रूपमंजरी नाऊं ।
बिक्रम[1] तेज अनल जनु बर । सुरुज[2] बंस जेहि कलि उधर ।
पुत्री एक अंत क तेहि कुल[1] आइ लीन्ह[2] अवतार ।
नाउ ताहि[1] मधुमालति त्रिभुवन कर[2] उजियार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पुनि ए जे। २ ए पूछै मा पूछै। ३ ए मा बिसमै। ४ ए कहौं। ५ मा केहि।
(२) १ मा केउ। २ ए कोइ काहु न देखी। ३ ए सब पखी मा सब पेखी।
(३) १ ए जौने। २ ए नर नाहा। ३ ए मा बिस्मै। ४ ए पाहा।
(४) १ ए राउ नृप। मा राय निपति। २ मा एहि।
(५) १ रा बिक्रम राउ। २ ए जो बरई। ३ मा सत रा सत मा। ४ ए मे मह सब्द नहीं है। ५ ए कुल उधरई।
(६) १ ए पुत्री एक अत कै तेही रा पुत्री एक है तेहि के। २ ए कुल लीन्हा, मा आइ किएउ।
(७) १ ए नाम तासु। २ ए तीनि भुवन।

अर्थ—(१) फिर जौना को (से) राजा (ताराचंद) पूछने लगा "किस भाव (कारण) से नगर में विस्मय (विषाद) है? (२) यहाँ कोई भी हर्षित नहीं दिखाई पड़ रहा है; क्या कारण कि सब दुखी दिखाई पड़ते हैं?" (३) जौना ने कहा, "ऐ नरनाथ नगर के विस्मय (विषाद) की वार्ता मुझसे सुनिए। (४) यह गाँव (नगर) विक्रमराय राजा का है [और यहाँ की] रानी का नाम रूपमंजरी है। (५) उनके विक्रम का तेज ऐसा है मानो अनल जलता हो; वे सूर्य वंश के हैं जिसने कलि (इस युग) का उद्धार किया है।

(६) उनके कुल में अंत में एक पुत्री ने आकर जन्म लिया, (७) उसका नाम मधुमालती है और वह त्रिभुवन का प्रकाश है।

टिप्पणी—(२) पेख < पेक्ख = प्र + ईक्ष् > देखना। (३) नाह < नाथ = स्वामी। बात < वत्ता < वार्ता। (५) बर < ज्वल = जलना।

[३८२]

बिधि¹ चरित्र बिरह² अस³ आई । ओहि कर हाथ रही⁴ बौराई ।
ताहि क माय मंतनि आहि¹ खोई । पंछि रूप कै कुटुंब बिछोई ।
तेहि दिन हुत¹ राजा औ रानी । बिसमौ तजा दुहू² अन पानी ।
नैन दिस्टि तस रोइ बहाए¹ । जगत हेरि हार नहिं पाए² ।
राजघरहिं* औ बिसमौ¹ होई । हरखवंत तेहि नगर न² कोई ।
सब घट कर¹ जीउ² जो³ आह⁴ मधुमालति एहि⁵ गाँउ ।
सो जिउ गयउ¹ सरीर तजि तेहि² सुन नगर बिराउ³ ॥

पाठांतर—(१) १ मा में 'क' और है। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए एस। ४ ए ओहि के हाथ भई।
(२) १ ए ओहि माय मंतनी ओहि। २ ए ते।
(३) १ ए तेहि दिन सों ए ता दिन ते। २ ए बिसमौ तजउ दुहं ए बिस्मै बहुत तजा मा बिस्मै दुहु तजा।
(४) १ ए जो रोए बिहाई मा दुइ रोइ गँवाए। २ ए जग सो हेरि हेरि ना आई।
(५) १ ए राजा सब बिस्मै अ मा राजकुंवर औ बिस्मै। २ ए मा में यह शब्द नहीं है। ३ ए नहि।
(६) १ ए सब घर घट मा सब घट कर। २ ए मा में यह शब्द नहीं है। ३ ए सा। ४ ए जो आहै मा जिउ आहै। ५ मा एहि।
(७) १ ए गौ। २ ए तेहु। ३ ए बिराव।

अर्थ—"(१) किंतु विधाता का चरित्र आकर कुछ ऐसा हुआ कि वह हाथ करके (स्वतः) पागल हो रही। (२) [तब] उसकी माता ने उसकी [आत्मीय] शक्ति को (समाप्त कर) दी और पक्षी-रूप में कर उसे कुटुंब से वियुक्त कर दिया। (३) उसी दिन से राजा और रानी दोनों ने विस्मय (विषाद) में अन्न-पानी छोड़ दिया। (४) नेत्रों की दृष्टि उन्होंने रो-रो कर बहा दी और वे उसे संसार भर में ढूंढ कर हार गए, किंतु उसे न पा सके। (५) और क्योंकि राजगृह में विस्मय (विषाद) है इसीलिए नगर में कोई भी हर्षवंत नहीं रहा।

(६) इस गाँव (नगर) में समस्त घटों (शरीरों) का जीव मधुमालती को है (७) वह जीव [इस] शरीर (नगर) को छोड़कर चला गया, इसी कारण इस नगर में विराम (कोलाहल से विराम) है।

टिप्पणी—(१) बौराई < वातुल्य = पागलपन। (५) जौ < यथा < यत = कारण कि। (७) बिराउ < विराम = विरति उपरम निवृत्ति।

[३८३]

जोगी कहा¹ सुनहु नरनाहा² । जेहि दिन हमें³ गई कहं⁴ बाहा ।

आनहु[1] नगर बिसूरा परा । सुख अनद घट घट कर हरा[2] ।
मता[1] पिता कर दुक्ख बिसंसा[2] । जस बिनु जीउ[3] कया कर लसा[4] ।
मैं तहि दिन हुत[1] फूल न गाँथ । फूल गाँथि बाँधौं केहि माथे[2] ।
केहि लगि माँडहु फूल क मारी[*1] । बिधि हरि लीन्हि सो[2] पहिरनिहारी ।
जौन वचन मुनि कामिनि[1] कुँवरहि[2] कहेउ[3] हकारि ।
जो तुम्ह[1] अग्या[2] पावौं एहि सेउ करौं[3] चिन्हारि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा जौने नहीं। २ ए सुनहु मेह हाला। ३ भा हुत ए है।
३ ए गई बोह मा गई लगि सो।
४ ए तब से। २ ए ते रहा मा परिहरा।
(२) १ ए तब से। २ ए ज भी बिमसा मा मैं कै दुख मेला। १ रा
(३) १ रा ए माता। २ ए कया है सेसा।
जस ते मए। ४ ए कया है सेसा।
(४) १ ए ता दिन ते मैं रा मैं तेहि दिन सो। २ ए माथी के माथे मा
मसी केहि माथें।
(५) १ ए जेहि मिति गथै पुहुप कर माला मा केहि लगि गाँथौं पुहुप क मारी।
२ ए बिधि हरि लीन्हा मा बिधि हरि लई सो। ३ ए पहिरनहारा।
(६) १ ए जौना बचन सबद मुनि मा जौना बचन सबद कामिनि मुनि।
२ ए कुँवरी। ३ ए लीन्ह।
(७) १ ए मुह, रा तुम्ह। २ रा ए अग्या। ३ ए तो सौं करौं मा रा
एहि सो करौं।

(१) कोना कहने लगी "हे नरपाल सुनो, जिस दिन से यह बाला (मधुमालती) गई है (२) मानो नगर में खेद पड़ गया है, और प्रत्येक घट (जीवधारी) का सुख और आनंद हर उठा है। (३) माता-पिता का दुख [स्वभावत] विशद है जैसे बिना जीव के शरीर का हास होता है। (४) मैंने उस दिन से फूल नहीं गूँथे [क्योंकि] फूल गूँथकर किसके मस्तक पर उन्हें बाँधूँ? (५) किसके लिए मैं फूल की मालिका तैयार करूँ, [जब] विधाता ने उस पहिनने वाली को हर लिया?"

(६) कोना के वचन सुनकर कामिनी (मधुमालती) ने कुमार (ताराचंद) को बुलाकर कहा (७) यदि तुमसे आज्ञा पाऊँ तो इससे परिचय करूँ।

टिप्पणी—(२) बिसूरा < बिसूरण [दे]= खेद पीड़ा। (४) गाँथ < गउ < ग्रन्थ् = गूँथना
(५) मारी < मालिका।

[३८४]

कुँवर कहा चीन्हति[1] हहि एही[2] । कहेसि मोरि यह बार[3] सनेही ।
मालिनि कुंवर निकट तब[1] आई । मधुमालति सेवं[*2] भेंट कराई ।

तब जोनां[1] पिंजरा कंठ लावा[2] । रोइ रोइ[3] नैनन सलिल बहावा ।[3]
मधुमालति पुनि[4] गहबरि रोई । रूप मलिन[1] औ[3] कुंदन बिछाई ।
लोचन दुवौ[1] नीर न[2] बहँ । रोइ रोइ दुख पाछिल सब[4] गहे[5] ।
पुनि ग[1] राजकुँवर दुवौ बरज[2] अब रोवहु कहि जान[3] ।
तुम्ह दुख रैनि बितीति[1] भ परगासउ सुख भान[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए चीन्हत (<चीन्हति फ़ारसी लिपि)। २ ए ही तही मा है एही। ३ ए कहेसि मारि है बाल।
(२) १ ए बनि। २ रा मा ए भी।
(३) १ मा जौनै। २ ए मा पिंजर कंठ लाई। ३ ए रोवत नैन सलिल छटाई मा रोवत नैन दुहुं सलिल बहा[4] रा रा" नैनन सलिल बहावा ('रोइ' के अनंतर आदर्श में और नागरी में रहा होगा कदाचित् पुनरावृत्ति सूचित करने के लिए २ का अंक बना रहा होगा जो पीछे छूट गया होगा)।
(४) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए हीन। ३ ए जो।
(५) १ ए दुवौ। २ ए कै। ३ ए मा बहे। ३ ए में यह शब्द नहीं है मा सब। ४ मा ए गहे।
(६) १ रा ए पुनि भै। २ ए तै मना। ३ ए रोवै कहि स्याम मा गर्वहि का जानि।
(७) १ ए सुख दुख दुख ब्यापित भौ मा तुम्ह दुख निसा बिनीत भै। २ ए परगासा सुख भान।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा (पूछा) "क्या इसे (जौना को) पहचानती है?" तो [कुमारी ने] कहा "यह [तो] मेरी बाल-स्नेही है।" (२) मालिन तब (यह सुनकर) कुमार के निकट आ गई और [कुमार ने] उसे मधुमालती से मिला दिया। (३) जौना (मालिन) ने पिंजरा को गले से लगा लिया और रो-रोकर नेत्रों से उसने जल गिराया (आँसू गिराए)। (४) तदनंतर मधुमालती [मिलन के] आनंद से भर (पूरित हो) कर रोई उसका रूप मलिन था और वह कुंदन से विपुलता थी। (५) उसके दोनों नेत्र जल (आँसुओं) की नदी बहा रहे थे और वे रो रो कर उसका पिछला समस्त दुःख कह रहे थे।

(६) फिर (तदनंतर) राजकुमार ने आकर दोनों को (रोने से) मना किया [और कहा] "अब किस बात के (क्या समझकर) रो रहो हो? (७) [तुम्हारी] दुःख की रजनी व्यतीत हो गई और [तुम्हारा] सुख-सूर्य प्रकाशित हो गया।"

टिप्पणी—(१) बार<बाल। (४) भर [२०]=आनन्द हर्ष। (५) नै<नद=न। (६) जान<ज्ञान। (७) रैनि<रयनी<रजनी।

[३८४]

बरा भँवर पुनि[1] जोनहि गई[2] । गउर बाह जनावहि[3] जाई ।
पहुँ ग मता निगहि[1] सुर बात । औ समर[2] बद्धव भोग जन[1] मान ।

जौ मालिनि यह अग्या[१] पाई । हरखत राज बार चलि[२] आई ।
रानी राउ[१] बैस हुत जहाँ[२] । बौलें चाह कही ग[३] तहाँ ।
बिक्रम राउ[१] रूपमंजरी । रहसे सुनत चाह सुख भरी[२] ।
चंद[१] उदै मुख दुहुँ[२] कर गहा जो हुत दुख[३] राहु ।
पूनिउ भ[१] परगास तस[४] सुनि[३] मधुमालति चाहु ॥

पाठान्तर—(१) १ रा तब ए सौ। २ रा आई। ३ ए समाचहु।
(२) १ ए मै मात पिता रा मै मात पिता का मै सता पिता। २ ए चो। ३ ए बड़।
(३) १ रा अम्मा। २ ए बार राजा के।
(४) १ ए राव। २ ए हुत (<हुत फारसी लिपि) जहाँ रा जहँ रहा। ३ ए चौता चाह कही गौ।
(५) १ ए में यहाँ 'बैठे और है मा मे यहाँ औ' मोर है। २ ए परी।
(६) १ ए चंद। २ ए दुहु। ३ रा कैत ए होतेउ। ४ ए राहु।
(७) १ ए मा पूनिउ भै रा पूनिउं होइ। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए सुन। ४ ए चाहु।

अर्थ—(१) तब कुमार ने चौना को बुलाकर कहा, "रावल (राजभवन) में जाकर यह समाचार सूचित कर आ। जाकर [मधुमालती के] माता-पिता से [यह] सुख-समाचार कह आ, और जितने भी उसके कुटुम्बी तथा स्वजन हैं, उन सब से [कह आ]।" (२) जब मालिन ने यह आज्ञा पाई, वह हर्षित होती हुई राज-द्वार पर चली आई (४) और जहाँ पर रानी और राजा बैठे हुए थे वहाँ जाकर चौना ने समाचार बताया। (५) विक्रमराय तथा रूपमंजरी यह सुख-भरा समाचार सुनते ही हर्षित हो उठे।

(६) रानी के मुख-चंद्र को ग्रहण-काल में ही जो दुःख-राहु ने ग्रस लिया था (७) मधुमालती का समाचार सुनकर (उन्हीं मुखों का) प्रकाश पूर्णिमा के (चंद्र) के समान हो गया।

टिप्पणी—(१) राव<रावय्=आह्वान करना बुलाना। राउर<राउल<राजकुल=राजभवन। (२) चेत<चेतित<चायत्=चितना। (३) बार<द्वार। (७) पूनिउं<पूर्णिमा।

[३८६]

सुनि[१] रानी मालिनि पग[२] परी । कहसि इहौ[३] बिधि होइहि[४] घरी ।
कब होइहि[१] सो दवस बिधाता । जहि देखिहि[२] दुहिता मुख माता ।
पूछसि[१] मन बसि तै आई[२] । कै र चाह सुनी तसि धाई[३] ।
मालिनि कहा चाह कसि[१] रानी । मन जो बसिउ कहौं बखानी ।
पंछि रूप तन मोसु न मासा । बचन चीन्ह मोहि राइन्हि[१] पासा ।
आवन नाव कहेसि मोहि[१] तब मागिउं[२] कंठ[३] चाह ।
हित जन कहं यह का कहिय[४] सतुह[५] दसि छोहाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुनि। २ ए पाँव भा पां। ३ ए उहौ। ४ ए होइहै।
(२) १ ए कब होइहै भा कहिमि हाइहि। २ ए जहि देखब भा जहि देखें।
(३) १ ए पूछसि। २ ए रहौ भा अहही। ३ ए भा चाह सुनि आवे स कहही।
(४) १ ए सुनि। २ ए नैन जा बरनउँ।
(५) १ ए चीन्हौ मोहि तौ रायन्ह।
(६) १ ए आपन नाउ कहेउँ जब भा नाउ कहसि तौ चीन्हिउ। २ ए लागा। ३ भा गियं।
(७) १ ए हित जन कहं दहु भा कहौ रा हित जन कहिय कहा लहि भा हित जन कहं दई तपत का कहिए। २ ए गसुगी।

अर्थ—(१) [यह समाचार] सुनकर रानी मालिन के पैरों पर गिर पड़ी, और उसने कहा "हे विधाता क्या ऐसी भी घड़ी होगी [कि मधुमालती हमें मिल जाएगी]? (२) हे विधाता वह दिन कब होगा जिस दिन दुहिता का मुख माता देखेगी? (३) [मालिन से] उसने पूछा "क्या तू उसे नेत्रों से देख कर आई है या समाचार मात्र] सुनकर वैसे ही दौड़ पड़ी है?" (४) मालिन ने कहा, "समाचार कैसा? मैंने तो नेत्रों से जो देखा है वह वर्णन करके बता रही हूँ। (५) वह पक्षी-रूप में है शरीर में मात्रा भर भी मांस (हाड़) नहीं है वचनों से जब उन्होंने मुझे पहचाना तो [अपने] पास बुलाया।

(६) (जब) उसने अपना नाम कहा तब मैं दौड़कर उसके गले लग गई (७) हित जनों की क्या कहिए, शत्रु भी (उसकी दशा) देखकर दाह (कृपापूर्ण स्नेह) करेगा।

टिप्पणी—(४) बखान < बक्खाण < व्याख्यान = कहना। (५) राव < रावम् = बुलाना, आह्वान करना। पाग < पार्श्व।

[३८७]

गजगांवरि मधुमालति रानी। औ मध[1] तुरग एक मनग्याना।
भागिवन्त अति बर निरमरा। गामवग जगि पूमिव[1] बस्ता
औ मध[1] जन[2] परिजन बहु[3] अहा। अवय दग्य अति सगनौं[4] कहा।
रामर दवग भाउ मोर वाम[1]। तासु माहि[2] पगनहि[3] तुम्ह पाम।
मनति जनति गउ[1] सुद[2] बहु आई। डाउनि पनि[3] मग मूतहि[4] म गाई।
अग्या[1] लीन्हि तो आन्उ[2] उठि पल छाडि[3] बिगाह।
दगु आह गनि तार[1] न्ता[2] जा बिनु अपगाप॥

पाठान्तर—ए में चतुर्थ दूसरी और तीसरी अर्द्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ ए भा गग।
(२) १ ए मूरत कै ना मूरत।
(३) ए भा भंग। २ ए जा। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ ए बाहा। ५ भा गनिहो।

(४) १ ए भी मोर बासू। २ ए मापुस मा बर्राहि। ३ ए मोहि पठौ तुव पासू।

(५) १ ए कहेसि जननी से रा कहेन्हि आज सो। २ ए में यह प्रथम नहीं है, भा गै। ३ ए पुनि मा फुनि। ४ ए भा पीअ।

(६) १ रा ए अम्पा। २ ए दीन्ह ती आयउ भा दीन्हि ती आइउं। ३ ए उठि चलहु उबहु।

(७) १ ए ताहि की भा ताकी बारी। २ ए इवेहु मा हिएँ।

अर्थ—"(१) हे रानी, [यहाँ] राजकुमारी मधुमालती है और उसके साथ [उसके] सुर (स्वर) का जानने वाला एक कुमार है (२) यह [कुमार] अत्यंत भाग्यवान है और निर्मल शुक्ल सौन्दर्य का है जिस प्रकार पूर्णिमा की कला हो। (३) और [इस कुमार के] साथ उसके स्वजन तथा भृत्यादि बहुत-से हैं और अत्यधिक अर्थ-द्रव्य है जिसका मैं क्या वर्णन करूँ? (४) मेरे निवास पर उन्हें दूसरा दिन हुआ है, और आज उन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। (५) उन्होंने कहा है 'तू जननी से जाकर कह, डाइन भी इस जगत् में [अपनी] सुता को नहीं खाती है।

(६) उन्होंने आज्ञा दी तो मैं चलकर आई तू [अब] विलाप छोड़कर उठ कर चल, (७) और जाकर उसकी गति देख को निरपराध थी।

टिप्पणी—(१) सुर<स्वर। (५) डाइनि<डाकिनी।

[२८८]

सुनत बात रानी उठि धाई। पाय चली[१] मालिनि घर आई।
जो पाछ भा[१] बिक्रम राऊ। धाउ उन्ठि मांग दुव[२] पाऊ।
रानहिं[१] दखि कवर अगुसरा[२]। आदर कीन्ह आगें[३] पगु धरा।
पाछे रुप मजरी[१] आई। चह जिम ते[२] काया बगराई।
प्रान गए जस देखिय काया[१]। छाय रहु तसिय पुनि पाया[२]।
रोवत ओहि[१] क नगर सम[२] रोवा देखि उठा चित[३] चाहु।
कवरउ नैन नीर भरि[१] आए रूपमंजरी[२] मोहु॥

पाठान्तर—(१) १ ए पांव चलि।

(२) १ ए पाछे पुनि भा पाछे भै। २ ए रामे पठा कावेउ हुइ, भा धाएउ उठि लाग दुवौ।

(३) १ ए भा रामा। २ ए अगुसारा। ३ ए आदर सौं आगे।

(४) १ ए पाछे भी रूपमजरी चलि। २ ए जिम्ह जिसठे।

(५) १ ए जय जो देखी कया भा गये जस देखी कया। २ ए छाया पी जीउ उदि गया भा छाया रहै तैसे बिनु पया।

(६) १ ओहि। २ भा कै। ३ ए मैं यह प्रथम नहीं है। ४ ए भा चव। ५ ए उ ओ भा उठे चित ए उठा चत (<चित)।

(७) १ ए कुमर नैन गहवरि। २ ए में यहाँ 'के' और है।

अर्थ—(१) [यह] बात सुनते ही रानी उठकर दौड़ पड़ी और पैरों से [ही] चलकर मालिन के घर आ गई (२) और उसके पीछे विक्रम राय [भी] हो लिए दोनों नंगे पाँवों से दौड़े [आए]। (३) राजा को देखकर कुमार अग्रसर हुआ आदर किए जाने पर राजा ने पैर आगे बढ़ाए। (४) उसके पीछे रूपमंजरी आई जिसने [मानो] जीव से [अपनी] काया को अलग कर रक्खा था। (५) जिस प्रकार प्राणों के निकल जाने पर काया डोलती है और [पहले के शरीर की] छाया (मात्र) रह जाती है वैसी ही फिर, [लोगों ने] उसे भी पाया।

(६) उस (रूपमंजरी) के रोते ही सारा नगर रो पड़ा [लोगों के] चित्त में [इस प्रकार] छोह (कृपापूर्ण स्नेह) उठ (उमड़) पड़ा (७) और रूपमंजरी के [इस] छोह से कुमार के भी नेत्रों में आँसू भर आए।

टिप्पणी—(२) नांग < नग्न < नग्न = नंगा। (४) बढ़ना < वृ + ध = बढ़ना पग्गा।

[३८९]

कहा कुँवर सुनि रानहिं[1] माता । गवन[2] करहिं जिउ[3] जहाँ ला जाता ।
पछि एक पनग में पाए[1] । बोलत सबद विचित्र साहाए[2] ।
रही आँखि[1] दिन तीन न बोली । बहुरि कहसि मोहिं[3] दुख मन[4] खोली ।
कहसि[1] माहि मधुमालति नाऊ । बिक्रम पिता महारस ठाऊ[2] ।
मातहि नाउ[1] रूपमंजरी । कठिन हिय अति[2] निरदै भरी ।
और मन[1] दुख आपन कहसि जो माहि मउ[2] रोग ।
सुमत बात दुख[1] मोहि क गउ[2] सुधि बुधि[3] मन सोग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा रानहु। २ ए मा गवन सुनहु मा गवन करहि। ३ ए मे यह शब्द नहीं है।
(२) १ ए म पखरन पाई। २ ए जिन विचित्र सुहाई।
(३) १ ए आँग। २ मा खोलि बानी। ३ ए मे यह शब्द नहीं है ४ ए मई सुन मा दुख मन।
(४) १ ए कहै। २ ए बिक्रम राय पिता जस गाऊ।
(५) १ ए मातहि नाम। २ ए हिरदै। ३ ए मे यह शब्द नहीं है। ४ ए भरी।
(६) १ ए मई। २ ए कहा दुख मन रा कहसि मा मासो।
(७) १ ए मन रा म यह शब्द नहीं है। ए गई। ३ ए मे यह शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा, "हे माता, तू रो मत मैं जो कुछ बातें कहता हूँ उनको श्रवण कर। (२) मैं एक पक्षी पकड़ लाया जो विचित्र और सुहावने शब्द बोल रही थी। (३) वह चुप रही और तीन दिनों तक नहीं बोली और तब उसने [अपना] मन दुख खोल कर कहा। (४) उसने बताया, "मधुमालती मेरा नाम है [मेरे] पिता विक्रम हैं और महारस [मेरा] स्थान है (५) [मेरी] माता का नाम रूपमंजरी है जो अति कठिन हृदय वाली तथा अत्यधिक निर्दय है।

(६) और अपना समस्त दुःख जो उसने मुझसे रोकर कहा (७) तो उसकी दुःख की वार्त्ता सुनकर मेरी सुधि-बुधि खो गई।

टिप्पणी—(१) सवन < भवन = काम। (७) बात < वत्ता < वार्त्ता।

[२९०]

सुनि ओहि[1] दुख उपजी चित[2] दाया[3] । छाड़िउ[4] लोग कुटुंब[5] सम[6] माया[7] ।
कहिउ न अब[1] चित चिंता करहू । करउं सोइ जाहीं[2] उधरहू ।
छाड़ेउ[1] राज पाट सुख[2] काऊ । ओटएउं दया[3] लागि बौसाऊ ।
ओटएउ[1] धरम पंथ चढ़ि सोई । तुम्ह[2] उधार जाहि सउं[3] होई ।
बचन[1] बाधि पिंजर सिर धर[2] । निसरिउ[3] राजपाट परिहर[4] ।
पुनि[1] रानी के आगे[2] पिंजरा[3] धरेउ[4] कुमार ।
देखि डफार[1] छाड़ि[2] कै[3] रोई कोखि[4] अगिनि[5] कै झार[6] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए ओही। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ मा मया। ४ ए छांड़ा। ५ मा परम आपि। ६ ए मा सब। ७ मा धया।
(२) १ ए कहा न कछु मा कहिउं न मन। २ ए जासौं रा जाही।
(३) १ ए छांड़ा रा ओटएउं। २ ए सब। ३ ए उटवा दैय।
(४) १ ए उटवा। २ ए मा तुम। ३ ए ते रा सो, मा सुधि।
(५) १ ए मा बाचा। २ ए धरा। ३ ए निसरि। ४ ए परिहरा।
(६) १ ग ए पुनि। २ ए आवे। ३ मा पिंजर। ४ ए धरा।
(७) १ ए डफोरि, रा में यह शब्द नहीं है। २ मा छाकि ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए को। ४ ए अग्नि मा आगि। ५ रा मे यह शब्द नहीं है। ६ ए झार, रा बिचार।

अर्थ—"(१) उसका दुःख सुनकर चित्त में दया उत्पन्न हुई और मैंने लोग (स्वजन) कुटुम्ब तथा सब की माया छोड़ दी। (२) मैंने कहा, 'अब चित्त में चिंता न करो मैं वह करता हूँ जिससे तुम्हारा उद्धार हो जावे। (३) मैंने राज, सिंहासन तथा सुख-चाव छोड़ा और दया के लिए व्यवसाय (पुरुषार्थ) किया। (४) धर्म-पथ पर चढ़कर मैंने वह किया (करने का निश्चय कर लिया) है, जिससे तुम्हारा उद्धार हो। (५) [इस प्रकार] वचन-बद्ध होकर मैंने सिर पर [उसका] पिंजड़ा रक्खा और राज तथा सिंहासन छोड़ कर निकल पड़ा।"

(६) तदनंतर रानी के आगे कुमार ने पिंजड़ा रख दिया। (७) [उस पिंजड़े को] देखकर रानी अपनी कुक्षि (संतान) की अग्नि (ममता) की ज्वाला से डफार (पुकार) छोड़कर रो पड़ी।

टिप्पणी—(३) बौसाउ < व्यवसाय = पुरुषार्थ। (३) (४) ओटब < आवृ < आ + वृ = करना। (३) (५) पाट < पट्ट = सिंहासन। (७) कोखि < कुक्षि = उदर, पेट पर्याय।

[३९१]

फुनि[4] पिंजरा लाएसि[1] उर धाई । देखि[2] दुहिता[3] गति रही न जाई ।
छिन छिन नरि[4] निरख गति[1] बारा । नैन नीर नहिं रहहिं[2] पनारी ।
सखिन्ह कहा[1] तजु रानि उदासा । करहु हरख मन पूजी आसा ।
भई[1] जो दुख सें[2] दही निरासी । सूर उदै जनु[3] कवल बिगासी ।
दुख कराल तनु तरनि जो[1] भागा । सुक्ख मजूर[2] सिखर चढ़ि[3] गाजा ।
घर घर नगर बधाए[1] आनंद सभ[2] परिवार ।
मधुमालति कर बहुरि जनु[1] भा दोसर[2] औतार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पुनि पिंजरा लाएसि भा फनि पिंजर लाएसि ए लो पिंजरा लावा। २ ए लखी। ३ ए दुहित। ४ ए में यह शब्द नहीं है।
(२) १ भा छिन छिन निरखि निरखि ए राम तन नरे निरखै। २ ए मा रही भा नहिं रहहिं।
(३) १ ए सखी कहा भा सखी कहहिं।
(४) १ ए भयी। २ ए मा कै। ३ ए भा।
(५) १ ए दुख करार तरनि ज तनु ए. दुख जो भनि तनु तजि। २ मा मयूर। ३ ए तजि।
(६) १ ए बधावा। २ ए आनंदित मा आनन्दित सब।
(७) १ ए पुनि मधुमालती लौ कै भा मधुमालति कर बहुरे जनु। २ ए आ- मैंज मा मा दासरें।

अर्थ—(१) तदनंतर [रूपमंजरी ने] पिंजड़े को हृदय से लगा लिया और दुहिता की गति (दशा) देखकर [उससे] रहा तक न गया। (२) वह क्षण प्रति क्षण और गड़ा कर (ध्यान पूर्वक) देखती हुई दुहिता की गति (दशा) का निरीक्षण करती रही और उसके नेत्रों के जल (आँसुओं) की पनारियाँ रुक नहीं रही थीं। (३) सखियों ने कहा, "रानी उदास भाव को छोड़ो हर्ष करो क्योंकि मन की आशा पूर्ण हुई है।" (४) [क्रमशः] वह जो दुख से दग्ध और निराश थी, [इस प्रकार हर्षित हुई] मानो सूर्य के उदय से कमलिनी विकसित हुई हो। (५) उसके शरीर में दुख [रूपी ग्रीष्म] का जो कराल धूप था वह उसे छोड़ कर भाग गया और सुख [की वर्षा] का [सूचक] मयूर [उसके शरीर रूपी वृक्ष के] शिखरों पर चढ़ कर गर्जन कर उठा।

(६) नगर में घर-घर बधावे होने लगे और समस्त परिवारों में आनंद हुआ (७) मानो मधुमालती का पुनः दूसरा अवतार (जन्म) हुआ हो।

टिप्पणी—(२) नेर<निभार [दे]=आँख गड़ाकर देखना। पनारी<प्रणाली। (३) पूज<पूजइ<पूर्य=पूरा होना। (५) मजूर<मयूर=मोर। (६) बधाए<बधावन<वर्धापन=अभ्युदय अथवा हर्ष-सूचक वाद्य।

[३९२]

घर घर पुर अस बाह[1] जनाई । गइ[2] जो[3] हुति मधुमालति पाई ।
हरसवंत सब[1] नगर उछाहा । पर आपन[2] जहवाँ लहि[3] आहा ।
नगर जो रहा सब दुख बौरा[1] । जस बसंत नौ रितु बन मौरा[2] ।
रानी कुँवर पाय[1] सिर लावै[2] । चरन रेनु लै[3] सीस चढ़ावै[4] ।
कहै कुँवर[1] पुरुषारथ तोरे । निसरत प्रान[2] रहा घट मोरे ।
बहुरि कुँवर कहँ[1] रानी सहित सब समुदाइ ।
तजि मालिनि कै बारी[1] अपने गिह[2] लै आइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए घुर घुर बात। २ ए भई। ३ ए में यह शब्द नहीं है।
(२) १ ए सब। २ रा अपना। ३ ए जहाँ लगु।
(३) १ ए सबै दुख बौरा। २ ए जस बसंत बिहावन मौरा।
(४) १ ए पाँव। २ मा लावा। ३ ए को। ४ मा चढ़ावा।
(५) १ ए पूत। २ ए जीव।
(६) १ ए के। २ ए सबै।
(७) १ ए की मा कै। २ ए मा बारी। ३ ए राजा मन्द्र मा राय गिरिह।

अर्थ—(१) पुर में घर-घर ऐसी सूचना ज्ञात हुई (मिली) कि जो मधुमालती गई हुई थी वह प्राप्त हो गई। (२) समस्त नगर में जहाँ तक पराए और अपने (आत्मीय) थे वे हर्षित थे और उनमें उत्साह [हो रहा] था। (३) समस्त नगर, जो [किसी समय] दुःख से पागल था [ऐसा सुखी हुआ] जैसे वसंत में नवऋतु के आगमन से वन मुकुलित हो उठता है। (४) रानी कुमार के पैरों से [अपने] सिर को लगाती थी और उसके चरणों की रेणु लेकर सिर चढ़ाती थी। (५) वह कहती थी "हे कुमार तेरे पुरुषार्थ से [मेरे] निकलते हुए प्राण मेरे शरीर में रह गए।"

(६) तदनंतर रानी कुमार को [उसके] समस्त समुदाय के साथ (७) मालिन का घर छोड़कर अपने घर लाई।

टिप्पणी—(२) उछाह < उत्साह = उत्सव। (३) बाउर < बातुल < बातुल = पागल। मौर < मउल < मुकुल्य = मुकुलित होना। (७) बारी < वाटिका।

[३९३]

हरखित सब[1] कुटुम परिवारा । जानहु आज औतरी बारा ।
बसि चदन सभ[1] मंदिल[2] लिपावा । रास पटोर सबै लहु लावा[3] ।
आनि अनूप बसावन[1] डासे । सुरंग सुहाग सुबासित[2] बासे ।
कुँवर पाट बसारेउ[1] आनी । धारे चंवर ठाढ़ सिर रानी[2] ।
पुनि[1] मधुमालति राजदुलारी[2] । रानी आनि आगें[3] बसारी ।

रूपमंजरी[1] पढ़ि क[2] छिरका[3] मधुमालति मुख नीर ।
पहिलइ[1] रूप[2] भई बर कामिनि[3] परिहरि पंखि[4] सरीर ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सबै।

(२) १ मा सब ए में यह शब्द नहीं है। २ मा मंदिर। ३ ए में नहीं छपाया मा ताहि पर भावा।

(३) १ ए डमासन। २ ए माहाव मुक्तामिव रा मुक्ताम मोहावनि।

(४) १ ए बैसावा। २ ए अंचल समाई देखि ओ रानी (तुल० अगले छंद की चतुर्थ अर्धाली) मा बारे चवर सीस पर रानी।

(५) १ रा ए पुनि। २ ए राजकुमारी। ३ आगू मा आगे।

(६) १ मा यहाँ 'कनि' और है। २ ए मा में 'कै' नहीं है। ३ मा छिरकेउ।

(७) १ ए पहिल। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए मो मधुमालती। ४ रा पंछि।

अर्थ—(१) सभी कुटुम्ब और परिवार [इस प्रकार] हर्षित था मानो आज ही बालिका (मधुमालती) अवतरित हुई हो। (२) चंदन घिस कर समस्त राजभवन लिपाया गया, और समस्त रक्त (रंगीन) रेशमी वस्त्र वहाँ (राजभवन में) लगाए गए। (३) लाकर अनुपम सिंहासन बिछाए गए जो रंगीन सुंदर तथा मुक्ताओं से (बनाए हुए) शोभित थे। (४) कुमार को पाट (सिंहासन) पर लाकर बिठाया गया और [उसको झलने के लिए] चामर लिए रानी उसके सिर [के पीछे] खड़ी हुई। (५) तदनंतर राजकुमारी मधुमालती को लाकर रानी ने [उसके] सामने बिठाया।

(६) रूपमंजरी (रानी) ने [मंत्र] पढ़कर मधुमालती के मुख पर जो जल छिड़का, (७) तो पक्षी का शरीर त्याग कर वह श्रेष्ठ कामिनी पहिले के रूप में हो (आ) गई।

टिप्पणी—(१) बारा < बालक। (२) पटोर < पट्टोल < पट्ट + कूल = रेशमी वस्त्र। (४) पाट < पट्ट = सिंहासन। चवर < चामर।

[३९४]

जब उघरी[1] पंखि मउ[2] बारी । स दरपन मुख[3] बदन निहारी ।
पहिल रूप आपन जब[1] पावा[2] । हाथ जोर बिधि कहँ[3] सिर नावा[4] ।
पंखि स गनिन्ह सुगिन्ह अन्हवारी[1] । बसन[2] अनूप आनि पहिरारी[3] ।
टो[1] अभरन पहिरावा आनी । अंग स समाइ[2] दरसि क[3] रानी ।
पगो परी मारनि[1] सिर बारी[2] । ओ गिन गिन गहि भरम मार ।
पुनि[1] राजा औ[2] रानी दुहु मिलि[3] कीन्ह बिचार ।
नागरि[1] कुँवर[2] क माँगियउ[3] राजकुमारि[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए उबरे (<उबरी फारसी लिपि)। २ ए पंखी सौं रा पंखि सौं मा पंखि सों। ३ ए है।

(२) १ ए भौ। २ मा पाएउ। ३ ए हरि के मा हरि कहँ। ४ मा नाएउ।

(३) १ ए तब भी सखिन्ह तुरत नहवाई रा पुनि लै सखिन तुरित अन्हवाए। २ ए बस्तर। ३ ए पहिराई।

(४) १ ए तब रा में यह छन्द नहीं है। २ आ मा पहिराएउ। ३ रा समाइ। ४ ए जो मा तेहि।

(५) १ ए रा भरी। २ ए पानी। ३ ए बारी। ४ ए तथा रा में यह छन्द नहीं है (संभवतः आदर्श में प्रथम लिपि के बाद २ का अंक बना हुआ था जो प्रतिलिपि करने में छूट गया)। ५ ए सारी।

(६) १ ए रा पुनि। २ ए का। ३ ए बुझ मत मा बूझ मिलि सब मत।

(७) १ रा कुंवरहि। २ रा दीजिय ए दीजिए मा अरपउ (<आर्पिअउ)। ३ मा राजकुंवरि बरनारि।

अर्थ—(१) जब उस बाला ने पक्षी [-शरीर] से उद्धार पाया तब दर्पण लेकर [उसमें अपना] मुख देखा। (२) जब उसने अपना प्रथम रूप प्राप्त कर लिया हाथ जोड़कर उसने विधाता को सिर झुकाया। (३) फिर (तदनंतर) सखियों ने उसे ले जाकर तुरंत स्नान कराया और अनुपम वस्त्र लाकर [उसे] पहिनाए। (४) तदनंतर उन्होंने आभरण लाकर [उसे] पहिनाए; [अब] उसे देखकर रानी [हर्ष के] शरीर में समा नहीं रही थी। (५) वह घड़ी-घड़ी (थोड़ी-थोड़ी देर पर) उसके सिर पर आरती उतारती थी और क्षण-क्षण उसको पकड़कर आलिंगन करती थी।

(६) फिर (तदनंतर) राजा और रानी—दोनों—ने मिलकर विचार किया (७) "ताराचंद कुमार को राजकुमारी अर्पित कीजिए।

टिप्पणी—(१) पंखि<पक्षिन्। बारा<बाला। निहार<निहारु<निभाल<नि+भालय्=देखना निरीक्षण करना। (३) तुरित<त्वरित। (४) अभरन<आभरण। समा<सम्+आप्=व्याप्त होना। (५) खिन<क्षण। (७) अरप<अप्प<अर्पय=अर्पण करना भेंट करना।

[३९५]

तब रानी सब कुटुंब हकारा[1]। एकमत भए सब करहिं बिचारा[2]।
कहा समझि जिय बयस[1] जो होई। पिता गिरिह भल कहइ[2] न कोई।
दुहिता जौ संजोग होइ[1] आव। मता[2] पिता घर सोभ[3] न पावै।
माथे बहुत कुए पिय के[1] नास[2]। पिय घर भली[3] कि जम के बास[4]।
आठ बरिस महि दुहिता बारी। भवए रहै पिता कहँ गारी।
सम[1] गुन कुँवर सपूरन औ कुलीन कुल केर।
एहि सौं[1] करिय मगाई तुरित न लाइय[2] बेर॥

पाठान्तर—(१) १ मा तब रानी सब कुटुंब हकारा ए पुनि राजा सब कुटुंब हकारे। २ ए एक मत सब मते बिचारे।
(२) १ ए मा सबन्ह की बैन। २ ए बोल।
(३) १ ए भ। २ ए मात। ३ ए सोभा।
(४) १ ए मार्ग बहु की कुल के मा मम बहुत कुल धिय कै। २ ना नाग। ३ ए. पर पी मसीन। ३ मा कै फर्मै।
(६) १ ए सब।
(७) १ ए त। २ ए तुरत न साई।

अर्थ—(१) तब रानी ने समस्त कुटुंब (कुटुंबियों) को बुलाया। वे सब एकमत होकर विचार करने लगे। (२) सब ने कहा "जब दुहिता की अवस्था हो जाती है तो पिता के घर पर [उसका रहना] कोई भला नहीं कहता है। (३) जब दुहिता [वर से] संयोग [के योग्य] हो जाती है माता-पिता के घर पर वह शोभा नहीं पाती है। (४) बहुतेरे कुल दुहिता के नष्ट होने पर नष्ट हो गए दुहिता का [अपने पति के] घर रहना भला है और या तो उसका यम के यहाँ निवास (मरना)। (५) आठ वर्षों तक दुहिता बालिका रहती है और [उसके अनंतर यदि] वह नव वर्ष में [पिता के घर पर] रहती है, तो पिता को गाली होती (पड़ती) है।
(६) [ताराचंद] समस्त गुणों से संपूर्ण है और कुलीन कुल का है; (७) इससे तुरंत उसकी सगाई कर दीजिए, देरी न लगाइए।"

टिप्पणी—(२) (४) धिय < दुहितृ। (५) बारी < बालिका। (५) गारी < गालि = गाली। (७) बेर < बेला = समय देरी।

[३९६]

कुँवर निकट तब आई रानी। कहसि बात जो चित हुति ठानी।
कहसि कुँवर मोहि जिय अति भारी। तुम्ह आको मधुमालति बारी।
यह सुनि कुँवर कहा सुनु माता। माता मोहि तहँ बीच बिधाता।
बार बहिनि मोरि दुहिता तोरी। जस तुइ जननि ओहि कै तसि मोरा।
सुपुरुष अपना प्रान मय जाई। जान जाउ औ रहउ गराई।
जौ न बचा कीन्ह तहि मरौं अस कीन्ह मोहि मोद।
जौ तहि मिलै मनोहर तौ मोहि जिय सुख होइ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जा बात मा कहराई। २ ए बरा।
(२) १ ए मोहि की कुम की। २ ए कुर।
(३) १ ए बेद। २ मा. बचा। ३ ए मोरि तोरि रा मात पहि।
(४) १ ए बाबा। २ ए मे यह शब्द नहीं है मा है। ३ ए जननी मोहि कै मा मोहि न कहै।

(५) १ ए मा संग। २ ए बात जन्म तो मा बात बाद जी। ३ मा न।

(६) १ ए जी मैं बाचा किय। २ ए तोहि से। ३ ए, मोहि प्रतिपारै मा मोहि पतिपारै।

(७) १ मा जैहि मिलै एहि कुंवर। २ ए तब हमके रा तो मोहि जिय भा तो मम जियं।

अर्थ—(१) तब रानी कुमार के निकट आई और उसने यह बात कही जो वह चित्त में ठान (स्थिर कर) चुकी थी। (२) उसने कहा "हे कुमार, मेरे जी में ऐसी लालसा है कि तुमको मैं बालिका मधुमालती को अर्पित करूँ।" (३) यह सुनकर कुमार ने कहा "हे माता सुनो। इसके और मेरे बीच विधाता को मध्यस्थ रखकर वचन-बद्धता [हो चुकी] है। (४) तुम्हारी दुहिता मेरी वचन की भगिनी है और [उसके अनुसार] जैसे तू उसकी जननी है, वैसे ही मेरी भी है। (५) भले पुरुषों का वचन उनके प्राणों के साथ जाता है [भले ही प्राण] जाएँ तो जाएँ और रहें तो रहें।

(६) जब मैंने इससे वचन कर लिया, तो अब इसको मुझे निभाना ही है (७) यदि इसे मनोहर मिल जावे तो मुझे जी में सुख हो।"

टिप्पणी—(२) आफ < अप्प < अर्पय् = अर्पण करना भेंट करना। बारी < बालिका।

[३९७]

मांता सो[१] किछ करहि[२] उपचारा। मिल महुरि एहि प्रान[३] पियारा।
वसि एत दुख[१] जहि म[२] ठाइ। बूडसि बिकट[३] विसम भर[३] ठाइँ।
जगत फिरी फाग[१] मदमाती। जो तहि मिलै सो मोहि जिय[४] साँती।
मग्यां कहू[१] सम परिजन राई। राजकुंवर कह हरहिं जाई[४]।
पुरुसनि[१] सुना[२] कथा असि आही[३]। कोजत मिल चाहु कोइ आही[४]।
मांता सो किछु ओटमहु कुंवर मिल जहि भांति।
इह दुख तपत सिराइ हिय हम हिय होस सांति॥

पाठान्तर—(१) १ ए सो। २ ए कर। ३ ए पेम।

(२) १ ए, देखा दुख अति। २ ए जेहि की मा जहि कें। ३ ए बूड़ बहुत। ३ ए बिकट बन।

(३) १ ए जाकी। २ ए, २ ए बोइ जो। ३ ए म यह पद्य नहीं है। ४ ए मोरे मन रा मांहि जिय।

(४) १ रा मग्या कर ए मम्या कै। २ ए, रा सब। ३ ए राये। ४ ए ढूँढन जाये।

(५) १ ए पुरुषन्ह ते मा पुरुषन सुनें। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए बचन या आहि मा बचन अस आहि। ४ ए जो चित मिलैं। ५ ए चाहि जो चाहे मा चाहि कोइ चाहे।

(६) १ ए सो। २ ए उठबहु।

(७) १ ए कुमारै। २ ए जब। मा पुनि। ३ मा हो जिय।

अर्थ—"(१) हे माता यह (ऐसा) कुछ उपचार (उपाय) करो कि इसे पुनः [इसका वह] प्राण-प्रिय मिल जाए। (२) जिसके लिए इतना दुख देख (सहन) कर इसने भारी विकट और विषम स्थानों को ढूँढा (३) जिसके मद (प्रेम) में मत्त होकर यह संसार में फिरती रही, यदि यह उससे मिल सके तो मुझे भी मैं शांति हो। (४) तुम समस्त परिजनों (पुरुषादि) को बुला कर आज्ञा दो कि वे जाकर राजकुमार को ढूँढें। (५) मैंने [पूर्व] पुरुषों से ऐसा वचन सुना था कि कोई किसी को चाहता है वह खोजते-खोजते मिल जाता है।

(६) हे माता, यह (ऐसा) कुछ करो कि जिस प्रकार कुमार मिल जाए (७) इन दोनों (इसका और कुमार का) संतप्त हृदय शीतल होगा तब हमारे हृदय को शांति होगी।

टिप्पणी—(२) एत < एतत्र < इयत् = इतना। (४) राव < रावय् = बुलाना आह्वान करना। (६) आदर < आवृह् < आ + वृ = करना। (७) सिर < सीयल < शीतल।

[३९८]

सागवद उतर मुनि गनौं[१]। आदि बान मम कहसि बखानी।
जहि दिन चित बिसराउ क[१] बारी। सुन दुहु दहुँ दिसि दम दारा।
तहि छिन हुत[१] हम दुखी परानी। दसो दिसा आपनि जिय[३] जाना।
रिसिन कहुउ[१] बिछु[२] मनहि ठवांना[३]। बुधि गाए पर भाग[४] गियाना[५]।
दसि न गई मोहि रिसि[१] बारी। मोहि र गिरिह तहि कहाँ अडारी।

बासर ठाडि[१] निहार[२] लाए[३] मन अगाम।
पबरि उन्हारि ममस्त[१] निसि रोव[२] परी निरास[३]॥

पाठान्तर—(१) १ ए नारी। २ ए मन लगि करा बिचारी मा आदि बान मव कहसि बखानी।

(२) १ ए बिसार न मा बिसराउ रि। २ ए सुह न भोग दुखी कन मारी मा हुते दुखी रा दिसि रुमारी।

(३) १ ए ता दिन तें मा तेहि दिन त। २ ए दुखी। ३ ए आपन जिउ।

(४) १ ए रिसन बीरह मा रिसिन रिपुउ मा रिसाह कहेउ। २ ए यह शब्द नहीं है। ३ ए ठौंगाना मा ठेवानो। ४ ए बुधि गोवा परि भी। ५ मा गियानो।

(५) १ ए रैनि न मा जो दुख भा भारी। २ रा ओह र गिरिह कौन कहाँ बझारी ए बाद घर भी देह कहाँ अडारी मा वह गृह भई कहाँ पद डारी।

(६) १ ए रैनि। २ ए मिहारि भा निहारी। ३ ए जाइस।
(७) १ रा स्याम। २ भा रोवत। ३ भा बिरात।

अर्थ—(१) ताराचंद का उत्तर सुनकर रानी ने व्याख्यापूर्वक प्रारंभ की वार्ता कही (२) [उसने कहा] जिस दिन चित्त विश्राम [नगर] की वाटिका में दोनों थे और वसो विसामों में वह वासियाँ थीं (३) उसी दिन से हम दोनों प्राणियों ने वसो विश्रामों को जी में अपना जान लिया (यह जान लिया कि मनोहर के लिए मधुमालती को और उसके कारण हम दोनों को इसी विसामों में भटकना होगा)। (४) रोष वश ही मैंने [कुछ] कहा, [क्योंकि] मन तमोभिभूत था, [यद्यपि] बुद्धि खोने पर [अब] ज्ञात हुआ है। (५) और बालिका को देखकर मेरा रोष नहीं गया, [इसलिए] उसे घर पर और इसे (मधुमालती को) यहाँ डाल दिया।

(६) यह [तब से] दिन भर खड़ी-खड़ी आकाश की ओर नैनों को लगाए हुए देखती रहती थी (७) और [मनोहर की] उन्हारि का स्मरण कर सारी रात निराश पड़ी हुई रोती रहती थी।"

टिप्पणी—(१) बखान < बक्खाण < व्याख्यानम् = व्याख्यापूर्वक कहना। (२) बिसराउं < विश्राम। बारी < वाटिका। (४) तम < तम् = तमोभिभूत होना। बारी < बालिका। (७) उन्हारि < अनुहार < अनुकार = अनुकृति आकृति।

[३९९]

सो[१] दुख कुंवर परा[२] मोहि[३] आई। कहौं लौं[४] सुनि पाथर बिहराई[५]।
अपनें करत[१] कुंवर दुख पाइउ[२]। अपक सीस दुख ठाकर लाइउ[३]।
म सो किछु कीन्हा निरमोही[१]। जो न कर एहि कलि[२] महु कोई[३]।
हाथ हुतें जो[१] रतन अडाइय[२]। बूडिय[३] बहुत[४] कहाँ सो पाइय[५]।
अब पेमा पह काहु पठावौं[१]। ओहि कै[२] खोज कसहु मकु [३]पावौं[४]।
ताराचंद कुंवर सुनि[१] बोला तुरित[२] पठावहु काहु[३]।
मकु वह[१] बिरह ममुता मिलि आ हो[२] निरबाहु॥

पाठान्तर—(१) १ ए सब। २ भा परेउ। ३ ए जो। ४ भा तेहि। ५ ए बेगराई।
(२) २ ए भा अपनें करम। २ ए पावा। ३ रा अस दुख ठाकर बाइउ ए बानु बिधि टक्कर खाया भा सीस दुख ठाकर बाइउ।
(३) १ ए मो सौं कछु कीन्हा निरमाई भा मैं कुंवर अस कीन्हा निरमोही। २ ए जो म करै इमहु कलि। ३ भा को लोई, ए मो काई।
(४) १ भा जौं। २ ए भंडाई। ३ ए भा बूडत। ४ भा बहुरि। ५ ए पाई।
(५) १ रा काहि पठाइम। २ ए ओहि कौ भा ओहि कै। ३ भा मुकत कहीं। ४ रा पाइब।
(६) १ ए जा। २ ए तुरत। ३ ए काहि।
(७) १ ए ओह। २ रा मिलें होइ।

अर्थ—"(१) वह दुःख (उसका दुःखमय परिणाम) मुझे (मेरे सामने) [इस प्रकार] आया कि [यदि] कहूँ तो पत्थर भी फूट (विदीर्ण हो) जाए। (२) हे कुमार मैंने अपने ही करतल से दुःख पाया, और सिर पर मैंने अचानक दुःख की टक्कर (चोट) खाई। (३) सुख निष्ठुर ने वह (ऐसा) कुछ किया जो इस कलि में कोई नहीं करता है। (४) यदि रत्न को हाथ से डाल (गिरा) दीजिए, तो बहुतेरा ढूँढिए, उसे कहाँ प्राप्त कर सकते हैं? (५) अब पेमा के पास किसी को भेजूँ, तो संभव है उस (कुमार) की खोज कहीं पा जाऊँ।

(६) यह सुनकर ताराचंद बोला, "तुरंत ही किसी को भेजो (७) संभव है कि वह विरह में भस्मीभूत [प्रेमी] कहीं मिल जाये और [मधुमालती के प्रेम का] निर्वाह हो जाए।"

टिप्पणी—(१) पाथर < प्रस्तर = पत्थर। बिहर < विहर ~ वि + प = टूटना फटना। (६) तुरित < त्वरित। (७) भभूति < विभूति = भस्म।

[४००]

तब रानी बारी हकराए । सुबुधि ताकि जन[1] दुइक[2] पठाए[3] ।
समाचार जत इहाँ क रहे[1] । त सम लिखि कागर पर कहे[2] ।
पछी भई जोंमि[1] बिधि धारा । फिरी मनोहर लगि मधमारा[2] ।
ओ[1] जिमि ताराचंद पमाई । औ मध कुंवर[2] मधुरस खाई ।
तहि पाछें[1] बहु कुंवर हिआरी[2] । मिली भाँति जहि[3] रामकुमारी ।
जो[1] किछ बात इहाँ क[2] आही सो सब[3] लिखा[4] विचारि ।
औ पमा बहु[1] द महिदानी सुरिन पठाए[2] धारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा सुबुधि ताक मन ए सुबुधी ताकी जना। २ ए म पर पाठ नहीं है, मा दुइ। ३ ए दुराय (< दोनगये फारसी लिपि) मा बहुराए।
(२) १ ए मा जत (जत—मा) इहां क रहा (आहा—मा)। २ ए सो सब लिखि कागद पर कहा मा सो सब लिखि कागर पर कहा।
(३) १ ए भी जोंमी मा भई जोंमि। २ ए ए मसारा।
(४) १ ए ओ। २ ए मध मध मा मध लागि।
(५) १ ए पाछे। २ ए में यह पाठ नहीं है। ३ ए की बारी मा की आगी। ४ ए मिली तो म्याहो मा मिली न भई।
(६) १ ए जो। २ ए की। ३ ए मा सब ए म पर [illegible]।
४ ए मा लिखा।
(७) १ ए बो। २ ए सुरन पठावा।

अर्थ—(१) तब रानी ने बारियों को बुलाया, और उनमें से दो-एक को सुबुद्धि देखकर [पेमा के पास] भेजा (२) यहाँ के जितने समाचार थे उन्हें लिखकर [उसने] कागज पर कहा : (३) जिस प्रकार बाला (मधुमालती) पक्षी हुई और मनोहर के लिए संसार में [उस मार्ग ?] फिरी, (४) और [जिस प्रकार] उसे ताराचंद ने [पाश में] फँसाया और [जिस प्रकार] कुमार

के साथ यह महारस [सागर] आई (५) और उसके अनंतर कुमार (ताराचंद) की वह हृदयाकुलता लिखी जिस प्रकार (जिसके कारण) वह राजकुमारी मिली।

(६) जो कुछ वार्ता वहाँ की थी, वह सब उसने विचार कर लिखी, (७) और पेमां को [अपना] साभिज्ञान (चिह्न) दे (भेज) कर बारियों को उसने तुरंत रवाना किया।

टिप्पणी—(२) बेत < वेतिम < यावत् = जितने। कागर < कागज [फ़ा]। (३) बारा < बासा। (४) बमा < बगमा < बग्म् = बाँधना पँवाना। (५) हियारी < हृदयाकुलता = सौहार्द। (६) बात < बत्ता < वार्ता। (७) सहिदानी < साभिज्ञान (?) = चिह्न।

[४०१]

पुनि¹ मधुमालति मांतु क² चोरी । बारिन्ह सउँ³ बिनवा³ कर जोरी ।
पेमां सउँ¹ अस कहसि² बुझाई । यह³ मोरे हियँ⁴ आनि तोरि लाई ।
फिरिउँ¹ जगत सखि म पिय लागी । प न बुतानी हियँ क² आगी ।
मकु कतहूँ तुव खोज कुमारी । मिल तौ मरौ जोगी⁴ मोहि मारी¹ ।
पाछिल दुख आपन सम¹ कहा । अउ किछु¹ कुँवर बिरह दुत³ सहा ।
पछि¹ रूप में² बरिस दिन फिरिउँ कुँवर के³ आरि ।
ते सम तोहि सउँ¹ एक एक सुनि सखि² कहौं उपारि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ ए माता की, मा मता कै। ३ ए मा बारिन्ह सौं बिनवै रा बारिन्ह सो बिनवा।
(२) १ रा ए सो। २ ए कहा मा कहहि। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ रा बीय ए हिये।
(३) १ ए फिरी। २ ए मा मे यह शब्द नहीं है। ३ ए बुझानी हीवर, रा बुतानी हिय कै।
(४) १ ए तो मिलै जोम (<जोगि फारसी लिपि) मनवारी मा तेहि मेरउ जोगा (<जोगी नागरी बाचर्ह) मोहि मारी।
(५) १ ए जो मा सब। २ ए अउ दुख। ३ ए ते।
(६) १ ए पछी। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए फिरी कुंवर की।
(७) १ मा ते सब तेहि सेउ ए सो मन तो सौं रा ते सम तोहि सो। २ ए हे सखी।

अर्थ—(१) तदनंतर मधुमालती ने माता की चोरी (माता को बिना बताए) बारियों से हाथ जोड़ कर [इस प्रकार] निवेदन किया (२) "पेमां से इस प्रकार समझा कर कहना 'मेरे हृदय में यह (इस प्रकार की) आग तेरी लगाई हुई है। (३) हे सखी, मैं प्रिय के लिए जगत् भर में फिरी, किन्तु हृदय की (यह) आग [उसके न मिलने से] बुझी नहीं। (४) संभव है ऐ कुमारी तेरी खोज में (तेरे खोजने पर) वह मिल जावे तो ऐ बालिका तू बस योगी को मुझे मिला। (५) [इसके अनंतर] उसने अपना वह सब पिछला दुःख [उससे कहने के लिए] कहा, जितना कुछ उसने कुमार के विरह में सहन किया था।

(६) [उसने कहा] पक्षी के रूप में [जो] मैं कुमार को आशा में वर्ष दिन वि[ताती]
रही (७) [अब] उन सब (उसके दुखों) को एक-एक करके तुमसे कहती हूँ; ए स[खी]
सुन।" [

टिप्पणी—(४) मेरव < मलब < मलम् = मिलाना। (५) जव < जतिम < यावद् = जितन[ा]
(७) उघार < उद्घाट < उद् + घाटय् = खोलना।

[४०२]

सावन मास घटा घहरानी। सवरि पेम[1] घनु ओनागउ[3] पानी।
अगम दुसग दिन आहि न गाड़[1]। लोयन गाग जौन होइ[2] बाउ।
रकत आंसु धर पर जो टूटी। मावन भए त[1] बीर बहूटी।
सुज रवन औ पेम उछाहा[1]। तिन्ह धनि कहँ[1] जग जीवन लाहा।
म पिय रूप फिरिउ मम[1] बारी। नैन रतन बिरह[1] तन जारी।
सावन घन तरग जस दामिनि छपा[1] अनत।
कठिन प्रान जा[1] घन रहहिं[2] ए[3] सखि बिछुर कत ॥

पाठान्तर—(१) १ ए घटा जो घन घहरानी मा घटा घहरि घहरानी। २ ए मेह। ३ ए ओंगवा।
(२) १ ए जान न गाड़ (< गाड़ फारसी लिपि)। २ ए गगन जमुन भै रा गाग जौन होइ।
(३) १ ए मा सावन है भये।
(४) १ ऐ रोम जे पेम उमारा। २ ए घन तारे।
(५) १ ए फिरी मन मा फिरिउ बहु। २ ए नैन रतन तन बिरहै।
(६) १ ए छपा।
(७) १ मा जे। २ ए रहत। ३ ए है मा. के यह शब्द नहीं है। ४ मा. बिछोह कत।

अर्थ—"(१) सावन मास में घटा [आकाश में] घहराई तो [प्रिय के] प्रेम को स्मरण कर पानी [मेरी] आँखों में उमगित हो आया। (२) दुख के गाढ़े (अतिशय) अगम्य दिन (व्यतीत हो) नहीं रहे थे और मेरे लोचन गंगा-यमुना हो कर बढ़ (उमड़) चले। (३) [नेत्रों से] रक्त के अश्रु जो धरा पर टूट कर गिरे वे सावन को बीर बहूटी बन गए। (४) उसके रमण (पति) शय्या में होते हैं और जिन्हें प्रेम का उछाह (उत्साह युक्त आनंद) [मिलता] है उन स्त्रियों को जगत् में [इस मास में] जीवन का लाभ [प्राप्त] होता है। (५) [मे]रे मैं तो योवन के रूप में समस्त वाटिकाओं में फिरती रही; मेरे नयनों में रत्न का [रंग (र के अश्रु थे)] और मेरा शरीर विरह से जला हुआ था। (६) सावन में [बादलों की] घटा तरंगायित जल दामिनी और अनंत (न दिखने वाली) [ऐसे दुखदायी होते हैं] (७) कि हे सखी वे प्राण कठोर हैं जो [प्रिय] (प्रिय) के बिछुड़ने पर [शरीर में बने] रहते हैं।"

(१) ओनव < अवनम् = नीचे की ओर आना, झुकना। (२) गांग-जौन < गंगा-यमुना। (४) रवन < रमण = प्रिय। उछाह < उच्छाह < उत्साह। (५) बारी < वाटिका। (६) छपा < क्षपा = रात्रि। (७) कंत < कान्त = प्रिय पति।

[४०३]

भादों भरम भयावनि[1] राती। बिरह दवा मोहिं[2] सेज सँघाती।
सिंघ मघा[1] पावस[2] झकझोरी[3]। प्रेम सलिल दुहुँ लोयन ओरी[4]।
आठौं भाउ मदन कै जागे[1]। सातौं सरग ओनइ भुइँ[2] लागे[3]।
चहुँ दिसि घुमरि घोर घहराने[1]। मैं जिउ प्रान गौन किए[2] जाने।
भादों निसि जेहि[1] पीउ न पासा। सखी कौन तेहि जीवन आसा।

मैं आरन[1] बन एकसरि बिरह अधिक जिय पीर।
निलज प्रान अति पापी तजत जो नहिं सरीर॥

पाठान्तर—(१) १ ए भयावन। २ रा ए दौन मोंहि (मोहि—रा)।
(२) १ रा माघ सिंघा। २ ए वारि सों झकझोरी। ३ ए दुइ लायेन ओरी।
(३) १ ए जागे २ ए सातौ सर्ग ओनै कै भा सातौ सरग आमि भुइ। ३ ए लाग।
(४) १ भा घहराना। २ ए गौन कै भा गौन किय।
(५) १ ए जेहि भा मोंहि।
(६) १ ए आरन। २ ए तन भा जिउ।

अर्थ— (१) भाद्रपद मास की भ्रम (भय) से भयावनी बनी हुई रातों में मेरी शय्या में विरह की दावाग्नि ही मेरे संग थी। (२) सिंह और मघा नक्षत्र पावस में मुझे झकझोर रहे थे। [जिस प्रकार वे वृक्षादि को झकझोर रहे थे], और मेरे नेत्रों से प्रेम का जल ओरी (ओलती) [बनकर टपक रहा] था। (३) मदन (काम) आठों [सात्त्विक] भाव [उत्पन्न] कर जाग रहा था और सातों आकाश अवनमित हो कर भूमि से लग (मिल) रहे थे। (४) [ऐसे समय में बादलों के] चारों ओर घुमड़कर घोर (भयानक रूप में) घहराने से मैंने भली भाँति जान लिया कि मेरे प्राण गमन कर चुके। (५) भाद्रपद में हे सखी जिसका प्रिय पास न हो उसके जीवन की क्या (कौन सी) आशा (की जाए)?

(६) मैं अरण्यों-वनों में अकेली थी और मेरे जी में विरह की पीड़ा अधिक थी; (७) फिर भी मेरे पापी प्राण अत्यंत निर्लज्ज थे जो (मेरे) शरीर को नहीं छोड़ रहे थे।"

टिप्पणी—(१) दवा < दव = दावाग्नि। सेज < शय्या। (२) पावस < प्रावृष < वर्षा ऋतु। (२) लोयन < लोचन। (३) अष्ट सात्त्विक भाव स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वर-विकार, वेपथु, वर्ण-विकार, अश्रु, प्रलय। सरग < स्वर्ग = आकाश। (४) घुमर < घुम्म < घूर्ण = घूमना, चक्कादार फिरना। (६) आरन < अरण्य।

[४०४]

मोरंग[१] परब कुवार जनावा। सियर मन्द समीर[२] सुनावा।
रनि सरद[१] ससि सीउ[२] अगासा[३]। मन मह परब मोहि[४] बनवासा।
निसुही निसि सारस[१] सर[२] बोलहि[३]। सुरग आइ ससमार ससोलह[४]।
दरसउ सज[१] घन जग[२] पानी। भए ठाउ अम्हर अतिवानी[३]।
औ कुंवार रितु परब उछाहा[१]। सखी जगत माह रितु लाहा।
सखी परब माहि[१] बिरह दुख बकत न[२] आव सुकाव।
औ तहि[१] पर लोचन चूवहि[२] लिखौं मा कउ करि[३] दुखाव॥

पाठान्तर—(१) १ ए मोरिगु। २ ए मा सबै मदमा सुमति (मदम समार—मा)।
(२) १ मा रितु सरद ए रितु सरद। २ ए सीत मा सियर। ३ ए अकासा। ४ ए मन को मा मन मह। ४ ए मोहि।
(३) १ ए सार। २ ए मे मह शब्द नहीं है। ३ ए ससाले (सुख परवती बरष का सुख)। ४ ए ससार ससाल।
(४) १ ए दरसु अगसित। २ ए जो। ३ ए भी अपार सरगी अतिवानी ए भए ठाउ जल-थल अतिबानी।
(५) १ ए औ बारह मास परब उजाहा मा और सकर परब परब उजाहा।
(६) १ ए सखी है मट मा। २ ए बकति।
(७) १ ए ता। २ ए चुई। ३ ए लिखी न पाई।

अर्थ—"(१) नवरात्र के पर्व वाला क्वार [तब] ज्ञात पड़ा जब समीर ने शीतल (शीत का) संदेश सुनाया। (२) रात्रि में शरद का शशि [की शीतलता से] आकाश में शीत [का आगमन] हो गया था तब के लिए तो [इस मास में नवरात्र का] पर्व था और मेरे लिए बनवास था। (३) रात्रि में अत्यन्त ही सारस सरोवरों (झीलों) में बोलने थे और संसार भर में मानिक सु बर (रमणीय) रंग छा गया था। (४) संगम दिखाई पड़ता था जगत् में [सरोवरादि का] पानी पर चला था, और जल-थल अत्यंत सम (रंग) में आकर खड़े (स्थिर) ही गए थे (५) और क्वार की रितु में पर्व और उत्साह (उत्सव) [हो रहे] थे तथा सखी जगत् में ऋतु का लाभ [सम्पन्न दिखाई पड़ रहा] था।
(६) हे सखी विरह [इस समय] मुझ पर दुख कर (डाल) रहा है मन से बाहर नहीं निकल रहा है (७) और उस पर मेरे लोचन चू रहे हैं इसलिए मैं [क्वार का] अपना दुख किस प्रकार लिखूं?"

टिप्पणी—(१) सियर<सीअल<सीतल। (२) रैनि<रअनी<रजनी। (७) लोचन <लोचन।

[४०५]

कातिक मास गसाई[१] बारा। ससिम मुंह घरग[१] बिनपारा।

विगसहिं कवल भाँति त बारा[1] । मनहु[2] कुमुदिनी ससि उजियारा[3] ।
सरद रैनि सीतरि[1] तेहि भाव । जो[2] प्रीतम कंठ लागि बिहाव ।
मोहिं[1] तन विरह अगिनि[2] परजारा । सरद चांद मोहिं[3] सेज अगारा ।
* तइ[1] बरसहि से[2] देवस अमोल । जिन्ह[3] सब[4] सेज रवन्ह[5] मिठबोल ।
सरद रैनि सीतरि[1] तहि जेहि पिउ कंठ नेवास ।
सब कहं[1] परब देवारी मोहिं[2] सखी बनवास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सताई । २ ए बरिसै ।
(२) १ ए भाँति है । २ रा मा बाला । ३ ए जनि (<जानि) । ४ रा मा उजियाला ।
(३) १ रा सीतलि ए सीतल । २ ए जहि ।
(४) १ ए मोहि । २ ए आगि । ३ ए मोहि ।
(५) १ ए ते बरसहि । २ ए यह मा मे । ३ ए जहि । ४ मा सधि । ५ ए रौन ।
(६) १ ए सीतल रा सीतलि ।
(७) १ ए सब के । २ ए मोहि ।

अर्थ—"(१) कार्तिक में मैं बाला शरद से संतापित थी इसलिए [उस ऋतु की] अमृत वर्षा भी [मेरे लिए] विष की धारा गिरा रही थी । (२) हे बाला कमल इस भाँति विकसित हो रहे थे कि मानो शशि के प्रकाश में कुमुदिनियाँ विकसित हो रही हों । (३) शरद की शीतल रजनी उस [नारी] को भाती है जो उस ऋतु को प्रियतम के गले लगकर व्यतीत करती है । (४) [किन्तु] मेरे तन में विरह अग्नि प्रज्वलित कर रहा था और शरद का चन्द्रमा मुझे अंगारों की सेज [हो रहा] था । (५) वे [स्त्रियाँ] ही [शरद के] उन अमूल्य दिनों का भोग करती हैं जिनकी सुख-शय्या पर मिठबोली रमण (प्रिय) होते हैं ।

(६) शरद की रजनी उसे शीतल (सुखदायक) होती है जिसका प्रियतम के कंठ (पार्श्व) में निवास होता है (७) सब के लिए दिवाली का पर्व था, किन्तु मुझे तो हे सखी वनवास था ।

टिप्पणी—(१) सताई < सताविय < सतापित = सतप्त किया हुआ । अमिअ < अमृत । बुंद < बिन्दु । (३) (६) सीतरि < शीतल । (३) बिहाव < विहा (वि + हा) = परित्याग करना । (४) अगारा < अंगारक । (५) रवन < रमण = प्रिय । (७) देवारी < दीपावली ।

[४०६]

अगहन मग जोबन अग सीऊ । भइ[1] पावक हित काँप जीऊ ।
सुख दिन भाँति घटत नित[1] जाई । दुख मौं[2] निसि तिल तिल अधिकाई ।
औ तहि पर जुग सम निसि परी[1] । मैं धन जारि जारि एकसरी[2] ।
कठिन पीर यह[1] जानै सोई । पेम बिछोह परा जहि होई ।
यह जड़ि जोरि सखी मोहि[1] मई । पिय बिछोह तें[2] मरि किन गई ।

यह कलंक बड़ मो कहँ[1] दीन्ह जो[2] पापी प्रान[3] ।
जेहि दिन पीतम[1] बिछुर सुनत न निकसे[2] अपान[3] ॥

पाठान्तर—भा. में उपर्युक्त अर्धालियाँ ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) २ ए. बहु भा. कहि।

(२) १ ए. जो भा. तन। २ ए. औ रा. में यह शब्द नहीं है।

(३) १ ए. भी दापर ज जुग सम भारी भा. औ तेहि पर जग सम सम्भारी। २ ए. मोहि बनवास बासु दुइ बारी।

(४) १ ए. मेंह।

(५) १ ए. भा. कुमति सखी जो (मोहि—भा.) २ ए. भा. दुख।

(६) १ ए. मसि मारे भा. सखी बड़ मारेहूँ। २ ए. [illegible] भा. [illegible]। ३ रा. पावै ध्यान।

(७) १ ए. प्रीतम। २ ए. निसर भा. निसरु। ३ भा. परान।

अर्थ—"(१) अगहायण मास में जगत् में सीत भरे यौवन में हुई पावक (अग्नि) प्रिय हुई [क्योंकि] जीव काँपने लगा। (२) [मेरे] सुख [अगहन के] दिनों की भाँति नित्य घटते जा रहे थे तथा [मेरे] दुःख और रातें तिल-तिल (थोड़ा-थोड़ा) करके बढ़ते जा रहे थे। (३) उस पर भी रातें युगों के समान जान पड़ रही थीं और मैं वनों में डाल-डाल पर अकेली थी। (४) यह कठिन पीड़ा वही जान सकता है जिस पर प्रेम-वियोग पड़ा हो। (५) हे सखी यही बड़ा अपराध मुझसे हुआ कि प्रिय-वियोग से मैं मर क्यों न गई।

(६) मुझ को यह बड़ा कलंक हुआ जो मुझे मेरे पापी प्राणों ने दिया (७) कि जिस दिन प्रियतम वियुक्त हुए, मेरा आत्मा (जीव) यह सुनते ही नहीं निकला।"

टिप्पणी—(१) सीउ<शीत। (४) पीर<पीड़ा। (७) अपान<अप्पाण<आत्मन्=आत्मा जीव चेतन।

[४०७]

पूस रैनि अति दूभरि भारी। मैं अबला सही[1] जा न सभारी[2]।
छिन छिन निसरहु[1] सुबनि क[2] आगी। पहरहि पहर चारि जुग लागी।
सम[1] छिन पाउ पिराजम[2] भरा। मैं आरन[3] बन बिरिग बसेरा।
आइ पूस रितु परसहि माहाँ[1]। घन जोबन सुखनि क[2] छाहाँ।
जोबन दुर जात दौगाए[1]। बहुरि न फिरि आवहि पछिताए[2]।
माग फिर[1] जो ह गयो तो सुख फरा नीरे[2]।
मोगर[1] भा मोहि परिहरन[2] रहि[3] महरन[4] भर आवन माँहि[5]॥

पाठान्तर—(१) १ ए. भा. कहि। २ ए. भा. आइ सभारी।

(२) १ रा. कामिनि चहै। २ ए. की।

(३) १ ए. भा. सब। २ रा. ए. जो जीवन। ३ भा. आरन।

(४) १ ए बेरूंडी माहा। २ ए. की।
(५) १ ए दौराये। २ ए आवे पछताये।
(६) १ ए फिरा ना फेरेउ। २ ए नाहि।
(७) १ ए मातरि। २ ए परिहरै। ३ ए इस भा एहि। ४ ए भा मे यह
शब्द नहीं है। ५ ए भा माहि।

अर्थ— (१) पौष की रजनी अत्यंत अधिक दूभर हुई मैं अबला थी [इसलिए] वह [मुझसे] सही और सँभाली नहीं जा रही थी। (२) युवती की कान्ति किस प्रकार निर्वाह करे जब कि [उसके लिए] चार पहरों की रात्रि चार युगों की हो रही थी? (३) [जब कि] सब [युवतियों के] चित्त में प्रियतम [के मिलन] का चाव (उत्साह) था मैं अरण्य और वनों में वृक्षों पर निवास कर रही थी। (४) पौष आया तो पति-वन उस ऋतु का विलास (भोग) करने लगे [क्योंकि] धन और यौवन दुपहरी की छाया होती है [जो शीघ्र ही सरकने लगती है], (५) और यौवन का घोड़ा [जीव को] दौड़ाए हुए लिए जाता है तथा वह फिर पछताने पर लौट कर नहीं आता है।

(६) क्योंकि मेरे भाग फिरे हुए थे इसलिए मेरे नाथ ने मुझसे मुख फेर लिया था; (७) नहीं तो वह क्या (क्यों) मुझे इस लहरें लेते हुए (उमंग में आए हुए) और भरे यौवन में छोड़ देते?"

टिप्पणी—(१) रैनि < रयणी < रजनी। दूभर < दुर्भर = कष्टकारक भार वाला। (३) आरंभ < आरम्भ। बिरिख < वृक्ष। (५) तुरै < तुरय < तुरग = घोड़ा। बहुर < बाहुड < व्याघुट = वापस आना। (६) जौ < यओ < यत = कारण कि। तौ < तओ < ततस् = इसलिए।

[४०८]

दूभर माघ सखी सुनु आता। पिउ बिदम मोहि[1] बिरह समाता।
चिमि निरवाहौ दुसह सियाला[1]। पिउ न सत्र न जोबन[2] बाला।
बिरह डारि[1] पर बसौ[2] बाला। रैनि गमै[3] सिर धरिसै पाला।
माघ रैनि पिय बिनु का[1] आही। मरन भला तहि जीवन[2] चाही।
किमि करि[1] दुसह माघ मधु काढ। बिरह देवस[2] वढ तिल छिए वाढ।
सखि सुख साजन साथ गा[1] दुक्ख रहा मोहि[2] पासु॥
सहि पर कासी बिरह ना[1] सिन हाडहि खिन[2] मांसु॥

पाठान्तर—भा ए. में उपर्युक्त तीसरी चौथी तथा पाँचवीं अर्धालियों का क्रम है ५, ३ ४।
(१) १ ए को ए म यह शब्द नहीं है।
(२) १ भा निरवाहौं दूभर सियाला ए निरवहै दूभर न ज्वाला। २ ए म दूभर ('दूभर' ए म पूर्ववर्ती चरण के भी पाठ मे भी है) भा मोहि जोबन।
(३) १ ए डार। २ ए बैठी। ३ ए गँवावै भा गँवै।
(४) १ ए को। २ ए मरना भला न जिवना।
(५) १ ए कै। २ ए दुबर। ३ ए जो।

(६) १ ए पीउ संग। २ ए दुख जो रहा मोहि।
(७) १ ए कै। २ भा तिन हाडै गिन ए धन हाड़ तन।

अर्थ—"(१) हे सखी, [मेरी] वार्त्ता सुनो माघ मास [मेरे लिए] दूभर हुआ [क्योंकि] प्रिय विदेश में था और विरह मेरे साथ था। (२) मैं दुस्सह शीतकाल किस प्रकार निभाती [जब कि] प्रिय साथ में नहीं था और [मैं] बाला यौवन में थी ? (३) यदि बाला विरह से शालों पर बैठी रहती रातें [किसी प्रकार से] बीतती भी थीं तो सिर पर पाले (हिम) की वर्षा होती रहती थी। (४) जिसकी माघ की रात प्रिय के बिना जाएँ (व्यतीत हों) उसके लिए उस जीवन की अपेक्षा मरना भला है। (५) मधुमालती किस प्रकार माघ निबाहती (व्यतीत करती) [जब कि उसके] विरह के दिन उलटे तिल-तिल करके बढ़ने लगे थे।

(६) ऐ सखी, सुख साजन के साथ चला गया था [उसके विरह का] दुख [ही] मेरे पास रह गया था, (७) और उस पर भी विरह एक ओर [शरीर की] हड्डियों के लिए और दूसरी ओर [उसके] मांस के लिए कतरनी हो (बन) गया था।

टिप्पणी—(१) दूभर < दुर्भर = कष्टकारक भार वाला। (३) सियाल ~ शीत काल। (६) साजन < सज्जन < स्वजन। कतरी < कर्त्तरी < कर्त्तरी = कतरनी कैंची।

[४०९]

फागुन लागी बिपति सुनु मोरी । बिरह अगिनि[1] तन जरि भा[2] होरी ।
तरुन्ह[1] पात कर रहा[2] न काऊ[3] । जानहु अर बिरह क दाऊ ।
भा पतझार चगन बन[1] बारी । गागरि[1] भई सबै फुलवारी ।
सब दगि गय[1] धन बैरागी । दगि डांग[1] सिर लागन[1] आगी ।
जगत सोभ सा बिरिग न काई[1] । जहि डारिहि[1] न आगि न राई ।
गयो सबहु महि[1] पिउ मिला मुरउ बिसूरि बिसरि ।
जाबन तन माहि गहलहा[1] सागर मन्उ[1] ल[1] झूरि ॥

पाठान्तर—(१) १ भा आगि। २ ए ज अरि भी।
(२) १ रा तरुन ए तरुवर। २ भा रहेउ। ३ ए काऊ। ४ ए बिरह के दाऊ।
(३) १ ए वन। २ ए गागरि।
(४) १ ए भा बंगी सब। २ ए डार। ३ ए लागी।
(५) १ ए माह अस बिठ न हाई। २ ए जेहि डार भा जरि न डारि।
(६) १ ए लगी है सबहूँ न। २ ए मुई।
(७) १ ए माहि लहका (< लहकहा कारसी [illegible])। २ ए तान भई। ३ भा ना।

अर्थ—"(१) हे सखी [अब] मेरी फाल्गुन मास की विपत्ति सुनो; विरह की अग्नि से जल कर मेरा शरीर होलिका [की भाँति] हो गया। (२) वृक्षों पर पत्तों का नाम भी [शेष] न रहा मानो वे विरह की दावानल से जल गए थे। (३) जगत् भर में वनों और वाटिकाओं में पतझड़

हो (मा) चुका था और समस्त पुष्प-वाटिकाएँ ललह (बिना पत्तों की) हो गई थीं। (४) सभी पक्षी [इस कारण] वनों में विरक्त हो गए जब उन्होंने दाव (बलाग्नि) के सिर पर [उसके लाल फूलों के रूप में] आग लगती देखी। (५) जगत् में वह (ऐसा) कोई वृक्ष न था जिसकी डालों से लगकर मैं न रोई होऊँ।

(६) [किन्तु] हे सखी [मेरा] प्रिय आज [अब] भी नहीं मिला और मैं उस पर जोर करती-करती मर गई; (७) [यद्यपि] यौवन मेरे शरीर में लहलहाया (हरा-भरा हुआ), [किन्तु] मैं सूख (संतप्त हो) कर झंखाड़ हो रही।"

टिप्पणी—(१) होरी < होलिका। (२) दाऊ < दाव = दावाग्नि। (३) बारी < वाटिका। (३) खाखर < कक्खड = भस्त्रि-खेप पत्र-हीन तरु। (५) बिरिख < बिरिक्ख < वृक्ष। (६) झाखर < झखर [दे०] = शुष्क तरु। झूर < झि झिसूर < झिसूर [दे] = झर करना। (७) झाखर < झखर [दे०] = शुष्क तरु । (?) = क्षीण होना सूखना।

[४१०]

चैत मरह निसर बन बारी । बनसपती पहिरी[1] नव[2] सारी ।
चहु दिसि भा[1] मधुकर गुंजारा[2] । पाखुरि[3] फूल डारिन्ह[3] अनुसारा[4] ।
कुसुम[1] सीस डारिन्ह सउ[2] काढ़ । तरिवर नौ[3] साखा म[4] बाढ़ ।
फागुन हुते जे[1] तरु पतझारे । ते सब[2] भए पात हरियारे ।
मोहि[1] पतझार जो[2] भा[3] बिनु साईं । सा न सखी मौला अब ताईं[4] ।
दुखु व प्रीतम छाड़ि गा[1] जननि दीन्ह[2] बनवास ।
जौ रबि आठौं म तपा क[2] मोहि[3] सिर परगास ॥

पाठान्तर—ए मे उपर्युक्त अर्द्धालियों ३ ४ ५ का क्रम है ५, ३ ४।
(१) १ ए पहिरी। २ मा नै।
(२) १ ए भै। २ रा गुंजारे। ३ ए पखुरी डार फूल मा पाखर फूल डारिन्ह रा पखुरिन्ह फूल पात। ४ रा अनुसारे (?) मा असवारा।
(३) १ रा कुसुम। २ ए डारन है मा डारिन्ह से रा डारिन सहु ३ ए नौ। ४ रा होइ।
(४) १ मा जो। २ मा सब।
(५) १ ए मोहि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए भौ। ४ ए अँबराई।
(६) १ ए दुख दै गये जो पीतम मा दुख दै गएउ पिरीतम। २ मा दिएउ।
(७) १ रा जौ रबि आठी मा है ए और पिया ती भी तपा। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए मम।

अर्थ— (१) चैत्र मास में वन-वाटिकाओं में कल्ले (नए पत्ते) निकल आए, और [समस्त] वनस्पति ने नई साड़ी पहिन ली। (२) चारों ओर भ्रमरों का गुंजार हो गया, और डालों ने पत्ते और फूल बाहर निकाल दिए। (३) कुसुमों ने डालों से सिर बाहर किए और तरुवर नव-शाखाओं

के होने से पुष्टि को प्राप्त हुए। (४) फाल्गुन में जो वृक्ष पत्ते झाड़ हुए थे वे सब चैत्र में हरे-भरे हो गए। (५) [किन्तु] बिना स्वामी के मुझे (मेरे जीवन-वृक्ष के लिए) जो पतझड़ हुआ (आया) वह, हे सखी अभी तक मुकुलित नहीं हुआ।

(६) [मेरा] प्रियतम [विरह का] दुःख देकर चला गया था जननी ने बनवास दे ही दिया था (७) और (पुनः) सूर्य आठवाँ [सात्त्विक भाव-प्रलय] होकर मेरे सिर पर प्रकाश करता हुआ तप रहा था।"

टिप्पणी—(१) निसर < निस्सर < निर् < सृ + बाहर = निकलना। (२) पांगुरि < पंगुडी < पंख < पत्त = पत्र। (३) कुसुम < कुसुम। (५) साईं < स्वामी। मौल < मउल < मुकुलम् = मुकुलित होना। माठौं = अष्टम सात्त्विक भाव—प्रलय।

[४११]

गुनु बसाख सखी दुख¹ भारी। बन हरियर मोहि तन दौं² जारी।
जिन्ह¹ सुख भल सखी² है कन्तू। तिन्ह³ मनव बसाख बसन्तू।
पहिर पुहुप चाहे बन बारी¹। मोहि बसंत पिय बाझु उजारी।
बिरहा पलुहि पलुहि जिउ जार¹। किमि करि² मधु बसाख निसार³।
बरन बरन निकस¹ तरु पाता। कोइ पीत कोइ हरियर राता।
मोर जोबन फर¹ सुनु सखी² बासु³ पियार नांह।
फूल त धरती झरि पर¹ जउ मालति बस मांह॥

पाठान्तर—(१) १ ए बैसाख सखि दूभर। २ ए मोहि तन दौ।
(२) १ ए जहि। २ मा सखि सज रवन। ३ ए तहि।
(३) १ ए पहिरि पुहुप जो रची रा आवहि जावहि सबहि पियारी। २ रा मो बसंत पिय बाझु उजारी ए मैं बन डार डार सीस सारी भा माहि बसत बास पिय प्यारी।
(४) १ ए बिरह दाहै। २ ए मा कै। ३ ए निरवाहै मा निबाहै।
(५) १ ए भा निसरे।
(६) १ मा ए में यहाँ 'मत' (मत—भा) और है। २ ए सुन सखि। ३ रा ए बाजु।
(७) १ ए चूरी (<फल ते फ़ारसी लिपि) परनी झरि परी (<पर फ़ारसी लिपि)।

अर्थ—"(१) हे सखी सुनो: बैसाख मास में [मुझे] भारी दुःख था [क्योंकि] हरा [-भरा] बन मेरे शरीर को दावाग्नि से दग्ध कर रहा था। (२) जिसको सुख शय्या पर [उसके] कान्त होते हैं उनके लिए बैसाख में बसन्त में आनंद होता है। (३) बन और वाटिका पुष्प [के आभरण] पहिनना चाहते थे [किन्तु] प्रिय के बिना मुझे (मेरे लिए) बसन्त उजाड़ था। (४) विरह अधिकाधिक अंकुरित (हरा-भरा) होकर [मेरे] जी को जलाता था, [इसलिए] किस प्रकार मैं मधुमासी बैसाख का निवारण करती? (५) तरुओं ने वर्ण-वर्ण के पत्र निकले हुए थे कोई पीला कोई हरा और कोई लाल था।

(६) मेरा यौवन हे सखी प्यारे नाथ (स्वामी) के बिना फल रहा (फलने पर आ गया) था, (७) उस [यौवन-तरु के] फूल धरती पर झड़ पड़े थे जिस प्रकार वन में मालती के।"

टिप्पणी—(१), (५) हरियर < हरित्र + क < हरित = हरा। (१) दौं < दाव। (२) सुख-सेज < सुख-शय्या। कंत < कान्त = प्रिय। (३) (६) बाझ < वज्झ < वर्ज = बिना। (४) पलुह < प्ररुह = अंकुरित होना पल्लवित होना। (५) बरन < वर्ण = रंग। रात < रक्त = लाल। (७) झर < झड < क्षर् = झड़ना पके फल-फलादि का गिरना।

[४१२]

जेठ सखी जिउ[1] पिउ पिउ रुपा[2] । सविता सहस तेज भ तपा[3] ।
बिरहा गुपुत हिए दौं[1] लाव । परगट आगि धूप[2] बरिसाव ।
गुपुत बिरह परगट रवि दहै[1] । किमि दुहु दगध नारि निरबहै[2] ।
जठ सखी मोहि निसि दिन दहना । सीतरि[1] सेज साइ कहँ[2] लहना ।
छिन बिसराउ कर[1] जहँ धारा । बिरह आगि तहँ उठै दवारा ।
एक बियोग दोसर[1] बनबासा तिसरें[2] कोइ न साथ ।
चौथ[1] रूप बिहूनी मर[2] तौ मिरितु न हाथ ।।

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त अर्द्धालियों २ ३ ४ का क्रम है ४ २ ३।

(१) १ ए जठ घीम ससि मा जेठ जेठ सखी। २ ए जपा (तुक पूर्ववर्ती चरण का ए का तुक)।
(२) १ ए हिय दौ। २ ए प्रगटि आगि रवि खिर मा परगट आगि सरव।
(३) १ ए दहई। २ ए दहु दगिध राति निरबहई।
(४) १ ए सीतल या सीतलि। २ ए जेहि।
(५) १ ए बिसराउ कीन्ह, मा किएउ।
(६) १ ए एक बियोग दुसरे। २ ए तिसरे।
(७) १ ए चौथे। २ ए मरौं।

अर्थ— (१) ज्येष्ठ मास में हे सखी [मेरा] जीव 'प्रिय' 'प्रिय' कहता (रटता) रहा, [जब] सूर्य सहस्र तेज [युक्त] हो कर तप्त हो रहा था। (२) विरह प्रच्छन्न रूप से हृदय में दावाग्नि लगा रहा था और धूप प्रकट रूप से [बाहर] अग्नि की वर्षा कर रही थी। (३) [इस प्रकार] गुप्त (प्रच्छन्न) रूप में विरह और प्रकट रूप में सूर्य [मुझे] दग्ध कर रहा था [तब] भला किस प्रकार मैं नारी दोनों दाहों (दग्धों) को झेलती। (४) ज्येष्ठ में हे सखी मुझे रात-दिन दग्ध होना हुआ, [क्योंकि] शीतल शय्या पर स्वामी को मैं कहाँ पाती? (५) एक क्षण जहाँ पर (जैसे ही) मैं जाकर विश्राम करती, वहाँ पर (वैसे ही) विरह की दावाग्नि उठ (लग) पड़ती।

(६) एक तो वियोग था दूसरे वनवास था, तीसरे कोई भी साथ नहीं था (७) और चौथे मैं रूप-विहीन थी [इसलिए] मरती (मरना चाहती) थी, तो मृत्यु हाथ नहीं आ रही थी।"

टिप्पणी—(१) रुप < रूप् = रहना। (२) दौं < दव = दावाग्नि (४) सीतर < शीतल। सेज < शय्या। साइ < स्वामी। (५) बिसराउ < विश्राम। दवार < दव = दावाग्नि।

[४१३]

दूभर सखी असाढ़ जनावा । चपला चमकि[1] गगन दरसावा ।
कुंजर[1] मेघ पाग्ह दृग फेरा । दामिनि जनु भाँसम नहि केरा ।
भा[1] अँधोर झींगुर झनकारी[2] । डाढ़िहु[3] उमी[4] डाल हरियारी[5] ।
पिरथीं सब अंकुर[1] अनुसारा । पिय हिय[2] पेम न[3] अंकुरउ[4] सारा ।
रचि रचि छायन्हि[1] मन्दिर अवासा । चिरिग्न पंखन्ह[2] कीन्ह नवासा ।
मोहिं[1] सखी गा[2] दुख महँ बारह मास असाढ़ ।
अब गिउ कछु उपकार दइय[1] लागि जिसु मा होइ[2] निस्तार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए चपल चमकि।
(२) १ ए कुंजर। २ ए मिन। ३ मा में अर्द्धाली है गिन गरजा दामिनि चमकानी डाउ गा परती हरियानी (दे अपनी दा अर्द्धालियाँ)।
(३) १ ए भई जाग। २ ए झींगुर चनराग भा जिनसी झनराग। ३ ए टाढ़ि रा झाग्डु मा नाहीं। ४ मा उगी। ५ ए हरिआरा।
(४) १ मा पिरथी सब अंकुर ए सब पिरथी कुआर। २ ए पीअ हीन। ३ ए म यह पाट नहा है। ४ ए अंकुरा।
(५) १ ए छिन्न मा छपरि ग जनरि (?)। २ ए विरग पगार।
(६) १ ए मोहि। २ ए मा भा प।
(७) १ ए दैय। २ ए ज मार हा मा जा हा मार।

अर्थ— (१) हे सखी [तदनंतर] दूभर आषाढ़ मास जान पड़ने लगा [जब] चपला (बिजली) ने चमक कर आकाश में [अपने को] दिखाया। (२) मेघ-कुंजर ने दृष्टि फेरी; दामिनी मानों उसका अंकुश थी। (३) झींगुर की झनकार का शोर होने लगा और दग्ध हुई [होने पर भी] डाल की हरीतिमा उठ खड़ी हुई। (४) पृथ्वी पर समस्त [वनस्पति] ने अंकुर निकाले किन्तु प्रिय के हृदय में ऐसा प्रेम नहीं अंकुरित हुआ। (५) [लोगों ने] रच-रच कर मंदिरों और आवासों को छा लिया और पक्षियों ने वृक्षों में निवास कर लिया।

(६) मुझे हे सखी आषाढ़ [को लेकर] बारह महीनों का समय दुःख में [ही] गया (७) अब तू दैव के लिए [मेरा] कुछ उपकार कर जिससे [मेरा] निस्तार (उद्धार) हो जाए।"

टिप्पणी—(१) दूभर < दुर्भर = कष्टकारक भार वाला। (२) कुंजर < कुंजर = हाथी। (३) अंधार < अंधकार (?) < अन्धकार (?)। (३) उमी < उत्थित < उत्थित = उठी हुई। (४) पिरथी < पृथ्वी।

[४१४]

सावन[1] गाज गगन जो गाजे । तन तन जलिन्ह[2] मार सुर साजे ।
रो भल रहिउ[1] मारु मुन्द लागी । जोम जिन्हि जगत[2] जिन त्यागी ।
४६

जिन्हहूँ[1] खोज न पाइउ[2] तोरा । जिअन्ह जीउ पर तजा न मोरा ।
असें बिरह रूप सउँ[1] राता । जीउ तस बिरहें रस मांता[2] ।
कया[1] जौ[2] नहिं पहुँच तुम्ह[3] ताईं । जिउ निसि दिन[4] तो सम[5] गोसाईं ।
जब सउँ[1] मैं तुम्ह बिछुरी[2] मुइअ[3] बिसूरि बिसूरि ।
जिउ तुम्हर[1] परनन[2] तर जउ[3] सरीर सेउ[4] दूरि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा तोरी ए तोरे। २ रा कहिमु।
(२) १ ए कहहु। २ ए मुह। ३ ए फिरी जान।
(३) १ ए कहूँ। २ ए पायेउँ।
(४) १ ए रा सौं। २ ए मू पै तैस बिरह सौं रांता रा कएउ (< कपउ) तैस बिरहै हिय माता।
(५) १ ए काया। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए मा पहुँचै तुम्ह। ४ ए जीवन सु (< निसि फारसी लिपि) दिन। ५ ए तुम्ह सग मा तुम्ह पास।
(६) १ रा ऐसें ए सौं। २ ए मैं तुम्ह बिछुरी। ३ ए मा मुई।
(७) १ ए तोहरे। २ मा चरन। ३ ए जौ रा जौ। ४ ए दूरी मा दूर।

अर्थ—"(१) तुम्हारी खोज में यदि कुमार (मनोहर) हो (जाए) तो मेरा एक-एक दुःख तुम उससे रोकर कहना (२) और ऐसा (मेरी यह बात) कहना हे नाथ तुम्हारे लिए मैं जीव (प्राणों) का त्याग कर जन्म के भी बंध फिर जाऊँ (३) [किन्तु] कहीं भी तुम्हारा खोज न पा सकी। मेरा जीव निर्लज्ज है कि यह मेरा घट (शरीर) नहीं छोड़ता है। (४) जैसे विरह ने [तुम्हारे] रूप से अनुराग कर रक्खा है उसी प्रकार [मेरा] जीव विरह के रस से मत्त है। (५) यदि [मेरी] काया तुम तक नहीं पहुँच पाती है तो [मेरा] जीव तो रात-दिन हे स्वामी, तुम्हारे साथ है।

(६) जब से मैं तुम से बिछुड़ी खेद करते-करते मैं मर गई; (७) यदि मैं शरीर से तुमसे दूर हूँ तो [मेरा] जीव तो तुम्हारे चरणों के तले है। "

टिप्पणी—(२) नाहु < नाथ = स्वामी। (४) राव < रक्त = अनुरक्त। मांत < मत्त। (५) कया < काया। जौ < यउ < यदि। (६) बिसूर < बिसूर [दे०] = खेद करना। (७) जउ < यदि।

[४१५]

जब सउँ तोरि[1] प्रीति जिय[2] लागी[3] । सुख[4] सेजें[5] न परिये[6] त्यागी[7] ।
असें[1] मोर जीउ तोहि पाहाँ[2] । अपनउ जीउ देहि मोहि माहाँ[3] ।
कै यह[1] पेम पीर हिय जरी[2] । काढ़ि लेहु[3] मोहि[4] हिय उर[5] सेती[6] ।
पग सपुँच बूड़उँ[3] घुमु बाता । तुम्ह[1] बिन कोइ[2] न धीर धर[3] दाता ।
बारी नइ लाएउ तुम्ह[1] साईं । परगट जीउ लिएहु[2] बरिआईं ।

तन कोइल[१] लोचन रकत[२] जीभि रटा[३] पिउ पीउ।
जगत फिरिउ[१] पिउ[२] रूप होइ हाथ लिए यह[३] जीउ[४]॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए अब सौं धार। २ मा सिय। ३ ए गही मा धाओ
३ ए सब सौं मा सब मनें रा सब सनें। ४ ए परथे छाइही मा परथे
छाडी।

(२) १ ए तैस। २ रा वाहि पाहा ए तुई पाहा मा तुम्ह पाहों। ३ ए
अपना जिउ देमु माहि नाहा रा तव जीउ देन मरी माहि नाहीं।

(३) १ ए पै यह मा कै सिय। २ मा हीहि जेमी। ३ ए मउ। ४ मा
मम। ५ ए मम ही बर। ६ मा मर्मी।

(४) १ ए बूड़िउँ गा बउमि। २ ए ताहि। ३ गा काउ। ४ ए मा ण।

(५) १ ए चोरी नेह तुह लावउँ रा चेरी मह लाग तुम्ह। २ ए जीउ लिय
गा जिउ लीन्हा।

(६) १ ए कोइला। २ ए लोचन रतन। ३ रा जीभि रहै ए जीभ रई।

(७) १ रा म यह शब्द स्पष्ट नहीं है। २ ए म यहाँ 'न' और है। ३ ए सिय
नेहु। ४ मा मे इस दोहे के स्थान पर है—

तुम्हरे पेम सिरीलम मही न बनि माग होइ।
तुम्ह बिनु आसहु मरि यह बिरह हमारै गोइ॥

अर्थ—(१) हे स्वामी जब से तुम्हारी प्रीति [मेरे] जी में जमी तब से मैंने सभी से परिचय त्याग (समाप्त कर) दिया। (२) जिस प्रकार मेरा जीव तुम्हारे पास है उसी प्रकार, हे नाथ तुम अपना भी जीव मुझे दो, (३) अथवा [मेरे] हृदय में यह जितनी प्रेम-पीड़ा है वह [सब] मेरे हृदय से निकाल लो। (४) मैं [तुम्हारे प्रेम-समुद्र में डूब रही हूँ और मेरी [यह] बात सुनो, तुम्हारे बिना मुझे कोई धैर्य देने वाला नहीं है। (५) हे नाथ तुमने चोरी-चोरी मन से स्नेह लगाया (जोड़ा) किन्तु [मेरा] जीव तुमने बलपूर्वक प्रकट रूप में ले लिया।

(६) [अब मेरा] शरीर कोकिल बना, लोचनों ने रक्त [के अश्रुओं को] धारण किया और मेरी जिह्वा पिय-पिय रटती रही (७) प्रिय-रूप होकर और हाथ में यह जीव लिए हुए मैं जगत् भर में फिरती रही [किन्तु तुम्हें न पा सकी]।

टिप्पणी—(२) नाह < नाथ = स्वामी। (३) जत < यतिम < यावत् < जितना। (५) नेह < स्नेह। साईं < स्वामी। बरियाईं < बलात्। (६) कोइल < कोकिल। रतन < रक्त।

[४१६]

जब गउ मन गमान[१] आई[२]। निसि सामर रोवत माहि[३] जाई[४]।
मलिन[५] तन गो[६] गात रोई। तन गात तुम्ह[७] पगु मउ[८] पाई[९]।
पिता अति[१] भ[२] कित माही। तुम्ह[३] बिना बिसरा गम नाहीं[४]।

४]

सभ[1] चिंता सबै चित[2] भागा । जब सेउं[4] तोहि[3] चिंता चित लागा[4] ।
जहि मारग बालम[1] पगु धारहु[2] । मो कह पथ[3] रेनु क डारहु ।
परग परग मैं[1] चाहों यह जिउ[2] आरति बउं ।
जो विधि घट मह एक[1] जिउ सिरउ[2] तौ[3] काह[4] करउं ॥

पाठान्तर—(१) १ रा जब सा नैन समानेउ ए जब सौ नैन समानेहु । २ ए मोहि ।
(२) १ रा मह अचरिजु ही ए अचरिज इहै जो मा अचिजु एह मैं । २ ए
तुह चलु सौ रा तुम्ह चलु भा तुम्ह चलु सो ।
(३) १ मा चित । २ ए अहै मा इहै । ३ ए तुह । ४ मा चितउ ।
५ ए बिसरा सब माहा मा सब बिसरेउ माहां ।
(४) १ ए अब मा सब । २ ए चिंता चित सौं । ३ ए जब सौ तुह रा जब
सा ताहि भा जब सा तारि । ४ ए लागा ।
(५) १ ए बल्लभु । २ ए डारहु (<मारहु फारसी लिपि) । ३ छोड़ पंथ
मोहि रा मोहि किन मग ।
(६) १ ए पै मा पर । २ ए मेह जिउ कहहु तौ ।
(७) १ ए मह । २ ए सिरा । ३ ए म यहां मै और है । ४ रा काह
ए काह ।

अर्थ— (१) जब से तुम [मेरे] नेत्रों में आ समाए, रात-दिन मुझे रोते ही जाता है । (२) आश्चर्य यही है कि मैं सतत रोती रही फिर भी तुम मेरे आंसुओं में से धोए न जा सके । (३) मेरे चित्त में जितनी भी [अन्य] चिंताएँ हुईं तुम्हारी चिंता ने मेरे चित्त से उन सब को विस्मृत कर दिया । (४) समस्त चिंताओं से [मेरा] चित्त भाग (दूर चला) गया जब से तुम्हारी चिंता से [मेरा] चित्त लगा । (५) हे प्रिय तुम जिस मार्ग से जाओ मुझे उस मार्ग की रेणु (धूल) बना लो ।

(६) मैं चाहती हूँ कि एक-एक पग पर मैं तुम्हें इस जीव [को दीप की भांति जलाकर उस] की आरती दूँ; (७) यदि (किंतु) विधि ने [मेरे] शरीर में एक ही जीव का सृजन किया है तो (इसलिए) क्या करूँ ? [विवशता है कि एक ही जीव आरती कर सकूँगी] ।

टिप्पणी—(२) अचिजु < आश्चर्य । सतत < सतत = निरंतर, सदैव । चख < चक्षु = नेत्र । (३) जेत < जेतिक < यावत् = जितना । माह < माझ । (५) बालम < बल्लभ = प्रिय । (७) सिर < सृज् = बनाना निर्माण करना । काह < किम् = क्या ।

[४१७]

भइउं रेनु मगु पिय तोहि[1] ताई । मकु कबहुं लागहुं तुम्ह पाईं[2] ।
जो भर हुतें[1] जिउ निसरै मोरा । तो धर हुतें दुख जाइ न तोरा[3] ।
पेम बिछोह दहु जनि माहां[1] । करहु जो तुम्ह भाव चित माहां ।[4]
जो सई हाथ मारु[1] पिय मोहीं[2] । सौं[3] जिउ दउं एक का तोहीं[4] ।
जो कहि[1] जीउ[2] दिएं प मोरें[3] । कस न मुएउ जिउ ताहि निहोरें[4] ।

तुम्ह मन[1] जानउ बिछुरें[2] घट बिरानो[3] मह ।
जउं जेउं बाढ़हिं स्वहर[1] तउ तउं अधिक सनह ॥

पाठान्तर— मा. ए. में उपर्युक्त अर्द्धालियाँ २ तथा ३ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए. मई रेनु मधु ('मधु' परवर्ती चरण में भी आता है) मा. पिउ। २ मा. पाए। ३ ए. मधु लागी तुम पीर पराई रा मधु कैसेहु लागिन तुम पाई।

(२) १ ए. जौ जिउ छाडु मा. जौ घर छुटा। २ ए. तौ जिउ छुटे मा. जिय छुट निसरि। ३ मा. न जा दुख तारा रा जिउ जाइ न तोरा।

(३) १ ए. माहा। २ ए. तुह। ३ ए. माहा। ४ मा. मीत करहु जत बिछु जिय माहा।

(४) १ ए. मी हाथ मारहु मा. मइ हथ मारहु। २ ए. मारी। ३ ए. मा. मैं। ४ ए. वांही।

(५) १ मा. चाहिह। २ मा. में यह पाठ नहीं है। ३ ए. पिय निज मारे मा. पिउ निजु मारें। ४ ए. मा. आयु देउ पिय तोरे (ताहि—मा.) निहोरे।

(६) १ ए. तू हम। २ ए. बिछुरे। ३ ए. पै बिराना।

(७) १ ए. बाढ़ै देवहरा मा. बाढ़हिं देवस बिच।

अर्थ—(१) तुम्हारे कारण ही मैं मार्ग की रेणु इसलिए बन गई हूँ कि संभव है किसी भी प्रकार से मैं तुम्हारे पैरों में लग सकूं। (२) यदि घट (शरीर) से मेरा जीव निकल भी जाए, तो इस घट (शरीर) से तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) दुःख नहीं निकलेगा। (३) हे नाथ तुम [अपना] प्रेम [अथवा] बिछोह [मुझे] न दो [इसके अतिरिक्त] जो कुछ भी तुम्हें [तुम्हारे] चित्त में आए, तुम करो। (४) हे प्रिय यदि तुम स्वयं (अपने) हाथ से मुझे मार डालो तो मैं तुम्हें एक क्या सौ जीव दूं। (५) और यदि जीव (प्राणों) को देने पर ही मुझे प्रतिष्ठा (ख्याति) मिलती है तो मेरा जीव [अब तक] तुम्हारे निहोरे [निमित्त] से क्यों नहीं मरा?

(६) तुम यह मत समझो कि वियुक्त होने से पुराना स्नेह घट जाता है (७) दिन जितने ही बढ़ते (अधिक होते) जाते हैं स्नेह भी उतना ही अधिक होता जाता है।

टिप्पणी—(१) पाउ < पाद = पैर। (२) घट < घट [ ] = घट रूप में जीव का शरीर। (४) सउ < शतम्। (६) बिराना < विगतपर < बिरान = पुरातन प्राचीन। (७) देवहरा < दिवस < दिवस = दिन।

[४१८]

निसि जागउ[1] दुख जउ लगि[2] भरा । भोर बहुत सुख सागर भरा ।
पान लागि मधु बिनती कीन्हों[1] । पुनि मागसु[1] मांगिहु[2] कर दीन्हा[3] ।
बारी स्वम मारि मन[1] गए । पर्मा मार ठाइ[1] ग भए ।
ग पमहि प्रतिहार जनावा । मधुमालति कर बागे आवा ।
सुनि[1] मधुमालति माउं[1] कुमारी । आई चली बाग उन्ह बारी[1] ।

आगें[1] भ सम बारा[2] पर्महि कीन्ह जोहार ।
पाती दीन्ह कहा[1] मुख आखर जहाँ क जस[1] ब्यवहार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा आफेउ ए आफा। २ ए सगु।
(२) १ ए कीन्हा मा कही। २ ए आयेस। ३ रा ग यारी। ४ ए दीन्ह मा दिही।
(३) १ ए मा। २ ए ठाढ़ि।
(५) १ ए पुनि। २ ए राज। ३ मा उठि चलि आई बार पामारी ए उठि चलि आई जहा होती बारी।
(६) १ ए आगे। २ ए मा बारिन्ह। ३ ए किया रा कीन्ह।
(७) १ ए पुनि पाती दै मा पुनि पानी दै। २ ए पेमा जो कस मा जहा क सब।

अर्थ—(१) उसने वहाँ तक भी [उसका] पुत्र था [पत्र के रूप में] लिखकर [बारियों के हाथ पेमा के लिए] अर्पित किया और कुशल-कुछ मुख के अक्षरों द्वारा भी उसने कहा। (२) मधुमालती ने [पेमा के] पैरों लग कर विनती की और फिर बारियों को [प्रस्थान का] आदेश दिया। (३) वे बारी चार दिनों में पहुँचे और पेमा के द्वार पर जाकर खड़े हुए। (४) प्रतिहार ने जाकर पेमा से बताया कि मधुमालती का बारी आया है। (५) कुमारी (पेमा) मधुमालती का नाम सुनकर द्वार पर चली आई जहाँ बारी था।

(६) तब बारी ने आगे हो (आ) कर पेमा को जुहार (नमस्कार) किया (७) और पत्रिका देकर मुख के अक्षरों द्वारा वहाँ का जैसा व्यवहार (कुशल-समाचार) था, कहा।

टिप्पणी—(१) आफ<अप्प<अर्पय्=देना भेट करना। (१) (७) आखर<अक्षर। (३) (५) बार<दार<द्वार। (७) पाती<पत्रिका।

[४१९]

पाती पढ़ि पेमा तस[1] रोई । कीन्हसि[2] सत स्याम जनु[3] धोई ।
बहुरि कहु बारीं सउं[1] बाता । कहि[2] दिन हुत[3] उन्ह कुँवर मरारा[4]।
ठहि दिन हुत[1] न कोउ न पावा[2] । कहु[3] ह जियत कि मारि अड़ावा[4] ।
मधुमालती[1] कोकिल कै[2] आई । तहि बनबासत[3] मोह न आई ।
कइ न कीन्ह[1] कुहिता पर छोहू । पर जिउ धपत ताहि[3] किस[4] मोहू ।

जौ तहि दिन होइहि जिउ उबरा[1] ओहि सउं[2] राजकुमार ।
जिन्ही माइहि मनोहर[1] जो न परा अस धार[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पढ़ि पेमा अति ए पढ़त पेमा अति। २ ए कीतेसि (<कीनेसि ?) ३ ए अस।
(२) १ रा बारी सौं ए मा बारिन्ह सौं। २ मा औहि। ३ ए हुती प सौं। ४ ए मे यह चरण नहीं है। ५ ए अंजारा।

(३) १ रा मों ए हुते। २ ए पाव न पावे मा गोज न पाएउ। ३ ए बहु। ४ ए मारि अबाये मा मारि अवाएउ।
(४) १ अ मा हुति। २ ए कान की मा कोरि। ३ ए तेरि दर माहि।
(५) १ ए ज न किमा। २ रा मर। ३ रा बापत नहि। ४ मा मम न नत।
(६) १ ए जै तेहि दिन होइहै जिउ उबर, रा जौ तेहि दिन ? बाचा। २ रा ए बाहि मों।
(७) १ ए निस्चै आविहि मोहि पहँ रा आइहि मा पै कुवर निरु। २ मा होइहि आहि अवार।

अर्थ—(१) उस पत्रिका को पढ़ कर वैसा वैसा (ऐसा) रोई कि उसने श्याम अश्रुओं को दवैन कर डाला। (२) वह बाला पुनः (तदनतर) बारी से कहने लगी "जिस दिन से उन लोगों ने कुमार (मनोहर) को [दूर] डाल दिया, (३) उस दिन से मैंने उसका समाचार नहीं पाया कि वह जीता है कि मार डाला गया है। (४) मधुमालती उसकी कुक्षि से उत्पन्न थी और उसे बनवास देते हुए [उसकी माता को] मोह न हुआ (५) [तो] जिसने [अपनी] कन्या पर दया न की उसको दूसरे का जीव मारते कहाँ मोह हो सकता है?

(६) यदि उस दिन कुमार के प्राण उससे उबर (बच) पाए होंगे (७) और यदि वह काल (मृत्यु) की धारा में न पड़ा होगा तो मनोहर निश्चय ही [यहाँ] आवेगा।

टिप्पणी—(१) सेत < श्वेत। मसु < मस्नु < मधु = मन। (२) बारा < बाला। (४) कोखि < कुक्षि = उदर पट। (४) निरु < कुत्र = कहाँ। (६) जौ < यत < यदि। उबर < उम्बर < उद् + वृ = पार रहना बच जाना।

[४२०]

उन्हें का मोहि पूँछि पठाइन्हि[१]। उन्ह पूँछिय ग[२] कहाँ अडाइन्हि।
जौ मो जियत होइहि[१] जग माही। रतिहि न बिन आग माहि[२] पाही।
रोव कुंवरि कया जिउ[१] बाड़ी। मह बात मारी मउ[२] ठाड़ी।
ओरमहि[१] आइ सखी एक धाई। कहसि कुंवरि आएउ कुवर[२] माई।
जोगी एक[१] कुवर उपहारी। मा बाग होइ[२] पौरहि[३] मारी।
म उतारि कुंवर न लखत[१] धाइ आ कुवर[२] पाग।
निरत आनि[१] मनोहर माउँ भग[२] उपाग॥

पाठांतर—(१) १ ए उन्हें का मोहि पूछि पठाइन्हि। २ रा पै मोहि दहँ ए उन पूछी है।
(२) १ मा जौ जीवत हानि ए जौ रे निवन हा है। २ ए रही न बिन आय रा निरचै मो बाइहि माहि।
(३) १ ए मा रोवै कुंवर (< कुमारि : फारसी लिपि) नाम कर। २ ए बारिन मौ मा बारिन मेउ रा आरी मा।

(४) १ मा एहि मई ए मोहसहि। २ ए आवा तोर रा तुम्ह आवै।

(५) १ ए में यहाँ है और है। २ ए आउर भै। ३ ए चीन्हसि।

(६) १ रा दै देखे ए एक देना। २ ए आई आइ तुम रा दी आइउं तुम्हं।

(७) १ ए. निस्चै मारहि, मा निर्स्चै माइ। २ ए फिउ रे भेद रा काहें मम।

अर्थ—"(१) उन्होंने उसके मुझसे क्या पुछ भेजा है? पूछना उन्हीं से चाहिए कि उन्होंने [मनोहर को के] जाकर कहाँ डाला। (२) यदि वह [इस] संसार में जीता होता तो वह बिना मेरे पास आए न रहेगा।" (३) कुमार (पेमा) शरीर से जीव (प्राणों) को निकाल (छोड़) कर रो रही थी और खड़ी-खड़ी यारी से बात कर रही थी। (४) वैसे ही (इतने ही में) [उसकी] एक सखी दौड़ी आई और उससे कहा 'हे कुमारी तुम्हारा भाई आया है। एक योगी उस कुमार की अनुकृति का आया है, उसे द्वार पर हो (आ) कर पहिचानो।

(६) मैं [उस] कुमार की अनुकृति का [उसे] देख कर तुम्हारे पास दौड़कर आई (७) वह निश्चय ही मनोहर है [जो] उदासीन (विरक्त) का वेष धारण किए हुए है।

टिप्पणी—(२) जियत < जीवित। (५) (१) उनहारी < अनुहार < अनुकार = अनुकृति आकृति।

[४२१]

कुंवर नाउ सुनतहिं¹ उठि² धाई । मया गही³ चलि बारहिं⁴ आई ।
फुनि¹ जो डीठि² कुंवर पर परी । हिय उर³ मोह आगि⁴ परजरी ।
धर्मा धाइ कुंवर गिय¹ लागी । छातिहि यरी मोह क² आगी ।
वया चित तहि दस्तल होई । परिछाती बिनु साथ न कोई ।
मांसु न रहा कया महं राती¹ । लागी² आइ हाड़ दुख काती³ ।
दुक्ख गहा विरह बहा¹ जिउ रहा मिलन अधार ।
पम बिछोह होइ जनि काहू¹ जनम² एहि³ सयसार⁴ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए नाम सुनतै। २ मा म१। ३ ए गुरित। ४ ए बाहर रा बाहिर।

(२) १ रा ए पुनि। २ ए डीठ। ३ ए हीयर, रा हियरै। ४ मा अगिनि।

(३) १ ए धौं। २ ए मा छाती (छाती—मा) परी पेम की।

(५) १ ए सबि रही रा महुरई। २ ए मानी। ३ रा दुख गई, ए दुख भाँती।

(६) १ ए दुख बाबे बिरहे जरा। २ ए भट मा भई मिलन अधार, मा जीउ मिलन आधार।

(७) १ मा होइ बिधि रा देइ जनि काइ। २ ए जनम रा जीवन। ३ मा बाइ। ४ ए संसार।

अर्थ—(१) कुमार (मनोहर) का नाम सुनते ही (पेमा) उठ दौड़ी और ममता ग्रहण किए हुए वह द्वार पर चली आई। (२) तदनंतर उसकी दृष्टि जो कुमार पर पड़ी तो उसके हृदय

में मोह (ममता) की आग प्रज्वलित हो उठी। (३) पेमां दौड़कर कुमार के गले से लग गई और उसकी छाती में मोह (ममता) की आग जल उठी। (४) उसको देखते हुए चित्त में दया [उत्पन्न] हो रही थी और उसके साथ उसकी प्रतिच्छाया के अतिरिक्त कोई न था। (५) मांस उसकी काया में रत्ती भर नहीं था [क्योंकि] उसकी हड्डियों में जा (पहुंच) कर दुःख की ककरनी लगी हुई थी।

(६) उसका जीव दुःख से गृहीत और विरह से दग्ध होकर केवल [प्रिय से] मिलने [की आशा] के सहारे [शरीर में] पड़ा हुआ था। (७) [भगवान करे] किसी को किसी जन्म में इस संसार में प्रेम [जनित] वियोग न हो।

टिप्पणी—(१) बार < बार < द्वार। (२) दीठि < दृष्टि। (३) । गिय < गिव < ग्रीव। (४) परिछाहीं < प्रतिच्छाया। (५) रत्ती < रत्ती < रक्तिका = घुंघची चमचा के बराबर का तौल। (५) कानी < कत्ती < कतरनी = कतरनी।

[४२२]

सुनतहिं[1] राज कुंवर कर नाऊं । बाजा चित बिसराउ बधाऊं[2] ।
पेमां पुनि[1] कुंवर[हिं] सथ लाई[2] । आगें लिए[3] मंदिल[4] ले[5] आई ।
कहेसि बीर अब पावहु कया । सिद्धि पूरि तुम्ह अपुरब[1] पया ।
सुख अनुसरि आदर कै लहू[1] । दुख कहु[2] उठि जस अनुरि दहू[3] ।
बीती तुम्हं[1] दुख निसि अंधियारी[2] । अब दुख अस[3] सुख उजियारी[4] ।
सतरहिं[1] पम अमोघ दधि जीवा मकरनि[2] अधरि[3] ।
पार कुसल जो उतरहिं[1] सिधि साहस कर[2] धरि[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सुनते। २ ए भा राज कुंवर कै (कर—भा) नावा। ३ ए बाजा। ४ ए भा बधावा।
(२) १ रा पुनि ए सुनि। २ ए भी बाई भा सम लाई। ३ ए आग लिये रा आगें लिए। ४ भा मादर। ५ रा में यह शब्द नहीं है।
(३) १ ए भा सिधि पूरी सुह (भई तुम्हं—भा) सारग।
(४) १ ए सुख अनुसरि आमरो कीन्हा रा सुख अनुसरि आन सै लहु। २ ए कै भा कौं। ३ ए जिन अनुरी कीन्हा रा जस अजनि देहु।
(५) १ ए सुहे। २ ए अंध्यारी। ३ रा वगिरिरि दुस्स ए अब दस अस। ४ रा सुख बरस मारो।
(६) १ रा पैरहु ए समरन। २ रा जीवा सप अपरि ए भा जिव (जिउ—भा) अग गम (कर—भा) मरि (अपरि—भा)।
(७) १ ए कुसल सौ उतरहु भा भा कमर उतरहि। ए का। ३ भा धरि।

अर्थ—(१) राजकुमार का नाम सुनते ही चित्तविश्राम नगर में बधावा बजा। (२) तदनन्तर पेमां कुमार को संग लेकर उसे आगे किए हुए मंदिर (राजभवन) को ले आई। (३) उसने कहा है भाई अब अपना शरीर पा लो अथवा उतारो क्योंकि [अब] तुमने [अपने] अपूर्व [साधना-] पथ में सिद्धि प्राप्त कर ली है। (४) अब तुम अनुसार होकर सुख को आदरपूर्वक ग्रहण करो और दुःख

को अलावलि था [क्योंकि वह मर चुका है]। (५) तुम्हारी दुःख की अँधेरी रात्रि बीत गई और अब [उस] दुःख [की अँधेरी रात्रि] के अंत पर सुख की उजाली है।

(६) जीवा (मरजीवा ?) अपनी शक्ति के अधिकार बराबर (शक्ति भर) प्रेम के अमोघ (अम्पर्य ?) जल का संतरण करता है। (७) [यदि] वह कुशलपूर्वक [समुद्र के] पार उतर जाता है तो सिद्धि [उसके] साहस की चेरी हो जाती है।

टिप्पणी—(१) अबाव < अव्रावण < अवर्षण = अभ्युदय अथवा शुभ-सूचक भाव। (४) अगुसर < अग्गसर < अग्र + सृ = आगे जाना। (६) सकति < शक्ति। अधरि < अधिमार < अधिकार। तु 'सकति अधेर'— 'सत कबीर' मजबी ४६६। (७) चेरि < चेटी = दासी।

[४२३]

फुनि[1] सब समाचार जेस[2] अहा[3] । पेमैं राज कुँवर सउँ[4] कहा ।
जो मधुमालति लिखि जो[1] पठावा । सो सब[2] कुँवरहि बाँचि[3] सुनावा ।
फुनि[1] कागर मसि माँगी[2] बारा । पाती उतर[4] लिखै अनुसारा ।
प्रथमहि[1] उतपति नाउ बिधाता[2] । तौ[3] फुनि[4] राजकुँवर कुसलाता ।
और बात नहिं[1] लिखी सँभारी[2] । दुखि जात हहि कहिहहि भारी ।
न का लिखौं जौनि बिधि आएउ[1] राज कुँवर मम ग्रह[2] ।
मांसा मांसु न तन रहा[1] रगत न रातो[2] देह ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ ए जो। ३ ए जस। ४ मा आहा। ५ ए सौ रा मा सौं।

(२) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ मा फुनि ए सब। ३ ए बात।

(३) १ रा ए पुनि। २ ए कागद। ३ मा मा ए मागेउ। ४ ए अमत। ५ रा लिखि।

(४) १ ए प्रथम। २ ए करता की बाता। ३ ए औ। ४ रा ए पुनि।

(५) १ रा सब। २ ए कहा बिचारी मा लिखहिं सँभारी। ३ मा हहि रा है। ४ रा कहिहै मा कहिहहि मा कहिमहि।

(६) १ रा जैस मयु, मा जौ बिधि। २ रा अबहूँ (?) ए मे यह शब्द नहीं है, मा आगेउ। ३ ए कुँवर अब मन मोह।

(७) १ मा रही। २ ए रती रकत मा रा रती रकत नहि।

अर्थ—(१) तदनंतर जितना समाचार था वह [सभी] पेमा ने राजकुमार (मनोहर) से कहा, (२) और मधुमालती ने जो कुछ लिख भेजा था, वह सब उसने कुमार को पढ़ कर सुनाया। (३) तदनंतर बाला (पेमा) स्याही और कागज माँग कर पत्रिका का उत्तर लिखने लगी (४) "पहले आदि में ही विधाता (सृष्टि-नियामक) का नाम लिखा, और उसके अनंतर राजकुमार

का कुशल [जानना]। (५) और बातें मैंने यह सोच कर नहीं लिखीं कि बारी देखकर जा रहे हैं और वे उन्हें कहेंगे।

(६) मैं क्या लिखूँ किस प्रकार राजकुमार [यहाँ] मेरे घर आया। (७) उसके शरीर में न एक माशा मांस [शेष] रहा है और न रत्ती भर रक्त [शेष] रहा है।"

टिप्पणी—(१) जेंव < जतिव < यापन् = जिनना। (५) समार < स + मारय् = स्मरण करना मानना। (७) रगत < रक्त। रत्ती < रक्तिका = घुँघची घुँघची के बराबर तौल का परिमाण।

[४२४]

न जानां तेहि दिन तुम्ह[1] मारा। के परबत के समुद पवारा[2]।
मोहि नहिं अही[1] कुँवर कै[2] आसा। अरगसार आएउ[3] मोहि[4] पासा[5]।
मैं ताहि[1] जिअत दरिस[2] सिधि पाई। एहि अंतर तुम्ह[3] पाती आई।
अगिनि माँह जस जरत[1] परानी। अनचीतें सिर बरिसै पानी।
तस सुख भएउ कुँवर[1] सुनि पाती। हरखि हरखि जनि बिहरै[2] छाती।[3]
जौ निहचै[1] जिय माहँ[2] ओरगा तुम्ह यह काज।
आइ निरखि भै[1] उगरहु मउ[2] आपन सब[3] लाज[4]॥

पाठान्तर—(१) १ ए तू। २ मा अहारा ए अंहारा।
(२) १ मा न आहि ए न हुती। २ मा की ए कैर। ३ मा अकस्मात आएउ मा भा अरगमात आयेउ ए विधि मैं आइ आनु। ४ ए मोहि। ५ भा वासा।
(३) १ मा ए ताहि। २ ए देखु। ३ ए तुम।
(४) १ ए जरै। २ ए जरु।
(५) १ मा भा कुँवरहि। २ ए हरखि हरखि जनि बिहरत मा हरखि हरख न हिरै मा हरीओ हरख जनि बिहरै। ३ ए में अर्द्धाली का पाठ है — तस रस भो कुँवर एहि बारी। सु का जानहि है बर बारी।
(६) १ मा निरचै ए भा निस्चै। २ मा ए माहै। ३ मा उदचउ भगरा ओरगा ए उगा तै येह भा उरगउ हिए यह।
(७) १ मा भै रा हारा। २ ए भै। ३ मा ए बांचे भा बाचें। ४ ए जा। ५ मा राज।

अर्थ—"(१) मैंने तो जाना (समझा) था कि तुमने उसे उसी दिन मार डाला [होगा] और या तो पर्वत पर या समुद्र में उसे फेंक दिया होगा। (२) मुझे कुमार [के जीवित रहने] की आशा नहीं थी : वह तो अकस्मात् मेरे पास आया। (३) उसको जीवित देखकर [मानों] मैंने सिद्धि प्राप्त की और इसी बीच तुम्हारी पत्रिका [भी] आ गई। (४) जैसे अग्नि में जलते हुए प्राणी के सिर पर अप्रत्याशित रूप से पानी की वर्षा हो जाए (५) वैसा ही सुख कुमार को [तुम्हारी]

को जलांजलि दो [क्योंकि वह मर चुका है]। (५) तुम्हारी दुःख की अँधेरी रात्रि बीत गई और अब [उस] दुःख [की अँधेरी रात्रि] के अंत पर सुख की उजाली है।

(६) जीवा (मरजीवा ?) अपनी शक्ति के अधिकार बराबर (शक्ति भर) प्रेम के समोप (सम्पर्क ?) जल का संतरण करता है। (७) [यदि] वह कुशलपूर्वक [समुद्र के] पार उतर जाता है तो सिद्धि [उसके] साम्मुख्य की चेरी हो जाती है।

टिप्पणी—(१) बधाव < बद्धावण < वर्धापन = अभ्युदय अथवा हर्ष-सूचक वाद्य। (४) अनुसर < अगसर < अग्र + सृ = आगे जाना। (६) सकति < शक्ति। अधेरि < अधिकार < अधिकार। तु 'सकति अधेर'— 'सत अधीर' मधुमी ४६ ६। (७) चेरि < चेटी = दासी।

[४२१]

फुनि[1] सभ समाचार जस[2] अहा[3]। पेमैं राज कुँवर सउ[4] कहा।
औ मधुमालति लिखि जो[1] पठावा। सो सभ[2] कुँवरहि बाँचि[3] सुनावा।
फुनि[1] कागर मसि माँगी[3] बारा। पाती उतर[4] लिखे अनुसारा।
प्रथमहि[1] उतपति नाउ बिधाता[2]। तौ[3] फुनि[4] राजकुँवर कसलाता।
औरु बात महि[1] लिखी सभारी[2]। दरसि आस हहि कहिहहि बारी।
मैं का लिखौ जौमि बिधि आएउ[1] राज कुँवर मम ग्रह[3]।
माँसा माँसु न तन रहा[1] रगत न राती[2] दह॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ ए जो। ३ ए अब। ४ मा आहा। ५ ए सो रा मा सो।
(२) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ मा फुनि ए सब। ३ ए बाच।
(३) १ रा ए पुनि। २ ए कागद। ३ मा मा ए मागेउ। ४ ए अपथ। ५ रा लिखि।
(४) १ ए प्रथम। २ ए करता की बाता। ३ ए औ। ४ रा ए पुनि।
(५) १ रा सम। २ ए कहा बिचारी मा लिखहि सँभारी। ३ मा हहि, रा है। ४ रा कहिहैं मा कहिहहि मा कहिमहि।
(६) १ रा जौस मधु, मा जौ बिधि। २ रा अबहूं (?) ए मे यह शब्द नहीं है मा आमेउ। ३ ए कुँवर अब मन माँह।
(७) १ मा रही। २ ए रही रक्त मा रा रही रकत नाहि।

अर्थ—(१) तदनंतर जितना समाचार था, वह [सभी] पेमा ने राजकुमार (मनोहर) से कहा, (२) और मधुमालती ने जो कुछ लिख भेजा था वह सब उसने कुमार को पढ़ कर सुनाया। (३) तदनंतर बाला (पेमा) स्याही और कागज माँग कर पत्रिका का उत्तर लिखने लगी (४) "पहले आदि में ही विधाता (सृष्टि-विधायक) का नाम लिखना और उसके अनंतर राजकुमार

का कुमार [जानता]। (५) और बातें मैंने यह सोच कर नहीं लिखीं कि भाटो देखकर जा रहे हैं और वे उन्हें कहेंगे।

(६) मैं क्या लिखूँ जिस प्रकार राजकुमार [यहाँ] मेरे घर आया। (७) उसके शरीर में न एक माशा माँस [शेष] रहा है और न रत्ती भर रक्त [शेष] रहा है।"

टिप्पणी—(१) जत < जत्तिअ < यावत् = जितना। (५) सभार < सं + भारय् = स्मरण करना या रखना। (७) रकत < रक्त। रत्ती < रक्तिका = घुँघुची घुँघुची के बराबर तौल का परिमाण।

[४२४]

मैं जाना तेहि दिन तुम्ह[1] मारा । कै परबत कै समुद पवारा[2] ।
मोहि नहिं अहो[1] कुँवर कै[2] आसा । अकसमात[3] आएउ[4] मोहि पासा[5] ।
मैं ओहि[1] जिअत देखि[2] निधि पाई । एहि अंतर तुम्ह[3] पाती आई ।
अगिनि माँह जस जरत[1] पराती । अनचीतें सिर बरिसे पानी ।
तस सुख भएउ कुँवर[1] सुनि पाती । हरिउँ हरखि जनि बिहरे[2] छाती ।[3]
जो निहचै[1] जिय माहँ[2] जोग्सा तुम्ह यह काज ।
आइ निरख भा[1] उतरहु गउ[3] आपन गम[4] साज[5] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तू। २ मा पवारा ए अंबारा।
(२) १ मा म आहि ए न हुती। २ मा की ग केर। ३ ग अकस्मात आएउ मा मा अकसमात आयेउ ए निधि मैं आउ आजु। ४ ग मोहि। ५ मा पासा।
(३) १ मा ग ताहि। २ ग देखु। ३ ए तुअ।
(४) १ ए जरै। २ ग जरु।
(५) १ मा मा कुँवरहि। २ ग हरिउ हरखि जनि बिहरत मा हरखित हरख न हिरै मा हरीमा हरख जनि बिहरै। ३ ग में अर्द्धाली का पाठ है — तस सुख भो कुँवर एहि बारी। तू का जानसि है बर भारी।
(६) १ मा निरचै ग मा निश्चै। २ मा ग माहे। ३ मा उटमेउ तुम्हा दसह ग उम्हा तैं येह मा जगाउ निय मन।
(७) १ मा मैं ग हाउ। २ ग मैं। ३ मा ग आने मा आन। ४ ग जो। ५ मा काज।

अर्थ—"(१) मैंने तो जाना (समझा) था कि तुमने उसे उसी दिन मार डाला [होगा] और या तो पर्वत पर या समुद्र में उसे फेंक दिया होगा। (२) मुझे कुमार [के जीवित रहने] की आशा नहीं थी : वह तो अकस्मात् मेरे पास आया। (३) उसको जीवित देखकर [मानों] मैंने निधि प्राप्त की और इसी बीच तुम्हारी पत्रिका [भी] आ गई। (४) जैसे अग्नि में जलते हुए प्राणी के सिर पर अप्रत्याशित रूप से पानी की वर्षा हो जाए (५) वैसा ही सुख कुमार को [तुम्हारी]

पत्रिका सुनकर हुआ; [उसे इतना हर्ष हुआ कि] मैं डर गई कि कहीं हर्ष [के अतिरेक] से उसकी छाती न फट जाए।

(६) यदि तुमने निश्चयपूर्वक अपने जी में इस कार्य को कर (ठान) लिया है (७) तो तुम अपने समस्त साज के साथ निकट आकर उतरो तो।"

टिप्पणी—(१) पचार < प्र + चारय् = फेंकना। (३) (५) पाती < पत्रिका। (५) बिहर = वि + घट् = टूटना फटना। (६) ओटब < आवर्त्त < आ + वृत् = करना। (७) सेउं < सम = साथ।

[४२५]

जो हम मह[1] आनहिं[2] निसु भाऊ । एहि दिसि हम किछु[4] करहिं उपाऊ[5] ।
जौ[1] निहचै[2] करिहहु[3] यह[4] काजा । निकट आइ सौ[5] उतरहु राजा ।
यह कलि मंत्र[1] कालिह[2] करु काजू । सो सयान न लइ जो भाजू ।
पेमैं पाति[1] उतर लिखि दीन्ही । औ मधुमालति कह[2] किछु[3] चीन्हा ।
बहुरि कुंवर दुख बात सवाई[1] । मधुमालति कह[2] लिखि सो[3] पठाई ।
कहा कुंवर बारी[1] सउं[2] पाय[3] लागि कर जोरि ।
दिहहु[1] गुपुत मधुमालती कह[2] यह दुख पाती मोरि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा सत। २ ए पानी। ३ मा कुमि मा मैं। ४ मा कछु, ए में यह शब्द नहीं है। ५ ए कव।
(२) १ ए तौ। २ मा निस्चै ए भा निस्चै। ३ ए करिहौ। ४ मा इकइ ए जे। ५ मा सहु भा ए कै।
(३) १ ए मैहि कलि मांता। २ मा ए कालि। ३ ए का साजू। ४ ए करिले।
(४) १ मा ए पाती। २ ए के। ३ मा कुछु।
(५) १ ए सबाई। २ ए के मा को। ३ मा भा को ए में यह शब्द नहीं है।
(६) १ मा भा बारिन्ह। २ ए सै रा सां। ३ मा पाये ए पाँव।
(७) १ ए दिजहु भा दीजियहि। २ मा को रा ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा सै ए भा सै।

अर्थ— (१) यदि हम यह भाव निश्चित रूप से जान लें तो हम इस दिशा में कुछ उपाय करें। (२) यदि तुम निश्चित रूप से यह कार्य करोगे ही तो हे राजा हमारे निकट आकर उतरो। (३) यह तो कलियुग का मंत्र है कि कार्य कल करो समझदार नहीं है जो कार्य को आज ही कर डाले। (४) प्रेमा ने पत्रिका का उत्तर लिखकर दिया और मधुमालती को [देने के लिए] अपना कुछ चिह्न भी दिया। (५) तदनंतर कुमार की समस्त दुःख-वार्ता उसने लिख कर मधुमालती को भेजी।

(६) [तदनंतर] कुमार ने बारी से उसके पैरों लगकर और उससे हाथ जोड़कर कहा "(७) तुम मधुमालती को मेरी यह दुःख-पत्रिका गुप्त रूप से देना।"

टिप्पणी—(३) कालिह < कल्य < कल्य = कल। (३) सयान < सज्ञान। (४), (७) पाती = पत्रिका।

[४२६]

प्रथमहि सवरौं[1] नाउँ[2] गोसाईं । जो भरि पूरि रहा सब ठाईं ।
दूसर लेउँ नाउँ[1] तेहि[2] करा । उतरब पार लागि जेहि बेरा ।
अब यह सुनु[1] बिनती एक मोरी । जिउ[2] घट रहा सो लिएउ[3] अँजोरी[4] ।
कहेसि जो तू[1] जिय[2] पर आवसि । तौ र भलेहि[3] माहि[4] दरस पावसि ।
मैं तौ अइस[1] भएउँ[2] जस चही[3] । सो पतिपारु[4] बचन जो[5] कही[6] ।
मति भावता बीछुर[1] बरु जिउ तजउ[2] सरीर ।
कोटि मिरितु[1] महि[2] पूजहि जिनुस[3] बियोग क[4] पीर ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए सुमिरौं। २ ए नाम।
(२) १ ए नाम। २ मा तिहि।
(३) १ मा अब सुनहु बिनती मा पिया सुनहु बिनती इजर ए अब प्रीतम सुनु बिनती। २ मा जो। ३ मा लियहु ए लीन्ह। ४ ए अँजोरी।
(४) १ रा कहै को पी तुइ मा कहे कि जौ तइ ए कहा करी जो मा कहै कि जौ तैं। २ मा जिअ ए जिउ। ३ मा भिलैहि ए भल। ४ ए माहि।
(५) १ मा ऐसा ए ऐस। २ ए भई। ३ मा चहे ए चही। ४ मा पतिपाल। ५ ए जे। ६ मा कहे।
(६) १ मा बिछुरेउ। २ ए तजै।
(७) १ मा मित। २ ए मा। ३ मा पुजैही। ३ मा जिनुर ए मन एक। ४ मा बिराम की ए प्रेम को।

अर्थ—"(१) पहले ही (सर्व प्रथम) मैं अपने स्वामी (ईश्वर) के नाम का स्मरण करता हूँ जो समस्त स्थानों में भरपूर पूरित हो रहा है। (२) उसके अनंतर मैं उस (मुहम्मद?) का नाम लेता हूँ जिसके बेड़े (जलयान) से लगकर मैं [भवसागर के] पार उतरूँगा। (३) अब यह एक बिनती मेरी सुनो। मेरे शरीर में जो जीव था, वह तुमने अपनी अंजली में भर (छीन) लिया (४) और कहा कि 'यदि तू अपने जीव [को देने] पर आ जाए, तो भले ही तू मुझे देखने पाएगा।' (५) [अब] मैं तो ऐसा ही हो गया जैसा तू चाहती थी [अतः] तूने जो वचन कहा था, उसका प्रतिपालन कर।

(६) भावता (प्रिय) न बिछुड़े भले ही जीव शरीर को छोड़ दे (७) [क्योंकि] वियोग की एक क्षण की पीड़ा को कोटि मृत्युएँ भी नहीं पा सकती हैं।"

टिप्पणी—(१) सँवर < समर < स्मृ = स्मरण करना। ठाईं < स्थान।

[४२७]

सब सिखि[1] जहाँ रहहि[2] भाग[3] । मैं सब आनि जियहि[4] लागा ।
एक[1] परिहरि नाहि मउँ[2] बिन मागमि[3] । सबै सिखि[4] ऊपर नाहि पावसि[5] ।

अस भा चित तुम्ह रूप भिलानी[1] । घट महँ[2] सांसहु[3] बाट भुलानी[3] ।
अस भै[1] छिपित भएउ[2] जिउ तोही[4] । सुमिरन[5] तोर बिसरि गा मोही ।
तोर जीउ तोहि सेतें[1] बारा । का जानसि जिअरे कै[3] सारा ।
तोर जीउ तोहि सतें[1] का जानसि[2] पर दुक्ख ।
कठिन पीर यह[1] तिन्ह प जानी[2] जिन्ह[3] देखा तुम मुक्ख ॥

पाठान्तर— मा भा मे उपर्युक्त अर्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा मा रूप सिरिस्टि ए रूप क सिस्टि। २ मा जहाँ कहि ए जहाँ लगु। ३ रा लावा ए लाई। ४ ए सब अपने जीउ।
(२) १ भा ए सब। २ रा तोहि सेउ मा तोहि सै ए मैं ताके। ३ ए मन लावा रा चित लाएसि। ४ ए सबै भा सब। ५ मा भा सिरिस्टि (सिस्टी—मा)। ६ ए तोहि ऊपर पावा।
(३) १ भा मा ए अस भा (भौ—ए) चित तुम्ह (तोहि—ए) रूप भिलानी। २ ए मो। ३ मा सांसहि बाट भुलानी ए सबै बात भुलानी रा सबवा बाट भुलानी।
(४) १ मा छपि रा होइ, ए भोर। २ ए भा। ३ रा चित मा जिव। ४ ए तोही। ५ मा सुमिरन।
(५) १ मा ए सेती। २ ए जानहु। ३ मा जिअ बेद कि ए पर पीर की मा जिउ बेद कै।
(६) १ मा ए सेती। २ ए जानहि।
(७) १ मा इनह, ए मे यह शब्द नहीं है। २ मा भा तीनी (तिन—मा) पै जानी। ३ मा जिती ए जो रा मे यह शब्द नहीं है। ४ मा देखउ तुम मुक्ख मा देपी तुम्ह मुप ए देखा तो मुख।

अर्थ—"(१) सृष्टि में जहाँ तक भी रूप आए (अवतरित हुए) मैंने उन सब को लाकर अपने जीव को दिखाया (२) किन्तु मेरे जीव ने सब को त्याग कर तुम से चित्त लगाया और सारी सृष्टि के ऊपर उसने तुम्हें पाया। (३) तुम्हारे रूप के ध्यान में [मेरा] चित्त ऐसा [तन्मय] हो गया कि शरीर में श्वास भी मार्ग भूल गई। (४) ऐसा होकर [मेरा] जीव तुम में [ऐसा] लिप्त हो गया कि [तुमसे अभिन्न होने के कारण] तुम्हारा स्मरण मुझे विस्मृत हो गया। (५) तुम्हारा जीव इसीलिए, हे बाला, मेरे जीव का हाल क्या जाने?

(६) तुम्हारा जीव इसीलिए, दूसरे का दुःख क्या जाने? (७) यह कठिन पीड़ा उन्हीं ने ही जानी है जिन्होंने तुम्हारा मुख देखा है।

टिप्पणी—(३) बाट < वट्ट < वर्त्मन् = रास्ता। (४) छिपित < क्षिप्त।

[४२८]

अचल अडोलन ह जग जते[1] । बर कामिनि त[2] पाथर सते[3] ।
तोर जीउ पाथर सम बाला । पम बिछुरा[1] सतत कहि[2] हाला ।

जिन धरि छोह न होहु छोहारी[1] । हिए कठिन मुख[2] कुअरि[3] रसारी ।
नरियर जसि[1] प्रीति कर बारा[2] । ऊपर करकस हिए[3] रसारा ।
जो तोर दुख साथी हुत[1] मोरा । तो यह सहउँ[2] कठिन दुख तोरा ।
सपनें जो जिउ पावों[1] बारि[2] तुम्हार ठाउ ।
जागें[1] बहुरि[2] न आव समुझि कया[3] बिसराउ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा अडोल जीउ जग जेती ए अडोल है जग जेती। २ ए जे। ३ मा ए सेती।
(२) १ मा जीउ ए. मेवाम। २ मा कीमी (<किमि) ए मा किमि।
(३) १ ए होहु तुमारी रा होहु बयारी। २ ए मेह। ३ मा मुख (<मुख) कुमरी रा मुख (<मुख) [दूसरा शब्द नहीं है] ए मा कुअर, भा मुहं कुअरि।
(४) १ ए जैस। २ रा कर बारा मा एक बारा। ३ ए हिय। ४ रा रसाला।
(५) १ मा हत ए है। २ ए रे सहा मा दगह सहेउ रा मैं सहेउ।
(६) १ मा पावै। २ मा ए बार।
(७) १ ए जागे। २ रा का पाठ स्पष्ट नहीं है। ३ मा काया।

अर्थ—"(१) जगत् में जितने भी [पदार्थ] अचल और अडोल हैं हे श्रेष्ठ कामिनी वे पत्थर से [उतरे हुए ही] हैं। (२) तेरा जीव हे बाला पत्थर के समान है; [किंतु] प्रेम के बिना निरंतर वह किस दशा में रहता है? (३) चित्त में कृपापूर्ण स्नेह धारण कर तुम दयालु नहीं होती हो हे कुमारी तुम हृदय में कठिन हो [केवल] मुख से रसीली हो। (४) हे बाला, नारियल के समान [होकर] प्रीति करो जो ऊपर से कर्कश (कठोर) किंतु हृदय से रसीला होता है। (५) क्योंकि तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) दुख मेरा साथी था इसीलिए मैं तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) कठिन दुख सह सका।

(६) हे बालिका स्वप्न में यदि मैं तुम्हारे स्थान पर अपने जीव को पा भी जाऊँ, (७) तो जागने पर वह पुनः [मेरी] काया को अपना विमान समझकर [मेरे शरीर में] नहीं आता है।"

टिप्पणी—(१) (२) पाथर<प्रस्तर=पत्थर। (३) (४) रसार<रसाल। (४) नरियर<नारिकेर। (५) जौ<जओ<यत=क्योंकि। (६) ठाउ<स्थान। (७) बिसराउ <विश्राम।

[४२९]

जो दरसन म[1] दरसि पारी । अनंद दुख म जागि[2] दुखारी ।
जासु दरसि ध्यान सम[1] पागा । जर मन म जागि[2] गरागा ।
भलें भोगनि[1] उपज बिरागा । अपनें[2] बिरह उ मन लागा ।
भरनिय[1] पागि पर गिय[2] आई । मासु भरान[3] लगि मुरझाई[4] ।
जो दरसनि[1] आपन मग यारी । तो जानगि[2] दुख याग पगारा ।

बदन देखावहि[1] और कहँ[2] दरपन लै सइ[3] देखु ।
कहु[1] तोरें[2] दुख कस दुखी[3] सब[4] जग देखि[5] बिसेख[6] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा लेइ। २ मा ए अपने दुख मैं (होइ—मा)। ३ रा ए चाहु।
(२) १ मा तब। २ मा मदन की मा बदन मैं। ३ मा मा अगिनि।
(३) १ मा जोब्बन (<जोबन नागरी ?) ए मा जोबन। २ मा मा उपजु, ए नाहि। ३ ए अपने। ४ मा जारा।
(४) १ मा मा आपनि ए अपनी। २ ए फांस परे गीव मा फांसि बर गीव गीवं। ३ मा आपन। ४ ए मुरछाई।
(५) १ ए दसहु। २ ए जानहु। ३ मा मे बरष है अपने दुख होइ जासि दुसारी (तुल प्रथम अर्द्धाली)।
(६) १ मा देखाउ म ए देखाउ। २ ए के। ३ ए सी रा सोइ।
(७) १ ए कहु। २ मा ए तोर, रा तोरे। ३ ए कैस है। ४ ए मा सब। ५ ए देखु। ६ ए बिसेख।

अर्थ—"(१) यदि तू, हे बालिका दर्पण लेकर [अपने मुख को] देखे तो तू [अपने रूप को देखकर] अपने ही [विरह] दुख से दुखी हो जाएगी (२) अपने-आप को देखकर तेरे शरीर में पीड़ा व्याप्त होगी और मदन (काम) की अग्नि से तेरा शरीर जल उठेगा; (३) अपने ही यौवन से विकार उत्पन्न हो जाएगा और अपने ही विरह से तेरे शरीर में ज्वाला उठने लगेगी; (४) अपनी ही फाँसी [तेरे] गले में आकर पड़ जाएगी और तू अपने-आप को देखकर [स्वयं] मूर्छित हो जाएगी। (५) यदि तू अपने मुख को देखेगी तो तू पराए की दुख-वार्ता जानेगी।

(६) दूसरों को [जैसे] तू अपना मुख दिखाती है, [वैसे ही] दर्पण लेकर तू स्वयं भी उसको देख। (७) [और] तू [उसे] देखकर विचार करे कि समस्त जग तेरे [विरह] दुख में कैसा (कितना) दुखी [हो सकता] है।

टिप्पणी—(३) जोबनि < योवनि। (४) फाँसि < पाश। गिय < गिव < ग्रीवा। अपान < अप्पाण < आत्मन्। (५) बारी < बालिका। (६) सई < स्वयम्। (७) बिसेख < वि + क्षेपण् = विक्षेपण व अस्थिर करना व्यवच्छेद करना।

[४३०]

बारिन्ह[1] पाती[2] उतर लिखि पावा[3] । हरखित ग[4] सुख चाह जनावा[5] ।
सुनत मनोहर कै हुलसाई[1] । भई महारस नगर बधाई ।
ताराचंद कुँवर कहँ पाई[1] । रानी[2] पाती बाँचि[3] सुनाई[4] ।
पाती सुमन्त्र[1] कँवर अस[2] कहा । बिधि सो किएउ[3] जो मोहि चित रहा[4] ।
करिऔ बगि[1] चल[2] कर साजू[3] । बिलम न करिय परम क काजू[4] ।
पाँच सबद धन बाज नेवता सब[1] परिवार ।
सुदिन साधि कै[1] कीन्ह पयाना बिक्रम राय[2] कुमार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बारी रा बारिन। २ मा मा पाति। ३ मा भा पाएउ। ४ मा मै ए मैं। ५ मा मा सुनायउ।
(२) १ मा हुमुमाई।
(३) १ मा कहरायउ। २ ए रानिहि। ३ मा पाति पढाइ। ४ मा सुनायउ।
(४) १ मा सुनहु ए पढि जा। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए बीरा। ४ ए जा रा मारे, मा जा हम। ५ मा मा महा।
(५) १ मा करिअै बेगि मव ए करि बेगि भा करहु बमि बग। २ भा धर्म। ३ मा का माजा ए भा कै माजा। ४ मा बेलब न करीम धरम के काजा ए बिलंब न साई कीजी काजा भा बिलम न करिय धरम कै काजा।
(६) १ ए भा सब।
(७) १ ए में 'मैं' नहीं है। २ मा गाइ, ए राय।

अर्थ—(१) बारियों ने पत्रिका का उत्तर लिखा हुआ प्राप्त किया और हर्षित आकर उन्होंने [वहाँ का] शुभ-समाचार सुनाया। (२) मनोहर की कुशलता सुनते ही महारस नगर में बधाई हुई। (३) ताराचंद कुमार को बुलाकर रानी ने पत्रिका बाँच कर सुनाई। (४) पत्रिका को सुनते ही कुमार ने ऐसा कहा, "विधाता ने वह किया जो मेरे चित्त में था। (५) [अब] शीघ्र ही चलने की तैयारी कीजिए; धर्म के कार्य में विलंब न कीजिए।

(६) पंच शब्द (पंचवाद्य) सघन रूप से बज उठे और समस्त परिवार आमंत्रित हुआ। (७) अच्छा दिन निश्चित [करा] कर भुआल विक्रम राज ने प्रयाण किया।

टिप्पणी—(१) (१) पाती<पत्रिका। (२) बधाई<बर्धापन<वर्धापन=अभ्युदय या हर्ष-सूचक वाद्य। (३) राव<रावय्=बुलाना आह्वान करना। (७) पयान<प्रयाण। भुआर<भूपाल।

[४३१]

चलउ साजि दर बिक्रम राऊ। सहु निसि परउ[1] निसानन्हि घाऊ।
सबद[2] निसान जो[1] उठ[2] अदोरा। मग महँ पन मचि[3] मरोरा।
ग ल भाउ[1] कुँवर असवारा। मागें घोर परे[2] घनवारा[3]।
गनिहि का गाजे[1] मोहाना[1]। मल[1] अनन्त करम बिलोमा।
जननि घोर[1] मधुमालति बमी। जग माहि मधुनायक[2] जमी।
चला सभ[1] दर परिगह परजा पौनि सबार[2]।
हय गय ल क[1] गाहे मउ[3] सूरज गाउ[1] सुबार[2]॥

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त तृतीय अर्धाली तथा अर्धालियाँ के बाद म आती है।
(१) १ ए परा मा बरे। २ मा निसानन्ह ए निसान।
(२) १ मा ए में यह शब्द नहीं है मा अनि। २ मा भा उठेउ ए उठा। ३ मा मग ए मांझ।
(३) १ मा मैमन भाउ ए मैं दर मो। २ ए परे। ३ मा घनसारा (<घनसार)।

(४) १ ए के साजा। २ रा ए चकोला। ३ मा चली ए चली। ४ मा मनरित करत कलोला ए अनंद कर रस केला।

(५) १ ए कोरा। २ मा मधि मायेक ए थो मायेक।

(६) १ मा मा ए सर्व। २ ए सवाइ।

(७) १ मा हुम गय दल की ए मेह घो दल के रा मा हय मय दल के।
२ ए ते। ३ ए सूर्ज गये। ४ मा छपाई, ए छपाइ।

अर्थ—(१) विक्रमराज दल सजाकर चले, और चारों ओर चौकों पर चाव (आघात) पड़ा। (२) चौसों के शब्द से जो शोर उठने लगा [उसको सुनकर] शेष अपने सहस्र फणों को सिकोड़ने लगे। (३) कुमार [उस] दल के साथ [घोड़ पर] सवार हुआ आगे-आगे चलबारा (थानेदार) घोड़ा पकड़े हुए था। (४) रानियों के लिए चौडोल साजे गए, और [इस प्रकार सब] कल्लोल करते हुए चले। (५) मधुमालती जननी की कोड़ (गोद) में बैठी जैसे शरद्‌गगा (विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा) [की] कोड़ में मधु-मासक (चैत्र का चांद्रमा) हो।

(६) समस्त दल परिगह (भृत्यादि) चला तथा समस्त प्रजा तथा पवनिये (हर्षादि के अवसरों पर उपहार-पुरस्कार पाने वाले) चले। (७) घोड़े और हाथियों की सेना की धूल से सूर्य छिप गया।

टिप्पणी—(२) मदोर < आंदोलन (?)। सकोर < सं + कोटय् = सिकोड़ना। (३) सै < सम = साथ। चलबार < चायवाल < स्थानपाल = थानेदार या चौकीदार। (४) चडोल < चतुर्दोल = चौडोल। (५) कोर < क्रोड < गोद। शरद < शरद् = शरद्-अग-वीथि = विशाखा अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्रों में चन्द्रमा का मार्ग। (६) परिगह < परिग्रह = भृत्यादि। (७) छक < छवक = छिपना।

[४३२]

परत दवस दस बाट[१] सुटानी। उतरे गै डोरिया घर पानी[२]।
ऊंचे दिए[१] तानि सरवानी। बाजे[२] सबद उतग[३] निसानी।
भिए[१] भरे सम महल जो आहे[३]। कया बकृति दसि[४] म न सराहे।
फूनि[१] राज[२] सम[३] मंति[४] बुसाए[५]। बिरिध समापति ग्यानी राए[६]।
ताराचंद मांझ बैसारा[१]। सम मिलि करहि घर आई बिचारा।
फनि[१] एकमत म[२] मनिन्ह कहा राय पई[३] आइ[४]।
चित्रसनि जो पमां दुबो[१] पठावहि राइ[२]॥

पाठान्तर—(१) १ ए बात (< बाट फारसी लिपि)। २ रा उतरे आइ समुद के पानी मा उतरेउ गै दरिया बर बानी ए चित विमराउ आइ तुसानी।

(२) १ मा ऊंचे हिये ए ऊंचा किया। २ ए बाजा। ३ मा मा उतार।

(३) १ ए किया। २ मा सब ए बा सब। ३ ए जो अहे। ४ मा बाहन देखि ए पहन (< बकृति: फारसी लिपि) जो रा बकृति है।

(४) १ रा ए पुनि। २ ए गाजै। ३ मा ए मन। ४ मा मा सोग। ५ ए बोलावा। ६ मा मा बड़ सभापति मत्री गय ए बहु गय मतै हँकरावा रा विरिध सभापनि ग्यानी आए।

(५) १ मा बैठारा। २ मा मत मिलि करही मत ए मत मिलि कै घर करै रा मत मिलि करहहि आइ।

(६) १ रा ए पुनि। २ रा होइ। ३ ए मा सौं। ४ मा आइ।

(७) १ ए बुलहु। २ मा पठावहि राइ, मा पठाइ बुलाइ ए पठावा रा।

अर्थ—(१) चलते-चलते दस दिनों में मार्ग समाप्त हुआ और वे आकर डोरिया घर पानी (?) में उतरे। (२) वहाँ उन्होंने ऊँचे सरचान (बड़े शामियाने) तान दिए, और धौंसों के उत्तम शब्द बज उठे। (३) जो भी महल (कपड़ों के प्रासाद?) [साथ] थे उन्हें खड़ा किया गया। कथा बढ़ती हुई देखकर मैंने उसकी सराहना (प्रशंसा) नहीं की [है]। (४) फिर राजा ने समस्त मंत्रियों को बुलाया और बूढ़ों सभापति तथा ज्ञानियों को बुलाया। (५) [उन्होंने] मध्य में ताराचंद को बिठाया और सब मिलकर घर में आकर विचार करने लगे।

(६) तदनंतर एकमत होकर मंत्रियों ने राजा के पास आकर कहा (७) 'चित्रसेन और पेमा दोनों को हे राजा आप बुला भेजें।"

टिप्पणी—(१) बाट < वट्ट < वर्त्मन् = मार्ग। पूर < पूरी = समाप्त होना। (२) सरचान [फा] = बड़े शामियाने। (४) (७) राव < रावय् = बुलाना आह्वान करना।

[४३३]

यह मत सुनि¹ गाजहि² मन³ भावा । चित्रसेनि कहु⁴ जस सोगवा ।
गुपुत सिरी¹ मगमारगनि पानी । पमो कह सर भाँति बिनासी² ।
औ पुनि¹ रूपमंजरी बरी । गोवर्गहि बिनता² सिरी³ सरनरी ।
पमो बारहि¹ इहाँ नाहि² बारों । मावहि³ बगि बाज निरबाहों ।
पानी स गए सनवाँ¹ मागी । पिता गिरि जह राज दुलारा² ।
जाइ जनावा पर्महि¹ सीस नाइ प्रतिहार ।
सिहँ¹ राइ² चित्रसेन³ पाती सग बारि⁴ हरिहि बार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा स्नर मन सुनि ए इहै मता सुनि। २ मा ए गाजै। ३ ए जो। ४ ए क।

(२) १ ए सिगा। २ ए के। ३ ए बीनती।

(३) १ ए जो। २ मा ए पावक सिरी मा मावक बरा। ३ मा सिंगिनी ए लिंगि मा लिगिम।

(४) १ मा ए वारिस। २ ए मोहि। ३ मा अपर (< आरत) ए आरत। ४ ए निरवाही।

(५) १ ए सेन गए गए ए से सो ठाँवा। २ मा कुआरी मा ए कुमारी।

(६) १ मा भा जनाएउ पेम ही (पेमहिं—भा) ए जनायहु पेमहिं।
(७) १ मा ए किये भा किएं। २ ए राये। ३ मा की। ४ मा बारी। ५ ए है।

अर्थ—(१) यह मंत्र (विचार) सुनने पर राजा के मन को भा गया और उन्होंने चित्रसेन के पास [अपना] एक सेवक दौड़ाया। (२) मधुमालती ने [भी] गुप्त रूप से पत्रिका [उस सेवक के द्वारा भेजने के लिए] लिखी [जिसमें] पेमा से बहुत प्रकार से विनती लिखी (३) और फिर रूपमंजरी की मोचर (?) विनती बहुत-सी लिखी। (४) [फिर उसने लिखा] 'पेमा कम में यहाँ तुम्हारा आगमन चाहती हूँ तुम शीघ्र आओ [जिससे] मैं कार्य का निर्वाह करूँ।" (५) पत्रिका लेकर बारी वहाँ गये जहाँ पिता (चित्रसेन) के गृह में राजकुमारी (पेमा) थी।

(६) पेमा को प्रतिहार ने जाकर और सिर झुकाकर सूचित किया (७) 'विक्रमराज की पत्रिका लिए हुए बारी द्वार पर खड़े हैं।"

टिप्पणी—(१) मंत < मन्त्र = विचार। (२) (७) पाती < पत्रिका। (५) गिरिह < गृह।

[४३४]

बारिन्ह निकट राइ तब बारा ।[1] पूंछसि बात भाँति[2] बेवहारा ।
फुनि[1] बारिन्ह पाती कर दई[2] । औ मुख कहुन्हि बात जसि भई[4] ।
तौ फुनि[1] कुंवर मनोहर राई[2] । पम पढ़ि मुख चाह सुनाई[3] ।
तौ[1] पर्मे ग[2] पितहि जनावा[3] । बिक्रम राय[4] क[5] पावन आवा ।
मो [हि] हम तुम्ह दुहु पठएन्हि राई ।[1] आपु निकट भै[2] उतर आई ।
चित्रसनि सुनतहि उठि सपर बिक्रम कर हुकार[1] ।
पेमा फुनि[1] सभ सखिन सउ[2] भइ[3] पालकि असवार ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त प्रथम अर्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा बाहर निकरि बाइ तब बारा ए पुनि बारी को कीन्ह जोहारा। २ रा पूछेसि खेम कुसल ए पूछा बात भाति।
(२) १ रा ए पुनि। २ ए बारी। ३ मा दिही रा दीन्ही ए दीन्हा। ४ मा भा औ म प कहेनु बात जैसी (जसि—मा) भई, ए मुख सौं बात कहै जो लीन्हा रा औरि जो बात भई बहु कीन्ही।
(३) १ रा तौ पुनि ए तब जो। २ ए राये। ३ ए सुनाये।
(४) १ ए तब। २ मा मै ए जो। ३ ए सुनावा। ४ ए राये। ५ रा का।
(५) १ मा औ तुम्ह हम दोउ पठ के बुलाई, ए जो हम तुह पठवा एक राई। २ रा होइ, मा फुनि।
(६) १ रा सुनतहि उठि निसर बिक्रम राय मुखार, मा सुनतहि उठि बिसंभर राय बिक्रम कै हंकार, मा सुनत उठि संपरेउ बिक्रम केर हंकार।
(७) १ रा ए पुनि। २ मा सम सखिन्ह संग लेइ, ए सब सखी सग मा सब सखिन्ह लेइ। ३ मा ए भै।

अर्थ—(१) बारियों को निकट बुलाकर बासा (पेमा) ने [मधुमालती के यहाँ की] बात भाँति और व्यवहार पूछे। (२) तदनंतर बारियों ने उसके हाथ में पत्रिका दी और कैसी बातें हुई थीं मुख से कहीं। (३) तब पुनः कुमार मनोहर को बुलाकर पेमा ने [पत्रिका] पढ़कर सुख-समाचार सुनाए। (४) तदनंतर पेमा ने आकर पिता को बताया "विक्रमराज का धावन (दौड़कर जाने वाला चर) आया हुआ है। (५) उन्होंने हम और तुम्हें—दोनों को—बुला भेजा है और वे आप निकट ही (आ) कर उतरे हुए हैं।"

(६) चित्रसेन यह सुनते ही विक्रमराज के बुलावे पर चला (चल पड़ा)। (७) पेमा [भी] तदनंतर [अपनी] समस्त सखियों के साथ पालकी पर सवार हुई।

टिप्पणी—(१) (३) (५) राव < राजय् = बुलाना आह्वान करना। (१) बारा < बाला। (२) पाती < पत्रिका। (६) मार < मारी < मार्ग + ई = जाना गति करना। (७) सउ < सम = साथ। पालकि < पर्यंक।

[४३५]

चित्रसेनि के चले[1] पयानाँ। भाग जनु सहस सग परमानाँ।
मगी महल[1] अमनइस मल[3]। पडित गनार[4] सग हाइ[5] चल[6]।
औ पेमा संग सखी सब[1] चली। उर ओनत भइ जाबन कली।[2]
चित्रसेनि जब बारहिं[1] आए[2]। ग राजहिं[3] प्रतिहार जनाए[4]।
सुनि[1] विक्रम चलि[2] आए दुवारी[3]। भइ जुहु नृपनि हतु अनवारी।
आगें निकट करि[1] बिक्रम राजहिं[2] कीन्ह नशाम।
पेमा जाइ महल[1] मह[2] पेमी[3] जहाँ सभ रनिवास॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा चलउ। ए भी सग सरम एन।
(२) १ भा सथ मा मरप ए मरपा। २ मा अमेरे रा अमनीर जा। ३ ए भने। ४ ए गनिश। ५ मा सप बर ए चल जा। ६ ए चले।
(३) १ ग सप सखी पा ए भा संग सखा सब। २ मा भा मनग नान उर (औ—भा) जोबन कली (कली—भा) ए अहनिस औ जोबन कली।
(४) १ मा जबहीं चलि ए जबहिं चलि। २ मा भा आवेउ ए आइ। ३ मा साग राउ ए वै राजहि। ४ मा जनायउ ए जनाइ।
(५) १ ए सुनि। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा आए दुवारी भा तार दुवारै ए आइ दुवार। ४ मा भा भै जुहु नृपनि हेतु अनवारी (अनवारे—भा) ए भी कुवर हित हेत अनवार ना भै न नरपति मन अनवारी।
(६) १ मा भी कनि निकट पार पर भा आन निकट पाट पर ए भी निकट पर। २ ए राजहि।
(७) १ ए महिल। २ ए में शब्द नहीं है। ३ रा ए पैठि। ४ मा भा ए गई।

अर्थ—(१) चित्रसेन प्रयाण कर चल पड़े; प्रयाण के साथ में सहस्र जन हुए। (२) मंत्री महंत भट्ट अमनैक (आत्मीय ?) पंडित और गणक साथ होकर चल पड़े। (३) और पेमा के साथ [उसकी] समस्त सखियाँ चलीं, वे उन्नमित उरों (उरोजों) वाली बहुत-सी यौवन-कलिकाएँ थीं। (४) चित्रसेन जब [विक्रमराय के] द्वार पर आए, प्रतिहारों ने आकर उन्हें सूचना दी। (५) यह सुनकर विक्रमराय चलकर द्वार पर आए, और दोनों राजाओं में प्रेम की अँकवार हुई।

(६) विक्रमराय ने अपने निकट वरण (चयन) कर राजा (चित्रसेन) को निवास दिया। (७) पेमा जाकर महल में प्रविष्ट हुई जहाँ समस्त रनिवास था।

टिप्पणी—(१) पयान < प्रयाण। (२) अमनैक = आत्मीय (?)। (३) कली < कलिआ < कलिका। (४) बार < वार < द्वार। (५) अँकवार < अङ्कपाली = आलिंगन। (६) बर < वृ = वरण करना चुनना।

[४३६]

राजै सभ जन परिजन राए[1]। पंडित गनक गुनीजन[2] आए।
सो फुनि[1] साराचद बोलाए[2]। आनि सभा ऊपर बइसाए[3]।
चित्रसेनि बिक्रम सउ[1] कहा। पंडितन सेतें सुना मैं अहा।[2]
जौ मत क करिअ[1] निस्चु[2] काजा। निहचै[3] तहि कार्जहि सिधि[4] राजा[5]।
तौ हरिगुन[1] पाछे हंकरावा[2]। कहा देखि[3] गनि रासि मरावा[4]।
सुभ असुभ बिचारिय[1] लगन महूरत बार[2]।
जिमि दुहु[1] पंथ पंथ निरबाहु[2] पम प्रीति बवहार[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा राजै सभ परिजन बहुराए, रा राजै सम जन बहुराए, ए भी राजै सब परिजन राये। २ ए गनिक गुनी जो।
(२) १ रा तौ पुनि ए वही जो। २ ए बोलाऊ, मा बोलाएउ। ३ ए बैसाऊ, मा बैसाएउ।
(३) १ ए सौ मा सो। २ मा पंडितन्ह सेना मद कहा ए पंडित कहा सुनहु हम पैहा मा पंडितन्ह सुना सुना मैं अहा।
(४) १ ए मति कै करी (<करिअइ फारसी लिपि)। २ मा दुसु, ए वसु। ३ मा निस्चै भा निस्चै ए निस्चै। ४ ए सिध काज तेहि। ५ रा राजा।
(५) १ ए हरिगन (<हरिगुन: फारसी लिपि)। २ ए हंकराये। ३ मा देखु। ४ ए मेराये।
(६) १ मा भा सुभ असुभ बिचारहु (बिचारि कै—भा) ए सभा को सभै बिचारै (<बिचारिय फारसी लिपि)। २ ए बार।
(७) १ ए में ये दो शब्द नहीं हैं। २ मा भा जमु जमु निरबहि ए जग्ग जग्ग निरबाही। ३ ए बेवहार।

अर्थ—(१) राजा (विक्रमराय) ने अपने समस्त सेवकों-भृत्यों को बुलाया। पंडित गणक तथा पुरोजन [भी] आए। (२) तब फिर उन्होंने ताराचंद को बुलाया और उन्हें लाकर सभा के ऊपर बिठाया। (३) चित्रसेन ने विक्रमराय से कहा "पंडितों से मैंने सुना था (४) कि यदि मंत्रणा कर कुछ (कोई) काम कीजिए तो हे राजा उस कार्य में निश्चय ही सिद्धि होती है। (५) तब उन्होंने हरिपुन पांडे को बुलवाया और कहा "गणना कर राशि का मिलान देखो।

(६) शुभ और अशुभ लग्नों मुहूर्तों और वारों का विचार करो (७) जिससे दोनो (वर वधू) जन्म-जन्मांतर तक प्रेम-प्रीति के व्यवहार का निर्वाह करें।"

टिप्पणी—(१) गव < गवय् = बुलाना आह्वान करना। (७) जम < जन्म।

[४३७]

गनकन्ह[1] गरह कुंडरी किही[2] । बारह रासि ताहि महं लिही[3] ।
औ पुनि नखत गरह जत[1] जहां । लिखनि बिचारि पंडितन्ह तहां[2] ।
जनम दसा दुहु कीन्हि बिचारी ।[1] अंतर दसा[2] पुनि कीन्हि सभारी[3] ।
नौमी चंद पाख उजियारा । सूभ[1] लगन रासि समर[2] बिचारा ।
सुभ मूहरत रासि[1] दिन माया । बार नछत्र सुदृष्ट अनुराया ।
औ सा सोहाग लच्छिमी मानि[1] मंगल सुकल निरबाहु ।
रासि गुनि गनक बिचारन्हि[1] मधुमालति कर[2] ब्याहु ॥

पाठान्तर—मा में उपर्युक्त दूसरी अर्धाली का प्रथम चरण नहीं है।
ए में उपर्युक्त ३री तथा ४ थी अर्धालियां परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा गनकाह। २ ए कुंडली किही मा कारी कीही ए कुंडली कीन्ह। ३ ए लीन्ह।
(२) १ ए औ जो नौ ग्रह है मा औ पुनि नौ गरह हुत। २ मा भा लिखे ए लिखि। ३ ए कहा।
(३) १ मा जनम दसा दुहुं कहि बिचारी मा जनम दसा दुनहु कि बिचारी ए जनम दसा दुवो बिधि मारी। २ मा अंत दसा। ३ मा पुनि गने संभारी ए जो पहा बिचारी।
(४) १ ए शुभ। २ ए मनिरान्ह।
(५) १ ए शुभ महूरत रासि कै।
(६) १ मा औ सोहाग लछिमी भी गन्नि मा औ सोहाग लच्छमी पर भरा ए राज सोहाग जो लच्छमी।
(७) १ मा भा गनक बिचारा ए पनिर बिचारा। २ मा क बिआह ए क ब्याहु।

अर्थ—(१) गणकों ने ग्रहों की कुंडली की (बनाई) और उनमें बारहों राशियों को [भी] लिया (२) और तदनंतर नवग्रह को जितने भी जहां-जहां थे विचार कर पंडितों ने वहां-वहां उनको लिखा। (३) दोनो (वर-वधू) की जन्म-दशाओं की उन्होंने विचार किया और तदनंतर

[दोनों को] अस्तदशाओं को भी सँभाल (देख) लिया। (४) ज्येष्ठ के उज्ज्वल (शुक्ल) पक्ष की नौमी को गुण की लग्न गणकों ने गिन कर निर्धारित की। (५) शुभ मुहूर्त की गणना कर उन्होंने दिन निश्चित किया वार बुध था और नक्षत्र अनुराधा।

(६) और सौभाग्य लक्ष्मी संतान तथा सर्वत्र के लिए सुख का निर्वाह (७) गिन-गुन कर गणकों ने मधुमालती के विवाह का विचार [निश्चित] किया।

टिप्पणी—(१) संभार < सं + भाष्य् < स्मरण करना विचार करना (४) पाख < पक्ष।

[४३८]

गनि गुनि¹ लगन पंडितन्ह धरी । सुभ बिचारि² महूरत करी³ ।
फुनि¹ उठि² राउ³ महल मह आवा । रानी सउ⁴ कहि बात सुनावा⁵ ।
सुनि¹ रानी किए² मंगलचारा । दुरत निसान बजावहि³ बारा ।
पेमां सभ¹ सखी² असि³ आईं । ते सम⁴ सुरंग पटोर⁵ पहिराईं⁶ ।
फुनि¹ कहू चित्रसेनि सउ² राजा । साम्हु ग³ आपनि⁴ दिसि⁵ काजा⁶ ।
बहु आदर सेउ¹ बिकम² चित्रसनि बहुराइ³ ।
रानी फुनि¹ पेमां कहं² समदउ³ गोचरगीम मिलाइ⁴ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए असकनि। २ ए बिचार। ३ मा ए धरी।
(२) १ रा ए पुनि। २ ए औ। ३ ए रायें। ४ मा मा आएउ। ५ रा ए सौं। ६ मा मा बताएउ।
(३) १ ए पुनि। २ मा किआ ए बहु। ३ मा मा बजामेउ ए बजावा।
(४) १ मा मा ए सब। २ मा सखी। ३ मा अती ए जो। ४ ए माईं। ५ ए मा सब। ६ मा मा ए चीर। ७ ए पहिराईं।
(५) १ रा ए पुनि। २ रा सौं ए ते। ३ मा गइ। ४ मा अपने रा अपनें। ५ मा ए दिस। ६ ए साजा।
(६) १ रा के ए से। २ मा में 'राजै और है। ३ मा बहुराई ए बहुराउ।
(७) १ रा ए पुनि। २ ए पेमा के रा पेमैं कहं। ३ रा मिली ए समदी। ४ मा के गोचर मीम लाई, ए बहु गोचर गिव लाउ।

अर्थ—(१) पंडितों ने गन-गुन कर लग्न निर्धारित की, और शुभ का विचार कर उन्होंने मुहूर्त [का निश्चय] किया। (२) फिर राजा (विक्रम) उठकर महल में आए और रानी से उन्होंने कहकर [विवाह की] बात बताई। (३) [उसे] सुनकर रानी ने मंगलाचार किए और द्वार पर [लोग] हर्ष के बाँसे बजाने लगे। (४) पेमा के साथ जितनी [उसकी] सखियाँ आई थीं उन सब को [रानी ने] सुंदर रंगों की रेशमी साड़ियाँ पहनाईं। (५) तदनंतर चित्रसेन से राजा (विक्रमराज) ने कहा, "जाकर अपनी ओर का कार्य साजिए।"

(६) बहुत आदर के साथ विक्रम राज ने चित्रसेन को वापस किया (७) तदनंतर रानी ने गोचर (?) ग्रीवा से लगाकर पेमा को बिदा किया।

टिप्पणी—(३) बार<बार<द्वार। (४) जेंव<जेंवन<जाम्=जिमना। पटोर<पट्टोल<पट्ट-कूल=रेशमी साड़ी। (७) गीव<गीव<ग्रीवा।

[४३९]

औ जेहि बार लगन[1] ठहराई[2]। सो पंडा सउ[3] कही[4] बुझाई।
चढ़ि पालकि[1] सब गौनी[2] बाजा[3]। चित्रसेनि संग[4] पिता भुआरा[5]।
नगर बजावत पैस आई। रची कुँवर क[1] ब्याह बधाई।
राज आयसु सब हाट[1] सवारी[2]। कुसुमि पटोर दुकान ओहारी[3]।
कंगन राजकुँवर कर[1] बाँधा। औ परिजन सब[2] राग[3] राँधा।
कुंकुह[1] मर[2] सुगंध उबटना[3] लावहिं कुँवर क[4] गात।
सात दिवस क[1] लगन कुँवर सिर[2] बीत[3] जनु जुग सात॥

पाठान्तर—मा. में उपर्युक्त अर्द्धालियाँ ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ मा. लगन। २ मा. धरि भाई। ३ ग. मा. पंडा मा. ए. पंडा गा. सब। ४ मा. कहीन्ही ए. कह।
(२) १ ए. पालक। २ मा. सब सबनी ए. ज. गौनी। ३ ग. ए. बाजा। ४ मा. मा. ए. संग। ५ रा. भुवना।
(३) १ ग. रचा कुंअर कै।
(४) १ ए. राजा अस्या सहस मा. राज अस्या सब हाट रा. राज अस्या सब हाट। २ मा. सवारे, ए. सवारी। ३ ए. बाहारी मा. ओहारी। ४ मा. में चरण का पाठ है : घर घर पाटम्बर अनुसारे।
(५) १ ए. के। २ मा. बहु ए. ज.। ३ ए. रागा।
(६) १ मा. कुंकुम। २ मा. अगर। ३ मा. उबटना ए. ज.। ४ ए. उबटन।
(७) १ मा. की। २ मा. पर। ३ मा. बीते। ४ ए. में चरण का पाठ है : सात दिवस लौं लग्न में कुँवरहि बीते जुग सात।

अर्थ—(१) और जिस बार को [विवाह की] लग्न ठहराई गई थी, वह पंडों ने समझा कर बतला दी। (२) तब पालकी चढ़कर बाजा (बजाते) [अपने] पिता भूपाल चित्रसेन के साथ (सभी) गए। (३) वे बाजे के साथ नगर में आ प्रविष्ट हुए, और उन्होंने कुमार (मनोहर) के विवाह का बधावा आयोजित किया। (४) राजाज्ञा से समस्त हाटें सवारी गईं और दूकानें कुसुम्भी रंग के रेशमी वस्त्रों से ओहारी (वस्त्रों से सुसज्जित की) गईं। (५) राजकुमार (मनोहर) के कर में कंकण सूत्र बाँधा गया, और समस्त परिजन (भृत्यादि) को रञ्ज (सजा बजा) कर तैयार रक्खा गया। (६) वे कुंकुम (केसर) मिलाकर सुगंधित उबटन कुमार (मनोहर) के शरीर में लगाते थे। (७) सात दिनों की लग्न कुमार के सिर पर इस प्रकार बीत रही थी जैसे सात युग बीत रहे हों।

टिप्पणी—(२) पालकि<पर्यंक। भुआर<भूपाल। (३) बधाई<वर्द्धापन<वर्द्धन =अभ्युदय अथवा हर्ष-सूचक वाद्य। (४) पटोर<पट्टकूल=रेशमी वस्त्र। ओहार<अवपातन =पर्दा। (५) रांध<राद्ध=सजा-बजा हुआ तैयार। (६) उबटन<उद्वर्तन=उबटन =शरीर के मैल को दूर करने के लिए लगाया जाने वाला लेप। गात<गात्र=शरीर।

[४४०]

बुधवार मौमी जब आई। चित्रसेनि सम[1] कटक चलाई[2]।
चलत सगुन भल आगें[1] आवा। काग मिरिग दहिनें दसरावा।
मारि[1] आउ[2] उर बालक लिहें[3]। बांमन[4] तिलक दुवादस[5] दिहें[6]।
दाहिन[1] लरहा[2] बाएं[3] बेसारा[4]। महरि सीस[5] ल दही[6] पुकारा।
मंछ[1] उफरि[2] पानी देखरावहि[3]। कलस भरें[4] सस्ती चलि[5] आवहिं[6]।
समकरी[1] औ लोवा[2] दरसन आइ दखाउ[3]।
सिद्धि होइ सम काजहिं[1] ऐस[2] सगुन जो[3] पाउ॥

पाठान्तर—(१) १ मा सब ए जो। २ ए बोलाई।
(२) १ ए सब आम। २ ए भिगा दाहिन मा मिरिग दहिने।
(३) १ मा रानी। २ मा मा आइ। ३ ए लिये। ४ ए बामन। ५ ए द्वादस। ६ मा भा दिये ए किये।
(४) १ ए बायें। २ मा मा पर। ३ ए दहिने। ४ मा पैसारा मा बैसारा। ५ मा महरी सिर। ६ मा दही लेहु लेहु।
(५) १ मा मांछ। २ ए उछरि, मा उभरि। ३ मा ए देपरावै। ४ ए मा. भरे। ५ मा आवुधे भा आवे मैं ए आवे से। ६ मा ए आवै।
(६) १ मा रा ए खेमकरी। २ रा भी सुरभी (?) ए जो लोवा। ३ दरिसन आइ देपाउ ए आय मैं दरसाव।
(७) १ ए कार्जहि। २ रा स्याम। ३ मा ए जे।

अर्थ—(१) बुधवार को मौमी जब आई चित्रसेन ने [विवाह की] कटक (बारात) चलाई। (२) चलते समय अच्छा शकुन सामने आया। काग और मृग दाहिने दिखाई पड़े। (३) नारी [अपने] हृदय (वक्ष) पर बालक को लिए आ रही थी और ब्राह्मण द्वादश तिलक किए हुए [आ रहा था]। (४) दाहिने खरगोश तथा बाएँ बेसर (खच्चर) [आए] और ग्वालिन सिर पर दही लिए पुकार रही थी। (५) मत्स्य उछल-उछल कर पानी के ऊपर दिखाई पड़ रहे थे और कलश भरे हुए सखियाँ चली आ रही थीं।

(६) खेमकरी (एक प्रकार की चील) और लोमड़ी आकर दर्शन दे जाती थीं। (७) ऐसा शकुन यदि मिले तो समस्त कार्य सिद्ध होते हैं।

टिप्पणी—(२) सगुन < शकुन। (३) बामन < ब्राह्मण। (४) बेसारा < बेसर = खच्चर, सच्चर। (५) मछ < मच्छ < मत्स्य = मछली। उफर < उप्फड़ < उद् + पत् = ऊँचा उछलना। (६) लोवा < लोपाक = लोमड़ी।

[४४१]

चित्रसेन साजि कै[1] चली[2] बराता। बाजन बाजहिं[3] उठ[4] अपाटा[5]।
बहु कौतुक किए[1] कागर करे[2]। तर सिंहास कोठी भौ घेरे[3]।

नावइ[1] बहुत कमूमी[2] मड़ीं[3] । तिहि पर नाचहिं[4] पतुरी[5] बड़ी ।
किएउ[1] बजावन अति र[3]सोहावा[4] । औ कौतुक बहु[5] गनम न आवा[6] । [१८७
बहुत[1] विन्नि कित[2] पर पर । ठांउ ठांउ[3] कित भाइ गर[4] ।
पमी छत्तीसो पौनि कवर मप[5] चित्रमनि क आन[6] ।
जोजन मान महु दिमि जग उजियाली मान[7] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मैना माबी। २ मा बमिउ। ३ ए बाजा। ४ मा उठे ग उठा, मा उठहिं। ५ मा ए बजाना।
(२) १ मा मम ए किब। २ ए कग। ३ मा नस्मी हाम कोरी और परे ए तरुअरि गांव कोटि एक परा।
(३) १ मा गाउ। २ मा कुछ मगह। ३ ए मड़ी। ४ ए तार भरी। ५ मा पार्श ए पर्श मा पतुरी।
(४) १ मा किये ए किमा। २ मा बीम बन मा बिछौना ग बिन्दावन। ३ ए में यह पाठ नहीं है। ४ मा मोहाय। ५ ए जो ग भयो। ६ मा गर्नात न आवे ए गनै न आवा।
(५) १ रा ग बहुत। २ रा कीने। ३ ए ठांव ठांव। ४ रा माट ए रिमा। ५ रा आने पर, ए अहा तरे।
(६) १ रा मे यह पाठ नहीं है। २ मा मा ग मम। ३ मा की आनि ए कुमार।
(७) १ मा जामहि मभे मुभान ए भा बमोर मिगुमार मा जग बमोर पुनि मान।

अर्थ—(१) सेना सजा कर बारात चली बाजे बजने और अखाड़े उन्हे गये। (२) बाहन के बहुत से तरह-तरह के बनाए गए थे [जिनमें से कुछ थे] वृक्ष पर (?) कोठरियाँ और लोहे [बने हुए] थे। (३) बहुत-सी नावें बनी हुई थीं, जो कुछ मी बस्त्रों से मढ़ी थी और उन पर नाचती हुई नाचनी [दिखाई गई] थी। (४) बाद का प्रबंध अर्पन मुताबिक किया गया था और तोल-निमलाए इतने थे कि गिनती में न आते थे। (५) बर्नों से कलित बहुत से वृक्ष बनाए गए थे और स्थान-स्थान पर मड़ (पहाड़) [के लेसे] खड़े किए गए थे।

(६) विरसेन की आज्ञा से छत्तीसो पावनी जातियाँ कुमार (मनोहर) के साथ चली (७) और [रात्रि को भी] चार योजनों तक चारो ओर [मशालों के कारण] जगत् के मानू का [सा] प्रकाश हो रहा था।

टिप्पणी—(१) अखाड़ < आखाट = अखाड़ा नृत्य-संगीत की मण्डली। (?) कापड़ [का]। (२) निहान < निहेलन (?) = बर मकान। गड़ा < गटन = ऐना पेड़। (६) पौनि = त्यौहार के अवसर पर पुरस्कारादि पाने वाली जातियाँ। भाँनि < भान्न। (७) योजन < योजन = दूरी की माप जो चार कोस (= आठ मील) की होती है।

[४४२]

महताबीं[1] परस्तीक[2] हवाई[3] । औ दीपटि अनगिनतिन धाई[4] ।
अंधकाल रजनी भर नासा[1] । अगिनि बान उजियार अगासा[2] ।
अहनिसि दूवौ[1] लख[2] नहिं जाई । को[3] बासर को[4] रैनि कहाई ।
ताजिन्ह[1] चढ़े भाँट बहु चले । बचन सुभ मुख[2] बोलत भले ।
कंठ हार[1] मुकुताहल[2] माला । कुंवर[3] चढ़ाइ[4] सुखासन चाला[5] ।
चित्रसेनि लै चले[1] साजि दल राजकुंवर बरियात[2] ।
धनि साहस धनि सिधि[1] मनोहर धनि जननि धनि[2] तात ॥

पाठान्तर— मा. में उपर्युक्त अर्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ भा. माहताब मा. महुवा सबै ए. महतावै। २ भा. परचषी मा. परचक ए. परसी भो। ३ भा. हुमाई। ४ मा. औ बहु दीअरे गनत न जाई, ए. बहु दीअटी का गनै न जाई, भा. औ दियटै अनगिनत सुहाई।

(२) १ मा. कस्नासा ए. कै नासा। २ मा. अकास ए. अकासा।

(३) १ ए. दुवौ। २ भा. लखि ए. लखा। ३ भा. मा. ए. कोइ। ४ भा. मा. ए. कोइ।

(४) १ भा. ताजिन ए. ताजी। २ मा. सुख।

(५) १ मा. ए. हार। २ भा. मा. ए. मुकुता मनि। ३ भा. में यह शब्द नहीं है। ४ ए. चढ़ि। ५ मा. ए. चला।

(६) १ मा. भा. चालिउ ए. चढ़। २ ए. बरात।

(७) १ मा. धनि साहु सिधि निधि ए. धन साहस धन सिध (< सिधि फारसी सिपि)। २ ए. धन जननी धन भा. धनि सो जननि धनि।

अर्थ—(१) माहताबियाँ, हवाई परचियाँ, और दीपयष्ठियाँ अगणित आई थीं (२) [जिनसे] रजनी का अंधकार नष्ट हो गया था और अग्निबाणों से आकाश में प्रकाश हो रहा था। (३) दिन तथा रात दोनों लक्षित नहीं पड़ रहे थे [अतः] किसको दिन कहा जाता और किसको रात? (४) ताजियों (घोड़ों) पर चढ़कर बहुत से भाट चले जो मुख से शुभ (स्वस्ति) वचन बोल रहे थे। (५) कंठ में हीरों और मोतियों की मालाएँ पिन्हा कर कुमार को सुखासन चढ़ाकर वे ले चले।

(६) चित्रसेन दल साजकर राजकुमार (मनोहर) की बारात ले चले। (७) मनोहर का साहस धन्य था, उसकी सिद्धि धन्य थी उसकी माता धन्य थी, और उसके पिता धन्य थे।

टिप्पणी—(१) माहताबी—एक प्रकार की आतशबाजी जिसके जलाने से चंद्रिका सा उज्ज्वल प्रकाश होता है। परचीक—एक प्रकार की आतशबाजी जो एक लकड़ी गाड़ कर उसके धुरे में लगा दी जाती है और जलाए जाने पर उस धुरी पर तेजी के साथ चिनगारियाँ उगलती हुई घूमती रहती है। (२) अगिनि बान=एक प्रकार की आतशबाजी जो आग लगाने पर चिनगारियाँ छोड़ती हुई आकाश की ओर कुछ दूर तक उठती हुई चली जाती है। (४) ताजी < ताज़ी [फ़ा॰]=घोड़ा। (५) मुकुताहल < मुक्ता फल=मोती। (६) बरियात < वर-यात्रा=बारात।

[४४३]

मथुरा[1] सब[2] रनिवास सँवारी । कुँवरहिं[3] चली बियाहन नारी[5] ।
चलीं चली संगिन सब[1] कली[2] । साठि सखी साठिउ एक अली[3] ।
काहु[1] सुखासन काहु[2] चौडोली[3] । कोउ[4] मझारि काहु[5] जोबन भोली[6] ।
जोबन ओनत[1] करहिं[2] रस केली । उठत चाप[3] उर जनु[4] सन घली ।
कनक बरनि सब मन सभ[1] बारी । मन बन्धक हननि[2] हुसियारी ।
कोइ ओनत[1] भर[2] जोबन कोई अलप[3] अजान[4] ।
पाँच एकादस कीन[1] हिय उर[2] रतन अमान[4] ।।

पाठान्तर—(१) १ मा भा रा मथुरा ए मथुरे। २ ए मा सब। ३ ए कुँअर रा मे यह शब्द नहीं है। ४ ए ब्याहै। ५ भा बारी।
(२) १ मा भा चली संगिन्ह सब ए सब सगी सब। २ ए कैली। ३ मा कैली ए कैली।
(३) १ मा काउ। २ मा काउ। ३ रा चडोली मा भा चौडोला ए चडोला। ४ ए कैन। ५ ए कोउ। ६ मा भा ए भोरा।
(४) १ मा अनवत मा उनीम ए उनम। २ ए करैं। ३ ए चाप। ४ ए में यह शब्द नहीं है। ५ मा भा पावन ए भावन।
(५) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ मा हनउ हनियारी ए रा हनै कटारी।
(६) १ मा अमवन मा उनम ए उनमद। २ ए भरि। ३ मा अपम ए कैन।
(७) १ मा ए पाच एकादसी कीन (कीन्हें—ए) भा पाच एकादसी कीय रा मी सन मान बनाएं। २ मा ही भरद ए हीयर।

अर्थ—(१) मथुरा ने समस्त रनिवास (रानियों) को सँवारा (सुसज्जित किया) और वह नारी कुमार (मनोहर) का विवाह करने चली। (२) ऐसी जिस प्रकार अपनी सखियों के साथ चलीं कि उसकी जो साठ सखियाँ थीं वे साठों एक ही वयस् की थीं। (३) कोई सुखासन पर सवार हुई तो कोई चंडोल पर कोई उनमें से संयुक्ता (पतियुक्ता) थी तो कोई अज्ञात-यौवना थी। (४) उनका यौवन उन्मित था और वे रसीली केलि करती हुई [इस प्रकार लगती] थीं जैसे काम की वल्लरियों के उरों पर कोंपलें निकली हों। (५) वे समस्त बालिकाएँ कनक-वर्णी और सबमनु की थीं और वे हत्यारिन नेत्र-कटाक्षों से [दर्शकों को] मारती थीं।

(६) कोई भरी यौवन में उन्मित थी तो कोई अल्प-यौवना अथवा भोली (अज्ञात-यौवना) थी; (७) उन सोलह शृंगार किए हुए रमणियों के हृदयों पर अनमोल रत्न (रत्नाभरण) थे।

टिप्पणी—(३) चडोल < चतुर्दोल = चौडोल। (५) बारी < बालिका। (७) कटाख < कटाक्ष। (६) ओनत < उन्नमित।

[४४४]

गोर हाट गोपुरहि[1] बाग । भाट चलत राज दरबारा ।

जनवासा जहँ[१] राय सवारा[२] । तहवाँ आनि[३] बरात उतारा[४] ।
मांडौ ऊंच त्रिपति क करा[१] । कनक कलस लै तेहि तर धरा ।
हीरा[१] रतन[२] पाट मंगवाए[३] । बंदनवार क चहुँ दिसि छाए[४] ।
सगुन कलस लै[१] सिर[२] सुख धनीं । आईं गावत मन सिस धनीं ।
पुनि नेवछावरि आरति दीन्हीं सासु[१] पठाइ ।
वारि[१] कुंवर सिर ऊपर पेम[२] बहुं[३] दिसि दीन्हि लुटाइ[४] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा गौधुरिनि ए भी धुधरी मा गौधुरिनि रा मैं धुधरि।
(२) १ रा जो। २ मा मा राइ सवारेउ। ३ मा तहा आइ, भा तहाँ आनि। ४ मा मा बरिआत उतारेउ।
(३) १ मा माडव ऊंच निरिप किए धरा मा माडप उच नृप कीन्ह सवारा ए माडव ऊंचा निप कीआ करे। २ मा मा कनक कलस लेइ तेहि तर धरा ए तेहि पर पाट पटोरा परे।
(४) १ मा आमे ए भा आसे। २ मा पुथा ए थोथा मा पुथा। ३ रा मंगवाए, मा पाठ मगाए। ४ मा ए चहु दिस।
(५) १ मा लैइ। २ ए मे यह शब्द नहीं है।
(६) १ मा सासुह दीन ए सासु जो दीन्ह, रा दीन्ही सासु।
(७) १ ए वारि। २ रा मा मे यह शब्द नहीं है। ३ मा दुइ ए चहुँ। ४ मा बिना छिरीआद ए में छलराइ भा मे 'छिरिआइ' मात्र है।

अर्थ—(१) संध्या होते-होते गोधूलि बेला में बारात राजद्वार पर आई। राजा ने जनवासा सजा रक्खा था वहीं पर उन्होंने लाकर बारात को उतारा। (२) वहाँ पर राजा [विक्रम राय] ने ऊंचा मंडप खड़ा कर कनक-कलश ले (ला) कर उसके नीचे स्थापित किया। (३) राजा [विक्रम ने] हीरे, रत्न और रेशम [की डोरियाँ] मंगवाईं और बंदनवार बना (बनवा) कर [विक्रमराज के] चारों ओर उसे लगाया (लगवाया)। (५) शकुन का कलश लेकर वो स्त्रियाँ, जो नख से शिखा तक धनी (सुसज्जित) थीं गाती हुई आईं।
(६) फिर [वर की] सास ने नेवछावर और आरती भेज दी (७) जिन्हें प्रेमी ने कुमार के सिर पर वार (उवार) कर चारों दिशाओं में लुटा दिया।

टिप्पणी—(१) साम < सन्ध्या। गो धुरि=गोधूली। वारा < बेला। (३) मांडो < मंडप। (६) नेवछावरि < निच्छ [दे]+ अवली = वारा (उतारा) जाने वाला पदार्थ-समूह। (७) वार < उवार < उद् + वर्तम = त्याग करना छोड़ देना।

[४४५]

बहुरि चली[१] दस पाछें आई । सुरस कंठ गावहि गरिमाई[१] ।
चित्रसभि कह[१] समधी माए[१] । गारी देहि हरसि रस भाएं[१] ।
पमी कहँ तारावद लाई । गारी देहि औ करहि बड़ाई ।

औ मधुरा कहँ समधिनि जानी । गारी दहि औ[१] करहि न कानी ।
औ मधुमालति धरि[१] धपाई । पमां कहँ गरियावहि[२] आई ।
पुनि[१] किछु रस दवाएउ कुंवर(?)[२] ओन्हहि अनुमान ।
हरस अनद किलोल सउ[१] फिर सम[२] करस बखान ॥

पाठान्तर— यह छंद मा ए में नहीं है।
(१) १ मा. कनि रे जनी। २ मा माई। ३ मा. सुरस मारि मुग दनि सोहाई।
(२) १ मा का। २ मा मानी। ३ मा मानी।
(४) १ मा किछ।
(५) १ मा मधुमालति कहँ धरि। २ रा मा परियावहि।
(६) १ मा रा पुनि। रा म यह शब्द छूटा हुआ है।
(७) १ रा मा मा। २ मा बहुरी।

अर्थ—(१) तदनंतर सब स्त्रियाँ उनके पीछे आई जिन्होंने रसीले ढंग से [कुमार की] माता के संबंध में गालियाँ गाई। (२) किलोल को समधी के नाम (पर) से वे रस से पूरित और हर्षित होकर गालियाँ सुनाने लगीं। (३) पेमा को वे ताराचंद के लगाव से गालियाँ देने लगीं और उसके परिहास करने लगीं। (४) और मधुरा को समधिन जानकर वे गालियाँ देने लगीं और [इसम] के मर्यादा की अवहेलना करने लगीं। (५) और मधुमालती की वेरी बाप (कह) कर पेमा को वे जाकर गालियाँ देने लगीं।

(६) तदनंतर कुमार (?) ने उन्हें अनुमान से कुछ द्रव्य दिलाया (७) तब हर्ष आनंद तथा कल्लोल के साथ वे [कुमार का] बखान करने लगीं।

टिप्पणी—(२) मा=मँगना पूरित होना। (७) मेउ < मम < माव।

[४४६]

तब[१] बिक्रम दुइ बिप्र पठाए । लै कुंवरहि मुगमालो[२] आए[३] ।
कुंवरहि[१] आनि मांझ[२] बमारा । चाए आनि गाड़ बिप[३] बारा ।
का मनहि योमन[१] यज्ञकामी । होम करहि आहुति चौरासी[३] ।
कंवरहि ल्याइ पाहि[१] ब्रम[२] बारी[३] । जनम गांठि दुहुँ आंचर मारी ।
कुंवरि कंवर[१] कर मल्उ[२] हारा । कुंवर हार मधु गाय डारा[३] ।
पनि भांवरि कुंवर पानि पर कर कामिनि कर राखि[१] ।
कन्यादान कीन्ह नृप दव पिकर मानि[१] ॥[१]

पाठान्तर—(१) १ मा मा ए पुनि। २ मा ए रा मुगमाला। ३ ए आये।
(२) १ रा. मा ए कुंवर। २ मा माम मा मन्मे। ३ मा. बन्नि ए दिहू।

(३) १ ए बाभन। २ रा बेदबानी ए मा बदबासी। ३ मा ए होम अप (करै—ए) अहुती (आहुति—ए) चौरासी मा होम करहिं आहुति चौरासी।

(४) १ मा पढ़ही ए पढ़ै। २ मा ए घर। ३ ए नारी। ४ मा अरम।

(५) १ रा कुंवरहिं कुंवरहि, ए कुंवरि कुंवर के। २ रा मेलहि। ३ मा आ पुनि मुख (मधु—मा) गीवं लाए रा मधु गीवँ लाए ए मधु गीवा लाए।

(६) १ मा फनि दै भांवरि कुंवर पानि कर कामिनि कर राखि मा पुनि दै भांवरि कुंवरहिं पानी परसत कामिनी कर राखि ए पुन दै भांवरि पानी पहि कै कर कामिनि के राखि।

(७) १ मा कन्यादान कीन्ह नृप लै जल (बिक्रम—ए) देवपितर दै साखि। मा कन्यादान किएउ नृप लै जल देव पानी साखि। २ रा मे दोहा निम्न लिखित है —

लिखा बेद आचरहिं होम कामिनि परजारि।
कुंवरहिं आइ पढहिं मधुमालति बिक्रम राम भुआर॥

अर्थ—(१) तब बिक्रमराय ने दो ब्राह्मणों को भेजा जो कुमार को शुभ आसन में लिवा लाए। (२) कुमार को लाकर उन्होंने मण्डप में बैठाया और बाला (मधुमालती) को लाकर उसके बाएँ खड़ा किया। (३) विद्वान् ब्राह्मण वेद-पाठ कर रहे थे और चौरासी आहुतियाँ देकर हवन कर रहे थे। (४) कुमार के समक्ष वे बालाएँ पढ़ (स्वस्ति-पाठ कर) रही थीं और उन्होंने दोनों (वर-वधू) के अंचलों में जीवन [भर के संबंध] की गाँठ बाँध दी। (५) कुमारी ने कुमार के कंठ में हार डाला और कुमार ने हार मधुमालती की ग्रीवा में डाला।

(६) फिर भाँवरें देकर और कुमार के हाथ पर श्रेष्ठ कामिनी मधुमालती का हाथ रख कर (७) देवों तथा पितृ-जनों को साक्षी देकर राजा (बिक्रमराय) ने कन्यादान किया।

टिप्पणी—(२) माझ < मध्य। (४) बारी < बालिका। (४) आंचर < अञ्चल। (५) गीव < गीव < ग्रीवा। (७) साखि < साक्षी।

[४४७]

मा बियाह सोत[1] दुइ हिया। धनि बिधि जेइ[2] मोरा तें[3] अस किया।
बहुत दुख बहुते[1] औसरी। बिरहन[2] आस पुरी[3] दुहुँ[4] करी।
धनि धनि[1] पुन्य करम जग जहाँ। अकसमात[2] मिलि आइ सनेही[3]।
भ उठाइ कुंवरहि ग तहाँ। सुरत[1] सम सुखसाखा[2] कहाँ।
बहुरि सखिन्ह[1] बाला पहुँचाई। सुरत[2] सेज रस[3] ल बसाई।
किछ भनइ जिम मिलन कर[1] बिरह[2] भौ[3] हिय[4] धरइ[5]।
प्रथम समागम[1] बाला दिस्टि न सौंहु[2] करइ[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा साज। २ ए विधना। ३ मा आग हुन।
(२) १ ए बहुरी। २ ए विकना। ३ मा परी ए पुरी। ४ ए दुहु।
(३) १ मा ए धम धन। २ मा पुरब ए पूर्ब। ३ मा मा ए अरममात। ४ ए मिली जस हेरी।
(४) १ मा सुरत। २ ए मिपामन।
(५) १ रा सखिन ए सखी। २ मा सुरत। ३ मा सेज रस ए सैन जा।
(६) १ मा आनंद मन करै, ए अनद मिलन मैं मा अनद मन मिलन का रा अनद जिय मिलना। २ मा कुछ। ३ मा मा ए भै। ४ मा ए हिये। ५ रा धराइ।
(७) १ मा दुहु कुमर मह बाला रा प्रथम समागम बाला। २ मा भा म गौरि। ३ रा धराइ।

अर्थ—(१) विवाह हुआ और दो (वर-वधू के) हृदय शांत हुए विधाता को धन्यवाद है जिसने उस दशा से यह दशा की। (२) बहुतेरे दुःखों और बहुतेरी उलझनों के अनंतर विधाता ने दोनो की आशाएँ पूरी कीं। (३) यह पूर्वार्जित कर्म धन्य होता है जिसके द्वारा अकस्मात् प्रेम-पात्र मिल जाते हैं। (४) कुमार को उठाकर [वे लोग] वहाँ से गए जहाँ पर पुष्प शाला में सुरत शय्या थी। (५) तदनंतर सखियों ने बाला (मधुमालती) को फुसलाया और ले जाकर धीरे से उसे सुरत शय्या पर बिठाया।

(६) [वह बाला] मन में कुछ तो आनंद प्रिय से मिलने का और कुछ भय [प्रथम समागम का] धारण कर रही थी (७) उस प्रथम समागम में बाला [प्रिय के] सम्मुख दृष्टि नहीं कर रही थी।

टिप्पणी—(१) धनि < धन्य। (२) औमरी < अवगर(?) = उलझन। (४) सन < शयन शय्या। (५) सेज < शय्या। (६) भौ < भय। हिय < हृदय।

[४४८]

कुवर बाँह कामिनि गहि महा[१]। हिए[२] मिलान[३] जो सुद[४] लग रहा।
अबहू तजु[१] पाटिलि[२] सिंगाई। परिहरि[३] लाज लागु उर[४] आई[५]।
लाज छड़ाइ[१] महहिं रस[२] बनी। मौंह[३] भाग दुहु क नर्नी।
अहू[१] जो लायन[२] आस सिगाए। दुह पिया रस लग अघाए।
तदपि हिए दुहु करि जदानी[१]। मिलन उरहि उर तरनि मिलाना।[१]
सम मत गउ[१] प्रेम मन मउ मन[२] अगमान।
ज्यों हिय उर[१] मिलि तन भ[२] मजियउ प्रानहि[३] प्रान॥

पाठान्तर—(१) १ रा बरग। २ ए हिया। ३ मा मिलाउ। ४ मा सुख। ५ मा रहा।
(२) १ मा मा अब तज ए अब तज। ए पाटिन। ३ रा मरहि। ४ रा उर लागहि मा लागु हिय ए लागु गीव। ५ ए आई।

५

(३) १ रा छवि भाव ए छाड़ि छाज। २ रा कहि रस मा कहु रस पै ए कहु रस छी। ३ मा भा छौह ए छौंह।

(४) १ मा आहे। २ मा मीमेन (<मोमेन आवरी लिपि)। ३ मा धुह पिआइ।

(५) १ मा दमणि दुहु हिय केरि बुझानी मा दमणि दुहु की हिया बरत्तानी ए दगिध दुनी के हिय बोलानी। २ ए मिलन भाव के तपत सिरानी मा मिलन भाव एहु उर तनी सिरानी।

(६) १ ए ले रा सो। २ ए ते मन रा में ये दो शब्द नहीं है।

(७) १ मा दुहु हिआवद, ए मा दुद हीयर। २ मा ए भी। ३ मा औ रूप रैन ए औ भी एक भा अन्यो सो प्रानहि रा मजिमव विरहे।

अर्थ—(१) कुमार ने कामिनी (मधुमालती) की बाँह पकड़ कर कहा "हृदय में जो तुम्हारा (तुम्हारे विरह का) दुःख था वह शीतल हो गया। (२) अब भी तुम पिछली निष्ठुरता छोड़ दो, और लज्जा छोड़कर मेरे हृदय से आ लगो।" (३) तदनंतर लज्जा को छुड़ाकर (अलग कर) उन्होंने [परस्पर] रस (प्रेम) के वचन कहे, और दोनों के नेत्र [एक दूसरे के] सम्मुख हुए। (४) क्योंकि [उनके] नेत्र [मिलन और दर्शन की] आशा से तृषित थे उन्होंने [परस्पर] तृप्त होकर रस और रूप का पान किया। (५) दोनों के हृदयों का दाह ठंडा हो गया और उर से उर के मिलते ही [दोनों के हृदयों का] ताप शीतल हो गया।

(६) नेत्र नेत्रों से लुब्ध हो गए और मन से मन उलझ गया (७) दोनों हृदय मिल कर एक हो गए और [एक का] प्राण [दूसरे के] प्राणों का भक्षण करने लगा।

टिप्पणी—(२) निठुराई < निष्ठुरता। (४) की < यस्मा < मठ = क्योंकि। लोयन < लोचन। तिसाए < तिसाइय < तृषित।

[४४९]

सोत[1] पियत रूप धनु दुहु[2]। रवि ससि दुवो एकै भ किहु[3]।
मुख मुख सम महि[1] सौहु कराहो[2]। प्रथम समागम मन पहराहीं[3]।
कुँवर अधर अमरन्हि[1] सठ*[2] जोर। कुँवरि[3] विमुख मैं भै मुख मोर[4]।
दीप मरम मुख फूँकि फूँकि[1] बाला। अधिको करै रतन उजियाला।
दुहुँ[1] कर ल लाजन्ह[2] मुख[3] झाँप। अधर दसन सकल कर[4] काँप।
एक पिरीति जिम पिय क[1] औ भै परथम सप[2]।
तिसरें लाज वियापित[1] उपज न[2] दुहुं रति रंग[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा माते। २ ए दुहु। ३ मा दुहु मिले भी कहु भा दुहुं मिलन भौ निठु ए मिलि एक भौ होड (तुक पूर्ववर्ती चरण का तुक)।

(२) १ मा मा. सभा ए मैन। २ मा मा सौंह नहीं करइ (करई—मा) ए सौंह ना करई। ३ मा. मा. ए डर अरहराई।

(३) १ ग अरस। २ मा मी मा कर ग ग मा। ३ ग म यह नहीं है। ४ मा फरे।

(४) १ मा फकनि फुरि ग फर्र।

(५) १ ग दुमी। २ मा जै अमम्ह ग मैं माजनि। ३ ग सारे। ४ मा मर् मा कर। ५ मा गहिन हर, ग है गहिन।

(६) १ मा एक रिगीनि जारै जो पीआरी ए ग बाप परम रिमारी ना ग प्रीनि जिय प्यारी। २ मा भी भै परथम मग मा जी भै प्रथम गमाग ए भी भी प्रीति ममम।

(७) १ मा रिमा पीउ (< बियापेउ फारसी मिपि) ग प्यारउ। २ मा पासमर ग पसरम्ह। ३ मा गनिगम।

अर्थ—(१) रूप का पान करते-करते दोनो के चक्षु शांत हुए, और किसी प्रकार सूर्य (प्रेमी) और शशि (प्रेमिका) दोनों एक हो गए। (२) [वे] मन के सम्मुख मुख नहीं कर रहे थे क्योंकि प्रथम समागम [के भय] से उनके मन धर्रा रहे थे। (३) कुमार [अपना] अधर [कुमारी के] अधरों से मिलाता तो कुमारी विमुख हो-हो कर मुख मोड़ लेती। (४) दीपक के भ्रम से जब बाला [रत्नों की] फूँकती तब रत्न और अधिक प्रकाश करते। (५) लज्जा के कारण वह दोनो हाथो से मुख ढँक लेती और जब [कुमार] दाँतों से [उसके] अधर खंडित करता वह डर से काँपने लगती। (६) एक तो हृदय की प्रीति थी दूसरे प्रथम बार वे [शय्या पे] साथ-साथ हुए थे (७) शरीरे काम व्याप्त हो रही थी इसलिए दोनों में रति-रंग उत्पन्न नहीं हो रहा था।

टिप्पणी—(१) चर < चारु < चार। (२) मौंन < सम्मुख। (५) तार < मर [ह]= हँसना। (७) रियानि < म्यान।

[४५०]

वो ओस्ट भ[१] गनी रस[२] कहा। कास्न कीन्ह[३] कीर पनि कहा।
पौनी मधु[१] गुनि घोल गनि मती[२]। प घपि स्यान[४] दुइ बिम गहो[५]।
गुन परगट तो मानहि[१] गोवा। स्यान घर[२] तो[३] गुन हर[४] गोवा।
यह उपमान जानि मन[१] हसी। गारि[२] मगुर कतार हसी।
कच कुमन्ह मग[१] जंपिम पर। विद्रुम अधर[२] कीर रम पर[३]।
अल जोयन भयगाह नगि क[१] हाउस कर म[२] पिग।
बना कस्म दुर[१] द हिय[२] समर[३] स्यान[४] मणिग॥

पाठांतर—(१) १ ग तब स्यारग गभै मा तब ओमा भै मा ग भी बास्न भै। २ मा ग अग। ३ मा बीप ग लिए।

(२) १ मा मारू। २ मा बोलार्न्ह ग मा बोलन्ह। ३ मा कीन्ह ग बनी ग रैनी। ४ मा बधिराम ग बिदु स्यार। ५ ग रजो बिच दैमी।

(३) १ मा अ। पुन परगट लाजहि लोभा मा जो गुन लाजहि प्रगट रा गुन परगट तौ लाज न लोभा ए जा गुन लाज प्रगट रह। २ ए करी। ३ ए मे यह सम्भ नहीं है। ४ मा रह।

(४) १ ए मा उपखानि (उपखान—मा) जानि मन रा उपखान जानि कै। २ ए गारुर (<गारुरि फ़ारसी लिपि)।

(५) १ मा ए तब मन कुंभन्ह। २ मा आवर। ३ मा कीर सम के ए कीरा रस भरे।

(६) १ मा अब जौना जोबनहु देखि ए जस जोबन जौ चाह देखि कै। २ ए जो।

(७) १ मा कुच। २ मा हिमा ए हीयर। ३ मा सवरी ए लै जो मा तर जिम सो रा सवरहि। ४ मा मा।

अर्थ—(१) तब छिपकर (आड़ में होकर) [मधुमालती की] एक सखी ने [उससे] कहा 'ऐ बाला तूने कोक-शास्त्र पढ़ कर क्या किया ?" (२) सखी की यह बोली सुनकर मधु चौंक पड़ी किंतु उसे बुद्धि और लज्जा दोनों ने [परस्पर] बीच में पकड़ रक्खा। (३) यदि वह [अपने कोक कला-संबंधी] गुण प्रकट करती तो लज्जा को खोती और यदि लज्जा करती तो अपने [कोक कला संबंधी] भारी गुणों को गोपित रखती। (४) [अतः] वह यह उपाख्यान समझ कर हँस पड़ी कि किसी स्त्री को सर्प ने बुरे (गुह्य) स्थान पर डस लिया था और उसका गारुड़ी (उपचार-कर्त्ता) उसका श्वसुर था। (५) [अब] उसके कुच-कुंभों पर [नायक के] नख-अंकुश पड़े और उसके विद्रुम-अधरों को कीर (नायक) [के दाँतों] ने धीरे से पकड़ लिया।

(६) [नायिका के] यौवन-बल को अपार देखकर [नायक का] चित्त धैर्य नहीं धारण कर (रख) सका था (७) इसलिए वह [नायिका के] दोनों कनक-कलशों (कुचों) को हृदय के नीचे दे कर लज्जा की सरिता का संतरण करने लगा।

टिप्पणी—(१) ओलट<अवसत<अवलुप्त=ओप-प्राप्त। (३) हर<भर=भारी। (४) उपखान<उपाख्यान=कथा। (४) गारुरि<गारुड़=सर्प के विष को उतारने वाला।

[४५१]

सुरत[१] पम रस अकों[२] भरेऊ। रतन अबध[३] भेद जनु परऊ[४]।
कंचुकि तार तार[१] उर[२] फाटी। उघसी[३] सिरहि माँग औ[४] पाटी।
सेंदुर मिलि गा[१] तिलक लिलारा। काजर नयननि[२] पीक रतनारा।
कठइ[१] कन्हार गा[२] टूटी[३]। दस मनि[४] मले पक[५] गा[६] छूटी।
बहुरि फूटि ग[१] अमित लानी। भई साँति हिय[२] साध पुरानी[३]।
धाम सकति मिलि बीती[१] एकहि[२] एक म टार।
सब ग तिन्ह[१] जिय[२] साँत म[३] जब छूटि गगम ते[४] बार॥

पाठान्तर—(१) १ ए सूत। २ मा मरम ए मरम रा में यह शब्द नहीं है। ३ मा बनेपहि। ४ मा हिये परेऊ मा ए ओ परेउ (परेऊ—ए) रा. लिएऊ।

(२) १ ए तरकि तरकि। २ मा झाइ। ३ ए बाय लिम। ४ मा गीग ए में यह शब्द नहीं है। ५ मा भी।

(३) १ मा मिलि भी। २ मा नैनन्ह।

(४) १ मा कंठ मोती ए बिसमार। २ मा सा ए स। ३ ए टूट (<टूटी फ़ारसी लिपि)। ४ ए कलिमल। ५ मा भा मनये देर ए दर्स देइ। ६ मा भी ए भी।

(५) १ मा मै ए भी। २ मा बही माग भै भा भई माग भो ए भी मानी जो। ३ मा भा माल बिरानी ए माल सि गानी।

(६) १ मा दर बीती भा निसि बीती ए दर बीति। २ ए पेरानी।

(७) १ मा तब मै हूह ए तब मै दुसी मा हि दई। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ मा ए मानि भै। ४ मा जब मगन निर छपी रा रात गगन मा मगन ते छिप्या ए गगन ते छिप्या।

अर्थ—(१) सुरत और प्रेम के रस में [दोनों ने एक दूसरे को] अंकों में भर लिया, और ऐसा हुआ मानो अनबेधे रत्न में बेध हुआ हो। (२) [नायिका की] कंचुकी उसके हृदय पर तार-तार फट गई और उसके सिर की माँग और केशों की पट्टी अस्तव्यस्त हो गई। (३) [नायिका की] माँग के सिंदूर में [नायक के] ललाट का तिलक मिल गया और [नायिका के] नेत्रों का काजल [नायक के अधरों की] पीक से लाल हो गया। (४) [नायिका के] कंठ का कंठहार टूट गया और दलित-मुदित होकर [उसके उरोजों पर लगा हुआ] मलयज-पंक (चन्दन का लेप) छूट गया। (५) इसके अनंतर [उसकी] अमृत की खानि फूट गई और हृदय की ताप (दाह) शीतल होने से उसे शांति [प्राप्त] हो गई।

(६) काम-शक्ति [के प्रयोग] में रात्रि बीत गई और एक ने दूसरे को अपने से अलग नहीं किया (७) और तब जाकर उनके हृदय शांत हुए जब गगन से तारा छू टे (रश्मिमन्द हुआ)।

टिप्पणी—(३) सिंदूर<सिन्दूर<सन्दूर। (५) अमृत खानि=नारी का गुप्त अंग। माग<मग्ग<मार्ग=पुरुष भागांग।

[४५७]

सुरत मन सुग रति बिहाना। बिरह नहनि[१] दुख[२] हिय[३] मिराना।
गत ककर उमि बागहि[४] माता। ए अगनान मन मनु माता।
मम मारि[१] पहिराग्उ[२] बागा। पुनि जानि कान्ह[३] सिर त्यागा।
बाग्प पनि[१] प[२] मगिरहु[३] जगाई। निसरा[४] जन सुग[५] गगन मगाई[६]।
म गम मनिरहु[१] गिगार बनाई। मगन समन मारि[५] पनिया[६]।

पूंछहि सखी[1] पिरम रस[2] रस रस महर लाइ[3] ।
कहु हम सउ[1] रस बात[2] रनि क[3] सपत जौ[4] फुर न[5] कहाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा हानि ए मा वगमि। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए हिये। ४ मा सेवनी ए सुवानी।
(२) १ मा बाहिर, ए बाहर।
(३) १ मा केस पराइ मा मलई लाइ ए मलया बाइ। २ मा फिरायेउ ए फिरायेसि। ३ मा पुभि वानि किए कीयेउ मा पुनु पानी कीन्हेउ ए कीन्हा पुष्पा बानि।
(४) १ मा रा ए पुनि। २ मा गै ए मे यह शब्द नहीं है। ३ मा रा सखिम। ४ मा मिसरी। ५ मा गुण ए गुन।
(५) १ मा सब सपी रा सब सखिन। २ ए बस्तर आनि।
(६) १ मा सखी। २ रा सहेली। ३ मा रसह मे बाई, ए कहरै माइ।
(७) १ मा सै ए रा सौ। २ मा रस बातै ए रस बाते मा निपु बात। ३ मा की ए कि। ४ मा मे ये दो शब्द नहीं है, ए सपत पूर। ५ मा फुर न ए मे ये दो शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) सुरत-शय्या में सुख की रजनी व्यतीत हो गई और दोनों के हृदय की विरहाग्नि शीतल हुई। (२) राजकुमार उठ कर द्वार पर आया और उसने स्नान कर शरीर में मलय (चंदन) लगाया। (३) उसके केशों में कंघी कर उसे बाना (संभा अंगरखा) पहिनाया गया और पुष्प समझकर कुछ स्नान (दान) किया गया। (४) बाला (मधु) को तदनंतर लाकर सखियों ने बनाया तो वह [सुरत-शय्या से] इस प्रकार निकली मानो सुख-समुद्र में स्नान कर निकली हो। (५) समस्त सखियों ने उसे ले जाकर शृंगार कराया और सजाकर आभूषण-वस्त्र पहिनाए।
(६) सखियाँ उससे प्रेम-रस के संबंध में धीरे-धीरे फुसलाती हुई प्रश्न करने लगीं। (७) [उन्होंने कहा,] 'हम से रात की रस-वार्ता कहो और तुम्हें शपथ है यदि स्पष्ट न कहो।"

टिप्पणी—(१) सैन < सयन < शय्या। (१) (७) रैनि < रयणी < रजनी। (२) बार < बार < द्वार। असनान < स्नान। (३) पुभि < पुष्प (६) पिरम < प्रेमन् = प्रेम। (७) फुर < फुड < स्फुट = स्पष्ट।

[४५३]

पर्मा पूंछ[1] सुखो[2] कर गही । कहु सो बात रनि[3] निरबही ।
भउरि[1] सखी[2] पूंछहि फुसिलाई । कहहु प्रीतम कस गिय सुम्ह लाई ।
लाज न करहु कहहु मुख खोली[1] । जिमि तुम्ह पिय भई[2] प्रीति अमोली[3] ।
कुंवरि मांप तपुइ[1] क बोल । कह न[2] बात लाजि[3] मुख गोवै ।
तउ[4] तउ[5] सखी करहि[6] बहु भारी । कह[7] न बात प्रेम रस[8] बारी[9] ।
बहुत भांति फसिलावहि[1] पूंछहि[2] क क आरि ।
हम सउ[1] गोइ बात रस करी[2] कहिहहु काहि[3] उघारि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा पूछ। २ मा हमहु रा अउर। ३ मा रमी रा जम निमि।

(२) १ मा मा औरो ए औ मव। २ ए मगी। ३ मा पउ कुमन्ताई ए पूछैं कमलाई। ४ मा परहु प्रीति पिय तम्ह गिन मार्ं रा रन्ह प्रीतम पम गिय तुम्ह सार्ं मा माज न कर, पिय मिलार्ं ए गन्ह प्रीतम रिमि सार्ं।

(३) १ मा कम्हु प्रीति तुम्ह मिम्रतो पाना। ए लाजत पहो कन्ह गन गाढी। २ मा तुम्ह पिम भै ए पित्र मो भो रा तम्म मर्ं। ३ मा ए नवेली।

(४) १ मा तरहुड। २ मा बरन मा बर्हि त। ३ मा लाजगर ए साज। ४ मा मा मुह।

(५) १ भा मा ए ठी ठो। २ ए कर्र। ३ मा बरु ए बरहु। ४ रा बात साज मुग (तुम पूर्ववर्ती अर्धाली) मा पम बाव रम। ५ मा भा ए बारी।

(६) १ भा कुमिलाएउ। २ ए पूछैं।

(७) १ रा ए मा। २ ए बोर बार्न मव रा माइ बात रम। ३ मा बहिरार बाहे ए पुनि मेहि बरेहु भा मेहि मा बहु।

अर्थ—(१) प्रेमा उसके दोनों हाथ पकड़ कर पूछने लगी 'वह वार्ता कहो जो रात में घटित हुई।" (२) अन्य सखियाँ मुसका कर पूछने लगीं "कहो प्रियतम ने तुम्हें किस प्रकार गले लगाया? (३) तुम लज्जा न करो और मुँह खोलकर (स्पष्ट रूप से) बताओ कि किस प्रकार तुमम और तुम्हारे प्रियतम में अपूर्व प्रीति हुई।" (४) कुमारी मस्तक नीचे की ओर किए हुए देखती थी; वह उस वार्ता को कह नहीं रही थी और लज्जित हो कर मुख छिपा रही थी। (५) सखियाँ उसी प्रकार और भी अधिक हठ करती रहीं किंतु बालिका (मधु) प्रेम रस की वार्ता नहीं कह रही थी।

(६) सखियाँ बहुत प्रकार से उसे फुसलाती रहीं और हठ कर पूछती रहीं। (७) [उन्होंने कहा,] "हम से रस की वार्ता गुप्त रख कर तुम किससे [उसे] खोलकर कहोगी?"

टिप्पणी—(२) गिव < गिव < ग्रीवा। (४) माथ < मस्तक। (५) बारि < बालिका। (७) उघार < उद्+घाटय् = उघाड़ना खोलना।

[४५४]

तब[1] बर मारि अमिअ[2] मुग गोली[3]। मुनत[3] बहियि[4] पग बास ममोली[5]।
भ[?] म दीजिय[1] आपन बाह। बौरिहु मह[1] मनि म द[3] लगाह।
पर[1] गोइ[1] हिय[1] पम म पूरी। का द[4] म[?] जगन पड[?] मुरी।
कहौ[1] भर आपन तुम्ह जाहा[1]। प हौं कहौ[1] मधु द[4] बाता।
फूटे कुंभ भरिय[1] पो[1] पानी। गिनु गिनु[1] क[?] बं[?] प हानी।
गिनती स्वरी मन क[1] लगाहु[1] का औ[?][1] बीन।
जो लहि[1] मांप रहा घर ऊपर भेन न बाह[1] दा[?]॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुनि। २ मा रा बानि। ३ ए रस लाभा। ४ मा कहँ मा कही ए कही। ५ ए सब बात अमोला।
(२) १ मा ए दीजै। २ मा मा को ए का। ३ मा हैसी ए है पो।
(३) १ मा मा धपहु। २ ए गोवाइ। ३ मा ए में यह शब्द नहीं है। ४ मा भा ए बनि कहि। ५ मा चढ़िय जग मा चढ़हु जग ए चढ़ै जग।
(४) १ मा देउ भा ए देउ। २ मा सब चाही ए सब ठाही। ३ मा फुनि हो महल ए कहिहो महल मा फुनि मन रही। ४ मा ए लै।
(५) १ मा कुंभ भरियै ए कुंभ भरै मा कुंभ भरै। २ ए जो। ३ ए खिन खिन।
(६) १ मा ए की। २ मा देपु यह भा देखहु त। ३ मा ए बोइका मा काज पुनि।
(७) १ ए कवि। २ मा भा मापन ए कापु।

अर्थ—(१) तब उस श्रेष्ठ नारी ने अपना अमृत-मुख खोलकर जिस प्रकार की अमूल्य वार्ता कही उसे सुनो। (२) [उसने कहा] "अपना भेद किसी को न देना चाहिए; कोई बावली भी क्या क्षति लेकर लाभ [उसके विनिमय में] देती है? (३) हृदय में प्रेम की मूल गोपित रखनी चाहिए, क्योंकि अपना भेद देकर इस [निष्ठुर] जगत् में कौन [मंसूर की भाँति] सूली पर चढ़े? (४) जब (यदि) मैं अपना भेद तुमसे कहूँ तो उस भेद को देकर कब मैं [उससे] कोई लाभ उठा सकूँगी? (५) यदि फूटे हुए घड़े में पानी भरिए, तो क्षण-प्रतिक्षण चूँद-चूँद करके क्षति ही [तो] होती है।

(६) देखनी मन की लकड़ी है किन्तु देखो, उसने क्या किया। (७) जब तक उसका मस्तक (सिर) धरा पर रहा (जब तक उसका सिर भूमि से अलग नहीं किया गया) उसने किसी को [अपना] भेद नहीं दिया।"

टिप्पणी—(१) अमिअ < अमृत। (२) खति < क्षति। (३) गोइ < गोपित = छिपाई हुई। (४) जाही < जाहे < यदा = जब। काही < काहे < कदा = कब। (६) लकरी < लकुटि = लकड़ी। (७) माथ < मस्तक।

[४५५]

तारापद महता[१] औ[२] राजा । भोर होत मिरि[३] दाएज[४] साजा ।
पीठि वाहि पाखर सोमवानी । आए[१] हय[२] रा सहस पलानी ।
औ ममत गज मम[१] समानी । दायज दीन्ह[२] जगत सम[३] जानी ।
अमरन सम बरायन्ह[१] जगा । सांपिन्ह[२] सहस साज[३] क पगा ।
सोन[१] रूप बहु लादि पमाबा । मनि मुकताहल गनत न आवा ।
कापर गाठ[१] जहां लगि[२] वा कवि कहा[३] न जाइ[४] ।
सहस[१] सहस दस[२] लादि क साथ दिए[३] चलाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मत ए महत। २ मा अब। ३ ए तौ। ४ मा दाइज।
(२) १ मा आये। २ ए है।
(३) १ ए सिप। २ मा दाइज दिखा मा दायज दिए। ३ मा सप।

(४) १ मा पगायन मा ग जगवर्। २ ग गांगनि मा भा गारी ग गानि। ३ मा ग गानि।

(५) १ मा म यह गान्द अगिन है। मा ग मानिग मुरा भा मनि मुुगा मग।

(६) १ मा म यह गान्द अगिन है। २ मा गरि। ३ ग गांहि परै। ४ मा उगाइ।

(७) १ मा भैंग। २ मा म या गान्द गरी है। ३ ग आग दिजा।

अर्थ—(१) तारार्थक महामात्य और राजा ने सवरा होते ही मिलकर बायन की सज्जा (तंयारी) की। (२) पीठ पर सोने के बर्ज को पाग्रे डाले हुए भी सहस्र अश्व पलान कर लाए (लाए गए) (३) और मदमत्त गज भी जि मेघों के समान थे बायन में दिए गए, जिसे समस्त जगत् ने जाना। (४) समस्त आभरण जो अड़ाऊ पदार्थों से जड़े हुए थे सहस्र पिटारियों में सजा कर रखे गए। (५) बहुत-सा सुवर्ण और रूप (चाँदी) लाद कर रवाना किया गया मणि और मुक्ताफल तो गिनती में नहीं आ रहे थे।

(६) कपड़ों के जहाँ तक नाम (भेद) होते हैं जिन्हें कवि कह नहीं सकता है (७) दस सहस्र बैलों पर लाद कर आगे चला दिए गए।

टिप्पणी—(१) महना < महामात्य। (२) पागर < पक्खर = अश्व कवच। बानी < वर्णिक। पलान < पर्याणय् < अश्व-वक्षादि म सुसज्जित करना। (३) गाग < गग्ग < गग्ग = गाड़ा। (७) बसह < बसह < वृषभ = बैल।

[४५६]

घरी[१] गन्म मो गभ[२] पन्गाद। मिहू[३] दगि पर पान्हि[४] मुग गान्ह[५]।
ओ मय[१] भइ म[२] मांगि महर्सा[३]। म्गिनाइ गप ग्हा[४] जो गन्हा[५]।
धरियानी जन[१] गाहन[२] जाग[३]। गांगा मग्ग भम्म निन्ह गभ पाग[४]।
भाजन[१] मोन ग्ग म[२] भाग[३]। गान्ह पन्बग यगनि न गाग[४]।
गाम्ग आठौ दूा अगइ[१]। मग्ग गान्ह बिनि पम्ह उगाद[२]।
अगर कपूर ौ मिगमन्द[१] परिमन्न माग जो भानि[२]।
मग्गिग नाग मनाग छान्गी धगन्ह[३] महम दम भानि[४]॥

पाठान्तर—(१) १ मा ग घरी। २ मा जो गम ग जो गम। ३ मा ग अहि। ४ मा घर। ५ मा ग मगता।

( ) १ मा भा ए पग। मा मई भा मा मई मेहि ग जो मे। ३ ए म्हेंगी। ४ मा एह गाम मा ग गग माए। ५ ग मानी।

(३) १ मा ए जन। २ मा मोहन। ३ ए म्मन। ४ मा भा ग बाग (भाग—मा) मो मो (मैं मैं—भा) गिगइ मग (गग—ग) कम्न।

(४) १ मा भाजन। २ ग गाने म्न का। ३ दूा मा ग दग। ४ ग ग्नग म भाए।

(५) १ मा टूक चरावा ए टूक चरावा। २ मा पीनी उचावा ए बीमि उचावा
(६) १ मा ए जो परिमल (प्रमल—ए)। २ मा ए कुकम मा कुंडुइ। ३
मा साख जो आदि मा सास पचावि ए सादि बनादि।
(७) १ मा मंस। २ मा मादि। ३ मा बदाम छुहारे औौर गहु बसह सविड़
कादि ए बदाम छुहारा और चरौजी बसह सहस दिय कादि।

अर्थ—(१) मधुमालती की सहस चेरियाँ (दासियाँ) थीं उन्हें [उसके] साथ रवाना किया; [वे ऐसी थीं] जिन्हें देखने पर चंद्रमा के [भी] मुख पर झाईं पड़ जाए (वह कालिमा युक्त दीखने लगे)। (२) और उसके साथ वे सात सहेलियाँ हुई (चलीं) जो [उसके] साथ बचपन में खेल चुकी थीं। (३) जितने आरती [घर के] साथ आए थे उन सबों ने अच्छे-अच्छे अपने (अँगरखे) पाए। (४) सोने और चाँदी के बर्तन हुए (दिए गए) और रेशमी कपड़े तथा वस्त्र [इतने] दिए गए कि उनका वर्णन नहीं हो सका (सकता है)। (५) उसे पलँग भी गई जो आठों टुकड़ों (चार पायों और चार पट्टियों) में जड़ाव की थी वे अच्छे रंगों के रेशम से बिनी हुई थी जिसमें फूल उठाए (उभाड़ के साथ बिने हुए) थे।

(६) अगुरु कर्पूर मृगमद (कस्तूरी) और जो आदि से [ही] परिमल की सामग्रियाँ रही हैं (सुगंधित वनस्पति आदि) (७) नारियल द्राक्षा (किशमिश-मुनक्का) बादाम और छुहारा दस सहस बैलों पर लादे गए।

टिप्पणी—(१) चेरी < चेटी = दासी। (४) रूप < रौप्य = चाँदी। (७) दाख < द्राक्षा = अंगूर किशमिश-मुनक्का। बसह < वसह < वृषभ = बैल।

[४५७]

पो दायज सम[1] छाडि पठावा । उठि क कुंवर कुंवरि[2] पहं आवा ।
पूंछेसि[1] कौन महल तोर भाई[2] । हम सब सहुं[3] दसावहु[4] आई[5] ।
ग[1] आपन जिउ ओहि पर वारौं । चरन रमु बरुनिन्ह[3] सउ[4] झारौं[5] ।
सीस[1] धरौं[2] ओहि पाँव ल्गाई[3] । चरननि[4] सउ दुइ आँपु[5] पखारी ।
ओहि[1] मोहि लागि सहा दुख मारी[2] । मैं ग[3] करौ जीउ बलिहारौं[4] ।
खोजि[1] रहउ[2] किछु नाही जो आरति ल आउ ।
जिउ अकिंचित थोरा आरति करउ[1] सजाउ ॥

पाठान्तर— मा ए मे उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्धालियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
(१) १ मा जो दायज सब मा. दाइज सब पुनि ए दायेज सब जो। २ ए कुंअर (<कुंवरि : फ़ारसी लिपि)।
(२) १ मा कहिसी ए पूछे। २ ए भाई। ३ मा मा ए सग चलहु। ४ मा देखहु। ५. मा. आई।
(३) १ मा कै पु. दै। २ मा नैन। ३ मा बारुनि ए बारुनि। ४ मा सौ रा पर मा ए. सौ। ५. ए झारौ।

(४) १ मा मैन मा ए मैन। २ ए परीं। ३ मा मा बोरहु पायेहु लाई ए दुःख पावहु मार्ग। ४ मा मा ए चरन। ५ मा मा. एहु मैन ए दुःख नैन।
(५) १ मा बोरहु। २ ए मागि हम गहि दुख भारा। ३ मा ए सब। ४ ए बलिहारा।
(६) १ मा ए देखि। २ ए रोउ।
(७) १ मा मा ए देन।

अर्थ—(१) जब समस्त समाज लाकर रवाना किया गया तब कुमार (मनोहर) उठकर कुमारी (मधुमालती) के पास आया। (२) उसने पूछा "तुम्हारा भाई (ताराचंद) किस महल में है? हमें संग लेकर चल कर उसे दिखाओ। (३) मैं जाकर अपना जी उस पर निछावर करूँ और [उसके] चरणों की रेणु अपनी बरौनियों से झाड़ूँ। (४) मैं अपना सिर उसके दोनों पैरों से लगाकर रखूँ और उसके दोनों चरणों को मस्तक पर चढ़ा लूँ। (५) उसने मेरे लिए भारी दुःख सहन किया [इसलिए] मैं जाकर [उस पर] जीव बलिहार करूँ।

(६) मैं खोजता रह गया किंतु ऐसा कुछ नहीं है जो उस पर आरती करने के लिए ले जाऊँ, (७) [मेरा] परिकिंचित् जीव तो [उसकी आरती के लिए] थोड़ा (अपर्याप्त) है और [उसको लेकर उसकी] आरती करते लज्जित होता हूँ।"

टिप्पणी—(१) औ < अउ < अपरा = अब। (३) वार < उव्वार < उद् + वर्तृ = त्याग करना। (५) माथ < मस्तक। (७) अकिंचिन < परिकिञ्चित् = जरा कुछ।

[४५८]

यह[1] सुनि गाढ़ि भई अउर[2] आगि । छूटगहि स आई जह तारा ।
ताराचन्द लगि भा[1] सगा । धाइ मनोहर पौ[2] स पगा ।
जो जो[1] ताराचद उधाव । धाइ धाइ सिर पाँवहि[2] लाव ।
कहसि कीन्ह तुम्ह[1] मो लगि[2] जसा[3] । कलिजुग को न पार[4] असा ।
छाड़हु[1] राज पाट मोहि[2] लागी । जरम सिरानहु[1] मा लिप आगा ।
तुम्ह मार जिउ न मानहु[1] परिहरि आपन राज ।
जो म जिउ न करौं मोहि[1] आरसि फनि यह जिउ कहि[2] पाज ॥

पाठान्तर—(१) १ मा यह। २ ए अब ली।
(२) १ ए उर्ग भी। २ मा पाई ए पाँव।
(३) १ ए जब जग। २ मा मीस पाव में ए सिर धुरै मैं।
(४) १ मा कोमि कीन्ह मैं मा कन्हिी कीन्ह मैं ए को हि मैं। २ मा कर्ण लागी ए मांहि लागि। ३ ए लमा। ४ ए कलिजुग सी पार करै न।
(५) १ ए छाड़। २ ए मोहि। ३ ए जनम गेवाय दियर। ४ मा हम।
(६) १ ए तुम सिर जिउ मैं माथ।

(७) १ मा ए जीव। (जीउ—ए) जहाँ नाहि (न—ए)। २ मा दुनि यह जीव ए ती जाई। ३ मा केहि।

अर्थ—(१) यह सुनकर वह बालिका (मधुमालती) खड़ी हो गई और कुमार (मनोहर) को वहाँ ले आई जहाँ ताराचंद था। (२) [मनोहर को] देखकर ताराचंद खड़ा हो गया और मनोहर दौड़कर उसके पैरों में गिर पड़ा। (३) जब-जब ताराचंद उसको उठाता, वह दौड़-दौड़कर [पुनः] अपना सिर उसके पैरों से लगाता। (४) [मनोहर ने कहा] "तुमने मेरे लिए जैसा किया कलियुग में ऐसा (वैसा) कौन कर सकता है? (५) तुमने मेरे लिए अपना राज्य और [अपना] सिंहासन छोड़ दिया, और मेरे हृदय की जलती हुई [विरह की] अग्नि को शीतल किया।

(६) तुम अपना राज्य छोड़कर मेरा जीव (मेरा प्रेमपात्र) ले आए; (७) [अतः] यदि मैं अपना जीव तुम्हारी मारतो न करूँ, तो फिर यह जीव किस काम का होगा?"

टिप्पणी—(१) बारा < बालक। (३) जौ < जउ < यदा = जब। (५) पाट < पट्ट = फलक सिंहासन।

[४५९]

बिनती एक करौं[1] कर जोरी । पुरवहु आस कुँवर जौं[2] मोरी ।
जौ एहि[1] पलँग[2] आएसु[3] पावहि । एक ठावँ[4] भए[5] दिन बहुरावहिं[6][7] ।
बिधनाँ जहाँ रासु जब ताईं[1] । हम तुम्ह दुव रहहिं[2] एक ठाइं ।
सभ[1] कोइ इहाँ आहि सहदेसी[2] । हम प इहिं दुवौ जन[3] परदेसी ।
जौ रावरि[1] आग्या मैं पावौं । गै राजहु सउँ[3] मात जनावौं ।
ताराचंद बात यह भाई[1] सभ मिल[2] दुवौ कुमार ।
रहसत आए हुलास सेउँ[1] बिक्रम राइ के बार[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा करौं। २ ए कुँवरि (< कुंवर फारसी लिपि) है।
(२) १ मा ए जनि। २ रा पलँग का मा मा पलँग की ए कुमर की। ३ मा ए आयेस। ४ भा रा पावौं। ५ मा येकहि ठाउ ए एकहि ठाँव। ६ ए भे। ७ ए दिन बहुरावहि, मा दिन बहिरावहि, रा मा दिउ बहुरावौं।
(३) १ मा रापै हाम बताइ ए रखै जहाँ जब ताईं, मा हम राखहि जब ताईं। २ ए हम तुह दुनौ रहैं।
(४) १ ए सब। २ ए अहै सदेसी। ३ मा ए हम दुनहु जन पै रा हम दुमउ जानहु।
(५) १ ए रावरि। २ मा ए रा आग्या। ३ मा ए राजहु सौ ए भा राजा सौं।
(६) १ मा मन भाई मा ए सुनि भइ (भई—ए)। २ मा संग मिले या ए भा सम मिलि।

(७) १ मा दुखी जन ए दुखी जन रा हुलास गाँ। २ ग राजा बिक्रम के दरबार।

अर्थ—"(१) मैं एक बिनती हाथ जोड़कर कर रहा हूँ यदि हे कुमार तुम मेरी आज्ञा पूरी करो; (२) जब तक [हम दोनों] चलने का आदेश पावें एक स्थान पर हो (रह) कर हम दिन बहलावें (आमोद-प्रमोदपूर्वक दिन व्यतीत करें)। (३) विधाता यहाँ जब तक रक्खे हम तुम दोनों एक स्थान पर रहें। (४) यहाँ सभी कोई साथ के (एक) देश के हैं किंतु हम दोनों पर देशी हैं। (५) यदि मैं आपकी आज्ञा पाऊँ तो जाकर राजा से इस बात (निश्चय) को बताऊँ।"

(६) ताराचंद को यह बात अच्छी लगी और दोनों कुमार साथ मिलकर (७) हर्ष मानते हुए उल्लास के साथ बिक्रमराज के द्वार पर आए।

टिप्पणी—(१) आस < आशा। जौ < जउ < यदि। ( ) जौ < जउ < यत्र = जब। आएसु < आदेश। (३) ठाइ < स्थान। (७) हुलास < उल्लास। सउ < समम् = साथ। बार < द्वार < द्वार।

[४६०]

कुँवरन्ह कर[1] आउब[2] सुनि बाता[3] । गइ जाग[4] चलि आप भुवारा[5] ।
तौ कुँवरन्ह[1] बिनती ओधारी । महा राय[2] मन इए[3] तुम्हारा ।
नगर महारम बिन बियाऊ[1] । घर तुम्हार[2] आह दुइ[3] ठाऊ ।
मन तुम्हार मानस हे[1] जहाँ । मिलि के रहहु[2] दुखी जन तहाँ ।
इहाँ दुखी तुम्ह नगरन्ह[1] जोगी । उहाँ मन मीतमि मह भागी[2] ।
तुम्ह दूनहु कर मन जह मान[1] मिलि मय तहाँ[2] रहा ।
यह सम[1] राज पाट तुम्हें[2] दुहु[3] कर सुग मउ[4] चलि मगाहु ॥

पाठान्तर—(१) १ रा कुवर कर ग कुवरन्ह कीं। २ मा भा आग्य ग आयस। ३ मा राजा। ४ मा भा मैं आयउ ग मा आइ। ५ मा पाट सिंघासन ग राज कुमारा मा बार मधारा।
(२) १ मा कुवरन्ह ग सैं कुमार। २ ग बड़े राउ। ३ मा न्याउ ग इत्यादि। ४ ग तामरी।
(३) १ मा बिगाउ। २ मा ग नागार। ३ ग दसौ।
(४) १ मा ग मन मानै चलि तुम्हरेउ (मानरौ—ग)। ग रहौ।
(५) १ मा इहाँ मैनगर तुम्हह मा दुखह तुम नैनदि ग दहाँ नैन दुखी जन। मा मा ग मैन मीतर (मीत—ग) मन मारौ।
(६) १ मा तुम्ह दुनह कर मनु जहाँ ग तुम दुखी हू कर जिय जा मिलै। २ मा मग मिलि रहाँ मा मिलि ३ गय ग रहु तुम नग।
(७) १ मा यमव ग है राम मा पर मव। ग मैं यह दान कीं है। ३ ग दुओ। ४ रा ग भा गौ। ५ मा मग्न गा[1]।

अर्थ—(१) द्वार पर कुमारों का आना सुनकर, भूपाल स्वयं चलकर अपने-आप [द्वार पर] आ गए। (२) तब कुमारों ने विनती की और राजा ने कहा "तुम्हारे मन की इच्छा [जैसी हो]। (३) महारस नगर और चित्त बिश्राम दोनों ही स्थानों पर तुम्हारा घर है। (४) जहाँ तुम्हारा मन मानता हो वहाँ तुम दोनों जन मिलकर रहो। (५) यहाँ तुम दोनों [हमारे] नेत्रों की ज्योति हो, और यहाँ [भी] नेत्र-सीपियों के तुम मोती हो।

(६) जहाँ तुम दोनों का मन माने, वहाँ दोनों मिलकर साथ-साथ रहो (७) यह समस्त राज्य और सिंहासन तुम्हीं दोनों का है तुम दोनों [यहाँ] सुखपूर्वक केलि करो।'

टिप्पणी—(१) सउ < स्वयम्। भुआर < भूपाल। (२) औधार < अव + धारय् = निश्चय करना। (५) सीप < सिप्पि < सुत्ति < शुक्ति = सीपी। (७) पाट < पट्ट = फलक सिंहासन।

[४६१]

जो राजा सउ[१] अग्या[२] पाई । दुवो कुंवर बहुरे सिर नाई ।
मता[१] पिता सउ[२] मिलि बज[३] वारी । चढ़ी चलन[४] चौडोल[५] कमारी ।
पाछे[१] चली[२] ते साठि सहेली[३] । जनम सघासिनि[४] साथ जे[५] खेली ।
औ अनगिनित जो चरी आही[१] । कवि मुह ते भनि नाहि सिराही[२] ।
जोबन केलि[१] करत सम आइ[२] । चित्रसनि पर पमि बजाई[३] ।
करुना[१] म न बखाना[२] समंपत[३] राज कुमारि ।
दुवो न करि[१] जब चल्हिहि सब किछु[३] कहब विचारि[४] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए सौं। २ मा ए रा अग्या।
(२) १ मा ए माता रा मात। २ रा ए सौं। ३ ए मे यह शब्द नहीं है। ४ मा चढ़ी चली मा चली चढ़ि। ५ मा चौडोलि रा ए चडोल।
(३) १ मा पाछ। २ ए चला। ३ ए सहेली। ४ ए संघातिन्ह। ५ मा मा जो।
(४) १ मा औ अनेक जो चेरी आही मा ए अगनित सखी सब (ए मे 'सब शब्द नहीं है) जो समधारी। २ मा ए सबै (सबै—ए) चली (चली—ए) जो साथ कुमारी।
(५) १ मा पीनि छतीसी मा सबै चले दुटी रा जोबन केलि ए जोबन हुते। २ रा करत सम आई, मा ए मा सग जो आई। ३ मा पैसी आई, ए पैसु बजाई मा पैसी लगाई, रा पैठि बजाई।
(६) १ मा मौना। २ ए बखान। ३ ए समपति।
(७) १ ए कुंवर। २ ए जब चल्हिहिं, मा जब चलहि चरन्ह गह। ३ ए जो। ४ मा ए समारि।

अर्थ—(१) जब राजा से उन्होंने आज्ञा पाई दोनों कुमार [उन्हें] सिर झुका कर वापस

हुए। (२) बालबालिका (मधुमालती) माता-पिता से मिलकर चलने के लिए चौडोल पर चढ़ी। (३) उसके पीछे [उसकी] वे साठ सहेलियाँ चलीं जो जन्म से उसकी साथिनें थीं और जो उसके साथ पली हुई थीं। (४) और [उसके साथ] जो अगणित चेरियाँ थीं कवि के कथन से कही जाकर वे समाप्त नहीं हो सकती हैं। (५) वे सभी यौवन की केलि करती हुई आईं और चित्रसेन के घर में प्रविष्ट हो कर बधावोत्सव करने लगीं।

(६) राजकुमारी को विदा देने के समय जो करुणा [प्रकट] हुई उसका वर्णन मैंने नहीं किया। (७) जब दोनों कुमारियाँ [अपनी ससुरालों को] चलेंगी तब कुछ विचार कर [उस करुणा के संबंध में] कहूँगा।

टिप्पणी—(१) जौ < जउ < यत्र = जब। (२) बारी < बालिका। चौडोल < चतुर्दोल = चंडोल। (४) चेरी < चेटी = दासी सेविका।

[४६२]

धनी नगर बाजन बजाई[1] । छतिसौ[2] पौनि आरति लै आई ।
घर घर बाजा[1] नगर बधावा[2] । सुरस[3] कंठ कामिन्ह[4] मंगल[5] गावा[6] ।
बाहर[1] नगर पटोरन्ह राता[2] । भीतर करि कहु का बाता[3] ।
मन्दिर[1] जहाँ गुन मन सवारा । मधुमालति स तहा उजारी ।
सुरमाला एक[1] महल सवारा[2] । तहँ स तारागन उजारा[3] ।

भीतर मधुमालति औ[1] धनी सप सिखि[2] सुरग बराहिं[3] ।
बाहर[1] तारागन मनोहर दूनौं[2] कलि करहिं ॥

पाठान्तर—(१) १ ए. जब माई। २ रा. छत्तीस।
(२) १ मा. बाजन ए. बाजै। २ मा. बधावै। ३ मा. सुघर। ४ मा. मा. गायन ए. गायन। ५ मा. मन ए. जो। ६ मा. गाई।
(३) १ ए. बाहर। २ मा. छाना। ३ मा. आ कही कवाना ए मा. कहौ का बाता।
(४) १ भा. मा. मंदिर।
(५) १ मा. ए. मन। २ मा. आ भाग भा उजारा। ३ मा. सँवारा।
(६) १ ए. जो। २ भा. मा. मन सिरि ए. दूनौ। ३ ए. करमाहिं।
(७) १ मा. ए. बाहर। २ मा. राउ मन भा दुनौ मन।

अर्थ—(१) बारात वाद्य-ध्वनि करती हुई नगर में प्रविष्ट हुई [तो] छत्तीस पावनी (उपहार-पुरस्कार पाने वाली) जातियों की स्त्रियाँ आरती लेकर आईं। (२) नगर में घर-घर बधावा बजा और [मधुर] कंठ वाली स्त्रियों ने रसीले कंठ से मंगल-गान किया। (३) नगर बाहर से ही रेशमी वस्त्रों से [आच्छादित होकर] रक्त वर्ण का (लाल) [हो रहा] था, फिर नगर के भीतर की [सजावट की] बात कौन कहे? (४) मंदिर (राजभवन) में जहाँ गुण-सम्पन्न

सँवारी हुई थी, मधुमालती को ले जाकर वहाँ उतारा गया। (५) और एक महल में सुख-शाला सँवारी गई थी; वहाँ पर ले जाकर ताराचंद को उतारा गया।

(६) [राजभवन के] भीतर मधुमालती और पेमा एक साथ मिलकर सुख का विलास करती थीं (७) और बाहर ताराचंद और मनोहर—ये दोनों केलि करते थे।

टिप्पणी—(२) बधाव < वद्धापन < वर्धापन = अभ्युदय अथवा हर्ष सूचक वाद्य (३) पटोर < पट्ट + कूल = रेशमी वस्त्र। रात < रत्त < रक्त। (५) सेन < शयन = शय्या। सँवार < स + वारय् = सजाना।

[४६३]

दूनौ सुख मानहिं[१] रहु कली[२]। भोग भुगुति[३] औ[४] प्रीति[५] नवली।
खाइ खेलि हँसि दिन बहरावहिं[१]। रमि सोइ सुख नींद[२] बितावहिं[३]।
निमिख न आपु माँहि[१] बेगराहीं। सतत दुवौ[२] एक सँग[३] रहाहीं[४]।
कबहुँ[१] अहर मन बहरावहिं[२]। कबहुँ होइ हुँमुरे लावहिं[१]।
पेमा औ[१] मधुमालति बारी। भीतर इन्ह दुहुँ[२] रची[३] धमारी।
सदा दुऔ सुख बेरसहिं[१] दुख क[२] न जान बात।
बाप साथि औ[१] जोबन औ सिर ऊपर तात॥

पाठान्तर— ए म उपर्युक्त प्रथम अर्धाली के चरण परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ ए दूनौ सम मानत मा दुवौ जना मानहिं। २ मा में अर्धाली का प्रथम चरण नहीं है। ३ मा भागु भुगुती। ४ ए व। ५ मा परम।

(२) १ रा जनु दिन बहरावहिं मा हँसि दिवस गवावहिं ए औ दिन बहरावैं। २ ए रैनि नीव सुख सेज। ३ मा नावावहिं ए ज पावैं मा विहरावहिं।

(३) १ मा आपु आपु, ए आपुस माहँ। २ ए सतति दुनौ। ३ मा मा ए सथ। ४ मा रहहीं।

(४) १ मा सब ए कबही। २ मा अहेरे जिउ बहलावहिं मा अहरे हाथ लै लावहिं ए ओह रे होइ लावहिं। ३ मा कबहुँ हुमर होई लावहिं, मा कबहुँ आपु आपु न चितावहीं ए कबहीं ओइ जिउ बहलावहिं।

(५) १ ए पेरे। २ मा ओन्ह दुहु ए दुनहुँ। ३ मा माछ।

(६) १ ए दुनी सुख बेल्सी। २ मा की ए मे नहीं है।

(७) १ मा बाप सखी मो ए बाबा सखि औ मा बाबा सखि सी। २ मा गवा।

अर्थ—(१) दोनों (मनोहर और ताराचंद) साथ-साथ रस (आनंद) और केलि मानते थे और साथ-साथ ही वे [सुख] भोग, भोजन और नई प्रीति [मानते थे]। (२) वे खा-खेल कर और हँस कर दिन बहलाते (आमोदपूर्वक बिताते) थे और रातें सुख की निद्रा सो कर व्यतीत करते थे। (३) वे एक पल के लिए आपस में अलग नहीं होते थे और दोनों सतत ही एक-साथ

रहते थे। (४) कभी तो वे मालोट में मन बहलाते थे और कभी हैंगुर (चौगान) में होड़ लगाते थे। (५) [उधर] पेमां और मधुमालती बालिकाएँ जो थीं उन्होंने [राजभवन के] भीतर बमार रख रखी थीं।

(६) दोनों सदा सुख का विलास करती थीं दुख की बात [भी] नहीं जानती थीं; (७) बचपन की नव-यौवन से संधि [की अवस्था] थी और सिर पर पिता थे ही (उन्हें पिता की छत्र छाया प्राप्त थी ही)।

टिप्पणी—(१) भुगुति < भुक्ति = भोजन। (२) रैनि < रयणी < रजनी = रात्रि। (३) संतत < सतत = निरंतर। (४) मड़ेर < आगट। (५) बारी < बालिका। (७) गाधि < गम्भि = थाह।

[४६४]

दिन एक कुँवर पारधी राए[1] । राज दुवार[2] सुनत सब धाए ।
कुँवर पारधिन[1] सउँ[2] अस कहा । इहाँ अहेर नियर कहु[3] अहा ।
कहहिं[1] इहाँ लहि[2] गाम अढ़ाई । अति अनग सावज अधिकाई[3] ।
नाग[1] मिरिग औ[2] महिष बराहा । साभर सगुन[3] रोझ बहु आहा[4] ।
कुँवर कहा जन पाँच पठावहु । धान होइ तौ आइ[1] जनावहु ।
जस कान्हि[1] पहर एक[2] आवहि मन पहुराइ[3] ।
जाइ[1] पारधिन्ह[2] अस कहहु[3] कालिह न होइ कहु[4] जाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा भाए। २ मा राजा घर औ ए राज दुवार। ३ मा मा सब धाये रा सब आए ए उठि धाये।
(२) १ मा पारधिन्ह ए पारधी। २ रा ए सौं। ३ रा गाउ।
(३) १ ए कहा रा कहिन। २ रा ए सौं। ३ मा मा. सावज बहुताई ए सावज है राई।
(४) १ मा. सेंप ए भग। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा सावर सगुन ए सावर सगुना मा साद बरन मुनी। ४ मा रोझा जो आहा ए रास ज आहा।
(५) १ मा आनि।
(६) १ मा जैसे कहीं ए जैस कान्हि। २ मा में 'मह' और है। ३ मा मरमाई ए बहुनाइ।
(७) १ मा पाइ। २ मा पराधिन्ह ए पारधी रा पारधिन। ३ मा ए कहु। ४ मा काहीं न जाउ ए कालि न कोउ मा कालि न जाउ। ५ मा कन।

अर्थ—(१) एक दिन कुमार (मनोहर) ने शिकारियों को बुलाया; राजद्वार बुलावा सुनकर सब [शिकारी] दौड़ पड़े। (२) कुमार ने शिकारियों से ऐसा कहा, "यहाँ कहीं शिकार आसपास है?" (३) उन्होंने कहा "यहाँ से ढाई कोस (लगभग ५ मील) पर अनेक जंतुओं की

अति अविस्तर है (४) झाँख मृग, महिष बराह, तोमर, रूगुन और रोझ (नीलगाय)) बहुतेरे हैं।" (५) कुमार ने कहा "चारों जनों को भेजो और यदि [शिकार का] घात (दाँव) हो तो आकर बताओ।

(६) जैसे (आशय यह है) कि कल एक प्रहर मन बहला आवें। (७) शिकारियों से जाकर ऐसा (यह) कहो कि कल कोई कहीं न जाए।

टिप्पणी—(१) (२) (७) पारधी < पारद्धिक < पापर्धिक = शिकारी। (१) राव < रावय् = बुलाना। (२) अहेर < आखेट। नियर < निकट। (३) सावज < श्वापद = पशु। (४) झाख = एक जाति का हरिण। महिख < महिष = बनकी भैंसा। बराह = बनकी सूअर। तोमर = एक जाति का हरिण। रूगुन = एक जाति का हरिण। रोझ < ऋष्य = नीलगाय। (७) काल्हि < काल्य < कल्य = कल।

[४६५]

भोर पारधी आए[1] सबेरें[2]। घात आहि[3] उठि चलहु अहेरें[4]।
सुनतहि सभ[1] अहेरिया धाए[2]। सोनहाँ बाज चित अयौन[3] चलाए।
बागुर जाल कहारिन[1] काँध। धानुक बहुत[2] चले सर साँध।
छेंकि गाँव पुनि[1] सावज बाह। आगें भए धनुकार उमाहे[2]।
भीतर हाँका इन्ह कीन्ह[1] करेरा। बाहेर दिए[3] बागुर चहुं फेरा[4]।
पड़ पड़ ग धानुक[1] लाग[2] औ लाएन्हि[3] बन आगि।
धनुकन्हि[1] के सिर ऊपर चले झाँस[2] सम[3] भागि॥

पाठान्तर—(१) १ ए तब पारधी आवे। २ मा ए सबेरा, रा सबेरे। ३ मा आही, ए भये। ४ मा चलहु अहेरा, ए चले अहेरा रा चलहु अहेरे।
(२) १ मा सुनतहि सबै ए सुनत सबै। २ मा ए आए। ३ मा सुनहा बाज चित भाए, रा सोनहां चीत अमोल ए सोनहा बाज औ चित सोनहा बच चित भाये।
(३) १ मा भा ए कहारन्ह। २ मा धनुष बहुत ए धनुष चार।
(४) १ मा छेंकि करेरे मा छेंकी करार, ए हाँकि करता। २ मा आगे भए धनुधी होइ जाहे, ए अब आगे औ धनुक उमाहे, मा आगे भए धनुधार उमाहे।
(५) १ रा हाँका इन्ह किए औ मा ए हाकन्ह कीन्ह भा हुकमन्ह कीन्ह। २ ए करेरे। ३ मा बाहेर दिहु ए बाहर दीन्ह। ४ ए फेरे।
(६) १ मा कै धानुषी, भा कै धानुक ए पै धनुक। २ ए लग। ३ ए लावा।
(७) १ मा ए धनुषन्ह। २ मा भा चाह पशु, ए आए जन्तु। ३ मा भा ए सब।

अर्थ—(१) शिकारी [दूसरे दिन] प्रातःकाल सवेरे (तड़के) ही आए [और उन्होंने कहा,] [शिकार का] घात (दाँव) है, आखेट के लिए उठकर चलो।" (२) यह सुनते ही

सभी आखेट करने वाले दौड़ पड़े और [उन्होंने] [शिकारी] कुत्तों बघचीतों को आगे रवाना किया। (३) बागुर (फन्दे) और जाल कहारों ने कंधों पर रक्खा और बहुत-से धनुर्धर शर-संधान कर चल पड़े। (४) तदनंतर गोंडों ने जंतुओं को [निकल भागने से] रोक कर [शिकारियों की ओर] चलाया और धनुष चलाने वालों ने आगे हो (आ) कर उन्हें भगाया। (५) [इस प्रकार] भीतर से इन्होंने कराल हाँका किया और बाहर-बाहर चारों ओर बागुर (फन्दा) किया गया।

(६) पेड़-पेड़ पर जाकर धनुर्धर लग (बैठ) गए और [लोगों ने] वन में आग लगा दी (७) [परिणामस्वरूप] धनुर्धरों को अपने सिर के ऊपर कर समस्त सावज भाग चले।

टिप्पणी—(१) सबर<स+बेला। (२) सोनहा<स्वान। बघचित<व्याघ्र+चित्रक। (३) (५) बागुर<वागुरा=जतुओं को फँसाने का फन्दा। (३) (६) धानुक<धानुष्क<धानुष्क=धनुर्धर धनुर्विद्या म प्रवीण। (३) साँध<संध<सं+धा=संधान करना। (४) सावज<श्वापद=जन्तु। (४) उभाड़=भगाना। (७) साम=एक जाति का हरिण।

[४६६]

सब धनुक्कह[1] करि[2] कांड बिसारे[3]। मार सांग[4] भए पिकरार[5]।
कतहु गड धाए[1] बौरान। कतहु रोझ ओटहि[2] महुराने।
भवहि[1] भालु[2] पायल[3] बिकरारा। पर महिख[4] डारहिं[5] गरधारा[6]।
बहुत मिरिग बघ चीत[1] मारे। सोनह[2] बहुत बराह पछारे।
बहुत[1] जतु जियत[2] धरि[3] आए। बहुत[4] मुए माहर महुराए।
पहर एक मह[1] गनि अहरा[2] सभ[3] कटक पर आइ।
दुवो[1] कबर जस ओहा[2] लाग मरिग महाइ[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा सब धनुषग्ह ए सब धनुकार। २ ए ज। ३ मा मा ए बिसारा। ४ मा मारेन्हि जनु ए मा मार जन्तु। ५ मा भइ बिकरारा ए सब बिकरारा मा भय बिकरारा।

(२) १ मा गैडा धा ए गडा धाव। २ मा मोर ए सार।

(३) १ मा फिरहिं ए भवें। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा पायल ए बघायन्ह। ४ मा मा महिख ए महिष। ५ ए डारी। ६ मा घुरघुरा ए घुरघारा।

(४) १ मा मिरिग बघचीतह मा बघचीतन्ह ए मिरग बघ चीत। मा मा सुनहन्ह ए सोनहा।

(५) १ मा ए बहुत। २ रा म यह शब्द नहीं है। ३ ए गै। ४ मा बहुत।

(६) १ मा ए मे यह शब्द नहीं है। २ ए औरा मा अहरें। ३ ए मा सबै।

(७) १ ए दुनो। २ रा ए मा चोखा। ३ रा पैं अहार।

अर्थ—(१) समस्त धनुर्धरों ने विषाक्त कोड (बाण) [संधान] कर शत्रों को मारा है वे बेकरार (विह्वल) हो उठे। (२) कहीं पर मेढ़े बावले होकर दौड़ने लगे कहीं पर रोझ (नीलगाय) विष के व्याप्त होने से व्यथित होकर लोटने लगे। (३) घायल भालू बेकरार होकर चक्कर लगाने लगे और मैंसे [आहत होने पर गिर कर] पड़े-पड़े चुरताल (पुरों की चपेट) लगाने लगे। (४) बघचीतों ने बहुत से मृगों को मारा और शिकारी कुत्तों ने बहुत से बाराहों को शिकार किया। (५) बहुत-से जंतु जीवित पकड़ कर लाए गए और बहुत-से [बाणों के] विष से आक्रान्त होकर मर गए।

(६) आखेट खेल कर एक प्रहर में सब [आखेट] लेकर घर पर आई (७) और जल-क्रीड़ा करने के उद्देश्य से दोनो कुमार सरिता में स्नान करने लगे।

टिप्पणी—(१) धानुक < धानुक्क < धानुष्क = धनुर्धर, धनुर्विद्या में प्रवीण। बिसार < विपाक्त = विषैला। (२) रोझ < ऋश्य = नीलगाय। (३) भालु < भल्ल [दे] = रीछ। (३) बिकरार < बेकरार [फा] = बेचैन। थार < ताल = चपेट। (४) सोनहा < श्वान। बघचीता < व्याघ्र + चित्रक। (६) अहेर < आखेट = शिकार।

[४६७]

कहनि[१] तेज अति ह[२] रवि करा। अबही जाव[३] घर सीतरि[४] यरा।
जल क्रीड़ा[१] खेल[२] रहे लोभाई। पर्मा इहां कुंवरि[३] पहु आई।
कहसि[१] कि[२] आजु कुंवर[३] घर माहीं। चलु[४] चित्रसारी झूलहि माहीं[५]।
आजु मोरें[१] मन अस[२] मा[३] आई। झूलहि ग हम[४] पथ अघाई।
फुनि अस दाउ[१] कहां हम पाउब[२]। बहुरि कि नइहर[३] झूलइ आउब[४]।
सुनि मधुमालति रहस सउ[१], उठि गौनी सखराउ[२]।
सब[१] सखीं सम धाईं[२] सुनि झूलन कर नाउ॥

पाठान्तर—(१) १ मा कहिसहि, ए कहहि। २ मा आहि। ३ ए अबहि जबै। ४ मा सीतसी ए सीतस रा सीतलि।
(२) १ रा क्रीडा। २ मा खेल ए जो। ३ रा में यह शब्द नहीं है।
(२) १ रा क्रीडा। २ मा खेल, ए जो। ३ रा में यह शब्द नहीं है।
(३) १ ए कहा। २ मा ए में यह शब्द नहीं है। ३ रा राज। ४ ए चलहु। ५ मा ए माही।
(४) १ मा मा ए मोर। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ मा मा भी। ४ मा मा मैं मैं ए मैं जो। ५ मा पेंग ए पेम।
(५) १ मा फुनि अस बाउ रा ए पुनि अस बाउ। २ ए पाइब। ३ मा इगह ठां। ४ ए मूर्म आइब।
(६) १ मा रहसि ए रहसी भा रहस सा। २ ए सखराउ।
(७) १ मा मा ए मम। २ मा सम धाइ ए सब धा[...]।

अर्थ—(१) उन्होंने [आपस में] कहा "सूर्य का तेज [इस समय] अधिक है इसलिए

पर अभी [कुछ देर में] शीतल बेला होने पर जायेंगे।" (२) [अतः] दोनो [कुमार] जलक्रीड़ा में मग्न हो रहे। यहाँ [राजभवन में] धमा कुमारी (मधुमालती) के पास आई (३) और उससे कहा "आज कुमार (मनोहर) घर पर नहीं हैं इसलिए चलो हम इस बीच में चित्रसारी में झूलें। (४) आज मेरे मन में आकर ऐसा हुआ है कि हम [चलो] जाकर भर पेट झूला झूलें। (५) फिर ऐसा अवसर हम कहाँ पायेंगी क्योंकि क्या फिर हम नइहर(पीहर) में झूलने आएँगी ?

(६) यह सुनकर मधुमालती हर्ष से उन्मत्त हो गई (७) और उसके साथ समस्त सखियाँ [भी] झूलने का नाम सुनते ही दौड़ पड़ीं।

टिप्पणी—(१) सीतरि<शीतल। (३) माहिं<मध्य। (६) रहस<रभस्=हर्ष। मनराउ<मनरागम=मन का राग।

[४६८]

[1]पँथ[1] चढ़ी[2] परहिं[3] प्रज[4] भाग । गावहिं[5] सुरंग[6] बरन घनराग ।
झूलत मिहुर बाहु न छूटहिं[1] । बाहु बर[2] हार उर[3] टूटहिं ।
उपरि गाम बहुरहि क[1] जाहीं । बहुतन्ह[2] उर आंचर फहराहीं[3] ।
झूलहिं धरें[1] पथ क[3] डोरी[4] । कटि[5] जनु[6] माद टूक दुइ जोरी ।
झूलत निमिष[1] न आवहिं[2] थमा । जनु बखान[3] चढ़ि[4] सुरहिनि खमी ।
नयजोबन उर उपनत[1] बालपन क साधि ।
झूलहिं सब[1] मद बाउरी[2] अंबर करि[3] गमि बाधि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए चढ़िके। २ मा पथ ए पम। ३ ए चढ़ि। ४ मा तीपति ए पर्मनि मा पौंगरि रा झूलहिं। ५ ए मे यह छन्द नहीं है। ६ ए गावे। ७ मा सुमर।

(२) १ मा बाउ मीउ छूटी। २ ए क। ३ ए हार उरहि जा।

(३) १ मा बहुरहि का ए बहुरत के। २ रा बहुतन। ३ मा अचल फहराहीं मा अचर बहराहीं ए आँचर बिथराहीं।

(४) १ मा धरि। २ मा पँथ ए पम। ३ ए को। ४ ए डारी। ५ मा ए कटी। ६ ए जा। ७ रा टूट।

(५) १ मा पुनि। २ ए मो आवै। ३ मा बिमान। ४ ए पर। ५ ए वैनी।

(६) १ मा औ उपनत। २ मा बालपन गयी ए बालापन कै गति मा बालपन कै गति।

(७) १ ए सब। २ मा बौरी। ३ मा करि।

अर्थ—(१) [चित्रसारी में आकर] झूले पर चढ़ी हुई वे बालाएँ झूल रही थीं और रसीले कंठ की झंकार के साथ वे गा रही थीं। (२) झूलने समय किसी के निठुर बाहु हटे थे तो किसी के हृदय पर का हार टूट रहा था। (३) बहुतों के सिर पर का वस्त्र हट जाता था, और बहुतों के हृदय पर का अञ्चल फहराने लगता था। (४) [जब] वे पद से (पैरों) की डोरी पकड़े

हुए झूलतीं (पेंग मारतीं) [तो ऐसा लगता] मानो उनकी कटि दो टुकड़ों को मिलाकर जोड़ी हुई हो। (५) झूलती हुई वे कैसी दीख पड़ती थीं मानों विमान पर देवांगनाएँ बैठी हों।

(६) [उनके] हृदयों पर बालपन [और यौवन] की संधि के कारण नव यौवन (कुच) उत्पन्न (अंकुरित) हो रहे थे (७) [और] वे समस्त चाड़ से बावली [नव-युवतियाँ] कटि में [अपनी] साड़ी कस कर बाँधे हुए झूल रही थीं।

टिप्पणी—(१) बारा < बाला। (२) चिहुर < चिकुर = केश। (३) उचर < उच्चर < उद् + चर् = कूदना। आचर < अञ्चल। (५) बवान < विमान। (६) उपन < उत् + पद् = उत्पन्न होना। सांधि < सन्धि = जोड़। (७) बाउर < बाउल < बातुल = बावला।

[४६९]

चौथें पहर सियरि भइ[1] बरा। भएउ[2] निरास तन रवि करा।
ताजी साजि[1] आने चनवारा[2]। दुनों कुँवर भए[3] असवारा।
अस दुहुं तेज तोखार चलाए। राज[1]बार छिन एक[2] महँ[3] आए।
कहा कहाँ दुवो[1] राज कुमारी[2]। झूलन गईं सखीं सब बारी[3]।
सुनेन्हि[1] जो राज कुवँरि[2] घर[3] नाहीं। सून मँदिल[4] कहन्हि का[5] चाहीं।
फुनि[1] एक सघ[2] दुवो[3] जन चलि आए चित्रसारि[4]।
सखिन्ह[1] संग[2] जहँ[3] झूल[4] विक्रम रानी[5] कुँवारि[6]॥

पाठान्तर—(१) १ ए चौथ पहर सीतल भौ भा चौथें पहर सीत भइ। २ मा भयो ए भौ।
(२) १ मा ताजी सजी। २ मा आनु चनवारा ए मा आनि चनवारा। ३ मा भएउ भा भए दुई।
(३) १ ए राजा। २ मा छनक। ३ ए मो।
(४) १ भा कहा कहाँ कुँवरी मा कहा कहाँ भौ ए कहाँ गईं कुँवरी। २ मा कुमारी। ३ मा झूलन गई सखिन संग बारी मा झूलै गै सबै चित्रसारी ए झूलन गई कुँवरी चित्रसारी।
(५) १ रा सुना मा सुनीन्ही। २ ९ कुँवर। ३ मा गृह। ४ मा भा मंदिर। ५ मा कहीन्हि कह, ए कहेन्हि कस रा कहेन्हि का।
(६) १ मा ए पुनि। २ मा भा ए सप। ३ मा दुई, ए दुनौं। ४ भा चित्रसारि।
(७) १ रा सखिन ए सखी। २ मा संग। ३ मा तहाँ ए तहँ। ४ रा झूलहिं। ५ रा मा ए राइ। ६ भा मा ए कुमारि।

अर्थ—(१) चौथे प्रहर में वेला शीतल हुई [और] सूर्य का तेज हीन हुआ (२) [तब] घोड़े सजा कर चनवारे से आए, [जिन पर] दोनों कुमार सवार हुए। (३) दोनों [कुमारों] ने घोड़ों को ऐसी तीव्र गति से चलाया कि वे राजद्वार पर एक क्षण में आ गए। (४) वे कहने (पूछने) लगे "दोनों राजकुमारियाँ कहाँ हैं?" [उत्तर मिला] "वे सखियों के साथ वाटिका

में झूलने गई हैं। (५) जब उन्होंने सुना कि राजकुमारियाँ घर पर नहीं हैं तो [उन्होंने कहा] 'मुझे राजभवन में चला जाए।

(६) तदनन्तर एक साथ ही दोनों जन चित्रसारी में चले आए (७) जहाँ पर विक्रमराज की कुमारी (मधुमालती) सखियों के साथ झूल रही थी।

टिप्पणी—(१) पहर < प्रहर। मियर < मीमल < मीलन। निमेख < निम्मेष। (२) ताजी < ताजी [फा]=घोड़ा। चनवार < चापवाल < स्यानपाल = चौरी करने वाला आदमी चौकीदार। (३) ताम्बार < तुम्मार = तुखारिस्तान का घोड़ा [पीछे 'घोड़ा' का पर्याय मात्र] (४) बारी < वाटिका। (५) मंदिल < मन्दिर = भवन।

[४७०]

जब दूनौं[1] चलि आए बारा[2]। उघर[3] दरगन्हि पौरि कवारा[4]
माइ[1] मनोहर उतर[2] दुवारी[3]। काहू न[4] देखि गएउ[5] चित्रसारी[6]।
जात[1] न काहू भीतर[2] पावा। जान[3] न कोउ[4] कुँवर[5] कब आवा।
ओइ[1] अपनें[2] रस मउ[*3] जोगनी। झूलहिं गाइ गाइ पिउ बानी।
झूलहिं सम[1] जोबन मद मांती। आँचर उड़हिं[1] न हाथहिं[2] छाती।
झूलहिं पवहिं डोर गहें कर[1] बीरी[2] चमकहिं दाँत[3]।
जानहु सुरहिनि सरग मउ[1] आवहिं चढ़ी[2] बिमान॥

पाठान्तर—(१) १ ए तब दूनौ। २ मा बारा। ३ ग उघरा। ४ मा दरगिह। ५ ए पौरि दुआरा।
(२) १ ए आइ। २ मा उतरा ए उतर। ३ मा दुवारी। ४ मा काहु न ए मा काहु न। ५ मा देखु गय ग देखा गो। ६ मा चित्रसारी।
(३) १ मा ग तहाँ मा जहाँ। २ ग भीतरी। ३ मा जनी। ४ मा केउ। ५ रा में यह शब्द नहीं है।
(४) १ मा वोइ ए बाईं। २ मा अपन। ३ ग रंग मय मा रसरस।
(५) १ ए सब। २ मा अंचर उड़ाहि रा आँचर उड़ै। ३ मा छातहि।
(६) १ मा ए पग डोरी कर गही मा पैंग दरी जनि। २ मा चमक मा बीर ए बीरी। ३ ए दाँत।
(७) १ मा मेउ रा ए मो। २ रा ए मा चढ़ी।

अर्थ—(१) जब वे दोनों चल कर [चित्रसारी के] द्वार पर आ गए उन्होंने उसकी पौर के किवाड़ों को खुला देखा। (२) मनोहर आकर द्वार पर उतरा और किसी को न देख कर चित्रसारी में चला गया। (३) उसके [भीतर] जाते समय किसी ने आकर नहीं पाई और किसी ने नहीं जाना कि कुमार कब आया। (४) [उधर] वे [युवतियाँ] अपने रस में डूबती हुई प्रिय-गीत गा-गा कर झूल रही थीं। (५) वे समस्त [युवतियाँ] यौवन-मद से मत्त हुई झूल रही थीं; [उनके] अंचल उड़ रहे थे पर वे अपनी छातियाँ नहीं ढँक रही थीं।

(६) वे हाथों में [झूले की] डोर पकड़े हुए झूल और पेंग मार रही थीं उनके दाँतों में

कीरियाँ चमक रही थीं; (७) वे [उस समय ऐसी लग रही थीं] मानो स्वर्ग से देवांगनाएँ विमान पर चढ़ी हुई आ रही हों।

टिप्पणी—(१) बार < वार < द्वार। पौरि < प्रतोली = मुख्य द्वार ड्योढ़ी। (२) दुवारि < द्वार। (३) आरी < आ + रव = शब्द आहट। (४) बाउर < बाउल < बातुल = बावला। (७) सुरतिहनि < सुरामना। सरग < स्वर्ग। बेवाम < विमान।

[४७१]

पाछूं हुत[1] ताराचंद राऊ। भरत पौरि भीतर दुइ[2] पाऊ।
सौंही[1] दिस्टि पेमा पर परी। पचति[2] माहिं[3] पंथ पर खरी[3]।
मूरुत उर आँचर[1] उघिराना[2]। दसि[3] कुँवर चित गएउ[4] गियाना[5]।
सिहुन[1] जो अहे उठत उर उभे[2]। परबस कुँवर नैन गे[3] चुभ[4]।
परत दिस्टि[1] जिउ ले गे[2] हरी। बिनु जिउ[3] कया[4] पुहुमि खसि[5] परी।
जिउ बसि नैन[1] परबस भो[2] भर भरती[3] बिसमार[4]।
जस कोइ साँप डसा तस काँप[1] बकत[2] न सक उघारि[3]॥

पाठान्तर— मा ए में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
(१) १ मा पाछ जो हुत मा पाछ जो होत ए पाछू होत। २ ए दोउ।
(२) १ मा सौंह मा सौंही ए गै। २ मा पौंगति महीं रा मूरति महीं ए पौंचत माहिं। ३ मा पेम पर परी ए पेम भर खरी।
(३) १ मा अंचर, मा अंचल। २ ए बिहराने। ४ मा गये ए चेत। ५ ए हेराने।
(४) १ मा सीहुन ए सैन मा सुघन। २ ए ऊभे। ३ मा गै मा ए के। ४ ए चूभे मा चुभे।
(५) १ मा द्रिस्टी। २ मा ए गौ। ३ रा जिय। ४ मा काया। ५ ए खसि मा पर।
(६) १ मा बरबस मा में ये दो शब्द नहीं हैं। २ मा भएउ। ३ मा भरती। ४ ए में चरण का पाठ है जीवन परबस भा बरती परा अहै बिसंमार।
(७) १ मा डसा बीसभर ए डस बिसभर, मा डसा बिस व्यापै। २ मा बकती ए बकति। ३ मा मा पुकारि, ए पुकार।

अर्थ—(१) [मनोहर के] पीछे होकर ताराचंद राय पौरी के भीतर अपने दोनों पैर रख रहे थे (२) कि सम्मुख ही उनकी दृष्टि पेमा पर जा पड़ी जो झूले पर खड़ी-खड़ी पेंग मार रही थी। (३) झूलते समय उसका अंचल उघड़ (खुल) गया और यह देखकर कुमार (ताराचंद) के चित्त से ज्ञान चला गया। (४) उसके स्तन जो कि उसके हृदय पर उठते हुए उभड़ रहे थे बरबस जाकर कुमार के नेत्रों में चुभ गए। (५) दृष्टि के पड़ते ही वे उसके जीव को हर ले गए, और [ताराचंद की] काया निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

(६) [उसका] जीव उसके नेत्रों में बस (जा) कर [इस प्रकार] परवश हो रहा और

[उसका] धड़ धरती पर बेसँभाल [जा पड़ा] । (७) जैसे कोई सर्प का काटा हुआ हो इस प्रकार वह काँप रहा था और [उसके मुख से] वाक्य नहीं निकल सकता था।

टिप्पणी—(१) पौरि < प्रतोली = मुख्य द्वार, ड्योढ़ी। (२) उठार < उद्धर < उद् + धृ = ऊपर उठना। (४) गिहुन < स्तन। उभ < ऊर्ध्वित = उठे हुए। (५) पुहुमि < पृथ्वी। (७) उपार < उप्पाड़ < उद् + पाट्य् = उखाड़ना।

[४७२]

सखी एक गइ अही[१] दुआर[२] । देखसि[३] कुँवर परा बिसँभारे[४] ।
मधुमालति सउँ[१] कहसि[२] पुकारी । भूलसि[३] का उठि लागु गोहारी ।
ताराचंद धार[१] है परा । कै दानौं कै चुरइलि[२] छरा ।
कै अकार[१] कै तापरि आई । कै पित दुख[२] परउ[३] मुरछाई[४] ।
कै मो आहि डिठियारा काहा[१] । लोट परा लाइ गर बाही[२] ।
नयन[१] पलक न लागहि रुहिर सुखान[२] सरीर ।
बिनु सुधि परा धरनि[१] महँ[२] जानि न जा कहि[३] पीर ॥

पाठान्तर—(१) १ मा. मी. आहि, ए. भा. हुते (< हुती फारसी लिपि)। २ मा. रा. ए. दुआरे। ३ ए. देखी। ४ मा. बेसमारे, ए. ग. बिसभारे।
(२) १ मा. मी. रा. मा. ए. सौं। २ ए. कहा। ३ ए. भूलहि।
(३) १ रा. परा है बारा, ए. बाहर है परा। २ मा. चुरइन।
(४) १ मा. अपार, अकारि, ए. सिरकह। २ रा. सिर दुखी, मा. पीत दरद, ए. पीत दुख। ३ मा. ए. परा। ४ ए. मुरछाई।
(५) १ मा. कै दर है डीठी आवा काहू, ए. कै रे डीठि लाग है काहू, मा. कै रे आहि डिठियारा काहू। २ मा. गलबाहू, मा. गलिबाह, ए. गहि बाहू।
(६) १ मा. नैनहि। २ मा. ए. रकत न रहा।
(७) १ ए. धरनी। २ मा. मैं, मा. ओर है। ३ मा. सिरि, ए. जा। ४ ए. न।

अर्थ—(१) [मधुमालती की] एक सखी द्वार पर गई हुई थी [तो वहाँ] उसने देखा कि कुमार (ताराचंद) बेसँभाल होकर पड़ा हुआ है। (२) उसने मधुमालती से पुकार कर कहा "तू क्या भूल रही है? उठकर गोहार (सहायता में) लग। (३) ताराचंद द्वार पर पड़ा हुआ है उसे या तो दानव और या तो चुड़ैल ने छल लिया है (४) अथवा उसे अकेला [पा कष्ट हुआ] है या ज्वर आ गया है अथवा वह पित्त के दुख से मूर्छित होकर गिर पड़ा है (५) अथवा किसी के द्वारा उसे नज़र लगाई गई है जिसके कारण वह गले में बाँह डाल कर [भूमि पर] पड़ा हुआ लोट रहा है।

(६) उसके नैनों की पलक नहीं लग रही है और [उसके] शरीर में [का] रक्त सूख

गया है; (७) यह ज्ञात नहीं हो रहा है कि किस पीड़ा से बिना चेत का होकर यह धरती में पड़ा हुआ है।"

टिप्पणी—(१) बार < बार < द्वार। चुरइति < चूड़ + इस्त = चुड़ैल एक जाति की प्रेतिनी जिसके सिर पर लम्बी चूड़ा होती मानी जाती है। (४) अबार < अ + वेला = [भोजनादि की] वेला का अतिक्रमण—समय पर भोजनादि के न मिलने से उत्पन्न विकलता। तांवरि < ताप = ज्वर। (७) सुधि < शुद्धि = चेतना।

[४७२]

सुनतहिं[1] मधुमालति उठि[2] धाई । बीर बीर कै रोवति[3] आई ।
सिर उचाइ क[1] लीन्हेसि कोरें[3] । बिमली सउ[4] बिनव[5] कर जोरें[6] ।
बहु कलाप क रोव रानी । पीट[1] बारि बारि सिर पानी[2] ।
का तोहि भएउ बीर परदेसी । जइ सोए किरि[1] मोरि गवसी ।
त मोंहि[1] लागि जीउ परिछवा । मैं न कीन्हि[2] तोरी किछु[3] सवा ।
नल उपारि पीर कहुँ बिघरु[1] औगुन कीनु[2] सरीर ।
सो उपगार[1] करौं मैं[2] तो कहँ जौ सुधि[3] पावौं बीर[4] ।।

पाठान्तर— भा. मा. में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा. सुनतेहि, ए. सुनतै। २ भा. मैं मधुमालति। ३ मा. ए. रोवत।

(२) १ ए. सुर उचाइ कै। २ मा. लीयसि ए. लिहेसि भा. लीन्हेसि। ३ ए. कोरे। ४ मा. से रा. ए. सौं। ५ मा. बिनवै। ६ ए. जोरे।

(३) १ मा. पीयइ भा. पीयइ। २ ए. में अर्धाली का पाठ है
पक्षी रूप मैं कलमि निसारी। तै मधुषाइ कै हौं निस्तारी।
(तुल. अगले छन्द की तीसरी अर्धाली।)

(४) १ ए. मा. भा. रल साइत हुइ।

(५) १ ए. मोंहि। २ मा. करी ए. करी। ३ भा. किछु।

(६) १ मा. ए. बीच की रा. म. में यो शब्द नहीं है। २ रा. अपने औगुन ए. औगुन।

(७) १ मा. उपकार। २ मा. हौं ए. में यह शब्द नहीं है। ३ ए. नि। ४ भा. ए. बीर।

अर्थ—(१) मधुमालती सुनते ही उठकर दौड़ पड़ी वह 'भाई' 'भाई' कहती हुई रोती आई। (२) उसका सिर उठाकर उसने गोद में रख लिया और वह विमलता से हाथ जोड़कर विनय करने लगी। (३) रानी (मधुमालती) बहुतेरा कलाप (कलपन) करती हुई रोने लगी और उस पर पानी बार-बार कर सिर पीटने लगी। (४) वह कहने लगी हे परदेसी भाई तुम्हें क्या हो गया कि जिससे तुम किस (निश्चित रूप से) हे मेरी (मेरे लिए की) गवेषणा करने वाले सो गए? (५)

तुमने मेरे लिए [अपने] जीव का परिछेदन (विनाश) कर डाला किंतु मैंने तुम्हारी कुछ भी सेवा नहीं की।

(६) नेत्र खोल कर अपने जी की पीड़ा कहो तुम्हारे शरीर में कौन-सा अवगुण (दोष) हो गया है? (७) यदि मैं [तुम्हारी] पीड़ा सुन पाऊँ, तो मैं तुम्हें वह उपकार (तुम्हारी पीड़ा के शमन का उपाय) करूँ।

टिप्पणी—(३) वार < उब्बार < उद्+वर्तय्=त्यागना छोड़ना। (४) निरि < निर < णिस=निश्चित रूप से। (५) परिछेव < परि+छेद्=नष्ट करना। (६) औगुन < अवगुण।

[४७४]

आस[1] निरास पूरि तुइ[2] मारी । मैं सेवा किछु कीन्हि न तोरी ।
राज पाट तजि मोहि सँग आएहु[1] । अनसिख[2] रहा सो आनि सिखाएहु ।
पंछि रूप कै[1] जननि निसारा । तैं मानुस[3] कै मोहि निस्तारा[5] ।
जननि मोहि[1] गुन बाँधि बहाएउ[2] । तैं मोहि[3] तीर लाइ कै लाएउ ।
दुख समुंद[1] जहि[2] वार न पारा । तहाँ जात थयु थाम[3] अपारा ।
कहाँ[1] जात मोर मरा बिनु गुन बिनु कड़िहार[2] ।
ता मझधार[1] महँ[2] बूड़त तुम्ह मोहि दीन्ह अधार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए आस। २ मा पुरी मैं मा करी मैं ए पूरियी। ३ ए मा मैं न मेर किछु कीन्हा। (चौथी—मा)।
(२) १ ए मोहि मैं आय। २ मा अनसिखि। ३ ए रहे। ४ ए म यह शब्द नहीं है। ५ मा सिखाएहु ए सिखाये।
(३) १ मा मैं ए म यह शब्द नहीं है। २ ए बनवासा। ३ मा मनुसाइ। ४ मा मैं न होती। ५ ए म चरण का पाठ है मैं मोहि तीर तीर कर बासा।
(४) १ ए मोहि। २ मा ए बहाएउ गा बाँधे। ३ ए मोहि। ४ मा मा ए लाएउ गा लाई।
(५) १ मा समुंद। २ ए जा। ३ मा निज थाह ए बिनु थाह गा टूटि थाह।
(६) १ ए जहाँ। २ मा करा।
(७) १ मा मा माझ धार ए मझ धार। मा मोहि। ३ ए मुए। ४ मा दीन गा ए दीन्ह।

अर्थ—"(१) तुमने मेरा निराश को आशा पूरी की किंतु मैंने तुम्हारी कुछ भी सेवा न की। (२) तुम अपना राज्य तथा सिंहासन छोड़ कर मेरे साथ आए, और जो न सिखने योग्य था उसको भी सिखाया। (३) पक्षी के रूप का कर मुझे जननी ने निकाल दिया था तुम्हीं ने मुझे मनुष्य करके मेरा उद्धार किया। (४) जननी ने मुझे [मेरी जीवन-नौका को] गुन (लंगर की रस्सी) बाँध कर [दुख-सागर में] बहा दिया था [तब] हे भाई तुम्हीं ने मुझे लाकर तीर पर लगाया। (५) दुख-समुद्र में जिसका वार-पार नहीं था मैं बिना किसी आधार के बही जा रही थी।

(६) बिना गुण के (संयम की रस्सी से विच्छिन्न होकर) और बिना कर्णधार के मेरा बेड़ा बहा जा रहा था; (७) उस मझधार में डूबती हुई [मुझ] को तुमने आधार दिया।"

टिप्पणी—(२) पाट < पट्ट = फलक सिंहासन। (३) पखि < पक्षिन्। निसार < निस्तारण् = निष्क्रमण। (६) बेरा < बेड़ा ~ मलक [दे०] = नौका जहाज। कंडहार < कर्णधार।

[४७५]

कुंवर मनोहर हुत[1] चित्रसारी[2]। सुनि मंदोर[3] चलि आइ[4] दुवारी[5]।
देखत ताराचंद क[1] भांती। गई मनोहर[2] जिय[4] हुत[5] सांती।
सीतर[1] नीर नैन दुहू लावा। बड़ी बार गए[3] जिउ घट[4] आवा।
तौ उर[1] लिहसि[2] ऊभि क सांसा। चखु उघारि दखसि[3] चहु पासा।
भव जानसि[1] किछु जिउ[2] सुखाना। पालकि बाहि मंदिल[3] तब[4] आना।
जह लगि अहे[1] सयान नगर मह[3] सभ कहु[4] भएउ हकार[5]।
सुनत राय के[1] आया चलि आए सभ[3] बार॥

पाठान्तर—(१) १ मा सा ए तहँ। २ मा चित्रसारी रा ए मा चित्रसारी। ३ ए सुनी सोर। ४ मा ए आउ। ५ रा ए मा दुवारी।
(२) १ मा ए की। २ मा पर्व ए, गौ। ३ ए मधुमालति रा मे यह चरण नहीं है। ४ मा कह, ए जहँ। ५ ए सुख।
(३) १ रा ए सीतल। २ मा दुइ रा मई। ३ मा ए कै। ४ मा घा घर।
(४) १ रा तब उर मा तौ रै ए तै औ। २ ए लिये। ३ मा देखै ए देखा।
(५) १ मा जानेसि ए जाना। २ ए जी भा जियं। ३ मा मा मंदिर। ४ ए तौ।
(६) १ मा जहं लगु रहे। २ मा ए सयाने। ३ रा मो। ४ ए राव के। ५ रा किहेउ हकारि ए परा हकार।
(७) १ मा ए राइ की। २ मा आग्या रा ए आया। ३ ए मा सब।

अर्थ—(१) कुमार मनोहर चित्रसारी में था [और] शोर सुनकर चल पड़ा और द्वार पर आ गया। (२) तारार्चंद की भांति (दशा) देखते ही मनोहर के जी में [जो] शांति थी वह चली गई। (३) उसने [तारार्चंद के] दोनों नेत्रों में शीतल जल लगाया [और] बड़ी देर के बाद जीव [तारार्चंद के] शरीर में आया। (४) तब तारार्चंद ने ऊबकर अपनी छाती में सांस ली (भरी) और अपनी आंखों को खोलकर उसने अपने चारों पास (ओर) देखा। (५) जब [मनोहर ने] जाना कि उसका जी कुछ स्वस्थ हुआ है, तब उसे पालकी में डालकर वह राजभवन को ले आया।

(६) जहाँ तक (जितने) भी सयाने (विविध प्रकार की व्याधियों के शमन का उपाय जानने वाले) नगर में थे सभी को बुलावा हुआ (किया गया) (७) और राजा की आज्ञा सुनते ही वे चलकर [राज] द्वार पर आ गए।

टिप्पणी—(१) मातर < शीतल। बार < बला। (४) सो < सउ < सग = सब। ऊभ < उन < ऊर्ध्व् = ऊँचा होना उगना। बगु < बागु < बगु। (७) बार < बार < द्वार।

[४७६]

सभ गुनी¹ मिलि आए तहाँ । मोहा कुँवर माह रस जहाँ ।
देखा कुँवर¹ नाडि़या गही । बेदन किछु काया नहि² अही ।
देखन्हि¹ रहिर देह गा सूखी² । रवि ससि दुवौ कया³ निरदूखी⁴ ।
औ पुनि¹ पलक² न ननन्हि लाग³ । माहा मोह न कम्हु जाग ।
कहन्हि¹ नहि म² जिउ बिनहू³ लागा । जौ लहि दरस नाहि⁵ ए⁶ जागा ।
कहन्हि¹ जाहि मउ हुतु है² मा पूरन्हि धनन्हा ।
मउहि नाउ अह जहि गता¹ ओर² न किछौ उपाए ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा ए सब गुनी जन। ए महारस।
(२) १ मा गनिगन दगि मा ए देखा मनिर। २ मा नार्ँ का। ३ मा किछ न कया मह मा रछ न काया मह ए न रया म ।
(३) १ ग द ।ि ए देखा। २ मा मारी। ग मा ए रया। ४ मा ए निरदारी।
(४) १ मा मा ग ए पुनि। २ ए पलक। ३ ग नैन लगें लागै मा मैन मा लागै ए नैनहि मों लागै मा न नैनहु लागै। ४ ए कमह। ५ मा ए जागै।
(५) १ ग कहेनि ए कहै। २ मा कहि का ए कहि का। ३ ए बनहू। ४ मा ए पाव। ५ मा नवहीं ए तबहिं। ६ मा पुनि।
(६) १ मा कहेहो ए कहेगि ग कहेनि। २ ग ए गो। ३ ग ताना (गुरु परवर्ती कम्म)। ४ मा यहा पूछह रस लागे ए पूछह रस लागे मा मा यहि बूतौ रस माइ।
(७) १ मा कहेनि नाउ जहि गया ए किहे नाम जहि गया मा कहिनि नाउ कहै जहि गया ग कहहि नाउ जे मन। २ ए और।

अर्थ—(१) सभी गुणी मिलकर वहाँ पर आए (उपस्थित हुए) जहाँ पर कुमार (तारावर) मोह-रस से मोहित (मूर्छित) [पड़ा] था। (२) उन्होंने कुमार (तारावंद) को उसकी नाड़ी पकड़ कर देखा किन्तु [देखा कि] उसकी काया में कुछ भी वेदना [का कारण] नहीं है। (३) उन्होंने देखा कि उसके देह का रक्त सूख गया है और उसकी काया में सूर्य तथा चंद्र—दोनों [नाड़ियाँ] निर्दोष हैं (४) फिर [भी] उसके नेत्रों में पलक नहीं लग रही है तथा वह मोह से मोहित (मूर्छित) है और किसी प्रकार जागता नहीं है। (५) उन्होंने कहा, 'इसका जीव कहीं [अन्यत्र] लगा हुआ है [और] जब यह उसे देखेगा, तभी यह जागेगा।"
(६) उन्होंने कहा "जिसमें इसे प्यार है (हो) वह इससे वार्तालाप कर पूछे। (७) [उसका] यह उसका नाम लेगा जिस पर यह अनुरक्त है [अन्यथा] और कुछ (कोई) भी उपाय नहीं है।"

टिप्पणी—(२) नाटिका < नारी। (३) रुहिर < रुधिर < रक्त। रवि ससि = सूर्य ...ाढ़ी तथा चंद्र नाड़ी। (५) जौ < जउ < यदा = जब। तौ < तउ < तदा = तब। (७) ...नाउं < नाम।

[४७७]

फुनि नियरें[1] आई वर[2] बारी। रस रस सम[3] बात[4] अनुसारी।
एकसर[1] आइ कुवर पहिं[2] बसी। पूछै[3] धीर पीर तोहि[4] कसी।
जौ तोर जीउ लागा कहुं[1] होई। मरवौं आनि जान नहिं[2] कोई।
चौथ न[1] कोइ जानी[2] एह बाता। कै तुइ[3] कै मैं कै रे[4] बिधाता।
कहसि[1] बकत मुख आव न मोही[2]। कसें कहौं पीर मैं तोही[3]।
जो मोर जिउ हरि लै गइ[1] तहि कै[2] न जानौं नाउ।
औ फुनि ऐसी बात तोहि आगें[1] कहत[2] लजाउ॥

पाठान्तर—(१) १ रा बहुरि नियर, ए पुनि निअरे। २ रा सो। ३ मा बैसि मा सबै ए आइ। ४ ए बहुत।
(२) १ मा अकसरि। २ ए पहं। ३ ए पूछै। ४ ए ताहि।
(३) १ रा लाग कहू मा लागा केहु। २ मा जा जानन ए मा जानना।
(४) १ मा जौ नहि। २ मा कोउ जानै ए कोइ जान। ३ भा मा ए कै। ४ मा कै मैं जानै ए कै सो जान।
(५) १ ए केहसि। २ ए बतावै मोही। ३ ए कैसे कहौ पीर ना ताही।
(६) १ मा गै ए जौ। २ ए का।
(७) १ ए ऐसी बात तोहि आगे रा जौ औ पुनि ऐसि बात। २ ए मैं पुनि कहत मा कहती जिउहि, रा कहत सो तोसा।

अर्थ—(१) तदनंतर वह श्रेष्ठ बालिका (मधुमालती) उसके निकट आई और सभी बातों उससे धीरे-धीरे कही। (२) वह एकांत में आकर कुमार के पास बैठी और पूछने लगी "हे धीर, तुम्हें कैसी (किस प्रकार की) पीड़ा है? (३) यदि तुम्हारा जी कहीं (किसी) पर लगा हो, तो मैं उसे लाकर तुम्हें मिलाऊँ और कोई जानने न पाए। (४) चौथा कोई इस वार्ता को न जानने पाएगा या तुम या मैं और या विधाता ही [इसे जान पाएँगे]।" (५) [तारचंद ने कहा] मेरे मुँह से वाक्य तो निकल नहीं पा रहा है मैं कैसे अपनी पीड़ा तुमसे कहूँ?

(६) जो मेरा जीव हर ले गई उसका मैं नाम नहीं जानता हूँ (७) और फिर ऐसी बात तुम्हारे आगे करते हुए मैं लज्जा का अनुभव [भी] करता हूँ।"

टिप्पणी—(१) नियर < निकट। बारी < बालिका। (१) (७) बात < वार्ता।

[४७८]

बीर लाज सो मों[1] कस[2] तोही । परिहरि लाज बात कहु मोही ।
जौं म भाउ[1] तहि का[2] सुनि पावौं । सरग सुरहिनी[3] आनि[4] मिलावौं ।
कहुंसि देख मैं मूरति ठाढ़ी । परत दिस्टि[1] जिउ लै गइ[2] काढ़ी ।
चमक दुवौ नैन उजियार । जनु भुइं उग दिवस दुइ तार[1] ।
जौं खिन[1] सुनसि[2] पास ह बसी । कहौं[3] सो ताहि[4] देखउ हौं[5] जसी ।
जसि[1] दिस्टि नैनन्ह देखिउ[2] तस न जीभ कहि जाइ ।
सहस भाउ महं भाउ एक सुनहु सराहौं ताइ[1] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए. लाज। २ म. का।
(२) १ ए. भाउ। २ म. मा. ए. तहिका। ३ मा. सरग सुरहिनी मा. सरग क सुरहिनि। ४ मा. लाइ।
(३) १ मा. दृस्टी। २ मा. लै ए. गै।
(४) १ ए. जनु पुर्निउ उग दिवस कुमार।
(५) १ ए. ती खिनक। २ मा. सुनसि ए. सुनहि। ३ मा. कहौं। ४ मा. ताहि सौं ए. ताहि सौं मा. मा. नाहि। ५ मा. मा. ए. म. में यह शब्द नहीं है।
(६) १ ए. में यहाँ 'कै' और है। २ ए. में नैननि देखा।
(७) १ मा. सराहौं ताही।

अर्थ—(१) [मधुमालती ने उत्तर दिया] "हे भाई मुझसे तुम्हें कैसी लज्जा? लज्जा छोड़कर (वह) बात मुझसे कहो। (२) यदि मैं उसका भाव सुन पाऊँ, [और यदि वह] स्वर्ग की सुरांगना [हो तो उस] को [भी] लाकर तुमसे मिला दूँ।" (३) [ताराचंद ने कहा] "मैंने उसे खड़ी-खड़ी मूरती देखा [और] मेरी दृष्टि पड़ते ही वह मेरा जीव निकाल ले गई। (४) [उसके] दोनों उज्ज्वल नैन [इस प्रकार] चमक रहे मानो दिन में ही [और] भूमि पर दो तारे उदित हुए हों। (५) यदि तुम एक क्षण पास होकर बैठी हुई सुनो, तो मैंने जैसी उसको देखा है वह तुमसे कहूँ।

(६) जैसा कुछ मैंने नेत्रों से देखा है वैसा जिह्वा से कहा नहीं जा सकता है। (७) [उसके सौन्दर्य के] सहस्र भावों में से एक भाव [मात्र] सुनो, [केवल] उसी (उसके ही) की सराहना मैं कर रहा हूँ।"

टिप्पणी—(२) सरग < स्वर्ग। सुरहिनी < सुरांगना। (४) भुइं < भूमि। (५) खिन < क्षण।

[४७९]

तारनि गगन बरनि कस[1] सोभा[2] । ससि पर जानु[3] साम पर सोभा ।
म जस[1] तारि गगन कर सोभ[2] । नागउ[3] टूट ... बाग ।

दीपा टॅब[1] रनि जनु बरी[2] । लोहुलुहान[3] सिर ग्पिउ सरी[4] ।
तहि पर[1] चिहुर नाग धरि खावा[2] । गारुरि कहाँ[3] जो लहरि घुसावा ।
देखि ललाट जो[1] चौंघिउ[2] मारा । अजहूँ नैन सूझ[3] अँधियारा[4] ।
जसि[1] रवि किरिन[2] तेज कर[3] सौंह निहारि न[4] जाइ ।
तस[1] लिलाट[2] देखि[3] मोहि करा[4] चौंधि[5] परेउं[6] मुरछाइ[7] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा बरनी उह, ए बरनी के। २ ए असा। ३ ए बानी। ४ रा माना ए काना।
(२) १ रा सो। २ मा माता। ३ ए भी। ४ मा रुपहु मा देखतहि।
(३) १ मा दीपक टेब मा दीपक देखी ए दीपा टमि। २ रा बारी। ३ मा लुहलुहान ए लुहलहान। ४ ए देखा ठाढ़ी रा सेंदुर सारी।
(४) १ ए तापर। २ मा होइ भावा ए मै पावा मा मोहि खाया। ३ ए कहाँ।
(५) १ मा लिलार जो ए लिलारा। २ मा चौंकेउ ए चौंध। ३ रा छोड़ भा सूझत। ४ ए अन्धारा।
(६) १ ए जस। २ मा किरिनि ए किरनि। ३ मा करी। ४ मा मा ए न चितवै।
(७) १ मा ए तस। २ ए लिलार। ३ मा देखत। ४ ए मोहिके। ५ मा चौंकि ए चौंधि। ६ ए परा। ७ ए मुरछाइ।

अर्थ— (१) आदि में सुनो, मैं [उसकी] माँग का वर्णन कर रहा हूँ; वह मानो श्रेष्ठ तलवार है जो सिर पर नग्न (म्यान से निकाल कर) [रक्खी हुई] है। (२) मैं मानो उस बाला को देखते ही उस खड्ग से आहत हुआ (होकर) दो टुकड़े हो गया। (३) वह मानो दीपक की लौ है, जो रजनी (काली) में जल रही हो मैंने उसे उसके सिर पर मानविक रक्त से सिक्त देखा। (४) उस पर भी उसके चिकुर (केश)-नागों ने मुझे पकड़ कर खा (काट) लिया। वह गारुड़ी कहाँ है जो [उस नाग के विष की] लहर को खोल करे। (५) [फिर] जो उस बाला के (देदीप्यमान) ललाट को देखकर मैं चौंध गया, [तो] आज (इस समय) भी नेत्रों से अंधकार ही सूझ रहा है।

(६) जिस प्रकार सूर्य की किरण का प्रखर तेज सम्मुख से निहारा (देखा) नहीं जाता है, (७) उसी प्रकार उसके ललाट को देखकर मैं चौंधकर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।"

टिप्पणी—(१) माँग < मार्ग। (३) दीया < दीवअ < दीपक। (४) चिहुर < चिकुर = केश। गारुरि < गारुड़ = सर्प के विष को [मन्त्रादि उपचारों से] दूर करने वाला। (५) बारा < बाला। अँधियार < अन्धआर < अंधकार। (६) सौंह < सउंह < सम्मुख। निहार < नि + भालय् = अच्छी तरह से देखना।

[४८०]

भौं[1] बाम अनियार बिसारे । मारहिं सानि कीउ हतियार[1] ।
नम दिस्टि[1] जा[2] तनु फिरि[3] हेरा । जिउ हरि लीन्ह[4] तबहिं मोहि[5] करा ।

बरनि बान[1] नावक[2] कर रुगा । दिस्टि न आव लागु प लगा[3] ।
दसनि नासिका[1] रहेउ अवाला । का बरनौं सम सिस्टि[2] प माला ।
अधर सिव अमिन रस[1] पूर । बिरही रुहिर पियत अति[2] सर ।
अगिनि बरन औ अमिन[1] अधरन्ह उपजउ लगि बिचार ।
अमिअ न जानौं[1] काहि कह[2] मो कह भए अंगार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए हत्यारे।
(२) १ मा द्रिस्टि। २ मा ज ए जा। ३ मा मरि। ४ मा मनि। ५ ए काहि।
(३) १ मा धार। २ मा नावक ए नाव। ३ ए दिस्टि न आव लाग गुप्ता। मा द्रिस्टी परत लाग पै देखा।
(४) १ मा नासिका। २ मा रहउ आडाना ए रहै अमाना। ३ मा सब द्रिस्टि ए सब सिरिट मा सब सिस्टि।
(५) १ मा अधरन कर अस्नाद ए अधर बिनु अमिन रस। मा बिरही रुहिर पियत ए बीरहि पियत रुधिर मा बिरहिहि रुहिर पियत ए बिरही रहे पियत। ३ ए अग।
(६) १ मा अग्नी बरन औ अधर ए आनि बरन हा। अमिन अधर मा अगिनि बरन अमिन तेहि अधरन्ह रा अगिनि बरन औ अमिन। २ मा ए उपजा लगि रा उपजउ बिरह।
(७) १ मा अमो अन जमो। २ ए केहि कह मा काहि का। ३ ए मो

अर्थ— (१) उसकी भौंहें नुकीले और विषाक्त बाण हैं और वे हत्यारे जीवों को देख-देखकर मारते हैं। (२) उसने अपने नेत्रों की दृष्टि से जिसकी ओर भी घूमकर देखा उसने तत्काल उसके जीव का हरण कर लिया। (३) उसकी बरौनियाँ नावक के बाणों के समान हैं जो [बेध्य को अपनी ओर आते हुए] दिखाई नहीं पड़ते हैं और लगने पर ही दिखाई पड़ते हैं। (४) उसकी नाक देख कर तो मैं अवाक् रह गया; उसका क्या वर्णन करूँ जो समस्त सृष्टि का मूल्य है (समस्त सृष्टि जिससे कम की जा सकती है)? (५) [उसके] घुँघची के पके फलों जैसे अधर अमृत रस से पूरित हैं और विरही के रुधिर का पान करते समय वे अति क्रूर हो जाते हैं।

(६) उसके अग्नि वर्ण के और अमृत (तुल्य) अधरों को देख कर [मुझे तो] विचार उत्पन्न हुआ; (७) पता नहीं अमृत वे किसके लिए हैं मुझको तो वे अंगार ही हुए।"

टिप्पणी—(१) भौंह<भ्रू। (३) नावक=एक प्रकार का छोटा धनुष जिसका बाण भी छोटा होता था। (५) रुहिर<रुधिर। (७) अमिअ<अमृत।

[४८१]

पोन पमार[1] लागि न मं[2] सभाग । परउ[3] मुरछि जस घाव न लाग ।
तनि मह[1] बस[2] जो[3] जीम जमाना । मानहु अमिअ गानि[4] जन गाना ।
परम निरि नित गुन गहि भाऊ[1] । भाउ अग निति सिनु गिर गारू ।

दसन कपोल क[1] झलक[2] लोनाई । नित उठि मुकुर[3] छार मुख लाई ।
चमकहिं[1] दोरि[2] स्रवन[3] दुइ ओग[4] । बीजु छटा जस भएउ[5] अंजोर ।
नैन रेख[1] काजर[2] क[3] दीसि[4] सोभ कस देइ ।
जानहु लोयन स्रवन[1] सेंठ[2] आए[3] मता करइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए चौक चमकि रा चौका चमंक। २ मा देखि मैं न। [?] मा परौ ए परा। ४ मा बीज समारा ए बीजु क मारा।
(२) १ मा तेहि माहे ए तामहें। २ मा बस। [?] मा ए में यह पक्ति नहीं है। ४ मा अमिय पानि ए अमि बानी। ५ ए रा बोली मा बहि बोली।
(३) १ रा परत सुदिस्टि सुनत रस जाता मा भा परत दृस्टि तिल सुनु सत भाया (भाऊ—मा) ए परत दिस्टि सुनहु सत भाऊ। २ रा परै सो पेम सुरा जस माता मा भयो बाइस तिल बिनु सर पाया ए भौ चैस तिल बिनु सिर पाऊ।
(४) १ मा कपोल को ए कपोल भा कपाल कि। २ मा झलक। [?] ए मकु र।
(५) १ ए चमक रा चमकन्त। २ ए बिरह। [?] मा रा ए स्रवन। ४ मा ए बोरा। ५ मा भयो ए भौ मा भयर।
(६) १ मा देखि। २ ए काजल। [?] मा ए की। ४ मा देस ए देखी।
(७) १ मा रा ए स्रवन। २ मा सेंठ गा ए सीं। [?] ए आइ जो।

अर्थ—"(१) उसके चौकों (सामने के चार दाँतों) की चमक देखकर मैं [अपने को] सँभाल नहीं सका और मूर्च्छित होकर गिर पड़ा जैसे बिजली से आहत होऊँ। (२) उस [दंत-पंक्ति] में जो अमृतमय जिह्वा निवास करती है वह बोलते समय मानो अमृत की खान खोल देती है। (३) उसके तिल पर दृष्टि पड़ते ही मेरा सच्चा भाव सुनो मैं एक क्षण के लिए जैसे बिना सिर-पैर का हो गया। (४) उसके कपोलों की झलक और उनका लावण्य देखकर मुकुर नित्य ही उठकर (बठाया जाकर) [निर्मल होने के लिए] अपने मुख में छार (राख) लगाता (लगवाता) है। (५) उसके कानों में दोनो ओर, बीरियाँ [इस प्रकार] चमकती हैं जैसे विद्युच्छटा से प्रकाश हुआ हो।

(६) [उसके] नेत्रों की काजल की रेखा [जो उसके कानों तक फैली हुई है] किस प्रकार शोभा देती हुई दीखी (७) मानो [उसके] नेत्र [ही] उसके कानों से मंत्र (विचार-विमर्श) करने आए हों।

टिप्पणी—(१) चौक < चउक्क < चतुष्क। चमक < चमत्कार। बीज < विद्युत् = बिजली। (२) अमिय < अमृत। (४) लोनाई < लावण्य। (५) (७) स्रवन < श्रवण = कान। (७) लोयन < लोचन = नेत्र। मता < मत = विचार।

[४८२]

गिय[1] पटतर गा काहु न लावा । जनु बिसकरम सइ निरमावा[2] ।
तीनि रेख मुख[1] गीँव निरासी[2] । भई त मम[3] भ्रिग लमन्हु[4] फांसी ।
मेंदुर कूँकहु[1] मेरे[2] पिमावा । मूसर फटिक गिअ माए भरावा[3] ।

}

बिधि कुच स्याम छत्र सिर दीन[1] । गए आइ नैनन्हि[2] अनचीन[3] ।
छरते[1] दुवौ बीर[2] जिउ हरिया[3] । जौं न हार हाल[4] बिच[5] पगहरिया ।
पून[1] कलस संचित रस पूर बिधि रच कठिन[2] कठोर ।
जोबन बाला उमगत देखउ[1] बिपरित कनक कचोर[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सीव। २ रा ए मारु बनावा।
(२) १ ए मधु। २ भा सीव निराली मा सिर निराली ए सीव निराली। ३ रा भइ मा आइ मा भा भई ते मम ए भी गेहि। ४ रा मृग भेहीं मा सिर्य मह ली।
(३) १ रा कुमकुम। २ मा मलि। ३ भा मुरर फटिक सिर माल मरावा ए मूलम फटिक गाव मावा गावा रा मु दरि गाव फटिक नहि लावा।
(४) १ भा सिर बीच मा सिर दल ए बिधि दल। ३ मा ए मनचल मा मनचीन्ह।
(५) १ रा अति जी। ए बीच। ३ मा सिउ हरिया ए सीव हरिआ भा मा बरिया। ४ मा हाला। ५ रा म यह पाठ नहीं है।
(६) १ ए पीन मा कमल रा कमल। २ मा कठन।
(७) १ मा. जाबन मनन उगम ऊर देखो भा जाबन बल उमग दल ए जावन बल उमगत देखा। २ मा मन के चार।

अर्थ—"(१) [उसकी] ग्रीवा की समानता किसी से न की जा सकी मानो उसे विश्वकर्मा ने स्वयं निर्मित किया हो। (२) उस मुग्धा की निराश्रित (जिन्होंने अभी किसी भी ग्रीवा का आश्रय नहीं लिया है) ग्रीवा में जो तीन रेखाएँ हैं वे मेरे नयन-मृगों के लिए [तीन] पाश हो गईं। (३) जैसे सिंदूर और कुंकुम (केसर) को मिलाकर पिलाया गया हो और उसे शुद्ध (निर्मल) स्फटिक [पात्र] की ग्रीवा-नाल में भराया गया हो [इस प्रकार रक्ताभ्यपूर्ण रक्त से झिलमिलाती हुई उसकी ग्रीवा है]। (४) उसके दोनों कुच श्याम छत्र सिर पर लिए हुए हैं और वे अनचीन्हे हो आकर [मेरे] नेत्रों में गड़ गए। (५) वे दोनों जीवापहारी वीर [आपस में ही] लड़ पड़ते यदि उन दोनों के बीच में [उनका] हार बीच-बचाव करने वाला न होता।

(६) उसके दोनों कुच कठिन और कठोर अमृत रस से पूरित पूर्ण कलश हैं (७) [जैसे] उलट कर रखे हुए कनक के कटोरों [के सदृश] उस बाला के उमंगपूर्वक निकलते हुए यौवन (कुचों) को मैंने देखा।"

टिप्पणी—(१) स < स्वयम्। ( ) निराम < निराश = निराश्रित। पासी < पाश = फन्दा। (३) कुंकुह < कुंकुम। (३) सुधर < सुध्र < शुद्ध = निर्मल। गिम < ग्रिव = ग्रीवा। (४) (५) बिचि < इच। (६) पून < पूर्ण।

[४८३]

भुज[1] पसार हरउ[2] जग माहीं। कहि न जाइ सराहो बाहीं।
कमनि हानि[1] जो बरनि न जाए[2]। मैं बिधन भुज रचि उतार।

काहू जलज[1] मिनाल बखानी[2] । काहू कदलि[3] गाभ[4] मन मानी[5] ।
दखि कलाई[1] चित मोर[2] मोहा । कनक भाउ तहि माहँ[3] सोहा ।
दुवौ हथरि[1] सुधर कर दीसा[2] । फटिक सिला जस[3] इंगुर पीसा[4] ।
गहि कर पल्लौ डोरी झूलत हौ सखि संग[1] ।
कर बारी नख देखेउ[1] जनु फरहद करी सुरंग[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा भुज। २ मा बटवर। ३ मा भा ओहेउ। ४ मा किहीं
जोवर।

(२) १ ए मै मतिहीन। २ ए मै यह सम्भ नही है। ३ मा बरनि
जाये ए बरनि ना जाई। ४ मा भुज सम उपाई रा दुइ सरहँहि उपाए
भुज सम उपाब ए तुअ सीमु उपाई।

(३) १ रा काहू कामि मा काहू कमल ए मा काहू कमल। २ मा ए
बखानी। ३ ए कर मा गवर। ४ मा थाम। ५ मा ए मा
मानी रा सा जाना।

(४) १ ए कला। २ मा मोर मन मा चित मोरा। ३ मा भा कनक
तामह अति ए कनक परे तेहि माह से।

(५) १ मा ए हथोरी। २ मा सुठी कैसी ए सूमन कस दीसा। ३ मा
जनु, ए जो। ४ मा पैसी।

(६) १ मा मूलति हुति सखि संग मा—सखिनि संग ए झूलति हँहि सखि

(७) १ मा देखिउ ए सारेउ। २ मा जनु फरहद करी रंग ए जनु फरहद
सुरंग रा फरहद कली सुरंग।

अर्थ—"(१) उसकी भुजाओं का उपमान मैंने ढूँढ डाला किन्तु देखा कि वह संसार में नहीं
इसलिए किससे जोड़ा (सादृश्य) देकर उसके बाहों की सराहना करूँ? (२) या तो मेरी मति
हीन है कि वे वर्णित नहीं हो सक रही हैं, अथवा विधाता ने स्वयं ही उन भुजाओं को उत्तम (निर्मि
किया है [इसलिए वे अवर्ण्य हैं] (३) [भले ही] कोई उन्हें कमल-मृणाल कह कर उ
बखान (वर्णन) करता है, तो किसी ने मन में उन्हें कदली का गाभ मान लिया है। (४) उ
कलाइयों को देखकर मेरा चित्त मोहित हो गया उनमें [पहने हुए आभरणों के] कनक का
(सौन्दर्य) अत्यधिक शोभित था। (५) उसकी दोनों हथेलियाँ किस प्रकार शुद्ध (निर्मल)
पड़ी जैसे वे स्फटिक-शिलाएँ हों जिन पर ईंगुर पीसा गया हो।

(६) वह अपने कर-पल्लवों से [झूले की] डोर पकड़ कर सखियों के साथ झूल रही
(७) जो उस बालिका के करों में नखों को देखा, तो वे ऐसे लगे मानो प्रसन्नता की रंगीन कलि
हों।

टिप्पणी—(१) (२) भुज < भुज। (२) सई < स्वयम्। उपाइ < उप्+पादम् = उ
करना। (३) गाभ < गर्भ = बीच का भाग। (५) सुधर < शुद्ध < शुद्ध = निर्मल। (७)
< बालिका। फरहद < फ़रहद् [फा॰] = प्रसन्नता आनंद।

[४८४]

उबटन[1] लाइ[2] पट मम कीन्हा । अंत न पाइअ लावहु[3] चीन्हा ।
नाभी कुंड समोप[1] अपारा । पर जो आइ न[2] पाव[3] पारा[4] ।
पौंगि पंथ[1] चढ़ि रुति जो सूंका[2] । कटि[3] जनु होइ चाहत[4] दुइ टूका ।
गरुव नितंब न दृग[1] सभारा । जनु बिधि गिरि भा[3] एक पहारा[4] ।
बिपरित[1] कनक कदली खांभा[2] । जउ दृग जाइ न जानिय का भा[3] ।
बिरह[1] मारि खतारउ[2] उन्ह[3] हतियारी जान ।
प्रगट दृसु[1] रखतार[2] तरवा लिंद्द न गात[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा बैपन। २ ए साय। ३ ए भा मन पाइ लावहुँ मा मन न पाव लावह मा अंत र (< न—नागरी लिपि) पाइम लमह।
(२) १ मा समाल। २ मा भा आइ न ए भाव नहिं। ३ ए पार्व भा माइय। ४ मा पारा।
(३) १ रा पैग पग ए पौंडि पंथ। २ ए सेज उमूका। ३ भा कर। ४ मा मा हानि टूटि ए हाइ चहै।
(४) १ मा भा गुर नितंब दृगि मैं न ए गुरु नितंब मैं मैं न। २ मा बसी। ३ मा भा बाघ ए बाधा रा भा। ४ मा भा ए एक (न—ए) बाग।
(५) १ मा बिरी रनि। २ मा कैसमी न जया भा कनगि खंभ खामा ए कैसमी खंभ मा। ३ भा जिउ देखि जोप न जानी का भा मा जोउ दे जाय न जैन चंभा ए जिम देखि जोर जामैं कामा।
(६) १ ए बीरहि। २ भा खतारी भा खतारौआ ए खतारे ए खतार मा। ३ मा उनी। ४ ए हतिआरे जान भा हत्यारिनि जन।
(७) १ मा दृष्टी भा लहि। २ ए रखतारउ रा रखतार। ३ मा रखता गात के रतन ए तरवा लिंद्द गात भा तरवा लिंद्द ने गात।

अर्थ—"(१) उसका पट उबटन लगा-लगा कर लाल किया हुआ है और उसमें चिह्न इतने हैं कि उसका अंत न मिलेगा। (२) उसकी नाभि समोप (अस्पर्श ?) और अपार कुंड है; जो कोई उसमें आ पड़े वह उसका थाह नहीं पा सकता है। (३) पंग (तले) पर चढ़कर पौंग (आगे बढ़) पर जब वह मोरा (मरोर) लेती है तो मानो उसकी कटि दो टुकड़े होना चाहती है। (४) उसके गुरु नितंबों को देखकर मैं [अपने को] सँभाल न पाया वे ऐसे हैं मानो एक पवन ही [छिपा होकर] दो गिरि बन गया हो। (५) उसकी आँखें [इस प्रकार से] उलट (उलट कर रक्त हुए) कनक-कदली के गाभों जैसी हैं कि उन आँखों को देखकर [मुझे] न जाने क्या हो गया।
(६) हत्यारी की जान [को उन आँखों] ने विरह से मार कर [मुझे] खताइ (रोग) लगा; (७) (इसीलिए) प्रकट ही देखो, उसके (उसके पैरों के) तलवे रक्त से लाल हैं।"

टिप्पणी—(१) उबटन < उद्वर्तन < उद् + वर्तन = शरीर की मैल को दूर करने के लिए लगाया जाने वाला एक प्रकार का लेप। (४) बिधि < इव। (७) रखतार < रक्तार।

[४८५]

जौ कुवरहिं कहिं[1] बात सिरानी । सुनि क रही औंगि[2] भै[3] रानी ।
मनहिं गुन औ कर बिचारा[1] । काहि देखि यह भएउ बिकारा[2] ।
औ असि सखी मोरि नहिं[1] कोई[2] । पेमां मकु तउ[3] होइ तौ होई ।
कहेसि[1] कि[2] करहु धीर मनु मोरा । मैं उपचरौं[3] आइ तोरि[4] पीरा ।
मधुमालति निहचै[1] कै[2] जाना । पर्मा छाडि होइ[3] नहिं आना ।
मैं सभ[1] सखिन्ह हकारि कै[2] पूछौं[3] खोज करेउं[4] ।
क कुआरि[1] कै बियाही[2] तस तोहि आइ कहउं[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ ए औंघ। ३ रा होइ।
(२) १ मा मनहिं गुनाई करी बिचारी। २ मा किहि देखिमहु भव भा बिसभारा मा किहि देपी उभहु मा बिसभारी ए काहि देखि मेहि मा बिकरारा।
(३) १ ए मा। २ मा भा और न जैसी सपी मोरी कोई। ३ मा मकउ ए मकहु।
(४) १ मा कहेसि। २ मा मा ए मे यह शब्द नहीं है। ३ मा ए उपचारौं। ४ मा तुव।
(५) १ मा निस्चै मा निस्चै ए निस्चै। २ मा मन। ३ ए होहि।
(६) १ मा ए सब। २ मा मा सखिन्ह हंकर (हंकारि) कै ए रा सखी हकारि कै। ३ मा बूझौं। ४ मा ए करउं।
(७) १ ए कुमारि। २ मा बियही। ३ मा ए कहाउ।

अर्थ—(१) जब कुमार की बात कही जाकर समाप्त हुई तो उसे सुनकर रानी (मधुमालती) अवाक हो रही। (२) वह मन में गुनने और विचार करने लगी 'किसे देखकर [ताराचंद को] यह विकार हुआ ? (३) और, मेरी ऐसी कोई सखी है भी नहीं पेमां भले ही हो तो हो।' (४) उसने कहा, "हे भाई मन में धैर्य [धारण] करो मैं आकर तुम्हारी पीड़ा का उपचार करती हूँ।" (५) मधुमालती ने निश्चय करके (निश्चित रूप से) जान लिया कि पेमां को छोड़कर यह और कोई नहीं हो सकती है।

(६) [उसने कहा] "मैं समस्त सखियों को बुलाकर उनसे पूछती और उसकी खोज करती हूँ (७) [और तदनंतर] वह कुमारी है या विवाहिता वैसा मैं तुम से आकर कहती हूँ।"

टिप्पणी—(१) औंग < अवाक = चुप। (२) गुन < गुणय् = मनन करना विचार करना। (५) निहचै < निश्चय। (६) हकार < हाकार < आ + कारय् = पुकारना आह्वान करना बुलाना। (७) कुआरि < कुमारी।

मधुमालति उठि[1] कै घर आई । कहेसि कुँवर मउ[*1] बात बुझाई ।
जस[1] किछु कहा[2] कुँवर मउ[*3] अहा । माइ रवनि ताखन गउ[*4] कहा ।
सुनत कुँवर मन भएउ[1] हुलासा । कहेसि[2] कौन एहि[3] कर दर[4] गाँसा ।
जब राकस हनि आनिउ[1] आही । तहिय आहि[2] रानी हनि[3] माहा ।
तब न मानि[1] माहि चाह[2] न आही । अब लै कुँवरहि दउ बियाही ।
यह[1] कहि दुवौ एक मत चित्रसेन पहिं[3] आइ ।
एक ठाउँ पुनि[4] बसि कै[5] मधुरहि लीन्ह बोलाइ[6] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मुनि। २ ए कहा। ३ मा मैं ग ए सौं।
(२) १ ए जस। २ मा मा कुछ सुना। ३ मा मुहु ए भा सौं ग पर। ४ मा मा ए गम गौं रानी रा रवनि गवन गा।
(३) १ ए भौ। २ मा कहिसि। ३ भा मा ए ये। ४ ए दन्।
(४) १ मा आनइ मा आनउा ए आना। २ मा मरियहि मारि। ३ मा तहिआ चाग्ह दीन्ह हुत ए तहिओ उन्ह दीनी हनि।
(५) १ मा मीउे ए लिया। २ ए माहि चाह।
(६) १ मा एअहु ए यहि। २ भा मग में मा मग मिल ए मग सो। ३ ए कह।
(७) १ मा महुन से बीनी बैमी की (<फ़ा॰ फारसी लिपि) ए मा मजन एकांत (एकंत—मा) बैसि कै रा एक ठाउ पुनि बैं कै। २ मा मधुरा लीन बोलाइ मा मधुरै लीने बोला ए मधुरी (<मधुर फारसी लिपि) लिया बोला ग मधुरहि लीन्ह बोलाइ।

अर्थ—(१) मधुमालती उठ कर घर आई और उसने कुमार (मनोहर) से [वह] वार्ता समझा कर कही (२) [और] जो कुछ उसने कुमार (ताराचंद) से कहा था वह [भी] रुक्मी ने प्रिय (मनोहर) से बताया। (३) [यह वार्ता] सुनते ही कुमार (मनोहर) के मन में उल्लास हुआ और उसने कहा "भला इस का क्या संशय है? (४) जब मैं राक्षस को मार कर उसे लाया था उसी दिन उसे [उसके पिता-माता ने] मुझे दे दिया था। (५) मैंने उसे तब नहीं ग्रहण किया था क्योंकि मुझे चाह (इच्छा) नहीं थी [किंतु] अब उसे लेकर कुमार (ताराचंद) का ब्याह देता हूँ।

(६) यह कहकर दोनों ने चित्रसेन के पास आकर (७) और तदनंतर एक (एकांत) स्थान पर बैठकर मधुरा को बुला लिया।

टिप्पणी—(१) रवनि < रमणी। ताखन < तत्क्षण = शीघ्र। (३) हुलास < उल्लास। (३) गाँसा < ग्रंथ। (५) चाह < चाह (?)।

[४८७]

कुवर ठाढ़ भा[१] दुहु[२] कर जोरी । कहेसि[३] पिता बिनती एक मोरी ।
आएसु[१] होइ तौ बिनति पराऊ[२] । कहत[३] पिता सउ[४] बात लजाऊ[५] ।
राय[१] कहा म आएसु देऊ[२] । कहा तुम्हार[३] परिछि सिर लेऊ[४] ।
तब दूनहु[१] मिलि बात उभारी । ताराचंद कुंवर कुल भारी ।
गरुव गरिस्ट मान गढ़[१] पती । पंडित पर उपगारी[२] सती ।

राज दुलारि तुम्हारी[१] बचा बहिनि[२] है[३] मोरि ।
कहिय तौ[१] ताराचंद कहु[१] देहु[२] गाठि दुहु जोरि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कुअरि (<कुअर फारसी लिपि)। २ मा ए दुइ मा दुवौ। ३ मा कहिसि।
(२) १ ए आयसु। २ मा बिनती करी ए बिनती करउं। ३ मा सौ ए रा सौ। ४ मा कहिसि। ५ मा बातैं करउ मा बात करउं।
(३) १ मा रा राय ए राव। २ मा दिउौ ए देऊँ। ३ मा ए तोहा। ४ मा धरि लीठो ए सिर लेऊ।
(४) १ मा तब दुनौ ए तब दूनौ। २ मा मा उभारी।
(५) १ मा यह (<यएह नागरी लिपि)। २ मा ए उपकारी।
(६) १ मा तुम्हारी रा तुम्हारि है मा तुम्हरी। २ मा बाचा बहेन मा बाच बहिनि ए बाचा बहिनि। ३ मा उमह मा वहु।
(७) १ मा मा कहहुत ए कै तो। २ मा मा सेउ ए सौं। ३ रा में पै यहाँ और है।

अर्थ—(१) कुमार (मनोहर) [तदनंतर] दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और उसने कहा "पिता मेरी एक विनती है। (२) यदि आदेश हो तो विनती करूँ; पिता से यह बात कहते हुए लज्जित हो रहा हूँ।" (३) राजा ने कहा "मैं आदेश दे रहा हूँ और तुम्हारा कथन सिर पर ग्रहण कर रहा हूँ।" (४) तब दोनों (मनोहर और मधुमालती) ने मिलकर बात उभाड़ी। [उन्होंने कहा] 'कुमार ताराचंद भारी कुल का है; (५) यह गुरु-गरिष्ठ मायगढ़ का स्वामी है तथा पंडित परोपकारी और सत्यनिष्ठ है।

(६) [और] तुम्हारी राजकन्या वचन के अनुसार मेरी बहिन है; (७) यदि तुम कहो तो दोनों की गाँठ जोड़कर उसे ताराचंद को दे दूँ।

टिप्पणी—(२) (१) आएसु < आदेश = आज्ञा। (३) परिछ < पडिच्छ < प्रति + इष् = ग्रहण करना। (७) उभार < उब्भाड < उद् + घाटय् = उद्घाटित करना खोलना।

[४८८]

सुनि कै राय[१] कुंवर मुख चाहा[२] । कहसि मोहि[३] तुम्ह पूंछत[४] काहा ।
रावन हनि[१] जय लिएउ[२] मझोरी । तेहि दिन मेउं[*३] वह[४] धरी तोरी ।

जहँ तुम्हार[१] मन मानत अहा[२] । देहु हाथ धरि[३] तहँ मैं कहा ।
बोल छाँडि[१] जब राज दीन्हा[२] । दुवौ[३] बधाइ आइ घर कीन्हा ।
कुँवर[१] जोतिखी सुगित[२] बोलाए[३] । रासि बरग दूनौं क गनाए[४] ।
लोग कुटुँब सभ[१] नवता औ परिजन परिवार ।
घर घर बाज[१] बधावा[२] पुर पुर[३] मंगल चार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए राय मा राय। २ मा मुख चहा मा मुहु चाहा (< चाहा) ए मुख चाहा। ३ मा कहिस मोहि। ४ मा यह पूछहु मा हमर पूछहु ए काहि पूछहु।
(२) १ रा मा। २ रा लिए, ए लीन्ह। ३ मा महि मा ३ ए की। ४ रा तेहि मा ए बाहु।
(३) १ मा ए जहा ताहार। २ मा आहा। ३ मा ए हाथ धै मा बियाहि। ४ मा मा ए तहा।
(४) १ ए छाड़ि। २ ए दीन्हा। ३ मा दुअउ मा ए दुई। ४ ए कान्हा।
(५) १ मा कुँवरी। २ मा सुगनु। ३ मा बलाये। ४ मा मा दुहु की (< क—मा) रासि गनि बरग मनाये ए दुह क रासि बरगमन मनाए।
(६) १ ए सब कुटुँब जन मा नगर पुर ब सब।
(७) १ ए बाजेउ मा बजह। २ मा मा बहु दिन। ३ मा मारहि।

अर्थ—(१) [यह] सुनकर राजा ने कुमार (मनोहर) के मुख को देखा, और कहा 'तुम मुझ से क्या पूछते हो ? (२) राक्षस को मारकर जब तुमने [पेमा को] अंजली में लिया (उससे छीन लिया) उसी दिन से यह तुम्हारी दासी है। (३) जहाँ (जिसे) तुम्हारा मन मानता है (हो) [उसका] हाथ पकड़ कर वहाँ (उसे) दे दो वहाँ (इस विषय में) मैं क्या हूँ (मुझसे क्यों पूछते हो) ? (४) जब [इस प्रकार] राजा ने वचन छोड़ (दे) दिया दोनों (मनोहर और मधुमालती) ने घर आकर बधाई की। (५) कुमार (मनोहर) ने शीघ्र ही ज्योतिषी बुलाए और दोनों (पेमा और ताराचंद) के राशि और वर्ग मिलाए।

(६) समस्त लोक (प्रजा वर्ग ?) और कुटुंबियों को तथा भृत्यों और परिवार वालों को आमंत्रित किया [गया]। (७) घर-घर में बधावा बजा और [राज्य के] पुर-पुर में मंगलाचार हुआ।

टिप्पणी—(२) चरी < चेरी = दासी। (४) बधाइ बधाव < वर्द्धापन < वर्धापन = अभ्युदय अथवा हर्ष सूचक वाद्य। (५) सुगित < स्वगित। (६) लोग < लोक।

[४८९]

पमरा[१] काज बियाह जनाया[२] । सरगि सोमवार [दि]न पा[ा] ।
[घ]र घर मंगल बधावा बाजा । पुर पटन[१] मंगल सभ[१] गा[जा] ।
[सो]मवार सरगि जब आई । बिनाननि[१] [illegible] बनाई ।

डासन आनि अनूप बसाए[1] । राय सभापति[2] सभ बसाए[3] ।
बसि सभा पसरी[1] जेवनारा । जन जन आगें[2] सहस परकारा ।
नगर जो[1] लोग राय औ राने[2] पंच[3] अम्रित जेवनार ।
एक एक जन[1] आगें[2] सहस[3] सहस परकार ॥

पाठान्तर—(१) १ ग पासर। २ मा मा मनाया।
(२) १ मा बरियाती। २ ए नेवता सब।
(३) १ ए चित्रसेन।
(४) १ रा डसाया ए डसाये। २ ए सभा कै। ३ मा तहा बैसाये ए मा तहँ बैसाये।
(५) १ मा ए बैसी सभ (सभा—ए) पसरी मा बैसि सभा पसरा रा बैसि सभापति सभ (बे पूर्ववर्ती अर्धाली)। २ ए मा आग।
(६) १ मा बामन ए मा बाँमन। २ मा राणा। ३ मा पचा मा पाँच।
(७) १ मा मा जना कै। २ ए आगे। ३ मा परे।

अर्थ—(१) [विवाह-] कर्म फैला और विवाह सूचित हुआ तथा सोमवार को मनोहरी का दिन प्रस्थ (निर्धारित) किया गया। (२) नगर में घर-घर बधावा बजा, और [राजा ने राज्य के] समस्त पुरों और पट्टनों [के नागरिकों] को आमंत्रित किया। (३) सोमवार को जब मनोहरी आ गई चित्रसेन ने ज्यौनार कराई। (४) अनुपम सिंहासन लाकर बिछाए [गए], और राजा-गण तथा सभापति-गण—सब को बिठाया [गया]। (५) [अब] सभा बैठ गई, ज्यौनार फैली (परसी गई) एक-एक व्यक्ति के आगे सहस्र प्रकार [का खाद्य पदार्थ] था।

(६) नगर में जो [प्रजा के] लोग, राजे रानें [आदि] थे वे सब उस पंचामृत की ज्यौनार में [थे], (७) और एक-एक व्यक्ति के आगे सहस्र-सहस्र प्रकार [का खाद्य पदार्थ] था।

टिप्पणी—(१) पसर < प्र + सृ = फैलना। (२) बधाव < बद्धापन < वर्धापन = अभ्युदय अथवा हर्ष सूचक बाद्य। पुर = छोटा नगर। पट्टन = महानगर। (३) जेवनारि < जीमन-वारि = रसोई। (६) पंचामृत = दूध दही घी मधु और शक्कर का मिश्रित घोल।

[४९०]

पवन उठा स्रोग बहुराए । जन जन[1] कह पान दवाए ।
तहि पाछें[1] मन[2] गमन हकार । आनि तो[3] मोडी तर बैसार ।
ताराचंद[1] पाट बसारा । होम अगिनि आहुति परजारा[2] ।
बाएं कुँवरि आनि तिय[1] ठाढ़ी । जानहु चाँद चोरि कै काढ़ी ।
पनहि पड़हि[1] कुँवर सउ[2] लाई । गाँठि जोरि सत फेरि फिराई[3] ।
समुपत करत[1] कुँवर गिय[2] पमें[3] धाका[4] हार ।
कुँवर पुहुप माला गहि[1] मधुमालति गिय सार[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा जनों पनों मा जना जना ए जन जन।
(२) १ ए तेहि पाछ गहें। २ मा सब। ३ मा भा भानि मे ए भानि नी रा भानि मो।
(३) १ ए मे 'मैं' और है। २ मा जमवारा।
(४) १ मा विही सै ए कीहु सै।
(५) १ मा पर्हाह मा पर्हही (<पर्हही नागरी लिपि) ए पढ़ै। २ मा मो। ३ मा फर कराई ए फरी कराई।
(६) १ मा म यह शब्द नहीं है। २ ए गीव। ३ ए म 'जो' और है मा पर्मा। ४ मा भा मैलेउ ए मेला।
(७) १ मा कुंवरहु कहु समाल कर गहि ए कुंवरहु पुहुप माल कर गहि मा कुंवर हुँ पुहुप माल दुहुं कर गहि। २ मा सैकामिनि (<गिव फारसी लिपि) मार (<हार नागरी लिपि)।

अर्थ—(१) ज्यौनार समाप्त हुआ और लोग वापस हुए (होने लगे) प्रत्येक व्यक्ति को पान दिलाए [गए]। (२) उसके (इसके) बाद समस्त गणक (ज्योतिषी) बुलाए [गए] और लाकर तदनन्तर मंडप के नीचे बिठाए गए]। (३) ताराचंद चौक पर बिठाए [गए] और हवन की अग्नि में आहुतियाँ जलाई गईं। (४) [वर के] आगे कुमारी (पेमा) को लाकर खड़ा किया [गया] [जो ऐसी लग रही थी] मानों चंद्रमा को चीरकर उससे निकाली गई हो। (५) कुमार (ताराचंद) से [संबंध] लगा (जोड़) कर पेमा के विषय में [मंत्रादि] पढ़े [गए] और [कुमार से] गाँठ जोड़कर उसे सात फेरे फिराए [गए]।

(६) कुमार (ताराचंद) के गले में लजुचते-डरते पेमा ने हार डाला (७) और कुमार (ताराचंद) ने पुष्पों की माला लेकर कामिनी (पेमा) के गले में डाली।

टिप्पणी—(१) जवन<यौवन=भाजन। (२) माँडो<मडप। (३) पाट<पट्ट=पाट पीढ़ा। (६) (७) गिय<गिव<ग्रीवा।

[४९१]

गंगन बंधह[1] बाहि[2] पिमाया। मरद भगर[3] मम मन्दिर गिरापा।
भीतर भौ बाहिर चहुं ओग। लाखा[1] भीतिह[2] राग[3] पजोग।
मन मानि तहि ठावं[1] रमाई। बंधर अनन्त बगा आई।
व गिगार भानी[1] जग वारी[2]। मृगन मन ग प[3] पगारी[4]।
पुन्र पमउ चोप मन मामा[1]। उपजा दुनट प्रथम मप पामा[1]।
बामा[1] मानु म[2] परिहर बालम्[3] लानि बगार।
पूपर भोर बोर मा[1] मर नियर[2] बो[3] आइ[4]॥

पाठान्तर—(१) १ मा कुकुम। २ रा किनै। ३ रा मलयागिरि ए केरे जन्न। ४ मा मन मंदिर मा मब मदन ए मद मंदिन।
(२) १ मा लाएउ मा लेप। २ ए भीतिर रा भीतिन। ३ रा ए लागर।

(३) १ ए मदिल मा मदिर। २ मा बैसी मा बैसेउ।
(४) १ मा बानेन्हि, मा बाईं, ए बाइ। २ मा बनबारा। ३ ए सौ। ४ मा
मा रस कै ए, कै सै। ५ मा बैसारा।
(५) १ मा कलमल सेउ कप अनसासा ए पुलक पसेउ कापै धन सासा मा पुलक
प्रसिद्ध किपत सर सासा। २ मा उपजेउ दुहु प्रथम सग बासा, मा उपजउ दुहु
आपु सग वासा ए उपजा दुवौ प्रथम सग वासा।
(६) १ ए बोल। २ रा मे मं नहीं है। ३ मा बालम्हु, ए बल्लभु।
(७) १ मा कोटि भी ए कोट भाम। २ ए कै निअरै। ३ मा भो। ४ ए
आइ।

अर्थ—(१) चंदन और कुंकुम बाला (मेल) कर उन्हें पिसवाया [गया] और उसमें मधुर मिला कर समस्त मंदिर (शयन-गृह) लिपाया [गया]। (२) भीतर और बाहर चारों ओर भीतों (दीवालों) पर लाल रेशमी वस्त्र लगाया [गया]। (३) उस स्थान पर शय्या ला कर बिछाई [गई] [जिस पर] कुमार (ताराचंद) आनंदपूर्वक आकर बैठा। । (४) शृंगार कर के बालिका (पेमा) को लाया [गया] और उसे ले (ला) कर सुरत-शय्या पर बिठाया [गया]। (५) [दोनों के] शरीर में पुलक (रोमांच) प्रस्वेद कंप और प्रश्वास [ऊर्ध्व श्वास] हुए, [तब] दोनों को प्रथम संग (समागम) की वासना उत्पन्न हुई।

(६) बाला भय नहीं त्याग रही थी और वल्लभ (प्रिय) उसकी शांति कर रहा था। (७) [बाला के लिए] घूंघट का ओट कोट (परकोटा) हो रहा था [अतः] कौन उसके [मुख के] निकट जा पाता?

टिप्पणी—(१) कुंकुह < कुंकुम = केसर। बाइ < बाइय = बनाना। (२) भीति < भित्ति = दीवाल। रात < रक्त = लाल। पटोर < पट्टोल < पट्ट + कूल = रेशमी वस्त्र। (३) सेन < शयन = शय्या। (४) बारि < बालिका (५) बास < वास = वासना। (६) शांति < शमित [?] = शांत, सुशामद। (७) निअर < निकट।

[४९२]

उठा कोहु[1] फुनि[2] मन मथ दापा[3] । मान होइ[4] भा[5] काम[6] बियापा ।
बज्र[1] समान भही भो बाला[2] । भै रवि उवौ सोम[3] भौ पाला[4] ।
कुंवर पकरि कर[1] अगुरी[2] चांपी । सघन[3] माहिं[4] दामिनि जनु कांपी ।
बहुरि भौ कर कुच मर्दत गए[1] । सकुचि त सास उसासत भए ।
नवल नेह नौ[1] जोबन अंगा । रनि बिहानि दुहु[2] रति रंगा ।
राज कुंवर बहु रजनी तिल तिल सुक्ख बिहाइ ।
पमा बिरह बियाकुलि[1] सूर सूर बिस्साइ[2] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा उठउ अम्मान मा उठेउ भावा। २ ए रा पुनि भो। ३ मा
दीपा (< दापा भामरी लिपि)। ४ रा ए, मन होता। ५ बदा तब न
भौ। ६ रा ए भाव।

]

(२) १ मा अबर। २ ए ग आह (आह—ग) मा प्याला (दे पूर्ववर्ती चरण का तुक)। ३ ए औ रवि उर्द मा भै रवि उर्द। ४ ग सूर ए मार (<सूर फ़ारसी लिपि)। ५ ए भै बाला ग हा" बाला।

(३) १ ए कपरि कै। २ मा पमव। ३ मा पग। ४ मा मा ए स्याम। ५ मा जम।

(४) १ मा मगन भाए, मा मेगन मयेउ। २ मा मकुचि मसोर मलिन मयेउ मा मकुच मंग अर मलिन भए ए मकुचित माग उमामिन भये।

(५) १ ए रौ। २ ए दुओ।

(७) १ मा मा बियापी ए व्याकुली। २ मा ए सूर सूर (सुर—ए) धीरमाइ मा सूर सूर बिम्पा"।

अर्थ—(१) [कामिनी का] कोप (रोष) समाप्त हुआ और तदनंतर [उसके शरीर में] मन्मथ (काम) दर्पित हुआ; मान निर्विस हुआ और काम व्याप्त हुआ। (२) जो बाला [मान वश] वज्र के समान हो रही थी वह [काम] सूर्य के उदित होने पर चंद्रमा और पाला [जैसी] हो गई। (३) [जब] कुमार (ताराचंद) ने उसके हाथ की उँगली पकड़ कर दबाई वह इस प्रकार काँप उठी मानों बादलों के बीच में दामिनी [कंपित हुई] हो। (४) तदनतर उसके हाथ जब [कामिनी के] कुचों का मर्दन करने लगे उन्होंने संकुचित (सिकुड़ी-श्रमित हुई) श्वासों को उच्छ्वसित कर दिया (काम-वेग के कारण श्वासों का वेग बढ़ गया)। (५) नवल स्नेह था और शरीरों में नवयौवन था [अत:] रजनी दोनों (दंपति) को रति-रस में व्यतीत हो गई।

(६) राजकुमार को रात्रि तिल-तिल युग में व्यतीत हो रही थी (७) [किन्तु] प्रेमा विरह (प्रथम समागमजनित वेदना) से व्याकुल होकर 'सूर्य 'सूर्य चिल्ला रही थी (सवेरा होने की कामना कर रही थी)।

टिप्पणी—(१) कोह<क्रोध=आवेग रोष। (४) जो<जउ<यद्=जब। (५) रैनि<रयनी<रजनी=रात्रि। (७) सूर<सूर्य।

[४९३]

रमि सुख[1] सुरा गज[2] बिरानी। भोर गया म आइ[3] पानी।
सागमन बार[1] उठि जाई[3]। मधु मालति पमी पर आई।
पूछ[1] मगा मस मन[2] माही[3]। कहाँ भा पिउ मगम गाना।
पम कहा पूछि म मनी[1]। तुम म काम रिस[1] मामउ[4] मनी।
मा बिरह[1] हम दुख निसि निरबानी[1]। मो रिछ[3] जोभि म आय मना।
दुद मिय पिय[1] जा निरयान[3] बेल्मि गनहा मन[4]।
गा कमर महि[1] आय[2] मगि गन[3] जाभि मरन॥

पाठांतर— मा म दम छंद का दारा गया जाना छड की अर्धालियाँ नहीं हैं।
(१) १ मा दुम" भा ए न्यो। मा गुप ए मा मुर्गि। ३ ए मा लगी आई भै।

(२) १ ए बाहर। २ मा उठ। ३ ए आई। ४ ए आई।
(३) १ मा मा पूछेसि ए पूछै। २ मा मा कहहु कहु। ३ ए मोही। ४ मा मैं यह चरन नहीं है, ए कैसे भौ पिय सौ रंग तोही मा कैसें मा रंग पिय सौं मोही।
(४) १ मा मे यह चरण नहीं है ए पेमा पहँ जो पूछि मैं रही। २ मा तुम्ह, मा तुम्ह ए तुह। ३ ए कछु। ४ मा मास ए रा मो सौं।
(५) १ मा कुछ, ए कछु। २ ए हमहि मिलि मिलहा मा हम दुहुँ मिलि मिलहा। ३ मा सुख मा सपि ए सखी। ४ मा काही मा ए कहा।
(६) १ मा पुरु मिल चित ए दुनौ जीव जीव। २ ए मे यह चरण नहीं है। ३ ए और बहु। ४ मा सपने भये पेमकली ए सखी है भौ एकत रा केलसि सनेही कन्त।
(७) १ ए कैसहु न। २ मा मे यहां 'कमी' और है। ३ मा मे ए है।

अर्थ—(१) दोनों (दंपति) की रात्रि सुख-शय्या में व्यतीत हुई। सबेरा होने पर [पेमा की] सखियाँ [मुँह धोने के लिए] पानी लाई। (२) तत्काल उठ कर द्वार पर गया [तो] मधुमालती पेमा के पास आई। (३) वह पूछने लगी "हे सखी मुझसे सच कहो प्रिय से तुम्हारा संगम (मिलन) किस प्रकार हुआ ? (४) पेमा ने कहा "[अब] मैं तुमसे पूछती रह गई थी तुमने वह बातें मुझसे कुछ भी नहीं बताई थी। (५) जो-कुछ [बात] हम दोनों में मिली वह मुख और जिह्वा से कहने में नहीं आ रही है।

(६) स्नेही कांत के साथ विलास कर दो जीवों (दंपति) में जो कुछ मिली (हुई), (७) वह, हे सखी, इस जिह्वा से कहने में किसी प्रकार नहीं आ रहा है।"

टिप्पणी—(१) रैनि < रयणी < रजनी = रात्रि। सेज < शय्या। (२) बार < वार < द्वार। (६) कंत < कान्त = प्रिय पति।

[४९४]

दूनौ राय कुँवरि[१] रहु[२] हिली। खेलहिं हँसहिं एक सँग[३] मिली।
दुवौ रहहिं सतत[१] एक सगा। भौ जोबन तन उदित अनंगा[२]।
राज सुअन भौ जोबन बारी। निमिख[१] न बिछुरहिं[२] पेम पियारी।
राज कुँवर दूनौं अस मिले। परसें बाढ़ प्रीति कै हिले[१]।
हियें[१] प्रीति मुख कही[२] न जाई। जिमि न ससि कुमुदिनी सोहाई[३]।[४]
मधुमालति औ पेमा राज कुँवर[१] दुवौ[२] बीर।
पावस रितु[१] मुख बेरसेहिं[२] बहुरि घटा घन नीर[३]॥

पाठान्तर—(१) १ ए राजकुँवर (<कुँवरि फारसी लिपि)। २ मा हिल 'पै' है (<हिल फारसी लिपि)। ३ मा ए संग।
(२) १ ए दुनौ रहैं हेमत। २ मा अनंग ए अंगा।
(३) १ मा निमिषि। २ ए बिछुरे।

(४) १ ए म अर्धाली है मिले दुओ एक मय सीना। जिमि बारी द्विपियो का मीना।

(५) १ ए होय। २ नहै (<नही फारसी लिपि)। ३ ए जिमि प्रीति कुमुदीनि मिराई।

(६) १ मा राजकुमरी (<कुअर फारसी लिपि)। २ ए दुइ।

(७) १ ए काल। २ मा कन्मेन्हि ए कन्माहि। ३ मा पुनि आ परा जग भीर, ए. पुनि परजा पन भीर रा. पुनि देन परजि पम भीर। ४ मा मे अर्धा लियाँ ४ तथा ५ नही है और यही पर निम्नलिखित पंक्तियाँ और हैं —

फुनि पर्म माठिउ मपि हैरी (—मव मगी हँसारी—रा)।
मेक पाइ पीअ पान मेरी (एक बार मुनि माद मा नारी—रा)।
मनि मरूप (सुदरि—ए) पुनवन (रूपवन्ती—रा) कुमारी।
माउ (भाव—ए) सुरगा जावन वारी।
जानिगी जाइव मामुरे काउ दिन मगन माहि (जानसि ससुर कार्ड दिन मार गंग नाहि—रा)।
जा मर्ड जहवी बान औज कर्ग उमह पुनि विहिन विनाए (जामा मन्द ज्याज जिउ करी मह मुनि कीन्हा ब्याहि—रा)।
मय भरन की (कै—रा) मामव नही (नाहीं—रा)।
कुअर मुहीरवही (मुहिरई—रा) विह माही (दोना ब्याही—रा)।
जामिगि दुओ (जानेमि दुनौ—ए) मम हम (मिलि—ए) रही।
दुग मुग एक माप (संग—ए) निरवही।
बाल मपानिनी (सयानी—ए) जावन बामी (बाही—रा)।
की दुनौ एक दुर की पान्नी (दूनौ एक बाम की छाही—रा)।

रा म ये पंक्तियाँ स्वतन्त्र छंद के रूप में आती हैं जिसम इन पंक्तियों के बीच म आया हुआ दोहा अंत म आता है। मा म निर्धारित पाठ की अर्धालियाँ ४ ५ जो नही हैं वे इसलिए भी भूल से स्वतन्त्र रही लगती हैं।

अर्थ—(१) दोनों राजकुमारियाँ (प्रेमा और मधुमालती) [आपस में] हिली रहती थी वे मिलकर एक-साथ खेलती-हँसती थीं। (२) दोनों सदैव एक-साथ रहती थीं दोनो के नवयौवन पूर्ण शरीरों में काम का उदय हो गया था। (३) [उन] बालिकाओं को रात-सुख [प्राप्त] था तथा यौवन और वे प्रेम-क्रियाएँ [परस्पर] एक क्षण के लिए [भी] नहीं अलग होती थीं। (४) दोनों राजकुमार [भी] ऐसे मिल गए थे जैसे वे बाल्यावस्था की प्रीति से ही आपस में हिले हुए हों। (५) [परस्पर] उनके हृदयों में जो प्रीति थी वह कही नहीं जा रही है वे शशि और सुन्दर कुमुदिनी जैसे हो रहे थे।

(६) मधुमालती, प्रेमा और दोनों भाई (भाइ दुन्य) राजकुमारों ने (७) काल (वर्षा) ऋतु के सुख का भोग किया और तदनंतर [शरद का आगमन होने पर] संसार में जन [का आधिपत्य] चल बना।

टिप्पणी—(३) बारी<बालिका। (७) पावस<प्रावृ =वर्षा ऋतु।

[४९५]

पावस मा[1] दुहु[2] भोग बेरासा[3] । रात[4] कुवार सोहिल[5] परगासा[6] ।
भएउ[1] अगास सुभर[2] निरमला । सूर सहस[3] ससि सोरह कला[4] ।
सिमिटे[1] मेघ गगन मत[2] आहे । बाह भए[3] जल हर[4] ओगाहे[5] ।
बसि[1] दुहु मत[3] कीन्ह बिचारा[4] । नीर घटा जग मा उजियारा[5] ।
कै मत दुवौ[1] राज[2] पहं[3] आए । चित्रसेनि गे[5] महल[6] ओलाए[7] ।
दुवौ[1] कुंवर कर जोरि कै[2] बिनती ठाढ़[3] कराहिं ।
कहुन्हि[1] देहु जौ[2] अग्या[3] देस अपन[4] कहं जाहिं ॥

पाठान्तर—(१) १ भा मा पव। २ ए जा। ३ मा बिरासा भा बिलासा। ४ मा राज मा ए रितु। ५ मा सोहिला ए सोहिल। ६ ए कविलासा।
(२) १ मा भवा ए भो। २ मा अकास सुभन (<सुभर—नागरी लिपि) ए अकास सुभ। ३ मा सारस हुसइ, ए सुरज सहस। ४ मा सिरी सोरह। भाखा ग जो सोरह कला।
(३) १ मा समिटे। २ मा बत ए ज।। ३ ए भौ अबाह। ४ रा जल थल मा जल भर। ५ मा अवगाहे।
(४) १ रा बैठि। २ मा दुबहु ए दुनौ। ३ मा मत ए मति। ४ मा बिचारी। ५ मा भव रितु उजियारी ए जो रितु उजियारा मा भव रितु उजियारा।
(५) १ ए मति दुनौ। २ मा राजे ए राइ। ३ मा पहिं। ४ ए आई (आए—फारसी लिपि)। ५ मा मा पुनि ए जौ। ६ रा महल। ७ ए ओलाई (<ओलाए—फारसी लिपि)।
(६) १ ए दुनौ। २ मा भा राय पहं। ३ ए ठाढ़ि।
(७) १ मा कहिन्ह। २ ए जौ। ३ मा अयस मा आयेसु। ४ मा आ- ए अपन।

अर्थ—(१) दोनों (राजकुमारों) को पावस भोग-विलास में गया तदनंतर शरद (रैनीके) क्वार [मास] में सुहावना प्रकाश हुआ। (२) आकाश शुद्ध और निर्मल हो गया, सूर्य सहस्र [कलाओं-किरणों] तथा चंद्रमा सोलह कलाओं का हो गया। (३) आकाश में जितने भी बादल थे वे सिमिट [कर दौड़े ही] गए और [पहले के] गहरे जल-स्थान (जलाशय) थाह [वाले] हो गए। (४) [तदनंतर] दोनों [राजकुमारों] ने बैठकर यह मंत्र विचारा कि [अब] जल घट गया था और जगत् प्रकाश-युक्त हो गया था। (५) दोनों मंत्र (विचार) कर राजा के पास आए, और चित्रसेन आकर दोनों को महल [के भीतर] बुला ले गए।

(६) दोनों कुमार हाथ जोड़ कर और खड़े हो कर [चित्रसेन से] विनती करने लगे। (७) उन्होंने कहा, 'यदि तुम आज्ञा दो, तो हम अपने देशों को जाएँ।'

टिप्पणी—(१) पावस < प्रावृद् = वर्षा ऋतु। बराम < विराम। मालिन < मालिन्य < मालावन् = मुरझाना। (२) मुमर < मुग्न < मग्न = निमग्न। मुर < मुर। (३) बरगाह < बरगाव = महरा। बनहूर < अम-स्थल = अमागाय। थाह < स्थाप। (४) (५) मन < मन = विचार। (७) बग्गा < भाता।

[४९६]

हरख होइ जौं[1] आएसु[2] पावहिं[3] । सुदिन नाखि[4] पस्थान[5] चलावहिं[6] ।
आयसु[1] होइ तौ गौन कराईं[2] । अपनें[3] जनम भुम्मि कहँ जाईं ।
गौन करत कर साज कराईं[1] । मधुमालति कहँ साथ चलाईं[2] ।
चलिय[1] बगि बिन बिलम न लाइय[2] । मना पितहिं[3] मग जीयत पाइय[4] ।
उन्ह सब[1] करिय रहहिं[2] बग । चाहें[3] मनाइस जिउ मिलहि बग ।
जस भिनुसारें[1] दीपक पियरि भय जस भास[2] ।
तस जीवन[1] उन्ह[2] मग[3] मांस पाग न्हि मास[4] ॥

पाठान्तर— ए म यहाँ उपयुक्त द्वितीय अर्धाली का दूसरा चरण तथा तृतीय का पहला चरण उन्हें है और उपयुक्त चौथी अर्धाली नहीं है।

(१) १ मा भा मया मौं ए मया है। २ मा ग अम्या। ३ ए पावी। ४ मा भा ए मधि। ५ मा ए प्रस्थान। ६ ए चलावी।

(२) १ ग ए अम्या। २ मा कराहीं। ३ मा आपना। ४ मा जाहीं।

(३) १ मा भा बिन उगाहै (उगाह—भा) माग्या (माग्या जो—भा) पावहि (पावहि—भा)। २ मा भा बिन माथ जिमि चरन उचावहि ए मधुमालति के संग चलाई।

(४) १ मा मे यहाँ कागज फटा हुआ है। २ मा बनसन माना भा बिलम न लाइय। ३ मा रा ए मात पिता। ४ मा मधु जीवन पान भा मा मधु जीवन पाऊब ग मधु जियन पाई।

(५) १ मा तिन्ही की सेवा ए उनकी सेवा। २ मा करिय रहहि रा करहि रहि मा करिबे नाहि ए करि उन। ३ मा भा जीवन ए जीउन। ४ मा मर्ह बिन्ह बैरा मा मनि उन बैरा।

(६) १ ए भिनुसारे। २ मा पियरा (< पियरी) पुर। ३ ए भोर।

(७) १ मा तस जवन ए तस जीवन रा तैस जीउ। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा करे। ४ ए भोर।

अर्थ—"(१) हमें हर्ष हो यदि तुम्हारा आदेश पावें, और सुदिन देखकर [अपना] प्रस्थान कराएं। (२) यदि आज्ञा हो तो गौना कराकर हम अपनी जन्म भूमियों को जावें (३) [और] गौना करने की तैयारी कराकर मधुमालती को साथ प्रस्थान करावें। (४) [हमारा विचार है कि] हम शीघ्र चलें और विलंब न लगावें जिससे कि संभव है माता-पिता को जीवित पा जावें (५) और

इस बेला में उनकी सेवा करें [क्योंकि] उनका जीव (जीवन) इस समय सत्ताईसवें (अंतिम) नक्षत्र का चंद्रमा हो रहा है।

(६) जिस प्रकार प्रातःकाल का दीपक होता है और संध्या की पीली धूप होती है (७) उसी प्रकार उनका जीवन [वर्षों में नहीं] महीनों पखवारों और दिनों [की अवधि] में है।

टिप्पणी—(१) हरख < हर्ष। पस्थान < प्रस्थान। (२), (३) गौन < गवन < गमन = वधू का वर के घर जाना। (७) पाख < पक्ख < पक्ष = पन्द्रह दिनों की अवधि।

[४९७]

गौन बचन सुनि ग्रिप चुप रहा[1] । तरहुत[2] मांथ पुहुमि[3] तनु चहा[4] ।
रहा भचकि[1] दहु का जिउ गाजा[2] । पलक न परै टकटका[3] लागा ।
जिउ सरीर हुत[1] गएउ उड़ाई । बड़ी बार ऊपर[2] सुधि आई ।
कहन्हि[1] राय बिक्रम पह जाई । गौन करि ग[2] बिनति कराई[3] ।
जौ आएसु तुम्ह आपकु[1] राजा । त गौनहि आपन[2] सभ[3] साजा ।
चित्रसेनि चित चिंता पुनि मन कीन्ह बिचार[1] ।
जौ सवत[1] दुहिता रह मइकें[2] अंत सो बहुरि[3] परारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा सुनत गौन चकित होइ रहा। २ रा तरहुत। ३ रा भुम्मि। ४ ए को महा मा तेउ कहा।
(२) १ मा ए. भचक। २ मा घर्हु का जीम जगा ए के भाव न काजा। ३ ए. टकटकी।
(३) १ रा सो मा हुते ए ते। २ ए ते। २ मा पर भी मा बार मै जिउ।
(४) १ मा कहेन्हि रा कहेसि ए कहा। २ मा केरि मै ए करि कर। ३ ए साज सजाई।
(५) १ मा आजै ए आपकी। २ मा रा गवनहु अपना ए कीजहुं अपने। ३ ए दिस मा सब।
(६) १ मा पुनि मन कहन्ह बिचारि, रा पुनि मन कीन्ह बिचार।
(७) १ मा मन ए सतति। २ मा माइके ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए मत बहुरि मा अंत सो भई रा जाइ बहुरि।

अर्थ—(१) गौने की बात सुनकर राजा चुप रहा और सिर नीचे की ओर [करके] पृथ्वी की ओर देखता रहा। (२) वह चकित हो रहा कि पता नहीं यह क्या वज्रपात [उसके] जीव पर हुआ उसकी पलकें नहीं गिर रही थीं टकटकी लग (बँध) गई थी। (३) जीव उसके शरीर से उड़ गया था और बड़ी देर बाद उसे चेत हुआ। (४) [तब कुमारों ने] कहा आप विक्रमराज के पास जाएँ और जाकर गौने की विनती करें। (५) यदि, हे राजा आप आदेश दें तो हम अपना सब साज लेकर [घर] गमन करें।

(६) [यह सुनकर] चित्रसेन के चित्त में चिंता हुई [किंतु] तदनंतर उन्होंने मन में विचार

किया (७) "यदि सर्वदा ही दुहिता मायके में रहे, फिर भी अंत में वह पराये की ही तो [होती] है।"

टिप्पणी—(१) पुहुमि < पृथ्वी। (२) कचकि < कचित। गाज < गज्ज < गर्ज = गरजना भड़भड़ाना कष्टयान होना। (३) बार < बेला। मुचि < गढि = बेंधना। (५) आस < आप् = देना। (७) मगन < मगन = निरन्तर।

[४९८]

कहि[1] रस बचन कुँवर पहुराई । आपु राय बिक्रम पहँ आई ।
राजा सउँ[1] ग[2] कहिन्हि[3] बुझाई । कुँवरन्ह गौन क[4] बिनती लाई ।
सुनि यह बात[1] नृपति चुप[2] रहा । पुनि[3] अस चित्रसेनि[4] सउँ[5] कहा ।
जेहि[1] दिन बिधि दुहिता औतारा[2] । तेहि दिन जानहु[3] भई पराई[4] ।[5]
अब राखे[1] कर नाही काजा । ग साजहु उन्ह गौन कर[2] साजा ।
चित्रसेनि मन मारें[1] बिसमौ महिमें[2] पर आइ ।
कहिन्हि आइ कुँवरन्ह सउँ[3] कहा जो बिक्रम राइ[1] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहा।
(२) १ रा ए सौं। २ मा ए मैं। ३ रा कहेनि। ४ मा भा गवन की बिनति कराई ८ गौन क साज कराई।
(३) १ ए बात। २ मा भा अवर सुन ए अवर भै। ३ रा ए पुनि। ४ ए चित्रसेन। ५ मा सौ ए सौं रा मा मा।
(४) १ मा जिहि। २ ए जा दिन बिधि हम बेटवा जानी। ३ मा भा दिन (तेहि—भा) दिन हम जानी। ४ मा दि पराई मा मे पराय भया है। ५ ए ता दिन दुख पर नहि जानी।
(५) १ मा रखिबे ए रखबे। २ मा भा न साजहु की (उन—मा) गवन कर (कह—भा) ए मैं साजहु आगे दिन रा अब साजह मैं गौन।
(६) १ ए मारे। २ मा बिसमाउ ए बिस्मै मी भा बिसमन्हे।
(७) १ मा कहिन्ह आइ सब कुँवरन्हि कहा जो बिक्रम राइ ए कहा आइ कुँवरन्ह सौं राजा बिनती करान रा कहेनि कुँवर सौं राजा बिनती कीन्ह कराय।

अर्थ—(१) रस (प्रेम) के वचन कह कर कुमारों को [चित्रसेन ने] वापस किया और आप स्वयं विक्रमराज के पास आए। (२) राजा से आकर उन्होंने समझा कर कहा 'कुमारों ने गौने की विनती लगाई (की) है। (३) यह बात सुनकर राजा (विक्रमराज) चुप रहे; तदनंतर उन्होंने चित्रसेन से इस प्रकार कहा, "(४) जिस दिन विधाता ने कन्या को जन्म दिया, उसी दिन जानो कि वह अन्य की हो गई। (५) अब उन्हें रखने (रोकने) का कोई प्रयोजन नहीं है; जाकर उनके गौने का साज करो।"

(६) विवसोन मन मारे हुए (उदास मन से) और बिसमय (विषाद) के साथ घर आए (७) और उन्होंने कुमारों से वह कहा जो विक्रमराज ने [उनसे] कहा था।

टिप्पणी—(६) बिसमौ < बिसमय = विषाद।

[४९९]

¹सुनत बात बाहर² कोइ³ अहा । तइ सो आइ मधुरा सउ⁴ कहा ।
रही चमकि¹ मधुरा सुनि बाता । कहसि² काह³ यह⁴ भएउ⁵ बिधाता ।
मुइउ रोइ जब¹ राकस हरी । अब यह² गाज कहाँ सउ³ परी ।
अब सो बिछुरत मा¹ मोहि मारी² । बरु न बियाहति³ रहति कुआरी⁴ ।
नैन आँसु भरि मधुर रोवा । कहसि मरन हुत¹ कठिन² बिछोवा ।
प्रथम बार¹ राकस² हरी मरई³ आनि करतार ।
अब बिछुरें¹ नहि मिलना² जियतें महु³ संसार⁴ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा में इसके पूर्व निर्धारित छंद ५१५ की अर्धालियाँ १—४ और हैं यद्यपि वे यहाँ भी उसमें आई हैं। २ ए बाहर। ३ मा कोउ ए भा केउ। ४ मा येते मैं मधुरा सउ मैं ए भा तिन्ह मैं कै मधुरा सौ।
(२) १ मा ए भभक। २ ए कहेउ। ३ मा ए कहा। ४ ए यौ। ५ मा भओ ए भौ।
(३) १ ए मुई रोइ जो। २ मा अब इह ए भभक। ३ मा कहा तैं ए कहवाँ सौ।
(४) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए भौ। ३ मा भा बिछुरत केर मोहि दुख भारी। ४ भा न बिहाणिउ मा न बिअहुतिउ ए न ब्याहती। ५ ए रहती बारी भा ए रहत कुआरी ए रहति कुमारी।
(५) १ मा हुते ए में यह शब्द नहीं है। २ मा कठन (< कठिन फारसी लिपि)।
(६) १ मा भा प्रथमहि जब। २ भा में 'तेहि' और है। ३ ए मरै (< मेरई फारसी लिपि)।
(७) १ ए बिछुरे भा बिछरत। २ मा भा हुते (हुत—भा) नाहीं मिलन ए मा मिलना। ३ मा जीअए कै ए एहि जगम भा जियत। ४ ए मा संसार।

अर्थ—(१) बाहर कोई [उस] वार्ता को सुन रहा था तो उसने आकर मधुरा से उसे बताया। (२) मधुरा [इस] वार्ता को सुनकर चकित हो रही और उसने कहा "हे विधाता यह क्या हुआ? (३) जब [पेमा को] राक्षस ने हर लिया था [तभी] मैं रोती रोती मर गई थी अब [पुनः] यह वज्र कहाँ से गिरा? (४) अब मुझे [पेमा से] अलग होने का भारी दुःख हुआ; इससे अच्छा रहता यदि उसका विवाह न किए होती और वह कुमारी रहती। (५) नैनों में आँसू भरकर मधुरा रो पड़ी; उसने कहा "बिछोह मरण से [भी] कठिन होता है।

(६) पहली बार, जब उसे राक्षस ने हरा था उसे करतार ने लाकर मिलाया (७) अब [की बार] जीवित (जीवन) में इस संसार में [उससे] मिलना नहीं [होगा]।"

टिप्पणी—(४) कुआरी < कुमारी। (७) जियत < जीवित।

[५००]

ससि कवरिन्ह[1] पर सोग समाना[2] ।[3] भा दुहु [4]ग्रि पर बिसमाना[5] ।
सुनतहि बात रूप मजरी । भइ[1] अचेत मुरछित भुइँ[2] परी ।
बिक्रम राय बसि[1] समुझाव । धिय रि गेह जमु[2] नहर पाव[3] ।
ससुरें धिय[1] कर[2] होइ[3] निरबाहा । नइ[4] काज न धिय कह[5] आहा[6] ।
नैन भरे[1] जल चित्त उदासा । गइ[2] रानी मधुमालति पासा ।
मधुमालति रोई[1] रानी कह बात समुझा[2] ।
कुवरि चलिहु तहि देस कह[1] जहा सउँ कोउ नहि आइ[3] ॥

पाठान्तर— मा में उपर्युक्त अर्धालियाँ ३ तथा ४ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा कुँवरन्ह। २ ए अचानक रा कुँवारा मा समान मा समार। (< कुमारा)। ३ ए सुनी कुँवर कर सोन अधारा। ४ मा सउँ दुहु निर ए सो कुमी गिर। ५ मा बिसमाइ।

(२) १ ए भी। २ मा भा मुरछि महि ए मुरछागत।

(३) १ रा बैठि मा बैसा। २ ए धी के रहे जम। ३ मा पा—।

(४) १ ए ससुरे धी। २ मा मा क। ३ ए हो। ४ ए मैके। ५ ए धी कर। ६ मा आहा।

(५) १ ए भी। २ मा भै।

(६) १ ए रा मी मा कन। २ मा बोलि लिये मर कान मा कहे बालि हिय कान ए बहा बात कम मान।

(७) १ मा कुंवरी चलीहु कुंवर देस जहाँ मा ए कुंवरि चलिह तहि देस का। २ ए जहँ सो मा जह कि रा जाहीं। ३ मा कउ मा फिरि आन मा काउ न आन।

अर्थ—(१) कुमारियों के बीच का वृत्तान्त सुनकर दोनों राजपरिवार विस्मययुक्त हो गए। (२) [सोने की] बात सुनते ही रूपमंजरी अचेत हो गई और मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी। (३) विक्रमराय बैठ कर उसे समझाने लगे "दुहिता क्या जन्म (जीवन) भर मायके में रहने वाली है? (४) दुहिता का निर्वाह ससुराल में होता है मायके में दुहिता को [कोई] कार्य नहीं होता है।" (५) नैनों में आँसू भरे हुए और उदास चित्त से रानी मधुमालती के पास गई।

(६) मधुमालती से रानी बात समझा कर कहने लगी "(७) हे कुमारी, तुम अब उस देश को चलो जहाँ से [लौटकर] कोई नहीं आता है।"

टिप्पणी—(१) साव < सह् < सप्त। बिसमाधा < विस्मित = विषाद-पूरित। (३) (४) धिय < दुहितृ।

[५०१]

रूप मजरी पर्मा राई[१]। मधुमालति क सथ[२] बसाई[३]।
मधुरा[१] दुवौ[२] नन भरि पानी। आई जहाँ[३] कुंवरि[४] औ[५] रानी।
लागी धियन्ह[१] दइ[२] उपदसा। धीय[३] चलिहु तजि कुटुब बिदसा।
तुम्हहि नाह लै तेहि भुइं जाइहि[१]। जहां हुते बहुरि न कोऊ[२] आइहि[३]।
चलिहि[१] नाह लै[२] तुम्ह[३] परदेसा[४]। जहाँ[५] न पाउब[६] केहु[७] सदसा।
कौनि[१] भाँति हम राखब तुम्ह बिछरें घट जोउ[२]।
अब छौ[१] दवस दुइ चारि महं[२] लै[३] गौनिहि तुम्ह[४] पीउ॥

पाठान्तर— मा ए मे उपर्युक्त पाँचवी अर्धाली के चरण परस्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ मा बुलाई, ए राइ। २ मा मा. ए सग। ३ ए बैसाइ।
(२) १ ए मधुरै, ए मधुरे। २ मा दोवै। ३ मा जहीं जाहा। ४ ए कुमर। ५ मा औ।
(३) १ ए धिय को। २ ए दिन। ३ मा मा कहिनी ए कही।
(४) १ मा तुम्ह कह नाह उहा लै जाइहि, ए तोहि नाह तहाँ लै जाइहि। २ ए जह क सदेस न कोउ लै (लुप्त परवर्ती अर्धाली), ए जहां क सदेस न कोई दे। ३ ए आइहि।
(५) १ मा चली। २ मा मा लैइ। ३ मा मा तेहि ए तोहि। ४ ए बिदेसा। ५ मा जिहवा ए जहाँ केर। ६ ए पाइब। ७ मा कवहि मा कबहु ए में यह शब्द नहीं है।
(६) १ मा कवनि। २ ए तुह बिछुरत जे पीउ (लुप्त परवर्ती चरण का तुक)।
(७) १ मा ए यो। २ ए मो। ३ मा लैइ। ४ ए तुह।

अर्थ—(१) रूपमंजरी ने पेमा को बुलाया और उसे मधुमालती के साथ बिठाया। (२) मधुरा [भी] दोनों नेत्रों में आँसू भर कर वहाँ आ गई जहाँ कुमारियाँ और रानी (रूपमंजरी) थीं। (३) वह दुहिताओं को उपदेश देने लगी, "हे दुहिताओ, तुम कुटुंब छोड़कर विदेश जा रही हो। (४) तुम्हें तुम्हारा पति उस भूमि (देश) को ले जाएगा जहाँ से लौटकर [अथवा पुनः] कोई नहीं आएगा। (५) तुम्हें तुम्हारा पति लेकर परदेश चलेगा जहाँ [का] संदेश हम किसी प्रकार न पाएँगी।

(६) तुम्हारे अलग होने पर हम किस प्रकार शरीर में जीव को रख पाएँगी? (७) अब तो दो-चार दिनों में ही तुम्हारा प्रिय (पति) तुम्हें लेकर जाएगा।"

टिप्पणी—(१) राख < राजय् = बुलाना। (३) धीय = दुहितृ। (४) नाह < नाथ = पति

[५०२]

साइं सेव करहु[1] चित लाए[2] । जनि डोलै[3] मन[4] दहिनें बाए[5] ।
महा दुस्ट अति[1] पुरुष क[2] जाती । चित परिखत[3] रहई[4] दिन राती ।
करिहु सेव[1] दिन आसिहु जसें[2] । सगरी रैनि पा[3] चापिहु तसें ।
जौ धरि[1] बांह ओस्नारिहि[2] संगा । आलरि[3] सेज सुख[4] मानिह[5] रंगा ।
औ पिय सउं[1] बहु करिय न मानू[2] । करियइ मान प्रीति अनुमानू[3] ।
जइ[1] धनि अपन कंत सउं[2] मानु कीन्ह[3] अधिकाइ ।
तिन्ह धनि साईं[1] आपना सौतिन्ह दीन्ह[2] बहाइ[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा सेवा (सेव—भा) करेहु ए सेवा करहु। २ मा लाय ए लायें। ३ मा जानि डोलै। ४ ए चित। ५ मा बाय।
(२) १ ए बा। २ मा की ए क। ३ ए परखत। ४ मा रहिहि मा रहिहै ए रहै।
(३) १ ए करेहु सेवा। २ मा जैसी। (<जैसे फारसी लिपि)। ३ मा पाऊ ए पाउ। ४ ए चापहु। ५ मा तैसी। (<तैसे फारसी लिपि) ए तैस।
(४) १ ए धै। २ मा ओस्नारिहि ए उस्नारै। ३ मा आलरि ए आलरि। ४ मा सुख। ए सुख। ५ मा ए मानेहु।
(५) १ मा पिय सौं ए सों पिय। २ मा मा बहु करिय न माना ए आ करौ न माना रा बहु करिए मानू। ३ मा करेहु मान पीउ सिन जिह माना ए करेहु रंग प्रीति अनुमाना मा करिहु मान प्रीति अनुमाना।
(६) १ मा मा जिनी ए जिन्ह। २ रा ए सौं। ३ मा किन्ह मा किन्ह।
(७) १ मा मा तीनी साईं जनु ए तिन्ह सो साईं। २ मा मा सवतिनि दिआ (दिया—मा) ए सौतिनि दीन्ह। ३ मा मा ए बहाइ रा बहाइ (?)।

अर्थ—"(१) तुम स्वामी की सेवा चित लगा कर करना तुम्हारा मन [स्वामी की सेवा से] दाहिने-बायें (अन्य किसी ओर) न विचलित हो। (२) पुरुष की जाति अत्यधिक और महा दुष्ट होती है। उसका चित दिन-रात परखते (देखते) रहना चाहिए। (३) दिन में जिस प्रकार सम्भव हो उसकी सेवा करना और उसी प्रकार सारी रात उसके पैर दबाना। (४) जब वह तुम्हारी बाँह पकड़ कर अपने साथ लेटाएगा, [तब उसके साथ] शय्या में लेटकर रंग (सुख) मानना। (५) और प्रिय (पति) से बहुत मान न करना चाहिए, प्रीति के अनुमान से ही मान करना चाहिए।

(६) जिस स्त्री ने अपने पति से अधिकता के साथ मान किया (७) [समझ लो कि] उस स्त्री ने अपना पति सौतों को भली भांति दे डाला।"

टिप्पणी—(१) साईं<स्वामी। (२) परिख<परि+ईक्ष=परखना देखना। (३) सगर<सकल=सारा। रैनि<रयणी<रजनी=रात्रि। (४) जौ<जउ<यदा=जब। ओस्नार<ओस्नार [दे०]=सुलाना लिटाना। ओलर<आ+लर [दे]=सोना लेटना। (६) धनि<धन्या=स्त्री।

[५०३]

जौ आनिहु अति रिसि मह[1] साइ । बरबस[2] ग[3] सेउब बरियाइ[4] ।
सबा के बर पीउ मनाउब[1] । पिय क सब बहुत सुख पाउब[2] ।
सोइ सुहागिनि दुहु जग माहां[1] । जइ[2] सबा के राखउ[3] नाहां[4] ।
जौ पिय कर मन राखि ना पाई[1] । चित अपन[2] मुख तुम्ह सेउ[*] आई[3] ।
साइ सव जनम सुख सार । साईं सव परसर सार[1] ।
साईं सेवा प कीजिय[1] क अपन जिय[2] हानि ।
साईं सवा आहि जिउ[1] सोइ दुहु जग रानि[2] ॥

पाठान्तर— मा भा मे उपर्युक्त अर्धालियाँ २ ३ ४ मा ३ ४ २ आती हैं।
मा मे उपर्युक्त पाँचवी अर्धाली नहीं है।
(१) १ ए जौ बानहु अतिरस मों। २ मा बरबसि। ३ ए कै। ४ मा सेवहु बरिआई ए सेइब बरिआई।
(२) १ मा अपनाइब मा अपनाइब ए मनाइब। २ मा भा पिय की सेवा (सेव—मा) बहुत फल पाइब (पाइब—मा) ए पीउ क सेव बहुते सुख पाइब रा सेवा पिय कै बहुत सुख पाउब।
(३) १ ए दुइ जग माहा। २ मा भा जिनि ए जो। ३ मा राखी ए राखा। ४ ए नाहा।
(४) १ मा भा उोह (वै—मा) राखा बहु कोमी (बासम—मा) अहही (अहही—मा)। २ मा भा ए अगतै। ३ मा सेहि सौ रहही ए हम सौ कहा मा तुम्ह सेउ रहही।
(५) १ ए मे अर्धाली का पाठ है पीउ क सेवा कियेहु सुख सारे। साईं सेवा पर तर तारैं।
(६) १ मा भा सेवा कीजीअहु ए सेवा कीजिए। २ ए जिउ।
(७) १ मा जिनि जिही ए जो जिउ बँधा भा जिनि सावे। २ मा सो दुहु जग मह रानि ए सो नारी दुइ जग रानि भा सो दूनहु जग रानि।

अर्थ—"(१) और [जब] जानना कि स्वामी अति क्रोध में है तब बरबस जाकर बलपूर्वक उसकी सेवा करना। (२) सेवा के बल से प्रिय (पति) को मनाना प्रिय की सेवा से तुम बहुत सुख पाओगी। (३) वही दोनो जगत् (इहलोक और परलोक) में सुहागिनी [होती] है जिसने सेवा कर नाथ (पति) को प्रसन्न कर लिया है। (४) यदि तुम पति का मन नहीं रख पाईं तो [उसका] चित अपने-आप से और [उसका] मुख तुमसे फिर जाएगा। (५) स्वामी की सेवा [स्त्री को इस] जन्म में सुख सारती (पहुँचाती) है और स्वामी की सेवा परत्र (परलोक) में [उसे] तारती है।
(६) अपने जीव (जीवन) की हानि उठाकर भी स्वामी की सेवा करनी चाहिए; (७) स्वामी की सेवा में जिसका जीव रहता है वही दोनों जगत् (इहलोक तथा परलोक) में रानी [होती] है।"
टिप्पणी—(१) बर < बल। (४) जौ < जउ < यदि। (५) परतर < परत्र = परलोक।

[५०४]

कन्‍ह अपनें कर[1] करबी[2] लाजा । सउबि[3] साइ[4] छाडि सभ[5] काजा ।
सासुहि उतर न दीबी[1] काऊ । मइ[2] दुइ जूनि[3] पखारबि पाऊ ।
हँसि क पलबि[1] सासु कै[2] गारी । पलटि उतर महि[3] दीबी बारी ।
सासु क[1] बोल परिछि[2] सिर लीबी[3] । ऊच बोल नहि उतर दीबी ।
औ[1] सौतिन[2] सेउ[3] करबि मिताई । रहबि जानु एक[4] जननि क[5] जाई[6] ।

ऊच बोल जनि बोलबि[1] रिसि राखबि मन[2] मारि ।
सतत[1] लाज धरबि जिय[2] कुलहि न आव गारि[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा का कै। २ मा करई मा रावब ए करबै। ३ ए सउब। ४ मा सामी। ५ ए मा छाडि (छाड़े—मा) सब।
(२) १ रा ए मा दीजै। २ मा ए मै। ३ मा जुन।
(३) १ मा पलबि ए पलब। २ मा की। ३ ए उलटि उतर ना। ४ मा दउ भारी मा देइब भारी रा दीजिय बारी।
(४) १ मा का। २ ए प्रछि। ३ मा लेब रा लीजै। ४ मा बाजर उतर न देब ए पुन उतर न दीजै।
(५) १ ए औ। २ ए सौतिन्ह। ३ मा सौ ए रा सो। ४ मा रहेहु जनु एक ए रहब एक जनु। ५ मा ए का। ६ मा माई ए माई।
(६) १ रा बोलिहु ए बोलहु। २ मा मा राखबि जिअ ए राखहु मन रा राखिहु मन।
(७) १ ए सतत। २ मा मे यहाँ 'अपने' और है ए जिउ। ३ मा जैसे कुलहु न आरि कुल महि आवै गारि।

अर्थ—"(१) अपने कुल की लज्जा करना और समस्त कार्य छोड़ कर स्वामी की सेवा करना। (२) सास को उत्तर कभी न देना और स्वयं (अपने-आप) दोनों समय (प्रातः-सायं) [उनके] पैर धोना। (३) सास की गाली हँसते-हँसते झेल (टाल) देना, और हे बालिकाओ [गाली के] बदले में कभी [कोई] उत्तर न देना। (४) सास के वचन सिर पर ग्रहण करना और ऊँची आवाज में उसे उत्तर न देना। (५) और सौतिनों से मित्रता करना; [उनके साथ] इस प्रकार रहना मानो एक ही जननी से जन्मी हो।

(६) ऊँची आवाज में न बोलना और क्रोध को मन में मारकर (दमित करके) रखना। (७) जी में सदैव लज्जा रखना, [जिससे] कुल को गाली न आवे (पड़े)।"

टिप्पणी—(१) साइं < स्वामी। (२) सास < श्वश्रू = पति की माता। (३) पल < पल्ल < प्र + ईर्ष् = फलना ठमना टालना। (४) परिछ < परीक्ष < परि + ईक्ष = ग्रहण करना। (५) सौत < सपत्नी। जाई < जात = उत्पन्न।

[५०५]

सुना सखिन्ह[1] मधुमालति चली । सुनतहि मोह[2] अगिनि उर बली[3] ।
जो जसिहि[1] सो तसिहि धाई[2] । रोइ सखी[3] सभ[4] अंकम[5] लाई ।
रोवहिं[1] सभ[2] गरें[3] लागि सहेली[4] । सवरि सवरि सघ[5] साथ जो खेली[6] ।
कहहिं सुक्ख बालें जो[1] माना । यह सुख एहि दुख रूप बिसाना[2] ।
सुख अम्रित सम[1] खेलि जो पिया । ओहि सुख यह दुख कैसें जिया[2] ।
तुम्ह[1] हम माना एक सम बालेपन कर[3] रंग ।
अब कसें जिउ राखब तुम्ह गौनहु पिय संघ[4] ।।[1]

पाठान्तर—(१) १ मा ए सखी। २ मा सुनतेहु मोह ए सुनते मया। ३ मा अगिन तन बली रा आगि उर बली ए मोह जिउ बरी।

(२) १ मा जो जैसे हुती ए मा जो जैसहिं। २ मा सो तैसे आई, ए मा सो (हुत—मा) तैसहिं आई। ३ मा कुंवरि, ए सखी भा रोइ। ४ मा सबहिं। ५ मा मा कंठ।

(३) १ ए रोवैं। २ भा सब। ३ मा मा गल ए गले। ४ ए लाइ सहेली। ५ मा मा सुख। ५ ए खेली।

(४) १ मा मा कहिन्ह जो सुख बाले संग (बाळपन—मा) रा कहिहिं कि सुक्ख बाले जो ए काहु सुख बाले संग। २ मा मा ओहि सुख में दुख रूप बिसराना (भसाना—मा) ए ओहि सुख एहु दुख दुखी बिसामा रा यह सुख एहि दुख कैसें बाना।

(५) १ मा सम ए रस। २ मा ओम्ह ए ओहु भा बैं। ३ मा मा बाँधे मेद (मए—मा) सुख पीआ रा ए यह दुख कैसे जिआ।

(६) १ ए तुम। २ मा मा मेक सम सम (सब—मा) माने ए एक संग माना। ३ मा भा बालपन के रा बालेपन को ए बालापन कर।

(७) १ मा अब कैसे कै जीउ धरबे तुम्ह पथनखी ही पिय संग ए अब कैसे जिउ राखब तुह गौनहु पिय संग भा अब कैसें पट जिउ धरब तुम्ह गौनति पिय संग रा हम कैसें जिय राखब तुम्ह गौनहु पिय संग।

अर्थ—(१) सखियों ने सुना कि मधुमालती जा रही है। यह सुनते ही उनके हृदयों में मोह की अग्नि जल उठी। (२) जो जैसी थीं वे वैसी ही दौड़ पड़ीं और रो-रोकर समस्त सखियों ने उसका आलिंगन किया। (३) समस्त सखियाँ उसके गले लगकर और उसके संग-साथ जो उन्होंने खेल रचे थे उनका स्मरण कर-कर रोने लगीं। (४) वे कहने लगीं "जो सुख हमने बचपन में माना (अनुभव किया) था वही सुख अब इस दुःख के रूप में हम पर आ बिसाया है। (५) जो सुख का अमृत हमने [तुम्हारे साथ] खेल कर पिया था उस सुख पर इस दुःख से हम कैसे जीवित रहेंगी ?

(६) तुमने और हमने एक साथ ही बालपन का रंग (सुख) माना था (७) [अतः] अब हम कैसे अपने प्राण रखेंगी जब तुम प्रिय (पति) के साथ जा रही हो ?"

टिप्पणी—(३) सवर<समर<स्मृ=स्मरण करना। (४) बिलाय<विलाय=विलीन हो जाना।

[५०६]

जौं बिछुरन दुख जनतिउँ[1] एहा । कस करतिउँ बालपन[2] नेहा ।
अब तुम्ह करहु[1] बिदेस पयाना । हम कसें[2] घट धरब परानां ।
जौं हम तुम्ह नहिं होति[1] चिन्हारी । यह[2] दुख आगें[3] न आवत भारी ।
अब तुम्ह नाह तहाँ[1] रु जाइहि । जहँ[2] न मरम[3] न कोउ रु आइहि ।
समुझि समुझि सुख[1] साथ जो खेला[2] । अब बिछुरन दुख[3] कठिन[4] दुहेला[5] ।
तुम्ह[1] बिदेस कह गोनब[2] हम दहँ[3] जियत[4] रहाहि ।
पेम रुआवन पापि जिउ[1] जो निसरत[2] नाहि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा जानिति। २ मा करती बालपन ए करतेउ बालापन।
(२) १ ए तुम करो। २ त कैसे।
(३) १ ए न होत। २ मा इहइ ए एत। ३ मा आगु त आग।
(४) १ ए ताहि नाह तहँवा। २ रा जहँ का मा जन्म त तहाँ न। ३ मा मरेमा। ४ त न कोई नान्हि।
(५) १ मा सुख त मेंय। २ मा जा गमी त अ गमी। ३ त में यह शब्द नहीं है। ४ मा कठन (<कठिन : फारसी लिपि)। ५ मा त दुहेली।
(६) १ मा मा गवनहु। २ ए तुम्ह। ३ मा मानव त अब। ४ त दहौं।
(७) १ त पापी जिव रा पापि जिय। २ त जा निसरत मा जा निसरन ए जा अब निसरन।

अर्थ—"(१) यदि हम इस प्रकार का वियोग का दुःख [होगा] जानतीं तो बचपन में क्यों स्नेह करतीं ? (२) अब तुम विदेश को प्रयाण कर रही हो तो हम अपने शरीर में प्राण किस प्रकार रखेंगी ? (३) यदि हममें-तुममें परिचय न [हुआ] होता, तो [अब] यह भारी [वियोग-] दुःख [हमारे] आगे न आता। (४) अब तुम्हें तुम्हारा पति वहाँ ले जाएगा जहाँ का भेदी कोई न आएगा। (५) हमने जो संग-साथ खेला था उसे समझ-समझकर अब वियोग-दुःख कठिन और दुःखपूर्ण [हो रहा] है।

(६) तुम विदेश को जाओगी और [यह देखते हुए भी] हम यहीं जीवित रह रही हैं। (७) हमारा जीव प्रेम को लज्जित करने वाला और पापी है जो [शरीर से] निकलता नहीं है।"

टिप्पणी—(१) नेह<स्नेह। (२) पयान<प्रयाण। (४) नाह<नाथ=स्वामी, पति। (७) पेम<प्रेम।

[५०७]

जौं जोबन महिं उतरत भगा[1] । मन रहत बालपन गगा[2] ।

जउ सतत[1] विधि राखत बाला[2] । सकति आनि सइ[3] जोबन घाला[4] ।
जौ र रहत जोबन तन गोवा । हम तुम्ह[1] होत न जनम[2] बिछोवा ।
आजु सखी तुम्ह गौन सुहायें[1] । कान्हि फरि महं[2] दिन हम आगें[3] ।
जोबन जोग जौ मिलै पियारा[1] । नातर[2] जोबन जनु[3] असारा ।
जौ[1] बिधि जोबन बदलि[2] कै बहुरि[3] बालपन[4] देइ ।
त[1] जोबन दै बाला[2] बाल अवस्था लेइ[3] ॥

पाठान्तर— ए. में प्रथम अर्धाली के स्थान पर पूर्ववर्ती छंद की ५वीं दुहराई हुई है इस छंद की प्रथम उसमें आगे के छंद से आती है जिसे प्रक्षिप्त मान कर परिशिष्ट में दिया गया है। नीचे प्रथम अर्धाली का ए. का पाठांतर उसी स्थान से दिया जा रहा है। पुनः ए. में उपर्युक्त अर्धालियों ३ ४ ५ का क्रम है ५, ३ ४।

(१) १ मा. मा. महि उपजत भया ए. मा. उपजत रया। २ मा. मा. बालपन रखा ए. बालापन भया।

(२) १ ए. सतति। २ ए. बारे, मा. बाले। ३ मा. मा. आइ दम्ह ए. आनि तिन्ह। ४ ए. भाले मा. माले।

(३) १ मा. जो रे रहत न जोबन ए. जो न रहत जोबन तन। २ ए. तुम्ह। ३ मा. ए. जैस।

(४) १ मा. ए. सभागे। २, मा. कालि बहुरि येह, ए. मा. कालिह बहुरि एहि। ३ ए. नयिक आपे।

(५) १ मा. मिलै जौ पारा ए. मिलै त पियारा। २ मा. ए. नातरि। ३ ए. ए. मा. जनम।

(६) १ ए. जो। २ मा. पलटि। ३ मा. मा. पुनि ए. पुनि। ४ मा. ए. बालापन मा. बालप्पन।

(७) १ मा. सब। २ ए. देइ बाला मा. प्रगह लेई कै। ३ मा. तौ हम सम रहाइ।

अर्थ— (१) यदि यौवन हमारे अंगों में न उमड़ता, तो हमारा यह बचपन का साथ सदा बना रहता। (२) इससे अच्छा होता कि विधाता हमें सदैव बालिकाएँ ही रखता [किन्तु] बलपूर्वक लाकर उसने [हमारे शरीर में] यौवन डाल दिया। (३) यदि हमारे शरीर में यौवन गोपित रहता तो हमारा-तुम्हारा जन्म भर विछोह न होता। (४) हे सखी आज सौभाग्य के साथ तुम्हारा जाना है कल फिर यही दिन हमारे आगे [आने वाला] है। (५) यौवन तभी योग्य (सार्थक) है जब प्रिय मिले, नहीं तो यौवन और जन्म (जीवन) सारहीन है।

(६) यदि विधाता यौवन बदल कर पुनः बचपन दे, तो बाला तो यौवन देकर [उसके बदले में] बाल्यावस्था ले (स्वीकार करे)।"

टिप्पणी—(१) उकस < उत्कस < उत् + कृष् = उमड़ना। (२) संतत < सतत = निरंतर। (३) गोवा < गोपित = छिपाया हुआ। (५) पियार < प्रियालु = प्यारा। जंम < जन्म = जीवन। (७) सै < शत = सौ।

[५०८]

मिलहु¹ सखी तुम्ह² सा गल³ लागी । उपजी मोह मया उर आगी ।
कालिह¹ बहुरि पिय घरिह² बाहाँ³ । चलिहि⁴ हम अपुनें म⁵ नाहाँ⁶ ।
भोग कुटुम तजि परभुमि¹ जाइब । फुनि बिधि मगइहि आनि² मगाइब³ ।
अंकम¹ दहु लाइ गिय² बाहीं । जियत मिलन फुनि³ हो कि⁴ नाहीं ।
मधुमालति कर सुनि बिछोवा । ऊंचे सबद सखिन्ह¹ सब² रोवा ।

बहुत रोवहि पाय¹ परि¹ औ बहुतें गिय² लागि ।
कोइ रोव पुहुमि परि¹ मया मोह कै² आगि³ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मिलिय। २ मा भा मातु ग प यह पाठ नहीं है। ३ मा मार गल मा माहि मन ए माहि गीव।

(२) १ मा ए कालि। २ मा भा सखीय परि ए सखी पिउ परि है। ३ ए बाँहा। ४ मा चलहि। ५ मा मीन। ६ ए नाहा।

(३) १ मा प्रभुई ए परभुइ। २ रा पुनि बिधि मरन्हि आनि मा फनि बिधि बहुरि मिरैं तो भा फनि औ बिधि मरन्हि तब। ३ ए मिमान्ह मा मान्ह।

(४) १ मा भा अंकम। २ मा गर ए गर भा गल। ३ मा फन रा ए पुनि। ४ ए होइहै।

(५) १ रा सखिन। २ मा मुनि।

(६) १ मा भा कोई सखि रोवै पायँ परि ए बहुतौ रोवहि गीव परि। २ मा भा का रोवै गल (गिउ—भा) ए औ बहुरौ गीउ।

(७) १ मा बहुती परी पुहुमि ग कोई रोवै भुम्मि परि। २ मा माया मोहहि ए मया मोह उर भा मया मोह कै। ३ ए आगि।

अर्थ—(१) [मधुमालती ने कहा,] हे सखियो तुम मेरे गले लग कर मिलो मेरे हृदय में [तुम्हारे प्रति] मोह-माया की अग्नि उत्पन्न हो गई है। (२) कल पुन: प्रिय हमारी बाँहें पकड़ेगा, और वह नाथ (पति) अपने देश ले चलेगा। (३) भोग (प्रजा-जन) और कुटुंबियों को छोड़कर मैं पर भूमि (परदेश) जाऊँगी और पुन: अब विधाता लाकर मिलाएगा तब हम मिलेंगी। (४) गले में बाँह लगा (डाल) कर मुझ अंकवार दो [क्योंकि] पुन: जीवित रहते मिलना हो कि न हो। (५) मधुमालती का [यह] बिछोह [-सूचन] देख कर ऊँचे स्वर से [उसकी] समस्त सखियाँ रो पड़ीं।

(६) कितनी [उसके] पैरों में पड़कर रोने लगीं कितनी [उसके] गले से लग कर (७) [तथा] कोई पृथ्वी पर पड़ी-पड़ी माया-मोह की ज्वाला से [तप्त हुई] रो रही थी।

टिप्पणी—(३) भाग < भाग। (६) गिय ~ गिव < ग्रीवा। (७) पुहुमि ~ पृथ्वी।

[५०९]

भोर होत सविता[1] परगासा । भा अदोर किछु[2] राज अवासा ।
पूंछहिं[1] सभ[2] ऊभि कै बाहां[3] । का अदोर हो राउर[4] माहां ।
जिन्ह जानां[1] तिन्ह कहा[2] बुझाई । मधुमालति[3] ससुर कह[4] जाई ।
सुनि अदोर राउर मह[1] परा । आइ लोग सभ राउर भरा[2] ।
पर आपन जहवां लहिं[1] आहा[2] । राज गिरिह आए सुनि चाहा[3] ।
　　चलत[1] गौन[2] मधुमालति परी महारस रार[3] ।
　　राज कुवरि तव समद रोइ रोइ[1] सभ[2] परिवार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा सपता। २ मा कुछ।
　(२) १ ए पूछहिं। २ मा ए सबै। ३ ए बाहा। ४ मा कैस अंदोर होत जर रा का अंदोर होइ राउर।
　(३) १ मा जो जानत आहा तै ए जइ जान तइ मा जो जानत हुत। २ मा कहेसि। ३ मा राजकुवरि। ४ ए कत।
　(४) १ मा सुनत अदोर ए सुनत अंदोर राउर भो। २ मा कुमारा।
　(५) १ ए जहां लगु। २ रा ए अहा। ३ मा राज ग्रीही सुनी आई चाहा ए राजगिह सुनि आवे तहां रा आए सुनि चहा।
　(६) १ मा ए चलत। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए महा असरार।
　(७) १ ए राजकुवर (<कुवरि : फारसी लिपि) तब रोइ कै समदा रा राज कुवर सभ समदै रोइ रोइ। २ मा ए सब।

अर्थ—(१) प्रातःकाल में सूर्य का प्रकाश होते ही राजा के आवास (निवास-स्थान) में कुछ शोर हुआ। (२) सभी बाँहें उठाकर पूछ रहे थे "राउल (राजभवन) में क्या (क्यों) शोर हो रहा है?" (३) जो जानते थे उन्होंने समझा कर कहा "मधुमालती ससुराल को जा रही है।" (४) यह सुनकर कि राउल (राजभवन) में शोर पड़ (हो) रहा है समस्त लोक (प्रजा) आकर राउल में भर गए। (५) पराए और अपने जहाँ तक भी लोग थे यह समाचार सुनकर राजभवन में आए।

(६) मधुमालती के चलने के लिए चलते ही महारस [की जन-मंडली] में चिल्लाहट मच गई। (७) राजकुमारी (मधुमालती) तब रो-रोकर समस्त परिवार से विदा होने लगी।

टिप्पणी—(२) ऊभ < उब्भ < ऊर्ध्व् = उठाना। (२) (४) राउर < राउल < राजकुल = राजभवन। (६) रार < राडि < राटि = चिल्लाहट।

[५१०]

समद सभ[1] परिजन परिवारा । समद फिरि फिरि पौरि कवारा[2] ।
समद पालंग सेज तुराई[1] । समद राज मंन्दिल कठ[3] लाई ।

समद सम पाटन[1] पटसारा । समद राइ रोइ पौरि पगारा[2] ।
निसि सोव जह राजकुमारी । समद पायन[1] परि चित्रसारी ।
निरस जीउ थाकउ मुख[1] बोला । ग समद गिय[2] लाइ[3] हिंडोला ।
सभ[1] घर बार समदि क तो समद[2] परिवार ।
फुनि[1] समद जन परिजन जस[2] सिधु[3] जग बयहार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मा सब। २ मा सम घर बारा ए दरबारा।
(२) १ मा पलग ज जासी साई। २ मा मंदिर। ३ मा मा गिम ए मीव।
(३) १ ग पट्टन (?) मा ए पाग्व। २ मा ए राइ गोइ परिवारा (तुल० प्रथम अर्धाली तथा दोहा) रा हुरिग पार गयमारा (?)।
(४) १ मा पाम ए पाँव।
(५) १ मा गवत जो पाथउ मुख मा निगमन जी थाउ मधु ए निगरस जीउ थके मधु। २ मा मैं समर्ह उर ए तौ समदै पाव रा समदै गिय गार। ३ मा लागि।
(६) १ मा ए सब। २ मा फनि समदा मा फनि समदउ।
(७) १ ए सब मा तौ रा पुनि। २ ए जा। ३ मा सुख।

अर्थ—(१) वह भूत्यों और परिवार व लोगों से विदा हो रही है [अब] वह बार-बार [अथवा रोइ-रोइकर] प्रतोली (मुख्य द्वार) के किवाड़ों से विदा हो रही है (२) [अब] वह पर्यंक सेज और तोसक से विदा हो रही है [अब] वह राजभवन से गले लगकर विदा हो रही है (३) [अब] वह समस्त रेशमी वस्त्रालयों से विदा हो रही है [अब] वह रो-रोकर प्रतोली (मुख्य द्वार) और प्राकार (परकोटे) से विदा हो रही है। (४) जहाँ पर वह राजकन्या रात्रि में सोती रही है [अब] वह उस चित्रसारी से [उसके] पैरों पड़कर विदा हो रही है। (५) उसका जीव नीरस (निरानंद) हो रहा है और मुख से बोल थक गया है; [अब] वह हिंडोले से आकर गले लग कर विदा हो रही है।

(६) समस्त घर-बार से विदा होकर तब वह परिवार से विदा हो रही है (७) और तदनन्तर वह सेवकों भृत्यों से विदा हो रही है जैसा कि जगत् का व्यवहार है।

टिप्पणी—(१) (१) पौरि < प्रतोली = मुख्य द्वार। ( ) पायन < पाँव = पाँव। (१) पगार < प्राकार = परकोटा।

[५११]

मधुमालति छाड़ा घर बार[1] । छाड़ा सभ[2] परिजन परिवार[3] ।
छाड़ी[1] पुरुषनि भरी नगरी[2] । छाड़ा सभ सगे[3] संगनिवारा[4]
त्रिहि सप[1] सना[2] मानी[3] समा । छाड़ि[4] न सभ बार[1] सगरी ।

छाड़ा मया मोह जेत[1] भाव । अति मरोह घर छाड़ि[2] न भाव[3] ।
क गियान अपनें जिय[1] बारा । तब उठि चली छाडि[2] घर बारा[3] ।
छाड़ा सम[1] परिवार आपना[2] जन परिजन सम[3] कोउ[4] ।[5]
छाड़ी[1] लंक भमीछन जो भाव सो होउ[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा बारा। २ ए सब। ३ रा परिवारा।
(२) १ ए छांडी। २ मा ए पुतरी मा गुडियाँ। ३ ए भरी पेटारी। ४ रा ते ए मा सब। ५ मा भा ए संग। ६ ए खलनिहारी।
(३) १ रा जेहि संग मा जिन्ह संग ए जेहि सब। २ ए सतति। ३ मा केली। ४ ए छाडी। ५ मा भा मानती ए मानै। ६ मा भा ए सब बाल (बार—मा) रा बाल सम। ७ ए मा सहेली।
(४) १ मा छाडत माया मोह मन ए छांडा मया मोह मन। २ ए छाडि। ३ ए भावै (तुल पूर्ववर्ती चरण का तुक)।
(५) १ मा ए चित मा मन। २ ए छाँडि। ३ मा भा ए परिवारा।
(६) १ ए सब। २ मा अपना ए आपन। ३ ए सब। ४ रा ए कोइ। ५ भा छाडा नगर महारस जन परिजन सब केउ।
(७) १ ए छाडा। २ मा भमीपनै ए मभीछन। ३ रा ए होइ भा केउ।

अर्थ—(१) मधुमालती ने घर-बार छोड़ा और समस्त भृत्यादि तथा परिवार को छोड़ा। (२) उसने पुतलियाँ (गुड़ियो) से भरी अपनी पेटारियाँ छोड़ दीं और समस्त सब उसने बालियों को छोड़ दिया। (३) जिनके साथ उसने सर्वेव केलि करती थी उन बाल-सहेलियों को उसने छोड़ दिया। (४) उसे जितना भी माया-मोह आ रहा था वह सब छोड़ दिया, [फिर भी] अत्यंत मरोह (ममता) के कारण घर छोड़ा नहीं जा रहा था। (५) [तदनंतर] अपने जी में ज्ञान करके बाला उस घर-बार को भी छोड़ कर उठ चली।

(६) उसने अपना समस्त परिवार छोड़ दिया दास-दासियों तथा भृत्यों—सब किसी को छोड़ दिया। (७) विभीषण ने लंका छोड़ दी चाहे [भले ही] जो हो सो हो।

टिप्पणी—(१) (५) बार < बार < द्वार। (२) पुतरी < पुतली < पुत्रिका = पुतली। (२) पेटारी < पटा = मञ्जूषा पटी। (३) सतत < सतत = निरंतर। (७) भमीछन < विभीषण।

[४१२]

विनवहिं[1] दुवौ कुँवर सउं[2] रानीं[3] । भसहु मोर लै प्रान परानी ।
विनती करहिं[1] कोलि कै[2] भामी । य दूनौं तुम्हरे[3] जिअ[4] लागी ।
इन्ह दुहु[1] कर हितु उहाँ[2] म[3] कोऊ । तुम्हर[4] जीम लागि य[5] दोऊ[6] ।
जन्म न होइ माय[1] बाप क हाथें । भूजहि लिखा[2] दइय जो[3] माथें[4] ।
मता[1] पिता कर[2] एतन आहू[3] । सुत दुहिता प्रतिपारि बिआहू[4] ।

तहि[1] पाछें[2] जो विधि लिखा छठी कि राति लिलार।
सो भूंजिहि ग[1] आपन[2] भल मंद निरबाहिहि जमु बार[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ग बिनवै। २ ए रा मौं। ३ मा भा रा ए रानी।
(२) १ रा करी। २ मा कै मा की ए का। ३ मा एइ दुओ तारे ए येह दूनौ ताहरे। ४ ए जिव।
(३) १ ग दुनौ। २ मा उहीं। ३ ए म यह शब्द नहीं है। ४ मा भा तुम्ह दुहुं। ५ रा म यह शब्द नहीं है। ६ ग तुम जिउ लागि बहै एह दाऊ।
(४) १ मा महहीं माइ भा माहि माइ। २ मा भुगिहि लिग्गी ग भूजहि लिग्गा। ३ मा दीन्ह। ४ ए माथ।
(५) १ रा मा ग माता। २ रा कह। ३ ग एतनै अहै मा एतना आहै। ४ मा प्रति की बीआहै रा प्रतिपालि निबाहै ग प्रतिपालन अन्त (तुल पूर्ववर्ती चरण का तुक)।
(६) १ मा ताहि। २ ग पाछ। ३ रा पूरब अव।
(७) १ मा म भुगैती ग मा भुंजहि ने रा मा भुंजिहि पै। ग भरना। ३ मा भला मंद नीरबाह है जमुवार ग भलमंद सिर जमहार।

अर्थ—(१) दोनों कुमारों से रानियाँ विनय करने लगीं 'तुम हमारे प्राण-प्राणिया को ले आ पड़े हो। (२) हम तुम से अपनी कुक्षि की आप (ममता) के कारण विनती कर रही हैं कि ये दोनों तुम्हारे (तुम दोनों के) जीव (जीवन) के लिए हैं; (३) किन्तु इन दोनों का हित करने वाला यहाँ कोई नहीं है तुम्हारे जीव (जीवन) के लिए ही ये दोनों हैं। (४) किसी का कर्म उसके माँ-बाप के हाथ (वश) में नहीं होता (रहता) है; [लोग] यह जानते हैं जो दैव उनके मस्तकों में लिख रखता है। (५) माता-पिता का [वश] इतना ही है कि पुत्र तथा कन्या का लालन-पोषण कर उनका विवाह कर दें।

(६) उसके बाद [तो] जो-कुछ विधाता ने [प्रत्येक के भाग्य में] उसकी छठी की रात्रि को लिख दिया है (७) वह उसे ही जाकर भोगना और अपना भला-बुरा (शुभाशुभ) यम के द्वार पर निभाना (पाएगा)।

टिप्पणी—(२) कानि < कुक्षि = उदर पद। (४) (७) भुंज < भुंज < भज = भोग करना। (७) बार ~ बार < द्वार।

[५१३]

कुंवरि[1] जननि पौं[2] लागी धाई। मानो ससि उगा निय ...[3]।
कानि[1] लागि महि ता[2] म बिछाहा। काहि पाइ[3] मानो मन मोपा।
अनि क[1] कुंवरि लागि[2] लिये[3] रही। छाडि म मर नम क[5] ...[6]।
जननि ... महि ताप[1] गार[2]। अति ... [3] परम ...।
जननि अगोग ...[1] मन जानी। ... मोराग[1] गज ... मानो।

जौ लहि[1] धरती गंग[2] जल औ ससि सूरज तार[3] ।
तौ लहि[1] राज सोहाग तुव[2] रासौ सिरजनि हार[3] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कुंअर (<कुंअरि फारसी लिपि)। २ मा पाइ। ३ मा मैं उठि सीस लगाई मा पै उठाइ गिय लाई ए सीस उठाइ कै लाई।

(२) १ मा कोखि की ए कोख की। २ ए मामी सहित। ३ मा भा ढाड़ (ढाड़—मा) बाहि, ए ढाढ़ि बाहि रा मारि ढाड़।

(३) १ ए अस कहि। २ मा लिय लाए, रा कुंअरि लागि मा धाइ लाइ, ए धौ लागि। ३ ए पीव। ४ ए छाड़ि। ५ ए माह की। ६ रा रही।

(४) १ ए नहि छाँड़ै। २ रा ए मा बारी। ३ रा देइ मिली मा देइ दइ। ४ ए अकम सारी रा अंकवारी। ५ मा अधिक देइ गहि गहि अंकवारी।

(५) १ मा ए दीन्ह। २ मा मानी। ३ मा सुहागिन। ४ मा बनी।

(६) १ मा ए लगि। २ मा गगन ए धगा। ३ रा सूर अकास ए सूर अपार।

(७) १ ए लगि। २ मा तुम्हारा मा तुम्ह। ३ रा रासै बिधना आप मा रापी सीरीजन हार।

अर्थ—(१) कुमारी दौड़ कर जननी के पैरों में लगी (पड़ी) [तो] रानी ने उसे पकड़ कर उठा लिया और गले से लगा लिया। (२) कुक्षि (संतान) की माया (ममता) से बिछोह सहा नहीं गया तब रानी धाड़ लगा (मार) कर रोने लगी। (३) कुमारी [भी] उसके गले ऐसी लग रही कि प्रेमाविष्ट होने के कारण छोड़ न सकी। (४) वह जननी का कंठ छोड़ नहीं सक रही थी और अधिक ही [आलिंगन] देती हुई वह [उसका] आलिंगन कर रही थी। (५) जननी ने मन में [उसकी ममता] जानकर उसे आशीर्वाद दिया 'सदैव तुम्हारा सौभाग्य रहे और तुम राजगृह में रानी [बनी] रहो।

(६) जब तक धरती पर गंगा का जल है और [आकाश में] चंद्रमा सूर्य तथा तारागण हैं, (७) तब तक सृष्टिकर्ता तुम्हारा राज्य-सौभाग्य रक्खे।"

टिप्पणी—(१) (३) गिय<गिव<ग्रीवा। (२) कोखि<कुक्षि=उदर। (५) (७) सोहाग<सौभाग्य। (६) तार<तारक=नक्षत्र।

[५१४]

पहुरि पिता पौ[1] लागी बारी[2] । पितैं[3] हुत[4] सुतं[5] अकम सारी[6] ।
राजा बनु नहि रही[1] पनारी[2] । कह बिधि मन्त बाग पिय[4] ओसारी[3] ।
औ म[1] होत दुहिता अवतारा[2] ।[3] कोउ[4] न सहत एत। दुख भारा[5] ।
पर[1] महा जनि होहु निरासा । पर मुई न्हम[2] कीन्ह पिय[3] पासा ।
रहिहि मात[1] जन परिजन मोरा । गम मसर स अहहि[2] तोरा ।

पिता बर नहि छाड़ कमहु[1] राजकुमारि[2] ।
जौ जौ[1] लाग छोड़ावहि[2] तौ तौ गहि गहि दइ अकवारि ॥

पाठान्तर—(१) १ ग पम। २ ग बारा। ३ मा मा गाइ ग गाय। ४ ग हेतु।
५ मा मे रा भा ग नी। ६ ए मारा।

(२) १ मा रहै ग रहा। २ ए पमारा। ३ मा काह बिधि जग धी औतारी
मा कहुँ कि जग धिय कत औतारी रा काहे कइ बिधि दुहिता औतारी ग
निगरी बिकट बौस की धारा।

(३) १ मा नहीं। २ मा औतारी। ३ ए कहुँ बिधि कत जग धी औतारा
(तुम द्वितीय अर्द्धाली का दूसरा चरण)। ४ मा भो ए रा"। ५
मा भारी।

(४) १ ए राम। २ मा कत कीन्हा ग कैम दीन्ह। ३ ग पुत्र।

(५) १ भा रहिय जात ए रहिहहि जात। २ ग पहुँह मा भा आइहि ग लैहै।

(६) १ ए नहिं छाड़ै कैगहु। २ भा कुवारि।

(७) १ मा मा ए जौ जौ। २ मा छड़ावै ग छाड़ावै मा छड़ावहि। ३ ग
गहै मा गहि गहि द ग तौ तौ गहि दे।

अर्थ—(१) तदनंतर बाला पिता के पैरों में लगी और पिता ने प्रेम से उसे छाती से लगाया। (२) राजा के नैत्रों में [आसुओं की] पनाली नहीं रह (रुक) सकी उसने कहा, "विधाता ने जगत् में दुहिता को क्यों जन्म दिया ? (३) यदि दुहिता का जन्म न होता तो कोई इतना दुख भार न सहन करता। (४) राजा ने कहा, "निराश न हो बरभूमि में [ही] बस ने दुहिता का निवास [निर्मित] किया है। (५) मेरे सेवक और भृत्य [वहाँ] जाते रहेंगे और वे तुम्हारा क्षेम-कुशल [-समाचार] ले आयेंगे।"

(६) राजकुमारी किसी प्रकार भी पिता का गला नहीं छोड़ रही थी (७) जब जब लोग उसे छुड़ाते थे तब तब वह उसे पकड़ पकड़ कर अँकवार देती थी।

टिप्पणी—(१) बारी < बालिका। (२) पनारी < प्रणाली = जल प्रणाली। (३) (४) धिय < दुहित = कन्या। (५) गम < शम। (७) जौ < जउ < यदा = जब। तौ < तउ < तदा = तब। अकवारि < अकवारी = आलिंगन।

[४१५]

पुनि कुंवरि कर[1] कनक सिंघासा। नगर[2] लाग नगर कर[3] रासा।
रोव नगर लोगो जानी। धार कइ नाद[1] अनिवाना।
नगर क[1] आउ बाहि जन लागी। बिनु विउ[2] नगर नगर गम[3] बानी।
कवरि कनक सभ समना[1] जगें[2]। पम गम[3] गमना पुनि नगें।
रोव ठाइ सभ[1] परिवारा। विउ[1] न पम्पा गाति का पारा।

रोवै कुटुंब लोग सब परिजन काहुक किछु न बसाइ[1] ।
कत[1] चलाई सो धनि[2] कौनु[3] सक बिलमाइ[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कै। २ ए मा सगरो। ३ ए लोग नगर कै मा नगर महारस।
(२) १ मा बारा बुढा करहिं रा बार बूढ रोवै मा बार बूढ मेवा (बिहुला ?)
(३) १ रा का। २ ए कै कीन्हा। ३ रा बिन। ४ मा नगर महारस मा जानु देस ए कया सून। ४ ए सब।
(४) १ रा सबवे। २ ए पैसे। ३ ए सब। ४ रा ए पुनि। ५ ए तैसे।
(५) १ ए सबै। २ मा प्रीउ ए पीउ।
(६) १ मा रा काहू का कुछु न बसाई, ए परजा पौमि सबा^।
(७) १ रा कहहिं। २ मा मा कत चला लै आपनी ए कत चला पिइ अपने सै। ३ ए कोइ न सकै। ४ मा बिलमाइ।

अर्थ—(१) कुमारी का कुटुंब से अलग होना देखकर नगर की समस्त प्रजा रोई। (२) नगर की छत्तीसी जातियाँ रो रही थीं; बालक, वृद्ध और सुहागिनी स्त्रियाँ रो रही थीं। (३) मानो नगर [भर] का जीव [शरीर से] निकाल लिया गया था और समस्त देश और नगर को जीव रहित कर दिया गया था। (४) कुमारी (मधुमालती) जिस प्रकार समस्त कुटुंब से बिदा हुई उसी प्रकार तदनंतर प्रेमा भी सबसे बिदा हुई। (५) समस्त परिवार खड़ा रो रहा था [किन्तु] जब [कन्या को उसका] प्रिय [पति] ले चलता है, तो [उसे] रख (रोक) कौन सकता है?

(६) कुटुंब प्रजा सेवक भृत्य सभी रो रहे थे किसी का कुछ भी बस नहीं चल रहा था। (७) जिस स्त्री को उसके पति ने प्रस्थान करा दिया उसे कौन रोक सकता है?

टिप्पणी—(१) सगर < सकल। (१) (६) लोग < लोक = प्रजाजन।

[५१६]

पुनि ग कुंवरि जो राज[1] सभागी। दौरि रोइ मधुरा पां[2] लागी।
कहसि समधु मोहिं मा[1] गरु[2] लाई। न परेसिनि[3] आजु पराई।
तोहिं मो सउ[1] मोहिं परम[2] निहोरा। त प्रतिपार[2] कीन्ह सब[3] मोरा।
छाड़िउ[1] बाप भाइ घर बारा। आजु गोन परदेस[2] हमारा।
मधुरें अस गहभरि[1] क रोवा। नन नीर सब पीर निचोवा[2]।
दुखी कुंवरि सब कटुंब समदि कै चढ़ा[1] सुखासन जाइ[2]।
छाड़िन्हि[1] सब[2] परिवार आपना[3] बहुरि न देखिन्हि[4] आइ[5] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पुनि गै राजकुंवर रा पुनि गै कुंवरि जो राज मा पुनि गै राजकुंवरि, ए पुनि गी कुंवरि ['जो' मा ए दोनों में नहीं है] राज। २ ए पांव।
(२) १ मा कही मो समम मा मारि। २ मा हिआ ए जीव मा मिर्य। ३ मा मैं परदेसनि ए मैं परदेसी रा भइ परदेसी।

(३) १ मा भा ए कोहि मामी (मामीं—भा माम—ए) माहि (माहि—ग) जनम रा मातहि मा माहि जरम। २ रा ग प्रतिपाल। ३ ए भा मब।

(४) १ मा छाइउ ए छाडा। २ मा परदेसि।

(५) १ मा आमु गहीबरि ग भा मम गहबरि। २ मा मम पीर (< पीर फारसी लिपि) लिचाका भा मब पीर निचाका ए मम मीर म पारा।

(६) १ मा वही (< बनी) ग बनी। २ ग माग।

(७) १ ग छाडन्हि मा छाडि ग छाडा। २ ए मब मा मई। ३ ए अपना। ४ मा देपन्हि मा दरस ए देखी। ५ ए पार।

अर्थ—(१) फिर कुमारी (मधुमालती) जो [सब] राज्य और सुहाग वाली थी, गई और दौड़कर तथा रोकर मधुरा के पैरों में लग गई। (२) उसने कहा "हे माता मुझ गले लगाकर विदा करो मैं आज परदेस-निवासिनी और पराई हूँ। (३) उस माता (रूपमंजरी) से तो [केवल] जन्म का निहोरा (निमित्त) है तूने ही मेरा समस्त पालन-पोषण किया है। (४) मैंने बाप भाई घर-बार [सभी] को छोड़ दिया [क्योंकि] आज मेरा परदेश-गमन [हो रहा] है।" (५) [यह सुनकर] मधुरा ने इस प्रकार गला भर कर रुदन किया कि नेत्रों के जल से [मानो] अपनी समस्त पीड़ा निचोड़ डाली।

(६) दोनों कुमारियाँ समस्त कुटुम्ब से विदा होकर सुखासन पर जा चढ़ीं। (७) उन्होंने अपना समस्त परिवार छोड़ दिया और फिर कर (लौट कर) उसे नहीं देखा।

टिप्पणी—(३) जरम < जन्म। (४) बार < बार < द्वार। गौन < गमन। (५) पीर < पीड़ा।

[५१७]

पुनि[1] दुवौ मिलि जहाँ हुत[2] गरु । दुवौ[3] कुँवर[4] ग पाल्ह[5] पर ।
कठ लाइ महु[1] दुवौ[2] भुवारा[3] । दहाँ रहु[4] हम मिलि गम[5] भाग ।
हम गम[1] पर[2]घर प्रान मगारा[3] । मन गा[4] तुम्ह मउछारहि माग ।
बिनती चहुँनि करी[1] मनि जाई । तुम्ह[2] जानहु राउ[3] कर[4] घराई ।
तुम्ह परतन[1] सर सौंप हमारा । करहु जस मन मानै[2] तुम्हारा[3] ।
काढि प्रान परिवार कर हम तुम्ह[1] गग बसार ।
गावह गौन हमारा[1] करहु जा त्यो[2] बसार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ग पुनि। २ ग दुवौ राजा जा मा दु कुँवरि जा हो ए दुवौ मिल गही है। ३ रा दुवौ। ४ ए मैं बारेन्ह ग जाद पग।

(२) १ मा भा बरा लाइ का रा कर लाग ई। मा दुवार। ३ मा भा ए रोर। ४ ग हमरे मिल रा हम मिल गई।

(३) १ मा ए मब। २ भा ए पर। ३ मा निमारा। ४ ग रो।

(४) १ मा ए कहूँ (<कहीं : फ़ारसी लिपि)। २ ए तुह। ३ मा मा रा ए भौ (<दोउ फारसी लिपि)। ४ मा ए की।

(५) १ ए तुहुं चरनन मा तुम्हरे चरन। २ मा मा परा अहै (अहा—मा) अब जानु ए किजेहु जैस मन भाव। ३ ए ताहारा।

(६) १ ए तुह।

(७) १ रा राजा सो अस भाखहि ए राखि जो सीम हमारी। २ ए कहेहु जो देवस।

अर्थ—(१) तदनंतर जहाँ दोनों राजा खड़े थे [वहाँ] जाकर दोनों राजकुमार [उनके] पैरों में पड़े। (२) [दोनों को] गले लगाकर दोनों भूपालों ने कहा 'यहाँ [अब] हमारे सिरों पर सब भार [ही] रह गया (३) [क्योंकि कन्याओं के रूप में] हम सब के शरीरों का जो प्राणाधार था वह हमने तुम्हें न्यौछावर कर दिया। (४) बहुतेरी विनती कहीं नहीं जा रही है [क्योंकि] तुम दोनों कुलों (पितृकुल तथा श्वसुर-कुल) का बड़प्पन जानते हो। (५) [कन्या देने के कारण] तुम्हारे चरणों के नीचे हमारा मस्तक है [इसलिए] जैसा तुम्हारा मन भावे करना।

(६) हमने अपने परिवारों के प्राण निकाल कर तुम्हारे साथ चला दिए। (७) [अब] हमारी सीम की रक्षा करना और जो दैव करावे वह करना।

टिप्पणी—(२) भुआर < भूपाल। (३) नेवछावरि < निवच्छ + आवर्ति = [वार कर] उतारे हुए पदार्थों की मबली। (५) माथ < मस्तक।

[५१८]

सुनि कुँवरन्ह भवननि कर गहा।[1] पिता अहस[2] तुम्ह बूझिय कहा[3]।
ओन्ह मता पित हम जनम बारे।[1] माइ बाप तुम्ह जेइ पतिपारे।[2]
एहि[1] परिवार गोसाइनि[2] रानी। पितर तरहिं इन्ह अंजुरिन्ह[3] पानी।
इन्ह समि सउ[1] हम कुल[2] उजियारे। भेद भमि हम इन्ह सेउ[3] मनियारे[4]।
कमन[1] कमोगी बचन लीका। तस एइ हम कुए माँथे[1] टीका।
इन्ह कर सोच करहु जनि जिय[2] आपन[1] नरम।
अर्पा[1] दहु गोसाईं गौनहिं[3] अपने दम॥

पाठान्तर—(१) १ रा सुनत कुँवर [शब्द स्पष्ट नहीं है] कहा मा सुनि कुँवरन्ह भरवन कर गहा ए सुना कुँवर ससुरन्ह कर गहा। २ मा जैसा। ३ रा तुम्हें बूझत कहा मा तुम्ह बीत बकाहा ए तुह बूझित कहा।

(२) १ मा ओन्ह मानइ हम जनमे बारे, ए मातौ हम जन्मै होत बारा। रा माने हम जनमो हुत बारा २ मा माइ बाप तुम्ह जइ पनीपारे ए माय बाप जो तुह प्रतिपारा रा माइ बाप तुम्हें अई प्रतिपारा।

(३) १ मा म॰ ए मह। २ ए मामाउनि। ३ मा मा पीतई तर मन (जि॰ —मा) आमुरि ए पित्र तरे इग्ह मधुगिर।

(४) १ मा मा यमु अमि (ममि—मा) मेउ ए ये॰ ममि [गा मरी ?] ग एहि ममि मों। २ मा ममि। ३ ए मा म॰ मनि हम ॰॰ने (मनि गउं—मा)। ४ मा ममिमार।

(५) १ मा मा मम र। २ मा मा मम म॰ हम मम माथ ए मम हमरे ॰॰ महं मेह रा तम य हम माथें।

(६) १ मा मा मेन्ह की माथ चीज मरमें जनी कुछ करहु (ति॰ करिय—मा) रा उन्ह कर मोच करहु जनि मरमै चीउ।

(७) १ रा ए मा मम्पा। २ मा मगीमा मउ मा ममीम गा। ३ मा गवर्मा॰।

अर्थ—(१) [यह] सुनकर कुमारों ने [अपने] कानों को हाथों से पकड़ा [और कहा] "हे पिता तुम ऐसा क्या (क्यों) समझते हो? (२) उन माता-पिता से हम बालक रूप में जन्मे [किन्तु हमारे वास्तविक] माता-पिता तुम हो जिन्होंने हमारा पालन-पोषण किया। (३) इस परिवार में स्वामिनी रानी होती है और पितृ इनकी अंजलियों में बस सकते हैं। (४) इन दासियों से हमारे कुल उज्ज्वल [हुए] और इन अंजलियों से हम अधिपर [हुए]। (५) जिस प्रकार कनक कसौटी पर कञ्चन की रेखा [बनती है] उसी प्रकार से हमारे कुलों के मस्तक पर तिलक [बनती]।

(६) इनका सोच हे नरेश आप अपने जी में न करें। (७) आप आज्ञा दें हे स्वामी कि हम अपने देशों को गमन करें।"

टिप्पणी—(१) गवन < गमन = जाना। (५) लीक < रेखा < रेगा। (५) माथ < मस्तक।

[५१९]

मद[1] पम मिर दूनों[2] बाग[3]। औ मप दूनो गज कमाग।
औ दायज दूनो जत[1] पाया। मा ॰यगन्हि मम ॰॰[2] मन्नाका।
गारि मिम्मान ॰॰ गय[1] गा॰[2]। माथ हुतें[3] दुर मागग म॰[4]।
गागस॰ नन भरि पानी। आ॰उ[1] ज॰ ॰॰ औ गनी।
॰हमि[1] बार उठि ममदहु माहीं[2]। मम॰ मह मा॰ गिय[3] ना॰।
॰गाह पार जिउगन ॰[1] जगन आन गम[2] म॰।
गम[1] दुग गन[2] ॰॰न दुग ॰उ ग गग जि॰[3]॥

पाठान्तर—(१) १ ए मपे। २ मा दुनो। ३ मा बजवाग। ४ मा गग दुनौ ए मा गग दूनी।

(२) १ मा औहु बहु दायज जन ए औ दायज जन ममुरे। ए मा ॰॰। ३ मा मार्ह मा. माप।

(३) १ मा मा ए मिर मम। २ ए मार्ह। ३ मा मा ॰॰ ॰ ए ॰॰ ते। ४ ए मार्ह।

(४) १ भा बायेठो।

(५) १ ए कहि मा कहिसि। २ ए मोही। ३ मा गमे भा भम ए गीव। ४ ए वोही।

(६) १ ए मा की। २ भा ए अस जानै। ३ ए भा सब। ४ मा भा लोभ।

(७) १ ए भा रा सब। २ मा ए सेती। ३ मा मा दुहुं बिच होत बिजोग ए बिधि यनि देइ बिछोहु।

अर्थ—(१) भार्ग के सिर पर दोनों बालाएँ हुईं उनके साथ दोनों राजकुमार हुए (२) और जितना बामज दोनों ने पाया था वह सब [दोनों] कुमारों ने लाद (लदा) कर [साथ] चलाया। (३) चार मिलानों (पड़ावों) तक वे एक-साथ गए, [और फिर] साथ से (साथ छोड़कर) वे दो मार्गों पर [अग्रसर] हुए। (४) ताराचंद नेत्रों में आँसू भर कर वहाँ आया जहाँ कुमार (मनोहर) और रानी (मधुमालती) थे। (५) उसने कहा "हे भाई उठ कर मुझे बिदा दो और मैं भी तुम्हें गले लगाकर बिदा दूँ।

(६) बिछड़ने की पीड़ा दुस्सह होती है यह संसार में सभी कोई जानता है। (७) समस्त दुखों से कठिन दुख साथ का बिछोह [किसी को] न हो।

टिप्पणी—(२) जब अर्जित भाक्त्=जितना। (५) गिय गिव ग्रीवा। (७) बिछोहु < बिच्छोह [दे]=वियोग बिरह।

[५२०]

यह सुनि[1] कुंवर[2] मनोहर राऊ[3] । धाइ गहे[4] ताराचंद पाऊ[5] ।
इन्ह[1] पुनि[2] हेतु सहित कंठ गहा । आगे गीव[3] रोइ अस कहा ।
जहि[1] दिन बिधि[2] हम मेरए[3] आनी । तहि दिन महं[4] दुख परा न जानी[5] ।
दूनौ कुंवर लागि गिय रोये[1] । कहेन्हि[2] दय[3] कत हमहि बिछोए[4] ।
अस दुहु हियें[1] हेतु[2] उदगरा[3] । एक न छाड़ एक कर[4] गरा ।
रोइ रोइ कंठ[1] लागहि नैन चुवहि जलधार ।
निजु सानन्हि[1] भव माही जिमत[3] मिल्न[4] मयसार[5] ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पुनि इन्ह (दे दूसरी अर्धाली) मा इह सुनि ए पुनि सुनि। २ ए नाऊँ। ३ मा बरेसि भा परे, ए कहेसि। ४ ए पाऊँ।

(२) १ मा भा येन्ह। २ ए पुनि रा में यह शब्द नहीं है। ३ मा लागउ रोइ ए लागि जीव भा लागि गरे रोइ।

(३) १ मा जिहि। २ ए बिध। ३ मा मेरऊ ए मेरवा। ४ मा इहइ ए बेह। ४ रा पीर न जानी मा पराम पानी।

(४) १ मा दुवौ कुमर लाग मिल आये ए दुवौ कुमर लागि गीव रोये। २ मा कहिन्ह ए कहेसि। ३ मा मरइ बिधुराये ए हमरे बिछोए, मा मेरइ बिछोए।

(५) १ ग दुहु हिय। २ मा मनु। ३ मा आगम। ४ मा छाई ग छा। ५ ए क।

(६) १ ए गीव।

(७) १ मा निगु जानहि ए निज जानहु। २ मा नहि। ३ ग मिलना एहि मा बिछुरि मिलन। ४ मा मयेमारि रा ग ममार।

अर्थ—(१) यह सुनकर कुमार मनोहर राम ने दौड़कर ताराचन्द के पैर पकड़ लिए। (२) फिर इन्होंने प्रेम के साथ उनका गला पकड़ लिया और गले लग हुए रोकर इस प्रकार कहा (३) "जिस दिन हमको लाकर मिलाया उस दिन यह न जान पड़ा कि यह [वियोग] दुःख [भी] पड़ेगा। (४) दोनों कुमार गले लग कर रोए और उन्होंने कहा "दैव ने हमें क्यों वियुक्त किया?" (५) दोनों के हृदयों में ऐसा प्रेम उद्गीर्ण हुआ (फूट पड़ा) कि एक दूसरे का गला नहीं छोड़ रहा था।

(६) रो-रो कर वे गले लगते थे और उनके नैन आँसुओं की धारा बहा रहे थे (७) [क्योंकि] दोनों ने भली भाँति यह जान लिया कि जीवित रहते हुए दोनों का संसार में मिलना नहीं [होगा]।

टिप्पणी—(२) (४) गीव < गिव = ग्रीवा। (५) मग < म्न = मना।

[५२१]

दुवो कुवर गीवहि गिय[1] लागी। बिछुरि न मरहि बियोग न[2] आगी।
मधुमालति ग[1] कर छड़ाए[1]। दुवो जन[1] रोवत बगराए।
रहसि कि तुम्ह[1] सुन परिजन माह। कम[1] रोवहु मन्दिर क[1] ना।
पीतम्बर जा[1] पुहुप[1] आगी। मारें दुग मरि हारि[1] लागी।[1]
रम मनसा मो[1] बिन परि भोरी। घोर[1] दुसर आहि रा घोरी।

मधुमालति दूनौ[1] बगराए बहुत दुसर मग।
उबहु पुर्वहि मन अल्पाग[1] पाछिउ[1] ममुनि मनर॥

पाठान्तर—(१) १ मा मन मा मने ग मीर। २ मा बिछुरि न गहि बियाग न मा बिछुरि न मरहि बियाग न ग बिछुरि न मरै बिरह की ग उर्वा मारमरा रा।

(२) १ मा म। २ मा छड़ाय ग छड़ाये। ३ मा मा ग जा। ४ मा बिलखाय मा मेरराए।

(३) १ ग कोन्हि कि सुन। २ मा का। ३ मा मा मेरि क।

(४) १ ग पुहुप हार। २ ग मारे दुग मनि रा मा पा दुर बगरा। ३ मा म अर्जारी का पार है पुहुप पुम्मा भन पीतम बर्नी। दुग मन रा मिर परै निकारी।

(५) १ मा ग की। २ मा म पद रमर नहीं है। ३ मा बार। ४ मा ग आहि भै। ५ मा म अर्जारी का पार है रम मनसा का पीतम बरा। बन्नि बिराय रमन दुग मरा।

(६) १ मा मा मधुमालति गै दुखी ए मधुमालती दुखी। २ मा बहु।
(७) १ मा मा तबहू धुखहि मदन (लोमम—मा) जलधारा ए तब दुखी नैन बाल भर, रा तबहू धुखहिं जल। २ ए पाछिलि।

अर्थ—(१) दोनों कुमार [परस्पर] गले लगकर रो रहे थे वे वियोग की अग्नि के कारण विमुक्त नहीं हो सक रहे थे। (२) मधुमालती ने आकर उनके गले छुड़ाए, और दोनों जनों को रोते हुए [एक-दूसरे से] अलग किया। (३) उसने कहा, 'तुम [दोनों] जन-परिजन के स्वामी हो [फिर] कैसे (क्यों) स्त्रियों की भाँति रो रहे हो? (४) जो भारी धैर्यवान पुरुष होते हैं वे थोड़े [ही] दुख से दुखी नहीं होते हैं। (५) हम अबला हैं इसलिए हमारे चित्त में बुद्धि थोड़ी है थोड़े दुख से हम [अवश्य] बावली हो जाती हैं [हमारी तरह तुम लोगों को न हो जाना चाहिए]।"

(६) मधुमालती ने दोनों को बहुतेरे दुख—सन्देह (समुदाय) के साथ अलग किया (७) फिर भी [दोनों के] नेत्र पिछले स्नेह को समझ [समझ] कर अश्रुधारा चुआते रहे।

टिप्पणी—(१) गिय < गिव < ग्रीवा। (३) साईं < स्वामी। (५) बाउर < बाउल < बातुल < बावला।

[५२२]

हम दसहू दहु[1] अबला जाती। सहा बिछोह[2] वज्र व[3] छाती।
हम दुख जनम न जानिन्हि कथा। एक जाना जो[1] सिर चढ़ि बसा[2]।
धना होत जो[1] आगि क बार[2]। तब आवत चसु लोर[3] हमार।
माता पिता[1] जनम हम मारा[2]। मूजब जो किछु[3] लिखा[4] लिखारा।
तुम्ह पुरुष होइ[1] रोवहु एसैं[2]। धीरज धरहिं[3] हम अबला कैसें[4]।
तुम्ह[1] पुहुमी पति चाहिय[2] वज्र क[3] हिया तुम्हार[4]।
हम अबला दहु[1] बिधि सहा बिछुरन दुक्ख अपार॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुह। २ मा मा बिछोम ए बियाम। ३ मा देह, ए कै।
(२) १ मा अब जाना जौ। २ मा मैं यह जर्जाकी नहीं है।
(३) १ ए मा जब मा जब। २ ए बारे। ३ मा असु, मा आंसु।
(४) १ मा ए पिता। २ ए जब मव संमारा। ३ मा कुछु। ४ मा अंक।
(५) १ मा तुम्ह पुरुषा भै रा तुम्हं पुरुष होइ, ए तुह पुर्ष भै। २ ए ऐसे। ३ मा धरै ए धरहि। ४ ए कैसे।
(६) १ ए तुह। २ ए चाही मा ठाकुर। ३ मा का। ४ ए हिरदै तोहार।
(७) १ ए दहु मा दुख। २ मा ए सहहि रा सहिनि। ३ मा बिछुरनि।

अर्थ—"(१) हमें देखो कि अबला जाति की हैं [किन्तु] हमने वियोग को छाती पर वज्र रख कर सहन किया। (२) हमने जन्म भर नहीं जाना था कि दुख कैसा होता है हमने उसे तभी जाना है जब वह [अचानक] हमारे सिर पर चढ़ बैठा है। (३) जब आग जलाने पर धुआँ होता

था तब हमारे चक्षुओं में आँसू आ जाते थे। (४) माता-पिता ने हमें जन्म दिया [किंतु] हम भोगते तो वही जो-कुछ [हमारे] ललाट में लिखा हुआ है। (५) तुम पुरुष होकर इस प्रकार रोते हो [तो] हम अबलाएँ किस प्रकार धैर्य धारण करेंगी ?

(६) तुम पृथ्वीपति हो। तुम्हारा हृदय वज्र का [होना] चाहिए। (७) [देखो] कि हम अबलाओं ने बिछड़ने का अपार दुःख किस प्रकार सहन किया।"

टिप्पणी—(२) (१) जौ < जउ < यदा = जब। (३) नार [द] = आँसू। (४) लिलार < लिलाट < ललाट। (६) पुहुमी < पृथ्वी। हिया < हृदय।

[५२३]

मधुमालति लोचन जल भरी । ताराचंद के पायन्ह[1] परी ।
कुंवर हतु गउ[1] कवरि उचाई[2] । गमुझि बिछोह[3] कंठ लै लाई ।
मधुमालती रोइ गोइ कहि[1] बाता । त मोर जनम जीउ[2] कर दाता ।
माइ बाप मों[1] जनमि अनागा[2] । वार[3] माहि तै सुत प्रतिपारी[4] ।
मिलइ क[1] मिरमन[2] हुती[3] न आसा । तुम्ह[4] माहि मन कीन्ह परगासा ।
राजपाट सभ छाड़ा तुम्ह मोर जिय लागि[1] ।
पल्हो क[1] मोर बुझाइहि[2] जगत हिए उर[3] आगि ॥

पाठान्तर—(१) १ भा पाय में त पांव में।

(२) १ भा ग गा त भी। २ गा उगाई। ३ भा समुझि बिछोरा गा भरि बिछोह।

(३) १ रा रोइ कर भा रोइ गोइ कहै। २ भा भा जिवन त जीवन।

(४) १ रा ए हम। २ त जन्म अंडारी। ३ भा बीर। ४ भा भा में त सी। ५ भा निगारी।

(५) १ भा भा त मिलन की। २ त जीवन का मरि मा। ३ भा हुति त हुती। ४ त में न भरी है। ५ भा भा त न।

(६) १ भा त भा आसा (आस—त) नै (नै—भा त) राज (राज—त) बाहि (माहि—त) लागि।

(७) १ भा मीतम त मरम भा गीहौं। २ भा बाल त बताइ भा गताल। ३ भा हिय में भा त हिये की।

अर्थ—(१) मधुमालती नेत्रों में आँसू भरकर ताराचंद के पैरों में पड़ी। (२) कुमार (ताराचंद) ने प्रेम से कुमारी (मधुमालती) को उठाया और [आगम] विपत्ति का ध्यान कर उसे लेकर गले से लगा लिया। (३) मधुमालती रो-रो कर बात कहने लगी "तुम मेरे जन्म (जीवन) और जीव के दाता हो। (४) माता-पिता ने [तो] हमें जन्म देकर डाल (दूर कर) दिया है [किंतु] बाल्य काल लेकर तुम्हीं ने प्रतिपालन (लालन-पोषण) किया। (५) [मनोहर] के मिलने की मन में आशा [तक] नहीं थी [किंतु] तुमने मिलाकर मन पर का निवास किया।

(६) तुमने मेरे जीव के लिए राज्य तथा सिंहासन छोड़ा (७) [अतः] मेरे हृदय में [तुम्हारे वियोग की] जो आग जल रही है वह कहाँ के नीर (जल) से बुझेगी ?"

टिप्पणी—(१) लोचन < लोचन = नैन। (२) बात < वत्ता < वार्त्ता। (६) पाट < पट्ट = सिंहासन। (७) हिय < हृदय।

[५२४]

कसें मे[१] जमु भरिहौ[२] भारी । तुम्ह[३] अब नगर[४] चलहु[५] जिय[६] मारी ।
असें पास[१] भए मोहि[२] आई । मरतिउ कतहु जाइ बौराई ।
पुनि[१] कत माइ[२] बाप घर औतिउ[३] । कतहु जाइ क जीउ[४] गवाँतिउ[५] ।
मोहि घर बास[१] बीर तुम्ह[२] दीन्हा[३] । पछि[४] रूप सेउ[५] मानुस कीन्हा[६] ।
घट जिउ रहत बीर तोहि देखें[१] । आजु उजार[२] जगत मोहि[३] लखें ।
परिहरि सब[१] परिवार आपना[२] बीरन पर भुइ जाहिं[३] ।
अब बिछुरन[१] हुत मोहि तोहि[२] आस मिलन क[३] नाहिं ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा कैसे (कैसें—मा) मइ (इमइ—मा) ए कैसे एह। २ ए भरिहौ। ३ ए तुह। ४ ए मोहि नग्र भा मोहि नगर, मा मोहि निगर। ५ मा चलेहु ए चले। ६ ए जीव।
(२) १ मा जैसे पथ ए जैसे पास। २ ए मा मो तन।
(३) १ रा ए पुनि। २ ए माय। ३ मा आवति भा आवतीउ। ४ ए जीव। ५ मा गवावतिउ भा गवावति।
(४) १ रा बार। २ मा भा तैं ए मोहि। ३ ए दीन्हा मा दिही। ४ मा पंखी। ५ ए रा सौं। ६ ए कीन्हा मा किही।
(५) १ ए बिरह दुख देखै । २ मा उजारि। ३ मा मोरे, ए मोहि।
(६) १ ए सब। २ मा अपना ए आपन। ३ रा अब पर भुइ हम जाहि।
(७) १ भा ए मा बिछुरे, रा बिछुरन। २ ए मोहि तोहि सौं रा सब मोहि तोहि, मा हुवे मोहि तोहि, भा हुत मोहि तोहि। ३ मा ए की।

अर्थ—"(१) मैं कैसे भारी जन्म (जीवन) भरूँगी (काटूँगी) [जब कि] अब तुम मेरे जीव को मार कर [अपने] नगर को जा रहे हो? (२) [इससे तो अच्छा रहा होता यदि तुम न मिले होते और] जैसे ही तुम मेरे पास आ मिलते थे मैं कहीं जाकर बावली होकर मर गई होती। (३) फिर मैं माता-पिता के घर कहाँ (क्यों) आती? कहीं जाकर मैं अपने जीव को गँवा देती। (४) मुझे घर का निवास हे भाई तुम्हीं ने दिया और पक्षी रूप से मनुष्य किया। (५) मेरे शरीर में जीव हे भाई तुम्हें देख कर रह रहा था [अतः] आज मेरे देखे जगत् उजाड़ है।

(६) हे भाई, अपना सब परिवार छोड़कर हम परभूमि को जा रही हैं; (७) अब इस वियोग से [मुक्त होकर] मेरे-तुम्हारे मिलने की आशा नहीं है।"

टिप्पणी—(१) जम < जम < जन्म = जीवन। (२) पास < पस्स < पार्श्व = पर, ऐसा।

[५२५]

जननि पछि[1] क हौं[2] बनबासी । बही जाति थयु[3] बीर[4] उदासी ।
एहि अनर जो दगउ तोही[1] । उपजा पुन्व पम जिय[2] माहा ।
आस लागि[1] म बसिउ आई । बासिउ[3] मरनि जाल बर जाई[4] ।
तुम्ह[1] माहि लगि[2] अनि साहस[3] कीन्हा[4] । राज साहाग रूप माहि[5] दीन्हा[6] ।
किछु म आस जिउ क हुति मोही[1] । बीर सिद्धि भइ[2] साहस तोही[3] ।
राइ रोद फिरि[1] पवनमि तागनग क पाइ[2] ।
कुवर लाइ गिय गमरा[1] जस समद[2] बहिनि बर[3] भाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए पवि। २ मा रा ए माहि। ३ ग हुनि मा बी ए मोहि। ४ ए मा बिरह।
(२) १ मा बनी मेरी ए म्नेरी तारी। २ मा उपजो पुब ए उपजा पूर्व। ३ मा ए हिय।
(३) १ मा मेइ मा मीन। २ मा बैमा ए बैमी रा बैन्डि। ३ ए बासी। ४ मा जाल पुरुक जाइ ए माल पुह आर्ड रा जाल भगनार्ड।
(४) १ मा मा ए नै। २ ए ग लागि। ३ मा अनि मन मा अग गारम ग गाहम ए ज माहम। ४ मा ए कीहि। ५ ए माहि। ५ मा ए दीन्हे।
(५) १ मा मन किछ आम न जिय हुनि मोरें मा पुछ आम नहिं जिय मारे रा किछ न आम जिय कै हुनि मारी ए किछ आगा जिउ नहिं [न नहीं है] मारी। २ ए सिध भी। ३ मा मारे ए तोरी।
(६) १ मा राइ बहुरि ए पौरि बहरि। २ ए नाम।
(७) १ मा मा ए उर समरै। २ मा जिमि मम[3] रा जैमें। ३ ए बे रा भी।

अर्थ—"(१) जननी मैं पाती [बना] कर तुम बनवास दिया और हे भाई मैं [जीवन से] उदासीन होकर बही जा रही थी। (२) इसी बीच जब मैंने तुम्हें देखा मेरे जी के पूर्व [जन्म] का प्रेम [पुन:] उत्पन्न हुआ। (३) आशा [की पूर्ति] के लिए मैं आकर बैठ गई किन्तु आकर बलपूर्वक [जाल में] फँस गई। (४) तुमने मेरे लिए अत्यधिक साहस किया और मुझे [मेरा] राज्य सौभाग्य (मेरा पति) और [पूर्ववर्ती] रूप दिया। (५) मुझ जीव (जीवन) की कुछ भी आशा नहीं थी, किन्तु तुम हे भाई तुम्हारे साहस से सिद्धि [प्राप्त] हुई।"

(६) रो-रो कर उसने पुन: तारावंद के पैर पकड़े (७) और कुमार (तारावंद) ने [उसको] गले लगाकर उसे [उसी प्रकार] विदा दी जिस प्रकार भाई बहिन को विदा देता है।

टिप्पणी—(२) पुरब<पुव्व<पूर्व। (३) बल<बल्‌। (४) सोहाग<सौभाग्य।

[५२६]

उगा मान पमा उग आगा । गा मनान क लिप[1] लागा ।

कहसि समुझि¹ तोहि² बिछुरन पीरा । कसें³ जनम निवाहब⁴ वीरा ।
जौं¹ तुम्ह रूपमजरी² डारा । तेहि⁴ दिन रोइ गवाइउ सारा⁵ ।
प जिय आहि¹ मिलन क² आसा । मिल³ आइ मोहि घट हुति⁴ सांसा ।
अब बिछुरन हुत¹ आस न मोही² । जीमत बहुरि मिलन* नहि होही³ ।
दुदुन बियोग¹ न जानिउ जौं² लखउ³ तोहि⁴ पास ।
अब तोहि¹ बिछरें² बीरन मे सुठि³ भई निरास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए के बीच मा के पां रा के उर।
(२) १ ए समुमु। २ मा इजह मा महू, ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए कैसे। ४ मा बछोहा मा निबाहत।
(३) १ रा जनम मा ए जब। २ ए तुह। ३ मा डारे, ए मा डारी। ४ ए ता। ५ मा गवाये सारी ए गँवावा बारी।
(४) १ रा. जीमत नाहि, मा पै जिस मही ए पै जिउ आइ। २ मा की। ३ मा मिल्हु। ४ मा मा ए जो कर होगी (हुती—ए हुत—मा) सासा।
(५) १ मा बिछुरे हुत मा बिछुरे हुते ए बिछरन त। २ ए माही। ३ मा मा मै मिलऊँ तोही ए ना मिलबैं तोही ए ना मिलबैं तोही रा मैन (< मिलन) नहि होही।
(६) १ मा ए ।बजोग। २ ए जानौ। ३ मा जब देखउ ए जब देखा। ४ ए तुम।
(७) १ मा तुम्ह, ए तुह मा रा मे यह शब्द नहीं है। २ ए बिछुरे, मा बिछरन। ३ रा ए जो।

अर्थ—(१) [जब] पेमा के हृदय में मोह की आग उठी और वह रोकर मनोहर के गले लग गई। (२) उसने कहा "तुम्हारे बिछुड़ने की पीड़ा को समझते हुए, हे भाई मैं कैसे जनम निभाऊँगी? (३) जब तुम्हें रूपमंजरी ने [दूर] डाल (डलवा) दिया मैंने उस दिन रो-रोकर [जीवन का] सार (सुख) गँवा दिया। (४) किन्तु [मेरे] जी में मिलने की आशा थी और मेरे शरीर में साँस थी [तभी] तुम आकर मिल गए। (५) [पर] अब [इस] बियोग से मिलने की आशा मुझ नहीं है और जीते जी पुनः मिलना न होगा।

(६) [माता-पिता से बिदा होने पर भी] जब तुम्हें पास मैं देखा मैंने दुदु न का वियोग नहीं जाना (भुला दिया); (७) [किंतु अब] तुम्हारे बिछुड़ने पर, हे भाई मैं अत्यधिक निराश हो गई हूँ।"

टिप्पणी—(३) (६) जौं < जउ < यदा = जब। (६) पास < पार्श्व।

[५२७]

आज क¹ दिन विधि कत निरमाएउ*¹। जहि बिछरन कर नाउ¹ सुनाएउ*²।
पम गिमार जौं¹ विधुरयहा² । सा दिन जानु जियन³ महु नाही ।

लोग कुटुंब सभ बिछरा[1] माहीं[2] । जीवन रहित लाइ जिउ[3] मोहीं[4] ।
तुम्हहु चलहु[1] अब मोहिं[2] परिहरी । जिउ घट रहन न दमौं[3] घरी ।
धीरज करत जीउ ताहि दगि[1] पामा । आजु बीर तजि भएउ[1] निरामा[3] ।
बिछुरत[1] तिल तिल मरन है जग जान सम[2] लाग ।
ए बिधि[1] काहु न देहि जग[2] जीवन मय[3] बियाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ग का। २ मा निरमउ (<निरमाउ) ग निरमाऊ, म मा निर्मये। ३ ए जा बिछरन के नाम मा ग जहि बिछरन कर नाउ। ४ ग जौ भएऊ मा सुनाउ ए मा सुनायें।
(२) १ मा रिहिनम जी ग प्रीति जबही मा प्रीति पुनि (?)। २ मा पहि बिउगौ मा जब बिछरहीं। ३ मा आनु जियन मा जन जीवन ग आनु जियन। ४ ग मा।
(३) १ मा सब बिछरा ग जो बिछरा ग सब बिछरे। २ ए माहीं। ३ मा ग रही माल जिउ (मोक—ग) ग महिउ मांगि जिय। ४ ग नाहीं।
(४) १ मा तुम्हउ चलेहु ग तुम्ह चल। २ ग माहि। ३ मा दवो।
(५) १ ग धीरज करत जीउ ताहि ए धीरज करौ देगि तार। २ मा गुनि मन्ड मा गुनि भई ग मैं भेउ। ३ ग उन्नास।
(६) १ मा मा बिछोग ग बिछाह। २ मा म है नहीं है। ३ ग सब।
(७) १ मा य बिधि ए मेह बिघ। २ मा मा दैत्य जनि ग दइ जनु। ३ मा मा जीअन मग ग जीव सग। ३ मा ग बियाग।

अर्थ— (१) आज का दिन विधाता ने कहाँ (क्यों) निर्मित किया [था] कि उसने वियोग का नाम सुनाया? (२) जब (जिस दिन) प्रेम-प्रिय बिछुड़ते हैं वह दिन मानो जीवन में नहीं रहता है। (३) लोक (प्रजा वर्ग) और कुटुम्ब—सभी मुझसे बिछुड़ गया था फिर भी हे भाई मैं तुममें [अपने] जीव को लगा [जीवित] रही। (४) [और] अब तुम भी मुझे छोड़कर जा रहे हो इसलिए मैं जीव को शरीर में एक घड़ी भी रहना नहीं देख रही हूँ। (५) तुम्हें पास में देखकर मेरा जीव धैर्य धरता, [किन्तु] हे भाई तुम्हें छोड़कर आज वह निराश हो गया।

(६) बिछुड़ता होता तिल-तिल का (तनिक-तनिक करके) मरना है यह जगत् में सभी लोग जानते हैं; (७) [इसलिए] हे विधाता किसी को भी तू जीवन [देके] के साथ वियोग न दे।"

टिप्पणी—(२) रिहार<रिहार=प्यारा। जियन<जीवन। (५) पाम<पार्श्व।

[५२८]

ग[1] मानो हो[2] तहाँ घन भारी । अति अमान दमग अगियारा[3] ।
माहिं गनि मन सीमगम भाग ।[1] मार[2] जाग[3] गाग धरियाग ।
माहि निसाकर माहि म भार[1] । बिरहा गम[1] परिहार मरगा[1] ।
अर नागन नार बार माहिं[1] नारा । जारा जाम माहि भर आगा[1] ।
भागउ[1] रिहा[2] माहिं माहिं[1] धाम । मग माहिं नरि रूम मन धाग

यह[1] कहि छाडि[2] कुवर कठ मधुमालति गिम[3] लागि ।
बिछुरत[1] जनम सघातिनि[2] हिय परजरा[3] ओ[4] आगि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मेह। २ रा मोहि। ३ ए देव अध्यारी मा दिवस अधियारी।
(२) १ रा मोहि लगि तुम्ह दु सहा दुख भारी मा मोहि लगि बैठ सीस सम मारा मा मोहि लागी सहीहु सीस सम मारा ए मोहि लागि सहे दुख भारा। २ ए मारे। ३ ए सो मा असु। ४ रा बरियारी।
(३) १ ए मोहि कै आये। २ ए मा सब। ३ ए मिलाये रा मिलाएहु।
(४) १ ए अब तुह चले बीर हम। २ मा डारें। ३ मा भा मोर आज असारी (असारें—मा) ए हुमी असारी।
(५) १ ए मी। २ मा बिछोवा। ३ मा यह। ४ ए करो। ५ मा जिउ।
(६) १ मा इमही ए मेह। २ ए कठ छोडि। ३ ए कै।
(७) १ रा बिछरत। २ मा सघातिह रा सघाती। ३ ए हीयर बरी मा हियें बरथी। ४ मा म यह शब्द नहीं है।

अर्थ—"(१) दानव ने ले [जा] कर मुझे उस वन में डाल दिया था जो अति असुम था और जहाँ दिवस में भी अंधेरी रात का अंधकार रहता था। (२) [किन्तु] मेरे लिए तुमने सिर पर समस्त भार सहन (वहन) किया और वैसे बली राक्षस को मारा। (३) [उस] निशाचर को मार कर तुम मुझे ले आए और तुमने मेरे बिछुड़े हुए समस्त परिवार को मुझे मिलाया। (४) [वही] तुम हे भाई अब मुझे डाल (छोड़) कर जा रहे हो [इसलिए] जीवन और जन्म सेना मुझे अब भार [-स्वरूप] हो रहा है। (५) मुझमें-तुममें है भाई वियोग हो रहा है [अब] मैं किसे देख कर मन को धीरज बंधाऊँगी ?"

(६) यह कहकर और कुमार (मनोहर) का कंठ छोड़कर वह मधुमालती के गले लग गई (७) तब जन्म की संगिनी के बिछुड़ने के समय उसके हृदय में [मोह की] आग प्रज्वलित हुई।

टिप्पणी—(६) गिम < गिव < ग्रीवा। (७) औ < अउ < अपा = अब।

[५२९]

कवरि[1] दुवो रोवहिं गिय[2] लागी । आदि[3] प्रीति बिछुरत फुनि[4] जागी[5] ।
कहिन्हि[1] आजु हम[2] मिलन निबरा । आजु उवधि हम बिहुरा[3] बेरा ।
आजु वस हम दुवो[1] अगराई । आज कुन्व तजि भईनि[2] पराई ।
बासें जो[1] दय एक संघ[2] राखी[3] । भए जोवन हम दिसि दिसि माखी[4] ।
मिलहिं[1] महु[2] अस बिछु[3] मा आई । कोइ पूरब कोइ पछिम चलाई ।[4]
सखी गए व दिन कलि न्नि[1] बालपन[2] सुख चाउ ।
मोहि तोहि[1] आजु बिछोवरा[2] जियत न सूझ[3] मराउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कुंवर। २ मा गले ए गीव मा कंम। ३ रा आदि। ४ मा बिछुरन आन भागी रा बिछुरन पुनि जागी ए जो बिछुरत लागी मा बिछुरत जिय जागी।

(२) १ रा कहिन ए कीन्ह। २ ए म यह शब्द नहीं है मा मुन्? ।
३ मा महि बिहरी ए मह बिहरा भा मह बिहरेउ।
(३) १ मा ए थाउ रा दुइ। २ मा गई।
(४) १ ए बसी जा रा जी लहि। २ मा भा ए संग ३ मा ए रागी।
४ भा आनि जोवन हम दिसि दिसि मार्गी मा दोनों जोबन हम दिसा मापी
ए भी जीवन ती द दिस मानी।
(५) १ मा मिलनेह, ए मिल त। २ ए म मह' नहीं है। ३ ए बउ।
४ ए काउ पूरब कोउ पछिम जाई रा काइ पूरब कोइ पछिम बसाई।
(६) १ मा सखी मय बैइ कलि दिन ए सखी दिन मयेउ एक मग दिन। २ मा
औ बाल ए बालापन भा मैं बाल।
(७) १ मा हम वह। २ ए बिछावा रा बिछोहा। ३ ए मुमत नाहिं।

अर्थ—(१) दोनों कुमारियाँ [परस्पर] गले लग कर रो रही थीं उनकी आदि (बचपन की) प्रीति इस वियोग के होने के समय पुनः जाग उठी। (२) उन्होंने कहा 'आज हमने मिलना मिटाया (यह हमारा अंतिम मिलन है) आज समुद्र में हमारा बेड़ा (जहाज) अलग-अलग हो गया (३) आज दैव ने हम दोनों को दो स्थानों पर कर दिया आज हम [अपने] कुट व छोड़कर पराई हो गई। (४) बचपन में जो (जहाँ) दैव ने हम दोनों को एक साथ रक्खा [वहाँ] यौवन में हमें भिन्न भिन्न दिशाओं में डाल (फेंक) दिया। (५) हम दोनों मिल ही पाए वे कि ऐसा कुछ हुआ कि एक पूर्व तो दूसरी पश्चिम की ओर बसाई गई।

(६) हे सखी वे कलि के और बचपन के सुख-उमंग के दिन जाते रहे (७) मसाग तुमसे आज [ऐसा] वियोग हो रहा है कि जीते जी मिलन [होता] नहीं जान पड़ रहा है।"

टिप्पणी—(१) पिय < पिव < पीवा = गला। (२) निवर < निर + वायु < निरगमा समाप्त करना। बिहर < वि + ध = टूटना अलग अलग होना। बग < मगर [१] = यहा उतर जाना। (३) बसरा < वि + ? = अलग कर देना। (५) पूरब < पूर्व। (५) पछिम < पश्चिम। (७) मेराउ < मेलाप = मेल मिलन।

[५३०]

मधार[1] दिन हम मिल्नी[2] ?उ। आजु[?] ए[3] आगा ग?[4] गोऊ।
?हत[1] जीउ माता तोंहि[2] ताइ। अब म त ?इम[3] तब ?ा।
?यह? ?र्न्हि जा[1] अ?र। ?यह ? ?र्न्हि[2] पितगारा[3]।
?न्ति प्रान मन[?] ?र अ?[?]। ?ाहिं मोहि पिय?म मन[जो] ग?[?]।
??? आ[1] ?[2] ?र ?डा[3]। ?ाउमि[?] ए ?ार्न्हि ?गा?।
मधुमालती ?नगिरि[1] गौना[1] पमां ?र पौनगि[1]।
?गा[1] मो? गप ममुँ[?] मति म?? ?ागरि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए ?मा। २ मा मिन्ती ए मिल्नो। ३ मा भा आज दूर ए
आजु रा आज। ४ मा आज मैं मा ?मा ? रा आज ?
धुनि ए आन ?ी।

१

(२) १ ए रहा मा होत। २ मा भा तोरे ए तोरि। ३ रा हम तुम हाथे मा भा मै तै होवे ए मैं तैं बैठब।

(३) १ मा भा लेकति मै कै (चकि–भा) कबहु ए लोकत गये वो कर्राहि। २ मा कबहु गै मुम्बी ए कर्राहि गै बार्राहि। ३ मा चित्रसारी।

(४) १ मा मानुस के मैही भा मानुस कर भाही ए मानुस कर बाहा। २ मा तोहि मोहि बिछुरत मिलन सनेही भा तोहि मोहि बिछुरत दुख घट दाही ए तोहि मोहि बिछुरे कठिन बिछोहा।

(५) १ भा मे ए गै भा मै। २ ए दाउ भा दुवौ। ३ मा छवाई ए छोहाई। ३ मा रोवतेह भा रोवतहि। ४ ए तेहि पाल्की चढ़ाई, भा लै पालकि बैसाई, रा लै पालकि बैठाई।

(६) १ ए भा कम्पा गिरि। २ ए म यह शब्द नही है। ३ मा पुष्कनेरि ए परवलनेरि भा पुरपैमेरि।

(७) १ ए चलिहि। २ भा में यह शब्द नही है। ३ भा मा ए संग। ४ ए दुनौ। ५ ए वो सेरि।

अर्थ—"(१) हम दोनों मास के दिन (महीने-महीने) घर मिलती रहती थी [किन्तु] आज से वह आशा भी गई। (२) [अभी तक] जो तुम पर (तुम्हारे लिए) लगा रहता था कि कब हम तुम इकट्ठी होंगी। (३) [मिलने पर] कभी अटारी पर जा कर खलती थीं तो कभी चित्रसारी में जाकर बोलती थीं। (४) [किन्तु] मनुष्य के प्राण भी [कितने] कठिन [होते] हैं कि वे तुम्हारे-हमारे मरण-तुल्य वियोग को [भी] सहन कर रहे हैं। (५) कुमारी ने जाकर दोनो के गले छुड़ाए, और उन्हें रोती हुई से जाकर पालकियों पर बिठाया।

(६) मधुमालती कनैगिरि (कनक गिरि) गई और पेमा पौनेरपुर (पद्मनगरपुर)। (७) वे [अपने-अपने] पति के साथ मायके की अवसेरी (अवसाद ?) को छोड़कर चल पड़ीं।

टिप्पणी—(३) अटारी < अट्टाल्प < अट्टालक = भवन का ऊपरी भाग। (४) मनई < मानव। (६) कनै < कनव < कनक। पौ < पद्म + नैरि < नगर। (७) अवसेरि < अवसेव (?) = उलझन।

[५२१]

तारा चंद मानगढ़[1] ताका। कुँवर सो[2] टाँड़[3] कनगिरि हाका[4]।
चलत बरिस[1] दुइ पंथ ओरगाना[2]। आइ कनगिरि[3] गढ़[4] नियराना।
कनक पत्र सम[1] मंदिल छाए[2]। जगमगाहिं त[3] अति रे सोहाए।
बावन सहस[1] कँगूरा गढ़ा[2]। मो सम रतन[3] जराइन्ह[4] जरा।
सूर जोति[1] जय[2] लाग माई[3]। मनिकी पर जोति धमकाई[5]।
भीतर बारह[1] कोस महि वगगति[1] गढ़[2] बिस्तार।
दस जोजन महि दगिय[1] बरत[2] मन्दिर[3] मनिआर॥

पाठान्तर—(१) १ मा नहर (< नगर)। २ रा मे 'कुवर नहीं है तय म गा' नहीं है। ३ मा टाडा ए डाड। ४ ए हारा।

(२) १ आ. एक। २ मा बोराना। ३ मा कम्पागिरि। ४ मा गड़ (< गरुड़)।
(३) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ मा भा मदिल (मदिर—भा) लाय ए मदिल समाय रा महल जराए। ३ ए तैं। ४ मा भनी।
(४) १ ए महल। २ मा भरा ए भरहा (भड़हा)। ३ भा कनक। ४ मा भा जगाइन्ह रा जड़ाइन्हि ए जगमग्ह।
(५) १ मा भा सूरुज जाति। २ ए जौ लागी मा लाग जब। मा जाई। ४ मा भा हाइ माने (गातेहि—मा) ए मौंह देगि। ५ ए ना जाई।
(६) १ रा ए बाहर भा बारह। २ मा लहि रा दस ए भी भा र्भ। ३ ए बसनी। ४ मा घर।
(७) १ ए मगि देखी मा दस कमिय मा लहि देगिअ। २ रा निमि दिन। ३ रा भा मदिर। ४ मा मनियार रा उजियार।

अर्थ—(१) ताराचंद ने मानगढ़ की ओर [जाने के लिए] दृष्टि की और कुमार (मनोहर) ने अपना टोहा (सार्थ) कनकगिरि की ओर चलाया। (२) दो वर्षों तक चलते-चलते मार्ग ओर (समाप्ति) पर आया और कनकगिरि गढ़ निकट आ गया। (३) समस्त मंदिरों (प्रासादों) पर सोने के पत्र लगे हुए थे जो अत्यंत सुंदर लगते हुए जगमगा रहे थे। (४) बावन सहस्र कंगूरे गढ़कर बनाए हुए थे और वे सभी रत्नों के जड़ावों से जड़े हुए थे। (५) सूर्य की ज्योति जब [उन पर] आकर लगती थी तब वह ज्योति और अधिक चमत्कार करती थी।

(६) भीतर बारह कोस तक गढ़ के विस्तार में बस्ती [फैली हुई] थी (७) और उसके मंदिरों (प्रासादों) में जो मशालें जलती थीं वे दस योजन (योजन = ४ कोस) तक दिखाई पड़ती थीं।

टिप्पणी—(५) चमकाई < चमत्कृति। (७) मनिआर < मणिमान [फा]।

[५३२]

मंदिर महं राजा के मन्त्र[१] भण्डारी। गन[२] निधानु भण्डार[३] सवारी[४]।
गन्धमान गउ[१] विना भराई। घटक जाम हन[२] गोग अन्हाई[३]।
पवार पथ हन[१] आवन जहाँ। महल[२] जान हुन[३] मारग तहाँ।
पग्ग[१] निति उठि[२] भई[३] सिंगहारी। दूनहु[४] उनगि कौरहि[५] अरवारी।
पूछिनि[१] मता[२] निता बगसाई। भी कुमरन्ह[३] कब्ब जा तार[४]।
मता निता कर समन[१] सुनि जिय मह भाउ हुलास[२]।
सुमन गवन[१] भा गन हियँ कउ न रही[?] याम[१]॥[२]

पाठांतर—(१) १ रा. राजादर एक महल मा भा ए करा मर (मा—ए) राजा भरया (राजा के मन्त्र—ए राजर मय—भा)। २ मा दुनी। ३ मा नौति [illegible] ए रा भाम रा मा बाउं। ४ मा सिवारी।
( ) १ मा मो ए मो रा में यह शब्द नहीं है। मा ए [illegible] (< [illegible]— पाली [illegible])। ३ मा ए घर महाई रा घर बाहर।

(३) १ मा म यह मम्म नहीं है ए होत (<हुत : फ़ारसी लिपि) । २ मा महुव मा ए महुबा। ३ ए होत (<हुत : फ़ारसी (लिपि) मा हुत।
(४) १ रा परी। २ भा उम ए भो। ३ ए भी। ४ ए भुमी मा भुई अम। ५ मा कीन्ह ए कीन्ह।
(५) १ मा पुछही भा पूछी ए पूछत। २ मा माता रा मात ए, मात। ३ ए कुसल मा कुसलात। ४ मा को पाई, भा ए के पाई।
(६) १ रा मात पिता कुसलात मा माता पिता कुसल ए मात पिता कै कुसल। २ मा कीउ कुमरि उगाहू ए मम मरो भी उमाहू मा मन मह भएउ अनंद।
(७) १ मा रा ए समन। २ मा बव। ३ मा मे चरण का पाठ है सुनि मनव मा हिमभर परत सुखन सुर चाहू ए मे है सुनि के मनब जिन मा परा समन सुख चाहू।

अर्थ—(१) इसी (इतने ही) मे राजा का एक भंडार का महंता (महामात्य) जो गुन निधान तिवारी कहलाता था (२) [कनैगिरि के राजा] चूर्णमाल से बिदा माँगा (के) कर [किसी] पर्व [के प्रसंग] में गंगा-स्नान के लिए जा रहा था। (३) कुमार जिस मार्ग से आ रहा था महंता (महामात्य) उसी मार्ग से जा रहा था। (४) दृष्टि पड़ते ही उनमें [आपस में] परिचय हुआ (एक ने दूसरे को पहचान लिया) और दोनों ने [घोड़ों से] उतर कर अंकवार की। (५) [कुमार ने] माता-पिता की कुशलता पूछी और जहाँ तक छूट गई थे उनकी कुशलता पूछी।

(६) माता-पिता का कुशल सुनकर [कुमार के] जी में उल्लास हुआ; (७) [कुशल] सुनते ही [उसके] जी में ऐसा सुख हुआ कि एक भी वासना (कामना) [शेष] न रही।

टिप्पणी—(१) (३) महुव < महामात्य। (२) परब < पर्व = त्योहार। (४) अंकवारी < अंकपाली = आलिंगन। (७) बास < वासना = कामना।

[५३३]

जब लउ कुँवर गएहु[1] परबसा। राजकाज[2] सभ तजउ[3] मरसा।
राज क[1] बात न जानहि[2] राजा। हम सभ[3] अगुआ मागँहि[4] काजा।
राज[1] कापर[2] पहिर कार[3]। सभ परिजन सभ[4] रहु[5] मन मार।
सुगरी नगर[1] रहु बिसमाद। सुनिम[2] न मनकरा[3] नाद क सादा[4]।
जहि[1] दिन सउं[2] तुम्ह गौनहु[3] राजा[4]। नगर न कतहु बाजन[5] बाजा[6]।
जहिआ[1] सउ परबस कहु[2] गौनहु राजकुमार।
तब मउं[1] राज भेस[2] सभ[3] छाड़[4] सुरजभान भुआर॥

पाठान्तर—(१) १ भा जब मउ तुम्ह गौनहु ए जबते कुवर गएहु मा जब सेउं तुम्हरे बसेहु ए जब मोहुल बसेहु। २ भा राज बैन मा राज बिता ए राजा बिना। ३ ए औ तजा भा मम तज।
(२) १ मा ए भी भा क। २ मा ए जानी। ३ मा मम। ४ अगुआ लारे।
(३) १ ए राजा। २ मा ए कपरा। ३ ए पहिरउ कारे। ४ मा ए मे 'सभ' नहीं है। ५ भा रहहि मा रहु।

(४) १ रा नगर नगर मा नगरी नगरी मा नगोउ नगर। २ मा गनिज न अनरनहु ग मुनी न रंठ भा मुनिन न रनहु। ३ ग मार गवारा मा नार कर मान्ग ए नार कै स्वादा।

(५) १ मा जिहि ए जा। २ मा मैं ए न। ३ मा मा गुग रनार ए गुह मीने ग गुम्ह मीन। ४ रा गया। ५ मा नवर बाजन बाजा ए बाजु बाज मा बाजा रा बजहुं बाज बजावा।

(६) १ मा मा जहिया मैं (मा—मा) परदेगह (परम्म—मा) गुग ए जहिया मौं परदेस गहूं, रा जहि दिन मा परदेस गऽ।

(७) १ मा तब मउ मा तब मा रा तब म। २ मा ग सीन (< भन) ए दिन। ३ ए म यह शब्द नहीं है भा गब। ४ मा छाडउ ए छाग मा छाडा।

अर्थ—(१) [महंता ने कहा] 'हे कुमार जब से तुम परदेस गए, राजा ने समस्त राज-काज छोड़ दिया; (२) राजा राज्य की बातें नहीं जानते हैं हम सब को मगुवा हैं वे ही समस्त कार्य करते हैं। (३) राजा ने काले कपड़े पहन रक्खे हैं और उनके प्रजागण तथा सेवक-भार्यादि सब मन मारे रहते हैं। (४) सारा नगर विषादयुक्त रहता है और कहीं भी नाद (बाजादि) के शब्द बजते हुए (कान में पड़ते) नहीं सुनाई पड़ते हैं। (५) जिस दिन से हे राजा तुम गए हो नगर में कहीं बाद्य नहीं बजा है।

(६) जभी (जिस दिन) से तुम हे राजकुमार परदेस को गए, (७) तभी (उसी दिन) से राजा सूर्यभानु ने राज्य की चेतना (सुधि) छोड़ दी है।

टिप्पणी—(२) बात < बत्ता < वार्ता। (३) कापर < कप्पड़ < कर्पट = कपड़ा। (४) नगर < नयर < नगर। बिसमार < बिस्मय = विसार। नाद < नद < नाद। (५) बाजन < बाद्य। (७) कुमार < कुमार।

[५३४]

मरना उहाँ गनि सप गहा। हाग बिहान बयर मउ भगा।
अम्बा दहु राज पह जाई। पहौं जार गउरि पगनाई।
मम्यो म मन्ता उरि पावा। जोबन मात पहर मन आवा।
मरना जाइ गइ पह मह। पवर बमार मउ भावा भर।
गुनि पर मार गज भौ गनी। तात मान जग पावा पानी।
नमर महारग रानी विरम मनो कमारि।
मुंपर बिपारि म आगउ मरमार्गनि मरनारि॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा मरना दिनि उहाँ (उहाँ—मा) ए मरना दिनि दी। मा मा ए मन। ३ मा मेउ ए रा गो।

(२) १ मा. रा ए अम्बा। २ मा गया। ३ मा पहौं पाई। ४ ए गउरि (< गउरि : गावरी गिरि)।

(३) १ भा रा ए अम्मा। २ मा महथा जस ए जो महथा। ३ ए भो।
(४) १ भा महथें भा ए महथैं । २ ए रा सौं। ३ भा मा ए कहा। ४ मा सेउ ए सौं। ५ भा मा ए कहा।
(५) १ मा कहइ ए मेह। २ मा बचन। ३ मा भा ए राउ। ४ मा जस पावेउ ए जस पावैं भा जसु पावैं।
(६) १ मा रानी (<रानी ; फारसी लिपि) ए राज रा राइ।
(७) १ ए कुंअरि (<कुंअर, फारसी लिपि)। २ मा बिआहि। ३ मा आवता।

अर्थ—(१) महंता वहाँ रात को [कुमार के] साथ रहा; सवेरा होते ही उसने कुमार से कहा (२) 'आज्ञा दीजिए कि राजा के पास जाकर आपको कुशलता कहूँ।' (३) आज्ञा लेकर महंता उठ दौड़ा और सात योजन (योजन=४ कोस) की दूरी एक प्रहर में आ गया। (४) महंता ने जाकर राजा से कहा, 'कुमार कुशल से आ रहे हैं।' (५) यह बात सुनकर राजा और रानी ऐसे हो गए जैसे [जल की कमी से] तप्त मछलियों ने पानी प्राप्त किया हो।

(६) [महंता ने पुनः कहा,] 'महारस नगर की रानी और विक्रमराय की कुमारी (७) श्रेष्ठ नारी मधुमालती को कुमार परिणय करके ले आए हैं।

टिप्पणी—(१) (४) महंत<महामात्य। (३) पहर<प्रहर।

[५३५]

सुनि कुंवर कै[1] आवन चाहा । घर घर नगर अनंद उछाहा[2] ।१
राज बार औ आंगन घर । चहुं दिसि बाज निसानन्ह[1] पर ।
भा[1] अंदोर मिरदंग[2] औ[3] बाजा[4] । जानहु जलद[5] गगन मह[6] गाजा[7] ।
कौसा दइ[1] पल पलक न[2] लाई । रैनि सभ हंसि खेलि बिहाई[3] ।४
सरद भान सुख[1] बरसत[2] आसा । जस पानी अमरित[3] पियासा ।
गावहिं[1] सुरस[2] कंठ जत[3] गावहिं[4] राज कुंवार[5] ।
कत्थक[1] बहु नट स्वांगी[2] महइत[3] करहिं मवार[4] ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा सुनि कै कुंअर की ए सुनि कै राजकुंअर। २ मा उमाहा।
(२) १ रा बाउ निसानइ, मा बजै निसानन्हि ए बाव निसाना।
(३) १ ए औ। २ ए मिरगमद। ३ ए में यह शब्द नहीं है। ४ मा बाजे। ५. मा जलधि। ६ ए तें। ७ मा गाजे।
(४) १ मा कवना देइ। २ ए पल नहि। ३ मा गंवाई। ३ ए सबै निसि जागि सिराई।
(५) १ ए में यह शब्द नहीं है मा सुनि ए ते। २ मा बरिसत। ३ ए जस पानी उमरई रा जैसन पानी पाउ।
(६) १ मा भा पावत ए गावेन रा गावन्ह। २ मा सुसुर। ३ भा बहुरागे मा बरगानें ए बहुरंगी। ४ मा भा ए आगे। ५ मा कुमार।

(७) १ मा कथा। २ भा मन त्यागी ए मटमाटक मा मनभावन त्याग।
३ मा ए बहु बिधि भा बहु मनबन रा भनइन (< मदन?)।
४ मा भा करहिं बिचार ए करैं बखार रा करहिं बखार।

अर्थ—(१) कुमार के आने का समाचार सुनकर नगर में घर-घर आनंदोत्साह हुआ (२) राजद्वार पर से आकर बाद्य रखे गए और चारों ओर निशानों (धौसों) पर आघात पड़ा। (३) जब मृदंग बजा तो [इस प्रकार का] अंधोर (शोर) हो गया मानो आकाश में बादल गरज उठा हो। (४) कमला देवी (कुमार की माता) ने आँखों की पलकों को नहीं लगाया (बन्द कोई नहीं) और समस्त रात उसने हुल-सोक कर बिताई। (५) सूर्यभान पुत्र के दर्शनों की आशा में इस प्रकार [हो रहे] थे जैसे प्यासा पानी का आसरा देखता हो।

(६) जितनी भी सुरस कंठ की गायिकाएँ थीं वे सब राजद्वार पर आ रही थीं (७) और इधर बहुत से स्वाँग करने वाले नट और भँड़ैती करने वाले काम्य कर रहे थे।

टिप्पणी—(१) उछाह < उत्साह। (२) बार < बार < द्वार। (४) रैनि < रयनी = रजनी। (७) कमार < कम्म = काम्य।

[५३६]

कनक[1] साज[2] राजदुआरी[3]। कनक अगिन[4] सो सम[5] अधारा[6]।
साज[1] सुर सो सातन्ह सहा[2]। पौन भगि अगम जनु[3] महरा।
जाही[1] आकर हस[2] अधिकारा। तम आपुन सभ पीत सवारा[3]।
मद[1] कर्ली[2] रूप महल[3] पोताए[4]। धमि[5] धन्न सभ मङ्गल पुरा[6]।
बाहर भातर पौरि[1] पगारा। सुरग पगार सभ रतनारा[1]।
कनक जराय कीन्ह[1] जन[2] महल[3] मनोहर धाम[4]।
तिन्ह[1] सम आपि कुमर दिन[2] राज सुंदर पह धाम[3]॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा कुमर। २ ए साजा। ३ मा ए दुआरी रा दुआरी।
४ मा अर।५ मा अैरि सरि ए जा दरो भा पर गय। ६ मा ए रा अवारी।
(२) १ ए ताजी। २ रा सातम सार ए सातहु सार मा सातर सार।
३ मा उपमें जनु ए उइ कआ रा उड़ि जन। ४ ए मार्ग ए मार्ग।
(३) १ मा भा जो भा जे। २ मा ए हारा (<हुत : फारसी लिपि)
मा लिउ हुत। ३ रा तम अपुने सम कीन्ह सिधारा मा तन आपना सवरि
सवारा ए भा ते सब आपनि भीति (भीत—भा) सवारा।
(४) १ मा मार ए मर्ग। २ ए कली। ३ ए भा महल। ४ ए बालाव।
५ मा धमि। ६ मा भा उपर लिलिखाय। ७ ए अस्सर्गरि मे अर्थ है
माहाये।
(५) १ ए बाहर भीतर पौरि। २ भा सब रतनारा ए सबै बाहरा।
(६) १ रा कनक जराव महल भा कनक जराउ रचित ए कनक जरी ने रचित।
२ रा सभ भा जन भा भल ए स मारू स्तर नहीं है। ३ रा भा
मंदिर ए मन्द। ४ भा धाम।

(७) १ मा ते। २ रा धैन किए, ए मा सुभर के। ३ मा कहूँ वास ए के अवास।

अर्थ—(१) राज-द्वार पर कुंजर (हाथी) सजाए गए, और वे स्वर्ण-जटित अंबारियों से कसे हुए थे। (२) तुरय (घोड़े) साजे गए जो कालों के मिलते थे जो [ऐसे लगते थे] मानो वायु वेग से मांगना चाहते हों। (३) जिस [कार्य] पर जिसका अधिकार था, सब ने इसी प्रकार सज्ज किया। (४) गई सुधौरी से समस्त महल पुताए गए, और चंदन जिस कर समस्त महल सुगंधित किए गए। (५) बाहर-भीतर प्रतोली द्वार और प्राकार (परकोटा) सभी रंगीन रेशमी वस्त्रों से रतनारे (रंगीन) किए गए थे।

(६) [कुमार] मनोहर के पास (उसके उपयोग में रहने वाले) जितने महल थे वे स्वर्ण से जटित किए गए, (७) और उनको राजकुमार को निवास देने के लिए चमकाकर सुभ्र (निर्मल) किए गए।

टिप्पणी—(२) तुरै<तुरय<तुरग=घोड़ा। मंगसर्<मगसु=मांगना (५) पौरि<प्रतोली<मुख्य द्वार। पगार<प्राकार=परकोटा। पटोर<पट्टोल<पट्टकूल=रेशमी वस्त्र। (७) सुभर<सुभ्र< सुभ्र<निर्मल।

[५२७]

होतहिं भोर[1] कुँवर घर आवा। सइ[2] धामन जत ससुरें[3] पावा।
औ सुध[1] मधुमालति चौडोला[2]। चहु दिसि भूरन्हि रतन[3] अमोला।
कुँवरु पिता पाँ[1] लागउ धाई[2]। नैन जोति अधर[3] जनु पाई।
पुनि ग[1] कुँवर जननी पाँ[2] परा। कमल पुत कंठ ल[3] धरा।
रही लाइ हिय[1] कुँवरहि रानी। तपत मीन जस[2] पावा[3] पानी[4]।
जवरे कंठ स लाव[1] रानी राजकमार[2]।
तब कौंला क सिहुन सउ[1] निकसे[2] दूध क[3] धार॥

पाठान्तर— इस छंद के बाद मा खंडित है।
(१) १ मा भयता (<मबिता—फारसी लिपि) जरे। २ ए सो (<सौ)। ३ रा जत सासुर, मा जत ससुर, ए जा ससुरे।
(२) १ मा मा ए, सग। २ रा ए चडोला। मा मा चौज डोल। ३ ए चढ़ा मुनामन कुमर।
(३) १ मा पाइ रा पग। २ मा मा लागउ धाई ए लागा धाई। ३ मा ए अधरे।
(४) १ ए पुनि गै रा बहुरि। २ रा जननि पग मा जननि पाइ। ३ रा धरि ए मा चहि।
(५) १ मा रहि लावी हिय ए रही लाइ गरे। २ मा जनु। ३ मा पायउ। ४ ए मूने पान परा जनु पानी। (तुम राम चरित मानस २६१ १)।
(६) १ मा लै लायउ ए चहि लायउ। २ मा भा राजकुमार।

(७) १ रा. अम्पन तें मा. गोहन म" ग. अम्पन सौं। २ मा. निसरा मा. निसरी ग. निसरु। ३ मा. ग. की।

अर्थ—(१) सवेरा होते ही कुमार जिसका शायद ससुराल में उससे पाया था उसके साथ घर आया। (२) और उसके साथ में मधुमालती का डोला था [जिसके] चारों ओर अमूल्य रत्न झूल (लटक) रहे थे। (३) दौड़कर कुमार पिता के पैरों में लगा तो [ऐसा लगा] मानो अंधे ने नेत्रों की ज्योति प्राप्त की हो। (४) फिर आकर कुमार जननी के पैरों में पड़ा [तो] कमला ने पुत्र को ले (उठा) कर गले से लगा लिया। (५) कुमार को रानी गले से [इस प्रकार] लगाए रही मानो [जल की कमी से] तप्त (संतप्त) मछली ने पानी प्राप्त किया हो।

(६) जब रानी ने कुमार को ले (उठा) कर गले से लगाया (७) तब कमला के स्तन से दूध की धारा निकलने लगी।

टिप्पणी—(२) चौडोल < चतुर्दोल = पालकी। (७) थिहन < स्तन।

[५३८]

अमर न होत कोइ जग हारे[1] । मरि जो मरै[2] तेहि मारु[3] न मारै ।
सो कहु[1] आगि सहा जइ[2] आँचा । सो जग जनमि काल सउँ[3] बाँचा ।
पेम मरमि जइ[1] आपु उबारा[2] । सो न मरै काहू कर मारा[3] ।
एक बार जो[1] मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि[2] नियर[3] न आवै ।
मिरितु क[1] पन्थ[2] अंब्रित होइ[3] गया । निहचै[4] अमर[5] ताहि सै[6] कया ।
जो जिउ[1] जानहिं[2] काम सों[3] पेम मरन करि नेम ।
फेरि न हो[1] जग काम[2] सों[3] मरन मान[4] जग[5] पेम ॥

पाठान्तर—(१) १ मा. अमर न काई काहू कै पारै ए अमर न हा" कोई कलि मारै। २ ग. में यह शब्द नहीं है। ३ मा. मीरै। ४ मा. अमु ग. मिरु।
(२) १ मा. ग. की। २ मा. जिनी ग. जो। ३ मा. मैं ग. मे सो गा।
(३) १ मा. मरमि जिनि ग. मरमि ज। २ मा. उबारे ग. उबारा। ३ मा. में न मरै न कोहु कर मारा ग. मा ना मरै न का के मारा।
(४) १ मा. केर जो ग. कमि जो। २ ग. में यह शब्द नहीं है। ३ मा. नेर।
(५) १ ग. मिरितु कु। २ ग. में यह शब्द नहीं है। ३ ग. भै। ४ ग. निस्चै। ५ मा. भा अमर। ६ ग. की।
(६) १ मा. जो जिउ ग. जो जिउ। २ मा. जानै ग. जान। ३ मा. ग. में सो मा। ४ ग. मरनि कै।
(७) १ मा. फिरि दूर ग. जो है जनु। २ मा. क। ३ मा. ग. भै। ४ मा. मरनमान ग. मरनि मान। ५ ग. में यह शब्द नहीं है।

अर्थ—(१) [इस संसार-सागर] कोई हार (थक) जाए [तो भी] जगत् में कोई अमर नहीं होता है [केवल] उसी को मृत्यु नहीं मारती है जो [एक बार प्रेम के मार्ग में] मरकर मरता

है। (२) जिसने प्रेम की आग की आँच सहन कर ली वही जगत् में जन्म लेकर काल से बचता है। (३) प्रेम की शरण में [आकर] जिसने अपने-आप को उबार लिया वह किसी के मारने से नहीं मरता है। (४) एक बार जो मर कर जीव (जीवन) प्राप्त करता है पुन: काल उसके निकट नहीं आता है। (५) [इस प्रकार] जिसे मृत्यु का फल अमृत के रूप में प्राप्त हो जाता है उसकी काया निश्चय ही अमर [हो जाती] है।

(६) हे जीव यदि तू काल का भय जानता (मानता) है तो तू प्रेम की शरण [में जाने] का नियम [अंगीकार] कर (७) तब दोनों जगतों का काल-भय नष्ट हो जाएगा [क्योंकि] इस जगत् में प्रेम ही शरण-शाला है।

टिप्पणी—(१) मीचु < मृत्यु। (४) नियर < निकट। (६) भौ < भय। नेम < नियम। (७) फीट < फिट्ट [दे]=टूटना ध्वस्त होना। सरन < शरण। साल < शाला।

[५३९]

औ अमित जहँ*[1] छाज असो सुभर सो ठाउ ।
कबिता गात जबहि लहि*[1] रहइ जगत महँ नाउ ॥

पाठान्तर— यह छंद रा के अतिरिक्त किसी प्रति में नही है।

(१) १ रा प्रतिलिपि मे जहि है जो फारसी लिपि म लिखे 'जहँ' की विकृति लगता है।

(२) १ रा प्रतिलिपि मे 'लह' है जो निरर्थक लगता है।

अर्थ—(१) और जहाँ अमृत शोभित होता है ऐसा भरपूर वह स्थान (प्रेम की शरणशाला) है; (२) जब तक कविता-गात्र (काव्य-शरीर) [बना रहता] है संसार में [प्रेमी का] नाम भी [बना] रहता है।

टिप्पणी—(१) ठाउ < स्थान। सुभर = भरपूर, सघन। (२) गात < गात्र। नाउं < नाम।

— समाप्त —

परिशिष्ट

प्रक्षिप्त छंद

रासो की विभिन्न प्रतियों में पाए जाने वाले वे छंद जो समस्त बहिरंग और अंतरंग साक्ष्य के आधार पर प्रक्षिप्त प्रमाणित हुए हैं नीचे दिए जा रहे हैं। इनके साथ दी हुई संख्या उक्त प्रतियों में ये जिन स्वीकृत छंदों के बाद आते हैं इसका निर्देश करती है और इनके साथ दिए हुए प्रतियों के संकेत यह निर्देश करते हैं कि ये अलग-अलग किन अथवा किन प्रतियों में पाए जाते हैं। जो छंद एक प्रति में ही हैं वे उसके अनुसार दिए गए हैं और जो एक से अधिक में हैं वे उनमें से किसी एक के अनुसार ही दिए गए हैं। इनमें से किन्हीं भी छंदों में संपादन का कोई प्रयास नहीं किया गया है और न पाठांतर दिए गए हैं।

[२० अ]

ए असा पीर महा परवान । तीनिभुवन मह सो जान ।
गुरु क बचन प्रम (परम) पद पाव । सतगुरु हो सो ग्यान लखाव ।
जो अग्या गुरु के न मान । कहा कर गुरु सिखा न जान ।
हिय का अंधा खोइ गवारा । जस उल्लू दिन हो अन्धारा ।
चेतहु मूढ गुरु के उपदसा । नातरि मुच होत अन्देसा ।
चलहु मुगुध दस मह एहु गुरु औराधि ।
आठो सरीर सुध होइ करहु समाधि समाधि ॥

[१६४ अ]

मा ए बठ महूम सुन बात हमारी । पछिम म का करहु मवारी ।
जीउ मउ ग परबस मोरा । दहु कहु कहा सुनो बस तोरा ।
जिउ अरु कया कर चित राजा । जहाँ गउ साम सब काजा ।
चित गमद गो फरि को आना । ग्यानहु केर न आंकस माना ।
चित राजा कहे रहु गोसाई । मन तन रसना सग जाइ ।
त सब गुन सापून (सापूरन) दखु बिबेक बिचारि ।
घाट तुरग कि चितमिथ्या कर सौं गो बरुआरि ॥

[२०२ अ]

ए कहे सखी सब मोहि बुझाइ । पमा सुरिस चली अबराई ।
मात पहा न न्यावहु बारा । उनक आयसु कर प्रतिहारा ।
कोनौ सखी कर हम छाहा । कोनौ उससि दइ गले बाँहा ।
कोनौ सखी पान सिआव । कोनौ सुरस बचन सुनाव ।
बहु बिधि चाइ कर स नारी । रूप अपछरा जोबन वारी ।
त सब मिलि क सगही रहसि चली अवगाउ ।
मक विधि तब न ममारा को अस भो विपाउ ॥

[२२१ अ]

ए तुर म पाग तजा घर साय । जिम बाँधि मर पीठ चढाये ।
हाथी बन तजि आंकस सह । सीस माथ धूरि मरि रहू ।
भमिन्ह मीग महा दुख भारी । नोव निरस जो बीच सघारी ।
भडी मथन रोंव तन भार । बरम्म पीठि पखान पसारे ।

कुँअर म सबा पम कर थावा । वनिम अवम एक माम मरावा ।
पपिहा जुग तक माम रहु पिउ पिउ बूंद काहि ।
पिउ मगहि नहि चीन्ह पमा दुम उर जाहि ॥

[३२९ अ]

ए हिये मांह बम प्रान पिआरी । कम क मा जान विमारी ।
निमि मोबम जा विधि बगराय । तहि कारन हम भम फिराय ।
एम कोह मैं विधि दुम दीन्हा । कौन करम हम पुरब कीन्हा ।
जौं मगि मा अह मिल मुरारी । तौं लगि मरन होन दवारी ।
छांडा माम पिता घर राजा । वाहि बिन जीवन कौन काजा ।
जोउ गो जम मचरा तन जरि मो बिभूति ।
पमा चित्त म उबर मधुमालति करतूति ॥

[३२७ अ]

ए छोल यह मनुराग जगो । कलित एक मान न्म मना ।
मन परिहा दम उर दाठ । विमल गुपुत मा कवन जा मान ।
तन दपम गुर मान मागू । अब हम दगु करन हौं जागू ।
गुन सिरि सिरि करह अलप । हमहि रह जे मनमथ दप ।
गुन मान रम माग मनामा । अहनिमि हम मन जिरह नवामा ।
गुम मधु मरम भोग थिर [भ] रहो तब थाग ।
हम भरमा कउ निरबही निम दिन मन जगाम ॥

[३३२ अ]

ए इमिल रचिन छन ३३२ क पादभिरा में दी हुई अतिरिक्त पंक्तियाँ ।

[४९४ अ]

मा ए पति पम गब गमा हवाग । तब बार गनि आर गा तारा ।
और गनि त्माना पमारा । नार म गा जावन बारा ।
गम अन र गत्न मा । कभार मनि मान रम्यो ।
जानगि दगो गम मिलि गा । गग गम गग गम निरना ।
बार गपाभा जावन पा । दुनो गर मान वा गा ।
जानमि मगुर को लिय भार गव नाही ।
जाना कार नार दिनन द गनि मान दर्ता ॥

[२० अ]

ए असा पीर कहा परकास । तीनिभुवन भव सो पास ।
गुरु क वचन प्रम (परम) पद पाव । सतगुरु हो सो ग्यान लखाय ।
जो अपया गुरु क न मान । कहा कर गुरु सिखा न आन ।
हिय का अन्धा सोइ गवारा । अस उल्लू दिन ही अन्धियारा ।
चलहु मूढ गुरु क उपदसा । नातरि मुय होस अन्दसा ।
चलहु मुगुध दस मह लहु गुरू औराधि ।
आठो सरीर सुध होइ करहु समाधि समाधि ॥

[१६४ अ]

भा ए घट महूप सुन बात हमारी । पंडित भ का मरखु गवारी ।
औउ भउ ग परवस मोरा । बहु कहू कहा सुनौ बस तोरा ।
बिउ भए क्या कर जिल राजा । जहाँ गउ साप सब काजा ।
बिल गयद गौ फरि को आना । ग्यानहु केर न अांकस माना ।
बिल राजा कहँ रह लोभाइ । नम सन रसना सँग जाइ ।
त सब गुन सापून (सापूरन) दकु बिबक विचारि ।
काट तुरग कि चितमिथ्या कर सौं गौ कफ्आरि ॥

[२०२ अ]

ए कहु सखी सब मोहि बुझाइ । पेमा तुरित चली अकराई ।
मात कहा न ल्यावहु बारा । उनक आयसु कर प्रतिहारा ।
कोनो सखी कर हम छाहा । कौनो उससि दइ गल बाँहा ।
कोनौ गाती पाम जिमावे । कौनो सुरस मधन सुनाव ।
बहु विधि कोइ कर से नारी । बय अपछरा जोयन बारी ।
त सब मिलि कै सगही रहसि चलीं अकराउ ।
मरू विधि तब म सभारा ओ बस मो विपाउ ॥

[२२१ अ]

ए तुर न पाग तजा मर लाय । जिम बाँधि मर पीठ चढाय ।
हाथी बन तजि ओकम मह । सीस माय धूरि भरि रह ।
भमिन्ह गोग गहा दुग भागे । लोक निरत जो बीच अभागे ।
भयो सयन रांव तन माग । बरधन पीठि पलाम पमारे ।

ईसर न राजा एस कर पावा । बरिस दवस एक मास मरावा ।
पपिहा जुग एक माध रह पिउ पिउ बूंद काहि ।
पिउ मर्राहि नहि चीन्ह एसा दुग उर जाहि ॥

[३२९ म]

ए हिय मांह बस प्रान पिआरी । कस क मो जान बिसारी ।
निमि मोवन जो विधि अगराय । तहि कारन हम भम फिराय ।
एहम कोइ मैं बिधि दुख दीन्हा । कौन करम हम पुरव कीन्हा ।
जौं लगि ना जहु मिल मुरारी । तौ लगि मरन होह दयहारी ।
छाँड़ा मात पिता घर राजा । तोहि बिन जीवन कौन काजा ।
जीउ गौ जम सघरा तन जरि भौ बिभूति ।
एसा चित्त न उबर मधुमालति करतूति ॥

[३२७ म]

ए छोड़ह यह अनुराग जली । कतिर छ[illegible] क[illegible] [illegible]म गनी ।
मय परिहरहु दद उर दोठ । पिअन गुपुन मा मनम जा मीठ ।
[illegible] दवग राग मान भोगू । अब हम [illegible] मरन हौं जागू ।
गुर फिरि फिरि फरह जनम । हमहि दह ज मनमथ [illegible] ।
गुह मानह रम भोग मम्मामा । अहनिसि हम मन [illegible] नरागा ।
तुम यहु पलम भोग पिर [म] [illegible] [illegible] पाग ।
हम भनल्प कउ निरयही निग [illegible] गम उपाग ॥

[३३२ म]

ए दखिए स्वीकम छद ३३२ प पाण्डिपा में दी हुई अतिरिक्त पंक्तियाँ।

[४९४ म]

मा.ए पुनि पभ गय गगा हकारी । [illegible] धार गनि गा[illegible] गा [illegible] ।
भनि ग नि [illegible] समाग । मार गरगा जाबन [illegible] ।
गग अपन प [illegible] गा[illegible] । [illegible] गनि[illegible] [illegible] [illegible] ।
जानगि [illegible] गग मिलि [illegible] । [illegible] गग [illegible] गग [illegible] ।
काम मपानी जाबन [illegible] । दूनो [illegible] पाग [illegible] [illegible] ।
जानगि गगर को [illegible] मार गग गर्ा ।
जामा [illegible] काज [illegible] । द गनि [illegible] [illegible] ॥

[५०२ अ]

ए साईं सेवा किये सुख होइ । साइ सवा दुख पा सोई ।
जो पिउ क मन दुखित जानहु । तहवां बिछू बिरग ना मानेहु ।
त्रियहु सब साइ की पसी । तन मन लाय ध्यान रहु बसी ।
तो प हो जो निरपै पीऊ । कहहु प्रीति प्रभु द क जीऊ ।
साईं सेवा जीवन राखहु । पूछत बात मधुर सौ माखेहु ।
प्रीति जो करब साइ सों सवा क घर जानि ।
साईं सवा नित नई जानो मन अनुमानि ॥

[५०३ अ]

ए, रूपमजरी मधुरा रानी । देइ पीउ को सिख बुधि जानी ।
सुनहु कुमर मुह मूनो बारी । स्रवन कियहु उपदस हमारी ।
राज कुआरी कुल उजियारी । कियउ काम ज भाव न गारी ।
पीउ बिछुर रानी दुख होइ । कोली झार दुख सह न कोइ ।
अब मा भेंटब कबहू बारा । म जाइह दुह सायर पारा ।
निज जानहु अब रानी पीउ जो भई पराति ।
सब कुमरिहि कंठ लायउ रोयेउ मासि झकारि ॥

[५०७ अ]

ए जो जोबन मा उपज तरगा । सदा रहत बालापन अगा ।
जोबन उमगत भौ बिछोहा । अब लहते माउ मग सोहा ।
पिउ क सग नारि प लहई । पिउ की प्रीति अत निरबहइ ।
याहू कौन दिन मह समागी । वाहि तोहि पम प्रीति जो लागी ।
मन मगा सुनि कठिन बिछोवा । बिधि किन्ह पम रहु मा गोवा ।
सब गौ मुगति सयानप जब बिछर दिज जोग ।
मुकुति प्रान सौं प गत गहि सौं और न योग ॥

[५०६ अ]

ग दनि बमनि क कटुब बिछावा । पर आपन प गहवरि रोवा ।
जइ देखा मा हिय भर रोबा । मन समिर रबत तन भोवा ।
पाथर भर हिआ जहि करा । आंसु न रहा नन तहि बरा ।

दगन ताहि दिआ मग माना । चला उड़ाइ जात घर प्राना ।
सुग अग्रिस रग भम्मि ज गिआ । एहु सुन्न वोहि दुग विधिन दिआ ।

दूनौ चलिहहि समुर गाम रहहि न भाउ ।
चलिहि भत सग लक हम कछु बहुत न भाउ ॥

[५२५ अ]

ए ममुझि ममुझि बिछुरन परा । कस जम निरवाहब बोग ।
अब प्रदग नहि मग जाइय । आस नाहि जो जिअत मिलाइव ।
दहु कहि घाट पिआव पानी । को मिलाव बिछुरहु त आनी ।
का बिधन जो लिखा लिलारा । कहाँ जाइ गइव जमुआग ।
रहेहु मीर मार लत गअसी । म तजि बन्दुव भइ परम्मी ।

म कस जिउ रागव तुह बिछरन घर मीर ।
कम जम निबाहव यहि बिर्योग ज पार ॥

[५२५ आ]

ग पुनि दाउ राजकुअर बरनारी । रोवहि मिलि क जो अबवारी ।
मौगि सौरि बालापन नहा । बिछुरन भो बहुत मदहा ।
निज जानउ दुइ जिउ माहीं । बहुरि बिछरि ते मिलना नाही ।
कीन्ह भागु हम मिलन नियरा । आजु उन्मि मा बिरहा बरा ।
आजु द अहम दुहूँ बगराइ । आजु बन्धुम तजि भइ पराइ ।

अब बिछुर न्ह मिलिह बिमि ब धापब धीर ।
कम जन्म निबाहब एहि बियोग क पीर ॥

[५२५ इ]

ग पाव पारि गाय बरनारी । मही मन दु मीर पनारी ।
र रिगि य मरद दुग मोऊ । मिलन रहा आस गो गाऊ ।
पर बन्ना जो हा गयोग । मा जान जहि पम मा पीग ।
आनि आनि प्रानि जा जाना । बन्नी हम जा मन निन पाना ।
जीर जानि मो जम बिलावा । बर लागि ज कर्मागन रावा ।

मारा बम पर हम दाऊ मिलन रहा गर धार ।
माउ भाग मय गनि जानम कौन प्रकार ॥

[५३८ अ]

मा ए उतपति जग जती चलि आइ । पुत्र मारि अज सखी कराइ ।
मैं छोड़ेहु यहि मारि न पारेउँ । सहीं मरिहि जे कलि औतारेउँ ।
सत सुनो ससार सुभाऊ । जो मरि जिए सो मर न काऊ ।
सकति काल तेहि निअर न आऊ । सो जग पम सजीवन पाऊ ।
पेम अमिअ जे पाइअ बासा । सेस काल तहि आव न सासा ।
जहि भो पेम अमी सौ परिच मर कपार ।
आँधी सहस बल कली स त्रिअहि पेम अभार ॥

शब्दानुक्रमणी

[दी हुई संख्या रचना के छंदों और उनकी पंक्तियों की है।]

अबार < अ + वेला = [मानमादि की] वेला का
अतिक्रमण ४७२ ४
असनान < स्नान ४५२ २
असपरस < स्पर्श १६१ १
अहार < आहार २६१ ७
अहेर < आखेट १ २ ४५१ ४ ४६६ ६
आइ आइउ आउ < आयु ४४ ५ ९९ ४
१७१ १ ५६ १ ४५ १
१९९ ४ १६९ ६
आएसु < आदेश ६२ ४ ४८७ १
४५९ २ ४८७ २
४५९ २ ४८७ २ ४६८ १
आखर < अक्षर ४४६ ४ ४६८ १
आस < अस १११ १
आकस्मात < अकस्मात् २८१ १ १९ ७ ४२ ७
आगर < अग्र १७ १
४१८ १ ४१८ ७
आछरि < अप्सरस् = अप्सरा २४७ ७ १४६ ४
१४६ ६
आवि < अस्ति < असित = प्रवेश ३५४ ५
आन < अन्य १ ५ ६ १५१ ४ १५९ ५
आन < आज्ञा ६२ २ ६२ ४ ६२ ६ ४४१ ६
आप < अप्प < आत्म १ २ ११ २ ११ १
२१७ ५
आफ < अप्प < अर्पय् = देना भेंट करना ११४ ७
१९९ २ ४१८ १ ४१७ ५
आरन < अरण्य ४ ३ १ ४ ७ १
आगी < आ + रव = आहट ४७ १
आम < आमा ४५९ १
आमरी < आमय १५७ १
आहर < अहस < अफल = निष्फल ५ १
उगम < उपगम < उत् + गम् = उमड़ना ५ ७-१
उगाह < उद् + ग्रह् = लेना ५१ १
उघर < उग्घर < उद् + घट् = खुलना १२६ ७
४६८ १
उचार < उच्चाड < उद् + चाट्य् = खोलना
११ २ २५ १ १ १ १ ४ १ ७
४५१ ७ ४७१ ७ ४८७ ४
उछाह < उच्छाह < उत्साह ५२ २ १ ६
११ ० २८ ४ २८७ ० १९२ २
४ २ ४ ५१५ १
उजियार < उज्जल ४ ४
उजाह = जागना ८१५ ४
उत < तत्र = वहाँ २९१ ४
उतंग < उत्तुङ्ग = अत्यन्त ऊँचा १२ १ २७८ २
आमा
उतिरा < उत्तर < उत् + तृ = उतार
१७८ ८

उदइ < उददस < उदयिन् = उदयवान् उन्नति
शील ११ १
उधर < उद्धर < उद् + धृ = ऊपर उठना ४७१ २
उबसी < उद् + ध्वस्त = विनष्ट १११ ४
उधार < उद्धार = ऋण ३२१ २
उनहारि < अनुआर < अनुकार = अनुकृति
आकृति ११५ ३ १५८ १ १५८ ५
११२ १ १७१ १ ४२ ५ ४२ १
उन्हारि < अनुआर < अनुकार = अनुकृति
आकृति १५१ २ १५१ ७ १५७ १
१६ १ ११८ ७
उनीदि < उन्निद्रा = उचटी नींद १३८ ४
उपखान < उपाख्यान = कथा १५ ५ ४५ ४
उपगार < उपकार १४२ ७ २४१ ७
उपन < उद् + पद् = उत्पन्न होना ४१८ १
उपाम < उप्पाय < उद् + पादय् = उत्पन्न करना
४ १
उपाय उपाव < उप्पाय < उत् + पादय् = उत्पन्न
करना बनाना २८ २ ६७ २ १११ १
४८१ २
उपार < उप्पाड < उद् + पाटय् = उखाड़ना
२१५ ५ २९९ ६ २७५ १
उफर < उप्फड < उद् + फल् = उछलना ऊँच
जाना ४४ ५
उबटन < उव्वट्टन < उद्वर्तन = शरीर का मै
दूर करने के लिए लगाया जाने वाल
लेप ४११ १ ४८४ १
उबर < उव्वर < उद् + वृ = शेष रहना
जाना ४१९ १
उबार < उव्वार < उद् + वर्तय् = बच
२९७ १
उमास < उग्गास < उद् + भासय् = प्रक
करना ११ १
उम ऊम < उग्ग < ऊर्ध्वय् = ऊँचा करना
होना उठना बड़ा होना
१२१ ७ १८५ १ १४६ १ २
२५५ १ १४८ २ १६ २ ६
४७१ ४ ४७५ ४ ५ १ २
उरध < ऊर्ध्व = १५७ ६
उरेह < उल्लेख = रेखाओं द्वारा
बनाना ५७ २ २६ १
उलेह < उल्लेह < उत्थ + ईष् = आनन
३७८ ४
उसीस < उत्शीर्ष = तकिया २ १ ५
ऊख < इक्षु = ईख ४१ १ २११

अग < गमन < गम् = इतना १२१ ६ २१२
१९७ २
अग-अगि < अयन-अयन = मार्ग-अमार्ग ५ ५
ओगवि < आगधि १५५ ७ १११ २ ४२९ ३
ओगय < आउट्ट < आवृत् = फरना १६४
१७२ १ ३१ १ ३ ४ ४२८ ६
औनग < उन्नमित ४८३ ६
आनव < उमग् = नीचे की ओर आना लुकना
४ २ १
आनयन < अवनमन = नमस्कार २७३ ५
औवरी < उन्मरित < अपवरिका १२६ ७
आगर < अवनत < अवमग्न = लाग प्राप्त
४५ १
आगर < आस्कार [दे] = माला मरना ५ २ ४
आगार < आस्कार [दे] = भुमाना मराना
५ २ ८
ओम < औमाम < अवस्माय = औम १५८ ४
ओमर < अवमर = वेला बारी ८५ ७
मोर < आट्ट [दे] = भरमन पीठ हुए हुआ
१११ १ ११७ ४
ओगार < अवगाम = धरी ४१९ ४
ओग < अवाग = पुर ४८५ १
ओपुन < अवमुण ४७३ १
ओगार < अव + आग्र = निश्चय करना ४६ २
ओनम < अउम + उमुग < अमुम + उगुम [दे]
= मनुष्य-दार १५६ १
ओराप < रम्भ = चार चार म करमाना
म्हाना ५७ १ ५७ ४
कचन < काश्चन १७८ ५
कहार कहारि < कगपार १५ १ १७७ १
१८९ ५ ८ ४ १ ० १ ४७८ ६
कन < कान = प्रिय ५ ६ ४ २ ७
४११ ७ ४९१ ६
कपा = कपरी-सुदरी पुराने कपरा न बना हुआ
आजना १७२ ६
कपाविका < गृनिगविका = गृनिका की मनाह
माना ७४ ३ ८१ २
कपार < कपाल = कपाल १८५ २ १
कजरी बन < कदरी बन १८१ ८
कनार < कनार ११२ ११ ७ ६८३ ५
कन < कन = कर्ण ३ ५
कनी < कर्णी = कामनी ११८ १
कनियार < कर्णिकार ७१ १
कर्ण < कष्ट < कमर १ ५ २ ८
१७५ ५, ५१ ६

कगार < कपाल ६८ ३
कबिलास < कैलास = शिवलोक १२ ५ १५ ७
८४ २ १०६ २ १४६ ४ ३४६ १
कया < काया १ ३ १५३ २ २९३ ७
४१४ ५
कलपुनि < कल्पद्रुम ११ ७
करवल < कगपत्र = जागा १२ २ १ ६ १
करवार < करवाल = खड़ग ३ ७
कर < करा ८ ५ ११ ४ ८७ ४ १० ५
१ १ १ २८० ४
करार < कराल = घाम २१ २
करि < करिट ११ १ १७ १
करी < कलिका < कलिका १२ १ १४२ ५
कलप < कल्प = कल्पना १ ६ ४
कली < कलिका < कलिका १२ १ ४३५ ३
कलसा < कलश २१७ ५
कवार < कपाट < काप्य ५३५ ७
काइ < किम् = क्या ४१६ ७
काउ < कदापि ८८ ७ ५५ १ २५ ३
२११ १ ३५७ ७
कार < कष्ट = दोग २४८ ५ २११ ६
२२ ५
कावरि < कम्बि = बांस का टुकड़ा जिसे
कंधे पर रखकर उसके छोरों पर बोझ
लटका कर ढोया जाता है ११५ ४
कागर < कागज [फा] २८२ २ ४ २
४८१ २
का < काष्ठ = कठी १७८ १
कानी < कन्नरी < कन्नरी = कानी ४ ८ १
८१ ५
कातर < कातर < कातर = कातर १ १
३३५ ५ ८५५ १ ५३३ ३
कामि < कामिन < कामिन् = कामना १ ८८
कामिन < काम < काम = काम ८५ ३ ४१४ ७
कारि < का < काय = कर ८५८ ४
किरना < किरण = एक प्रकार की मछली
१७ ५ १७८ ३
किन < कुन = कर्ण ८१ ८
किरि < किर < किर = निश्चित रूप से ४७१ ४
किरिन < किरण = प्रकाश १८ ८
कं < कुमारिनी ३ ३ ८
कुमारि < कुमारी ४८५ ७ ८ ४
कुर < कदुम ८८ ३ ८ १ १
कुजा < कुंजर ८११ २
कुंभा < कुंभक = गागरी ३ ३

जोव < जोअ [दे]=देखना ११ ५ १४५ १
जौ < जउ < यदा = जब २९ १ २९८ १
१४७ ७ १४८ १
१२६ १ १११ १ १७१ १ ४५७ १
१५ २ १५ ७ ४११ १ ४७१ ५
४५८ १ ४५ २ ४१५ ७ ४२२ २
४१२ २ ५ २ ४ ५२६ १ ५२८ ७
५२२ १ ५२१ १ ११८ १
जौ < जउ < यदि १४ ४ १११ ४
२१४ १ १ १ १२१ १ ५ १ ४
४१४ ५ ४११ १ ४५९ १
जौ < जाओ < यत = कारण कि क्योंकि
४ १ ११ ५ १४७ १ २२ १
२७१ २ २१८ १ १२८ ७ ११७ ७
१४७ ७ १८२ ५ ४ ७ १ ४२८ ५
४४८ ४
जौन < यमुना ४ २ २
झख [दे]=संतप्त होना संताप करना १४७.७
झर < झड < धृ = झड़ना ४११ ७
झांख < झंखर [दे]=शुष्क तरु ४ १ ७
झांख [दे]=एक जाति का हरिण ४६४ ४
४६५ ७
झांझर < जर्झर ८४ २
झाप < झंप [दे]=ढकना ४५९ ५
झार < ज्वाला १ ५ १५ १ १११ २
झूर < क्षि (?)=क्षीण होना झुलना ४ १ ७
टेसू < किंसुक २२ १
ठा < स्थान २२१ ५ १७१ ५
ठांई < स्थान २५ १ ४५१ १ २७१ ५ ४२१ १
ठाउ < स्थान १९ १ २११ १ २२४ २
२१९ ५ २४९ १ २८५ ७ १२४ १
१२७ २ ४२८ १ ५११ १
डर < दर २७१ ५
डाइनि < डाकिनी १८१ ४ १९२ ४ १८७ ५
डारि < डाल [दे]=गाना २१९ ४
डीठि < दृष्टि २११ ५
डील < डोल्ल [दे]=शोथन १ ७ १ ११४ ४
ढील < ढल [दे]=ढला शोठ ढका १७४ १
तन < तनु < तत्त्व १७ १ २३८ ४
तबोल < ताम्बूल=पान ५२ ५
तत < तत्त्व २१५ २
तराइन < तारिकागण २१८ १
तराई < तारिका ११५ ४
तराम < त्राम ११४ २
तरमारा < तरवाल ८ ४

तबं < तम = तमोभिभूत होना ८१ ५
१४१ ४ ११८ ४
तावरि < ताप = ज्वर ४७२ ४
ताजी < ताजी [फा]=घोडा ४४२ ४ ४१० २
तात < तत्त < तप्त २६५ १
तार < ताल = ताड का वृक्ष १७ २
तार < तारक = नक्षत्र ५११ १
तारी < ताडिय < ताडित = पीटा हुआ बजा
हुआ (?) ७४ २
तिन < तृण १५८ २
तिर < तर < तृ = तरना १४७ ५
तिरिया तिरी < स्त्री ११ ५ १
तिसा < तृषा २२१ १
तिसाए < तिसाइय < तृषित ८७ १ १२ १
४४८ ४
तुरित < त्वरित ११४ १ ११९ १ ४८८ ५
तुरिय < तुरग = घोडा १७८ १ १७७ ७
तुरी < तुरग = ४४ ४ ५१ २
५११ २
१७८ २ ४ ७ ५ ७२ ७
तूर < तूर्य = तुरही ११ १
तोखार = तुखारिस्तान का घोडा घोडा
३ ८ ५
१७७ ७ ४११ १ २ ८ ५
तौ < तउ < तदा = तब २९ १ १५२ ५
१११ १ १५ २ १५ ७ ५१४ ७
१११ १ ४७५ ४ ४७१ ५ ४ ७ १
तौ < तओ < ततम् = इसलिए
थनवार < थाणवाल < स्थानपाल = थानेदार का
चौकीदार १७८ १ ४११ १ ४११ २
थर < स्थल १२ १
थाम < थंभ < स्तम्भ् = निरोध करना रोकना
१ ७ ७
थाम < स्थाम ११ १ १ ५ २ २४१ १
थार < थाल = चपेट ४११ १
थाहु < स्थाघ = ४ ५ १
थिर < स्थिर १५१ १
दव < द्रम ११ ७ १ २
दरब < द्रव्य ५७ १ १५१ ४ १ १
दरिमरि < दलित-मलित ११५ ५
दवा < दव = दावाग्नि २११ १ ४ १ १
दवार < दव = दावाग्नि ४१२ ५
दहु < दश १८ ७ १ १ ५ २११ १
दाऊं < दाव = दावाग्नि ४ २
दाख < द्राक्षा = अंगूर किसमिस-मुनक्का
४५१ ७
दाहिन < दक्षिण = अनुकूल २/८ २

निरित < मृत्य १४ ३
निलार < निलाड < ललाट ४९ ५
निसर < निस्सर < निर + सृ = बाहर निकलना २१ ४ २११ ५ ३७५ १ ४१ १ ४७४ ३
निसार < निस्मारय = निकालना १८३ ५
निहुकलंक < निष्कलंक १ १ २ ३ २७ २
निहुचै < निश्चय १२२ ३ ३११ ७ ३६२ १ २७१ ५ ३२६ ५ ४८५ ५
निहार < निभास < निभालम् = देखना निरीक्षण करना ७१ ६ २९४ १ ३५८ ६ ४७९ ६
निहाल < निहेलण = घर मकान ४४१ २
निठुर < निष्ठुर [दे] = मुकना २६६ ५
निहोरा < निहोड [दे] = निपथ निवारण १६५ २
मीम < निम्ब < निम्ब = एक पुराना माने का सिक्का ३ ४
मीपुन < निपुण ५७ ७
मीव < निम्ब १६ ७
नेगी < नैगमिक (?) = निगम (नगर) का अधिकारी (?) ३५९ १
नेम < नियम ५३८ ६
नेर < निकार [दे] = आँख गड़ाकर देखना १९१ २
नेह < स्नेह ११ ६ ४१५ ६ ५ ६ १
नै < नद = नदी ३८४ ५
नौ < नव = नवीन २४२ ३
पंखि < पक्षिन् ३६ ६ १८ ४ १९३ १ १९४ १ ३५२ ७ ३५३ १ ३५३ ४
पंचामृत = दूध दही घी मधु और शक्कर का योग ४८९ ६
पंछि < पक्षिन् ४७४ ३
पवार < पवाल < प्रवाल = मूँगा ५४ ६
पवारा < प्रवाद = आख्यान ३१९ ४
पसार < प्रसारय = बढ़ना १७४ ५
पगार < प्राकार = परकोटा ५१ ३ ५३६ ५
पटोर < पट्टकल (?) = रेशमी वस्त्र रेशमी साड़ी ५३ २ ५४ ५ ७४ १ १५३ ७ ३ ३ २ ४३८ ४ ४१९ ४ ४४२ ३ ४९१ २ ५३६ ५
पट्टन < महा नगर ४८ २
पठव < पट्ठव < प्र + स्थापय् = प्रस्थान कराना भेजना ३१५ ६

पछताव < पश्चात्ताप २११ ४
पछिव < पश्चिम ५२९ ५
पठार < पाताल १ १ ६
पतिय < पतिज < प्रति + इ = प्रतीति करना विश्वास करना ११११ ३ ११२ २ ३१३ ६
पतीव < पतिज्ज < प्रति + इ = प्रतीति करना विश्वास करना ३ ६ ५
पनच < प्रत्यञ्चा ८२ ४
पनारी < प्रणाली ११७ ३ १९६ ३ ३९१ २ ५१४ २
पवार < पवाड < प्र + पातय् = गिराना फेंकना २७३ ७ २७४ १ ४२४ १ ४३५ १
पमान < प्रमाण ३७९ ६ ४३ ७ ४३५ १ ५ ६ २
पयाल < पाताल ११९ ७
परगास < प्रकाश २४ १
परजा < प्रजा ५३ १
परनार < परनाल < प्र + ज्वालय् = जलाना ३२ ४
परतिज्ञा < प्रतिज्ञा = साध्य वचन या तत्त्व का निर्देश १९ १
परलर < परत्र = परलोक ५ ३ ५
परब < पर्व = त्योहार ५३२ २
परसाद < प्र + बोधय् = आयत करना ज्ञान देना ३ ८ १
परवान < प्रमाण १७ २
परसन < प्रसन्न २९८ ६
परहेल < प्रहिल् = अवहेला या तिरस्कार करना २७८ ७
पराई < पलाइअ < पलायित = भागा हुआ २१६ ४
पराव < पलाय < परा + अय् = भागना १२ ७ २१६ ४ २५४ ६ २५७ ५
परिग < परि + इंख् = परखना देखना ५ २ २
परिग्रह < परिग्रह = अनुचर भृत्यादि १०९ १ ४३१ ६
परिछ < पडिच्छ < प्रति + इष् = ग्रहण करना १७८ १ ४८७ ३
परिछाही < प्रतिच्छाया १२२ ३ १२९ २ १८ २ ४२१ ४ ३७८ ७
परिछव < परि + छदय् = नष्ट करना ४०३ ५
परेवा < पारावत ३३६ १
पराग < प्रयोग ३७६ ४
पराहुन < प्राहुण = सवारी का जानवर ३८ ४
पलान < पल्लाण < पर्याणय् = घोड़े को जकवाति से सुसज्जित करना

पगट्<प्रगट्=अंकुरित होना पतित होना ८११ ४
पसर<प्र+सृ=फैलना ४८ १
पसार<प्रसार ८८ ६ १८१ ४ २२ ४ ८
पसार<प्रसारय्=फैलाना २७३ १
पसउ<प्रसर ८१ २
पस्थान<प्रस्थान ३७ १ ८ ६ १
पहर<प्रहर २२२ ४ ५६ १ ३३३ ५
४६९ १ ५ ८ ३
पहर<प्रहरी १ २ ५
पाइ<पाद=पैर ४१७ १
पाउ<पाद=पैर १७ १
पात<पत्त<पत्र=पैना १ ३ ३५१ ८
३७ ३ ५२८ २
पाखुरि<पखुरी<पत्र<पत्त=पत्र ४१ २
पाग<पग्ग<पस=पग्गड़ पिन की अवनि
८२७ ८ ८ ६ ७
पगार<प्राकार [ह]=अदल बदल ८९ ५
३७८ ५ ४५५ २
पाट<पट्ट=पटरा सिंहासन ६२ ३ २३ ६
२ ३५८ ६ ३६७ ८ ३ ३
६९ ५ ३ ३ ८ ८८ ५ ८१ ७
४७८ २ ८ ३ ५ ३ ६
पानी<पानिय ८१ ६ ३८ ३
पानी<पनिरा ८५ ४ ८१८ ७ ८२४ ३
८५ ८ ८ ७ ८१ १ ८१ ७
४३३ २ ८३३ ७ ८३८ २
पावर<प्रावर=पावर ३ १ ४२८ १
८८ २
पार<पार<पारय्=गिनना ३८८ ३
पार<पारय्=समता करने में समर्थ होना ८ ७
पारधी<पारद्धिक<पारद्धिक=शिकारी ८३ २
८ ४६८ ३ ८८४ २ ४६८ ७
पाल<पाल=पाल ६५ १ ६५ ८ ७८ ३
७८ ८ ७ ८७ २ ३८ ७
८८ ८ ५१
पारधि पार=पारधी ८ ८ ५ ८१ २
पालि<पालि ३३६ ५
पाव<पाद=पद पौवा ७१ ८
पावस<प्रावृष्=वर्षा ऋतु ८ ३ ८ ८ २
४६६ १
पास<पार्श्व १७५ १ १ ८ २ ३८६ ५
५ ३ ६ ५ ३ ५
पाहन<पाषाण ३ ३

पाहुना<प्राघुणक=अतिथि २३१ ७
पिंजरा<पञ्जर ६३ ६
पिय<पीअल<पीत=पीला ? ५ १
पियार<प्रियाल=प्यारा ९८ १ ४८ ४
५१ २ ७३ १ ९८ ८ १८९ १
३३३ १ ३१८ ३ ५ ७ ५ ७ २
पियास<पिपासा ३५८ ८
पिरथी<पृथ्वी ४१३ ८
पिरम पिरम<प्रेमन् १ ३ ५ १३१ ३
१५२ ६ १५५ ७ २२८ २ ३ २ ६
३४७ ३ ४५२ ६
पिरथमी<पृथ्वी ६
पीड<पिण्ड=वृक्ष का जड़ के पास का भाग
२७२ ५
पीतम<प्रियतम ५ ३
पीति<प्रीति ११७ ५
पीर<पीडा ३६८ ८ ८ ७ ६ ८ ९६ १
पुतरी<पुत्तली<पुत्रिका=पुतली ५११
पुनि<पुन्य १ ४५२ ३
पुन्न<पुण्ण<पुण १८ ५ १९ ५ १
३८ ७ ७५ ७ १८ २ १ ६ ८
१ ७ १ १ ७ ३ १३३ १ ३३३ ६
१२१ १ २१२ ४ ५२५ २
पुहुप<पहुप<पुप्प २ ५ २ ३८ ७
पुहुमि<पृथ्वी १४५ ७ १८७ ७ २१५ ३
२५५ ६८ २ ४७१ ५ ८९७ १
५ ८ ७ ५ २ ६
पूर<पूर<पूर्य्=पूर्ति करना ३५७ ७
पूज<पुज्ज<पूज्य=पूज होना ३११ ३
पून<पुन ४७ ७
पून<पुण्य १८ ५
पून<पूर्ण ८८२ ६
पूनिउ<पूर्णिमा ३८ २ ५१ १ १ ७ १
१८८ ३ ३८५ ७
पूरइ<पूर ५ ५
पेम पमा<प्र+ईक्ष् = देखना अवलोकन करना ६ ३८१ २
पखरी<पक्ष=बन्धना पंखी ५११ १
पेम<प्रेम ५ ६ ७
पेख<पश्य<प्र+ईक्ष् = देखना दर्शना ५ ८ ३
पैग<पग्ग<पडग<प्रगण=पैर ३३ ७
पैसा<पविस<प्रविश्=प्रवेश करना १११ १
६ ७ ६ ७

पातिया < पोत्तिआ < पातिका = पोथी पाटी
 ३३९ ४
पौरि < प्रतली = मत्स्यद्वार १ २ ५, २ १ ७
 २ ८ ६ ४० १ ५१ १ ५१ ३
 ५३६ ५
पौनि = हर्षोत्साह के अवसरों पर पुरस्कारादि
 पाने वाली जातियाँ ५४ २ २८६ ४
 ४४१ ६
पौनेरि < पदम + नयरी ३५६ ४ ५१ १
प्रगास < प्रकाश १ २
प्रवान < प्रमाण ८९ ६
प्रापति < प्राप्ति = लाभ २२८ १
प्रिथमी < पृथ्वी ११ ४ ३५ ७
फर < फलम < फलक = फड़ वह फलक जिस
 पर जूआ खेला जाता है २१८ ४
फरसा < परशु २७१ ४
फरहद < फरहद [फा] = प्रसन्नता आनंद
 ४८१ ७
फासी < पाश ४२९ ४ ४८२ २
फार < स्फार = विशाल विपुल १५७ २
फीट < फिट्ट [दे] = टूटना ध्वस्त होना ५३८ ७
फुर < स्फुर = प्रकाशित होना प्रकट होना
 १४ ४
फुर < फड़ < स्फुट = स्पष्ट व्यक्त ३३६ ४
 ३६६ ५ ४५ ७
फार < फुरगा [दे] = मिथ्या २६७ ५
बपी < वाप्पव १७६ ६
बकत < बसिन = बोल कथन १ ३ १ ८५
बखान < वक्खाण < व्याख्यानम् = विवरण देना
 वर्णन करना कहना ४ १ ५ ४ १२ ७
 ४ १ ४३७ ४४२ ७१ ६५ ७
 ७६ ४ २ १ ४ ३६८ ७ ३८६ ४
 ३ ८ १
बखिन < व्याप + विनक ६६५ २ ४६६ ४
बचा < वच्च < वचम् = वचन १७८ ५
 १२ ३३१ १
बज < बाज < वद्य २१ ३ १६३ ७
बना < बग्ग < बग्गु = बाँधना फँसाना ४ ४
बगाम < बग्गम् = बँधाना १७१ २
बजाई बजाव < बज्जावन < वर्धापन = आनंदसम्बद्ध
 अभ्युदय या शुभसूचक बाद्य समारोहार
 ४ २ ५२१ ५१ १ ५४ ४ ५५ ७
 ६ ५ ७२ २ २८८ ७ २७८ २
 २७ ७ २८६ ७ २८७ ६ ३३२ ७
 ३३० ५ ३११ ६ ४२२ १ ४१ २
 ४३९ ३ ४६२ २ ४८८ ४ ४८९ २
बनाबरि < वासावली ८४ १
बनिज्ज < वाणिज्य ३२१ ६
बपुरा < बप्पुड [दे] = बेचारा दीन अनुकम्पनीय
 १ १ ८६५ ११६ ७
बर < ज्वल् = जलना २९ ४ २१४ ४
 २७ ४ ३८१ ५
बर < बल ३१४ १ ५ १ १
बर < वृ = वरण करना चुनना ४३५ ६
बरस < वर्ष २६२ ७ ४११ ५
बरबस < बल + वश २४५ १
बरिआई < बलात् ४१५ ५
बरियात < वरयात्रा = बारात ४४२ ६
बस < वस् = बसना ५२५ १
बलया < वलय = कंकण चूड़ी १३६ २
बब < वप् = बोना ३४४ २
बसन्ती < वसति २७७ ५
बसह < बसह < वृषभ = बैल ४५५ ७ ४५६ ६
बहुर < बाहुड [दे] = वापस आना ४ ७ ५
बाउ < वायु ८ ३
बाउर < बाउल < बातुल = बावला पागल
 ३५ १ ३५१ ५ ३५२ ४ ३५१ २
 ३५५ २ ३९२ १ ४६८ ७ ६७ ४
 ५२१ ५
बाक < बक < बाक ८३ ७ २ १ २ १२ १
बाभन < ब्राह्मण ८४ १
बामुर < बागुरा = पशुओं को फँसाने का फंदा
 ४६५ ३ ४६५ ५
बाबा < वच्च < वमग् = वचन १२८ १
बाबन < वाद्य ५३१ ५
बाम < बन्ध् = बँधना फँसना १ ७ २ ११२ ४
बामु < वज्ज < वर्ज्य = बिना २ ६ ११ ५
 ११ ३ १८ २ १४३ ५ १४९ २
 १४९ ५ १५७ ५ १७ ५ २४६ ७
 १२७ ४ ४११ ३ ४११ ६
 ४२७ १
बाट < वट्ट < वर्त्मन् = मार्ग ७८ २
 ४१२ १
बात < वत्ता < वार्ता ८३ ५ १५२ ५ २२२ १
 २ ५१ २४१ ५ २४३ १ २४७ १
 ७४ १ २८८ २ २९ १ २१ ४
 २९११ २१४१ २ ७ ४ २१७ ५
 २०८ १ २९ १ १ १ ५ १ २ २
 १ ५७ ३११ १ ३४ ७ ३६६ १
 ३३८ १ ३६ १ ३७७ १ ३८१ १

१८०३ ४०६ ४३३ १ ७४३ ७
५२३ १ ५३३ २
ान<वर्म १ ७ ९९ ७
ानी<वर्मिन्=वर्म वाला २
ानुग<वगुर [द] = वचाना दीन
मनुकरनीय २१५ ७ २४६ ७
ार<ग्रामक्=जलाना २९ ६
ार<वाम [अवस्था]=१३७ ६ ३५१ १
३९४ १
ार<वाम=वामक ४८ ७ १४६ २
ार<वमा=ममय १ ८५ २६ ३ ४७५ १
४८७ १
ार<वार<द्वार १२ ५ १३ २ ५ १
१ ४५ १८८७ २७१ १ ८१ ७
२८४ १६ ३ १८५ ३ ४१८ १
४१८५ ४२१ १ ४१५ ४ ४१ ६
४५२ २ ४५ ७ ४७ १ ४७ १
४७५ ७ ४ १ २ ५११ १ ५११ ५
५१२ ७ ५१६ ४ ५१५ २
वारदूवानी<द्वारवर्णिन् = वार वर्णो का
(गण) २१ ५ २७४ ५
वार<वारा १५ १ २६ १ २८८ १
३ ११ ११ ५ ३१२ ५ ३१२ २
३५६ ३ ३ ३ १ ३९४ १ ४ ३
४१९ २ ४३४ १ ४५८ १ ४६८ १
४७९ ५
वारह<वारह=वाणी गुकर ४६४ ४
वारी<वाणिका ३६ ३ १ ४ १ ४
११८५ ११४६ १४४ १ १४८ ३
१५१५ २ २५ ५७ ३ २८
२/२५ २८ ४ २९४ ३ २ ५ ३
२ ८१ २ ८५ १ ३ ३ ६ ५
३ ८१ ३४९५ ३५ ३ ३५६
३९५५ ३९६२ ३ ८ ५ ४२ ५
४४३ ५ ४४६ ६ ४५३ ५ ४६१ २
४६३ ५ ४७७ १ ४८३ ७ ४९१ ४
४९४ ३ ५१४ १
वारो<वारिका १४४ ५ १ ७ ५ ६ २
३४२ २७५ १ ५ ४ ८ ६
३१५ १ ३ ० ७ ३ ८ ० ४ २ ५
४ ३ ४६९ ४
वारी<वेरा=वगार ५१ ३६८ १
वाम वाम=रिव ४१६ ५
वाम वामु=वनुर्ग ा वा वा वा वाम्भान
वरना २ १ ४

वाम<वामना=मुमष ११७ २ ११० १
११७ ४ ३१ ३ ४ १ ५
वाम<वामना=वामना ५१२ ७
वाह<वाहम्=चलाना १४४ १ १४६ १
४ १ १
विउर<विधु=विचरण दमा ४२७ १
विरगार<वगार [फा] = मगान मचान
७४४ ७२१ ७५ १ ८४ ११५ ७
१४४१ १८३५ १४५ २ १५५ २
४६६ ३
विरम्ग<विरम्य ९ ५
विछर<विच्छिद्=अलग होना १४९ ६ १७१ २
विछुन<विक्षुण्ण (?)=अलग किया हुआ
७ ६ ८१ ७ ३ ६
विछाउ विछाय विछाह<विक्षोभ [दे]=
विरह वियाग ११७ १२ १
२४५ ७ ७ ५ ५१ ७
विर<विर=पामर भीष ३७ २
विढव<विढव [द]=उपार्जन करना ३ १६
विथा<व्यथा १४८ ६
विथरा<विस्तार<वि+स्तारय् = फैलाना
३११ ४
विथर<विस्तार<वि + स्तारय् = फैलाना
३६ १
विनार्मी<विनाशि<विनाशिन् ३५ २ ५ ४
९ २
विधि<दुम ४ १८७६ २१६ ११२ ६
३३३ ५ ४८२ ४ ४८४ ४
वियाधि<व्याधि १४७ १
वियाधिन<व्याधिन ४४ ७
विराउ<विराम = विरति उपरम निवृत्ति
१८२ ७
विरिग विरिछ<विरिक्ष<वृक्ष १२९ ६
६ ६ ७ ४ ७ ३ ४ ६ ५
विरमा<विरम ३७४ १
विलगर<विलगन<विलग=उलग हुआ ८१
विला<वि+ली=विलीन होना २ ८ ७
विग<विग<वि+गृ=विमा करना मत्त
रगा ३१४ ७
विसमार विस्मर=विलाप ५१३ ४
विसमान विस्मित=विस्मय-पूरित ५ १
विसपी<विस्मय ४२८ ६
विसराउ<विसार १८१ ३ १८६ ३ १ ६ १
१ ६ ७ ६ १ ५१ ८ १ ५
४२८ ७
विसगर<विसरार=गर्व ३

बिसाय < विषाम = विष बन जाना ५ ५ ४
बिसार < विषाक्त = विषैला ४११ १
बिसूर < बिसूर [दे] = खेद करना ४ १ १ ४१४ १
बिसूरा < बिसूरण [दे] = खेद पीड़ा १८१ २
बिसेख < बिसेस < वि + क्षपम् = विशेषण से बन्धित करना २१८ ३ २२५ ४ ४२१ ७
बिहुर < बिहुड < वि + घट् = अलग होना टूटना फटना ८८ ३ २१९ ४ २८२ १ ११८ ५ ३११ १ ४२४ ५
बिहा < वि + हा = परित्याग करना बिताना २०१ ४ ५ १
बीछु < वृश्चिक = बिच्छू ३५८ २
बीज < विद्युत् २२१ ५, २२१ ७ ४८१ १
बीरि < बीरम [दे] = ताटंक कर्णाभरण विशेष ९१ १
बुंद < बिन्दु ११३ ४ ४ ५ १
बुझ < बुज्झ < बुध् = जानना ज्ञान करना समझना ४२ ४
बूड़ < बुड्ड < बुड् = डूबना ३५८ ३
बकार < बिकार ११९ ४ १११ ७
बेगरा < द्वि + कृ = द्विधा करना अलग करना ३७५ २ ३८८ ४ ५२१ ३
बेर < बेला = समय बेरी १३० २ ३१५ ७
बरछ < विकस् = विकास करना ९२ ३
बरा < भम्म [दे] = नौका ४७८ १
बेरा < बेला = समय २११ ४
बेगास < विकास ११ २ १२ ३ ४९५ १
बेलि < बल्लरी ३३५ ७
बेवहार < व्यवहार ९१ ७ ११ १ २११ १ ३०१ २ ३ ३ ५ ३४१ २ ३१५ २
बेवान < विमान ४१८ ५, ४७० ७
बेसार < बेसर = अलंकार खच्चर ४४ ४
बेसाह < बिसाह < वि + साध् = माल लेना ११८ १
बैतार < बैताल १८८ १
बैन < वयन < वचन १९१ ७ २११ ? १११ १ ३१७ १
बैस < वयस् = अवस्था ५१२ १० ३ ३१५ ३
बोर < बोडय् = डुबोना ३११ १ ३५ ५
बोहित < बोहित्थ [दे] = प्रवहण जहाज १० ७ १०१ ७ १७० १
बौराई < बातुल्यता = बावलापन १८२ १
बौरी < बाउली < बातुली ३०५ ७ ३ १ १
बौसाइ बौसाउ < व्यवसाय = पुरुषार्थ २५ १ २५ १ २११ १ ३१७ १ ३७२ ७ ११ १
ब्याध < व्याध = बहेलिया ३५९ २
भख < भक्ष्य ३१३ १
भभीखन < विभीषण ५११ ७
भभूति < विभूति = राख २११ १ ३ १ १ ११९ ७
भल < भल्ल = भाला २६१ ४
भकया < भद्र ४१ ४
भव < भ्रम् = चक्कर लगाना ११२ ४ २ ४ १ २७५ २
भाग भागि < भाग्य १ १ ४ २ २ ?
भाठी < भट्टिका < भ्राष्ट्रिका = भट्ठी ११८ ७
भाप < भाव १११ ३
भाव < भाष् (?) = पसंद होना उचित जान पड़ना २५५ २
भीति < भित्ति = दीवाल ४११ २
भुअ भुआ < भुज भुजा १ ७ ११ ३ १८०५, २१२५ २११ १ २१७ २ ३०२ २ २८११ ४८३ १ ४८१ ६ ३१२ ? ५१२ ७
भुइ < भूमि ११८ १ ४७८ ४
भुगुति < भुक्ति = भोजन ३५४ ४ ४११ १
भुवार भुवाल < भूपाल < भूपाल ४८ २ १ ७५, २५ २ ३८१ २ ३४१ १ ४१ ७ ४११ २ ४१ १ ५१७ २ ५११ ७
भूख < बुभुक्षा = क्षुधा ३५४ १
भूष < भुष् = मोष करना १ १ ३१४ ५, ५१२ २ ५१२ ७
भेउ < भय १५१ ३
भस < वेष २२२ ५, २८ ३ ३१२ २
भौरी < भ्रमरी = फेरे लगाने का मार्ग १ २ १
भौह < भ्रू ४८ १
भौ < भय २२१ ५, ४४७ १ ५३८ १
मंछ < मच्छ < मत्स्य ४४ ५
मंजूर < मयूर २ ४ ५ ३११ ५
मंत < मंत्र = विचार ९ २ १५ ४ १७ ४ ४३३ ३ ४८१ ७ ४५५ ४ ४५५ ५
मति < मतिम् २ २ १
मंदिल < मन्दिर = भवन ४११ ५
मत-अकाज < मत-अकार्य १७७ ४
मन्त < मुकुर ८ ? १ ३
मगन < मत्ताङ्ग = उन्मत्त [हाथी] २१ ५

मर्ई < मानव ५१ ४
मर्वंव < मृगाङ्क = चन्द्रमा ८१ ४ ८१ ६ ८७ २
मदमत < मदमत्त ४४ ६
मया < माया (?) = ममता १५७ ८
ममान < श्मशान १८६ ७
मनिमार < ममाल [फ़ा] = ५१२ ७
महन महना < महामात्य १६५ ६ ४५५ १ ५१२ १ ५१२ ३ ५१८ १ ५३८ ४
महिमर < महीतल १२१ ६
महिख < महिष = [जंगली] भैसा ४१४ ८
मा < मैंदना पूरित होना ८८५ २
माटी < मृत्तिका १११ ५ ११३ ७ ११७ २
माडी < मल्ल ८८८ ३ ८९ २
मांस मांसा < मांस ६६ १ १ १ ५ १४७ ३ १५६ १ ४१८ ४
माथ < मस्तक ८५३ ८ ८५४ ७ ४५७ ५ १७ ५ ५१८ ५
मादल < मद्दल < मर्दल = मुरज मृदंग २०६ ७
माग < मार्ग १४ २
मानुस < मानव १८ ३ १६६ ४
मारी < मालिका १०३ २ १८३ ५
मारू < माहेन्द्र [फ़ा] = चन्द्रमुखी १५१ १
माहनारी < माहेनारी = एक प्रकार की आतिश- बाजी ४८२ १
माहि < मध्य ४६० १
मिशु < मिष = बहाना छल व्याज २ ५ ५
मीच < मृत्यु १७ ३ २१४ २ २६१ ३ ५३८.१
मीत < मित्र ९ १
मुख < मुख १ ८ ७
मुख < मुच् = छोड़ना १२५ १
मुदरी < मुद्रिका ११६ १ १८८ ३ २२७ ३ ३ ६ ६ ३ ८ ५ ३४ ७
मुकताहल < मुक्ताफल = मोती १६१ ४४८२ ५
मूर < मूल = पूँजी १७ ७ ११९ ३ १९१ ६ २२८ ३
मूस < मुष = चोरी करना ३६१ ४
मेरव < मेलव < मेलय् = मिलाना १७३ ७ ८ १ ८
मेराव मगाव < मैलाव < मेल = मिलाप मिलन १ ५५ १ ८१ ३६६ २ २ ६ ३ ३६८ ५३९ ७
माग < मार्ग ६८ ६ ७६ ५ ३८८ १ २६७ ५ ३ ५ ३ ७
मा॑र < मृगिय < मो (?) = मारी १७८ ४
मार < मृष् = मारना मुग्ध करना ६ ७ ५

मौर मौल < मउल < मुकुलय = मुकुलित होना २० ४ १९३ ३ ४१ ५
रकतार < रक्तालु ४८४ ७
रगत < रक्त ८७ १ १ ४७ २१२ १ २१८.१ २१९ १ ३२ १ १४६ ६ ३७४ ७ ४१५ ६ ४२३ ७
रजाएसु < राजादेश १६९ ८
रत्ती < रत्तिका = घुँघुची ११८ १
रन < अरण्य ३५५ ४
रवि-ससि = सूर्य तथा चंद्र अथवा पिंगला और इड़ा नाड़ियाँ ४७६ ३
रर < रट < रट = रटना चिल्लाना १७१ ७ १८२ ३ २ ३ २
रमन < रमण = प्रिय ११८५ ४ २४ ४ ५५
रमनि < रमणी ४८६ २
रम < रम् = कामना आचार करना ९ ५
रसार < रसाल १ १ २ १ ९ ६,४२८ १ ४२८ ४
रहस < रभस = हर्ष सुख ५५ ४ ६ ४ ८२ १ ११८ ५ १५ २ १५ ६ १९८७ २ ७ ९ १ ६ २ ४ १ २५१ ४ २७ ५ २८३ ३ २८४ ४ ३५४ ३ ३५८.१ ८६७ ६
रांक < रङ्कु = गरीब दीन ११९ ५,३५७ ५
रांध < राद्ध = पका बना हुआ तैयार ८३९.५
राकस < राक्षस १ २ १ २ ९ ३ ३६९ ५
राच < रञ्च < रज्य = आसक्त होना अनुराग करना १६१ ४
राग < रक्त = अनुराग १७ ३ ११६ ४ १११ ३ १५८.१ १८९ ८ १ १ ६ २५५ ४ २५७ २८९ २ २९ २ २९९.२ २९९ ३ ३ २ २ ३४२ ४ ३७१ १ ४१४ १
रात < रक्त = लाल रंजित ८३ १ ९७ ६ १२४ ४ २१९ ४ २६६ १ २८७ ५ २९१ १ ८११ ५ ४६२ ३ ४ १ २
राती < रत्ती < रत्तिका = घुंघची ८ १ ५ ४२३ ७
रार < रारि < राटि = झिल्लाहट १६७.६ ५ ६.६
राव < राव् = बुलाना पुकारना आह्वान करना ५९ ३ ३१७ ५ १०६ १ ३८५ १ ३८६ ५ ३ ७८ ८३ ३ ८१२ ८ ४१२ ७ ४१८ १ ८३८ ३ ४१८ ६ ४१६ १ ४६८ १ ५ १ १
रावन < रमण = प्रिय ४८६ २

रुहिर < रुधिर ८४ १ १८ १ २५९ ५ २७१ १ ३४८ २ ३६७ १ ४७१ १ ४८ ५
रूख < रुक्ख < वृक्ष ? १४ ३५४७ ३७४ ३
रूप < रौप्य = चाँदी ४५६ ४
रूसा < रुष्ट २६३ ४
रैनि < रयणी < रजनी = रात ४७ १ ७ ४ ७८ १ १४३ ४ १८९ १ १९४ १ २११ ४ २२२ ४ २२७ २ २३९ ७ २४ २ २६८ १ २७९ ३ ३६८ २ ३९ २ ३८४ ७ ४ ४ २ ४ ७ १ ४५२ १ ४५८ ७ ४ ७ १ ४५२ १ ४५२ ७ ४६३ २ ४९२ ५ ४६३ १ ५ २ २ ५३५ ४
रोझ < ऋश्य = नीलगाय ४६४ ४ ४६६ २
रोर < रोल < रव = कोलाहल १५३ ६ १६७ ७
रोरा < रोल < रव = कोलाहल १५४ ४
रोरी < भ्रुकुटि = लकड़ी ४५४ ६
लगन < लदमन २४४ ६
लगन < लग्न ५१ ४ ३५६ ६
लगराउ < लक्खाराम < लक्षाराम = एक लाख वृक्षों का बाग ७१ १ १ ६ १ १ ८ ४ ४६७ ६
लमुन = एक जाति का हरिण ४६४ ४
लखन < लक्षण ४९ २
लप < लप् = कहना ३५२ २ ४१२ १
लहु < लभ् = प्राप्त करना ३१२ १
लहक < लहक [दे] = प्रफुल्ल होना पल्लवित होना १२४ २
लाभि < लालिम [दे] = मनुहार, खुशामद ४ १६ १६ ४
लाह < लाभ ५२ १४२ १ १४३ १ १६ ४ २१५ १ १ २ ७ ३१२ ५ ३१४ २
लिपित < लिप्त ४२७ ४
लिलार < निलाड < ललाट ६३ ६ ८१ १ १ ३ ३ १३६ ५ २४ २ ३६५ ७ ३६७ ७ ८५१ ३ ५२२ ४
लीक < लग्ग = रेखा १३६ ६ ३१८ १ ५१८.५
लुक < लुक् = छिपना ४३१ ७
लै < लय = ध्यान ११ १
लाइ < लाज = लाज १८ ५ ४२ ४
लोह भजन < लोहाभजन = एक प्रकार का अंजन जिसके लगाने से देखने की अद्भुत शक्ति प्राप्त हो जाती है १ २ २
लाग < लाग ११७ ६ ४८८ ६ ५ ८ १ ५१४ १ ५१८ ६
लोनाई < लावण्य ४८१ ४
लोयन < लोचन = नेत्र ८९ ६ १ ५ १ ९ १ १ ११ १११ २ १५५ ४ १५७ ६ २ १ २ २१८ ४ २२६ १ २२९ १ ४ १ २ २२९ ६ १२५ ७ १२७ १ ४२१ ७ ४२१ १ ६ ४ ७ ४४८ ४ ४८१ ७
लोर [दे] = आँसू ५२२ १
लोवा < लोपाक = लोमड़ी ४४ १
लोहू < लोहिय < लोहित = रुधिर २१७ ५ १७ १
लौ < लय = तल्लीनता १५ ६ १७१ ६ १९ २ १९ ४ १२ १ १८१ ६ १७४ १ १७४ ७ ४५५ २
बाजी < वर्जिम् = वर्जना १७८ ६
बार < उब्बार < उद् + वर्त्म् = त्याग करना छोड़ देना ४४४ ७ ४५७ १ ४७१ १
वइ < स्वयम् ७ २ २१ १ ९२ १ ११ १ १ १ ६ ११८ ७ १५ १ २२१ १ २९७ १ ११७ ५ १३८ ६ १४१ ४ ४१७ ४ ४२९ १ ४१ १ ४८२ १ ४८१ २
सकर < सकल < स + कल्प् = संकल्प करना सोचना ११४ १
सकेल < सकेल्ल [दे] = सिकोड़ना ३२५ ६
सकोर < सकोड < स + कोट्य् = सिकोड़ना ३२१ ४ ४११ २
सचार < सहर < स + हृ = संवरण करना समेटना ९ १
सजत < सजिपत् (?) = विजयी (?) ९४ ७
सतत < सतत = निरंतर सदैव २४१ ६ २५ ७ २५१ १ २९ ७ २ १ ६ १२७ १ ३३९ १ ३४१ २ ४१६ २ ४६३ १ ४९७ ७ ५ ७ २ ५११ १
सपर < सपरी < सपरि + ई = जाना गति करना ४१४ १
संपूह < समूह ४४ ४
समर, संभार < सभार = स + भारय् = सँभालना याद करना २७२ ६ ४२१ ६ ४१७ १
सबर < समर < स्मृ = स्मरण करना १४५ ५ २२८ ७ ४२९ १ ५ ५ १
संभार < स + भारय् = सजाना ४६२ ५
सकति < शक्ति ४२२ १
सगर < सकल ९८ १ १६७ ७ २२२ १५१ ४ ५ २ १ ५१५ १ ५३१
सगाई < स्वक + त्व = आत्मीयता २४७ १
सगुन < शकुन ४४ २

मग्रन < स्मशन ९१ २
मनाई < मनाविय < मनाविन = मन[illegible]
४२५ १
मुति < मत्य १२१ ६, १२१ ७ ८ ७
२९ १ २ ३ ७ ३०६ १ ३३१ ३
३३ ६ ३६६ ३ ३६८ २
मरन < मरण १ १ १ १ १ ३ १२८ ६
१२ ७ १३१ १ २८ १ ५ ३
२ ३ ७ २ ८ ६, २९९ ३ ३ ८ १
३२० ५, ३३१ १ ३३१ ४ ३३ १
३६६ ३ ३६६ ४ ३६२ २
मयूरी < मंयूर ७१ ४
मरद < म + [illegible] ४६५ १
ममार < मम् + आर् = [illegible] ८८ १
११५ २ १ १ ४ १ ३ ६
१११ ३ ३ ८ ८
मभुर < मधुर २ ३ ६
मयनार < ममार ५ ३ १६३ १
मयान < मयान १५८ [illegible]
११३ ३ [illegible] ३
मर < मार = बिना ३३१ ६
मरम < मर्म = मायाग [illegible]
१८६ १ ६२ ८ ३ ३ ८३ ३
४३८ २
मरम < मरम ५३८ ७
मरमरि < मरिमरी [दे] = [illegible]
७३ ६
मरवान [फा] = [illegible] ४१२ २
मरिय < मर्निपिन = जिसने [illegible] आदि न
मदिर का [illegible] किया हो मानों
१० ५, ३५६ ५
मरन < मरण = मान १ ३ ७ १० ८
१३८ ६ २६६ २ ३ ३ ६ ३२६ ६
३३८ ६ ३५१ ५, ३८ १ ८८१ ५,
४८१ ३ ५१८ १
मरा < म्रान ११८ ६
मनि मुख = [illegible] और
[illegible] ८५ ३ ८५ ५, ८५ ३
[illegible] < [illegible] = [illegible] ११ ३ ७२ ६
१ ८
[illegible] < मालिका = [illegible] ३३१ ८
१ ३ ३ ३ ६ ५ ३ ३ १ ४ ३
मंत < मस्त ३३६ ८ ८८८ १
[illegible] < म + [illegible] = [illegible] ४६५,३
[illegible] = [illegible] ४६१ ३ ४६८ ६

मांमर = एक जाति का हरिन ४६४ ४
मामा < ममत्र ३२ २ ८८६ ३
माई < म्मामा ४१ ५, ४१२ ८ ४१५ ५
५ १ ५ ४ १ २१ ३
मातम < [illegible] = मनु ४६८ ४६५ ४
मन्थि < मन्थी ८८६ ३
मायन < मयन < स्मरन १८१, ७ ८ ८ ६
मनिक < मन्थिक १६ १
मर < मह < मद ५ १ ५३३ ४
मध < मधा = [illegible] ४ ५
८३ ५ ३८ १ ३ / ८ ८५१ ५,
मन < [illegible] = [illegible] १ ८ ३
मन < [illegible] ३
[illegible] < [illegible] < [illegible] १ ३
[illegible] < [illegible] १ ३ ६ ३ ३ ५,
५
[illegible] < [illegible] = [illegible]
५८ ५ / ३
[illegible] < [illegible] = [illegible]
/३ ३ १/८ ८
[illegible] < [illegible] = [illegible] १/८ ८
[illegible] < [illegible] = [illegible] ३
[illegible] < [illegible] ३/ ३
[illegible] < [illegible] = ८
[illegible] < [illegible] ३ ८ ३
[illegible] < [illegible] < [illegible] ३६ ५ ५ ८
३ १ ३
मिमरम < [illegible] < [illegible] १ ८
मिपर < [illegible] < [illegible] ८ ८ २ ८ १
मियान < [illegible] ८ / ३
मिर < मुर् = [illegible] १ १
८६६ ३
मिर < मीहम मानन ३ ३ / -
३ ३ ३
मिहुन < म्नान ९८ १ ८३१ १ ३३ १
मीउ < मीन ८ ६ १
भीग < गिनान < गिना ८८ ८ ३ ३
३५२ ८
मीनार < मीनार ५१ १ ८ ३ ८
८१२ ४ ८८३ १ ८३५ ३
मीन < मीणि < मुति < मृति = मीरी ३ ८८
४६ ५
मीसं < मीमा ९५ ३
मीठ < मिठ् १ २ १४१ २
मरमारी < मरमारी २ ५ १

४]

गुगामा < मुक की भाँति सबेहातुर होना ३३६ २
सुमान < सुज्ञान = ज्ञानी १ ७ १११ २
३ ३ १ १८१ ७
सुमर < सुम्म < सुब = निर्मल ११ १ ९३ ४
४८२ ३ ६८६ ५ ४९५ २ ५३३ ७
सुधि सुधि < सुधि = मानसिक चेतना ३३ १
११ ५ ४७२ ७ ४९७ ३
सुम < धूम्य २११ ३
सुमर = मरपूर सपन्न ५११ १
सुर < स्वर ३८७ १
सुरत = स्त्री-समागम ११२ २
सुरहिमि < गुराङ्गना [?] ११५ ३ ४७ २
४७८ २
सुवना < सुब < शुक २११ १
सुहिन < स्वप्न ११ २
सुहिरदौ < सुहृदय = मित्र १७७ १
सूता < सुप्त २९४ ४
सूना < सूनित ८३ १
सूर < सूर्य ११ ७ २ ६ ७२ ६ १५३ १
२ ६ ६ ३३३ २ ४९२ ७ ४९५ २
सेंवल < शाल्मली ११ ५
सेउ < गमम् = साथ ४२४ ७ ४३४ २ ४४० ७
४५९ ७
सेज < सय्या १५ १ १३५ ५ १८३ २ ३ ८४
३१२ ४ ३३४ १ ३५३ ७ ४ ३ १
४११ २ ४१२ ४ ४४० ५ ४९३ १
सेत < श्वेत ८३ १ ९७ ५ ४१९ १ २ १८१ २
सेदूर < शार्दूल = शरम १ ३४२ ६
सेवाती < स्वाती ३१८ ३
सै < शत = सौ ५ ७ ७
सै < गमम् = साथ ४३१ ३
सैन < गयन = शय्या ७ ५ ७३ ६ १ ३
३१८ २ ३३४ ३ ४७७ ४ ६५२ १
६९२ ५ ४ १ ३
सैन < सकेत २ ८ ७
सोनहा < श्वान ४९५ २ ४६६ ४
सोहाग < सौभाग्य २८ ४ ३५५ ७ ५१३ ५

५१३ ७ १२५ ४
सोहिल < साहिल्ल < शामागत् = सुहावना
४९५ १
सौंतुल < सं + प्रत्यय [?] = अतिशय प्रत्यक्ष
१४ ७ १४१ १ १४७ ७ १४८ १
१४८ २ १४८ ३ १४८ ५ २२५ ४
२२५ ५ २२५ ६ २२५ ७ ३४६ २
सौंह < सउह < सम्मुख १ ४ ६ ३२५ ३
४४९ २ ४०९ ६
सौत < सपत्नी ५ ४ ५
हुंकार < अहंकार ३५२ २
हकार < हक्कार < आ + कारम् = पुकारना
आह्वान करना ४८५ ६
हर < भर = भारी ४५ ६
हरख < हर्ष ४९६ १
हरिय हरियर < हरिम < हरित् = हरा ३४४ ७
३५७ २ ४११ १ ४११ ५
हरुव < हलुक < लघुक = हल्का ओछा ३ ७
३५२ १
हाट < हट्ट [दे] = बाजार पाचार ११ ३
२८ ६ ७८ २
हिय हिया < हृदय २७३ ६ ३२८ ३ ३५५ ४
३७५ ४ ४४० ६ ५२२ ६ ५२३ ७
हियारी < हृदयात्मता = सौहार्द ३ १ ३ ३ ३ ४
३ ४ ३ ४ ५
हिलार < हिल्लोल = समुद्र की लहर २२ ५
११३ ४ २१७ २ २१८ २
हुलस < उल्लस् उल्लास युक्त होना १११ ७
हुलास < उल्लास ३५ ६ ५५ ४ ११८ २
११४ ५ २ ३ ५ २ ४ १ २३५ ६
२५४ १ २७८ २ ३६३ ४५९ ७
४८९ ३
हेठ < हेट्ठ < अधस् < नीचे १४ ५ २४८ २
हेत < हित < प्रेम १११ ७
हेर [दे] < देखना निरीक्षण करना २७ १
होरी < होलिका ३ ६ ५ ८ १